[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

मुद्रितकर प्रकाशित किया।

श्रावण संवत् १९६०, शाके १८२५.

श्रीगणेशाय नमः ।

महाराज श्रीरघुराजसिंहजी देवकृत-

रामस्वयंवरस्य विषयानुक्रमणिकाप्रारम्भः ।

विषय. पृष्ठांक.

नवमः प्रबन्धः।

दशमः प्रबन्धः।

एकादशः प्रबन्धः।

द्वादशः प्रबन्धः।

एकोनविंशतितमः प्रबन्धः।

विंशतितमः प्रवन्धः।

एकविंशतितमः प्रबन्धः ।

द्वाविंशतितमः प्रबन्धः ।

इति रामस्वयंवरानुक्रमणिका समाप्ता ।

इति
रामस्वयंवरानुक्रमणिका
समाप्ता ।

श्रीजानकीवल्लभोविजयते।

अथ रामस्वयम्वर

श्रीगणेशाय नमः।

दोहा—परते पर कारणहुँ कर, कारण पुरुष प्रधान।
परविभूति परविभव प्रभु, जय यदुपति भगवान॥
जग सिरजत पालत हरत, जाकी भ्रुकुटि विलास।
वसत अचंचल जेहि रमा, जय जय रमानिवास॥
सुरगण नरगण मुनिनगण, हरत विघन गण जोय।
एकरदन शुभसदन जय, मदनकदनसुत सोय॥

कवित्त।

तेरईभरोसभरोभवमेंनभीतिभाऊं, भाषिभाषिभूरिभावरसनानहारती॥
भेदत्योंअभेदहावभावहूकुभावकेते, भावकसुबुद्धियथामतिनिरधारती॥
तेरियेभलाईतेभलाईकविताईभाई, माईमतिपाईकौनजापैनानिहारती॥
हारतीनहिम्मतिपसारतीसुकिम्मतिसँभारतीसुसंमतिजेवंदैतोहिंभारती।

सोरठा—इष्टदेव शुकदेव, व्याससुवन वैराग्यवपु।
जेजन कृत तुव सेव, तिनहिं पराभव भव न भव॥
प्राचेतस वाल्मीकि, जगत सुकवि रवि आदि कवि।
जयति काव्य जेहि लीक, चतुरानन ते आजुलों॥
जय जय तुलसीदास, रामायण जिन निर्मयो।
जासुप्रभाव प्रकाश, रसिक होत बाँचत जड़उ॥
कृष्णचरित रसपूर, नमोसूर कलिसूर कवि।
जासु भनित रसमूर, होत दूर सुनि क्रूरता॥
व्यासदेव पदकंज, बार बार वन्दन करौं।

जो सुमिरत मनरंज, मेटि मनोरंजन करत ॥
जासु मुक्तिप्रद नाम, हरि गुरुपद वन्दन करौं ।
तासुकृपा ममकाम, सिद्धसकल अनयासहीं ॥
रघुपति भक्तप्रधान, काशीपति पितुनामपद ।
धरि शिर करहुँ बखान, 'रामस्वयंवर' ग्रंथवर ॥

दोहा—गान करतमहँ अतिसुलभ, ताते गानहिं छन्द ।
औरौ छन्द अनेक किय, जहँ तहँ मंजु अमन्द ॥
चौबोला को छन्द रिजु, गान करत सुख होइ ।
गायक जन कहँ प्रीतिप्रद, सब गावत मुदमोइ ॥
दोहा और घनाक्षरी, तथा सोरठा आदि ।
चौबोला बिचबिचलसत, औरहु छन्द अजादि ॥

छन्द चौबोला ।

नारायणको रूप नाम अरु लीला धाम सुहावन ।
तिनको गाइ ध्याइ जग के जन लहत परमपद पावन ॥

रस रसिक रँग्यो रँग बिरले सब रस रासी ॥
सज्जन सुमति सुशील साधुवर संसृत विमुख विज्ञानी ।
नाम धाम लीला वपु हरिके कबहुँ भेद नहिं जानी ॥
सहित भेद अथवा अभेद करि कौनहुँ विधि हरिदासा ।
होतहिं हरत भूरि भवकी भय रहति न पुनि यमत्रासा ॥
पै तिन महँ जे रसिक उपासक अतिशयमृदुल स्वभाऊ ।
करहिं भावना विविध भाँतिको राखि भेद नहिंकाऊ ॥
जो जेहि देव उपासक साँचो सो अपने प्रभुकाहीं ।
परहुते पर जानत रति ठानत तेहि पर दूसर नाहीं ॥
राम उपासक कृष्णउपासक इनहुँन महँ बहुभेदा ।

मत अनुसार करत प्रतिपादन यद्यपि अनुसर वेदा ॥
शैव शाक्त अरु गाणपत्य बहु सौर वैष्णवहुआदी ।
वेद पुराण प्रमाण पृथुल पथ निज निज मत मरयादी ॥
यह झगरो बगरो जगरोधत हरिपद अति अनुरागा ।
ताते सज्जन रसिक शिरोमणि यह झवारि सब त्यागा॥
ज्ञान विज्ञान विराग भक्ति करि ह्वै अनन्य हरिदासा ।
लीला कथा निमग्नचित्त करि नित्यहि लहत हुलासा ॥

दोहा—हरिलीला साधन विमल, लखि उपजत अनुराग ।
यह साधन सब भाँति ते, लखत सुमति बड़ भाग ॥

छन्द चौबोला ।

शांत सख्य शृंगार सु वत्सल अरु प्रधान रसदासा ।
करिकै विमल भावना पाँचौ छोड़त जगकी त्रासा ॥
यद्यपि हरिके रूप अनेकन होत अनेक उपासी ।
तद्यपि पंच भावना पूरण राम कृष्ण महँ खासी ॥
मुक्ति मिलत हरि रूप ध्याय सब यामें नहिं संदेहू ।
पैसुखराम कृष्ण ध्याये जस तस नहिं और सनेहू ॥
ताहू पर जे भावक पूरे ते दुख सुख सुनि गाथा ।
दुखी सुखी अति होत भाव उर करि उदोत सत साथा॥
ते समर्थ सब भाँति सुसज्जन पूर परेसहि प्यारे ।
हरिलीला महँ लगी सुरति नित तनुकी सुरति बिसारे॥
पै जे अधम मंदमति पामर मोसम विषय विलासी ।
तेऊ चहत कृष्णपद भजिबो मलक गरुड़पद आसी ॥
भाग्य विवश सज्जन पद रजधरि कोटि जन्म महँ कबहूँ।
जो किय हरि महँ नेह छेह बिन देह गेह तजि तबहूँ ॥
सो प्रयात हरिधाम आम अति नाम प्रतापहिं धारी ।
एक बार मैं हौं तिहरो सुनि अपनावत गिरिधारी ॥

वेद उचारे साधु पुकारे हरिको दीन पियारे ।
को दयालु देवकी लाल सों तीनिहुँ काल विचारे ॥
सन्तकृपा अपने पर जानो पूर्वपुण्य कछु होई ।
राम कृष्ण के चरित नीक मोहिं लगत न वर्जत कोई ॥

दोहा—ताते भाषा "भागवत", रच्यो स्वमति अनुसार ।
बहुरि " रामरसिकावली ", सन्तचरित विस्तार ॥
"रुक्मिणिपरिणय" ग्रंथइक, "रघुपतिशतक" सिकार।
"गंगशतक" "सुन्दरशतक", नेसुक कियो उचार ।
और "शतकजगदीश" को, ग्रंथ सु "भक्तिविलास"।
"विनयमाल" सु "पदावली", त्यों रघुराजविलास ॥
रच्यो संस्कृत ग्रंथ कछु, शतक एक जगदीश ।
सभा सु "धर्मविलास" इक, "शंभुशतक" नातिईश ॥
रच्यो "राज रंजन" बहुरि, सब रस मतन प्रकाश ।
कथा रुचिर रामायणी, नहिं कछु कियो विकाश ॥

छन्द चौबोला।

राम कृष्ण के चरित मनोहर पतितन पावनकारी ।
सुखद मनोरंजन भवभंजन दुखगंजन मनहारी ॥
आदि अन्तमें कृष्णचरित सब आनँद अमित उदोतू।
वृन्दावन रसरास विलास विकास हास नहिं होतू ॥
राजमाधुरी रूपमाधुरी चरित माधुरी सांची ।
तुलसीवन मधुपुरी द्वारका सन्तन मन रति राँची ॥
अति लीला लावण्य देवकी लालन की अवहारी ।
कतहुँनअसवियोग दुख वरणित जेहि सुनिसंत दुखारी ॥
लीला पुरुषोत्तम यदुनायक द्वारावती विलासी ।
मरयादा पुरुषोत्तम श्रीरघुनायक अवध निवासी ॥
प्राणहुँते प्रिय सब देहिनके विनकारण करुणाई ।

विना हेतुके हितू हेरि हरि हुलसावत हित दाई ॥
जो लीलामें लखि ईश्वरता व्यापक विभुहि विचारो ।
रसाभास अनयास होत हठि नहिं विशेष सुखसारो ॥
जो माधुर्य्य भाव तहँ राखहु तौ दुख चरित न गावो ।
ऐश्वर्य्यहि माधुर्य्य भेद यह दोउ यक संग न भावो ॥
मैं असमर्थ नाथ दुखगाथा गावनमें सब भाँती ।
विरह विपत्ति व्यथा वर्णत में रसना रहि रहि जाती ॥
यद्यपि सेतुबन्ध लङ्कापति विजय विदित तिहुँलोका ।
विपिन गमन दशरथकुमारको उपजावत अति शोका ॥

दोहा—अवनि उतारन भारको, हरि लीन्ह्यों अवतार ।
पै न बनत वर्णत विपिन, पद गमनत सुकुमार ॥

छन्द चौबोला ।

बहुरि स्वामिनी हरण महादुख वरणि जाइ कहु कैसे ।
पुनि वियोग जग जननिनाथ को लागत कथन अनैसे ॥
ताते मम हरि गुरुनिदेश दिय बालकाण्ड भरि पाठा ।
करहु तजहु दुख कथा यथा लै घृत बुध त्यागत माठा ॥
ताते केवल बालकांडको पाठ नेम मम हेरो ।
श्रीभागवत और रामायण इष्टदेव है मेरो ॥
आचारज रामानुज आदिक दक्षिण के आचारी ।
संध्या जप तप व्रतहु नियम यम रामायण लिय धारी ॥
अश्लोकहु अश्लोकारध नहिं जबलों पाठ कराहीं ।
तबलों अम्बु पानहूं त्यागत का पुनि भोजन काहीं ॥
ताते राम स्वयम्बर गाथा रचन आश उर आई ।
रघुपति बालचरित्र उछाह देहुँ मैं गाई ॥
बालकांडको विशद चरित संक्षेप कथा षट कांडा ।

वरणहुँ रीति वालमीकी जेहि सुनि पुनीत ब्रह्मांडा ॥
उक्ति युक्ति तुलसीकृत केरी और कहां मैं पाऊँ ।
वालमीकि अरु व्यास गोसाईं सूरहिको शिरनाऊँ ॥
युगल आदि कवि युगकलि कविरवि इष्टदेव मम चारी ।
उपजे अधम उधारण कारण सकल विश्व उपकारी ॥
काव्य प्रबंध छंद बन्धनको मैं कछु जानहुँ नाहीं ।
रचहुँ यथामति रामकथा को भजन मानि मन माहीं ॥
सोरठा—जय जय दशरथलाल, अवधपाल कलिकालहर ।
अनुपम दीनदयाल, दै मति करहु निहाल मोहिं ॥

घनाक्षरी ।

पालतप्रजासमाजकरतसधर्मराज जाको दण्डपरमप्रचंडयमराजसो ।
लाजकोजहाजकरैशत्रुनपराजैपरहितसबकाजशीलजाकोद्विजराजसो ॥
भनैरघुराजभयोभूमिमेंदराजराजानिगुणीनिवाजनिभौदूजोदेवराजसो ।
अवधविराजभानुवंशशिरताजचक्रवर्ती औरकौनदशरत्थमहाराजसो १
परम सुजान आठसचिवसुनीतिवानातिनमेंसुमन्तहैंप्रधानराजकाजके ।
वामदेव त्यों वसिष्ठगुरूउपरोहित हैं रक्षनकरैयासदाधर्मकेजहाजके ॥
पूरणप्रकृतिसातधीरवीरहैंविख्यातरथीमहारथीअतिरथीरणसाजके ।
भनैरघुराजजाकोसुयशदराजजाकेबन्धुमित्रमंत्रीमघवानकोमिजाजके २

छंद चौबोला ।

सरयू तीर सोहावन कोशल नगर बसत अति पावन ।
निज छवि अमरावती लजावन सुरन मोद उपजावन ॥
द्वादश योजन लम्ब मान तेहि योजन त्रय विस्तारा ।
कनककोट अतिमोटछोटनहिं विमल विशाल बजारा ॥
गली चारु चौडी अमली सब मंदिर सुंदर तुङ्गा ।
अमित कताके लसत पताके मानहुँ रच्यो अनङ्गा ॥
परम मनोहर राजगली मृदु फूलन ते छविछाई ।

लगी कनक नलिका तिनही के सलिल सुगन्ध सिंचाई ॥
बसत चक्रवर्ती दशरथ जहँ जिमि दिवि देव अधीशा ।
पालित प्रजा वृद्धि सुख पावत लहि प्रताप जगदीशा ॥
बाट बाट बहु द्वार विराजत चामीकर महरावैं ।
हाटक ठाट कपाट ठटे वर घाटन घाट सोहावैं ॥
सरयू तीर हेम सोपानित सब थल करहिं प्रकाशा ।
गुर्जमेरु मंदिर सम मण्डित जेहि लखि दुवन निराशा ॥
भिन्न भिन्न सब भौन भौन की गली न कछु संकेतू ।
अतिविचित्र वर कनक रजतके निरमित सकल निकेतू ॥
तोपन तोम तडप तड़िता सी बुरिज कोटमहँ केतीं ।
घहरहिं मनहुँ मेघगण घहरत गोला अवली लेतीं ॥
घरनाल और करनालैं सुतरनाल जंजालैं ।
रहँकले भले तहँ लागे विपुल बयालैं ॥

दोहा—ऊंची अटा घटान इव, छहर छटा क्षिति छोर ।
मनहुँ स्वर्ग सोपानकी,

छंद चौबोला ।

खान पान सन्मान पाय कै सदा समर अनियारे ।
सकल शिल्पि वरऔरहु परिचर निशि दिन रहततयारे ॥
कहूं नृतक कहुँ चतुर नृत्यकी कहुँ नट करहिं तमासे ।
रोज रोज मंदिर मंदिर प्रति बहुविधि विपुल विलासे ॥
नौबत झरत द्वार द्वारनमें शंख सुतारि सहनाई ।
औरहु विविध मनोहर बाजे बजत मधुर सुर छाई ॥
बंदी मागध सूत वदत रघुवंशिन विरद बड़ाई ।
निरखत नगर नवल शोभा दिगपालहु रहत लजाई ॥
ऊंची अटा घटा इव राजहिं छरति छटा क्षिति छोरें ।

मनहुँ स्वर्ग की लगीं सोपानै रवि विश्रामहिं ठौरें ॥
नगर चहूँ दिशि बाग सुहावन अति मंजुल अमराई ।
विहरत विविध कुरङ्ग विहङ्ग मनोहर शोर मचाई ॥
तीनि ओर परिखा जल पूरित उत्तर सरयु सुहाई ।
गजशाला तुरङ्गशाला रथशाला विविध बनाई ॥
दुर्ग भयावन नगर सुहावन रिपु दुर्गम प्राकारे ।
इंद्र वरुण यमकी गति जहँ नहिं का पुनि भूप विचारे ॥
मदमाते मतङ्ग कहुँ आते कहुँ तुरङ्ग चमकाते ।
घरघरात कहुँ चक्र रथनके सुभट समूह सुहाते ॥
कहुँ ऊँटन के जूट जलद अति वृषभ शकट कहुँ उन्दा ।
महिषी सुरभिपूर पय धारणि वृषभ नदत सानन्दा ॥

दोहा—दवन दुवन दल दर्प दलि, दुराधर्ष दिग दंति ।
दशरथके सामन्त अस, दशदिशि कीर्त्ति फिरंति ॥

कवित्त ।

केतेमहाराजरघुराजआवें देखिबेको, केतेमहाराजजावेंबलिदैंस्वदेशको ॥
केतेमहाराजठाढ़ेरोजरोजद्वारदेश, केतेमहाराजबसैंशिरधैनिदेशको ॥
केतेचौरढारैंकेतेछत्रकोसँवारैंसङ्ग केतेधूरिझारैंपदरसम हमेशको ॥
भूपतिहजारें तेनिहारें रुखबारबारें भूपचक्रवर्तीचूड़ामणि अवधेशको ॥
कहूंअग्निहोत्रहोतेहोताकहूंहव्यकव्यकहूं वेदवादिनकी वेदधुनिछाईहै ॥
कहूँ कोई जपकरैं कहूं कोई तपकरैं कहूंकोईव्रतकरैंचित्तकोलगाईहै ॥
पूजैंकहुँदेवकोई करैंकहूं देवसेव जानैं शास्त्रभेव जे बजावअधिकाई है ॥
भनैरघुराजप्रजामोदितदराजहठिकरतपरायोकाजसुरसमताई है ॥ २ ॥

दोहा—देश अनेकनके वणिक, धनद सरिस धनवान ॥
निवसत कोशल नगर में, जिन के कोटि निसान ॥

छंद चौबोला ।

विशद राजमंदिर मणि मण्डित मंजुल आठ प्रकारा ।

आठ लक्ष वासव निवास वर रघुवंशिन आगारा ॥
तीनि प्रकार प्रजा निवसत चौथेमहँ रघुकुल वीरा ।
पँचयें वसत राजकुल के सब छठयें नृपतिय भीरा ॥
महाराज मंदिर सतयें अठयें वैकुंठ समाना ।
का सुरसदन सुरेश सदन का का विधि भौन बखाना ॥
लसत सुहावन मणिपर्वत तहँ विपिन प्रमोद सु नामा ।
नन्दन और चैत्रस्यंदन वन जेहि छवि ते छवि छामा ॥
अति विचित्र विश्वकर्मा कृत जगति जवाहिर जोती ।
सुर गन्धर्व सरिस नर नारी नहिं विद्या बुधि कोती ॥
अति उतङ्ग सुंदर शशिशाला सात मरातिब वारे ।
मानहुँ पुहुप विमान भान अस्थान लजावन हारे ॥
हत दूषण पूषण प्रकाश इव नगर विभूषण सोई ।
नरभूषण दशरथ निवास जहँ कतहूँ रूख न होई ॥
समथल ऊंच नीच नहिं कतहूं पूर्ण धर्म धन धानी ।
सरस सुरस रञ्जित नीरस हत कोशलपति रजधानी ॥
वीणा वेणु पटह पणवादिक बाजत रोज नगारे ।
अवध सरिस शोभा सुर नर मुनि त्रिभुवन में न निहारे ॥
भावी राम जन्म गुनि प्रगट्यो वसुधा में वैकुंठा ।
जहँ ब्रह्मर्षि सुरर्षि राजऋषि विचरहिं बुद्धि अकुंठा ॥

दोहा—जो देख्यो कोशल नगर, सुर नर एकहुँ बार ।
तेहि न रही पुनि कामना, देखन हेत अपार ॥

छंद चौबोला ।

चौहट हाट बाट हाटक के बाट बाट रमणीया ।
नाटक नाट्य घाट घाटन में सुख पाटत कमनीया ॥
अमित अनुत्तम वीर नरोत्तम सत्तम धीर धुरीणा ।
एकाकी लखि कबहुँ बधत नहिं धनुधर परम प्रवीणा ॥

स्वरवेधी सब शस्त्र विज्ञाता वेधकलक्ष विहीना
परमुख पेखि न पदहु प्रहारत कर लाघव लवलीना ॥
विपिन वधत ललकारि हारि नहिं सिंहउ व्याघ्र वराहा।
मत्त मतङ्ग पाणिसों पकरत वली उदोत उछाहा ॥
ऐसे सहसन शस्त्र शास्त्र बुध कोशल नगर निवासी ।
दिन दिन दून दून दशरथ नृप पुरी बसाई खासी ॥
महारथी भाषक यथारथी परमारथी पियारे ।
प्रभु अर्थी स्वारथी न कवहूँ कोशलपति सरदारे ॥
याचक यज्ञ न याचक धनके सुगुणाकर द्विज ज्ञानी ।
अति उदार परिवार सहित बुध वेदाकार अमानी ॥
भाषत सत्य असत्य न चाषत राखत सम सब प्रीती ।
कतहुँ न माषत कतहुँ न नाषत वेद पंथ शुभ नीती ॥
महा महर्षि सरिस सब द्विजवर शील सकोच सुभाऊ ।
प्रजन परमप्रिय प्राण सरिस जिन मानत दशरथ राऊ ॥
ऐसे कोशलपुर को नायक दशरथ भू भरतारा ।
जाको सुयश जगत जग जाहिर करत दिगन्त पसारा ॥

दोहा—श्रीइक्ष्वाकु नरेश को, वंश हंस अवतंस ।
निज सुभाव जन वशकियो, यज्ञ शील रिपुदंस ॥
राजत राजा राजऋषि, महा महर्षि स्वरूप ।
विदित तीनिहूँ लोक में, जय श्रीदशरथ भूप ॥

छंद चौबोला ।

महाबली नहिं दुवन दुनी जेहि मित्र सकल जग जाना ।
अति ऐश्वर्य्य मान माने सुर धरा महेन्द्र समाना ॥
आदि राज जिमि भये भुवनमें मनु महराज उदारा ।
तैसहिं दशरथ राज आजु महि पाल्यो जगत अपारा ॥

सत्यसन्ध जिनके नृप पालित अवधपुरी छवि छाई ।
प्रतिदिन वर्द्धमान जेहि सम्पति अमरावती लजाई ॥
धरमनिरत हत लोभ तोष भर सत्य वचन सुखरासी ।
जग जाहिर धन धनद सरित कुलवन्त अवध पुरवासी॥
कोउ नहिं दीन हीन मति अघ कर असिध मनोरथ वारे॥
तरल तुरङ्ग शतांग मतङ्ग बँधे जिन द्वारन द्वारे ॥
नहिं कोउ कामी कृपण दया बिन नास्तिक मूढ़ कुवादी ।
मुदित शील सम्पन्न महर्षि समान धर्म मरयादी ।
नर नारी हरि धर्म निरत अति देव स्वरूप सोहाये ।
बिनकुण्डल बिनमुकुटमाल बिन कोउनभोगबिनभाये॥
बिन मज्जित बिन अँग अँगरागित बिन सुगन्ध नहिं कोई।
बिन अङ्गद बिन हार कटक बिन लखि न परै पर सोई॥
दाता ज्ञाता दीन न पाता मिष्ट अशन सब खाते ।
अग्निहोत्र सब करत विप्र नहिं क्षुद्रहु चोर दिखाते ॥
निज निज कर्महिं प्रजा निरतसब कोउ नहिं सङ्करजाती ।
दान देत उत्साह सुमति जिन दान लेत सकुचाती ॥

दोहा—विद्या वेद निधान सब, शीलवान रुचिवान
हेतुवाद हठवाद हत, भाषत वचन प्रमान ॥
अवध प्रजा अस कोउ नहिं, जो जग जाहिर नाहिं ।
कोउ न भयो परदार रत,सब पण्डित पुर माहिं ॥
श्रम यक वेदाभ्यासमें, व्रत तप रह्यो कलेश ।
साधु विप्र ढिग दीनता, परहित विथा हमेश ॥
सहस उपर ते दान में, न्यूनाधिक्य विचार ।
आसक्ती रहि धर्म में, चुगुली पर उपकार ॥
ऋतुपति तरु विगलित सुदल, तहँ कुरूपता वास ।

बसी अरुचि यक अघन में, पाप न बस्यो विना ।

छन्द चौबोला ।

भेद भास यक चारि वरणमें अतिथि देव में पूजा
चतुराई कृतज्ञताई थल अवध सरिस नहिं दूजा ॥
विक्रम बस्यो सकल शूरन गण धर्म सत्य तनु माहीं ।
कुल कदम्बमहँ वसी वृद्धि तहँ दण्ड वाद्यगण पाहीं ॥
बसता बसी ब्रह्म क्षत्री बिट शूद्र जाति अनुसारा ।
धर्म पतिव्रत अवध नगरमहँ नारिनगण आधारा ॥
हंस वंश अवतंस भूप वर दशरथ शील सुभाऊ ।
जासु प्रशंस करत सुर नर मुनि भयो यथा मनु राऊ ॥
लसत अयोध्या के सब योधा निगमागम कृत बोधा ।
क्रोधा शत्रु समूहन शोधा नहिं गति कहुँ अवरोधा ॥
अवधराजकी विमल विराजतिविशद सुवाजिनशाला ।
सकल जातिके बँधे तुरङ्गम रूप अनूप विशाला ॥
बाजि काबुली त्यों ईरानी मिसिर अरब्बी केते ।
रूसी रूमी ताजी तुरकी त्यों जङ्गली सुचेते ॥
जापाना पर्वती चीनिया भोटी ब्रह्मा देशी ।
धन्नी भीम्राथली . . . .
इँगलिस्तानी औ दरियाई कच्छी ओलन्देजी ।
औरहु विविध जातिके वाजी नकत पवन की तेजी ॥
विविध रङ्गके मनु अनङ्ग निज हाथन अङ्ग बनाये ।
अंग बंग औ त्यों कलिङ्गके विविध तुरङ्ग सोहाये ॥

सोरठा—अनुपम अवध भुवाल, जाकी गजशाला विमल ।
सिंधुर लसत विशाल, विविध जाति अरु देशके ॥

छन्द चौबोला ।

विंध्यगिरिंद प्रांतके संभव विंध्य सरिस जिन रूपा ।

सेतु स्वरूप हिमाचल जन्मित हिमगिरि आभ अनूपा ॥
शुंडादण्ड चण्ड फटकारत सदा बहति मदधारा ।
चौथ चन्द सम चारु दन्त द्युति देत दिशेभदरारा ॥
ऐरावत के कुलके केते दिशा गजन कुल केते ।
महापद्म अंजन अरु वामन विरूपाक्ष कुल जेते ॥
भद्र मन्द्र मृग भद्र मन्द्रमृग भद्रमन्द्र मृग जाती ।
भद्र और मृगभद्र आदि बहु जे गज जाति विख्याती ॥
विभव सकल शत शक्रसरिसबर केहिविधि करौंउचारा।
जाके भवन सोत्रिभुवन नायक लेहैं हरि अवतारा ॥
द्वादश योजन अवधपुरी सब युग योजन नृप ऐना ।
विमल राज रानिनके मंदिर मनहुँ रचित कर मैना ॥
ऐसी पुरी बसत दशरथनृप राज समाज सु साजा ।
धरम धुरंधर धीर धुरीन यथा उडगण उडराजा ॥
जासु नाम साकेत दूसरो सत्या नाम सोहाई ।
तासु तीसरो नाम अयोध्या वेद पुराणन गाई ॥
भुजबल कलित कपाट कनकके द्वारन द्वार सोहाये ।
रक्षत वीर विविध वासर निशि जिनके यश जग छाये ॥
चित्रित चित्रावली विचित्र चितेरन चरचित चारू ।
चमचमात चामीकर मंदिर चौमुख चित्त विचारू ॥

दोहा—अवधपुरी मंगलवती, निरखत मंगलदानि ।
भू वैकुंठ विराजती, को कहिसकै बखानि ॥

कवित्त ।

मायामोहनाशिनीउमाकिनीअविद्यामूल पापनकी त्रासिनीहै ज्ञानरसरासिनी ।
शोभाकीअमापिनी सुथापिनीहै धर्मधुरासाकिनीहै तारनकीपुण्यकीप्रकासिनी ।
भनैरघुराजराजसिंहनकीबासिनीहैशासिनीअघिनियमपुरकीउदासिनी ।

चासनीसुचेतनकीरामदासआसिनीहैरामकीपुरीसोसत्यरामतत्वभासिनी ।

दोहा—मंत्री दशरथ भूप के, उत्तम आठ प्रधान ।
चतुर देवगुरु सरिस सब, करहिं सत्य अनुमान ॥
सकल मंत्र जिनको विदित, जानत लखि आकार ।
नित नरपति हितमें निरत, मित भाषी अविकार ॥
धृष्ट जयंतौ अरु विजय, सिद्धारथ पुनि नाम ।
तथा अर्थसाधक अपर, त्यों अशोक मतिधाम ॥
मंत्रपाल सतयों सचिव, आठों सुमति सुमंत ।
देशकाल ज्ञाता सकल, धर्म निरत यशवंत ॥
श्रीवसिष्ठ ब्रह्मर्षिवर, वामदेव ऋषिराज ।
उभै पुरोहित नृपति के, कारक सब शुभ काज ॥
मंत्रिन के लक्षण कहौं, दशरथ के जेहि भाँति ।
नरपति हितमें हेत नित, चित परहित दिन राति ॥
विद्यावान . . . . राखत गुरुजन लाज
परम कुशल सब कामके, वर्द्धक दिनप्रति राज ॥
शोभामान अमान मति, ज्ञाता शास्त्र समूह ।
भक्ति त्रिविक्रम में निरत, दृढ विक्रम द्रुत ऊह ॥
कीर्तिवान कृत काम बहु, सावधान सब याम ।
जस भाषत तैसहिं करत, नहिं अनुरत परवाम ॥
तेज तरणि सम प्रथम करि, क्षमा क्षमा सी छाइ ।
राज काज सब सिद्धि करि, पावत यश समुदाइ ॥
नीचहु ऊंचहु जनन सों, वदत वचन मुसकाय ।
क्रोध काम के वश कबहुँ, कहत न वचन निकाय ॥
नित पुर को वृत्तान्त कछु, तिनहि न कबहुँ छिपात ।
कियो जौन कर्तव्य जो, तेहि गुण दोष विज्ञात ॥
गुप्त चार ते देश को, जानत सब वृत्तान्त ।

सकल लोक व्यवहारमें, कुशल कला अति दांत ॥
नृपति मित्रता सहृदता, परखि गये बहु बार ।
बारेहु जो अपराध कर, देहिं दण्ड तेहि बार ॥
कोष भरण में निपुण अति, धरहिं खर्च करि पूर ।
देत सबन बेतन समै, रक्षत रहत न दूर ॥
यदपि अहित अति होइ निज, हनहिं न बिन अपराध ।
महाबीर रणधीर अति, सदा समर की साध ॥
राजनीति जानत सकल, जन गति बिपति विशेष ।
सदाचार सम्पन्न सब, बिना हेतु नहिं द्वेष ॥
सकल देश बासीन को, राखत प्राण समान ।
द्विजन क्षत्रियन नाश बिन, भरहिं कोष बिन मान ॥
देखि बलाबल दुवन को, दै मृदु तीक्षण दण्ड ।
उग्र राज शासन करत, हरत प्रजन पाखण्ड ॥
सकल सचिव संमत सहित, निज निज बुद्धि विचार ।
बाद विवाद विहाय हठ, कारज करत अपार ॥
कोउ न मृषावादी सचिव, कपटी कुटिल कठोर ।
कोउ न भयो परदार रत, कोउ नहिं चंचल चोर ॥
देश विदेश सभा सदन, राखत शांत सुभाव ।
भूपति कारज करन में, नित नित दून उराव ॥
धारि बसन भूषण विमल, जात राज दरबार ।
शील सहित बोलत वचन, लखि रुख भू भरतार ॥
जेहि हित होइ नरेश को, सो भाषैं उर भैन ।
सोवत प्राकृत नैन ते, जागत नय के नैन ॥
दोष तजत गुण को गहत, लखत न प्रभु को दोष ।
विश्व पराक्रम विदित जिन, सांकर करत समोष ॥

विदित विदेशहु वृत्त सब, निज बुधि विशद प्रभाव ।
जानत विग्रह सन्धि नय, निज परभाव अभाव ॥
स्वामी सों यांचत न कछु, करत शक्ति लों काज ।
काज देखि राजी सहित, लेत जो बकशत राज ॥
लोभ क्रोध मद मोह वश, कबहुँ न ठानत ठान ॥
कामहि कीन्हें ते भये, जिनके विभव महान ॥
करि सलाह हठ हेतु तजि, सूक्षम बुद्धि विचार ।
करि सुंदर संमत सकल, शासन करत प्रचार ॥
जानत नीति अनीति गति, दीन पीन जन हीन ।
मधुर वचन बोलत सदा, राज काज लवलीन ॥
ऐसे सचिवन ते सहित, दशरथ भू भरतार ।
शासत सकल वसुन्धरा, धरा धर्म आधार ॥
चतुर चार गुप्तहु प्रकट, कै सब देश प्रचार ।
पालत प्रजा भुवाल मणि, करत धर्म संचार ॥
कहुँ अधम को लेश नहिं, धर्म कर्म रत लोग ।
सुखी सनेह रुखी प्रजा, दुखी मुखी नहिं योग ॥
भुवन विदित दशरथ नृपति, सत्य सिन्धु चतुरेश ।
जाको शासन सान को, मानत सपति सुरेश ॥
जगत समाधिक रहित रिपु, भयो भूमि भरतार ।
मीत सुरासुर सकल भे, जेहि यश भुवन भँडार ॥
जासु प्रताप प्रताप ते, भई अकण्टक भूमि ।
लोकप इव सामन्त जेहि, वंदत नित पद चूमि ॥
सात द्वीप नव खण्ड में, दशरथ भू भरतार ।
शास्यो जिमि शासत स्वरग, वासव नयन हजार ॥

कुशल समर्थ सु सचिव सब, सहित सु दशरथ राज ॥
अवधपुरी शोभित भयो, जिमि कर युत उडराज ॥

इति सिद्धिश्रीसाम्राज्य महाराजाधिराज श्रीमहाराजाबहादुर श्रीकृष्णचन्द्र
कृपापात्राऽधिकारी श्रीरघुराजसिंहजू देव जी. सी. एस.आई.
कृते अवधपुरी वर्णननाम प्रथमःप्रबन्धः ॥ १ ॥

सोरठा—यह विधि जासु प्रभाव, श्रीदशरथ महिपाल मणि ।
और सबै चितचाव, सुत बिन तापित रहत हिय ॥

छन्द चौबोला ।

कियो विचार भूप मनमें अस केहि विधि सुत हम पावें ।
करिकै वाजिमेध मख उत्तम हरि सुत हेतु मनावें ॥
देहि ईश सुत वंश विधायक उऋण पितर ऋण होई ।
यहि विधि करि मतिमान ठीक मति मंत्रिन मंत्र समोई ॥
बैठि एक दिन भूप सभामहँ कह्यो सुमन्त बुलाई ।
मम हितमें रत सकल पुरोहित गुरु युत ल्याउ लेवाई ॥
सुमति सुमन्त तुरन्त जाइ मतिवन्त गुरुनपहँ भाष्यो ।
गुरुजन चलहु राजमन्दिर सब नृप दर्शन अभिलाष्यो ॥
वामदेव जावालि सुयज्ञहु कश्यप आदि मुनीशा ।
सकल वसिष्ठ संग ल्याये तहँ बैठे जहां महीशा ॥
सादर करि प्रणाम नरनायक दै आसन बैठाये ।
धर्म सहित निज अर्थ विधायक सुन्दर वचन सुनाये ॥
और सबै सुख नहिं सन्तति सुख सुत लालसा हमारे ।
तेहि हित अश्वमेध मख करिबो हम मनमाहँ विचारे ॥
शास्त्ररीतिते सबै विचारहु जेहि विधि सुत हम पामै ।
सुनि नृप वचन वसिष्ठादिक मुनि बोले वचन ललामै ॥
भलो विचार कियो नरनायक करहु यज्ञ संभारा ।

तजहु तुरङ्ग सङ्ग सुभटन के दै द्रुत विजय नगारा ॥
यज्ञ भूमि सरयू उत्तर दिशि कीजै विमल विधाना ।
पैहो नरपति पुत्र सर्वथा जो तुम्हरे मन माना ॥
दोहा—पुत्र हेतु उपजी सुमति, सहित धर्म नरनाह ।
पैहो अवशि कुमार वर, चली वंश जग माह ॥

छंद चौबोला ।

सुनिकै वचन वसिष्ठादिक के सजल नैन महराजा ।
कह्यो हरषि सचिवन अब कीजै सकल यज्ञ को काजा ॥
गुरु वसिष्ठ आदिक मुनिजनके विमल वचन अनुसारा ।
तजहु तुरङ्ग सङ्ग सुभटन के दै द्रुत विजय नगारा ॥
यज्ञभूमि सरयू उत्तर दिशि कीजै विमल विधाना ।
विघन निवारण शांति करीजै जेहि विधि शास्त्र प्रमाना ॥
जो विधि हीन होत वाजीमख तौ हठि राज विनासै ।
ताते नहिं अपचार होइ कछु राखेहु उर यह त्रासै ॥
हेरत छिद्र ब्रह्मराक्षस बुध वाजिमेध मखमाहीं ।
विधि विधान ते हीन होइ तो करता जीवत नाहीं ॥
ताते सावधान ह्वै कीजै सविधि समापत यागा ।
सिगरे सचिव समर्थ सबै विधि जानहु शास्त्र विभागा ॥
सचिव सुनत शासन साहिबको सादर कह्यो सराही ।
प्रभुशासन अनुसार वाजिमख होई विधि हत नाहीं ॥
यह सुनि पुलकि वसिष्ठादिक मुनि दै नृप आशिरवादा ।
माँगि विदा निज निज अवासको गये सहित अह्लादा ॥
यहिविधिमुनिन विदाकरिभूपति सचिवनमखहितभाषी ॥
तुरत गये रनिवास अवास हुलासित सुत अभिलाषी ॥
कौशल्या कैकयी सुमित्रा आदिक जे महरानी ।
तिनसों कह्यो पुत्र हित हयमख हम दीन्ह्यों अब ठानी ॥

सुनत वचन तिनके वदन, विकसि भये मुदवन्त ।
जिमि लहि अन्त हिमन्त को, सर सरोज विकसन्त ॥
यहि विधि दशरथ भूमिपति, कौशल्यादिक रानि ।
भनत परस्पर वचन बहु, सिगरी रैनि सिरानि ॥

छंद चौबोला ।

उठि भूपति करि नित्यनेम सब सभासदन पगु धारे ।
तहँ सुमन्त यकन्त जाइ शिर नाइ वृतांत उचारे ॥
सुनहु नाथ यह कथा पुरानी एक समय वन माहीं ।
गये गलानि मानि मनमें हम भजन हेतु हरिकाहीं ॥
दीन देखि मोहिं अति दयालु तहँ सनत्कुमार सिधारे ।
ज्ञान विज्ञान विराग विविध विधि मंजुल वचन उचारे ॥
तेहि पीछे पुनि कह्यो ऐसहू अवै न तजु संसारा ।
दशरथ भूपति भवन भुवनपति लैहैं नर अवतारा ॥
सनत्कुमार दरश हित मुनि जन औरौ तहँ चलि आये ।
तिनके सन्मुख पुनि मुनिपति मोहिं ऐसे वचन सुनाये ॥
कश्यप तनय विभांडक ह्वै है जाहिर सकल जहाना ।
शृङ्गीऋषि तिनके सुत ह्वै हैं कानन में अस्थाना ॥
वर्धमान ह्वै है आश्रम में वनचर संग विहारी ।
कछु संसार चार जनि हैं नाहिं पितु सेवा सुखकारी ॥
नारी पुरुष भेद जनिहैं नहिं ब्रह्मचर्य महँ राते ।
महा महात्मा सिद्ध शिरोमणि सकल जगत विख्याते ॥
अग्निहोत्र ठानत पितु सेवत बीति जई बहु काला ।
अङ्गदेश महँ रोमपाद यक ह्वै है कोउ भूपाला ॥
धर्म व्यतिक्रम करि भूप जब अनावृष्टि तब होई ।
परी महादुर्भिक्ष राज्यमें प्रजा दुखित सब रोई ॥

दोहा–निरखि घोर दुर्भिक्ष तहँ, भूप दुखी मन माहिं ।
बोलि वृद्ध पण्डित द्विजन, नृप कहि है तिन पाहिं ॥
ज्ञाता लोक चरित्र के, धर्म धरा आधार ।
जहि विधि मिटै अकाल यह, सो कीजै उपचार ॥

छंद चौबोला ।

प्रायश्चित्त करावहु मो कहँ मिटै महा दुर्भिक्षा ।
हरबरहोइ प्रजा प्रमुदित सब पृथिवी पाय सुभिक्षा ॥
सुनि नृप वचन वेदविद ब्राह्मण बोले वचन विचारी ।
सुवन विभांडक मुनिशृङ्गीऋषि आनहु इत तप धारी ॥
शांता सुता भूपदशरथकी दीजै ताहि विवाही ।
तब सुकाल महिपाल राज्य में ह्वैहै प्रजा उछाही ॥
विप्र वचनसुनि तब वसुधापति चिंता अति उर आनी ॥
मुनिवर केहि उपावते आवैं पुछिहैं सचिव सुज्ञानी ॥
मुनिवर आनन सचिव पुरोहित भूपति विपिन पठैहैं ।
भीति विभांडककी तेहि कानन मुनि आनन नहिं जैहैं ॥
मुनि आनन उपाय भूपति सों सादर सचिव सुनैहैं ।
गणिकागण वनजाय अवशि शृङ्गीऋषि को लै ऐहैं ॥
मुनि आगम प्रभावते वासव वरषि सुभिक्ष बनैहैं ।
शांता सुता शांत कांतहि लहि अनुपम सुख उपजैहैं ॥
सोई शृङ्गीऋषि दशरथ को अश्वमेध करवैहैं ।
चारि कुमार महा सुकुमार उदार अवधपति पैहैं ॥
इहि विधि सनत्कुमार कह्यो मोहिं सो सब दियो सुनाई ।
ह्वैहैं चारि कुमार आपके संशय सकल नशाई ॥
सुनि सुमन्त के वचन भूपमणि मंजुल वचन उचारा ।
विधि रोमपाद आन्या पुर शृङ्गीऋषिहिं उदारा ॥

दोहा–सो वर्णहु विस्तार ते, तुम सुमन्त मतिमान।
सुनि शासन नरनाथ को, लाग्यो करन बखान॥

छंद चौबोला

कह्यो वचन सब रामपाद सों सचिव पुरोहित आइ।
शृङ्गीऋषि आनन को यहि पुर ऐसो करहु उपाई॥
शृङ्गीऋषि नित वेद पढ़त हैं वनचर सम वनवासी।
तनक नहीं तिय को सुख जानत संसृति विषय निरासी॥
चन्द्रमुखी जे चित्तहारिनी तिनको तहाँ पठाई।
आनव मुनिवर नगर मिटी दुर्भिक्ष महा दुखदाई॥
रूपवती बहु वारवधू करि भूषण वसन शृँगारा।
मुनिहिं लोभाय उपाय अनेकनि आनहिं करि सत्कारा॥
अंगराज सुनि सचिव वचन कह करहु ऐसही जाई।
रचन लगे रचना सुनि शासन जेहि आवैं मुनिराई॥
चन्द्रमुखी बहु वारवधू गण तुरतहिं दियो पठाई।
मुनि आश्रमके कछुक दूरिते लागी करन उपाई॥
पिता विभांडकके सेवनते शृङ्गीऋषि मतिवाना।
कबहुँ न आश्रम त्यागि आपनो कीन्ह्यो कहूँ पयाना॥
नगर नारि नर लख्यो न कबहूँ जन्महि ते मुनिराई।
पुरुष नारिको भेद न जानत मानत सब समताई॥
विहरत विहरत एक समय मुनि वारवधुन ढिग आये।
देखि अनूप रूप नारिनको चितै रहे भ्रम छाये॥
मान्यो तिनहिं अपूरब तापस बारवधू का जानै।
बारमुखी मुनिवर विलोकि कै करत चलीं कल गानै॥

दोहा–अति विचित्र युवती सबै, करि कटाक्ष मुसकाय।
मधुर वचन बोलत भईं, मुनि समीप में जाय॥

छंद चौबोला ।

आप कौन हौ कहां बसत हौ जाननको हम चाहैं ।
घोर महा यह विजन विपिन में किमि करियत निरबाहैं ॥
अति सुकुमार शरीर मनोहर नोहर नैन विशाला ।
कहहु सकल मुनि हेत आपनो जो कछु उचित उताला ॥
मुनि सुनि वचन बार नारिनके मुनिजन तिनहिं विचारी ।
मानि सनेह नायशिर तिनको कहन लगे तप धारी ॥
पिता विभांडकके सुत हैं हम शृङ्गीऋषि मम नामा ।
इतते कछुक दूरि मम आश्रम चलहु तहाँ यहि यामा ॥
सुभग वेष मुनि जन तिहरी हम करिहैं विधिवत पूजा ॥
सुनत चलीं ऋषि संग आश्रमहिं गुण्यो मनोरथ पूजा ॥
ऋषि लै जाइ वारनारिन को पूजन कियो अतूला ।
अर्घ्यपाद्य आचमन दियो फल फूल कन्द अरु मूला ॥
ऋषि कर अर्पित कन्द मूल फल पाइ सुखीसबनारी ।
आवन चहत विभांडक मुनि अब उपजी भयमन भारी॥
चलन चहीं गणिका तहँ ते द्रुत बोलीं वचन पियारे ।
तुम्हरे फल तो पाइ गईं हम लीजै फलन हमारे ॥
ये फल फरे आश्रमहि हमरे भोजन किहेहु सुस्वादू ।
असकहिमुनिकहँ मिलींबारतिय भरिउर अति अहलादू॥
मधुर सुमोदक विविध भाँतिके और विविध पकवाना ।
दियो ऋषिहि कहिनाम फलनके मुनिकछु भेदनजाना ॥

दोहा—शृङ्गीऋषि भोजन कियो, मोदकफल जिय जानि ।
कबहुँ न खायो अस फलन, वनचारी तपठानि ॥

छन्द चौबोला ।

पुनि बोलीं गणिका मुनिवर सों आयो संध्याकालै ।
संध्याकरन जाहिं हम सरि तट मिलब तुमहिं पुनिकालै ॥

अस कहि भगीं भामिनी तहँ ते मानि तासु पितु भीती ।
जो देखिहैं विभांडक हमको दे हैं शाप अप्रीती ॥
जब ते गणिका गईं तहां ते तब ते सो ऋषि शृङ्गी ।
बढ़ी बहुरि तिन लखन लालसा कब मिलिहैं सत्संगी ॥
होत प्रभात तुरत शृङ्गी ऋषि तेहि थलमें चलि आये ।
लखेहु तेज तहँ वारबधुन को सुन्दर रूप सोहाये ॥
वारवधू आवत तिनको लखि भूषण वसन सवाँरी ।
मिलीं दौरि तिन्ह कहँ लैआईं जेहि थल बसीं सुखारी ॥
विहँसि वचनबोलीं मुनि ते सब वे फल अब इत नाहीं ।
चलहु हमारे आश्रम जो मुनि तो देहैं तुम काहीं ॥
हमरे आश्रम विमल वाटिका तहां फरे फल सोई ।
जे फल दिये तुम्हें आश्रम चलि देहैं तेइ बहुतोई ॥
गणिका वचन सुनत शृंगीऋषि गमन हेतु ललचाने ।
कह्यो वचन हम मुनि जन तुम्हरे संगहि करब पयाने ॥
सुनि मुनि वचन उठीं सिगरी तिय कर गहि चलीं लेवाई।
शृंगीऋषि पग परत अङ्ग पुर बरषा भै सुखदाई ॥
मिट्यो महा दुर्भिक्ष शोकप्रद भे सब प्रजा सुखारी ।
रोमपाद लीन्हो आगू चलि वंद्यो पद शिरधारी ॥
दोहा—अर्घ्यपाद्य आचमन दै, पूज्यो सविधि मुनीश ।
राख्यो भवन लेवाइ कै, प्रमुदित भयो महीश ॥

छंद चौबोला ।

शृंगीऋषि सों कियो विनय पुनि तव पितु करै न कोपा ।
नातो होइ हमारो आसुहिं राज कोष कुल लोपा ॥
शृङ्गीऋषि बोले भूपति सों कछु न तोर अपकारा ।
ईश रजाय शीश सबहीके ऐसो करहु विचारा ॥

शृंगीऋषि को रोमपाद नृप गे लेवाय रनिवासा।
शांता कन्या नाथ रावरी दिय विवाहि सहुलासा ॥
दान मान सनमान सहित नृप राख्यो मुनि निज गेहू।
शांता सहित तहां शृङ्गीऋषि बसे विचारि सनेहू ॥
और सुनहु कछु वचन भूपमणि जेहि हित राउर होई।
सनत्कुमार कह्यो मोसों अस कहौं कथा अब सोई ॥
ह्वै है कोउ इक्ष्वाकु वंशमहँ दशरथ भूभरतारा।
महा सत्यवादी धरमात्मा सकल भुवन उजियारा ॥
रोमपाद अस नाम नृपति कोउ अंग देशमहँ होई।
सो दशरथको मित्र होइ गो पूरण प्रीति समोई ॥
शांता सुता भूप दशरथ के ह्वै है रूप अनूपा ॥
रोमपाद दशरथ संबंधी ह्वै है मित्रहु भूपा ॥
शांता सुता भूप दशरथ की बसी अंगपति गेहू।
सो विवाहि शृङ्गीऋषि को नृप दैहै सहित सनेहू ॥
अवधनाथ के पुत्र न ह्वैहै तब अतिशय अकुलाई।
तुरत अङ्गपुर कोशल नायक रोमपाद पहँ जाई ॥

दोहा—रोमपाद सों हुलसि मति, कही भूप मतिवान।
जामाता शांता रवन, मोकहँ देहु सुजान ॥

छंद चौबोला।

जो शृङ्गीऋषि अवध नगर चलि अश्वमेध करवावै।
तौ हम होहिं कृतारथ मख करि तासु कृपा सुत पावैं ॥
रोमपाद सुनि दशरथ वाणी सुख मानी अनुमानी।
दैहैं तपखानी शृङ्गीऋषि ज्ञानी कारज जानी ॥
लै शृङ्गीऋषि अवध आइ नृप अश्वमेध मख ठानी।
पाणि जोरि करि विनय मुनीशहिं दै हैं वर विज्ञानी ॥
सुयश हेतु अरु स्वर्ग हेतु अरु सुवन हेतु अवधेशा

करिहैं यज्ञ सहित शृंगीऋषि श्रद्धा युक्त सुवेशा ॥
महा विक्रमी वंश विधायक पैहैं नृप सुत चारी।
पूरव सनत्कुमार कह्यो अस मोसों सकल उचारी॥
ताते राजसिंहमणि आसुहिं अंग देश पगु धारो।
सदल सवाहन जाइ ऋषीशहि ल्यावहु करि सतकारो॥
सुनि सुमन्त के वचन अवधपति अतिशय आनँद मानी।
लै अनुमत वसिष्ठ सों आसुहि गवन दियो तहँ ठानी॥
सहित सकल रनिवास सचिवगण सुन्दर सैन्य सजाई।
चल्यो अवध नायक सब लायक अंग देश मन लाई॥
डेरा करत सरित वन पत्तन मन्द मन्द महराजा।
पहुँचे अंगदेश जहँ निवसत शृंगीऋषि द्विजराजा॥
प्रथम दरश कीन्हों शृंगीऋषि पावक सरिस प्रकासा।
रोमपाद सुनि दशरथ आगम पायो परम हुलासा॥

दोहा—साजि सैन्य चलि दूरि ते, लीन्ह्यो नृप अगुवानि।
सखा सखा मिलि मोद मढ़ि, संबंधी पहिचानि॥
कर गहि हास विलास करि, रोमपाद महिपाल।
गयो लेवाइ निवेसको, डेरा दियो विशाल॥
सैन्य सहित सत्कार किय, करवाई जेउनार।
रोमपादके भाम हैं, दशरथ भू भरतार॥

छन्द चौबोला।

सखा परमप्रिय संबंधी नृप रोमपाद लहि प्यारे।
पुनि पुनि करत महा सत्कार अघात न मोद अपारे॥
अंगराज कृत अति सत्कारिक कोशलनाथ उदारा।
बसे पंचदश दिवस अंगपुर दोउ नृप एक अगारा॥
कह्यो अंगपतिसों कोशलपति शांताकांत समेता।

हमरे कोशल नगर चलहिं द्रुत मम कारज के हेता ॥
अंगराज तब विनय करी नृप बात कही यह नीकी ।
शृंगीऋषि जैहैं कोशलपुर यह हमरेहू जीकी ॥
रोमपाद शृंगीऋषि सों पुनि विनय करी कर जोरी ।
अवध जाहु शांता संयुत प्रभु मानि विनय यह मोरी ॥
कहि तथास्तु शृंगीऋषि आसुहि चले सहित निज नारी ।
रोमपाद सों कह्यो अवधपति देहु विदा सुखकारी ॥
पुनि २ मिलि२सखा सखा दोउ करि प्रणाम करजोरी ।
रोमपाद अरु अवधनाथकी बढ़ी प्रीति नहिं थोरी ॥
पुनि कोशलपति रोमपाद सों माँगि विदा तेहि ठौरा ।
सहित सकल रनिवास सैन्ययुत चले अवधकी ओरा ॥
पठयो अवध तुरत हलकारे तरल तुरंग चढ़ाई ।
सचिवन दियो निदेश अवधपुर राखेहु सुभग सजाई ॥
छपन छपाके रवि इव भाके दण्ड उतंग उड़ाके ।
विविध कताके बँधे पताके छुवैं जे रवि रथ चाके ॥
दोहा—सींचीं गली गुलाब ते, अगर धूप चहुँ ओर ।
द्वार द्वारमें रंभ के, खम्भ गड़े चितचोर ॥

छन्द चौबोला ।

कियो अलंकृत नगर अनूपम खबरि पाय पुरवासी ।
राज रजाइ सिवाइ कियो पुर रचना मंत्रिन खासी ॥
शांताशृङ्गीऋषि संयुत नृप जबहिं नगर नियराने ॥
लिये सकल अगुवान पौर जन दर्शन हित ललचाने ॥
होत धुकार दुन्दुभिन के अरु बजत शंख सहनाई ।
खैर भैर चहुँ ओर मच्यो अति आनँदपुर न समाई ॥
शृंगीऋषि को आगे करिकै नगर सुहावन राजा ।

कियो प्रवेश सहित रनिवास हुलासित सकल समाजा ॥
राजकुमारी सहित मुनीशहिं देखि महा मुद ठयऊ
भूप चक्रवर्ती दशरथ सुरपति सम शोभित भयऊ ॥
प्रविशि राजमन्दिर महँ नरपति अन्तहपुर महँ जाई ।
शांता सुता सहित शृंगीऋषि पूजन कियो महाई ॥
करि पूजन विधान युत नरपति विमल अवास टिकायो ।
अपनेको कृतकृत्य मानि नृप सम्पति विविध लुटायो ॥
त्रिशत साठि त्रय महरानी लखि सुता और जामाता ।
रोज रोज सतकारहिं पुनि पुनि आनँद उर न समाता ॥
रानिन ते पूजित शृङ्गीऋषि शांता नैन विशाला ।
बसत भये प्रमुदित कोशलपुर हरषावत महिपाला ॥
अति उराउ महराउ मगन अति जान्यो जात न काला ।
आयो विमल वसन्त काल पुनि बीति गयो यक साला ॥

दोहा—एक दिवस नरनाथ तहँ, शृङ्गीऋषि ढिग जाइ ।
विनय कियो कर जोरि कै, करहु यज्ञ मन लाइ ॥
नाथ वाजिमख मोंहि अब, करवावहु विधि संग ।
मिलै अवशि सन्तान सुख, यह तुव हाथ प्रसंग ॥

छंद चौबोला ।

शृङ्गीऋषि तब एवमस्तु कहि कह सुनु भूप उदारा ।
तजहु तुरङ्ग संग सुभटनके दै द्रुत विजय नगारा ॥
तब राजा सुख मानि सभा चलि तुरत सुमन्त बुलाई ।
कहो ब्रह्मवादी बोलवावहु सकल पुरोहित जाई ॥
वामदेव जाबालि कश्यपहु अरु सुयज्ञ मतिखानी
गुरु वसिष्ठ अरु और सकलमुनि ल्यावहु तुम इत ज्ञानी ॥
गयो तुरन्त सुमन्त ऋषिन को ल्यायो सभा बुलाई ।

राजा उठि प्रणाम तब कीन्हों आसन दै बैठाई ।
धर्म अर्थ युत वचन उचार्‌यो सुनहु सबै मुनिराइ ।
और सबै सुख नहिं सन्तति सुख ताते कछु न सोहाई ॥
अश्वमेध मख पुत्र हेत हम करैं मोद तब पैहैं ।
शृङ्गीऋषि प्रभाव ते मेरे सिद्ध मनोरथ ह्वै हैं ॥
सुनि मुनि जन भूपति मुख निर्गत वचन परम सुख पाये ।
सकल सराहि उछाह भरे पुनि ऐसे वचन सुनाये ॥
तजहु तुरंग संग सुभटन के दै द्रुत विजय नगारा ।
सरयू उत्तर दिशा करहु नृप सकल यज्ञ संभारा ॥
पैहौ पुत्र सर्वथा भूपति चारि अमित बलवारे ।
जहँते भई धर्मकी मति यह करिबो यज्ञ विचारे ॥
अति प्रसन्न तब भये अवधपति सुनि मुनिजन की वानी ।
हर्षि कह्यो शुभ बैन सुमंत्रिन देहु काज यह ठानी ॥

दोहा—गुरु वसिष्ठ आदिक वचन, मानि यज्ञ संभार ।
रचहु यथा मुनिगण कहैं, अब नहिं और विचार ॥

छन्द चौबोला ।

तजहु तुरंग संग सुभटनके दै द्रुत विजय नगारा ।
सरयू उत्तर दिशा वाजिमख रचहु सविधि संभारा ॥
प्रथमहिं शांति करहु विधि संयुत विघ्न होइ नहिं जामें ।
विघ्न भये वाजीमख नाशत सकल प्रजा वसुधामें ॥
सावधान ह्वै करहुकर्म सब होइ सब जेहिआप चारा ।
हेरत छिद्र ब्रह्म राक्षस वध करि उतपात अपारा ॥
जो कछु विघ्न होइ वाजीमख तौ करता कर नासा ।
ताते करहु यथाविधि हयमख होइ समापत खासा ॥
सब विधि समरथ अहौ सचिवगण कछु न वस्तुकी हानी ।

सकल सिद्धि करिहै वाजीमख सादर शारँगपानी ॥
भूप शिरोमणि वचन सुनत सब बोले वचन सुखारी ।
ह्वैहै तथा यथा प्रभुशासन वृथा न गिरा तिहारी ॥
तहँ मुनिजन सब नृपहि सराहत माँगिविदा मुद माते ।
गये भवन निजनिज सचिवन युत यज्ञ कर्म मन राते ॥
करिकै विदा सचिव मुनिगण को कोशलनाथ प्रकासी ॥
अन्तहपुर को गमन करत भे मानि महा मुदरासी ॥
शृङ्गीऋषि शांता युत यहि विधि बसे अवधपुर माहीं ।
बीति गयो सानंद साल यक जानि पऱ्यो कछु नाहीं ॥
आई बहुरि वसन्त जबै ऋतु राजा मनहिं विचारी ।
गुरु वसिष्ठके भवन गयो चलि बोल्यो पद शिरधारी ॥
करहु अरंभ नाथ वाजीमख जेहि विधि विघ्न न होई ।
तुम मुनीश त्रयकालहि ज्ञाता होइ सुवन करु सोई ॥

दोहा—आप हमारे सुहृद गुरु, मोपर किये सनेहु ।
रचहु यज्ञ संभार सब, यह भारा तुव देहु ॥

छन्द चौबोला ।

एवमस्तु कहि गुरु वसिष्ठ मुनि बोले वचन विचारी ।
करिहैं हम सब जस समर्थि मम कारज विघ्न निवारी ॥
अस कहि सभा वसिष्ठ सिधारे विप्रन लियो हँकारी ।
जे धर्मज्ञ वृद्ध मंत्री सब वाजीमख अधिकारी ॥
तिनसों कह्यो करहु मख कारज परिचर लेहु बुलाई ।
सकल कर्मकारी कारीगर सकैं जे सुभग बनाई ।
दारु कर्म कारक अरु खानक अरु दैवज्ञ सोहाये ।
नट नर्तक शुचि शास्त्र विज्ञाता जे बहु श्रुत जग गाये ॥
अरु जिनको उपयोग यज्ञमें वेदवादि मरयादी ॥
बोलहु विप्र हजारन पण्डित वाजीमख प्रतिवादी ॥

सानुकूल सब करहु कर्म यह भूपति शासन मानी।
सहसन कनक ईंट द्रुत आनहु जेहि वेदी निरमानी॥
औरहु उत्तम वस्तु मँगावहु जौन यज्ञ उपयोगी।
औरहु ब्राह्मण विविध बोलावहु रचहु भवन सुखभोगी॥
विविध अन्न सम्पति सम्पादहु पानहुँ विविध प्रकारा।
अतिथ अवनिपति पुरवासिन हित रचहु भवनविस्तारा॥
विविध देश वासी जन आवहिं चारिहु वर्ण अपारा।
तिनको अन्नदान विधि संयुत दीजै करि सत्कारा॥
खेल सहित दीजै नहिं केहू झेल होइ नहिं दाना।
मेल राखियो सब प्राणिनसों नहिं अकेल सनमाना॥

दोहा—काम क्रोध वश जनन को, होइ न कछु अपमान।
सावधान कृतकर्म में, रहहु सदा मतिमान॥

छंद चौबोला।

जे कारीगर यज्ञ वस्तु के सुंदर विरचन वारे।
ते सब क्रमते अति विशेषि ते जाहिं विविध सत्कारे॥
अन्न वसन भूषण अरु भोजन विविध भाँति ते दीजे।
कमै न कौनहुँ वस्तु समै महँ चित दै सकल करीजै॥
सुनि वसिष्ठ शासन मंत्री सब बोले वचन तहाँहीं।
प्रभु शासन अनुसार करब सब कमी वस्तु कछु नाहीं॥
जस प्रभु को हमरे शिर शासन तामें परी न भेदा।
यज्ञ नरपतिकी पाई कोउ न खेदा॥
सचिव वचन सुनि सुखी भये गुरु लियो सुमन्त बोलाई।
कह्यो वचन अवनी अवनीपन नेउता देहु पठाई॥
ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्रगण आनहु करि सत्कारा।
सर्व देशके मनुजन बोलहु वेगि अपारा॥

महाराज मिथिलाधिप जिनको जनक नाम अतिशूरे ॥
लोक धर्म वेदज्ञ सत्य बल ज्ञान विज्ञानहुँ पूरे ॥
तिनको तुमहिं सुमन्त जाइ तहँ ल्यावहु नेउति बोलाई ।
सांचे रघुकुल के संबंधी ताते कहौं बुझाई ॥
तैसे काशिराज प्रियवादी सुर सम जासु अचारा ।
तिनको तुमहिं जाय लै आवहु दशरथ मित्र उदारा ॥
वृद्ध परमधार्मिक केकैपति श्वशुर भूप मणि केरो ।
सादर जाइ ताहि लै आवहु पुत्र सहित मत मेरो ॥

दोहा—महाभाग अंगाधिपति, रोमपाद जेहि नाम ।
राजसिंह सारो सुहृद, तेहि ल्यावहु यशधाम ॥
दक्षिण भूपति कौशला, भानुमान जेहि नाम ।
शूरशास्त्रविद मगधपति, दोउ नृप आनहु धाम ॥

छंद चौबोला ।

राजसिंह शासन अनुसर सब बोलेहु राजन काहीं ।
पूरब पश्चिम उत्तर दक्षिण जे माधि देशहु माहीं ॥
सिंधु और सौवीरहु सोरठ जे भूपति रणधीरा ।
न्योत पठावहु सकल महीपन बाकी रहैं न वीरा ॥
छोटे मोटे और भूप जे पृथिवी पीठ निवासी ।
सदल सबांधव आनहु तिनको सत्कारहु सुखरासी ॥
सुनिगुरु वचनसुमन्तयथोचित भूपति न्योति बोलायो ।
यथायोग्य भूपनके घर जन यथायोग्य पठवायो ॥
जनक आदि जे मुख्य महीपति तिनके आपुहि जाई ।
सादर नेउति सदल निज संगहि ल्यायो अवध लेवाई ॥
गुरुशासन जस भयो ठानितस सकलकर्म अधिकारी ।
कियो निवेदन सबै आइ ते लीजै नाथ निहारी ॥
अति प्रसन्न ह्वै गुरु वसिष्ठ तब पुनि पुनि कह्यो बुझाई ।

कोहु को दियो न खेल झेल करि राख्यो मेल सदाई ॥
दाता देइ अनादर करि जो तौ हठि होत विनासा ।
घरका सम्पति जाति वृथाहीं होत लोक उपहासा ॥
यहि विधि गुरु कहि परम प्रमोदित गये भवन मख आसी
देश देशके सकल महीपति आये लै धन रासी ॥
गुरु वसिष्ठ दशरथ पहँ चलि कै कह्यो सुनहु महराजा ।
आये वाजिमेध मख देखन सब धरनीके राजा ॥

दोहा—यथायोग्य कीन्ह्यों सविधि, मैं राजन सत्कार ।
भू भरतार तयार हैं, सकल यज्ञ संभार ॥
तुरत पधारहु यज्ञ गृह, सुदिन पूछि नरनाथ ।
हानि कौनिहूं वस्तु नहिं, सिद्धि करैं सुरनाथ ॥
देखहु चालि मख वस्तु सब, जस मन तस सब कीन ।
सुनि गुरु वचन महीपमणि, भये महा मुद भीन ॥
तब वसिष्ठ शृङ्गीऋषिहु, चरण वंदि महिपाल ।
सुदिन पूछि गमनत भये, मखशाला तेहि काल ॥
मखशाला प्रविशे सकल, मुनिजन शास्त्र विधान ।
करि आगू शृङ्गीऋषिहि, त्यों वसिष्ठ मतिवान ॥
यज्ञकर्म आरंभ किय, शास्त्रनके अनुसार ।
दीक्षित भयो भुवालमणि, सहित तीनिहूँ दार ॥

छंद चौबोला ।

यहि विधि ते अरम्भ वाजीमख भयो वसन्तहि काला ।
दिशा विजय करि यज्ञ तुरंगम आइगयो तेहि काला ॥
उत्तर सरयू तीर मनोरम होन लग्यो हययागा ।
शृङ्गीऋषि आगू करि मुनिवर करैं कृत्य बड़भागा ॥
वेद शास्त्र पारग धरणी सुर करहिं कृत्य सविधाना ।
कहुँ कहुँ अधिक कर्म करते द्विज यथा सिद्ध अनुमाना ॥

इन्द्र आदि देवनको दीन्ह्यो सावांध भूप मखभागा ।
आहुति परै न वेदीताजि कहुँ न कहुँ कर्मच्युत यागा ॥
कोउनहिं थकै कर्मकरते द्विज कोउनहिंक्षुधित देखाहीं ।
मूरख कोउ नहिं रह्यो विप्रवर असतपंथ नहिं जाहीं ॥
लाखन विप्र करत नितभोजन शूद्रहु नितप्रति खाते ॥
तापस अशन अनेकन करते खात यती सुखमाते ॥
बाल वृद्ध नारी जन रोगी यथा मनोरथ खाहीं ।
नितप्रति भोजन करहिं करोरिन देत तोष नृप नाहीं ॥
दश योजन को मखमंडल भो कोटिन मनुज वसंते ।
देहु देहु अस छाय रह्यो रव भोजन वसन अनंते ॥
देत हजारन कहत हजारन खात हजारन पाँती ।
अन्नकूट गिरि सरिस हजारन अशन हजारन भाँती ॥
दिन दिन दून दून भोजन हित बने विविध पकवाना ।
पुरुष नारि देशन देशन ते आवें नित नित नाना ॥

दोहा—अन्न पान सन्मान ते, सिगरे तोषित होत ।
स्वाद प्रशंसि प्रशंसि द्विज, नृप यश करत उदोत ॥

छन्द चौबोला ।

सब विधि हम संतुष्ट भये अस सुनत अवधपति वानी ।
परसहिं वसन विभूषण भूषित पुरुष नारि छबिखानी ॥
धारे कटक मुकुट कुंडल तनु विचरहिं देव समाना ।
देहु याचक मुख भाषत लेहु लेहु जन नाना ॥
कर्म अन्तर धरणी सुर करते हेतु विवादा ।
अपनी अपनी विजय चहत सब यथाशास्त्र मरयादा ॥
निज २ आसन बैठि बैठि द्विज नितप्रति कर्म कराहीं ।
करहिं अवाहन सकल देवतन भाग देन मख माहीं ॥
होता शृङ्गीऋषि वसिष्ठमुनि शिक्षा मंत्र विज्ञाता ।

पढ़ि पढ़ि मंत्र देत देवनको भाग सराग विख्याता ॥
सबै षडङ्ग वेद पाठक द्विज बहु श्रुत व्रती सुजाना ।
कारक वाद विवाद शास्त्र मत त्रयकालिक जिन ज्ञाना ॥
वेद शास्त्र विधि सबै निबाहक वाहक हयमख भारा ।
दाहक सकल शोक संसारिन गाहक गुणन उदारा ॥
सविधिरत्न मंडित बहु खंभन अति विशाल मखशाला ।
छाये वसन अनूपम जिनमें बँधे सुरभि सुममाला ॥
बड़े बड़े बहु रत्न चमङ्कत जिमि सप्तर्षि अकाशा ।
रंभ खंभ मण्डित अखंड अति तोरण तड़प तमाशा ॥
कौशल्या कैकयी सुमित्रा पतियुत कर्म कराहीं ।
वाजिमेध वाजी छवि राजी बँध्यो तुरंग तहाँहीं ॥

दोहा—पुनि तुरंगको विसस तहँ, कौशल्या करि दीन ।
किया होम करि प्राण वपु, दशरथ नृपति प्रवीन ॥

छन्द चौबोला ।

वेद विधान कियो मख राजा हीन कर्म कछु नाहीं ।
शृंगीऋषि अरु गुरु वसिष्ठ मुनि करवायो नृप काहीं ॥
प्राची दिशि होता कहँ दीन्ह्यो रघुकुल वंश प्रधाना ।
अध्वर्यहि पश्चिमदिशि ब्रह्महि दक्षिण दिशि मतिवाना ॥
उद्गातहि उत्तर दिशि दीन्ह्यो यज्ञ दक्षिणा भारी ।
अश्वमेध मख कियो समापत दै पुहुमी निज सारी ॥
यहिविधि सकल राज्य दै विप्रन भयो सुखी नरनाहू ।
मुनिवर आय विनय कीन्ह्यो पुनि यह हमरे उर दाहू ।
यह पृथिवी रक्षण में समरथ आपुहि एक भुवाला ।
हम ब्राह्मण जप तप व्रत जानैं लेब न मही विशाला ॥
निष्क्रयदेहु कछुक भूपति मणि मणिसुवरण पटगाई ।
सदा उग्र शासन रहिये प्रभु आपु सकल महि सांई ॥

सुनि द्विजवचन हर्ष भूपतिमणि निष्क्रय वरुशनलागे ।
दियो लाख दश सुरभी सुंदरि दान शील अनुरागे ॥
सौ करोरि मोहर पुनि दीन्हों मुद्रा चौगुन तासू ।
दियो ऋत्विजन विविध दक्षिणा हय गय वसन अवासू ॥
शृंगीऋषि अरु गुरु वसिष्ठ तहँ विप्रन कियो विभागा ।
हर्षि विप्र सब दै आशिष पुनि बोले युत अनुरागा ॥
सब विधि हम तोषित नरनायक अब नहिं आशहमारे ।
द्विज आशिष प्रभाव ते पूजें सब मनकाम तुम्हारे ॥

दोहा—आये देशन देश ते, जे याचक करि आश ।
दियो कोटि मोहर तिन्हैं, दारिद कियो विनाश ॥

छन्द चौबोला ।

दानि शिरोमणिदशरथ भूपति बैठि रह्यो जेहि काला ।
एक दरिद्री द्विज तहँ आयो बोल्यो वचन रसाला ॥
दानी दशरथ राज तुम्हें हम सुनियत है जग माहीं ।
करि मख कोटिन द्विजन दान दिय हमरे लेखे नाहीं ॥
पायो अनहु न हम तुम्हरे मख देहु होहु जो दानी ।
सुनत अवधनायक विहँसेअति लियो ताहिढिग आनी ॥
नवग्रहइव नवरत्न कलित कल कंकणरह्योजो हाथा ।
सो सादर पहिराइ दियो तेहि पुनि पुनि नायो माथा ।
योजन दश मख मण्डलअन्तर दश दिशिमच्योदकारा ।
मनुमहीप मणि महिमंडल ते दियो निकारि नकारा ॥
पुनि वन्दन कीन्हों द्विज वृन्दन अजनन्दन अविषादा ।
कोटिन विप्र वदन ते पायो कोटिन आशिर्वादा ॥
भयो कृतारथ यज्ञ यथारथ करि स्वारथ सिधि मान्यो ।
कछु न अकारथ भोधर्मारथ परमारथ हुलसान्यो ॥
शृंगीऋषिको बोलि अवधपति कह्यो वचन शिरनाई ।

कुलवर्द्धन अब करहु यज्ञ प्रभु जाते सुत हम पाई ॥
शृंगीऋषि तब कह्यो नरेशहि अब नहिं होहु दुखारी ।
पैहो परम प्रबल कुलनायक सब लायक सुत चारी ॥
सुनि मुनिवरके वचन अवधपति लह्यो महासुख धामा ।
मुनि पद पंकज बार बार किय दंड समान प्रणामा ॥
दोहा—शृंगीऋषि मेधा विमल, कियो दण्ड युग ध्यान ।
सावधान ह्वै नृपति सों, लाग्यो करन बखान ॥

इति सिद्धिश्रीसाम्राज्य महाराजाधिराज श्रीमहाराजा बहादुर श्रीकृष्णचन्द्र
कृपापात्राधिकारि श्रीरघुराज सिंह जू देव जी. सी. एस. आई कृते
श्रीरामस्वयम्बरे द्वितीयो यज्ञप्रबन्धः ॥ २ ॥

छन्द चौबोला ।

पुत्र इष्ट हम करब अथर्वण मंत्र सिद्धि जेहि माहीं ।
अति सुकुमार कुमार चार प्रभु देहैं हठि तुम काहीं ॥
अस कहि ऋषिन बोलि शृंगीऋषि पुत्र इष्ट आरंभा ।
लाग्यो करन वेदविद संयुत हवन कियो बिन दंभा ॥
भाग देन हित किय आवाहन सकल देवतन काहीं ।
प्रगट भये गन्धर्व सर्व परमर्षि सिद्ध सुर ताहीं ॥
लियो यथाविधि भाग देव सब भयो महा दरबारा ।
समय पाय विधि सों सिगरे सुर ऐसे वचन उचारा ॥
सुनहु पितामह तुव वर केवल रावण भयो बलीना ।
करत महाबाधा हम सबको अति व्याकुल करि दीना ॥
सुरपति सकत न शासन करि कछु रावणसों रण हारे ।
ह्वै प्रसन्न वरदान दियो तुम का सुर करहिं विचारे ॥
क्षमा करत तुव वर विचारि सुर को तुव वर नहिं मानै ।
ह्वै गो महाबली दशकन्धर तृण सम देवन जानै ॥

राजहि जीतन चढ़त देवपुर राज करत उतपाता ।
महा महासुर ब्रह्म ऋषिनसों वैर किये सुनु ताता ॥
पूरब एक समय ताको सुत जीति सकल सुरलोका ।
पकरि लियो वासव को रणमें दियो सबन सुरशोका ॥
अब पुनि चोपि चटक अमरावति चाहत करन चढ़ाई ।
पकरन चहत देवपतिको पुनि तुव वरकी प्रभुताई ॥

दोहा—गन्धर्वन देवन द्विजन, यक्षन ऋषिन प्रतक्ष ।
बार बार पीड़त रहत, तुव वर पाइ सपक्ष ॥
तापित तासु प्रताप ते, तपन तपित अति मन्द ।
बहतपवन ताके निकट, तेहि रुखराखि स्वच्छन्द ॥
दशशिर भ्रुकुटी कुटिललखि, तरलतरंग निकाइ ।
मानि भीति वारिध विशद, सर सम थिर ह्वै जाइ ॥

छन्द चौबोला ।

सुनहु देवपति सब देवनको रावणते अति भीती ।
महाघोर वरजोर लंकपति सकै कौन सुर जीती ॥
ताते अब कछु तासु वधनकी कीजै नाथ उपाई ।
ना तो सुर निवास हित दूसर दीजै स्वर्ग बनाई ॥
यहि विधिसब देवन पुकार सुनि करि विचारकरतारा ॥
बोल्यो वचन सभा मधि सुंदर सुनहुदेव युत दारा ॥
हंता दशकन्धर को यह जो वसत चराचर माहीं ।
और उपाय तासु वधकी अब समुझिपरत कछुनाहीं ॥
महा कठिन तपकरि दशकन्धर पूरब वर अस मांगा ।
यक्ष रक्ष दानव देवनसों अभय होहुँ सब जागा ॥
मैं ताको तप ताकि तुरत तेहि दीन्ह्यों अस वरदाना ॥
अवध होइ तैं सुरासुरन ते होइ बड़ो बलवाना ।
पै अज्ञानते मानि तुच्छअति नरते अभय न यांचा ॥

ताते मनुज हाथ ताकर वध ह्वै है यह मत साँचा ॥
चारि वदन के वदन विनिर्गत वचन सुनत ऋषि देवा ।
अति अपार आनंद मानि मन करन लगे विधि सेवा ॥
यहि विधि भाषत वचन परस्पर देव और कर्तारा ।
तेहि अवसर उत्तर दिशिमें अति होत भयो उजियारा ॥
धरणी गगन दशौ दिशि छायो कोटि भानु सम भासा ॥
सबके मूँद गये दृग तेहिक्षण देखि अपूर्व प्रकासा ॥

दोहा—तेहि प्रकाश के मध्य में, पीत वसन फहरान ।
खगनायकके पक्ष को, पवन प्रचण्ड बहान ॥

छन्द चौबोला ।

तेहि अवसर तहँ देव सभा मधि प्रगट भये जग स्वामी ।
अखिल चराचर जीव निवास निरन्तर अन्तरयामी ॥
शंख चक्र शारंग गदा नंदक सोहत भुज चारी ।
खगपति पीठि सवार उदार मनहुँ घनश्यामतमारी ॥
कटक मुकुट कुंडल अंगद भुज चरण कमल केयूरा ।
मेदुर मेघनघटा छटा तन काम कोटि मद चूरा ॥
पीत वसन फहरानि सुछविजिमि छन छवि घन छहरानी ।
अलकावलीलसतिमुखशशि जिमि जलदावलीनिरानी ॥
सोहत हार हिये हीरनको हिमकर सरिस विशाला ।
अंबरेख कौस्तुभ कदंब छबि पद प्रलंब वनमाला ॥
करुणा ऐन मैन मद मोचन नलिन नयन अरुणारे ।
दिवस रैन जिन सैन भैन प्रद कोटिन अधम उधारे ॥
कुण्डल लोल कपोल गोल पर लेत मोल मन काहीं ।
हँसनि अतोल अडोल देति सुख संयुत बोल सदाहीं ॥
कण्ठकान्ति कमनीय देखि भो कंबु अंबुको वासी ।
शिला नीलमणि भै जड़ तकिउर उडखग लखिचौरासी ॥

रम्भ खम्भ जंघन दुति देखत नशत जनत जग माहीं ।
चारु पदारविन्द जेहि सज्जन सुमन मलिन्द बसाहीं ॥
त्रिभुवन भूप अनूप रूप भव कूप उधारनहारा ।
अज अनादि अव्यक्त अनन्त अनेकनिधृत अवतारा ॥

दोहा—देखि देव जगदीशको, कीन्हे जयजयकार ।
वंदेअति सानन्द सुर, सहित शंभु करतार ॥

छन्द चौबोला ।

ब्रह्मा शङ्कर सुर सुरेश ढिग चलि आये जगदीशा ।
करन लगेस्तुति चहुँ दिशि सुर धरे चरणमहँ शीशा ॥
प्रस्तुति करि सम्पन्न नाथकी लखि प्रसन्न सबदेवा ।
बोले वचन भयातुर कातर करत चरणकी सेवा ॥
त्राहि त्राहि शरणागत आरत आरति हरहु मुरारी ।
तुव रोपित पादपरण दाहत यह दशवदन दवारी ॥
वासुदेव हे विष्णु विश्वपति जग मंगल अब कीजै ।
सुर सांकरे सहायक दीनन दया दान द्रुत दीजै ॥
तुमहिं न कछु सिखवनके लायक केवल सुरति करावैं ।
जब जब महा होति भय देवन तब तब तुम पहँ धावैं ॥
देवनकी विनती सुनि जगपति लेहु मनुज अवतारा ।
धर्म अधार उदार अवधपति होवहु तासु कुमारा ॥
जाको तेज महर्षि सरिस जग विदित सु दशरथ राऊ ।
शान्त दान्त वेदान्तन पारग चाहत तुवसुत भाऊ ॥
श्री कीरति लज्जा इव जाकी लसहिं तीनि महरानी ।
तिनहीं के सुत होहु चारि वपु सुन्दर शारँगपानी ॥
नर अवतार धारि जगनायक करहु सुरन कर काजा ।
सकल लोक कंटक लंकापति हनहु होहु रघुराजा ॥
सो अवध्य देवनके करते सिद्ध ऋषिन दुखदाई ।
गंधर्वन यक्षन विद्याधर जीत्यो सुर समुदाई ॥

दोहा—रावण को सुनि नाम सुर, करत परावन साथ।
दशकंधरके कंधरन, करहु माथ बिन नाथ ॥

छन्द चौबोला।

गाढ़ो गर्व देव गंधर्वन सर्वन करत दुखारी।
महामूढ़ मदमत्त मोहरत बाधत बिबुध हँकारी ॥
पुण्यजीव जे स्वर्ग बिहारी नंदनवन संचारी।
सुर सुंदरी संग विहरत जे हरत तासु हठि नारी॥
मुनिवर निरत महातप कानन पंचानन इव नासैं।
बरबस धरत अप्सरन मगमहँ सून करत सुरवासै ॥
तुम रक्षक शरणागत पालक दूसर हग न देखाता।
जगभावन पावन सुखछावन रावन करहु निपाता ॥
सुर मुनि गुनि समरथ जगनायक परे शरणमहँ आई।
तुम त्राता दाता अभीत के माता पिता सदाई ॥
देव यक्ष गंधर्व सिद्ध मुनि आरत वचन पुकारैं।
तुमहिं छोड़ि यहि काल काल इव को दशमुख संहारैं॥
तुमहीं हो सब देवन के गति जगपति विपति विनाशी।
नाथ परमतप तुमहिं परमतप सन्तापित सुखराशी ॥
आशु अमरपति हनन अमरअरि अवनिचरण मनदीजे।
लीला ललित लाभ लोगन को मनुज लोक महँ कीजे ॥
यहि विधि सुनि देवनकी वाणी हर्षित शारँगपानी।
सर्व लोक वंदित रण पंडित मंडित शोभ अमानी ॥
सुरा सुराधिप चराचरा कर नारायण जगस्वामी।
विधियुत सकल सुरन सों भाष्यो सब उर अन्तरयामी ॥
दोहा—सुनहु त्रिदश अस वचन मम, धर्मविवश सति मानि।
भीति रीति त्यागहु सबै, जीति आपनी जानि ॥

छन्द चौबोला ।

तुम्हरे हितहि हेत हम हरवर करि आहव अति घोरा ।
जाति नाति सुत सचिव सुहृद युत भ्रात नात वरजोरा ॥
पूर क्रूर दशकंठ कदन करि तब विकुण्ठ कहँ जैहौं ।
सुर सज्जन गो द्विज पालन करि धरा सुधर्म चलैहौं ॥
एकादश सहस्त्र संवत कोशलपुर होहुँ निवासी ।
देहौं सानुकूल सुख सन्तन सुर द्विज कंटक नासी ॥
यहि विधि कहि सिगरे देवन सों मधुर वचन भगवाना ।
मनुज लोक अवतार लेन को कीन्ह्यों मनहिं विधाना ॥
अवधपुरी निज जन्म भूमि करि रघु कुल करहुँ प्रकासा ।
अस विचारि है विष्णुचारि वपु हरन देव मुनि त्रासा ॥
कियो विचार चारि भुज दशरथ होवैं पिता हमारे ।
तीनि बंधु बाँकुरे विजयकर समर शूर अनियारे ॥
प्रभु के वचन सुनत सुर मुनिगण मानि महा मुदरासी ।
सहित स्वयंभु शंभु हरषे अति प्रस्तुति विमलप्रकासी ॥
तहँ गन्धर्व लगे कल गावन नचहिं अप्सरा नाना ।
पायो मनहुँ लाभ जीवन को मिले सकल सुरथाना ॥
पुनिपुनिकरहिंदण्डवतप्रभुकोपुनिपुनिमिलहिंसुखारी ।
पुनिपुनि प्रभुको विनयसुनावत गुनिगुनिगिराउचारी ॥
करुणा सदन वदन अवलोकत कोटि मदन मदहारी ।
करहु ऐसही सही नहीं अब दीजै सुरति विसारी ॥

दोहा—हम अनाथ तुम नाथ हौ, कीजै अवशि सनाथ ।
धरहु माथमें हाथ अब, सुनि विनती सुख गाथ ॥

कवित्त ।

महा मदवारो देव दर्पन दलनवारो उग्रतेजवारो शक्रशत्रु सानवारोहै ॥
विधिवरवारो लङ्कनगरीनिवासवारो सदाजयवारो युद्धकबहूँ नहारोहै ॥

रावणकोमारो प्रभु कुलपरिवारो युत रोदन करायो साधुदेवबहुवारोहै ॥
सुयशपसारो पुनिधामकोपधारो निज रावरेसोंकौन रघुराजरखवारोहै॥

छन्द चौबोला ।

दीनन के पारायण श्रीनारायण सुनि सुर बैना ।
जानत रहे सुने सब कारन तदपि मानि मुद ऐना ॥
गह्यो गिरा गीर्वाणन सों गुणि बहुरि बतावहु बाता ।
कौन उपाय पाय सुर ऋषि गुणि करहिं लंकपति घाता ॥
सुनत विष्णु के वचन अमरगण कह्योचरण शिरनाई ।
मनुज रूप धरि दशरथ सुत ह्वै नाशहु राक्षस राई ॥
रावण परम भयावन संगर करि सबन्धु संहारा ।
करहु पुनीत पुहुमि पदरज सों ह्वै अवधेश कुमारा ॥
पूरव कियो तीव्र तप रावण सहसन वर्ष सनेमा ।
ह्वै प्रसन्न ब्रह्मा वर दीन्ह्यो पायो शठ अति क्षेमा ॥
यद्यपि सबके पूर्वज लोकन कर्त्ता है करतारा ।
रावण के वर देत माहिं कछु कियो न मनहिं विचारा ॥
अति तोषित दीन्ह्यो अनेक वर तैं अवध्य सुर हाथा ।
तोहिं भीति काहू ते है नहिं मम वर वश दशमाथा ॥
मानि मर्कटन मनुज नीच अति तिनहिं दियो बिसराई ।
लहि विरंचि वर महा दर्प भरि बस्यो लङ्क गढ़ जाई ॥
जीत्यो यम कुबेर वरुणहु को सुरपुर करी चढ़ाई ।
सकल राक्षसन देवन सों तहँ अतिशय परी लराई ॥
तासु तनय घननाद महारथि समर शक्र गहि लीन्हो ।
रावण अपनो शासन सुरपुर फेरि सकल थल दीन्हो ॥

दोहा—कपि नर कर माँग्यो नहीं, अभय हमारे भाग ।
तातें मानुष रूप धरि, करहु घात बड़भाग ॥

छन्द चौबोला।

नाथ करत अब महा उपद्रव हरत तुरत सुरदारा
राखि राखि राक्षस थल थल में तीनिहु लोक उजारा॥
जानहु सब कारण सुरनायक पूछहु कस जनु भोरे।
विबुध विप्र मुनि धेनु धर्म गति लगी हाथ अब तोरे॥
सुनि देवन के वचन विष्णु प्रभु पुनि पुनि मनहि विचारे।
धरा धर्म आधार अवधपति होवैं पिता हमारे॥
दशरथ तनय होब निश्चय करि विधि सों माँगि विदाई।
अन्तर्धान भये जगनायक मुद महर्षि उपजाई॥
पुत्र इष्टि सुत हीन अवधपति करन लग्यो तेहि काला।
हवन करत विधि मंत्र सहित शृङ्गीऋषि तेज विशाला॥
तहँ यजमान भूपके सन्मुख हवन कुण्ड ते प्यारो।
अतुलित प्रभा महाबल सुंदर तीनि लोक उजियारो॥
श्याम शरीर अरुण अंबर तनु दृग विशाल अरुणारे।
सोहत हरित मूछ शिर केश सुवेश रोम तनु सारे॥
भयो उदित मन विमल दिवाकर दिव्य विभूषण धारी।
उन्नत शैल शृङ्ग सम अंग अनंग हेरि हिय हारी॥
दर्पित शार्दूल सम विक्रम लक्षण लक्षित आछे।
कर में कनक थार लीन्हें कटि कनक काछनी काछे॥
परमदिव्य पायस सों पूरित रजत पात्र ते ढांपी।
मनहुँ अङ्क कीन्हें निज नारी प्यारी छवि में छापी॥

दोहा—लपटन मधि वर लपट सों, दश दिशि करत प्रकास।
लिये थार माया मयी, मानहु रूप हुतास॥

छन्द चौबोला।

पायस चरी पुरुष थारी लै दोऊ पाणि पसारे।
कह्यो वचन भूपति दशरथ सों मानहु बजत नगारे॥

प्राजापत्य पुरुष मोहिं जानो तुव हित लेतहि आयो ।
तब करजोरि कह्यो कोशलपति हे प्रभु भले सिधायो ॥
कहहु प्रसन्न वदन अब मोसन करहुँ कौन सेवकाई ।
प्राजापत्य पुरुष तब बोल्यो बार बार मुसकाई ॥
देवनको पूजन तुम कीन्ह्यो ताको फल यह आयो ।
धन अरोग वर्द्धन सुतदायक तुव हित देव बनायो ॥
लेहु दिव्य पायस भूपतिमणि दीजै रानिन जाई ।
अवशि पाइहौ चारि पुत्र तुम जेहि हित यज्ञ कराई ॥
जे अनुरूप पट्टरानी तव तिन भोजन हित दीजै ।
पाय प्रबल सुत चारि चक्रवर्ती महिराज करीजै ॥
तब नरेश अतिशय प्रसन्न ह्वै शिरधरि लीन्हों थारी ।
देवदत्त देवान्न प्रपूरित कनकमयी छबि वारी ॥
प्राजापत्य पुरुष चरणन को वंद्यो वारहिं बारा ।
जन्म रङ्क जिमि लहै देव तुम तिमि सुख लह्यो अपारा ॥
तीन पुरुष को दै परदक्षिण भयो कृतारथ राजा ।
सोऊ अन्तर्धान भयो करि अवधराज कर काजा ॥
पुत्रइष्टि अद्भुत करि भूपति किय समाप्त सविधाना ।
बजन लगे तब अवध नगरमें थल थल निकर निसाना ॥

दोहा—उयो मनहुँ अन्तहपुरहि, शारद मोद मयङ्क ।
भूपति कांता कुमुद गण, विकसत भये निशङ्क ॥

छन्द चौबोला ।

कनक थार लै भू भरतार अपार अनंद प्रकासा ।
सजल नैन पुलकित शरीर द्रुत गौरनिवास अवासा ॥
वचन कह्यो अति मंजु मनोहर कौशल्या गृह जाई ।
सुमुखि सयानि लेहु यह पायस सुतदायक सुखदाई ॥
दियो अर्द्ध पायस कौशल्यहि जौन अर्द्ध रहि गयऊ ।

तामें अर्द्ध सुमित्रहि दीन्ह्यो अर्द्ध युगल करि दयऊ ॥
आधो दियो कैकयी को नृप पुनि आधो जो बाँचो।
बहुरि विचारि सुमित्रहि दीन्ह्यो तासु नेह महँ राँचो ॥
यहि विधि भाग विभाग दियो करि सानुराग महिपाला।
भई सकल सनमानवती ते पायस पाय उताला ॥
उत्तम अवध नृपति महरानी मनकी तजी गलानी।
उदय अपूरब आनँद उर में भई सकल छविखानी ॥
कौशल्या कैकयी सुमित्रा पायस भोजन कीन्ह्यो।
भानु कृशानु समान तेज सब उदर गर्भ धरि लीन्ह्यो ॥
गर्भवती युवती अपनी लखि पूरण काम नरेशा।
बसत भयो सानंद अवधपुर सरयू दक्षिण देशा ॥
राज्यो अवध भुवाल काल तेहि रूप विशाल रसाला।
सुर सुरपाल महर्षि माल मधि जिमि कृपाल जगपाला ॥
देव सरिस दुति देह प्रकाशी अनुपम आनँदरासी।
पुत्र उछाह लखनके आशी भये अवधपुर वासी ॥

दोहा—देवन हित भूपति भवन, किय हरि गर्भ निवास।
को दयालु अस दूसरो, जैसो रमानिवास ॥
भये गर्भ गत विष्णु जब, दशरथ भवन मुरारि।
तब सब देव बोलाइकै, कह्यो वचन मुखचारि ॥

छन्द चौबोला।

जन्म लेत जगपति भूपति गृह रावणके वध हेतू।
महावीर रणधीर धर्म धुर धारण करि खगकेतू ॥
तुम सब तासु सहाइ हेत हित धरहु कपिन अवतारा।
कामरूप अरु महाबली वपु बली वदन आकारा ॥
महाशूर मायाविद पूर प्रभंजन वेग प्रचंडा।
नीतिदक्ष मतिवन्त स्वच्छ प्रत्यक्ष रक्ष कृत खण्डा ॥

महादुरासद दुराधर्ष रण हर्ष अमर्ष
सब उपाय ज्ञाता तनु त्राता मृगपति रूप कलापी ॥
सर्व अस्त्र ज्ञाता गुणधाता सुधापान इव कीने ।
रामकाज हित होहु जाइ कपि अमर अनन्त प्रवीने ॥
मुख्य अप्सरा अरु गन्धर्वी त्यों देवनकी दारा ।
विद्याधरी किन्नरी नामा त्यों वानरी अपारा ॥
यक्षसुता अरु ऋक्षतियनमें जनमहु अमित कुमारा ।
बल विक्रम बुधि तुल्य आपने वानर रूप अपारा ॥
ऋक्ष प्रधान सुजाम्बवान इक मैं सिरज्यो बलवाना ॥
पूरब एक समय जमुहातहि मम मुख कढ्यो महाना ॥
सुनि विरंचिको शासन सुरगण एवमस्तु कहि वानी ।
सिरजत भये पुत्र अपने सम वानर वपु बल खानी ॥
ऋषि विद्याधर सिद्ध महोरग चारण आदिक देवा ।
सिरजत भये कुमार कीश वपु करन रामकी सेवा ॥

दोहा—वासवको सुत होत भो, वाली वानर राज ।
इसु भ्रात सूरज सुवन, भो सुग्रीव दराज ॥

छन्द चौबोला ।

भयो कुमार देवगुरु को तहँ तार नाम बलवाना ।
महामुख्य मर्कट मण्डलमें महाबीर मतिमाना ॥
भयो कुबेर कुमार गन्धमादन बलबुद्धि निधाना ।
भयो विश्वकर्मा कुमार नल नाम कीश बलवाना ॥
पावक पुत्र नील नोखो कपि पावक तेज प्रकाशी ।
भयो वानरी महा वाहिनी सैनापति बल राशी ॥
पुनि अश्विनीकुमार कुमार भये युग द्विविद मयंदा ।
पितु सम उभै परम शोभाकर मानहुँ मत्त गयंदा ॥

जन्यो सुषेण नाम वानर यक वरुण देव जलराई।
जन्यो पुत्र परजन्य सरभ कपि जेहि विक्रम विपुलाई॥
मारुतको औरसकुमार भो महाबली हनुमाना।
अतिशुभांग वज्रांग सांग बल जेहि यव गरुड़ समाना॥
सकल वीर वानरी वाहिनी बुद्धि शिरोमणि साँचो।
दोरदण्ड बल अण्ड खण्ड बरिवण्ड लीक विधि खाँचो॥
औरहु बहुत देव सिरजे कपि निज बल बुद्धि समाने।
दशकन्धर वध निरत सबै कपि संगर शूर सयाने॥
महाबली विक्रम विक्रांत क्रांत मन्दर गिरि कीन्हे।
सकल कामरूपी मायावी रण रिपु पीठि न दीन्हे॥
महामेरु मन्दर संकाश प्रकाशित विशद शरीरा।
ऋक्ष और गोपुच्छ छिप्र सब प्रगट भये रणधीरा॥

दोहा–जौन देवको रूप जस, यथा पराक्रम ओज।
पृथकपृथक् तस तस अमर, प्रगटे मंडित मोज॥
गोलांगूलनमें जने, निज सम सुत बहु देव।
कोउ ऋक्षनमें प्रगट भे, कोउ किन्नरी तदेव॥

छन्द चौबोला।

कोउ अप्सरन मुख्य प्रगटे कपि विद्याधरमहँ सोऊ।
कोउ पन्नग कन्या गन्धर्वी तथा किन्नरिन कोऊ॥
देव महर्षि सिद्ध गन्धर्वहु चारण नागहु यक्षा।
सिद्ध किंपुरुष विद्याधर गण तारक उरग प्रतक्षा॥
जने सकल निज निज सम बल सुत हृष्ट तुष्ट बल पुष्टा।
महा भीम काया जिन केरी अरिगण पर अति रुष्टा॥
जब चाहैं तब करैं रूप तस बहु वानर वनचारी।
शार्दूल अरु सिंह दर्पतन पादप शिला प्रहारी॥

नख अरु दन्त अस्त्र हैं जिनके सकल अस्त्र के ज्ञाता ।
मन्दरमेरु डुलावन वारे महा द्रुमन उतखाता ॥
करत क्षोभ निज वेग वारिनिधि पद क्षिति दारन हारे ।
एक फलङ्कहि करत महोदधि गगन गैल गतिवारे ॥
खंडत घन घमंड भुज दंडन पकरैं शुंड वितुंडा ।
गिरहिं गगनचर घोर शोर सुनि मनहु फटत ब्रह्मंडा ॥
ऐसे पवन वेगके मर्कट कोटि कोटि प्रगटाने ।
कोटि कोटि यूथप तिनके भे कोटि कोटि अधिकाने ॥
विन्ध्य मेरु मन्दर हिम भूधर कन्दर अन्दर वासी ।
और अनेकन अवनि चरण में कानन केलि प्रकासी ॥
सूरज सुवन सुकण्ठ शक्र सुत वालि भये दोउ भाई ।
महाबली वानर वसुधापति करैं कीश सेवकाई ॥

दोहा—तार सुषेणहु नील नल, पनस ऋषभ बलवान ।
जाम्बवान आदिकन में, हनूमान परधान ॥

छन्द चौबोला ।

सिगरे समर विशारद कपि वर गरुड़ गर्व गतिहारी ।
विहरत विपिन हनत गज सिंहन महाभुजग भयकारी ॥
कपिकुलपालक महाबाहु वर वाली भयो अधीशा ।
पाल्यो मर्कट ऋक्ष सैन्य निज भुजबल मनहुँ दिगीशा ॥
महाशूर वानरी सैन्य सों पूरित भै सब धरणी ।
कानन कुधर सिंधु सरिता सर वसे करत कुल करणी ॥
मेघघटासे शैल छटासे कूरन करत कटासे ।
सिंह सटासे फटिक अटासे फेरत पुच्छ पटासे ॥
महाभीम बल सीम धीम नहिं शाखामृग बहुताई ।
महि मंडलमें छाय रही करिबे हित राम सहाई ॥

श्रीमद्रामायणके अनुसर इतनी कथा वनाई ।
मेरोइष्टदव रामायण सज्जन अति सुखदाइ ॥
वेद समान जासु महिमा महि मानत देव ऋषीसा ।
चौविस सहस एक आखर जेहि करत महाअघ खीसा ॥
आदि काव्य ब्रह्मा वरदानिन तेहि सम दुतिय न कोई ।
श्रीवैष्णव मंडली परमधन सब मत संमत सोई ॥
गुरु निदेश मोंहि पाठ करनको वालकांड पर्य्यन्ता ।
ताते वालकांड विस्तृत मैं विरचौं कथा सुसन्ता ॥
तुलसिदास भाषा रामायण रच्यो सन्त सुखदाई ।
महामनोहर आशु प्रसादक संमत वेद सदाई ॥
दोहा—जहँ तहँ तासु प्रबंध लै, ताहूके अनुसार ।
रामस्वयंवर रचहुँ मैं, जन्म व्याह विस्तार ॥

इति सिद्धि श्रीसाम्राज्य महाराजाधिराज श्रीमहाराजा बहादुर श्रीकृष्णचन्द्र कृपापात्राधिकारि श्रीरघुराज सिंह जू देव जी. सी. एस. आई कृते श्रीरामस्वयंवरे अवतारप्रसंगे तृतीयप्रबन्धः ॥ ३ ॥

सोरठा ।

रामायणको मूल, वाल्मीकि नारद मिलन ।
प्रश्न कियो अनुकूल, उत्तर दीन्ह्यों देवऋषि ॥
रामायण जग माहिं, अहैं देव मुनिकृत बहुत ।
अस प्रसिद्ध कोउ नाहिं, वाल्मीकि कृत जस विमल ॥
रह्यो न कवि अस नाम, वाल्मीकि जबलों न जग ।
जब अवतर्‌यो उदाम, वाल्मीकि मुनि आदि कवि ॥
दोहा—वाल्मीकि मुखते लियो, जो वेदन अवतार ।
सोइ रामायण नाम भो, हरिभे भूप कुमार ॥
ताको कारण सो भयो, सकल वेद मर्याद ।

वाल्मीकि नारदहु को, भयो विमल संवाद ॥
सबते वर पर सबहिते, को सब गुणकी खानि ।
कौन आज यहि लोकमें, नारद कहहु बखानि ॥
वाल्मीकि पूछो जबहिं, तब नारद चितचाय ।
कह्यो गुणाकर जानु मुनि, हैं इक रघुकुल राय ॥
गुण वर्णनके व्याजते, हुलसत देव ऋषीश ।
वरण्यो रामायण सकल, नाय राम पद शीश ॥
रामायण सोइ मूल है, पढ़तहिं पाप परात ।
परमारथ पर पुर सुपथ, पद पद प्रेमहि पात ॥
मैं कीन्ह्यों कोशलनगर, वर्णन मति अनुसार ।
भयो जौन कारण अवध, नारायण अवतार ॥
भूपयज्ञ वानर जनम, आदिक बहु इतिहास ।
वाल्मीकि मुनिकी कथा, कियो न कछुकप्रकास॥
जेहि विधि रामायण रच्यो, जस प्रण कारण जौन।
जस गलानि विधि वानि जस, अब मैं वरणौं तौन ॥

छंद चौबोला ।

वाल्मीकि सुनि नारद मुखते वचन परमसुख पायो ।
करि अर्चन उपचार अष्ट युग चरणकमल शिरनायो ॥
लहि महर्षि सत्कार अपार प्रमोदित देव ऋषीशा ।
हरि गुण गावत बीन बजावत चल्यो सुमिरि जगदीशा ॥
जानि प्रभात महर्षि गयो मज्जन हित तमसा तीरा ।
जो सुरसरिके निकट बहति मर्कत सम नीर गँभीरा ॥
वाल्मीकि को शिष्य विचक्षण भरद्वाज जेहि नामा ।
लै मुनि वसन कलश कुश आदिक गयो संग मतिधामा ॥
तमसातीर जाय निज शिष्यहि तट लखि कह मुनिराई ।

भरद्वाज सुन विगत पंक यह तीरथ ऋषि सुखदाई ॥
अति रमणीय स्वच्छ निर्मलजल ज्यों मन सन्तसदाहीं ॥
धरहु कलश वल्कल मोहिं दीजै मज्जन करौं इहाँहीं ॥
उत्तम तमसा तीर्थ दुरितहर मम मानस सुखदाई ।
सुनि गुरुवचन दियो वल्कल तहँ भरद्वाज मुनिराई ॥
शिष्य पाणि ते लै वल्कल निज इन्द्रियजित मुनिनाथा ।
विचरन लाग्यो विपिन विलोकत रह्यो न तहँ कोउ साथा ॥
तमसा के विपुल पुलिन में लख्यो करांकुल जोरा ।
विहरत मिथुन भावमहँ अतिरत करत मनोहर शोरा ॥
तब निषाद आयो इक पापी मुनिके लखत तहाँहीं ।
मारचो मिथुन विहंग बाण इक मरचो क्रौंच क्षणमाहीं ॥

दोहा—लगत बाण तलफत विहँग, परचो सशोणित गात ।
हत पति देखि करांकुली, रोदन कियो अघात ॥
अरुण शीश वेधित विशिख, पुनि पुनि रमण निहारि ।
सहचारी पतिहीन तिय, रोई करुण पुकारि ॥
रोवत निरखि करांकुली, हतपति कीन निषाद ।
वाल्मीकि मुनिराजको, उपज्यो विपुल विषाद ॥
करुणा वरुणालय ललित, अतिशय मृदुल स्वभाव ।
सजल नयन मंजुल बयन, बोलत भे ऋषिराव ॥
अति अधर्मनहिं सहि सके, मुनि करुणा रसभीन ।
अतिशय दुखी करांकुली, देख्यो कंत विहीन ॥
वाल्मीकि भाष्यो वचन, तेहि निषाद प्रति जौन ॥
छंदरूप है शारदा, प्रकट भई भव तौन ॥
पूर्व रही नहिं छंद गति, रही गद्यमय वानि ॥
युग षोडश अक्षर विमल, छंद अनुष्टुप जानि ॥

यद्यपि साधारण कह्यो, वाल्मीकि मुनिराज ॥
छंद अनुष्टुप वचन ते, प्रगट्यो द्रुतहि दराज ॥
जानि शारदा रूप तिहि, छंद मूल सम वेद ।
कियो न भाषा छंदमें, अवगत आर्ख अभेद ॥

श्लोक—मा निषाद प्रतिष्ठान्त्वमगमः शाश्वतीस्समाः ।
यत्क्रौञ्च मिथुनादेकमवधीः काममोहितम् ॥ १ ॥

अर्थ-हे निषाद ! बहुत वर्ष लौं तुम प्रतिष्ठा न पावो काहेते, कामते मोहित मिथुन भावको प्राप्त, ऐसे एक क्रौंचको तुम वध कियो ॥

दोहा—अस बत्तिस अक्षर कढ़े, छंदबद्ध सुश्लोक ।
मनि तेहि भाषि निषाद कहँ, पुनि विचारि किय शोक ॥

छंद चौबोला ।

वचन अनुष्टुप छंदबद्ध सो मुनि चित चर्चन लागे ।
अति शोकारत सकुनि देखि मैं काह कहों दुख पागे ॥
चिंतत बार बार चितमें मुनि बहुरि बुद्धि यह आई ।
छंदबद्ध अश्लोक भयो यह राखहुँ नाहिं छिपाई ॥
वाल्मीकि ऐसो मनमें गुणि भरद्वाज कहँ बोली ।
कह्योवचनअतिशयउर विस्मितनिजआशयसबखोली ।
कह्यो जो मैं हतविहँग विलोकत भरि करुणा सविषादै ।
छंदबद्ध सोइ वचन कढ़्यो मुख बलित वेद शुभ पादै ॥
अक्षरसम तंत्री लय संयुत परम मनोहर बैना ।
भयो शोक अश्लोक कहत मम और कछू यह है ना ॥
करो कंठ भूलन नहिं पावै कारण कछुक देखाता ।
भरद्वाज किय कंठ तबै गुरु भे प्रसन्न अवदाता ॥
तब तमसा तीरथ करि मज्जन नेम निबाहि सशोका ।
चल्योसपदि निज आश्रमको मुनिसुमिरतसोइअश्लोका ॥

भरद्वाज निगमागम ज्ञाता मुनिको शिष्य विनीता ।
भरि जल कलश कंध धरि पाछे चल्यो चटक जगमीता॥
सहित मुनि धर्म धुरंधर आसुहिं आश्रम आये ।
कथत बहु कथा वृथा नहिं चित अश्लोक लगाये॥
वाल्मीकि के देखनके हित चतुरानन चलि आये ।
सकल लोक करता जगभरता तहँ अति तेजहिं छाये ॥

दोहा—लखि महर्षि उठिचलि कछुक, वंद्यो विधि पदकंज ।
बैठे सन्मुख जोरि कर, मौन भरे मनरंज ॥
पुनि महर्षि उठि हर्षि अति, पाद्यार्घासन दीन ।
दै प्रदक्षिणा पूजि विधि, सादर वंदन कीन ॥
पूछि कुशल मुख चारिको, बार बार शिरनाइ ।
आसनमें बैठाइ विधि, बैठ्यो शासन पाइ ॥

छन्द चौबोला ।

प्रमुदित बैठ्यो जबै पितामह लोक ओक करतारा ।
मुनि सशोक अश्लोक विचारत कछु नहिं वचन उचारा ॥
मनहिं विचारत व्याध अकारथ बध्यो विहंगम काहीं ।
रह्यो मनोहर शोर करत खग अपराधहु कछु नाहीं ॥
दुख रंगिनि लखि तासु विहंगिनि मैं जो कह्यों निषादै ।
शोक सोइ अश्लोक कढ्यो मुख चारि समान सुपादै ॥
यहि विधि सोचत लखि महर्षि को हर्षि सुवर्षि अमीको ॥
कह्यो वचनविधि विहँसिकियोमुनि यह अश्लोकहिंनीको॥
ममप्रसाद ते प्रगट भई यह सरस्वती मुख तेरे ।
यहि विधि रचहु महामुनि मंजुल रामचरित्र घनेरे ॥
धर्मधुरंधर सकल गुणाकर लोक विशारद रामा ।
रचहु चरित तेहि सुन्यो यथा तुम नारद मुख सुखधामा ॥

राम लषण सिय चरित मनोहर रजनीचर गण केरो।
गुप्त प्रकाशित चारु चरित सब जून नवीन घनेरो॥
अविदित विदित विदित सब ह्वै हैं हस्तामलक समानो।
मृषा वचन यहि काव्य रचन में नहिं ह्वै है सति जानो॥
मुनिवर रचहु दिव्य रामायण रामकथा मनहारी।
यही अनुष्टुप् छंदबद्ध करि औरहु छंद उचारी॥
गंगा सरयू सोन कलिन्दी धारा धरा प्रचारा।
जब लगि ध्रुव अरु भू अरु भूधर रहै सकल संसारा॥

दोहा—तव लगि रामकथा विमल, तव निर्मित मुनिराय।
चलि है चारु विचारु विन, तीनि लोक लों जाय॥
जबलगि रामायण कथा, चलिहै निर्मित तोरि।
तब लगि तुम मेरे भवन, बसिहौ आशिष मोरि॥
पुनि ऊरध गति होहुगे, बसिहो विमल विकुण्ठ।
हरिलीला रस मगन मन, कबहुँ न तुव मति कुण्ठ॥
वाल्मीकि सों अस वचन, हर्षित कहि करतार।
तहँ अन्तर्हित ह्वै गये, गये ब्रह्म आगार॥

छन्द चौबोला।

मुनि स्वयंभु के वचन शिष्य युत मुनिवर विस्मय छाये।
सकल शिष्य अश्लोक सोइ तहँ बार बार मुख गाये॥
चतुर पाद सम अक्षर मंजुल बहु विधि अर्थ समाते।
अतिशय प्रीति प्रमोदहिं पूरित गावत नहीं अघाते॥
विहँग शोक सुश्लोक भयो सोइ वाल्मीक करुणाई।
रामकथा को मूल मनोहर कवि जीवन सुखदाई॥
पुनि रामायण रचन हेतु तहँ मुनिवर मनहिं विचारयो।
यही अनुष्टुप रीति रामयश निर्माणन निरधारयो॥

मंजुल पद बहु भाँति अर्थ युत पूर्ण प्रबन्ध उदारा ।
रच्यो मुनीश विमल रामायण उद्धारक संसारा ॥
सम अक्षर अश्लोक अनेकन जेहि यश जग उजियारा ।
महायशी सुमहर्षि हर्षि उर रच्यो चरित्र अपारा ॥
सकल समास सन्धि षट्कारक बहुविधि क्रिया कलापा ।
भाव व्यंग्य धुनि रस संचारी स्थायी विषम अमापा ॥
उक्ति युक्ति प्रत्युक्ति मुक्ति गति वचन विलक्षण जामें ।
शब्द मनोहर अर्थ मनोहर पूर्ण प्रबन्ध उदामें ॥
वाल्मीकि सब शिष्य बोलि तहँ कह्यो सुनौ मम प्यारे ।
विधि निदेश रामायण वरणों जागे भाग्य हमारे ॥
रघुनन्दन जानकी सुयश अस दशमुख सकुल निपाता ।
सेतुबन्ध भूभार हरण हरि औरहु चरित विख्याता ॥

दोहा—करहुँ रचन आरम्भ अब, रामायण परबन्ध ।
मन उल्लास विकास करि, मंजुल छन्द निबन्ध ॥

सोरठा—यहि विधि कियो विचार, रामायण निर्माणहित ।
जेहि विधि सुन्यो उदार, नारद मुनिके वदन ते ॥
वाल्मीकि मुनिराय, त्रैलोकज्ञ कृतज्ञ वर ।
धर्मज्ञन समुदाय, धर्मरेख जाकी विदित ॥

दोहा—चरित सु रघुकुल चन्दके, मुनिवर कियो विचार ।
दुविध प्रगट अरु अप्रगट, संक्षेपहु विस्तार ॥
धर्म धुरन्धर धीरमणि, वीर विदित रघुवीर ।
तासु विचित्र चरित्र वर, कथत हरत हठि पीर ॥
आसन रचित पूर्वाग्र कुश, करि आचमन मुनीश ।
रचन हेत रघुवर चरित, नाइ शीश जगदीश ॥
बैठ्यो करत विचार मुनि, सुमिरि राम करजोरि ।

निश्चल लगी समाधि मन, गयो राम रस घोरि ॥
राम लषण अरु जानकी, श्रीदशरथ महिपाल ।
कौशल्यादिक रानि गण, संयुत राज विशाल ॥
हँसित वदित हुलसित नमित, चेष्टित चारु चरित्र ।
आदि अन्त देखो पढ्यो, सकल यथावत चित्र ॥
सत्यसिंधु रघुवंश मणि, सीता लषण समेत ।
कियो चरित जो विपिनमें, देख्यो सकल सचेत ॥
भयो जौन जो होइ गो, वर्तमानहै जौन ।
करामलक सो लखत भो, योग दृष्टि ते तौन ॥
देखि यथावत चरित सब, ज्ञान योगकी दीठि ।
रचन हेत उद्दित भयो, गुणी पदावलिमीठि ॥
काम अर्थ गण ते वलित, धर्म अर्थ विस्तार ।
रत्नाकार सागर सरिस, श्रवण सुधाकी धार ॥
अनुक्रमणिका देवऋषि, रामचरित को जौन ।
वाल्मीकि मुनि सों कही, लीन्ही शैली तौन ॥
श्रीरघुवंश चरित्र को, रचन सहित विस्तार ।
मुनि कीन्ह्यों सूचन प्रथम, वर्णहुँ सकल उदार ॥

छन्द चौबोला ।

जेहि विधि जन्म लियो कौशलपुर नारायण सुखसारा ।
राम नाम अभिराम धाम सुख हरन हेतु भुविभारा ॥
परम पराक्रम प्रथित तीनि पुर निज परजन अनुकूला ।
सुंदर रूप मनोहर त्रिभुवन कबहुँ न कोउ प्रतिकूला ॥
क्षमासिन्धु पुनि दीनबन्धु प्रभु शील सकोच सुभाऊ ।
वरण्यो सकल महामुनि मंजुल बालचरित्र उराऊ ॥
पुनि वरण्यो कौशिक मुनि आगम राम लषण जिमि माँग्यो ।

लहिवसिष्ठ मुनिको अनुशासन नृपसुतदिय अनुराग्यो॥
काम कथा कौशिक कुल गाथा यथा ताड़का मारी ।
जिमि कीन्ह्यों कौशिक मख रक्षण रजनीचर संहारी ॥
मिथिलागमन सुमति नृपदर्शन जिमि सुरसरिमहिआई।
वर्णन कीन्ह्यो कथा यथाविधि गौतम तिय गतिपाई ॥
वरण्यो पुनि मिथिलेश समागम रंगभूमि धनु भंगा ।
वैदेही विवाह सुख वरण्यो बंध विवाह प्रसंगा ॥
परशुराम मद मथन कह्यो पुनि अवध नगर आगमनू ।
कियो वहुरिरघुवर गुण व . सकल अमङ्गल दमनू ॥
श्रीरघुपति अभिषेक तयारी विघ्न कैकयी कीन्हा ।
सीता लषण समेत राम वनवास भूप जिमि दीन्हा ॥
दशरथ शोक विलाप मरण पुनि वरण्यो भरत अवाई ।
प्रजा विषादित त्यागि गये जिमि चढ़ि स्यन्दन रघुराई॥

दोहा—कह्यो निषाद कथा यथा, आयो बहुरि सुमन्त ।
शृंगवेर पुर सुरसरी, उतरे जिमि भगवन्त ॥

छंद चौबोला ।

सानुराग जिमि जाय प्रयागै भरद्वाज पदवंदे ।
भरद्वाज शासन लहि रघुपति उतरे यमुन अनंदे ॥
वाल्मीकि मुनि मिलि पुनि निवसे चित्रकूटमहँ जाई ।
पर्णकुटी रचि सिया लषण युत लखे विपिन समुदाई ॥
वरण्यो भरतागमन बहुरि मुनि दशरथको जलदाना ॥
भरत राम संवाद कह्यो पुनि लहि पादुका पयाना
अवध आय जिमि भये भरत पुनि नन्दिग्राम निवासा ।
जिमि दण्डक अरण्यको गमने रघुवर विपिन विलासी ॥
अत्रि और अनसुइया दर्शन दियो यथा अँगरागा ।

पुनि विराधवध कह्यो यथा शरभंग शरीरहि त्यागा ॥
फेर सुतीक्षण कह्यो समागम बहुरि अगस्त्य मिलापा ।
वरण्यो पंचवटी निवास पुनि जिमि हिम शिशिर प्रतापा ॥
शूर्पणखा कुरूप जिमि कीन्ह्यो करत हास संवादा ।
खर दूषण त्रिशिरा वध वर्णन पुनि दशकण्ठ विषादा ॥
पुनि माऱ्यो मारीच यथा प्रभु वरणि जानकी हरना ।
राम विलाप कलाप कह्यो पुनि गीधराज गति करना ॥
पुनि वरण्यो कबन्ध दर्शन मुनि पंपासरहि पयाना ।
शबरी के फल खाइ दीनगति विरह विलाप बखाना ॥
ऋष्यमूक को गवन पवनसुत मिले जवन विधि आई ।
पुनि सुग्रीव सनेहसीम कहि दुंदुभि अस्थि ढहाई ॥

दोहा–सप्तताल भेदे यथा, वालि सुकण्ठ विरोध ।
पुनि वाली सुग्रीव रण, वध्यो वालि करि क्रोध ॥

छंद चौबोला ।

बहुरि विलाप प्रलाप कह्यो जिमि कीन्ह्यो प्रभुपहँ तारा ।
करि अभिषेक सपदि सुग्रीवहिं दियो राज्यकरभारा ॥
पुनि पावसमहँ बसे प्रवर्षण वर्षा वर्णन कीन्ह्यो
शरद सराहि सकोप सु गल पहँ लषण पठै जिमि दीन्ह्यो ।
मर्कट कटक चटक आनन पुनि राम सुकंठ मिलापा ।
वैदेही खोजन चारौ दिशि जिमि वानरदल थापा ॥
भू मंडल वर्णन सुकण्ठ कृत हनुमत मुद्रिक दाना ।
वरण्यो स्वयंप्रभा बिल दर्शन सिंधु तीर कर जाना ।
अनशन करनकपिन को वरण्यो मिल्यो यथा संपाती ।
पवनतनय अंबुधि लंघन हित चढ्यो शैल रिपुघाती ॥
कूद्यो सिंधु सिंधु वाणी सुनि मिलि महिधर मैनाका ।

सुरसै तोषि राहु जननी हनि निरख्यो लंक पताका ॥
प्रविश्यो पवनतनय रजनीमुख लङ्क निशङ्क अकेला ।
करि ताड़न लंकिनी अशंकिनि उदैशशी शुभ वेला ।
भवन भवन महँ खोजि जानकी रावण महल पधारयो ।
कनक कोट कमनीय कँगूरे निज कर काम सँवारयो ॥
आमखास में रामदास चलि लख्यो अवास अनूपा ।
मन्दोदरी देखि सिय भ्रम करि गिरयो मनो दुख कूपा ॥
पुहुपविमान लख्यो पुनिजेहिविधि बहुविधिरावण रानी।
पुनि अशोक वाटिका गयो कपि जहँ सीता दुख सानी ॥

दोहा—वैदेही दर्शन कियो, जेहिं विधि पवनकुमार ।
दियो सुंदरी मुंदरी, बुड़त मनहुँ आधार ॥

छन्द चौबोला ।

कह्यो जानकी संभाषण जिमि त्रिजटा स्वप्न बखाना ।
चूड़ामणि दीन्ह्यो वैदेही हर्षि लियो हनुमाना ॥
वन उजारि मारयो रखवारन मांत्रिन पुत्र निपाता ।
सेना अग्रज हत्यो पंचभट अक्ष कुमारहि घाता ॥
बहुरि इन्द्रजित ब्रह्मअस्त्रकृत हनुमत बंधन गायो ।
सभागमन रावण समुझावन लावन लंक गनायो ॥
बहुरि नाँघि सागर जिमि आयो मधुवन कपिन उजारा ।
कह्यो रामदर्शन चूड़ामणि दीन्ह्यो पवनकुमारा ॥
मर्कट कटक सहित रघुकुलमणि जिमिसागर तटआये।
भन्यो नील नल कर ते जिमि प्रभु सागर सेतु बँधाये ॥
रावण ते अपमान पाय जिमि पार विभीषण आयो ।
प्रभु पद परसि पाइ अभिषेकहि रावण वध विधिगायो ॥
पार जाइ पठवाइ वालिसुत रावण को समुझायो

घेरी लंक चहूँकित रजनी कपिदल चहुँदिशि धायो ॥
संकुल महायुद्ध वरण्यो पुनि धूम्राक्षादिक घाता ।
पुनि प्रहस्त वध रावण को रण कुंभकर्ण वधख्याता ॥
त्रिशिरादिक को कह्यो समर पुनि मेघनाद संग्रामा ।
हनूमान द्रोणाचल आन्यो दहन लंक सब धामा ।
इन्द्रजीत को पुनि वध वरण्यो लषण बाण लगि भयऊ ।
बहुरि मूलबल निधनकह्योमुनि जिमि रावण रणठयऊ ॥

दोहा—पुनि वरण्यो रावण निधन, सीतामिलन हुलास ।
कह्यो विभीषण को तिलक,पुहुप विमान विलास ॥

अवध नगर आगम कह्यो, भरत सभाग समोद ।
राजतिलक रघुवीर को, वरण्यो प्रजा विनोद ॥
वानर बिदा बखान किय, रघुपति रंजन राज ।
सिय गवनी पुनि विपिन जहँ, सुंदर ऋषिन समाज ॥
अब आगेको चरित जो, कह्यो सो उत्तर पाहिं ।
वरण्यो यह अनुक्रमणिका, ऋषि रामायण माहिं ॥
श्रीमद्रामायण विमल, अक्षर वेद समान ॥
आदिकाव्य अनुपम अरथ, अघ बन दहन कृशान ॥
परम पुरुष श्रीविष्णु जब, भे अवधेश कुमार ।
वाल्मीकि मुख ते तबहिं, वेद लियो अवतार ॥
लंकापति रण जीति कै, जब आये रघुनाथ ।
सीता अनुज समेत प्रभु, कीन्ह्यो प्रजन सनाथ ॥
राज करत रघुनाथ को, बीति गयो बहु काल ।
सिंहासन आसीन प्रभु, छावत मोद विशाल ॥
रामायण रमणीय अति, मुनि विरच्यो तेहि काल ।
राज करत रघुवंशमणि, भाइन सहित भुआल ॥

श्रीमद्रामायण विमल, पद विचित्र मनहार ।
कथा विचित्र विचित्र धुनि, भाव विचित्र अपार ॥
यद्यपि रामायण अमित, रामकथा विस्तार ।
सब रामायण मूल यह, वेद समान उदार ॥
मुनि विरच्यो चौविस सहस, रामायण अश्लोक ।
सर्ग पञ्चशत कांड षट, हरन हार सब शोक ॥
उत्तर कांड रच्यो बहुरि, कांड भविष्य समेत ।
आठ कांड यहि विधि भयो, रामायण सुखसेत ॥
राजतिलक सियगमन लगि, उत्तर कांडहिं जान ।
ताके उपर भविष्य है, ऐसो मूल प्रमान ॥
रचि महर्षि रामायणहिं, कीन्ह्यो मनहिं विचार ।
काको देयँ पढ़ाइ यह, को भारती भँडार ॥
मुनि के अस चिन्तन करत, कुश लव सीय कुमार ।
आय गहे मुनिपदकमल, बालक बुद्धि उदार ॥

छन्द चौबोला

धर्म निरत रघुनन्दन नन्दन अरिवृन्दन जयकारी ।
मधुर कंठ जिन यश जगपूरित निज आश्रम सञ्चारी ॥
लखि महर्षि दोउ बंधुन कहँ तहँ वेदविदांवर दोऊ ।
रामायण इन दुहुँन पढ़ावउँ इन सम और न कोऊ ॥
अस विचारि दोउ बालक बुधिवर अपने निकट बुलाई ।
वेद तुल्य रामायण सुंदर दीन्ह्यो सविधि पढ़ाई ॥
उत्तम आदिकाव्य रामायण राम परायण प्यारा ॥
जनक लली को चरित मुख्य जेहि रावण सकुल सँहारा ॥
अर्थ गँभीर पढ़त कोमल पद महामधुर जेहि गाना ।
राग ताल सातहु स्वर संयुत वीनालयहु मिलाना ॥

हास वीर शृङ्गार भयानक करुणा रौद्र रसादी ।
अरु वीभत्स पांच रस मुख्यहु दास्य आदि मरयादी ॥
सकल कथित रामायण अन्तर जहँ जस कथा प्रसङ्गा ।
जहाँ जौन रस वर्णन कीन्ह्यो रच्यो रूप रति रङ्गा ॥
ऐसो अति अद्भुत रामायण कुश लव काहि पढ़ाये ।
रूप मनोहर लक्षण लक्षित महामधुर स्वर छाये ॥
मनहुँ राम प्रतिविम्ब दूसरे कुश लव गान प्रवीने ।
सकल मुर्च्छना के अति ज्ञाता अनुपम वैस नवीने ॥
मनहुँ युगल गन्धर्वन ढोटा जोटा इक अनुहारी ।
धर्माख्यान पढाय महाऋषि भयो अतीव सुखारी ॥
दोहा—रचि रामायण मुनि तिलक, दिय कुश लवहि पढाय ।
कण्ठ गान लागे करन, लय स्वर मधुर मिलाय ॥
भई समाज तहां महा, जुरे विप्र ऋषि आय ।
पढ्यो यथा कुशलव तथा, रामायण दिय गाय ॥

छन्द चौबोला ।

राज चिह्न चिह्नित बड़भागी अनुरागी सुकुमारे ।
वाल्मीकि के शिष्य महामति रघुकुल तिलक कुमारे ॥
मुनि मंडली मध्य जब दोऊ राज कुँवर किय गाना ।
सुनन लगे निहचल मन मुनिगण रामायण अख्याना ॥
साधु साधु मुख वचन कहत सब बहत नैन जलधारा ।
विस्मितचकितसुखितहियहुलसितप्रेमितवचनउचारा ॥
यह रामायण गीत मनोहर रच्यो महर्षि अनूपा ।
अति सुंदर अश्लोक शोक हर लोक सुखद रस रूपा ॥
चारु चरित्र विचित्र कियो जस जेहि थल रघुकुल नाथा ।
सो प्रतक्ष अस होत अक्ष पथ स्वच्छ सत्य यह गाथा ॥

यहि विधि सुनत सराहत सज्जन दिन प्रति साधुसमाजा।
कुश लव गावत मुनिमंडल महँ सुनि त्यागत सबकाजा॥
गावत जो रस तदाकार सो देखि परै सब काहीं।
भाव व्यंग्य मृदु शब्द अर्थ बहु सुधा सरिस श्रुतिमाहीं॥
यहिविधि अतिउत्साहितमुनिगणसुखअंबुधिअवगाही।
चूमि चारु मुख कुँवरन को तहँ बारहिंबार सराही॥
ह्वै प्रसन्न दीन्ह्यों वल्कल कोउ दियो कमण्डलु कोई।
कोउ मृगचर्म मेखला कलशहु कोउ आसन मुद मोई॥
कहन लगे सज्जन कुश लवसों अचरज कीन्ह्यों गाना।
सकल गान कोविद दोउ प्यारे तुम सम धन्य न आना॥

दोहा—जो कोउ रामायण सुनत, आयुष बाढ़ति तासु।
सकल संपदा लहत सो, होत न कौनहुँ हासु।
सबके श्रवण मनोहरो, रघुपति चरित प्रबन्ध।
अतिहि अनूपम प्रगट भे, विविध छन्द के बन्ध॥

सोरठा—सकल कविन आधार, भयो समापत क्रम यथा।
सकल सुकृत आगार, भावुक भक्तन देवतरु॥

छन्द चौबोला।

यहि विधि मुनि समाज महँ कुशलव रामायण जबगायो।
लहि अनन्द मुनि वृन्द अनूपम अति अनुराग बढ़ायो।
तेहि विधि कुश लव श्रीरामायण गान करन नित लागे।
जहँ तहँ मुनि आश्रमन ग्राम पुर छावत सुख बड़ भागे॥
जहँ गावत रामायण कुश लव जन समाज तहँ होई।
वर्षत आनँद प्रेम मगन सब सुनत गुनत मुद मोई॥
एक समै रामायण गावत ते दोउ राम कुमारा।
अवध नगर आये चित चाये रूप युगल जनु मारा॥

गलिन गलिन तेहि अवध नगर में गावत विचरन लागे।
अवधनगरवासी सुखरासी श्रमनासी अनुरागे ॥
द्वार द्वार सत्कार करत जन बार बार मुद भीने ।
रामचरित सुनि प्रेम मगन ह्वै रामचरण चित दीने ॥
यहिविधि बीति गये बहुवासर गावत कुश लव काहीं ।
भयो नगरमहँ शोर ओर चहुँ ठौर ठौर सब पाहीं ॥
अति सुंदर सुकुमार मनोहर मुनि बालक दोउ आये ।
गाइ गाइ रामायण पुरमहँ आनँद धूम मचाये ॥
एक समै रघुनन्दन सुंदर सिन्धुर सुभग सँवारे ॥
भरत लषण रिपुदमन सहित प्रभु सब शृङ्गार शृँगारे ॥
पर छवि लखन हेतु निकस प्रभु कोशल नगर बजारा ।
रामायण गावत सुख छावत निरखे युगल कुमारा ॥

दोहा—कह्यो राम तहँ भरतसों, काके बालक दोइ ।
मोर चरित गावत मधुर, सुर संयुत रस मोइ ॥

छन्द चौबोला ।

ये बालक दोउ राजभवन में भरत वेगि बुलवायो ।
इनको गान सुनत मन हुलसत दोउ कर रूप सुहायो ॥
अस कहि प्रभुपुर विचारि भवन कहँगमन कियोयुतभाई।
भरत तुरत बोल्यो कुश लव को चारु चार पठवाई ॥
कोटि भानु भासित सिंहासन राम विराजत तामै ।
मनहुँ भानु मण्डल पर मंडित मेदुर मेघ ललामै ॥
भरत लषण रिपुदमन लसत ढिग और सचिव सरदारा।
सुर नर मुनि गंधर्व सर्व तहँ बैठे सभा मँझारा ॥
तेहि अवसर दोउ बालक कुश लव ल्यायो दूत लेवाई ।
खडे भये दरबार बीच ते सबको चित्त चुराई ॥

कोटि मदन छवि कदन करत दोउ रामहिं की अनुहारी ।
मनहु तरनि मंडल ते प्रगटे मंडल युगल तमारी ॥
लखि आतम सम रूप अङ्ग छवि करि विस्मय उर भारी।
रघुकुल मणि तहँ भरत लषण सों विहँसत वचन उचारी ॥
अहैं कौन के बालक सुन्दर मम पुर कहँ ते आये ।
कहां पढ्यो यह चरित हमारो को पुनि गान सिखाये ॥
पूछो भरत कौन के बालक केहि हित अवध सिधारे ।
कहां पढ्यो यह चरित मनोहर हैं कहँ सदन तिहारे ॥
रघुकुल सभा मध्य कुश लव तब मंजुल वचन उचारे ।
वाल्मीकि मुनि के सुत हैं हम तिन ढिग सदन हमारे ॥

दोहा—यह प्रबंध मुनि सों पढ्यो, तिनको शासन पाइ ।
अवध नगर आवत भये, विचरहिं चरितनि गाइ ॥
राजदूत द्वै जाय कै, ल्याये हमहिं लेवाइ ।
करिहैं हम सोई अवशि, देहिं जो भूप रजाइ ॥

छन्द चौबोला ।

प्रभु कह विहँसि भरत सों हर्षित भाषहु ऋषि युग बालै ।
रहे जो गावत गान करैं सो सभा मध्य यहि कालै ॥
सावधान ह्वै वीणा लैकर सुर माधुरी मिलाई ।
करैं गान सुखदायक सबको भीति त्यागि हुलसाई ॥
प्रगट अर्थ अति मंजुल वाणी ढरै अमी की धारा ।
सुनत सभासद तन मन हिय जेहि होहिं अनन्द अगारा॥
सुनत वचन रघुकुल मणि के तब भरत कही मृदुवानी ।
गावहु चरित मधुर सुर बालक प्रभु सुख शासन मानी ॥
तब कुश लव सब सभासदन उर छावत परम प्रमोदू ।
वीण मिलाइ अरम्भ गान किय माच्यो विपुल विनोदू ॥

जस विचित्र पद जस चरित्र वर जस रति रस धुनि भाऊ।
तस मंजुल सुर वीन मधुर ध्वनि गाये सहित उराऊ॥
सुनत सभासद राजसिंह सब रघुवंशी अनियारे।
पुलकावली शरीर सजल दृग श्रवण करत प्रभु प्यारे॥
कह्यो राम निज भाइन भृत्यन सुनत सचिव सरदारा।
क्षोणिप लक्षण लक्षित स्वच्छ विलक्षण दक्ष कुमारा॥
बालक बाल्मीकि मुनि के दोउ मम कीरति कल गामैं।
त्यागि परस्पर वचन करब सब करैं सुश्रवण सभामैं॥
सहित सीय बंधुन कपि कुलयुत उदय विभूति हमारी।
रघुकुल विभव अवध प्रभुताई निशिचरगण रण भारी॥
दोहा—राम वचन सुनि सुठि सुखद, सकल सभा हर्षानि॥
सुनन हेत निज प्रभु चरित, परम प्रीति उमँगानि॥
सुनत राम शासन युगल, बालक सभा मँझार।
रामायण गावन लगे, कोकिल कंठ उदार॥
भरी गानकी माधुरी, जुरी सभा चहुँ ओर।
घरी घरी ताही घरी, भयो राम रँग बोर॥
अति उतङ्ग सिंहासना, सीन भानु कुल भान।
निकट बैठि प्रभु श्रवण रुचि, तब कीन्ह्यो अनुमान॥
उठै सभा जो जाहुँ उठि, होइ महारस भङ्ग।
ताते क्रम क्रम उतरिहौं, बैठौं बालक सङ्ग॥
अस विचारि रघुनन्द तहँ, उतरि सुमन्दहि मन्द।
बैठि कुमारन के निकट, सुनन लगे सुखकन्द॥

इति सिद्धिश्रीसाम्राज्य महाराजाधिराज श्रीमहाराजा बहादुर श्रीकृष्णचंद्र कृपापात्राऽधिकारी श्रीरघुराज सिंह जू देव जी. सी. एस. आई. कृते रामस्वयंवर ग्रंथे पूर्वप्रकरणे चतुर्थ प्रबन्धः॥ ४॥

दोहा—आदिकाव्य अघ गिरि कुलिश, रामायण सुखसार।
वाल्मीकि कृत जग विदित, विंशति चारि हजार॥
विदित रामयश कोटि शत, अति उत्तम विस्तार।
इक इक अक्षर मुख कहत, नाशत पाप पहार॥
जब पुराण वैकुण्ठपति, प्रगटे अवध अगार।
तबहिं चतुर्विंशति सहस, लियो वेद अवतार॥
रामायण विरचे अमित, सुर मुनि मति अनुसार।
तिनमें जान प्रधान यह, श्री वाल्मीकि उचार॥
जस सुर मुनि विरचितनमें, मुनिकृत मुख्य प्रमान।
तिमि नरकृत रामायणहिं, तुलसी रचित प्रधान॥
भगवत अनुरागी पुरुष, विषय विमुख मतिवान।
रामायण सरबस तिन्हैं, नहिं अस दूसर जान॥
वाल्मीकि कृत सुरगिरा, तुलसीकृत नरवानि।
रामचरित सरबस उभै, लियो सत्य मैं जानि॥
ताते तुलसी कृत कथा, रचित महर्षि प्रवन्ध।
विरचौं उभय मिलाइकै, राम स्वयंवर बन्ध॥
वाल्मीकि विरचित सुभग, रामायण सम वेद।
तिमि गोस्वामी रचित वर, रामचरित नहिं भेद॥
लै बहु ग्रंथन संमतहिं, विरच्यो तुलसीदास।
श्रीमद्रामायण विमल, जानहु स्वयं प्रकास॥
कल्प कल्प के भेद में, कथा सत्य सब सोइ।
यह पुराण शैली विमल, और भाँति नहिं होइ॥
ताते कहौं विशेष कछु, रच्यो जो तुलसीदास।
तीनि भाँति रावण जनम, राम जन्म परकास॥

छंद चौबोला।

जन्म्यो जबहिं जलंधर रावण महाबली सुर जेता।

तब भू भारहरण हित प्रगटे केशव कृपा निकेता ॥
दियो देवऋषि शाप रुद्रगण ते दोउ भूतल माहीं ।
रावण कुंभकर्ण प्रगटे जिन सरिस कोऊ बल नाहीं ॥
भानुप्रताप भयो कोउ भूपति धर्म निरत दोउ भाई ।
विप्र शापवश दशकंधर अरु कुंभकर्ण भे आई ॥
कल्प कल्प में सत्य कथा सब जौन गोसाईं गाईं ।
कबहुँ प्रतापी रावण होतो यहू कथा विदिताई ॥
रामजन्ममें हेतु अनेकन कहँ लों कहौं बखानी ।
पै पुराण श्रुति संमत सब विधि जौन कहे मुनि ज्ञानी ॥
सो यहि भाँति विदित सब ग्रंथन भागवतादिक माहीं ।
वर्णन करहुँ तौन यहि औसर है शंका कछु नाहीं ॥
हरि पार्षद जय विजय अनूपम सनकादिक को रोके ।
ते प्रचंड दिय शाप दुहुनँ कहँ ह्वै अमर्षके ओके ॥
असुर भाव दोउ तीनि जन्म लगि जन्म जगत् महँ पैहौ ।
हरि कर लहि वध विगत शाप ह्वै पुनि विकुंठ कहँ ऐहौ ॥
प्रथम जन्म ते हिरनकशिप अरु हिरण्याक्ष भे जाई ।
राक्षस रावण कुंभकर्ण पुनि तेइ भये महि आई ॥
पुनि शिशुपाल दन्तवक्रहु भे तजे न आसुर भाऊ ।
महाबली त्रिभुवनके जेता डरैं जिन्हैं सुरराऊ ॥

दोहा—कनककशिपु कनकाक्ष को, हन्यो नृसिंह वराह ।
कुम्भकर्ण रावण हत्यो, ह्वै प्रभु कोशल नाह ॥
दन्तवक्र शिशुपाल को, हन्यो देवकीलाल ।
विगत शाप हरि पारषद, बसे विकुण्ठ विशाल ॥

छन्द चौबोला ।

तुलसिदास को संमत सोऊ कीन्ह्यों ग्रंथ बखाना ।

तीनि जन्म लगि भये असुर दोउ सो द्विज वचनप्रमाना।
जब जब होती धर्म गलानी तब हरि धरि अवतारा।
प्रगटत पावन चरित चारु जग हरत भूमि कर भारा॥
दुखी देखि देवन देवनपति दिय मखमें वरदाना।
अवध प्रगट ह्वै दशरथ नंदन हरिहौं शोक महाना॥
सोई सत्य वचन करिबेहित यज्ञ भाग के ब्याजा।
गर्भवास किय रमा निवास हुलासक देव समाजा॥
भई समापत अश्वमेध जब गे सुर लै लै भागा।
रानिन सहित राजमणि दशरथ अति प्रमुदितबड़भागा॥
भाइन भृत्यन सचिव सैन युत अवधपुरी कहँ आये।
विप्रवृन्द अति पूजि विदा किय गे निज गृह सुख छाये॥
निज निज सदन गये भूपति सब पाइ पाइ सत्कारा।
वर्णत दशरथ शील सुयश गुण पुनि पुनि वदन अपारा।
शांता सहित गये शृङ्गीऋषि बहु विधि पूजन पाई।
गये रोमपादहु तिनके सँग धारि अवधेश मिताई॥
यहि विधि सबकी विदा भूपमणि करिकै आनँदरासी।
पुत्र जन्म चिन्तत भे नित नित कौशल नगर निवासी॥
नित नित प्रजा मगन आनँद रस निज निज देव मनावैं।
चारु चारि भुजके प्रताप ते चारि कुवँर नृप पावैं॥
दोहा—जबते नारायण कियो, नृप घर गर्भ निवास।
तबते कोशल नगर महँ, नित नव होत हुलास॥

कवित्त।

कौशलनगरछाईपरमविभूतिताई आईमनोलेन अगवाई सोबधाईको।
विधिपठवाईवरघरअधिकाई कविवृन्दमुखगाईतिहुँलोकचारुताईकी॥
रघुराजराजमणिहियकीहरषदाई भूपकीचलाईकहालोकपासिहाईकी।

पाईथिरताईचंचलाकीचंचलाईभाईसाजीसबैसाजुरघुराईकीअवाईकी १
विविधकताकेजिन्हैंताकेसुरवृन्दछाके वासवधनुषउपमाकेतुंगताके हैं ।
दंडजाकेजड़ितसुमणिमुकुताकेभाके पेखेजिन्हैंपापनपरापैपरैंडाकेहैं ॥
रघुराजराकेचन्द्रमाकेसमताकेजाकेभासकलसाकेनाकेनाकेनाकनाकेहैं ।
अंबरउड़ाकेअंशुमानकेअरूझैंचाके फहरैंअनूपऐसेअवधपताकेहैं ॥२॥
द्वारनमें नारनमें नदिनकिनारनमें विपुल बजारन कतारन अपारहैं ।
अखिल अखारनअगारनहजारनमें मनुजअपारनमेंआनँदउभारहैं ॥
रघुराज राजदरबारन दुवारनमें शूर सरदारनमें दारन मँझार हैं ।
अवध प्रजानके उचारणमें छायो यहि भूपकेकुमारकबदेइकरतारहैं॥३॥
विप्रब्रह्मध्यावैंत्योंमनावैंमनकामैंनिज वनिकविदेशजामैंआमैजबगामैंहैं ।
गामैंतबऐसोमुखभूपति कुवँरपामै अवधप्रजानको प्रमोदधामधामैंहैं ॥
धामैं धन हेत धूमधामैंकरि कामैंवश भाषैरघुराज दिनरैन जामजामैंहैं ।
जामैंह्वैसनाथहम कुवँरदेखामैंईशसदनभरेकीकबसम्पति लुटामैंहैं ॥४॥
कोईपूछैज्योतिषिनकोईपूछैपंडितन कोईपूछैसन्तनकोसेवासानुरागते ।
कोई पूछैब्रह्मचारी कोईपूछैव्रतधारी कोईपूछैवृद्धनारीकोईयुक्तयागते ॥
कोईचेटकीनपूछै कोईखेटकीनपूछै कोईनैष्ठिकिनपूछैकोईपूछैकागते ।
कौनेदिनह्वैहैकृतकाजरघुराजराज पाइचारिकुवँरहमारेबड़ेभागते ॥५॥

दोहा—बाढ्यो अवध प्रजान के, अंबुधि उमँगि उछाह ।
धारा ब्रह्मानन्द की, ढरै कौन दिन माह ॥
पल पल पोटन में गनत, पल पल युग सम जात ।
रामजन्म आनँद अवधि, अधिक अधिक अधिकात ॥
कलपत द्वादश मास ।
आई बहुरि वसन्त ऋतु, विमल भई दश आस ॥

कवित्त घनाक्षरी ।

फूलिउठीकाननमेंकुसुमकीराजीभली झूमिरहेभ्रूमितरुफलकोसँभारना ।

पादपपुह्मामनवपल्लवतपूरआय हारआयेसियरायभायतेशुमारना ॥
रघुराजलोनीलोनीलतालहरानलागीं अनुरागीभौंरभरिगुंजैमंजुपारना।
सरिताविमलजलसजलजलदजूह पावस शरदत्योंवसन्तको विचारना १
तरलतरङ्गमन्दमन्दभईअंबुधिकी अंबरअमन्दचन्दचन्द्रिकापसारी है ।
शीतलसमीरधीरकलितउसीरवासलाग्योवेगिवहन प्रसून धूरिधारी है॥
चक्रवाककोकिलमरालचारुचातकहुँ करैंरघुराजमोरशोरमनहारी है ।
षटऋतुनिजनिजवैभवविलासछाये देखिकैअवधरामजनमतयारी है २
सस्यंवतीभईजगतीहूजागिजोमवारी धनधान्यपूरितप्रजाकेगणह्वैगये ।
विकसे विमलकमलाकर दिवाकरसों प्रगटअमित रतनाकरभूज्वैगये॥
अतिशैप्रसन्न हव्यवाटहव्यलेनलागे घाटघाटवाटवाटठाटठाट ठैगये ।
सदन सदनशुभ सोहिलोसुहावनीते गाइउठींभाइउठींक्षणक्षितिछैगये ३
सोरठा—दिनकर किरिनि उदोत, कियो न अति शीतल गरम ।
निशि तारागण होत, जून जून में दून दुति ॥
मेष राशि गत भानु, नखत अश्विनी संग में ।
मास मनोहर जानु, चैत चारु चहुँकित सुखद ॥

कवित्त ।

गहगहेगगनमें बाजेबहुबाजिउठे लहलहे ललित विमानन गरद्दहैं ॥
महमहे लोक दश चारिहू सुगन्धनते उमहे महेश अजआदिसुरठ्ठहैं
रघुराज विद्याधर चारण गंधर्व यक्ष किन्नरकुतूहल करनलागेपट्ट हैं ॥
प्रेमरङ्ग लट्टपट्ट आवैंजायँझट्टपट्ट देववृन्ददेखपरैं मानो नट्टवट्ट हैं ॥१॥
चादहभुवनमाच्याबारबारजैजैकार अस्तुतिअनूपमउचारेहैं ॥
एकओरजलदकेमाचेघहरारेमंजु एकओरनाकनके नदतनगारेहैं ॥
मंदमंदवारिबुन्दसाज्जितसुगन्धअति विमलप्रसूनवृन्दहीसेव्योमढारे हैं ॥
भनैरघुराजब्रह्मलोकतेअवधलगि गगनमेंगासिगेविमानके कतारे हैं ॥२॥
विमलवसंतऋतुतोममधुमासशुभस्वच्छसितपक्षनौमीतिथिशशिवारहैं ।

अभिजि (विजयप्रदाताहैमुहूरतसो शूलयोगकोलौनामकरणउदारहैं ॥
रघुराजवेळामध्यदिवसकीआईजबैअतिमनभाईसुखदाई निर्विकारहैं ॥
सगुनसोहावनअनेकतहँहोनलागे परैलागे खलन परावन अपार हैं ३
कुँवरजनमजानिअवसरआनँदकोमाच्योखैरभैरराजमंदिरमें भारीहै ॥
अतिअतुराईएकसखीचलिआईतहां बैठरघुवंशीराजवंशीदरबारी है ॥
भूपमणिकानमेंसुधासमानवाणीकहीसावनसलिलजनुसूखताकियारीहै ॥
रघुराजमानोप्राचीदिशितेउदोतभयोशोकशर्वरीकोनाशिआनँदतमारीहै
द्विजनबोलवोद्वारतोरनबँधावो इष्टदेवशिरनावोऔधआनँदतेछाइगो ॥
तुरतवसिष्ठजीकोभवनलेवाइल्यावो रंगनिघेरावोअवसुखनसमाइगो ॥
अन्ननकेऔनिधरअंगनलगावोल्याइविशदवितानननतनावोशोकजाइगो ।
रघुराजअखिलखजाननखुलावोखूबआवोसुतजनमकोअवसरआइगो ५
एकसुनिकैसोंकह्योदोऊकह्योचारिहूसोंचारिकह्योचौदहसोंचौदैशतचारिसो
फैलिगईबातरघुराजराजमंदिरमें पुत्रकोजनमशुभसमयो निहारिसो ॥
धायेधरणीकेयाचकानेकेमहानवृन्दभूमिभूतिभामिनीहूभौनकोबिसारिसो
धनीधनहीनह्वैहैं दीननकोदानदैकेह्वैहैंधनीनिर्धनी दरिद्रशिरटारिसो ६
हल्लापरयोअवधमहल्लातेमहल्लामध्यगल्लामच्योबाहरहूजनमकुमारको ।
तियनकोतल्लापियतियनपियल्लात्यागेढोसतप्रबल्लामल्लाधायेराजद्वारको
कल्लाकरैंआगूजानदेत लेतबल्लाकेते अतिहिउतल्लानासँभारवृद्धवारको
चल्लाचल्लाछायोरवह्वैगयोबहल्लाहमैंलल्ला देत ईशआजुअवधभुवारको ७
सादर सखीकेसाथ बादरवदन ह्वैके भूपति पधारेमहारानीकेमहलको ।
कौशलाकेअंगनामेंअंगनाकीभीरभारीआवैंजायँनारीसुकुमारीतेटहलको
कौनकाकोपूछैनहिंछूछेहाथकाहुनके बरणि सकैकोकविचहलपहलको।
रघुराजआनँदकोदहलअवधभयोकाढ़िगोकलेशकोटिकल्मषकहलको८

सोरठा—तब आयो सो काल, जो दुर्लभ बहु कल्पमहँ ।
प्रगटे दशरथ लाल, कौशल्याकी सेजपर ॥

कवित्त

सिद्धिनकीसिद्धिदिगपालनकीऋद्धिवृद्धिवेधाकीसमृद्धिसुरसदनझुरैपरी
ब्रह्मकीविभूतिकरतूतिविश्वकर्माकी साहिवी सकलपुरहूतकीलुरैपरी ॥
रघुराजचैतचारुनौमीसितशशिवार अवधअगारनवनिद्धिहूधुरैपरी ॥
वैभववैकुंठब्रह्मानन्दकीअपारधारकौशलाकीकोषियकवारहींकुरैपरी १
शंभुऔस्वयंभुजाकीभ्रुकुटिनिहारैनितलोकपालजाकेपदकंजशिरधारैहैं
देवऋषिब्रह्मऋषिराजऋषिमहाऋषिमहिमाविचारैं पैनपावैंनेकुपारैहैं ॥
वाणीकोविलासहैप्रकाशचारिवेदनकोविश्वसृष्टिपालनसँहारखेलवारैहैं॥
सोईरघुराजभूमिभारकेउतारैहेतुलीन्ह्योअवतारैअवधेशके अगारैहैं॥२॥
जपतजपतबहुभाँतितेतपतकोटिजन्मनमेंआवैजेहिभासकोचमंकाहै ॥
जेहिअवराधैसिद्धकरतसमाधैकेतीबाधैंसहिविश्वकीउपाधैंनहिंशंकाहै ॥
रघुराजसोईसुरनायकविकुण्ठधनीकौशिलाकीसेजदामिनीहींसोदमङ्काहै
धामधामबजतबधावनोअमरपुरधामधामपरिगोपरावनोत्योंलंकाहै॥३॥

छन्द मनोहरा।

नव कंज सुनैना मंजुल वैना कृत जग चैना भुजचारी, मुनि मन हारी।
पट पीत विलासा विद्युत भासा रमानिवासा सुखकारी, मूरति प्यारी।
शिरमुकुटललामामणिगणधामाकचउपमामाहियहारी, अलिद्युतिकारी।
मृदु गोल कपोला कुंडललोला अतिहिअमोलाछविभारी, मकराकारी।
युग अधर प्रवाला बाहु विशाला दीनदयाला दुख नाशी, घटघटवासी।
उरमें वनमाला कंठ रसाला त्रिभुवन पाला नहिं आसी, माया दासी।
पग मणि मंजीरा संयुत हीरा हर जन पीरा अनयासी, सत रिपु नासी।
रावण वध कामी त्रिभुवनस्वामी अन्तर्यामी गंगासी, कीरति पासी।

सोरठा—अद्भुत रूप निहारि, कौशल्या कर जोरि कै।
बोली वचन उचारि, जय सज्जनपतिअमरपति ॥
जय जय अधम अधार, पूरण ब्रह्म अपार गति।

जय वैकुंठ विहार, विष्णु सच्चिदानन्द हरि
उत्पति तिथि संहार, बार बार संसार कर ।
जय त्रिभुवन संचार, करुणा पारावार प्रभु
जय जय दीनदयाल, मधुसूदन सुरमाल मणि ।
जय सज्जन रिपु काल, जयतिपाल शशि भाल अज
ध्यावत जेहि मुनि वृन्द, परहु ते पर परपुरुष सोइ ।
तजि विकुंठ आनन्द, आजु अवधपुर अवतरयो

दोहा—यहि विधि प्रस्तुति करि विमल, पुनि बोली शिरनाइ
नाथ अनूपम रूप यह, को वरणै मुख गाइ
जो मोपर प्रभु करि कृपा, प्रगटे अवध अगार
बालचरित सुख ॉ, करहु तौन उपचार
कौशल्या के वचन सुनि, माधव मृदु मुसकाइ
कह्यो वचन सुनु मातु मैं, भयो तोर सुत आइ
नीति रीति जस रावरी, सो करिहौं सब भाँति
बालविनोद प्रमोद तू, जेहि पैहै दिन राति ॥
अस कहि श्रीवैकुण्ठपति, कौशल्या के अङ्क
बालक ह्वै रोवन लगे, सुरपालक निश्शङ्क ॥
भयो शोर चहुँ ओर तव, कौशल्या के आज
श्रीरघुराज अनन्द दै, प्रगटे श्रीरघुराज

बधाई ।

धनि धनि मधु वर मास हुलास विलास नयो ।
धनि धनि ऋतुपति शुकुलपक्ष विधु वार ठयो ॥
धनि सुपुनर्वसु नखत मेष रवि राशि गयो ।
धनि नवमी तिथि मध्य दिवस मङ्गल समयो ॥
धनि दशरथ जेहि भवन राम अवतार लयो ।

धनि धनि कोशल नगर ब्रह्म सुख जहँ उनयो ।
धनि धनि रघुकुल जासु सुयश तिहुँलोक छयो ॥
तीन घरी ब्रह्मांड धन्य आनँद भयो ।
धनि रघुराज समाज आज कृतकाज भयो ॥

माची धौसनकी धुधुकारी ।

कोशल नगर डगर डगरन बिच ढरकतनहरन बहु रँगवारी ।
भूप भवन महँ भवन भवनते मणिन लुटावत सब नरनारी ॥
राम जन्म आनंद मच्यो जग जन रघुराज जात बलिहारी ॥

मच्योरी रंगमहलमें रंग ।

केसरि कीच बीच नर नारी बिछलत उमँगि उमङ्ग ॥
एक ओर रघुवंशी राजे साजे अभरन अङ्ग ।
एक ओर युवतिन को मण्डल लीन्हें वीण मृदङ्ग ॥
नाचि रहे कोउ गाइ रहे कोउ करत खेल खुलि जङ्ग ।
सरयू भई भारती धारा पाइ गुलाल प्रसङ्ग ॥
रह्यो न सुरति सँभार सबन के ह्वैगे आनँद दङ्ग ।
श्रीरघुराज मनोरथ पूरण भयो सकल दुखभङ्ग ॥

कौशलपुर बाजै बधैया ।

रानिकौशला ढोटा जायो रघुकुल कुमुद जोन्हैया ॥
फूले फिरत समात नाहिं सुख मग मग लोग लोगैया ।
सोहर शोर मनोहर नोहर माचि रह्यो चहुँ घैया ॥
छिरकत कुंकुम रंग उमंगित मृगमद अतर मिलैया ।
धार अपार बही सरिता सम सरयू पीत करैया ॥
श्रीरघुराज जगतमहँ जागो वर्ण दकार सदैया
कोउ न रह्यो तीनो पुर में अस एक नकार कहैया ॥

दोहा—चैत शुक्ल नौमी नखत, पुनर्वसू विधुवार ।
कौशल्या के भवन में, भयो राम अवतार ॥
चैत शुक्ल दशमी विमल, नखत पुष्य कुजवार ।
भयो कैकयी के भवन, भरत चन्द्र अवतार ॥
चैत शुक्ल एकादशी, अश्लेषा बुधवार ।
भयो लषण रिपुदमनको, जन्म जगत सुखसार ॥
अबै कह्यो संक्षेप सों, जन्म चारिहू बंधु ।
आगे विस्तर भाषिहौं, जिमि कुण्डली प्रबंधु ॥

बधाई ।

आली आज भूपके द्वारे नौबति बाजि रही है ।
कुवँर जन्यो कौशल्या रानी अवध प्रजा उमहीहै ॥

क०—हरद दधिदूबभरिथार सुरदारतेहि बारनृपबार बहुबारआवनलगीं।
प्रजापरिवार रघुवंश सरदार आनंद आगार रति रंग रंगन रँगीं ॥
पुर द्वारहो द्वार दुंदुभीधुधुकार झांझै झनतकारआपारजालिमजगीं ।
कौशलहि बाजारसंघर्षसंचार उत्साह पारावारतोपअगणित दगीं ॥

बधाई ।

चारि कुँवर कोशल नरेश के आजु लियो अवतार ।
नृप दशरत्थ उदार शिरोमणि दीनन देत हजार ॥
मंदर सरिस मंदिरन मंदिर तुंगतरल निसान ।
चय चारु चंदिर इव चहूँकित बजत नवल निसान ॥
याचक अयाचक दान राचत माचि मोद महान ।
सुर सुंदरी अँगुरीन गहि गहि नचहिं लैलै तान ॥

दोहा—बिछे बिछौने जरकसी, लसी ललित दरबार ।
पीत बसन भूषण वर बानिक, रघुवंशी सरदार ॥

छंद त्रिभंगी।

सुर चढ़े विमाना सुखन समाना वरषैं नाना कुसुम गनै।
गुणक निज त्राना जै भगवाना करहिं बखाना छनै छनै॥
रक्षक नहिं आना दयानिधाना हमनहिंजाना तुमहिंविनै।
अजइन्द्र इशाना अमरप्रधानातनुपुलकाना करहिंविनै॥

पद।

अन्तहपुर चौगान लौं निकसत कसमस होइ।
नर नारीधावत सुख छावत पूंछत कोउ नहिं कोइ॥
कुंकुम के रँग कीच मच्यो महि उड़त गगन वरवादले।
मिलत गुलाललाल तेहि काल मनो सुठि सावन बादले॥
देत रत्न गण जो जेहि भावत धरे कितेकन फादिले।
खेलत खुलि खुलि आमखास में रघुवंशी सहिजादिले॥
चैत शुक्क नौमी तिथै मध्यादिवस भे राम।
बजत बधाई धाम धाम रघुराज भयो कृतकाम॥
आनँद मगन अवधपुरवासी प्रकटेआजुअवनिअविनासी।
भूपति अवध बजारलुटावत गावहिं नारि पियारिरमासी॥
दुरिगे देवन दीह दाह दिल छायो त्रिभुवन अमित उछाहू।
भार पूरण याचक धन पायो श्रीरघुराज आजु सब लाहू॥
कौशलनगरडगरडगरनविचजगरमगरमाचिरह्योआजरी।
हरदद्रूबदधिथारनभारिभरिभामिनिगमनहिंसाजिसाजरी॥
भूरि भीर भै भूप भवन महँ दुख दारिदको भोअकाजरी।
नर समसुर गह्नहे बजावतमनउमहेतहँविविध बाजरी॥
जो पावतसोउदेतदेतसोउकोउनलेत मढ़ि सुख दराजुरी।
सुरसुंदरीमहलप्रतिनाचहिंमहलमहलरघुकुल समाजरी।
कोशल्याकेकयीसुमित्राजन्योचारिसुतसुछबिछाजरी॥

को वरणै सुख पाय एक मुख श्रीदशरथ रघुराजराजरी ॥
दशरथ गृह नौबत बाजै सब देव भये कृत काजै ॥
अशरन शरन सुभरन भूरि सुख असुरन करन पराजै ।
दीनबन्धु भे चारि बंधु सुत राजसिंह महराजै ।
को वरणै सुख भयो जौन निज नाथ पाय रघुराजै ॥
चलिये अब भूपति भौन भटू जहँ चारि सुचारु कुमार भये ।
नृप याचक वृन्द अयाच कियो पुरके जन मोद अपार भये ॥
गणिकागण नाचिरहीं चहुँधा बहु बाजन द्वारहिं द्वार ठये।
बर गायक गाय रहे सुर सों धरनीसुर वेद उँचार कये ॥
पुर घाटन घाटन हाटन हाटन बाँधि सुबंदनवार दये ।
नहिं आनँद औध समात सखी सुर सन्त कलेश विकार गये।
रघुवंशिन राज समाज सजी रघुराज तिन्हैं बलिहार लये॥
बधाई देन चलु वारी ।
कौशल्या केकयी सुमित्रा जन्म्यो सुत चारी ॥
अस अवसर अब बहुरि न पैहै धनि निज भाग्य विचारी।
श्रीरघुराज निरखि लालनको पुनि पुनि ले बलिहारी ॥
दोहा—ल्याइ सखी लेवाय तहँ, आये भवन भुवाल ।
नांदीमुख क्रमसों कियो, हर्षि शराध उताल ॥

छन्द चौबोला ।

भवन भवनमें परम मनोहर सोहर गावन लागीं ।
आनँद उमँग उराव अटक नहिं इन्दुमुखी अनुरागीं ॥
भई भीर भूपतिके द्वारे रज पषाण ह्वै जाहीं ।
देश देशके वेश नरेश सुद्वार देश दरशाहीं ॥
कोउतुरङ्ग चढ़ि कोउमतंग चढि कोउसतांग चढ़ि आये।
अति उछाहनरनाह भरे सब सम्पति विपुल लुटाये ॥

जिनके धन नहिं ते पट आयुध देत लुटाइ उछाही ।
जे लूटत तेउ तुरत लुटावत कोउ न भये धनग्राही ॥
कञ्चन मई भई बसुधा तहँ कोउ धन सञ्च न करहीं ।
राम जन्म ते लाभ लोकमें कोउ न लाभ उर धरहीं ॥
देहु देहु अरु लेहु लेहु यह छाय रह्यो रव भारी ।
कसमस परत कढ़त कौशलपुर को सुख सकै उचारी ॥
कोउ मतङ्ग कोउ देत तुरंगन कोउ भूषण पट कोई ।
कछु न अदेय रह्यो तेहि अवसर ग्राम धाम धन जोई ॥
द्वार बजत नगारे घनकारे घहरारे ।
विपुल किताके विविध पताके चपलाके छबिहारे ॥
तोरन मनहुँ इंद्रधनु सोहत मोरकूक सहनाई ।
वर्षत आनँद आँसु अंबु सोइ अवध प्रजा समुदाई ॥
देश देशके याचक आये ते बहु जीव सोहाहीं ।
सुरभित सलिल धार सरयू मिलि सरिता सिन्धु समाहीं ॥

दोहा–किसलय अंकुर दूब नव, भरि थारन पुरनारि ।
लसहिं चँदैनी चारु सम, हरित तृणन मनहारि ॥
द्वारदेश अवधेशके, लखि सुत जन्मउराय ।
वर्षाऋतु आई मनहुँ, देन बधाई धाय ॥

छन्द चौबोला ।

विविध रंग अंबर कम्मर कसि विविध रंग शिर पागे ।
विविध रंग तेइ कुसुम विराजत अंगराग सुख रागे ॥
विविध सुगंधित अनिल बहत तहँ जनसमूह बस मन्दा ।
ह्वै सरयू शीतल अति आवत परसत परम अनन्दा ॥
बहु मुरचङ्ग मृदङ्ग सरंग उपंग सुसलिल तरंगा ।
बाजत रंगभूमि रस रंगनि तेइ मनु वदत विहंगा ॥

नर्तक नचत मयूर मनहुँ बहु भवन कुंज छवि छाये ।
सोहर मंजु पुंज सुख को अति भौंरन गुंज सोहाये ॥
दान अखंड अमल अंबर सम कीरति कर दिशि छाजै ।
उड मंडल द्विज मंडल सोहत तिमि वसिष्ठ द्विजराजै ॥
राज राज रघुराज तनय सुख उदै देखि कृतकाजा ।
मानहुँ सकल समाज जोरिकै मिलन चल्यो ऋतुराजा ॥
निर्मल अवध जलाकर सोहत विकसत हिय जलजाता ।
फटिक अटा ते शरद घटा मनु कोक वृन्द बुध ख्याता ॥
पूरित सस्य प्रमोद मही सब शशि भूपति शशि शाला ।
लघु बड़ सोहत रत्न कलश बहु तेइ तारन की माला ॥
देव विमानावली विराजति गगन पंथ मल हीना ।
सारस सुखित मराल कराकुल जनु सोहत पख पीना ॥
रघुवंशी सरदार रत्नकी खोसे शीश कलंगी ।
मनहुँ सालि की वालि विविध अति सोहि रहीं बहुरंगी ॥

दोहा—अवध भुवार अगार में, लखि कुमार अवतार ।
मनहुँ शरद ह्वै शारदा, खड़ी करति बलिहार ॥

छन्द चौबोला ।

देश देश के विप्र महाजन भूपति धनी भिखारी ।
कवि नट भाट सूत मागध बहु बंदी परम सुखारी ॥
गायक वादक नरतक हीन प्रवीन दीन बल पीना ।
कौतुककार अपार कलाकर जे प्राचीन नवीना ॥
बाल वृद्ध नारी नर अगणित चारौ वर्ण अपारा ।
आये सकल हुलास प्रकाशित दशरथ भूप दुआरा ॥
ग्राम ग्राम महँ धाम धाम महँ खर वट खेत अखारा ।
व्रज पुर पत्तन नगर नाकलों नदत नवल नगारा ॥
अस छाइ रह्यो रव संयुत जय जयकारा ।

रामजन्म उत्साह प्रवाह गयो बहि भुवन नकारा ॥
सुरपुर नरपुर नागलोक लों बाजै विविध बधाई ।
जे जहँ ते तहँ धनहिं लुटावत आनँद उर न समाई ॥
गावहिं मङ्गल गीत प्रीति भरि भुवन चारि दश माहीं ।
भरे भूरि ब्रह्मांड छोरलों सोहर शोर सोहाहीं ॥
अगणित विमल विमान वियत पथ झरहिं कुसुमसदाई ।
पुरी पुहुप पर्वत सम सोहति पुहुमी परिमल छाई ॥
रामजन्म आनंद उदित रवि कंज प्रजा विकसाई ।
दुर्जन मूक उलूक लुकाने दुख निशि गई सिराई ॥
सुर मुनि कियो अरंभ कर्म सब शङ्का नींद विहाई ।
त्यों याचक नर नारि कोक सम मिले वियोग विहाई ॥

सोरठा—को कहि सकै उछाह, रामजन्ममें जस भयो ।
लहै कौन विधि थाह, मनुज महोदधि में प्रविशि ॥

छंद चौबोला ।

सकल राजवंशी रघुवंशी राजकुँवर सब आये ।
हय गय भूषण वसन रत्न रति संपति विपुल लुटाये ॥
महल महलमें महा मनोहर लागि गयो दरबारा ।
नहिं आनन्द अमात अवधपुर बह्यो सरयु मिसि धारा ।
सजिसजिभूषण वसन विविधविधि लियेकनककरथारा ।
दधि दूर्वादल सुफल हरिद्रा चलीं लगाय कतारा ॥
गावत मङ्गल गीत भामिनी गजगामिनी सिधारी ।
दमकि रही दामिनी सरिस दुति दिन यामिनी सुखारी ॥
वृन्द वृन्द नारिनके प्रविशत निकसत कसमस परई ।
नहिं उछाह वश पीर गनत कोउ नहिं तहँ ते कोउ टरई ॥
भई भीर भूपति के मन्दिर रह्यो न देह सँभारा ।
फटत छोर जरकस जामन के टूटत हीरन हारा ॥

कोउ नहिं करत सम्हार हर्ष वश को पूछै पुनि केही ।
जो पावत कछु सोउ लुटावत सिगरे राम सनेही ॥
कोउ नाचत कोउ गावत भावत बाज बजावत केते ।
कोउ कूदत मूदत नहिं पाये कोउ करतालहि देते ॥
अवध प्रजा अंगन परसन सुर अवनिप अङ्गन माहीं ।
ह्वै लघु बालक सहित अंगननि अनुपम नाच कराहीं ॥
कसि फेटे कटि प्रेम लपेटे इक इक भेंटत जाहीं ॥
दुख मेटे रावण लघु सेटे दुलहेटे बतराहीं ॥

दोहा—भये जे बालक विबुध गण, ते मिलि बालक वृन्द ।
वचन व्याज स्तुति करत, प्रगटे देखि मुकुन्द ॥

भजन—भूप के अनंद भयो जै रमैया लालकी ।
याचक अनेक पाये हाथी घोडा पालकी ॥
देवन सनाथ कियो जै जै रघुलालकी ।
जागी जोर भाग आज कोशला भुवालकी ॥
विकुण्ठ धनी जैति जै कृपालकी ।
जैति कोशलेश पुत्र कौशलाके लालकी ॥
जैति सर्वकाल लोकपाल मालपालकी ।
हाल काल व्याल मोचन दयालकी ॥
चारि भाल चन्द्रभाल शोक कालकी ।
नाशन अकाल जैति करन सुकालकी ॥
विश्वको भुवाल देव आलवालकी ।
जीत मेघ माल त्यों तमालकी ॥
दीन दाहिनो सुबाहु जै विशालकी ।
जैति सिंधुजा सु प्रान वल्लभ रसालकी ॥
जैति पाद कंज मंजु दीनन निहालकी ।

जैति चक्र चण्ड खण्ड नक्र वक्र गालकी ॥
जैति भूमि भार हार वानि दीनपालकी ।
जैति जै महेश चित्त मानस मरालकी ॥
जैति रघुराज पै करैया कृपा जालकी ।
जैजै रघुवंश हंस कोशलेश लालकी ॥

दोहा–जे सुर बालक ह्वै कहत, तिन्हैं अवधके बाल ।
यह सुनि कहत कहा बकतु, जगत केर जंजाल ॥

छंद चौबोला ।

इतनेहीं अवसर महँ मंदिर भीर भई जन भारी ।
सकल राजवंशी रघुवंशी और अवध नर नारी ॥
भई विभिन्न समाज उभै तहँ यक नारिन यक नरकी ।
खुलि खुलि खेलन लगे रंग सब रंगभूमि मणिवरकी ॥
कनक कुम्भ सहसन केसरि के पीतहि रंग भरे हैं ॥
सहसन राजत कुम्भ भरे दधि राजत फरस धरे हैं ॥
भरे अतरके अमल विराजत राजत कनक पराता ।
चारु चंद्र चंडांशु अकारहि थार विविध अवदाता ॥
तिनमें धऱ्यो गुलाल विविध रँग विविध बादले पूरे ।
दधि कर्दम खेलत रघुवंशी नर नारी नव नूरे ॥
बाँधि बाँधि बाला निज वृन्दन राजकुँवर धरि लेहीं ।
मलि मुख लाल गुलाल ताल दै बोरहिं रङ्ग सनेही ॥
तैसहि राज समाज जोरि जन धावैं हरष उमाहे ।
गहि गहि सकल सुंदरिन को तहँ गेरहिं कुण्ड उमाहे ॥
मच्यो कीच केसरि को वेसरि बिछलत तेहि नर नारी ।
तेहि ऊपर अरगजा बादले परि सुखात रँगवारी ॥
भयो धुन्ध ऊपर गुलाल को नभ मंडल लौं परसै ।

मूँदत भानु विमान वितानन दशहु दिशानन दरसै ॥
बहुरि कनक पिचकारिन ते जब उड़तसुरंग फुहारे ।
तब मिटि जात गुलाल धुंध नभ प्रगटत रंग पनारे ॥

दोहा—केसरि रँग धारा मिलति, सरयू धारहिं जाइ ।
रामजन्म मनु पीत पट, पहिरि लियो हरषाइ ॥

छंद चौबोला ।

कबहूं बहति श्वेत दधि धारा सरयूमें मिलि जाई ।
नृपहि बधाई देन हेतु मनु सुर सरिता चलि आई ॥
कबहुँ उसीर अतरकी धारा हरित वर्ण छबि छाई ।
मनहुँ कलिन्दी परम अनंदी पति देखन हित धाई ॥
अधिक कहूं रोरीकी घोरी अरुण धार प्रगटानी ।
सोहत मनहुँ भारती धारा सुख लूटन ललचानी ॥
कबहूं हरित सुरंग पीत रँग उमडाहिं तीनिहुँ धारा ।
रामजन्म मनु मानि त्रिवेणी लिय सरयू अवतारा ॥
धारे अरुण बसन सुखमाते रंगित अरुण शरीरा ।
मनहुँ जीति घायल रण घूमत रघुवंशी रणधीरा ॥
खेलत टूटि गये मुकुता सृग मुकुत वृन्द छहराने ।
मनु अपार सुख लेन तारगण द्वार द्वार दरशाने ॥
पुरुष नारि खेलत उमंग भरि त्यागि शरीर सम्हारा ।
मिलत मोद भरि हटत हारि नाहिं धसत गसत बहु वारा ॥
नारि पुरुष कहँ नारि बनावहिं दै दै चहुँकित तारी ।
पुरुष लजाय पराय जात कहुँ सुनि सुनि मंजुल गारी ॥
खेलत कोउ न अघात मोद रस प्रविशत धाइ देखैया ।
दशरथ भूप भाग भाषत मुख दै दै विविध बधैया ॥
रथ तुरङ्ग मातङ्ग चढ़े कोउ यक एकन ललकारैं ।

मिश्रित रोरी रत्न मूठि तहँ वारहिं वार पवारैं ॥
दोहा—वारन वाजी आदि सब, वाहन भये सुरङ्ग ।
रह्यो न अस कोउ अवध पुर, जो खेल्यो नहिं रङ्ग॥
फटिक फरश पर बादलो, छायो केसरि कीच ।
जलद पटल रविकर निकर, मनु गिरि हस्त नगीच॥

छंद चौबोला ।

खेलत खेलत रघुवंशिनको भयो विलंब महाना ।
आनँद रसवश अति उछाहदिन काल जात नहिं जाना॥
खेलत खुशी भये रघुवंशिन कोशलपति सुख छाये ।
दै नवीन भूषण पट सुंदर जस तस कै बरकाये ॥
बोलि वसिष्ठ आदि गुरु वृद्धन कुँवरन भवन सिधारे ।
नांदीमुख शराध आदिक नव जात कर्म निरधारे ॥
जो राजर्षि यज्ञ भागन ते अबलों नाहिं अघायो ।
ताहि कनक मुद्रा महँ मधु धरि दशरथ भूप चटायो॥
हिरण्याक्ष अरु हिरनकशिप भट आदिक जो संहारचो
ताहि प्रेतबाधा वारन हित राई लोन उतारचो ॥
जासु चरण प्रगटित सुरसरिता कीन्ह्यों विश्व पुनीता ।
तेहि शुचि करन हेत कौशल्या नहवावै अति प्रीता ॥
जो बलि छल्यो बाढ़ि वामन वपु द्वै पद किय संसारै ।
धन्य भाग्य तेहि रानि कौशला छोट रूप महँ पारै ॥
जासु नाम मुख लेत रोग भव छूटत विनहिं प्रयासा ।
ताहि देत घूँटी नृप भामिनि देखहु अजब तमासा ॥
जो सच्चिदानन्द विग्रह प्रभु पीतांबर छवि छावै ।
तेहि दशरथ रानी हुलसानी नीलो वसन बढ़ावै ॥
जाके वचन वेद वाणी विधि विबुध बँधे सुख सोवैं ।

दशरथ भौन कौन सूपा तेइ कहँ कहँ प्रभु रोवैं॥
दोहा–जासु नैनकी सैनते, विश्व पलत नशि जाय ।
ते नयननि में कौशला, काजर दियो लगाय ॥
जात कर्म जस कौशला, कीन्ह्यो निज सुत केर ।
तेहि विधि तीनों कुँवर कर, करी मातु सुख ढेर ॥

छंद चौबोला ।

घर घर मङ्गल विविध वधावा माच्यो परम उरावा ।
है गो आजु सनाथ अवधपुर सकल जगत सुख छावा ॥
जिमि सुन्दर मंदिर महीप के छायो परम उछाहू ।
तेहि विधि अवध नगर घर घर नर नारि उछाह अथाहू॥
कंचन केतु कलित कदली के खम्भ अनेकन द्वारे ।
धरे पुरट घर भरे सलिल शुचि चमचमात दुतिवारे ॥
घर घर तोरण ध्वजा पताके विविध किता के सोहैं ।
सींची गली सुगन्ध सलिल भल थल थल मानस मोहैं ॥
घर घर नाचत घर घर गावत घर घर बाज बजावैं ।
घर घर हुलसत घर घर विलसत घर घर रतन लुटावैं ॥
घर घर रचित चितेर चतुर कर चित्रावलि अति चारू ।
घर घर धूम धाम माच्यो पुर विमल विनोद विहारू ॥
आवत आसु अवधवासी सब कोशलनाथ जोहारैं ।
धन लुटाइ धन पाइ राज ते सादर सदन सिधारैं ॥
यहि विधि मच्यो अवधपुर आनँद को वरणै मुख एकू ।
अति संघर्ष हर्ष वर्षत नहिं सुर नर रह्यो विवेकू ॥
अवध अनन्द निहारी गगन पथ रुके भानु गति भूली ।
रुक्यो चक्र शिशुमार वार तेहि राम जन्म सुख फूली ॥
अवध जौनदिन जन्म लियो हरि सो दिन भो षट् मासा ।

हरि गुण गावत चले दिवाकर त्यागि खलन की त्रासा ॥

दोहा—बहुत काल में सुरति करि, जब डोल्यो शिशुमार।
तब संध्या भै भानु किय, अस्ताचल संचार ॥

छंद नराच।

प्रदीप पांति भावती प्रदीप पांति भावती।
सुमङ्गलानि गावती सुमङ्गलानि गावती ॥
सुदाम दाम पावती सुदाम दाम पावती।
फुलेहरानि ल्यावती फुलेहरानि ल्यावती ॥

कवित्त।

पषिकैप्रदोषकालभौनमहिपालजूके चामीकरथारनमेंपरमप्रभादली ।
धै धै हेमदीपकप्रदीपतिसुपंथछाइ पहिरेसुरंगपटधारे भूषनावली ॥
मङ्गलामुखीनसंगगावैंमङ्गलानिगीतमङ्गलानिद्रव्यलीन्ह्योचारुकुसुमावली
रघुराजआईराजमन्दिरअवधनारीतारावलीआगेकरिमानोचपलावली १
भूपतिभवनमेंविराजीदीपराजीखासी प्रगटभईहैपुनिअवधतमाममें ॥
घाटवाटवाटवाटहाटहाटदीपठाट जागारोशनाइजगतीकेग्रामग्राममें ॥
प्रगट्योप्रकाशस्वर्गलोकब्रह्मलोकहूंलौंकीन्हेतोहियामधामदेवधामधाममें
भैनेरघुराजरघुराजकेजनमदिन जोतिभैउदोतिसोविकुण्ठअभिराममें २

सवैया।

दीपति दीपावली दशहूं दिशि दीह देवारन द्वारन द्वारन।
तैसे हजारन ऊँचे अगारन बाग बजारन त्योंहीं वगारन ॥
त्यों सरयू के किनारन धारन सोहि रहे मणि दीपकतारन ॥
श्रीरघुराज मशाल अपारन वाजिन वाजिन वारन वारन।

घनाक्षरी।

रोशनीकेवृक्षरोशनीकेबनेऋषिबहुरोशनीकेगुच्छरोशनीकेरक्षअच्छेहैं।
रोशनीकेवाजीताजीरोशनीकीगजराजीरोशनीकेराजिवतड़ागगनस्वच्छेहैं।

चंदचाँदनीसोंकहूंविमलप्रकाशपूरेकहूंभानभासहीसोंफूलजातलच्छेहैं ।
भनै रघुराजकहूं श्यामरंगपीतरंग हरित सुरङ्ग रङ्गभूमिरङ्गलच्छे हैं ॥

दोहा—कारीगर केते तहां, कारीगरी देखाय ।
करि रोशनी विविध विधि, द्वारन द्वार बनाय ॥

सवैया ।

सम्पति केती लुटावत पावत गावत बाज बजावत प्रीते ।
बात बतावत मोद बढ़ावत त्यों हँसिकै हुलसावतहीते ॥
रङ्ग उड़ावत साजु सजावत खात खवावत प्यावत जीते ॥
यद्यपि याम भये षट मास पै आवत जावतही जनु बीते ।

दोहा—बिते याम युग द्योस के, बिते चारि निशि याम ।
भये याम षट मास षट, राम जन्म अभिराम ॥

छन्द चौबोला ।

मोदमई यहि भाँति चैत की नौमी निशा सिरानी ।
भयो भोर चहुँ ओर शोर मग करन लगे सुखदानी ॥
उठि भूपति करि प्रात कृत्य सब लियोवसिष्ठ बोलाई ।
दीन्ह्यो द्विजन दान संपति बहु बार बार शिरनाई ॥
महा महर्षि वसिष्ठ आदि नृप लै अन्तहपुर गयऊ ।
कुल व्यवहार चार संसारी सकल निवाहत भयऊ ॥
पुनि भुवाल मणि जाय सभा महँ बैठे परम उदारा ।
बोलि बोलि सिगरे रघुवंशिन कीन्ह्यों अति सतकारा ॥
नट भाटन वन्दी वर सूतन पंडित कविन सुजाना ।
दश स्यन्दन स्यन्दन गज वृन्दन दै दै अति सन्माना ॥
कोउ नहिं बाकी रह्यो भुवन अस जेहि दशरथ नहिं दीन्ह्यो।
ऐसहु रह्यो न कोउ कोशलपुर जो सम्पति धरि लीन्ह्यो ॥
ऋतु अनऋतु गति तजे महीरुह फूले फले अपारा ।

जहँ जस सलिल प्रयोजन तहँ तस घन वरसै जल धारा ॥
वीति गये यहि भाँति दिवस दश मङ्गल मोद उराये ।
एकादशयें दिवस भूपमणि मुदित वसिष्ठ वोलाये ॥
सिंहासन वैठाय पूजि पद वार वार शिरनाई ।
अति विनीत ह्वै विनय कियो नृप आनँद अंवु वहाई ॥
देव मनोरथ सकल हमारे पूरे दया तिहारे ।
यदपि रहे दुर्लभ परमेश्वर करुणा नैन निहारे ॥

दोहा—नाथ धरी सुख शोधि कै, द्विजन सहित विन देर ।
नामकरण अव कीजिये, चारि कुमारन केर ॥
सुनि वसिष्ठ प्रमुदित भये, एवमस्तु कहि वैन ।
उठि मंदिर आवत भये, वोलि मुनिन भरि चैन ॥
नामकरण को दिवस शुभ, करि मुनि संग विचार ।
नृपहि वोलाय सुनाय दिय, आनँद बढ्यो अपार ॥

छन्द चौबोला ।

माधव कृष्ण पंचमी शुभ तिथि नामकरण अव होई ।
यह सुनि अवध प्रजा उछाह वश लहे नींद नहिं कोई॥
नई साजु साजन सव लागे वाँधे पीत निसाना ।
तोरण कदलिखंभ द्वारन प्रति ताने विशद विताना ॥
भूप चौक महँ चंद चांदनी सरिस चांदनी सोही ।
तोरण विमल मदनमुखमोरन जेहिलखिमुनिमतिमोही॥
कदली खम्भ कनकके राजहिं रत्न पुहुप छविछाये ।
रत्न दिवार अपार दिवारन चित्र अगार वनाये ॥
मीन विहङ्ग कुरङ्ग रत्नके रङ्ग रंगके सोहैं ।
धवल धाम पर नवल निसान पवन पथ मानहुँ पोहैं॥
खैर भैर मचि रह्यो नगरमहँ नामकरण उतस

कियो जनाव जाइ रनवासहि यह उराउ नरनाहू ॥
नामकरण सुनि सकल कुमारन अति हुलास रनिवासा ।
लगीं सजावन चारु चौक सब परम उतङ्ग अवासा ॥
विविध कनकके खम्भ वितानन मुक्त झालरैं झूमै ।
चौक चारुमहँ रत्न चौक रचि किय विचित्रता भूमै ॥
तहँ वसिष्ठ कौशल्याके घर शासन जाइ सुनायो ।
चारों भाइन नामकरण हित बरहौं साजु सजायो ॥
सूरज चन्द्र कनक बनवाये औरहु वेद विधाना ।
नाम लिखन हित पान कनकके अति सुंदर निरमाना ॥

दोहा–औरौ सामग्री सकल, विरची वेद विधान ।
मुनि उर लागी लालसा, कैसे होय विहान ॥

छंद चौबोला ।

जैसे तैसे बीतिगई निशि प्रगट्यो विमल प्रभाता ।
उठि अवनीपति नित्यकृत्यकरि बोल्योगुरुहिविख्याता॥
लै मुनि मंडल गुरु वसिष्ठ तहँ भूपति सदन सिधारे ।
यह सुनि द्वार द्वार कोशलपुर बाजन लगे नगारे ॥
नौबत झरन लगी नृप मन्दिर तुरत गुणीजन आये ।
बाज बजाय गाय सुख छावत नाचन लगे सुहाये ॥
सकल राजवंशी रघुवंशी बैठे चलि दरबारा ।
अति संघर्ष भयो नृप मंदिर उमँग्यो मोद अपारा ॥
और राजमंत्री सेवक सब राजभवनमहँ आये ॥
लहि सत्कार बैठ दरबारहिं संपति विपुल लुटाये ॥
लहत अनेक इनाम गुणीजन यदपि नकछु जियआशा।
तहँ अनेक कौतुकी कला करि लागे करन तमाशा ॥
छूटन लागी तोप तड़ातड़ शोर दिगन्तन छायो ।
चढ़े विमान सुमन वरषैं सुर जय रव जगत सुहायो ॥

अवसर जानि मुदित जगतीपति पहिरि पीतपट भाये ।
करि आगे द्विजवृन्द वसिष्ठहि अन्तहपुर कहँ आये ॥
पढहिं विप्र सुस्तैन चैन भरि मंगल साजु सवाँरे ।
कौशल्या कैकयी सुमित्रा भूपति सँग बैठारे ॥
बैठे भूपति कनकासनमें करन लगे कुलरीती ।
गौरि गणेश पूजि पृथिवीपति करी श्राद्ध जस नीती ॥

दोहा—महा मनोहर सोहरो, गावन लागीं नारि ।
त्रिशत षष्टि रानी तहां, बैठीं मणिगण वारि ॥

छंद चौबोला ।

चारि कुमारन धरि सूपनमहँ धाई हर्षित ल्याई ।
लीलक वसन वोढ़ाइ गौरि ढिग धरत भई सुखछाई ॥
प्रथम रंगनाथै नृप पूज्यो करि षोडश उपचारा ।
यथायोग्य कुलदेवन पूज्यो यथायोग्य सतकारा ॥
सब देवन पूज्यो पृथिवीपति सन्त विप्र वर गाई ।
दीन्ह्यो आशिर्वाद सकल मुनि धनि धनि कौशल साई ॥
होयँ चिरायुष पुत्र तिहारे जीवहु नृप युग चारी ।
उदै धर्म पथ रहै सर्वदा सुख साहिबी तिहारी ॥
पुनि वसिष्ठ पद परशि भूपमणि विनैकरी करजोरी ।
नाथ नाम कीजै पुत्रनको यही विनय अब मोरी ॥
सुनि वसिष्ठ पुलकित तन नैननि ढारत आनँद धारा ।
कियो विचार मनहिं मन ऐसो धनि धनिभाग्य हमारा ॥
उपरोहिती कर्म अति निंदित यदपि होत जगमाहीं ।
तदपि आज मोहिं भयो सकल फल मो सम दूसर नाहीं ॥
जग कारन कारन तारन जग अज महेश सुर साईं ।
तासु करौं मैं नामकरण अब नृप बालककी नाईं ॥

अस विचारि शिरनाइ मनहिं मन बैठे निकट मुनीशा ।
बोलि भूप कहँ भूप निकट तब सुमिरि सत्य जगदीशा ॥
इनके अहैं अनेक जगतमें नाम कर्म अनुसारा ।
सकल नाम इनहींके जानहुँ कहि न सकैं करतारा ॥

दोहा—गुण अनेक अभिराम अति, विदित तीनिहू धाम ।
आम जगत विश्राम अति, अहै नाम श्रीराम ॥
पुनि कैकयी कुमारको, लीन्ह्यो अङ्क उठाइ ।
मुनि वसिष्ठ बोले वचन, कोशलपतिहि सुनाइ ॥
भरतखंड वासिन सकल, भरिहै सब मनकाम ।
ताते यह कहवाइहैं, जगत भरत अस नाम ॥
लक्षित सकल सुलक्षणनि, महावीर जग आम ।
तीजो सुत नृप रावरो, लहै सुलक्ष्मण नाम ॥
वैरिवृन्द बाधक विदित, विश्व विजय वपु वाम ।
चौथो सुत नृप रावरो, लहै शत्रुहन नाम ॥
असकहि मुनिवर कनक के, चारि पान कर लीन ।
चारि कुमारनके तुरत, चारि नाम लिखि दीन ॥

घनाक्षरी ।

पालनकरनविश्वमङ्गलकरनविश्व अन्तहूकरनजाकोनित्यआचरनभो ।
दीनदुखदरनहरनमहिभारहेत सन्तन भरन हित जासु औतरन भो ॥
अधमोद्धारनदीह दुःखको दरन जौन पोषन करनअशरनको शरनभो ।
भनैनरघुराजसबनामकोकरनजाते ताकोआजु औधपुर नामकोकरनभो

सोरठा—करुणासिंधु मुरारि, करुणाईको कहि सकै ।
जाको वेद पुकारि, नेति नेति भाषत रहैं ॥
जाते सब अवतार, सो अवतार लियो अवध ।
को कहि पावै पार, जासु कृपा महिमा अमित ॥

दोहा–मुनि वसिष्ठ बोले वचन, सुनहु अवध भरतार।
जनमकुंडली सुतनकी, सुनिये सहित विचार॥

छन्द चौबोला।

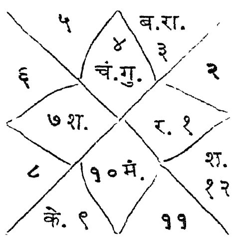
संवत सर्वजीत त्रेता युग ऋतु वसन्त मधु मासा।
नखत पुनर्वसु शुक्लपक्ष वर शशिवासर सहुलासा॥
शूल योग तिमि करन कौल शुभ नौमीतिथि सुखदाई।
मध्य दिवस अरु कर्क लग्नमें जन्म लियो रघुराई॥
परे प्रथमही गुरु शशि सुंदर गुणगाहक सुत होई।
चौथे शनिको सुनहु नृपति फल सकल भाँति मुद मोई॥
पित्त वातकी प्रकृति कछुक तनु कछु आलस सुकुमारी।
बहुत थूल नहिं होय शरीरहु कबहुँ विपिन संचारी॥
धर्म हेतु सुखशील साहिबी गुरु पितु मातु रजाई।
ताजि कछु दिन पर हेत वसहिंगे विपिन दूरि कहुँ जाई॥
छठयें केतु अतिथि सुर भूसुर कवि दीनन सत्कारी।
अति दयालु तनु द्युति तमाल वर बहु तीरथ पगधारी॥
सतयें मंगल तिय विरही ह्वै प्रबल शत्रुसों लरि हैं।
करिहैं कपि मित्रता महानी सुयश सकल जग भरिहैं॥
नवयें शुक्र बुद्धि विद्यामय अतिकृतज्ञ नृप सोई।
परमउदार विचार मान पुनि विभव विष्णु सम जोई॥
दशयें रवि वसु वाहन त्यों निगमागम सकल बतैहैं।
बुधि बल विद्या विपुल विशारद शत शक्रन सुख पैहैं॥
धन अरु धान्य धाम पूरित ध्रुव कहुँ मुनि वेष बनैहैं।
महाराज शिर मुकुट मणिन मंडित नख ज्योति सुहैहैं॥

दोहा–द्वादशयें बुध राहु को, फल सुनु महामहीप।
साधुन हेती होहिंगे, शासक सातहु द्वीप॥

छन्द चौबोला ।

नाथ फल पुनि सुनु नरपति धर्म कर्म मन लाऊ ।
अति विनीतशुभशील डीलरिजुअतिशयसरलसुभाऊ ॥
और बृहस्पति को फल नृपमणि जई प्रताप सुरालै ।
दृढ़ मंत्री शरणागतपालक संतन के सुख आलै ॥
अब शुभ योग बतावत हौं कछु बालक जेठ तिहारा ।
जन्म पंचग्रह उच्चयोग यह ह्वैहै भूभरतारा ॥
सातद्वीप नवखंडनरंजन अकथ अलौकिक करणी ।
सांचो सकल भुवनको स्वामी यहिपतिमानिहै धरणी ॥
केंद्री है नवयेंकरस्वामी योगचन्द्र चूड़ामणि ।
गुरुद्विजभक्तसकलगुणसागर दाताशूर शिरोमणि ॥
सबग्रह निरखतहैं निशिपतिको योगकही कलपद्रुम ।
श्रीरघुराज सो जगत जियावै दोष हरै कैमद्रुम ॥

श्रीरामजन्मकुंडली ।



या सुतके गुण योग भोग वर पुहुमी प्रतिथ प्रभाऊ ।
मेरीका गति कहन सकल फल कहि न सकैं अहिराऊ ॥
नहिं जानो को आइअवतरो जागे भाग्य तिहारे ।
किधौं रमावल्लभ तुम्हरे घर करिकै कृपा सिधारे ॥
सुनहु भरतकी भूप कुंडली कुँवर कैकयी केरो ।
पुष्य नक्षत्र चैत्र शुदि दशमी मीन लग्न शुभ हेरो ॥
दंड निशा बाकी जन्म्यो यह सकल जगत सुखदाई ।

प्रथम शुक्र दूजे रवि शशिजहु राहु चतुर्थ गनाई ॥
दोहा—पँचयें गुरु शशि आठयें, शनि दशयें है केतु ।
अहैग्यारहें भौम अस, भरत कुंडली नेतु ॥
धर्म धुरंधर वीर मणि, अग्रज प्राण पियार ।
इष्टदेव सब मानि है, जेठो भ्रात उदार ॥
नेम निबाहक अति सहज, सुंदर शील सुभाव ।
जेठ भ्रात अनुहार तन, दायक मुनिन उराव ॥
बुद्धिमान मंजुल वचन, विक्रम शक्र समान ।
परकृत लगी कलंक कछु, कछुदिन दुखी महान ॥
तजि कुटुंब धरि वेष मुनि, करिहै तप अतिघोर ।
बंधु प्रीति यहि सम न कहुँ, बंधु वियोगहु थोर ॥
लषण कुंडली अब सुनहु, चैत्र शुक्ल बुधवार ।
एकादाश दंडमाहँ अवतार ॥
कर्क लग्नमें जन्म भो, प्रथमै गुरु शशि जान ।
चौथे शनि छठयें कह्यो, केतु महाबलवान ॥
सतयें मंगल नवम पुनि, शुक्राचार्य सोहाइ ।
दशयें रवि बुधवारहें, राहु परचो ग्रह आइ ॥
यहू कुंडलीके सुफल, सुनहु सकल महिपाल ।
कनक वर्णतनु अतिसुभग, सुंदरबाहु विशाल ॥
महाबली धनु शर निपुण, वीर शिरोमणिसत्य ।
सर्वस अग्रज मानिहै, तेहि पद निरत सुनित्य ॥
अति प्रचंड खंडल दुवन, यश भरिहै नव खंड ।
शील रूपगुण निधि नवल, दलिहै पुहुमिपषंड ॥
विद्यामानगमान वित, निरभै सहज सुभाव ।
गौरवर्ण सरसिज नयन, जिमि पूरण उडुराव ॥

दीन सनेही हीन दुख, कछु दिन नारि वियोग ।
कानन चारी कछुक दिन, जेठ भ्रात संयोग ॥
सुर जेता नेता अवनि, भुवन उदग्र प्रताप ।
करी मिताई कपिन सों, करि वैरिन सन्ताप ॥
महाशत्रु संगर वधी, दिन प्रति युद्ध उछाह ।
अतिआतुरक्रोधी कठिन,दलनायक जगमाह ॥
तीनिहुँ बंधुनते कछुक, आयुष ओछि निदान ।
लषण कुंडलीको कियो,फल नरनाह बखान ॥

घनाक्षरी ।

जेजेफलभूपसुनशत्रुशालकुंडलीकेचैत्रशुक्लएकादशी नषतसरेखाहै ।
चौदैदंडबीतेदिन लीन्ह्योअवतारयह करकलगनमें अतीवसुखरेखाहै ॥
मूरतिमेंगुरुशशिचौथेशनिछठौकेतुसातयेंसुभौमनौमशुक्रशास्त्रलेखाहै ।
दशयेंतमारिबुधराहुबारहेविराजैताकोफलादेशसुनौसोमतिसरेखाहै १॥
महाबलीधीरवीरअग्रगण्यधराधन्यविदितब्रह्मण्यत्योंशरण्यसर्वकालहै ।
पूरणशशीसोंवेषभ्राताभक्तरेखजाकी राखैगोनशत्रुशेषतेषसुरपालहै ॥
भनैरघुराजमथुराकोयह होईराज करीसबकाजभ्रातहुकुममेंहाल्है ॥
संगर करालसदादीनजन जूहपाल तेजग्रहपालइवह्वैहै शत्रुसाल है॥२॥

दोहा—चारि कुमारन कुंडली, फल दीन्ह्यो मुनि गाइ ।
सुनि भूपति रानी सकल, बोलीं पद शिरनाइ ॥

छन्द चौबोला ।

औरहु चार करावहु मुनिवर शशि सूरज सुत देखें ।
तुम्हरी कृपा नाथ यह आनँद हमको भयो अलेखें ॥
चारिकुमारनके करते कछु दीजै दान कराई ।
धर्मनिशा महँ करहु नाथ पुनि षष्ठी कृत्य बनाई ॥
सुनि मुनि वचन पुलकि तनु बोले सो अवसर अब आयो ।

कुँवरनको लै जाइ बाहिरे सूरज चन्द्र देखायो ॥
उठीं सकल रानी हुलसानी पीतवसन तनु धारे।
दशरथ पीतांबर पहिरे तहँ मंजुल वचन उचारे ॥
देव तिहारी कृपा भये सुत ताते तुमहिं उठाई।
लै अंगन प्रभु चारि कुमारन रवि शशि देहु देखाई ॥
मुनि वसिष्ठ अभिलषित सिद्ध गुणि रामहि लियोउठाई।
विहँसि देखावन शशी दिवाकर अंगनमें लै आई ॥
रामहिं प्रथम देखायो रवि शशि पुनि लषणै मुनिराई।
बहुरि भरत रिपुसूदन कहँ तहँ अति आनँद उर छाई॥
मङ्गल गीत कामिनी गावैं अति मंजुल सुर छाई।
बाहर दगैं तोप अगणित जन सम्पति रहे लुटाई ॥
मुनि समीप दशरथ नृप सोहत पुनि तीनों महरानी।
पुनिसै तीनि साठि रानी सब सोहि रहीं छविखानी ॥
करहिं कुमारनकी नेउछावरि चूमहिं वदन सरोजू ॥
करहिं बहुरि दशरथ नेउछावरि रह्यो न दुखकर खोजू।

।—कौशल्या केकैसुता, तथा सुमित्रा पाहिं।
करहिं निछावरि सकल तिय, कनक रत्न शिर माहिं॥
रघुवंशिनकी दार बहु, सचिव सुहृद पुर नारि।
करी निछावरि विविध विधि, प्रमुदित सुतन निहारि॥

सवैया।

प्रभु आपने आपने देखन को अँगनामें कढ़े मुनि अंक लसैं।
धनि भाग्य विचारि तमारि वहां रथ रोकि रहे हियमें हुलसैं॥
तिनको करि वन्दन बारहिंबार शशीयुत मोद लहे सरसैं।
रघुराज गुने हम देखे तिन्हैं अजौं देखनको जो अजौं तरसैं१॥

जाको अहै मन चंद्रमा चारु सुनैन हैं सूरज बाहु सुरेशू ।
जो करता भरता हरता जग मानत लोकप जासु निदेशू ॥
को वरणै रघुराजकी भाग्य हरी प्रगटे जेहि आइ निवेशू ।
अंगनमें शशि सूर देखावत पाणि में सूपन लै अवधेशू ॥२॥

दोहा–कहां कहां गये हरी, मुनि कह भरि अनुराग ।
कहँ विकुण्ठ कहँ वसुमती, धनि धनि दशरथ भाग ॥
मुनि कह तुमहुं देखावहू, लै सूपन कर माहिं ।
सुतन सूर शशि यह छने, मङ्गल होत सदाहिं ॥
पृथक पृथक सूपन सुतन, भूपति पाणि उठाइ ।
देखगयो रवि चन्द्रमा, अंवक अंबु वहाइ ॥

घनाक्षरी ।

सातलोकऊरधत्योंसातलोकअधहूकेसंयुतअखंडब्रह्मअंडएकफनमें ॥
धारैअहिराजजौनसर्षपसमानविश्व सोई तेजविश्व ते समेतछनछनमें ॥
कमठावतार धारि धारै पीठिपंकजसो भुवनअधारसरदारसुरगनमें ॥
ताकोसूपपारिकैउठाइनिजहाथनसोंभूपदेखरावैभानकौशिलाअँगनमें ।

सोरठा–शीत भानु अरु भान, यहि विधि सुतन देखाइकै ।
दियो विविधविधि दान, अवधनाथ आँनदमगन ॥
यहि विधि करि सब चार, भूप बाहिरे गमन किय ।
जहां सचिव सरदार, बैठे वर दरबार महँ ॥
सिंहासन आसीन, भयो भूप मघवासरिस ।
पुरजन सचिव प्रवीन, आइ जोहारे भृत्य भट ॥
यथायोग्य सतकार, यथायोग्य बैठाइ किय ।
बोले वचन सुधार, तुम्हरी कृपा उछाह यह ॥

दोहा–मुनिवर कुँवरन पाणि ते, लक्ष लक्ष वर धेनु ।
दान करायो सविधि तहँ, भयो दीन गण चेनु॥

करि रक्षन पाठ मंत्र सुख, यंत्र बाँधि मुनिराइ।
सावधान कहि तियनको, गे मन्दिर हरषाइ ॥
सभाभवनमें भूप उत, बैठे सहित समाज ।
पौर प्रकृति भट जान पद, रघुवंशी सब राज॥

छंद चौबोला ।

बार बार सत्कार करहिं नृप मंजुल वचन सुनाई ।
अतर पान सुरभित जल माला सबको देत देवाई ॥
ईश मनावहिं अवध प्रजा सब पुत्र चिरायुष होवैं ।
को महीप मानद तुम्हरे सम हम तुवबल सुख सोवैं॥
कह्यो राजमणि पुनि रघुवंशिन आजु जाति जेवनारा ।
भोजनभवन चलहुबांधव सब हिलि मिलिकरहिं अहारा
अति राजी रघुवंशिन राजी विकसितदृग राजीवा ।
भोजन भवन जाइ धोये पद कर हिय हरष अतीवा ॥
यथायोग्य बैठे सब बांधव तब नरनाथ उदारा ।
मध्य बंधुमंडली विराजे तुरतहि बोलि सुवारा ॥
भरि भरि विविध भाँति पकवानन विविध हेमके थारा ।
परुसहु सकलराजवंशिनको करहिं यथेच्छ अहारा ॥
कसि पट आछे सबके पाछे ल्यावहु मम पनवारा ।
जस हमको तस सब भाइनको करहु न भेद विचारा ॥
सुखीसूद सुनि सपदि चले तहँ सरदारन अनुरागे ॥
कञ्चन थारन भोज्य अपारन प्रमुदित परुसन लागे ॥
ओदन दुदल बटी बट व्यञ्जन पय पकवान अपारा ।
मनरञ्जन विरञ्जन बहु भाँतिन कलिय कबाबहु सारा ॥
विविधभाँति पूरी सुखपूरी झूरी सरस सुहाई ।
विविधभाँति मेवा षटरस युत तिमि बहु भाँति मिठाई ॥

दोहा—को वरणै अवधेशके, व्यञ्जन विविधप्रकार ॥
करि सत्कार उदार नृप, करवाये जेउनार ॥

छंद चौबोला ।

सकल राजवंशी रघुवंशी भोजन करि सुख छाये ।
अचवन करि नरनाथ हाथसों तांबूलनको पाये ॥
बहुरि प्रजनको कियो निमंत्रण व्यञ्जन विविध जिवाँये ।
पौर जानपद दै अशीश सब निज निज भवन सिधाये ॥
भाइन मंत्रिन भृत्यन प्रकृतिन प्रजन सुहृदगण काहीं ।
यथायोग्य भूषण पट दीन्हें बाचि रह्यो कोउ नाहीं ॥
यथा कियो सत्कार बाहिरे दशरथ नृप मतिखानी ।
तिमि बांधवन पौर नारिनको सतकारी सब रानी ॥
खात खवावत हँसत हँसावत भै संध्या सुखदाई ।
छठी चारु उपचारु करन नृप कह्यो वसिष्ठ बोलाई ॥
परम हुलास प्रकाश हिये महँ गुरु रनिवास सिधारे ।
षष्ठी भवन साजु सब सुन्दर वेद विधान सवाँरे ॥
कौशल्या कैकयी सुमित्रा बैठीं सुतनसमेतू ।
कनककुम्भ मणिखचित सप्तशत धरिगे कनकनिकेतू ॥
मणिन दीप अवली अति राजति आगे गौरि गणेशू ॥
पुरट पात्र सामग्री सोहति जैसी वेद निदेशू ॥
अवसर जानि सुमन्त तुरन्तहि भूपति गये लिवाई ।
गुरु वसिष्ठ तहँ वेद मंत्र पढ़ि कृत्य अरम्भ कराई ॥
दासी परिचारिका पौर तिय रघुकुलकी सब नारी ॥
बैठीं सकल अङ्गना अङ्गन जिन लखि सुरतिय हारी ।

[दोहा]—पूजन पावत व्याजते, राम दरशके हेत ।
भै प्रत्यक्ष षष्ठी तहां, षटमुखयुत सुख देत ॥

जिन जिन देवन होत हैं, पूजन छठी विधान।
रामदरश हित देव ते, प्रगटे मूरतिमान ॥

छंद चौबोला।

निज निज पाणि लेत पूजन सुर राम पदुमपद परसी।
करहिं मनहिं मन रघुनन्दनको वन्दन आशिष बरसी ॥
गावहिं गोरी गीत मनोहर सोहर सदन सुखारी।
नृपकी रानिनकी कुँवरनकी करहिं निछावरि नारी।
जिनको यथाविभव रघुवंशिन ते तस मणि समुदाई।
ल्याइ ल्याइ भूषण धन देते छठी कुम्भमहँ नाई ॥
खैर भैर मचि रह्यो राज घर दीपावली विराजै।
छठी होत दशरथ कुँवरनकी हठी न कोउ सुख काजै ॥
रघुकुलकी सब सुभग सुवासिनि शीशन लिये चँगेरी।
विविध भाँतिकी जटित जवाहिर दीपावली घनेरी ॥
वसन विचित्र अनेक रङ्ग सुमकलश विचित्र प्रकारा ॥
शिर धरि नचहिं अङ्गना अङ्गन सोहर गाइ अपारा ॥
युग युग जियहिं राज दुलहेटा दै अशीश द्विज नारी।
पाइ भीख लै सीख जाइ घर कोउ आवतीं सुखारी ॥
राजभवन बाहर अरु भीतर मङ्गलमुखी सुनाचैं।
गाइ गाइ वर अनँद बधाई अति आनँद रस राचैं ॥
छठीभवन भूपति रानिनयुत छठीकृत्य सब करहीं।
खड्ग कमान बाण करियारी मंथ पूजि सुख भरहीं ॥
यहि विधि करिकै छठी कर्म सब लक्ष गऊ नृप दीन्हें।
गुरु वसिष्ठ विप्रन कहँ बाँटे ते सादर सब सब लीन्हें ॥

दोहा—छठी भवनते कढ़ि नृपति, सहित सकल रनिवास।
सभाभवन अन्तहपुरहि, बैठे सहित हुलास ॥

छन्द चौबोला।

कौशल्या कैकयी सुमित्रा त्रिशतसाठि सब रानी।
औरहु सब रघुवंशिन दारा लसहिं सभा सुख सानी॥
औरहु नगर नारि दासीगण परिचारिका अनेका।
पृथक पृथक सत्कारहिं रानी करि करि विमल विवेका॥
अवसर जानि रैनि आधीगत सैन अयन पगु धारे।
छठी भवन जागरण करी तिय गाइ बजाइ अपारे॥
यहि विधि बरहौं छठी सुतनकी भूपति मणि निरधारी।
बसे अवध आनन्द अवधि लहि निरखि कुमारन चारी॥
दिन दिन दून दून आनँद रस अवध नगर अधिकातो।
दशरथ सुकृत सुसम्भव विभव विलोकत शक्र सिहातो॥
वर्षहिं वारिद काल काल महँ समौ सुहावन होई।
कोउ नहिं दीन हीन सम्पति जन दुख जानै नहिं कोई॥
नित नवमङ्गल भवन भवन प्रति अवध प्रजा सुखरासी।
कब कढ़िहैं बाहिर राजसुत देखनके सब आसी॥
आठ सिद्धि नव निधि सुरपादप चिन्तामणि सुरधेनू।
अवधनगरमहँ डगर डगर जनु वास किये भरि चेनू॥
अवधनगर अवलोकि अमर सब शिर भरि वन्दन करहीं।
कौशलदेश जन्म हित ललकत सरयू रजशिर धरहीं॥
जहँ प्रगटे नारायण जगपति चारि भ्रात भगवाना।
तहँकी सम्पति विभव साहिबी को करि सकै बखाना॥

सोरठा—राम जन्म उत्साह, मैं वरण्यों संक्षेप कछु।
को अस कवि जग माहँ, पावत पार समग्र कहि॥

इति सिद्धिश्री साम्राज्यमहाराजाधिराजश्रीमहाराजा बहादुर श्रीकृष्णचन्द्र कृपापात्राऽधिकारि श्रीरघुराजसिंहजू देव जी. सी. एस. आई. कृते रामस्वयंवरग्रंथे रामजन्मोत्सवे पंचमप्रबन्धः॥ ५॥

दोहा—कवि कोविद ज्ञानी रसिक, वरणैं रामचरित्र ।
कथन व्याज कीन्हें भजन, इत उत होन पवित्र ॥
हरिलीला वर्णत यथा, चित्त अचञ्चल होइ ।
योग याग साधन विविध, तथा करै नहिं कोइ ॥
ताते हरिलीला कथन, सब साधन शिरमौर ।
कहत सुनत वर्णत गुणत, अस आनँद नाहिं और ॥
भागवतादिकग्रंथको, जानहु यही निचोर ।
हरिलीला गावत सदा, पावत अवध किशोर ॥
चलै ग्रंथ पुहुमी प्रथित, सुकवि प्रशंसहिं मोहि ।
यहि हित मैं रघुवरकथा, नहिं वरणों सुख जोहि ॥
महाघोर कलिकाल यह, मोसम अघी अनेक ।
निरत विषय रस मोह वश, त्यागत भक्ति विवेक ॥
योग याग जप तप नियम, ज्ञान विज्ञान विराग ।
हरिलीला अनुराग तजि, करत विषय अनुराग ॥
सुत दारा सम्पति सदन, अति अशक्त निज मानि ।
खान पान तजि आन नहिं, जानत सुख जिय आनि ॥
कहौ कौन विधि होइ भल, दीन्हें प्रभुहि बिसारि ।
निरत जगतके कर्म नित, हारेहु गुणत न हारि ॥
पिता पितामह आदि सब, सुतहू नाति पनाति ।
बन्धु कुटुंबहु नारि नित, मरत लखत दिन राति ॥
महा मोहवश तदपि जन, हम जीहैं शत वर्ष ॥
मानि ठानि जग काज नित, मृषा गुणत दुख हर्ष ।
सो कलिकालप्रभाव सति, नहिं देही को दोष ।
मोसम अघी अलाल बहु, करत कछू न समोष ॥
सो ऐसे कलिके समय, केवल नाम अधार ।

कौनहु मिस मुखते कढ़त, पीसत पाप पहार ॥
पूरव पुण्य रही कछुक, ताते लहि सतसङ्ग ।
सन्तनके उपदेशते, रँग्यो कछुक हरिरङ्ग ॥
श्रीगुरुकृपाप्रसादवश, उपज्यो कछुक विचार ।
मोसम अघी न और कोउ, करौं कौन उपचार ॥
श्रीहरि गुरु पितुकी कृपा, कियो मनहिं अस ठीक ॥
जैसे तैसे रामयश, विरचहुँ नेवर नीक ।
कृष्ण रामके नाम गुण, लीला धामहुँ रूप ।
वर्णन व्याजहिंते वदौं, यह उधार भवकूप ॥
नहिं जानौं कछु छन्द गति, नहिं साहित्य सँयोग ।
नहिं शास्त्रन सम्बन्ध कछु, तापर ग्रस भव रोग ॥
रामकृष्णलीलाकथा, करहुँ यथामति गान ।
और उपाय प्रकार कछु, मोहिं न सरल देखान ॥
रामकृष्ण कीरति विमल, जो कछु वर्णन होइ ।
मोर भाग्य सन्तन कृपा, कारण और न कोइ ॥
रामजन्म उत्साह यह, वरण्यो मतिअनुसार ॥
बालचरित अब कछु कहौं, रसिकनको आधार ॥

छन्द चौबोला ।

नामकरण जबते पुत्रनको कीन्हें दशरथ राई ।
तबते होत रहत नित नव नव मङ्गल मोद बधाई ॥
रोज्हिं मुनि मण्डली महीपति सादर निवति जेवावैं ।
दीनद्विजन गृह बोलि बोलि बहु व्यंजन विविध खवावैं ॥
न्योति न्योति पुरवासिनको नृप रचि रचि अशन प्रकारा ।
सादर सूपकार हाथनते करवावते अहारा ॥

राज राज विप्रन वसुधापति रत्न दक्षिणा देहीं।
रोज रोज दीननके दारिद दारत रामसनेही॥
उमा रमा शारदा शची सब औरहु देवन दारा।
अवधनगर नारिन स्वरूप धरि करि षोडश शृङ्गारा॥
कौनहु काज व्याज अन्तहपुर प्रमुदित करहिं प्रवेशा।
करि कौनहु उपाय देखहिं प्रभु त्यागहिं सकल कलेशा॥
सुंदर कनक अमोल खटोलन नील निचोलन धारे।
किलकत कबहुँ हँसत कहुँ रोवत सोवत चारि कुमारे॥
कबहुँ निहारत कर मुख डारत कबहुँ उचारत गूँगा॥
पय प्यावति जननी लखि सूखत अधर निदरिदुति मूँगा।
सखी डुलावहिं विजन बैठि कोउ राई लोन उतारैं॥
तैल बोरि पट अनल जरावहिं दीठि दोष द्रुत झारैं॥
गुरु वसिष्ठ बुलवावहिं रानी आवहिं साँझ सवेरे।
हाथ देनके व्याज परशि पद पावहिं मोद घनेरे॥

—भूमि धेनु पट कनक तिल, अन्न करावहिं दान।
वाक्य वसिष्ठ पढैं विहँसि, रक्षहिं सुत भगवान।

छन्द चौबोला।

कोउ मुठुकी घुनघुना डुलावैं कोउ करताल बजावैं।
अङ्क उठाइ कोउ हलरावैं सुत रोवन नहिं पावैं॥
सखि कज्जल को परम सलोना भाल डिठोना देहीं।
मनु पङ्कज कोना पर बैठो अलिछौना मधु लेहीं॥
कबहूँ अङ्क उठाइ भामिनी मणिन चित्र दरशावैं।
कबहुँ अङ्क धरि मणिन खिलौनन अनुपम खेल खिलावैं
कबहुँ पालने पारि मनोहर जननी मन्द झुलावैं।

कहां कहां गवन जब लागें कहा कहत दुलरावैं ॥
जिन बालनके नाम सुनत भव भूत भीति भजि जावैं ।
तिन बालकन धूप देतीं तिय भूत भीति नहिं आवैं ॥
करन चरण मुख चूमहिं जननी लखि नैननि तृण तूरी।
तेहि ओषधिमूरी तिय प्यावैं जो जग जीवनमूरी ॥
कुँवर कहूं रोदन अति करहीं नहिं रगाइ रगवावैं ।
तब झारहिं पढ़ि मंत्र अनेकनि भूपहि खबरि जनावैं ॥
आवहिं तब रनिवास राजमणि गुरु कहँ सङ्ग लेवाई ।
तुलादान घृत अन्न मधुन के विप्रन देहिं दिवाई ।
वृद्ध वृद्ध नारी पुरवारी वाल चिकित्सा ज्ञानी ।
तिनहिं बोलाइझराइ विविध विधि तजहिं शङ्कसब रानी ॥
वामदेव आदिक मुनि ज्ञानिन सुतन निकट बैठाई ।
शङ्कर विष्णु सहस्र नामकर पाठहु देहिं सुनाई ॥

हा—यहि विधि अवध अनन्द महँ, बीत्यो पञ्चम मास ।
लाग्यो छठवाँ मास पुनि, अति हुलास रनिवास ॥
एक दिवस नरनाह तब, गुरु मन्दिर महँ जाइ ।
गुरुपद पङ्कज परशि कै, बार बार शिरनाइ ॥
बोले वचन विनीत ह्वै, सुनिये देव दयाल ।
अब आयो कुँवरन सकल, अन्नप्राशनी काल ॥
यथा उचित तस कीजिये, करिलीजिये विचार ।
मंत्रिन आयसु दीजिये, करन हेत उपचार ॥

छन्द चौबोला ।

सुनत वसिष्ठ हुलसि हिय बोले भले कह्यो महराजा ।
चारि कुमार अन्न को प्राशन करवावहु कृत काजा ॥
असकहि शुभदिन शोधि ब्रह्मऋषि तुरत सुमन्तबोलायो।

भादौं मास श्रवण द्वादशि को सुदिवस सुखद सुनायो ॥
जेहि दिन वामन जन्म लियो जग तेहि दिन भूप दुलारे ।
कराहिं अन्नप्राशन दुखनाशन रङ्गनाथ के द्वारे ।
सुनत सुमन्त पुलकि तनु बोले भले कह्यो मुनिराई ॥
हौं अब जात साज सजवावन जस मुनिराज रजाई ॥
बगरि गई यह मोदमई सब खबरि अवधपुर माहीं ।
नृप कुँवरनकी अन्नप्राशनी होति द्वादशी काहीं ॥
नगर नारिनर अति आनंदित यथा विभव जिन केरे ।
लगे बनावन बाल विभूषण हीरा हेम घनेरे ॥
सुनि कुँवरनकी अन्नप्राशनी भरि उमंग अनुरागीं ।
पृथक पृथक दशरथ महरानी साज सजावन लागीं ॥
घर घर तोरण विमल पताके कञ्चन कुंभ धराये ।
क्रमुकरंभके खंभ विराजत पथ जल सुरभि सिँचाये ॥
सचिव सुमंत आदि जेहि विधि मुनिराज रजायसु दीन्हें ।
तेहि विधि साजु साजि सब विधिसों राजकाज सब कीन्हें ॥
आइगई द्वादशी हुलासिनि अन्नप्राशनी वाली ।
खैर भैर माच्यो कौशलपुर चलीं सकल जुरि आली ॥
दोहा—उठि प्रभात नरनाह तब, सहित उछाह नहाय ।
नित्य कृत्य निरबाहि सब, जावक चरण दिवाय ॥

छन्द चौबोला ।

चले रंगमंदिर अति सुंदर जहँ इंदिरा प्रियालै ।
तहँ कौशल्या अरु कैकेयी लषण जनानितेहिं कालै ॥
औरहुँ त्रिशत साठि महरानी रची शची इव साँची ।
परिचारिका सहस्रन सोहैं रति रंभा छवि राँची ॥
गावहिं मंगल गीत प्रीत भरि कनक कुंभ शिर धारे ।
कोउ दधि दूब हरद अक्षत भरि चलीं कनक कर थारे ॥

यहि विधि सहित सकल रनिवास हुलास भरे महिपाला।
रंगनाथ मंदिर महँ आये लै चारिहु निज लाला ॥
करि वन्दन पुनि दै परदक्षिण बैठे मंदिर माहीं ।
पौर जानपद सचिव आदि सब नहिं तेहि चौक समाहीं॥
विविध भाँति बाजन तहँ बाजैं सुमन सुमन झरि लाये ।
गायक नर्तक गावत नाचत कौतुक कला देखाये ॥
तब सुमंत कहँ बोलि महीपति शासन दियो सुनाई ।
रघुवंशिन कहँ बेगि बुलावहु सादर नेवत पठाई ॥
कियो महीपति रंगनाथ को पूजन सकल प्रकारा ।
बार बार वंदन करि शिर सों करि अस्तुति बहु बारा ॥
चारि कुमारन के कर ते तहँ नेउछावरि करवाई ।
बोलि परम परवीन सुवारन बहु व्यंजन मँगवाई ॥
धरयो रंगपति के आगे सब थारन पुरट भराई ।
गुरु वसिष्ट तहँ रंगनाथ कहँ दियो निवेद लगाई ॥
—मनरञ्जन गञ्जन अरुचि, बहु विधि बने विरंजु ।
पय प्रकार बहु भाँतिके, कलित मसाले मंजु ॥

छन्द चौबोला ।

दधि प्रकार ओदन प्रकार बहु तिमि कृसरान्न प्रकारा ।
मृदु मिष्ठान्न प्रकार अनेकन सुधा स्वाद सुख सारा ॥
विविध वटी वट फल प्रकार बहु पूरी पूप सुहाये ।
तिमि प्रकार आचारन के बहु षट रस रुचिर मिलाये ॥
चारि भाँतिके परम मनोहर औरहु सब पकवाना ।
सुरभित सलिल अनेक भांति के सूपकार मतिवाना ॥
यथा योग्य रघुवंशिन परुसे भृत्यन कहँ तिमिदीने ।
औरहु साधुन विप्रन को तहँ परुसे परम प्रवीने ॥

भोजन प्रथम सन्त सब कीन्हें पुनि द्विज वृन्द जवाँये ।
दै दक्षिणा भूपमणि निज कर पुनि सादर शिरनाये ॥
पाय अशीश महीश शीश धरि गुरु वसिष्ट ढिग जाई ।
गुरु के अंक कुमारन को तहँ बैठाये शिरनाई ॥
रंगनाथ को लै प्रसाद मुनि रामहिं दियो खवाई ।
बहुरि भरत कहँतिमि लषणहुँ कहँ रिपुहनको सुखछाई॥
मुनि कह सुनहु महीप शिरोमणि लै निज अंक कुमारा।
करहु अन्नप्राशनी पाणि निज यथा वंश व्यवहारा ॥
पढ़न लगे स्वस्त्ययन ब्रह्मऋषि गाइ उठीं सब नारी ।
लै नरनाथ अङ्क रघुनाथहि रंगनाथ संभारी ॥
तनक तनक सिगरे सुख व्यंजन सुतहि खवावन लागे ।
मोचत युगल विलोचन आनँद वारि परम अनुरागे ॥

दोहा—लषण भरत रिपुदमन की, अन्नप्राशनी कीन ।
लघु लघु भूषण कर चरण, पहिराये मुद भीन ॥

कवित्त

अति अनुरागनते ब्रह्माजूकी जागनके भागनतेआजुलौंनतोषकछुपायोहै
महाभागदेवन के सेवनते साहबजो पायकै कितेकबलिचित्तनहींलायोहै।
बलिप्रहलादअंबरीषआदि भक्तनते लहिकै निवेदभूरिभोजकहवायोहै ।
सोईरघुराजराजराजदशरत्थजूकेपाणिचारिचाउरतेआसुहीअघायोहै ॥

दोहा- जो षट्रस नव रस स्वरस, रस अनरसमय देव ।
ताहि चटावत षट रसन, धन्य अवध नर देव ॥
चारि कुमारनकी करी, अन्नप्राशनी भूप ।
पुनि रघुवंशिनके सहित, भोजन कियो अनूप ॥

छन्द चौबोला ।

रानी सकल कुमारन को तब राई लोन उतारी ।
भाल डिठौना दै अति लोना फेरि उतार्‌यो वारी ॥
वीरसिंह रघुवंशी को तहँ लीन्ह्यो तुरत बोलाई ।
रतनालिका तासु वर दारा धोवा धाइ बनाई ॥
भूपति लै चारों कुवँरनको सपदि बाहिरे आई ।
शत्रुंजय सिंधुर हरि गज सम तापर दियो चढ़ाई ।
पुनि तुरङ्ग पर पुनिस्यन्दनपर दशस्यन्दन चढ़वाई ।
कुवँरन कर छुवाय संपति बहु दीनन दियो लुटाई ॥
जय जयकारि मच्यो तीनिहुँ पुर भयो महा संवर्षा ।
देव विमानन हने दुंदुभी करि फूलनकी वर्षा ।
सचिव पौर बांधव उत्साहित लै ल भूषण दीन्हें ।
सहित सकल रनिवास राज वर गृह प्रवेश तव कीन्हें ॥
को कहि सकै आज दशरथकी भाग्य विभूति बड़ाई ।
जासु भवन अवतर्‌यो भुवनपति कृपासिंधु रघुराई ॥
देखि कुमारन अवध प्रजा सब आनँद मगन महाना ।
अनिमिष निरखत वदन अनूपम चन्द्र चकोर समाना ।
कोउ दुलरावै कोउ खिलावै कोउ हलरावै आई ।
चारु चौंर चहुँ ओर चलावैं मोरछलान डोलाई ॥
देहिं अशीश अवध नर नारी युगयुग जीवहिं प्यारे ।
कब कर शर धनुधरि विचरहिंगे अङ्गन अटनिअखारे ॥

दोहा—अन्नप्राशनी राम की, यहि विधि भई विशाल ।
अवध प्रजा आनँद मगन, वसे सहित महिपाल ॥

छन्द चौबोला ।

जब ते अन्नप्राशनी ह्वै गै रङ्गनाथ के द्वारैं ।

तब ते कुवँर कढ़हिं नित बाहर प्रमुदित प्रजा जोहारैं ॥
मणि मंदिरमें रत्न पालने मंजुल रेशम डोरी ।
राजकुवँर तिन में अति राजत करत चित्तकी चोरी ॥
जननी सुखित झुलावहिं निज कर मन्दहि मन्द अनंदी ।
कनक खिलौने सुतन खेलावहिं सबै प्रीति को फंदी ॥
रोजहिं चलि वसिष्ठ मुनि झारहिं ग्रहके दान करामैं ।
मास मास पूतना विधानहुँ करवावैं निशि जामैं ॥
छोटे कर पद छोटि अँगुरियां छोटि नखावलि राजै ।
पङ्कज कोस ओस कण मानहु सुखमा कोस दराजै ॥
कहुँ विहँसत कहुँ चरण चलावत कहूँ करत किलकारी ।
कहुँ रोवत जननी मुख जोवत पय प्यावति महतारी ॥
कबहुँ उठाय अली कोउ अङ्कहि चित्र विचित्र देखावैं ।
निरखि रतिन विहँसि विहँसि कहुँ आपहु भुजा उठावैं॥
कहुँ रूसत रोवत नहिं सोवत रगवाये न रगाहीं ।
घी के तुला करावहिं जननी विविध उतार कराहीं ॥
नीलक बसन उढ़ाय चारहू बालक सेज सोहाहीं ।
मानहु पूरण चारि चन्द्रमा जलद पटल मधि माहीं ॥
साँझ समय भूपति नित आवत सुखी होत सुत देखी ।
अङ्क उठावत अति दुलरावत निज कहँ धनि जग लेखी॥
दोहा—एक समय पयपान को, विलम भई वश काम ।
पदको अँगुठो निज मुखै, मेलि लियो तब राम ॥

कवित्त ।

चौंकिउठेशंकितविरञ्चिसञ्चरञ्चनाहिं शंकरसशंकितविचारैंतेहियामहैं ।
छोनीछोड़िबेकोचहैंदिग्गजदहंसमानिहौलखौलमाचिरहेदेवधामधामहैं ।
भनैरघुराजउठीतरलतरङ्गसिन्धु प्रलैकेपयोदधायेव्योमठामठामहैं ।
डोल्योशिशुमारत्योंतरणितारातारापतिचरणअँगूठोजबमेलेमुखरामहैं॥

छन्द चौबोला ।

निन नित पुरवासिनी अङ्गना ल्यावैं नवल खिलौना ।
तेहि मिसि देखि राजकुँवरन को भाषहिं अवै चलौना ॥
कोउ झँगुली कोउ मृदुल वढ़नियां कोउ ल्यावैं रचि ताजा ।
कोउ बनाइ पट तुरँग मतंगन कोउ लावैं लघु बाजा ॥
जे लखि जातीं लालन को ते कहहिं निरखि हम आईं ।
सुनि सुनि जे न लखीं ते धावैं देखन को हुलसाईं ॥
रत्नन की छोटी बहु खुरियां त्यों थरियाँ मनहारी ।
तिनमें कछुक पान भोजन धरि चखवावहिं महतारी ॥
रामहिं करत पियार कैकयी कौशल्या त्यों भरतैं ।
राम कैकयी भरत कौशला मानहु जन्यो उदरतैं ॥
सहज सुभाउ सुमित्र मानहिं भरत राम ममवारे ।
त्यों कैकयी कौशला जानहि रिपुहन लषण हमारे ॥
जो प्रभु समर सुरासुर धावत खगपति पीठि सँवारा ।
तेहि घोरिल चढ़ाइ नृपरानी करवावैं संचारा ॥
कब चलि पद पूरिहौ मनोरथ लालन अवशि हमारा ।
कबहुँ कहैं होरिल कब कानन खेलिहौ जाइ शिकारा ॥
गाइ गाइ पालने झुलावैं विजन डोलावैं माता ।
जून जून में जोहि जगावैं पुलकित साँझ प्रभाता ॥
जननिन को तहँ सुनन प्रीति वश विसरति सुरति वचनकी ।
धनकी मनकी सदन वदनकी भोजनकी छन छनकी ॥

दोहा—काकहुँ दाकहुँ बाकहत, हँसि हँसि बूझहिं मात ।
कबहुँ बोलावत अंगुलिन, पलन परे किलकात ॥
यहि विधि बीत्यो वर्ष यक, आनँदमय सब याम ।
औचक हीं यक दिवस में, लियो करौटा राम ॥

छन्द चौबोला

रतनालिका आदि सब नारी देखि महासुख पाया।
राम करौंटा लेबजाय तहँ रानिन तुरत जनायो॥
रानी परममोद उर मानी भूपहिं खबरि जनाई।
द्वारेमें नौबति सहनाई बजवायो सुखछाई॥
सुनत भूप मणि दान दियेबहु पूरे याचक आसा।
गुरु वसिष्ठ अरु वामदेव लै सपदि गये रनिवासा॥
रानी सकल राजमणि मोदित सुतकर दान दिवायो।
गावन नाचन लगे गुणीजन अवधनगर सुखछायो॥
यहिविधि दिनप्रति भूप भवनमहँ आनँद मंगल होई।
देखि देखि चारिउ कुवँरनको धन्य होत सब कोई॥
चारहु बालक चलहिं घुटुरुवन जननी लेहिं उठाई।
दशरथ भूपति अजिर महासुख दून दून अधिकाई॥
किलकहिं कबहुँ लरहिं आपुसमहँ पुनि यक एक मनावैं।
मणि खंभनमहँ लखि प्रतिबिंब चहैं तेहि हम गहिल्यावैं॥
लघु लघु कंचनके हय हाथी स्यन्दन सुभग बनाई।
तिन महँ धाय चढ़ाय कुमारन ल्यावहिं अजिर बगाई॥
कबहुँक रूसत त्यागि पान पय अंगन मचालि परैहैं।
बार बार जननी समुझावहिं मानि न रुदन करैहैं॥
मणि झुठुकी कंचन घुनघुनियां जननी जाय बजावैं।
हाऊते डेरवाइ उठाइ अङ्क पय पान करावैं॥

दोहा—एक समय बैठी रहीं, कौशल्यादिक मात।
पय प्यावत हलरावतीं, कहि कहि लालन तात॥

छंद चौबोला।

सखी सयानि एक तहँ आई ऐसे वचन सुनायो।
योगी बाबा नारि लिये यक द्वारदेशमहँ आयो॥

बैल चढ़ा अँग भस्म चढ़ाये भानु समान प्रकासू।
बालक करतल देखि कहत सब जन्म हाल अनयासू ॥
जहँ जहँ गयो अवध पुर घर घर तहँ तः
जन्म भरेकी खबरि कही सब रख्यो शिशुन विशेखी ॥
बड़ा चेटकी है बरज्ञानी कह्यो सु मोहिं बोलाई।
एकबार दशरथके लालनदे देखाय तैं माई ॥
मोहिं न कछु अभिलाष राजवर लालच लाल लखनकी।
हमहिं लखन आयुष बहु बाढ़ी सुंदरि राम लषनकी
जो आयसु अब होइ स्वामिनी ल्यावहुँ ताहि लेवाई।
योगी बाबा बड़ो जनैया लखै कुँवर सुखदाई ॥
ल्याउ लेवाइ तुरत योगीवर कौशल्या कहबानी।
गई लेवाइ ताहि अन्तहपुर महामोद मन मानी ॥
योगी बाबा देखि रामकहँ कीन्ह्यों मनहिं प्रणामा।
करी मनहिंमन तासु नारि नति पूर भयो मनकामा ॥
कौशल्या कैकयी सुमित्रा चलि आईं सब रानी
मोहिं बैठाय पीठ पद धोयो लै पानी निज पानी ॥
ल्याइ चारिहूँ लालनको तब डारयो चरणन माहीं।
योगी कह्यो जियै युग युग सुत इन कहँ कछु डर नाहीं ॥

दोहा—कौशल्या कह नाइशिर, कहँते आये आप।
अपनो नाम बताइये, करहु कौनको जाप ॥

छन्द चौबोला।

योगी कह्यो सुनहु महरानी मम कैलास निवासा।
यह पषाण कन्या मम नारी नाम मोर कृतिबासा ॥
दैव बैलवाहन मोहिं दीन्ह्यों वसन मोर गजखाला।
सुन्यो उछाह अवधको आयो देखनको तुव लाला ॥

भये मनोरथ पूर हमारे देखि कुमार निहारे ।
तोहिं सम भाग्यवन्त नृपवरणी हम नहिं जगत निहारे॥
तब रानी शिरनाइ कह्यो अब सुतगुण वर्णहु ज्ञानी ।
कहन लग्यो योगी बाबा तहँ धन्य भाग्य निज मानी॥
षोड़श वर्ष न्यून नेसुक जब ह्वैहै बालक तोरा ।
तब विदेश ब्राह्मण सँग जैहै अनुज सहित बन घोरा ॥
परम अपावनि परम भयावनि यक नारीको मारी ।
पुनि राक्षसन मारि संगरमें करिहै मख रखवारी ॥
प्रगट करी पाथरते वनिता पुनि धनुहीं यक तोरी ।
महा अमरषी यक ब्राह्मण कर बातनते मद मोरी ॥
तब दुलहिन पैहै अति सुन्दरि कौनहुँ राजकुमारी ।
यक नारीके वचनपास परि देहै पिता निकारी ॥
लै तिय अनुज चली काननको घर अनरथ अस होई ।
तापस वेष विपिन वसि बहु दिन मुनिन महा मुदमोई॥
पुनि यक अनुज लेवावन जैहै नहिं ऐहै घरमाहीं ।
जैहै विपिन पराय दूरि बहु हनिहै निशिचर काहीं ॥
—महामुनिन मिलि पुनि बसी, वटतर करत अहेर ।
नाक कान कटवायहै, अनुजहाथ तिय केर ॥

छंद चौबोला ।

तहँ कोउ आय अधर्मी राजा हरिहै याकी नारी ।
वनचर सँग यह करी मिताई यक वनचरको मारी ॥
कहूँ सेतु सागरमहँ रचिहै लै कपिकटक अपारा ।
सकुल सदल निजरिपुको करिहै करि सङ्गर संहारा ॥
बहुरि आपने भवन आयहै करी राज बहुकाला ।
तुव सुत पाइ प्रताप देव मुनि ह्वैहैं सकल निहाला ॥
द्वै सुत चारिहू सुतनके ह्वैहैं बली विशाला ।

अश्वमेधमख करी कितेकन ह्वैहै दीनदयाला ॥
तेरे सुतके नाम धाम गुण वर्णिसकौं मैं नाहीं।
तुव सुत ते सनाथ सिगरो जग नहिं संशय यहि माहीं ॥
सुनि अवधूतवचन रानी सब गुणि अहलाद विषादा।
कह्यो मिटै बाधा सिगरी जेहि अस कछु करहु प्रसादा॥
लै योगी निजगोद रामको मोद मानि मन भूरी।
छ्वै शिर कर पुनि परशि कञ्जपद धारचो शिर पदधूरी॥
मंत्र सुनावन व्याज शंभु तब कह्यो रामके कानें।
बहुरि विवाह समै लखिहैं हम मिथिलापुर सुख साने॥
सुनहु राजतिय कबहुँ पुत्र तुव ठाकुर रह्यो हमारो।
ताते याको औ हमरो नित है सम्बन्ध अपारो॥
पूजि गई कामना हमारी लालन देखि तिहारो।
अब मैं जान चहौं अपने घर करि रक्षण तुव प्यारो॥
अस कहि उमासहित परदक्षिण दीन्ह्यों चारि पुरारी।
बार बार पद परशि पाणि सों कीन्ह्यों गमन सुखारी॥

दोहा-नित नवलीला करत प्रभु, अम्ब अनन्द बढ़ाइ।
जेहि श्रुति ढूँढ़त सोरह्यो, दशरथभवन लुकाइ॥

कवित्त।

योगीजाहिअचलसमाधिकोलगाइध्यावैंपावैंनहिंसाधनअनेकनकरत
शंभुऔस्वयंभुशक्रसकलसुरासुरादिसिद्धमुनिजाकीबाँहछाँहविचरतहैं।
वाकमनगोचरअतीतमोहमायाजीत परब्रह्मपरधामविश्वकोभरतहैं॥
सोईरघुराजआजअवधअधीशजूके अजिरमेंधूरिधूसरितविहरतहैं॥

सवैया।

खेलि रहे अँगनामें लला अबला त्यों उडाइ कहूं रज झारैं॥
त्यों मचला मचली कबहूँ करि केती कला करि मोद पसारैं॥

श्रीरघुराज छला कचके शिर मानो झलाझल रेशम तारैं
कीन्हें बलाबली बालनसों अवधेशलला सबके मनहारैं ॥
जानु सों धावत मंदहि मंद स्वच्छंद गिरैं उठिकै पुनि धावैं
त्योंही परस्पर पाणि गहै घसिलैं हँसि हेरि हुलास बढावैं ॥
श्रीरघुराज नृपांगनमें निजअंगनको अँगराग लगावैं
लै रजपाणि उड़ावै लला नहि आवै जब उठि मातु ॥

दोहा—यहि विधि बीते वर्ष युग, एक दिवस मुद बाढ़।
कनककुंभ कर पकरिकै, भये राम महि ठाढ़ ॥

छन्द चौबोला।

धाई लखि धाई सुखछाई मातन खबरि जनाई।
ठाढ़े भये कुँवर यहि अवसर कृपा करी जगसांई ॥
आनँद अंबु अंब अंबक भरि सबै तहां जुरि आई ॥
दीनन दीन्ह्यो दान मान करि कुंभ सो धाई पाई ॥
खबरि पठाइ दई दशरथपहँ राम भये अब ठाढ़े।
उभै पाणि नृप मणिन लुटावत आये अतिमुद बाढे ॥
फैलिगई सुधि डगर डगरमहँ अवध नगर चहुँ ओरा।
ईश कृपाते आजु ठाढ़ भे चारिहु भूपकिशोरा ॥
ग्रामदेवतन नगर नारि नर लागे करन पुजाई।
धाम धाममे धूम धामतें लागी बजन बधाई ॥
अति उरावते रावद्वारमहँ परे निसानन घाऊ।
नौबत लागी झरन घरन बहु अवध न हर्ष अमाऊ ॥
क सुमित्रा सकल ग्राम सुर पूजैं।
भाषैं सकल पुजारिन तहँकी सकल मनोरथ हूजैं ॥
ग्रामदेव कुलदेव देव वर इष्टदेव अरु देवी।

रोजहिं पूजहिं दशरथ रानी सुत मंगल हित सेवी ॥
जासु कृपा उपजत जग मंगल नशत अमंगल जाते ।
मङ्गल चहति तासु नृपरानी लघु देवन पूजाते ॥
पुरकी कुलकी और देशकी वृद्ध नारि जे आवैं ।
पावन हेतु अशीष भूपतिय, तिनके पगन परावैं ॥
दोहा–पुनि पुनि सुतन सिखावहीं, जननि अंक बैठाइ ।
जाय पितापहँ बाहिरे, रहहु न विलम लगाइ ॥

छंद चौबोला ।

ुटरे केश शेश शावक सम छोटे मृदु घुँघवारे ।
जननि पाणि पोंछे ओछे नाहिं सुरभित अतर अपारे ॥
अर्ध इंदु इव लघु ललाटपर लागे तीनि दिठोना ।
सुधा पियन हित मनहुँ शीश मधि लसैं भुवंगम छोना ॥
त्रिकुटी ते कानन लगि सोहत भ्रुकुटि रेख लघु लोनी ।
मनहुं काम लिखि दियो लीक द्वै इतनी ही छवि छोनी ॥
शीलअयन युग नलिन नैन वर अति विशाल कजरारे ।
मनहुँ मीन छवि जाल फँसे द्वै शोभा सिंधु करारे ॥
मन हुलासिका नवल नासिका लघुमुकुतायुत राजै ।
मानहुँ चम्पककली भलीविधि ओस बिंदु अति भ्राजै ॥
अति मृदु वदन अधर अरुणारे लसहिं दँतुलिया प्यारी।
मनहु कंज बिच धरे बिंब युग अंतर बीज निहारी ॥
लसत कपोल अमोल गोल अति तनक अलक छहराहीं ।
मनहुँ शोभ सरसी मणि मंडित काम केतु फहराहीं ॥
मधि हीरा दुहुँ दिशि मुकुतावलि कठुला कंठ विराजा ।
बंधु कंबु कहँ भुज पसारि जनु मिलन चहत द्विजराजा॥
छोटी मुकुत माल लहरैं उर जननी करन सँवारी ।
मानहुँ यमुनधार हंसावलि बैठी पंख पसारी ॥

छोट छोट भुजन विजायठ छोट कटक करमाहीं।
मनहुँ भरी छवि छरी मदन की मंथन कनक सोहाहीं॥
दोहा—कटि करधन छुगुनू हाजिन, श्यामल वदन सोहाय।
मनहुँ नीलमणि मंदरै, बन्यो वासुकी आय॥
लघु ऊरू लघु जानु लघु, जंघ पृथुल छवि छाज।
युगल नवल कदली मनहुँ, उलटायो रति राज॥
लघु नूपुर लघु कटक पद, लघु मुकुतनकी पाँति।
मनु मराल शावक अवलि, सरसिज चहुँकित भाँति॥
लघु अँगुरी लघु नखअवलि, लघु कोमल पद मंजु।
मनु तारा निज प्रभु दुवन, किय कारागृह कंजु॥

कवित्त घनाक्षरी।

कोशलेश लाल जू के लाल लाल पदतल,
अंकुश कुलिश कञ्ज चक्र धुज रेख हैं।
ठुमुकि ठुमकि वागैं कौ[illegible] क आगन म,
झुमुकि झुनुकि बाजैं भूषण विशेष हैं॥
द्रवाभूत [illegible]ी मणि उपटैं चरण चारु,
चूमैं चन्द्रवदना अनान्दत अशेख हैं।
रघुराज तेई पद पावनकी लाख लाख,
करैं अभिलाख लेखा लोकन अलेख हैं॥
छोटे छोटे शीश तापै टोपी लसैं छोटी छोटी,
छोटी सी रतन राजी छोटे लगे गोटे हैं।
छोटी छोटी मोती कान छोटे कठुला त्यों कण्ठ,
छोटेसे विजायठ कटक दुति मोटे हैं॥
छोटी छोटी झंगुली झलाझल झलकदार,
छोटीसी छरी को लिये छोटे राज ढोटे हैं।

छोटे छोटे पायँन विहारि रघुराज आज,
करत विकुण्ठ सुख औध आगे छोटे हैं ॥
छोटे छोटे हीरन के हार पहिराये कण्ठ,
छोटे नख नाहर के रक्षा हेतु साजे हैं ।
छोटे छोटे यंत्र जे बनाये हैं सुमंत्र गुरु,
तंत्रन विधानते सुनाभि लों विराजे हैं ॥
माजूफल शंख रुद्र अक्ष त्यों बजरवट्ट,
तुलसीको गुलिका सुधारे छबि छाजे हैं ॥
रघुराज राज अङ्गनमें चारौं लाल,
कहूं कौन कहूं भौन कहूं दरवाजे हैं ॥
छोटे छोटे नूपुर सो छोटे छोटे पायँन में ।
छोटी जरकसी लसी सामरी सुपामरी ।
छोटे फाल छोटी चाल छोटे मुख नैन भाल,
छोटी करवाल ढाल मोरछल चामरी ॥
छोटे छत्र छोटे आतपत्र हेमपत्र छोटे,
छोटे कजरोटे त्यों जरोटे धूप कामरी ।
भनै रघुराज छोटे छोटे मणि खम्भन में,
छोटे छोटे चारों लाल देत वागै भामरी ॥
माय पय प्याय पहिराई पट भूषण को,
भाल दै दिठोना केश अतर लगाइ कै ।
सखिन सयानिन को सङ्गमें कराइ चाइ,
राय के समीपमें पठावैं छोह छाइ कै ॥
ललकि बढ़ाय पाणि दोऊ पसराय लेहिं,
भूप उर लाय सुख सिन्धुमें समाइकै ।
भनै रघुराज कोई गादी गिरदामें चढैं,

काइ गोद गरे हेरे हेरे लपटाइकै ॥
जागे एक ग्रास राम भोरहीं ते रोवैं,
पय करत न पान राई लोन को उतारी है ।
वामदेव औ वशिष्ठ तुरत बोलायो भौन,
हाथहू देवायो नारी मंत्र पढि झारी है ॥
लै लै हलरावैं रगवावैं त्यों देखावैं चित्र,
अखिल खिलौनन खिलावैं देत तारी है ।
रघुराज पालने झुलावैं बजवावैं बाज,
जननी अनेकन जतन करि हारी है ॥
जब ना रगाने राम रमणी चतुर कोई,
आसुही कनक पट वारन बनायो है ॥
हे हे लाल हाथी एक आयो भागो भौन जाई,
करो पय पान अस कहि डरवायो है ॥
भभरि भगाने मातु अङ्क में लुकाने जाइ,
किये पय पाने रघुराज इमि गायो है ॥
डरयो हरि सोई हेम हाथी को जो ग्राह ग्रस्यो,
हाथन सों हाथा हाथी हाथी ऐंचि ल्यायो है॥
दोहा—यहिविधि बीती वैस कछु, करत विनोद विशाल।
अवध अजिर विचरत भये, पञ्च वर्ष के बाल॥

छन्द चौबोला ।

भानु उदै के कछु आगे ते जागहिं रोजहि रानी ।
सखिन बोलाइ लगाइ जुगुति सब छानि धरावहिं पानी ॥
उठैं लाल जब मींजत नैननि कज्जलकलित कपोला ।
मनहुँश्यामसरसिजमहँसोहतिमधुकर अवलि अलोला॥
अम्ब अम्ब कहि जननि बोलावहिं दे भोजन मोहिं भूखा ।
तुरत उठाइ अङ्क सजनी तहँ पोंछहिं पट मुख रूखा ॥

मचलि परहिं भोजन विनु पाये तब जननी उठि धावैं ।
रचि रोटी माखन मिश्री धरि कनक थरुलियन ल्यावैं ॥
नेसुक सुतन खवाइ पोंछि मुख नेसुक दै करमाहीं ।
आप करैं मज्जन आदिक सब बालक खेलन जाहीं ॥
तहँ सम वैस अवधपुर बालक खेलन सङ्ग सिधारैं ।
कहुँ अङ्गन कहुँ भवन भीतरे कहुँ बाहेर कहुँ द्वारैं ॥
माखन मिश्री विविध मिठाई लै कर चारिहु भाई ।
बाँटहिं सखनकाटि कछु दांतन कछुक फेंकि कछु खाई॥
एक हाथ रोटीप्रभु लीन्हें एक हाथ में लकुटी ।
खात खात डोलत आँगन में मटकावत कहुँ भ्रुकुटी ॥
किलकत लरत मुख भाषत मंजुल तोतरिबानी ।
षट अष्टादश चारि बारि कै सुनि शारदा बिकानी ॥
छीन लेत इक के कर ते इक मंजुल माखन रोटी ।
सो माखन अतिधाइ गहत द्रुत कुसुम कलितकल चोटी॥
दोहा—यहि विधि अवध अधीश के, अंगन में जगपाल ।
परम स्ववश करुणा विवश, नाम धरायो लाल ॥

कवित्त ।

नील शैल वासी बाल राम को उपासी काग,
जानि कै अवध अवतार अविनाशी को ॥
आयो सो दरश आसी परम हुलासी हिये,
जाको वरदान अहै विश्व के प्रकाशी को ॥
महामाया मोह भासी भव,
है तू अज्ञान नासी कल्प कल्प नाशी को ॥
वायस विलोकि औधवासी रघुराज राम,
बालक विलासी भूल्यो ब्रह्म गति खाशी को ॥

वायस विचारयो बुद्धि शुद्ध सत्वरूप जाको,
सत्ताते जगत व्यापी माया जासु दासी है ।
सत चिदानन्द रूप है अनूप रघुराज,
सृजन हरत पालै विश्व अविनाशी हैं ॥
सोई परब्रह्म लीन्ह्यों औध अवतार सुन्यो,
देख्यो आइकै सो तहँ ब्रह्म तेजराशी है ।
रोटी गहे हाथ में सुचोटी गुहे माथ में,
लँगोटी कछे नाथ साथ बालक विलासी है ॥२॥
दोहा—जान्यो प्रभु यह काग को, मायाव्यापी मोरि ।
दरशाऊं महिमा कछुक, लेहुँ भक्त भ्रम चोरि ॥

कवित्त ।

भरिअंनुरागकागवागेप्रभुपाछेलाग पद्मरागअङ्गनमेंभागवडमानिकै ।
भूमिगिरिजूठकनखातनअघातउर जातकहुँआगेगतिचञ्चलसीठानिकै ॥
एकवारपाणिसोंगिरायोरामरोटीटूकभाग्योचौंचदाविद्रोणभीतिअतिआननिकै
हाथकोपसारेनाथमाथकोउघारेधाये वायसकेसाथरघुराजजनजानिकैं ॥

सवैया ।

वायस पीठ को औ प्रभु पाणि को अन्तर अंगुल द्वैक देखानो ।
भाग्यो महा भभरो भव लोकन सातहू स्वर्ग पताल परानो ॥
मेरु के कन्दर अन्दर हू धस्यो देख्यो जबै मुरि कै डर मानो ।
अंगुली द्वै निज पीठि ते पाणि पसारे भुजा रघुराज लखानो ॥
वायस भीति सों मूँद्योदृगै पुनिखोलि लख्योपुरकौशलआयो ।
पांचही वर्ष के अङ्गन खेलत ताहि विलोकि हरी मुसकायो ॥
ताही समै प्रभु के विहँसात तुरन्तही सो मुख जाय समायो ।
श्रीरघुराज अनेकन अण्डकटाह लख्यौ कछु अन्त न पायो ॥
बीते अनेकन कल्प तहां भटकात कहूं थिरता नाहिं पाई ।

देखी विचित्र भली रचना बहु साँसहि लेत सो बाहर आई ॥
श्रीरघुराज लख्यो प्रभु को कर रोटी सुखेलत अङ्गन धाई ।
काग कह्यो हरि सों शिरनाइ हरयो भ्रम मों महिमा दरशाई ॥
श्रीरघुराज को वन्दन कै गिरि नील को वायस कीनो पयानो ।
भक्त शिरोमणिताहिको ह्वैकै दियो निज भक्तिहीकोवरदानो ॥
खेलन लागे सखान के सङ्ग कोऊ यह चित्त चरित्र न जानो ।
जानि विलम्ब तुरन्तही अम्ब बोलाइ कराइ दियो पयपानो ॥

दोहा—पुनि तीनिहुँ जननी रच्यो, विविध कलेऊ मीठ ।
कनक कटुरियन थरुलियन, धरयो मूँदि मणि पीठ ॥

छंद चौबोला ।

तुरत बोलावन लालन के हित जननी सखिन पठाई ।
कहत भई ते जाइ सुतन सों माता तुमहिं बोलाई ॥
चलहु कुवँर सब करहु कलेऊ अतिशय होति विलम्बा ।
विरचि विविध व्यञ्जन मन रञ्जन परिखै बैठी अम्बा ॥
खेल रङ्ग महँ रँगे लाल सब कीन्ह्यों कछू न काना ॥
विहरत सखन सङ्ग अङ्गन में मारत लकुट निसाना ॥
सखी उठाइ अङ्क लै गमनी मचलि परे अङ्गन में ।
खेलन लगे खेल पुनि सोई लाल सखन सङ्गन में ॥
बहुरि सखी चलि कह रानिन सों खेलत सकल कुमारे ।
तुमहिं चलहु महरानी ल्यावहु कहा न करत हमारे ॥
कह्यो कैकयी जाइ सुमित्रा लालन करहु कलेवा ।
जो विलम्ब होई भोजन की रिस करिहै नरदेवा ॥
अस कहि लियो उठाइ कुमारन भोजन भवन सिधारी ।
कौशल्या के निकट सुतन को जेवन हित बैठारी ॥

चारि पिढुलिया चारि थरुलिया चारिहु कनक कटुरियां।
चारिहु लालन को बैठाइ धरी पुनि लघु बहु खुरियां ॥
पायस पूरी ओदन अद्भुत मोदक विविध प्रकारा।
विविध भाँति की बनी मिठाई गोरस दधि घृतसारा ॥
माखन मिश्री मधुर मलाई सुरभित विविध मसाले।
लालन लगीं खवावन जननी कहि कहि वचन रसाले ॥

दोहा—करन लगे चारिहु कुँवर, भोजन विविध प्रकार।
जननि डोलावहिं कर विजन, निरखहिंमुख बहु बार ॥

छन्द चौबोला।

हिलि मिलि भोजन करत लाल सब हँसत हँसावत प्यारे।
छीनत यक कर कौर और कर कहि कहि चोर पुकारे ॥
कोउ उठि भागत पुनि नहिं आवत खिरवत अँगुलि देखाई।
तब बरबस जननी गहि ल्यावैं देहिं पीठ बैठाई ॥
सुरभित सलिल पियावहिं कुँवरन कथा अनेक बखानैं।
खेल मगन सुधि करहिं न भोजन बार बार सन्मानैं ॥
एक कौर लीजै पितु की बदि एक कौर बदि मोरा।
एक कौर कैकेयी की बदि एक सुमित्रा कोरा ॥
जासु कौर नहिं लाल लेहुगे सो मानी अपमाना।
यहि विधि करवावहिं महतारी भोजन व्यंजन नाना ॥
इमि भोजन करवाइ माइ सब निज कर कर पग धोई।
पोंछि बदन पौढ़ायो लालन पालन में मुद मोई ॥
चापहिं पद पंकज कर कंजन सजनी विजन डोलावैं।
मन्द मन्द रघुनंदन को तहँ प्रिय पालने झुलावैं ॥
कथा कहन लागी कौशल्या सुनियो लाल कहानी।
तनक सोइ पुनि खेलन जैयो पचै पेट कर पानी ॥

रह्यो एक दैत्यन को राजा हिरणकशिपु जेहि नामा ।
कीन्ह्यो सकल भुवन अपने वश जीति सुरन संग्रामा ॥
ताके चारि कुमार भये पुनि अति सुंदर सब भाई ।
छोट सुवन कर पिता दियो प्रहलाद नाम धरवाई ॥

दोहा—पढ़वावन लाग्यो सुतन, गुरुके सदनपठाय ।
लगे पढ़ावन आसुरी, विद्या कवि समुझाय ॥
सबै बाल तहँ आसुरी, विद्या पढ़े अजान ।
पढ्यो नहीं प्रहलाद सो, यदपि गुरू अनखान ॥

छंद चौबोला ।

जब गुरु जाहिं करन गृह कारज तब प्रहलाद सुजाना ।
बोलि सकल बालकन भक्ति रस करवावहिं हठि पाना ॥
आवहिं गुरु जब लेहिं परीक्षा तब बालक सानन्दा ।
ज्ञान विराग भक्तिरस भाषहिं कहि माधव गोविन्दा ॥
तब गुरु महाकोप करि भाषत इनको कौन नशावै ॥
जानि परत कोउ विष्णु पक्ष कर मोहिं चोराइ इत आवै ॥
एक दिवस बालक बोले सब सिखवावत प्रहलादा ।
गुरू कछू नहिं दोष हमारो करियत वृथा विवादा ॥
तब गुरु कह्यो कोपि प्रहलादहि सिखवावत तू कारे ।
कौन आइ धौं तोहिं बिगारयो तू बालकन बिगारे ॥
अस कहि गहि प्रहलाद पाणि को लैगो राजसभा में ।
कह्यो दैत्यपति सों यह बालक चलत न मोर कहा में ॥
सुनि बैठाइ अङ्क दानवपति पोंछि वदन पुचकारी
बेटा पढ़ो कौन विद्या तुम देहु परिक्षा सारी ॥
तब प्रहलाद विष्णु प्रतिपादन कीन्हों सब सम्वादा ।
हिरणाकशिपु कोपि बोल्यो तब करि मन महा विषादा ॥

रे मम कुलघालक त बालक सुरपालक कर दासा ।
अजहुँ छोड़ि दे बुद्धि बावरी नहिं पैहै अति त्रासा ॥
दे देखाइ अपने प्रभु को मोहि तौ जानौं तोहि सांचो ।
नातौ शीश काटिहौं तेरो तैं मेरो सुत कांचो ॥
बिहँसि कह्यो प्रहलाद तब, मम प्रभु सब थल वास ।
मोमहँ तोमहँ खड्ग महँ, खम्भहु अवनि अकास ॥
इतनो सुनि करि लाल दृग, लै कराल करवाल ।
उठ्यो मसकि महि जानु युग, मनहुँ कालको काल ॥
कह्यो दैत्यपति तोर प्रभु, जो सब थलमें होइ ।
कढ़ै न क्यों यहि खम्भ ते, तुहिं रक्षै उर गोइ ॥
जबते कहन लगी कथा, तब यतनी लगि राम ।
औंघाने हूंके दियो, जहँ जहँ रह विश्राम ॥
हिरणकशिपु प्रहलाद को, लै कराल करवाल ।
कह्यो तोर रक्षक कहां, दे देखाइ यहि काल ॥
शरणागत पालक प्रबल, यह सुनि कृपानिधान ।
परे पालने राम को, भूलिगयो शिशु भान ॥

घनाक्षरी ।

कहत कथा के कौशिलाके पति सिंधुजाके,
फरके प्रचण्ड दोरदंड तेहि काल हैं ।
उठि पलना ते ललना के मध्य रघुराज,
महा गाजसी गराज विकराल हैं ॥
हाल्यो भूमि मंडल सुहाल्यो है अमर वास,
चौंके चारि भाल शशि भालहू उताल हैं ।
हर बर माची महा खर्भर असुर पुर,
भभरि भगाने देव भर्भर विहाल हैं ॥

दोहा—महाअशुभ मन मानि कै, उठी अम्ब अतुराइ
शिशु शिर कर धरि कहति भै, लाल कहां को आइ ॥

छन्द चौबोला ।

लियो उठाइ अङ्क महँ जननी पोंछि वदन पुचकारा ।
राई लोन उतारि बार बहु पढ़ि मंत्रन दिय झारी ॥
पुनि गौ पुच्छ भ्रमाइ शीश महँ तुरत वसिष्ठ बोलाई ॥
बोलि चेटकिन मातु तुरतही भूपहि खबरि जनाई ।
भूप जानि भूकम्प भीति भरि भीतर भवन पधारे ।
जुरि आयो रनिवास तहां सब पूछहिं भ्रम उरधारे ॥
कहा भयो यह शोर घोर अति छाइ गयो चहुँ ओरा ।
सब ते कहति कौशिला रानी नहिं जानो कछु मोरा ॥
पलन परे मम ललन उँघाने मैं कछु कही कहानी ।
वज्रपात सम भै अघात धुनि एकहि बार महानी ॥
भूप कह्यो भूकंप भयो अति ताको शोर महाना ।
और न जानि परत कारण कछु यही सत्य अनुमाना ॥
गुरु वासिष्ठ अरु वामदेव तहँ दान करावन आये ।
सुनि वृत्तांत नितांत राम के बार बार मुसकाये ॥
कह्यो बहुरि राजा रानिन सों तजहु सबै भय भारी ।
भूमिकंप को भयो शब्द यह नाहिं कछु अशुभ विचारी ॥
अस कहि दान करायो पुत्रन शांति कछुक तहँ कीन्हें ।
कियो गवन मुनि भवन आपने राम चरित चित दीन्हें ॥
भूपति सब कहँ सावधान करि अति अचरज मन माने ।
बाहर जाय सभा सामंतन सब वृत्तांत बखाने ॥

दोहा—तबते जब सोवहिं लला, तब जननी निज पानि ।
धरे रहैं कहनी कहहिं, महाभीति मन मानि ॥

छन्द चौबोला ।

दुपहर जानि जगे चारिउ सुत उबटन मातु लगावैं ।
गर्म सुगंधित सलिल विमल रचि सुतन सपदि नहवावैं ॥
देह पोंछि पुनि ऐंछि श्याम कच चोटी सुभग बनावैं ।
एक एक मणि भाल उपर गहि फिरि भूषण पहिरावैं ॥
पुनि झँगुली तनु ताज शीश पर चरण बसन पहिराई ।
देहिं ललाट दिठोना सुंदर कज्जल नयन सोहाई ॥
बहु विधि करि शृंगार कुमारन सखि मंडल करि संगा ।
छोटि छोटि पहिराइ पनहियां नृप दरबार उमंगा ॥
कोउ कजरौट जरौट लिये कर कोउ मुरछल कोउ छाता ।
राई लोन उतारहिं कोउ सखि कोउ पंजा अवदाता ॥
यहि विधि चारौ कुँवर सखिन सँग भूपति सभा सिधारे ।
पितहि विलोकन प्रथम जाब हम धाये करि किलकारे ॥
लषण दौरि कै चढ़े ग्रीव महँ मुकुट पकरि दोउ हाथा ।
रिपुहन भरत बैठि युग जानुन मध्य अंक रघुनाथा ॥
चूमहिं वदन सुतनकर भूपति ठोढ़ी धरि बतवावैं ।
सुनि सुनि तोतरि बानि विनोदित हँसैं हेरि हँसवावैं ॥
यदपि राजमणि चारिहु पुत्रन करहिं सनेह समाना ।
तदपि प्रीति की रीति नीति लखि राम प्रेम अधिकाना ॥
अति सुन्दर सुकुमार मनोहर रामलषण दोउ ढोटा ।
तैसइ सुभग शीलमय सोहत भरत शत्रुहन जोटा ॥

दोहा—कहुँ सिंहासनते उतरि, दौरि चढ़ैं नृप अङ्क ।
उदित उदैगिरिमें मनहुँ, पूरण चारि मयङ्क ॥

छन्द चौबोला ।

यहि विधि सुतन खिलावत नृपमणि सिंहासन आसीने ।
लहत मोद भट सचिव सभासद पंडित प्रजा प्रवीने ॥

तेहि अवसर गन्धर्व युगल तहँ प्रभुदर्शनकी आसा ।
चित्रसेन विश्वावसु आये दशरथ नृपति निवासा ॥
करि सत्कार उदार शिरोमणि सभा बीच बैठाये ।
करहु गान बालक हुलसाहित शासन तिनहिं सुनाये ॥
करि प्रणाम गंधर्व भूपको प्रभुको वंदन कीन्हें ।
महामुदित सारंग राग तहँ करि अरम्भ दोउ दीन्हें ॥
वीण बजावत मंजुल गावत उपज अमित उपजावैं
लै सुर ताल डिगत नहिं नेकौ कोशलनाथ
सुनि गंधर्व गान तानन युत चारिहु राजकुमारे ।
मंद मंद सानंद दुहुँन ढिग रघुनन्दन पगु धारे ॥
सफल जानि गन्धर्व जन्म निज लिये अङ्क बैठाई ।
प्रभु पदरज शिर धारि सुखी भे प्रेम वारि झरि लाई ॥
प्रेम मगन गावन लागे पुनि निरखत चारिहु भाई ।
मंजुल पद लै छन्द ताल युत दशरथ सुयश बनाई ॥
बेला बीति गई बहु गावत वासवकी सुधि आई ।
शक्रसभा का समय बीति गो बोले वचन डेराई ॥
हम कहँ देहु विदा भूपतिमणि जाहिं इंद्र दरबारा ।
करि हैं कोप जो हम नहिं जैहैं यही काल नटसारा ॥

दोहा—गंधर्वनके वचन सुनि, गान जानि जिय बंद ।
सजल नयन बिमनस भये, तहँ चारिहु रघुनंद ॥
विमन कुमारन को निरखि, भूपति करि कछु गर्व ।
मेघ गिरा बोलत भये, सुनहुँ युगल गन्धर्व ॥

छन्द चौबोला ।

तिहरो गान सुनत मन मोहे चारिहु कुँवर हमारे ।
ताते अबै नजाहु इन्द्रपुर गावहु सभा मँझारे ॥
भीति पुरंदरकी जो मानहु तौ हम लिखि यक पाती ।

बाँधि बाणमहँ पठवत यहि क्षण जहँ वासव रिपुघाती ॥
अस कहि धनुष मँगाय महीपति लिखि वासव कहँ पत्री ।
बाँधि बाणमहँ तज्यो जोर करि पहुँच्यो सभा पतत्री ॥
बँधी बाणमहँ पेखि पुरंदर पाती पढ्यो पियारी ।
चित्रसेन विश्वावसुको तव दियो हुकुम असुरारी ॥
रहैं आजुते अवध नगरमहँ दोउ गंधर्व सुजाना ।
करहिं गान नित राज सभामहँ खुशी होहिं भगवाना ॥
दशरथ धन्य धन्य कोशलपुर धन्य सभासद सर्वा ।
धन्य भये नृप सभा जाइ कै मेरे दोउ गन्धर्वा ।
तवते चित्रसेन विश्वावसु सभा जाय नित गावैं ।
अमित इनाम राम दर्शन युत रोज रोज दोउ पावैं ॥
पुनि वसुधाधिप बोलि बालकन कही विनोदित वानी ।
जननि भवन कहँ गवन करहु अव भै संध्या सुखदानी ॥
करिकै विदा कुमारनको नृप संध्योपासन कीन्ह्यो ।
वदन प्रसन्न सदन गुरु गमने मुनि वंदन करि लीन्ह्यो ॥
पुनि गुरुसों कर जोरि कह्यो नृप सुनिये देव कृपाला ।
चूड़ाकरण करणवेधनको आयो यह शुभ काला ॥

दोहा—सचिवन आयसु देहु प्रभु, करहिं सकल संभार ।
तुम्हरी दया मिले हमैं, ये सुकुमार कुमार ॥

छन्द चौबोला ।

मुनि कह भली बात भाषी नृप अब विलंब नहिं होई ॥
चूड़ाकरण करणवेधनको सुख लूटै सब कोई ॥
अस कहि विदा कियो भूपति को सचिवन सपदि बुलायो ।
चूड़ाकरण करणवेधनको शासन सुखद सुनायो ॥
सचिव कहैं कर जोरि सुनहु गुरु है तयार संभारा ।
तेहि दिन होय उछाह अमित जब शासन होय तुम्हारा ॥

शोध लगन सुदिवस मुनिनायक किय रनिवास जनाऊ ।
चले सचिव शिर धरि मुनि शासन जाय जनाये राऊ ॥
चूड़ाकरण करणवेधनको जब आयो दिन सोई ।
खैर भैर माच्यो कोशलपुर प्रजा सुखी सब कोई ॥
भोरहिं ते जागीं रानी सब भूषण वसन सँवारी ।
जोरि सखिन मंगल गावत कल रङ्गभवन पगुधारी ॥
इतै राजवंशिन रघुवंशिन जोरि राजमणि आये ।
विशद रङ्गमन्दिर अङ्गनमें द्रुत दरबार लगाये ॥
गुरु वसिष्ठ अवसर विचारि तहँ चारिहु कुँवर बुलाये ।
गौरि गणेश पूजि पुण्याह सुवाचन सविधि कराये ॥
सोहर परम मनोहर घर घर गावन लागीं नारी ।
बाजन बाजन लगे विविध विधि सुम वर्षहिं असुरारी ॥
कोउ गावैं कोउ बाज बजावैं कोउ नाचहिं दै तारी ।
राजभवनमहँ महामोद गुणि कोशल प्रजा सुखारी ॥

दोहा–गये कुमारनके निकट, दशरथ भूप उदार ।
बैठायो निज अङ्कमें, चारिउ राजकुमार ॥

छन्द चौबोला ।

भूपति कह्यो मिठाई देहैं लालन कान छेदाये ।
अति विचित्र भूषण पुनि देहैं शिरमुंडन करवाये ॥
परमनिपुण सुखकर वरनापित लीन्ह्यो तुरत बुलाई ॥
क्रमसों चारि कुमारनको नृप दिय मुंडन करवाई ॥
परममनोहर काकपक्ष युग शिखा राखि शिर दीन्ही ।
करणवेध पुनि कियो सुतनकर रङ्गनाथ नति कीन्ही ॥
सम्पत्ति अगणित दियो भिखारिन कीन्ह्यो दारिद दूरी ।
बजे नगारे गगन अपारे पुहुप वृष्टि भै भूरी ॥
पुनि भूपति चारिहु सुत संयुत भोजन करन विराजे ।

रङ्गनाथ को पाइ प्रसादहि पूरण भे सब काजे ॥
बैठीं तहँ सिगरी महरानी पीतवसन तनु धारे।
मनहुँ क्रिया सब ब्रह्म वपुष ढिग सोहत तहँ फल चारे ॥
छोटी शिखा छोटि जुलफै युग मुंडित शिर अति सोहैं।
मानहुँ पुंडरीकमहँ चहुँकित भवँर वृन्द मन मोहैं ॥
फुलियां लसहिं कनककी कानन हीरन जड़ित नगीने।
मनहुँ देत कवि जीव मंत्र कछु पूरण शशिहि प्रवीने ॥
पीत पाग जामा कटि फेटा चारिहु कुँवर सोहाहीं।
आतप रञ्जित घन घेरे चारि दिवाकर काहीं ॥
कुँवरन आगू करि राजा बाहर सभा सिधारे।
सचिव पौर सामन्त आदि सब कोटिन मणिगन वारे ॥
दोहा—चढ़ि नालकी नरेश तहँ, संयुत चारि कुमार।
रङ्गमहल गमनत भये, सङ्ग सचिव सरदार ॥
यहिविधि विहरत अवधपुर, नित नित नव आनन्द।
आठ वर्षके होत भे, चारिहु भूपति नन्द ॥

घनाक्षरी।

छोटीछोटीताजैंशीशराजैंग्रहराजैंसमछोटीछोटीफिनियाँफबीहैंछोटेकानमें
छोटीकण्ठीकठुलेविराजैंछोटेकण्ठनमें छोटेछोटेअङ्गदसुछोटेसेभुजानमें ॥
छोटेजामाछोटपायजामापायपङ्कजलोंछोटीछोटीघुँघरूसुबाजैंनूपुरानमें
छोटीबाहियांमेंलीन्हेंछोटीसीधनुहियाँपनहियाँपगनरघुराजचलैंसानमें ॥
छोटेनैन छोटेबैन शोभएेन चैनभरे खेलिरहे खूब छोटेछोटेसे सखानमें॥
छोटेछोटेछत्रछोटे छोटेआतपत्रतत्र छोटेसे पतत्र छोटेतूणतेजवानमें।
भैनेरघुराजराजराजकेदुलारेराजें मदनपराजै होत औरको जहानमें।
छोटीढालछोटीढालतामेंकरवालछोटीछोटेछोटेलालओधपालअंगनानमें
जननी जगावैं प्रात मज्जनकरावैंवेगि मेवाकेअनेकन कलेवाकरवावैं हैं ॥
अति सुकुमारनकुमारनसिंगारिनीके सखन समेतपितापासपठवावैंहैं

रघुराजराजराजदेखिरघुनन्दनकोपरमअनन्दनसोअङ्कबैठावै है ॥
दानकोसिखावैमानकरनसिखावैंत्यों कृपाणचलवावैंत्योंकमानचलवावै हैं

सोरठा—सुदिवस सुखद शोधाइ, भेज्यो भवनवसिष्ठके ॥
विद्यारम्भ कराइ, लगे परीक्षा लेन नित ॥

छन्द चौबोला ।

थोरेही दिन में सब अक्षर अक्षर प्रभु को आये ।
भाषाबन्ध प्रबन्ध छन्दयुत चारहु बन्धु सोहाये ॥
जौन पढ़ैं गुरु भवन सुवन सब सो नितपितहि सुनावैं ।
सुनत सराहत सकल सभाजन जननि जनक सुख पावैं ॥
एक दिवस इक गुणी अपूरब राजसभा महँ आयो ।
लहि नृप शासन सामग्री निज कौतुककी फैलायो ॥
देखनको धाये नर नारी शोर भयो रनिवासा ।
राजकुमार तुरत चलि आये देखन हेतु तमासा ॥
बैठे पिता अङ्क रघुनन्दन भरत शत्रुहन जानू ।
लषण कूदि चढ़ि गये कंध महँ मनहुँ मेरुपर भानू ॥
करणाटकी हाटकी सुंदर सभा तुरन्त बनाई ।
ढोल बजाय बखानि भूप कहँ दिय आवर्त लगाई ॥
पुनि अति मंजुल विविध भाँतिके लग्यो बजावन बाजे ।
जेहि सुनि विद्याधर चारण किन्नर गंधर्वहु लाजे ॥
करणाटकी नटी प्रगटी पुनि घटीघटी सो नटती ।
चलति चटपटी परम अटपटी नटन माहिं नाहिं नटती ॥
नेसुक गाइ देखाइ भाव बहु करिकै कला कितेकी ।
नृपहि कियो पुनि विनय जोरि कर देखहु कृतयुग नेकी ॥
सकल प्रजा अतिसुखी भये जब कृतयुग जग महँआयो ।
त्रेता द्वापर सुख दुख किय सम कलियुग दुखहि बढ़ायो ॥

दोहा—सो सतयुगको आगमन, प्रथम लखो महिपाल ।
अस कहि अन्तर्धान भे, मध्य सभा सों बाल ॥

बजे नगारे सुमति के, श्वेत ध्वजा फहरान ।
मनहुँ अपूरब धर्म को, पूरब प्रगट्यो भान ॥

घनाक्षरी ।

सोहतवसनश्वेततरलतुरङ्गश्वेतकेतुत्योंसफेदगले तुलसीकी माल है ।
रघुराजमूरतिमनोज्ञमनोधर्महीकीउर्द्धपुंड्रचन्दनकीछाईदुतिभाल है ॥
हरेराम हरेराम हरेकृष्ण हरेकृष्ण बदन उचारन करत सबकालहै ।
धर्मको पसारत विदारत अधर्मनको आयो दरबार सतयुगमहिपालहै ॥

दोहा–बैठ्यो सिंहासन जबै, सतयुग भू भरतार ।
दूतन को दीन्ह्यों हुकुम, ल्यावहु मम सरदार ॥

सवैया ।

दूत सुनिर्मल मानस दौरि कै मंत्री विवेकै सुनायो रजाई ।
भूप बोलायो तुम्हैं सबको जग कारज हेत चले अतुराई ॥
श्रीरघुराज चले सिगरे तहँ लीन्ह्यों विवेकहि को अगुवाई ।
सत्य सुशील सकोच सुसाहस धीरज धर्मनकी समुदाई ॥
धर्म अधर्म को भेद देखावत हंस सों क्षीर औ नीर समानै ।
ईश औ जीव के बीच में सेवक स्वामि को भावविभासतज्ञानै ॥
श्रीरघुराज सतोगुण श्वेत विराजत रूप अनूप महानै ।
पुण्य औ पाप पथै प्रगटावत आयो विवेक प्रधान दमानै ॥

सोरठा–उठि सतयुग महिपाल, बैठायो अपने निकट ।
सचिव विवेक विशाल, करि बन्दन बैठत भयो ॥

सवैया ।

विश्वको द्रोह दुरावत दीह देखावत नादुबनै दुनिया में ।
मित्रता मंजुल मोद बढ़ावत आपनेही सबको वश कामें ॥
भूमिको भूषण श्रीरघुराज वशीकर मंत्र यही सब यामें ॥
अंबर चित्र विचित्र विराजत आयो सुशील यशील सभामें ॥
पापको मूल उखारत टारत धर्म को मूल महीमेंजमावत ।

त्यों यमराज को वास उजारत नर्क की आमद आसु घटावत॥
श्रीरघुराज अनेकन धर्म सहाय करावत सन्तन भावत।
आइसभामहँ सत्य जू सोहत लालची औलबरानको लावत॥
गोवत औरन के अपराधन और के हेतु सहैं दुख केते।
छोड़ैं नहीं कबहूं मरयाद करैं सबको अहलाद सचेते॥
और के काज के हेतु तजै निज काज सुलाज के बांधतनेते।
श्रीरघुराज सभामहँ आयो सकोच अपोच विमोच सँकेते॥

दोहा–मेटत अमित अनर्थ को, करि शुभ अशुभ विचार।
साहस आयो तेहि सभा, सहत सुखहु दुख भार॥

सवैया।

केती विपत्तिन की प्रभुता जग मेटत सो अपने परभाऊ।
शोकमें मोह में त्यों दुख में सुखमें नहिं मानत हानि उराऊ॥
श्रीरघुराज अचञ्चल सर्वदा उन्नत में नत में चित चाऊ।
धीरज ऐसो बड़ो जेहि वीरज आयो सभामहँ शुद्ध सुभाऊ॥

घनाक्षरी।

बाजतनगारजाकेनाकलोसुयशहाके सदासतपथशुद्ध सिंधुरसवारोहै।
एकओरब्रह्मचर्य्य एकओरजपतप एकओर ब्रतयम नियम अपारोहै॥
योगयागत्योंविरागहरिअनुरागआदि रघुराजवर्णाश्रमसकलअचारोहै।
क्षमादयाशान्तितोषमृदुताओशमदमआयोधर्मसङ्गसखापरउपकारोहै॥

सोरठा–सतयुगभूपउदार, दिव्यसभा लखि आपनी।
कीन्ह्यो हुकुमप्रचार, निजसरदारनको सपदि॥

कवित्त।

बोलिकैतुरन्तपरधर्मऔस्वधर्महूकोकृतयुगदीन्ह्योहैनियोगसुखछावने॥
प्रथमवर्णाश्रमकोधर्मप्रगटावोधराब्रह्मचर्य्यगारहस्थवानप्रस्थपावने॥
भनैरघुराजचतुर्थाश्रमको धर्मखोलो वेदके विधानते प्रमाणप्रगटावने॥
निदेश सब देशनमेंधर्मधायो परिगयेपापनकेपुहुमीपरावने॥

एकादशवर्षनलौंहोनव्रतबन्धलागे गुरूगृहपढ़ैंविद्याब्रह्मचर्य्यधारिकै ॥
विद्यापाढ़िवारैवर्षकरिकैविवाहकरैं गारहस्थधर्मवेदाविधिअनुसारिकै ॥
बहुरिविपिनवासिवानप्रस्थधर्मकरैं फेरियतिधर्मजरठागम विचारिकै ॥
भनै रघुराज कोई करत परमधर्म लेतेहैं परेश परम्पदको प्रचारिकै ॥
फलिरहेयागयोगजपतपव्रतनेम यम प्राणायाम ध्यान तीरथगवनहै॥
कामक्रोधलोभमोहमदमत्सरादिजेते त्यागिकैप्रबलतातेरहेत्रिभुवनहै ॥
भनैरघुराजमहाराजसतयुग केरो हाकिमीहुकुमछायो भवनभवनहै ॥
मीनकूर्मकोलनरहरिबटुवामनहूं औनिअवतारलीन्हें इन्दिरारवनहै ॥
सोरठा–कियो राज चिरकाल, पुहुमि प्रजा आनँद मगन ।
तहँ यक दूत कराल, विधि पठयो आवत भयो ॥
प्रतीहार तब धाइ, दूत खबरि आवन कह्यो ।
भूपति लियो बोलाइ, आइ चार शिरनाइ कह ॥

कवित्त ।

पायकैस्वयंभुजूकोशासननरेशत्रेतादीन्ह्योहैनिदेशसुनोकृतमहाराज सो ॥
पालतजगततुम्हैंबीतिगेबहुदिन छाइरह्योसतोगुणविश्वमेंदराजसो ॥
पूजिगोप्रमाणअबअपनेमकानजाहु अबतोजहानमेंहमारोआयोकाजसो ॥
धर्महूचलैहैंकछुअर्थहूचलैहैं कछु कामहूचलैहें कछु भनैरघुराज सो ॥
त्रेताजगनेताजानिविधिअभिप्रेतामानि सतयुगपरमसचेताकह्योदूतको ॥
मेरोलघुभाईत्रेताहोइराजाकरैराज हौंतोअबजाउँ जहांधामपुरहूतको ॥
असकहिसतोगुणीसतयुगशीलभरोसाधारणसपदिसिधायोराखिसूतको ॥
वेदमें पुराणमें बखानरघुराजजाको कृतयुगसम युगभावी नहिंभूतको ॥
सोरठा–सिंहासन आसीन, भयो आइ त्रेता नृपति ।
ताके सुभट प्रवीन, आये सब दरबार में ॥

कवित्त ।

धर्मआयोअर्थआयोकामआयोआशाआईराजनीतिआईसुखदुखआदिआयेहैं
जपतपयोगरहे शुद्धजेसतोगुणमें थोरीक्षतिथोरीक्षमा थोरेछल छायेहैं ॥

एकअंशधर्मवच्योतैसेसतोगुणहच्यो रजोगुणआइसच्योप्रजाअर्थभायेहैं ॥
भृगुकुल राजरघुराजरघुवंशराज हरिअवतारभूमिभारको नशायेहैं ॥
त्रेताजगजेतामहाराजकोहुकुमचच्योयज्ञकरिदानकरिपावैनिरवानको ॥
क्रियाकरिअर्थपावैअर्थयुक्तधर्मभावै रजोगुणसहितसतोगुणप्रमानको ॥
जौनजसकर्मताकोतौनतसफलदीजैराखोक्रियामुख्यहानिलाभअनुमानको
भनैरघुराजसबकाजकरोलाजराखिअर्थधर्ममोक्षहेतुभजोभगवानको ॥
करैलागेयागजनजगतावधानवदकोऊनिहकामकोऊकरतसकामहैं
कामनारहितकीन्हेपायेनिरवाणफलकामनासहितकीन्हेपायेस्वर्गधामहैं ॥
यजनकेयोगतेजनार्दनको जीवजोहै अर्थनहिंव्यर्थभेअनर्थकेननामहैं ॥
त्रेतामहाराजरघुराज राज कीन्ह्यो खूब पायप्रजा विश्वबीच वेशविसरामहैं
ताहीसमैचपलासाचमाकचहूघाचाय

राजकेकरतत्रेताराजसोंवचनबोली बोलीनहिं मानोंमेरवैनयही चटीहै ॥
भनैरघुराजविधिआयसुतेआसुअब द्वापरअवाईकी देखाई चटपटीहै ॥
पूरोह्वैगयोप्रमाणआपकीजियेपयान चलिहैनरावरीनरेशनटखटीहै ॥

दोहा—सुनि विरञ्चि शासन प्रबल, त्रेता गयो झुराय।
कुसुमित फलित महीरुहे, गाज परे ज्यों आय ॥
उतरि सिंहासन ते तुरत, मनमें मानि खँभार।
त्रेता गयो विरञ्चि पुर, तजि जग को संभार ॥

कवित्त।

रजोगुणतमोगुणदोऊउभैओरराजैं सतोगुणपीछेचलोउदासीनआवै है।
कामक्रोधलोभमोहमत्सरउराउभरे सत्यऔअसत्यदयाहिंसासंगभावैहै ॥
धर्मयुगपादअहलादतेविहीनवेश ग्रंथसतपंथसतसुखदुख छावै है।
पुण्यपापजापतापसरिसप्रतापथाप द्वापरदिगन्तनलोंदापदरशावै है ॥
द्वापरदिवाकरसोबैठोहैसिंहासनमें हाकिमी हुकुम कर सरिसपसारा है।
करैंधर्मकर्मसबस्वारथ के हेत परमारथकोजानिबोअकारथउचारा है ॥
भनैरघुराजपरिचर्य्याहीतेसिद्धिहोइ जपतपयागयोगदम्भकोसहाराहै।
कलहकुरीतिकूटकपटकृपिणताईकामकामिनीकोकछुभयोअधिकाराहै

सोरठा—द्वापर कीन्ह्यो राज, यदपि प्रमाणहिं आपने।
अधिक अधीन समाज, पुण्य प्रवीण विहीन बल ॥
लीन्ह्यो प्रभु अवतार, यदुवंशिन के भवन में।
श्री वसुदेव कुमार, हरन हेतु भू भार के ॥
भयो दुती अवतार, दया करन जीवन उपर।
बुध जेहि नाम उदार, जैन धर्म प्रगट्यो अवनि ॥

कवित्त।

एकदिनबैठेदरबारमध्यद्वापरके हल्लापरयोचारोंओरहाइहाइ ह्वै रही।
आयोदूतआयोदूतबड़ोमजबूतद्वार भूपबोलवाइबेकोप्रतीहारसोंकही ॥
भनैरघुराजआइगयोसोसभाकेबीच ताकोदेखिकौनजाकेभैनउरभैनहीं।
अतिविकरालललालोचनविशालकह्योहालकलिकालमहिपालदूतहौंसही

सोरठा—कलियुग पठयो मोहिं, मन्त्र कहन तुमसों कछू।
विधि निदेश दिय तोहिं, जाहु भवन मिति पूजिगै ॥
भयो हमारो राज, जो न हुकुम अब मानि हौ।
ह्वै है बड़ो अकाज, तुमहिं निकासब दण्ड दै ॥
द्वापर सुनत डेराइ, कह्यो दूत सों अस वचन।
हौं यह राज्य विहाइ, चलो जात विधि के सदन ॥
अस कहि द्वापरराज, कलियुग के भय भागि गो।
भयो दूत कृतकाज, गयो भूप कलिकाल पहँ ॥

कवित्त।

पाइकैखबरखूबीखुशीमानिखक्खामारिखलककेखालीकरिवेकोखैरभैरसों
सैनहीसो सैन बोलि चैनएनआनिउर सैनपति मैनकरिभैनएरगैरसों ॥
भनैरघुराजडङ्कादैकैकलिकालचल्यो महिषसवारअघतोपनकीफैरसों।
सचिवअधर्मआगेअसतिअनीतिपाछे अतिशैउराउधरेधर्महीकेबैरसों ॥
कुयशपताकेकारे कुपथकेनागकारे क्रूरतातुरङ्ककारेपैदरकपटके ॥
कामहैहरौलकोहप्रबलमुसाहिबहै मुख्यमन्त्रीमोहमित्रमत्सरविकटके।

लोभहैखजानचीमहामदहैन्यायकारीपुत्रअविश्वासजामैंअघीसबअटके
भाषैरघुराजत्योंअसत्यकेअन्यायकेअनेकउमरावभटपापनटखटके ॥
कीन्हेहैंपोशाककारीअङ्गरागकज्जलकोलोहकेविभूषणत्योंदूषणहथ्यारहैं
धूर्ततांईमूढताईतृष्णात्योंकुशीलताईलालचलवारीचेरीमायामुख्यदारहैं
द्रोह कोतवालत्योंअज्ञानतहसीलवालगर्भगढ़वालरोगसेवकअपारहैं ।
भनैरघुराज कारपण्य पण्यचौधरीहै जगकेविकारजेतेसबैसरदारहैं ॥

आई कलिकाल की कराल काली साहिनी सों,
देखि रघुराज भूप विहँसे ठठाइकै ।
बैठिकै सिंहासनमें शासन पसारयो कलि,
नाशत विवेक निज नामको सुनाइकै ॥
सचिव सुभट सरदारनको बोलि बोलि,
बीरा देदै भेज्यो तुम देशनमें जाइकै ।
साधुनको मारो पुण्य पुरको उजारो,
धर्ममूल को उखारो यज्ञशालन जराइकै ॥
सुनि कलिकालके प्रवीर रणधीर धाये,
आसु अविवेक ढाहि दीन्ह्यो ज्ञान कोटको ।
लोभ हन्यो तोषै त्यों दयाको दौरि कोह हन्यो,
काम मारयो लाज औ विवेक अति मोटको ॥
मद मारयो शीलको कुशील मारयो सौहृदको,
मत्सर निपात्यो नीति प्रीतिहीके जोटको ।
भाषैं रघुराज परमारथ को स्वारथहूं,
कै दियो अधर्म धर्म बन्द लोट पोटको ॥
छल नाश्यो शुद्ध बुद्धि दम्भ नाश्यो साधुताई,
अहंकार नाश्यो ब्रह्म विमल विचारको ।
नाश्यो अपकार दौरि पर उपकारहूको,
विपुल विकार शुचि आलस अचारको ॥

नाशी कुटिलाई सरलाई को भलाई भ्रम,
नाश्यो शठताई सतसंगन अपार को ।
भनै रघुराज त्यों विचारको हठायो हठ,
विषै जग लूटि लीन्ह्यो भक्तिके भँडार को ॥
राग त्यों विरागै वध्यो मोह मेट्यो मुक्तिपथ,
मारयो मृषा सत्यको अधीरज त्यों धीरको ।
कामना अकामै कूटयो भव की त्यों भावना,
भगायो हरि भावना को कोदौ दल्यो खीरको ॥
भनै रघुराज तैसे अतिथि के आदरको,
आसुही अनादर उदारयो करि पीर को ।
जप तप योग याग अरुचि उडाइ दीन्ह्यो,
कारपण्य कैद कै लियो उदार वीर को ॥
व्रत प्राणायाम यम नियम त्यों संयमहूं,
नाशे रोग रारि करि कलि को प्रतापहै ।
दुष्कृत विनाश्यो सब सुकृत सहजही में,
कीन्ही क्षमा छाम दीह दंड करि दाप है ॥
भनैं रघुराज तैसे चातुरी को आतुरीहू,
पातुरी विसन नाश्यो सम्पति अमाप है ।
निठुर निकास्यो नेह शूरताकी कदराई,
पुण्यको पराज्यो कलि छाप करि पाप है ॥

दोहा—परयो हुकुम हल्ला जगत, कलिनृप को अति घोर ।
धर्म धुरा धरणी धस्यो, भग्यो धर्म जिमि चोर ॥

कवित्त ।

छोडिछोडिधर्म कर्ममनुजमलीनअति करैलागेपापपरमारथविहाइकै ।
नारीतजिपतिनपरोसिनसोंप्रीतिकीन्ह्योपुत्रपितादेखिदांतपीसैंरिसिहाइकै
माताकोनिकारैंत्योंहींभ्राताकोनिनारैकरैंजोवैंमुखदारैंबारबारशिरनाइकै ।

भनैरघुराजपरनारिनसोंप्रेमकैकै सम्पतिकोखोवैपुनिरोवैपछिताइकै ॥
ब्राह्मणकहाइसबवेदसमग्रन्थछोडे तीनितागसूत्रहीतेराखैबैभनाई है ॥
जेवैपावैदेजापांचचारिसैविवाहनमें तेईचोखब्राह्मणहैपावत बड़ाई है ॥
संध्याशाखासूत्रसंहिताहूकोनलेशकछु भनैरघुराजज्ञानभक्तिकोचलाई है
नामकेगुलामकरेंकामनिजयमयाम धामधाममांगैभीखलंबनसुनाई है ॥
खेतीमेंनिपुणघासछोलैमेंनिपुणबोझाढोवैमेंनिपुणमूर्खतामेंनिपुणाईहै ॥
ऋणमेंनिपुणव्याजलेनमेंनिपुणभयेव्योहरानिपुणस्वर्गकौडीकीकमाई है
चोरीमेंनिपुणचानडालीमेंनिपुण तैसेचुगुली निपुणत्योंहींनिपुणाढिठाई है
भनैरघुराजवरकाजमें निपुणनहीं एकमें निपुणजातेरीझैयदुराई है ॥

सवैया ।

किङ्कर काम के कोह के कूकुरे कूरता कादरीमें कठिनोई ।
कोक कलान के काम करैया कहैया कुढंग कपार करोई ॥
कञ्चन कामिनी काजके काजिल काजीकुशास्त्रनकृत्यकुबोई॥
कूसुर कर्म कहौं कहँ लों करनैल बने कलिके सब कोई ॥
काम कलानि में खासे प्रवीण रचैं रसग्रंथनिनायकानायक ॥
काम कथैं हरिही की कथा नहिंभक्तिविरक्तिमहासुखदायक ॥
रासकोहासकोत्योंहीविलासको भाषैसबैनाहिंभाषनलायक ।
नाम सिंगारी न हैंअधिकारीमहीपभिखारी अकीरति मायक ॥
केते करैं रोजिगार सदा तरवारको लीन्हे जुझार महावे ॥
वेद विधान के ज्ञान नहीं कछु धर्म अधर्म को ज्ञान भुलावैं ॥
श्रीरघुराज सिखाये ते खीझत रोजही रीझि रहैं गणिकावैं ।
शाखा न सूत्र न संहिता जानत सांचे महापशु विप्रकहावैं ॥
हीन अचार विहीन विचार ते पालत हैं परिवार सदाहीं ।
खेती में खोइ दियो सिगरी वय पै परमारथ लेशहू नाहीं ॥
श्रीरघुराज भनै धन के हित द्वारहिं द्वार न जात लजाहीं ।
ठानि उपास जनेऊ को तोरत फोरत मूड़ ते विप्र कहाहीं ॥

सम्पति भूमि के हेत अचेत न भूपति को कछु शासन मानैं।
बेटिन मारैं तिया वधि डारैं करैं कछु औरहि और बखानैं॥
पेट को मारि मरैं पुनि भूत ह्वै चौरा पुजावत देव समानैं।
श्रीरघुराज भनै तिनको बुध विप्र कहैं नहिं राकस जानैं॥
ऐसे अनेकनि भाँति के कौतुक जे कलि धर्मनि कर्मनि सानैं।
कीन्ह्यो विदूषक राजसभा मधि देखत बालक नाहिं अघानैं॥
ज्योंज्यों नचैं करैं कौतुककौतुकी त्योंत्यों निरातलखैं ललचानैं।
श्रीरघुराज विलंब विचारि महीपति बैन कहे हरषानै॥
कौतुकी कौतुक कीन्ह्योभलो युगयाम व्यतीते भयो अतिकाले।
बन्द करौ अब फन्द सबै जननी बोलवावतीं लालन हाले॥
यों कहि भूप तुरन्त सुमन्त को शासन दीन्ह्यो उदारउताले।
देहु इनाम इन्हैं गज बाजि विभूषण सम्पति शाल दुशाले॥

'—तहां सुमन्त तुरन्तहीं, नटको निकट बोलाय।
नृप आज्ञा अनुसार ते, दीन्ह्यों सकल मँगाय॥

छन्द चौबोला।

चारिहु बालन निकट बोलि नृप वदन चूमिअस बोले।
मातु भवन अब सुवन जाहु सब भोजनकरहु अमोले॥
कहे कुँवर तब पिता संग तुव भोजन करब तहाँहीं।
नहिं जैहैं नहिं खैहैं तुम बिन बैठे रहब इहाँहीं॥
सुनिशिशु वचन विहँसि भूपति मणि आसुहिं उठे अनंदे।
सकल सामन्त शूर सरदार नरेशहि बंदे॥
मन्द मन्द सानन्दित चहुँकित चारि कुमारा।
मानहुँ लोकपाल मध्य लसत करतारा॥
परिचर सहसन चले संग लै छरी छत्र औ चौरा।
फिरे तीनि डेवढ़ी ते परिजन चलीं अली चहुँ ओरा॥
अंतहपुर प्रवेश करि राजा गये कौशिला अयना।

नृप सँग चारि कुमार निहारि सुफल भे सबके नयना ॥
भूपति भोजन भवन पधारे बैठि करन जेउनारे ।
कनक रजत भाजन बहु सोहत चहुँकित चारि कुमारे ॥
चारु चारि चामीकरके तहँ धरे सुवारन थारा ।
पंचम थार भूप के आगे व्यंजन विविध प्रकारा ॥
लगे भोजन करन भूमिपति नारायण मुख भाषी ।
विविध बात बतरात हँसत कछु महामोद मिति नाषी॥
भूपति भोजन करत श्रवण सुनि सहित कुमारन चारे ।
आईं तहँ केकयी सुमित्रा द्रुतकौशिला अगारे ॥
दोहा–औरहु सब रानी तहां, कौशल्या के अयन ।
आय अवनिपति सुत सहित, देखि सुफल किय नयन ॥

कवित्त ।

नृपबतरातजात मंदमुसक्यातजात मंदमंदखातजातआनँदविचारिकै ।
निरखिकुमारसबछोड़िछोड़िथारनिजबैठेपितुभाजनकेनिकटसिधारिकै॥
भनैरघुराजजौलोंसानैनृपव्यंजनलै वचनबखानैबहुयुक्तिनउचारिकै ॥
तौलोंखायलेतसानोव्यञ्जनकोचारोंनंदहँसतनरेंद्रखालीथालीकोनिहारिकै ।
दोहा–पायस अपने हाथ सों, सानि सानि रचि कौर ।
जात खवावत सुतनको, नरनायक शिरमौर ॥

छन्द चौबोला ।

भोजन करत एक व्यञ्जनजो सो तीनों सुत लेहीं ।
जो वारत ताते पुनि झगरत जो न देत तेहि देहीं ॥
कतहुँ कतहुँ झगरत चारिहु सुत भूपति रारि बचावैं ।
कोउ काहूके उपर डारि कछु अवनिप अंकहि आवैं ॥
सूपकार सब देव सरिस तहँ वृद्ध वृद्ध वर बैठे ।
बालकेलि लखि रघुनन्दन की मोद महोदधि पैठे ॥
हाँकत विजन वदन कहुँ पोंछत मृदुल अँगौछन माहीं ।

कबहुँ उठाइ अंक बैठावत राजकुमारन काहीं ॥
यह मीठो कहि कबहुँ खवावत हुलसि हँसावत जाहीं ।
पानि पियावत कबहुँ खेलावत पावत मोद तहाँहीं ॥
लरत बचावत कथा सुनावत दुलरावत बहुबारा ।
हसत हँसावत रीझि रिझावत लूटत सुख संसारा ॥
धनि धनि दशरथ सूपकार सब हरि भोजन अधिकारी ।
यज्ञ भाग जो नहिं अघात सो जिन कर रचित अहारी ॥
करि भोजन नृपसहित कुमारन गवने अँचवन हेतू ।
अँचै शयनके अयन सिधारे चैनभरे नृप केतू ॥
धात्री सकल कुमारनको तहँ जननि निकट लै आई ।
बीरी बदन खवाइ शयनमहँ पाइँ पलोटि सोवाँई ॥
यहि विधि रोज रोज रानी सब राजासहित सुखारी ।
बालकेलि लखि निज बालनकी सालन जात बिचारी ॥

दोहा—एक समय मधुमासमें, रामजन्म दिन जानि ।
कौशल्या आनंद भरि, मज्जन करि अतुरानि ॥

छन्द चौबोला ।

पहिरि पीतपट रंगनाथके भवन गई सुख सानी ।
करि पूजन षोडश उपचारन कही जोरि युगपानी ॥
अचल करहु अब सुखसम्पतिप्रभु यह सब विभव तुम्हारा ।
अस कहिगई पाकमंदिरमहँ व्यञ्जन रचन अपारा ॥
तहँ खेलत देख्यो रघुनन्दन तब चित भै दुचिताई ।
सुतहि कौन ल्याई यहि थलमें हौं सोवाइ उत आई ॥
अस कहि ललन लखनको दौरी जहां पलन प्रभु सोये ।
तहौं लख्यो सोवत अपनो सुत महामोद मन मोये ॥
दौरि पाकमंदिरमहँ आई भोजन करत निहारी ।
महाभीति उपजी मनमें यह शङ्का टरै न टारी ॥

चकित जानि जननी जिय रघुपति वपु विराट दरशायो ।
कोटि स्वयंभु शंभु शक्रादिक बहु सुर कौन गनायो ॥
वदन हजारन चरण हजारन नैन हजारन सोहैं ।
गिरि कानन सर सरित सिंधु युत महिमंडल बन मोहैं ॥
रोम रोम प्रति कोटि कोटि ब्रह्मांड निहारयो माता ।
कालहु कर्म सुभाउ प्रकृति जिय माया अति अवदाता ॥
देखि विराटरूप सुतको तब नारायण जिय जानी ।
अस्तुति करनलगी कौशल्या जोरि जलजयुग पानी ॥
विश्वाधार विश्वपालक प्रभु सिरजक नाशक
आदि अनंत अचिंत्य अनादि अगोचर अज तुम ओई ॥

दोहा—वात्सल्य रस हानि लखि, हरि लीन्ह्यो हरि ज्ञान ।
पुनि पलना सोवन लगे, प्राकृत बाल समान ॥

छन्द चौबोला ।

यहि विधि लीला करत अनेकन देत मोद पितुमातै ।
विहरत अवधनगर रघुनंदनसहित तीनिहूं भ्रातै ॥
बीति गये कछु काल मोदमय भे नव वर्ष कुमारा ।
जननी जनक करन तब लागे मनहीं मनै विचारा ॥
एक समय दशरथ नरनायक अंतहपुर पगु धारे ।
कौशल्या कैकयी सुमित्रा सपदि सहर्ष हँकारे
लै लै सुतन संग अति आतुर महरानी सब आईं ।
औरहु त्रिशतसाठि महिषी सब आई तहँ सुख छाई ॥
कौशल्या कैकयी सुमित्रै कह्यो महीपति बैना ।
भये कुमार वर्ष नवके सब केशवकृपा सचैना ॥
चाही कियो हमहुँ तुमहूं को अब व्रतबंध विचारा ॥
एकादश हायनक अन्तर जनउ कुमारा ॥
कह्यो कौशल्या पुलकि तनु बुलकि उछाह अपारा ।

गुरु वसिष्ठ सँग करि सुमंत्र पिय करहु सकल संभार ॥
निज अभिमत सब रानिनको मत जानि उठे अवधेशा ।
गये सुमंत्रसहित अति आतुर तेहिक्षण गुरुनिवेशा ॥
करि वंदन पद जोरि कंज कर विनय कियो शिरनाई ।
उचित होइ तौ कुँवरनको व्रतबंध करौं मुनिराई ॥
गुरु कह अब न विलंब करौ व्रतबंध काल यह साँचो ॥
बोलि विविध दैवज्ञ तज्ञ उपवीत यज्ञ दिन राँचो ॥

दोहा—अस कहि मुनि पुनि पुलकि तनु, सुनहु सुमंत्र सुमंत ।
सुदिन रचन हित ज्योतिषी, आनहु इते तुरंत ॥

छन्द चौबोला ।

तहाँ तुरंत सुमंत गणकगण ल्यायो ललकि लिवाई ।
गुरु वसिष्ठ आज्ञानुसारते दीन्ह्यो सुदिन बनाई ॥
वचन कह्यो गुरु रचन हेतु व्रतबंध यज्ञ संभारा ।
पगुधारो नरनाथ निलै अब दूसर नाहिं विचारा ॥
करि प्रणाम गुरुपद पंकजको भूपति भवन सिधाये ।
अनुजन सहित राम व्रतबन्ध करनकी साज सजाये ॥
फिरयो निमन्त्रण महिमण्डलमें होत राम व्रतबन्धा ।
देश देशके सब नरेश जिन कोशलेश सम्बन्धा ॥
ते सब हर्षि अवधपुर आये भयो महा संघर्षा ।
परै रामके कन्ध जनेऊ यहै हर्ष उत्कर्षा ॥
सकल सुयोगसहित सो सुदिवस आइ जबहिं नजिकाना ।
अवधनगर घर घर बहु बाजन बाजन लगे निसाना ॥
माड़ो गड़ो रंगमन्दिरके अंगन वेदविधाना ।
ताऊपर जरकसी कसीरजु मणिमय विशद विताना ॥
जानि प्रभात काज कौशल्या उठीं रैन कछु बाकी ।

करि मज्जन पटपीत पहिरि तनु अति आनँद रस छाकी ॥
गई रंगमन्दिर वंदन करि सादर पूजन कीन्ह्यो ।
बहुत मनाइ नाइ शिर प्रभुपद गवन भवन मन दीन्ह्यो ॥
लगीं मातु सब साज सजावन भै व्रतबन्ध तयारी ।
मुनिन सहित तहँ गुरुवसिष्ट पगुधारे आनँद भारी ॥
दोहा—जेहि जस देत निदेश गुरु, सो तस ठानत काज ।
विप्र सचिव परिजन प्रजा, पूरण सदन समाज ॥

छन्द चौबोला ।

जानि मुहूरत गुरु वसिष्ठ तहँ चारिहु कुँवर बोलायो ।
राज समाज सहित दशरथ महाराज कुँवर युत आयो ॥
बाजत विविध मनोहर बाजन वर वर मङ्गल गावैं ।
राचहिं नारि मनोहर सोहर मोहर मुदित लुटावैं ॥
नारी सहसन शिर धरि कलशन गावत आईं आगे ।
तिनके पीछे कुँवर चारियुत भूप चले बड़ भागे ॥
जबहिं यज्ञ मंडपमहँ भूप कुमारनसंयुत आये ।
तेहिअवसरको आनँद सहासानन मुख चुकै न गाये ॥
राज समाज विराजत वैदिक विप्र समाज दराजा ।
उतै रंग मन्दिरमहँ नारि समाज सोहाति सलाजा ॥
छाइ रही मख मण्डप अन्तर विप्र वेद धुनि धारा ।
नचहिं नर्तकी विविध कला करि दशरथ भूपति द्वारा ॥
रघुवंशी सरदार नाग चढ़ि सम्पति हुलसि लुटावैं ।
खैर भैर माचि रह्यो अवधपुर कोउ आवैं कोउ जावैं ।
तहँ वसिष्ठ मुनि सों महीप कह कृत्य करावहु नाथा ।
तुम्हरी कृपा लहे हम यह दिन रघुकुल भयो सनाथा ॥
तहँ महीप चारिहु कुँवरनकी अलकावली निहारी ।

जानि शोर व्रतबन्ध विहित विधि भरि आये दृग वारी ॥
चारि कनक चौकिन में चारि कुमारन को बैठाये ।
दानकराइ वेद विधि अनुसर मुनि मुंडन करवाये ॥
दोहा—अलक विगत मुख लसत अस, जलद पटल बिलगाइ ।
मनहुँ कढ्यो पूरण शशी, युग अहि सुत उर लाइ ॥

छन्द चौबोला

वेद विधान कराइ मंजु मेखला प्रभुहि पहिरायो ।
मनहुँ नीलमणि महिधर के मधि वासुकि अहि लपटायो ॥
जासु नाम श्रुति पंथ परतहीं पाप परावन होई ।
तेहि प्रभुके श्रुति पथ गायत्री मुनि उपदेश्यो सोई ॥
मंजु मेखला धारि दंड लै प्रभु पहिरे कौपीना ।
भिक्षा माँगन हेतु ठाढ़ भे चारिहु बन्धु प्रवीना ॥
श्याम वर्ण तनु कनक जनेऊ सोहि रह्यो छविखानी ।
मनु तमाल में सोनजुहीकी ललित लता लपटानी ॥
विश्वभरन पोषण जिन कर सों सुर मुनि नर कर होई ।
सो माँगन को पाणि पसारे देहु भीख सब कोई ॥
औसर जानि उठे जगतीपति सङ्ग चलीं सब रानी ।
मुक्ता मणि प्रवाल माणिक लै दियो भीख मन मानी ॥
सकल राजवंशी रघुवंशी आये संयुत दारा ।
दै दै भीख सीख लै सिगरे निज निज गये अगारा ॥
मुनि वसिष्ठ चारिहु बंधुनको अपने निकट बोलायो ।
विहँसि विहँसि जग उपदेशक को बहु उपदेश सुनायो ॥
लैभिक्षा शिक्षा अरु दिक्षा इच्छा के अनुसारा ॥
शासन लहि गुरु पितु मातन को माँगन चले अगारा ॥
प्रथम रङ्गमान्दिर महँ माँगो पुनि वसिष्ठ के ऐना ।

बहुरि गवन किय अपना भवन ॰ भरि चैना ॥
दोहा—कौशल्या अरु कैकयी, और सुमित्रा भौन ।
माँगि भीख भ्रातन सहित, किय सुमन्त गृह गौन ॥

छन्द चौबोला ।

आवत माँगन हेत राजसुत देखि सुमन्त तुरन्ता ।
धाये घरनि सहित अति विह्वल कहि जय जयति अनन्ता ॥
गिरयो चरणमहँ पाणि जोरि पुनि खड़ो भयो सुखछाई ।
क्षणक्षण रूप अनूप निहारत मनहुँ रङ्क निधि पाई ॥
कह्यो जोरि कर जो कछु मेरो सरवस ग्रहण करीजै ।
चरण कमलकी भक्ति पावनी यहि अवसर मोहिं दीजै ॥
मन्द मन्द प्रभु एवमस्तु कहि कौशल्या गृह आये ।
तहां कियो भोजन भ्रातनयुत मातन मोद बढ़ाये ॥
पहिराई पोशाक पीत तहँ कौशल्या महरानी ।
भाल डिठोना डीठिनिवारन दियो त्रिकुटि हरषानी ॥
सुतन नैन दिय कज्जल रेखा रेखा शिति छवि सीमा ।
अलि अवली जनु बैठिरही शारद सरसिज अवलीमा ॥
गये पिताके भवन कुँवर सब भूपति देखि जुड़ाने ।
लियो ललकि बैठाइ कुमारन सिंहासन हरषाने ॥
लागी होन कुँवर नेउछावर मणिगण रत्न अमोले ।
गुरु वशिष्ठको बोलि महीपति अपनी आशय खोले ॥
सकल वेद विद्या कुँवरनको दीजै नाथ पढ़ाई ।
धनुर्वेद गांधर्ववेद अरु वेद अङ्ग समुदाई ॥
मुनि तथास्तु कहि गवन भवन किय संध्याकाल विचारे ॥
उठ भूप सत्कारि सभासद कुँवर सदन पगु धारे ॥
दोहा—बीती रजनि अनन्दसों, भयो महा सुख भोर ।

पढ़नहेतु विद्या गये, गुरुगृह राजकिशोर ॥

छन्द चौबोला ।

राम लषण अरु भरत शत्रुहन चारिहु कुँवर अनोखे ।
गुरु वसिष्ठ लखि दै अशीष बहु बैठायो मति चोखे ॥
जानि सकल विद्यानिधि प्रभुको विद्यारम्भ करायो ॥
जौन जौन प्रभुको दरशायो विनश्रमसो सब आयो ॥
चारि वेद वेदांग पुराणहुँ राजनीति इतिहासा ।
धनुर्वेद गन्धर्ववेद पुनि आयुर्वेद प्रकासा ॥
कोउ न रामसम कोनहु गुणमहँ तैसहि तीनिहुँ भाई ॥
औरहु रघुवंशी कुमार सब पढ़े शास्त्र समुदाई ॥
थोरे कालहिमें रघुनन्दन भाइन सखन समेतू ।
वेद शास्त्र पढ़िलियो दियो पुनि गुरु दक्षिण कुलकेतू ॥
अतिरणधीर वीर नृपनन्दन सखा सकलसँगमाहीं ।
सरयूतीर शरासन शर लै सिगरे खेलन जाहीं ॥
तहँ ऋजु पृथुल दूर अरु निकटहु सूक्षम रोपि निसाना ॥
बार बार अभ्यासहेतु सब मारहिं तकि तकि बाना ॥
जो हुकि जाइ ताहि तारी दै हँसत सबै तेहि ठामा ।
लक्षवेध जो करै राम तेहि देत सराहि इनामा ॥
राम शिरोमणि धनुविद्यामहँ लषण भरत रिपुनासी ।
औरहु सकल राजवंशीसुत भये शस्त्र अभ्यासी ॥
करहि शस्त्रअभ्यास पहर युग पुनि अन्तहपुर आवें ।
मातु विरचि मनरंजन व्यञ्जन चारिहु सुतन खवावैं ॥

दोहा—यथा आपने सुतनको, तथा सखनसमुदाइ ।
मानहिंमातुविभेद विन, प्रीति रीति दरशाइ ॥

छन्द चौबोला ।

रहे याम यक दिवस कुँवर सब भूषण वसन सँवारी ।

दशरथके दरबार जात जुरि धनु सायक कर धारी ॥
लक्षवेधकी कथा कहत सब जौनहुक्यो जस मारो ।
भूपति हँसत हुलास हिये भरि देत इनाम अपारो ॥
संध्यासमयजानि रघुनन्दन सखा बन्धु सँग लीन्हे ।
करि संध्या वन्दन सरयूमहँ गमन नगर कहँ कीन्हे ॥
चढ़ि तुरंग झमकावत वागत लागत परम सलोने ।
मानहुँ कढ़ि मन्दर कन्दरते नवलसिंहके छोने ॥
देखनहेतु सकल पुरवासी होत आसुपथ ठाढ़े ॥
रामरूप छवि आनँद राशी टरैं न तहँते गाढ़े ॥
जहँ जहँ जात बंधु चारिहु पुर तहँ तहँ नगरनिवासी ।
संग संग प्रभुके विचरत सब पानिप पीवन प्यासी ॥
यहि विधि सकल अवधपुरवासिन आनँद अमित पसारैं।
यथायोग सुनि प्रजा विनय प्रभु तथा योग निरधारैं ॥
रजनी आगम जानि राम तहँ बंधुसखानिसमेता ।
गमनत मन्द मन्द मुख भनत अनान्दित आइ निकेता ॥
करहिं प्रजनकी विनय पिता सन सकल मनोरथ पूरैं ।
रामरूप छवि देखि सभासद क्षण क्षण कर तृणतूरैं ॥
बेला जानि बियारीकी प्रभु जननिसदन पगुधारे ।
कनक थारमहँ मातु परोसहिं सालन करहिं अहारे ॥
दोहा—शयन करहिं निज निज सदन, अति सुकुमार कुमार ।
जननी सकल सुवावतीं, कहि कहि कथा अपार ॥

कवित्त ।

कहति कहानी कौशिलाजु क्षीरसिंधु मध्य,
भूधर त्रिकूट रह्यो गज बलवार है ।
ग्रस्यो तेहि आइ एक महाबली ग्राह गाढ़े,

भयो युद्ध दोहुनको हायन हजार है ॥
हारचो करि कोहूको निहारो नहिं रखवारो,
आरत पुकारो अब अच्युत अधार है ।
ल्याउ चक्र मेरो अस कहि उठि धाये राम,
मातुमुख सुनत गयंदकी गोहार है ॥
चौंकि उठी जननी धरचो है दौरि अंगन लौं,
अंकमें उठाय लाय पलना सोवायो है ।
भनै रघुराज मुख चूमति चरण चापि,
चील्ही करवाय राई लोन उतरायो है ॥
कैसो कियो लाल देख्यो सपन कराल कछू,
काहे है बिहाल यहि काल उठि धायो है ।
डर मति मान मैंतो तेरेई समीप बैठी,
कहूँ नहिं ग्राह नहिं कहूं गज आयो है ॥
दोहा—यहि विधि करत कला विविध, बसत अवधपुरमाँह ।
अवध प्रजानि उछाह नित, राम बाँहकी छाँह ॥

छन्द चौबोला ।

सत्य शीलनिधि कोमल कटु बिन वदत बैन मुसुकाई ।
प्रीति रीति सब सों अति राखत सहज सदा रघुराई ॥
कोहुको निरखि कलेश सहतनहिं रहत हमेश दयाला ।
शुद्ध बुद्ध उद्धत उदार वर डरत न कालहु काला ॥
पर तिय डीठि पीठि रिपुगण रण युगल वस्तु कृपणाई ।
शूर सपूत सुजान सुसाहेब साँकर सहज सहाई ॥
धर्म धुरन्धर धीर शिरोमणि मति गम्भीर विचारी ।
उदै दिवाकर इव प्रतापगुण आकर जग सुखकारी ॥
वस्तु यथारथ ज्ञान मान बिन परस्वारथ रत रोजू ।

खलता तृषा विषमता खरता खोजेहु मिलत न खोजू ॥
कौन कौन गुण कहौं रामके सहस जीह कहँ पाऊं ।
पाऊं तौ अहिपति असत्य लखि वर्णि पार किमि जाऊं ॥
वरण्यो जिमि रघुनंदनके गुण तैसहि तीनिहु भाई ।
भाई भाई सहज मिताई सो कहँलौं कहि जाई ॥
यद्यपि चारिहु भाइनकी है सब विधि ते समताई ।
तदपि रामगुणसिंधु थाह जग कोउ न आजु लगि पाई ॥
प्रथित पृथुल पुहुमी पराक्रमी पग पयोधि घट योनी ।
तेजवन्त गुणवन्त सन्त प्रिय हन्ता हठि अनहोनी ॥
निर्मल शारद शशी सरिस प्रभु उदित अवध दिशि प्राची॥
कौन भुवन अस भयो रामसों जाकी रुचि नहिं राची ॥

दोहा—चलनि कहनि विहँसनि रहनि, गहनि सहनि सब ठाम ।
चहनि नेहकी नहनिसों, कियो जगत वश राम ॥

छन्द चौबोला ।

चारिहु बंधु कबहुँ सीखन हित सखन सहित अहलादे ।
सज्जित सिंधुर सकल भाँतिसों बैठहिं आपु कलादे ॥
अति निशङ्क अंकुश लै लै कर मत्त मतंग धवावैं ।
कहुँ बैठावहिं मंद चलावहिं अद्भुत कला देखावैं ॥
परम निपुण जे पील पाल वर तिनहिं बुलाइ बुलाई ।
गज चालनकी लियो कला सिखि चतुर चारिहू भाई ॥
तीनिहु भ्राता और सखा सब यदपि सिख्यो यक साथै ।
तदपि गुणीजन जे प्रवीणजन कहत अधिक रघुनाथै ॥
अति सुकुमार कुमार चारिहू कबहुँ तुरंग सवारे ।
लै दिनकर तेजा कर नेजा संगहि जात शिकारे ॥
तैसहिं राजकुमार छबीले सकल अश्व असवारा ।

बाजी कला सकल विधि सीखत राम सङ्ग सुकुमारा ॥
तरल तुरङ्गन चपल कुरङ्गन सङ्गहि सङ्ग धवावैं ।
कहुँ बरछी कहुँ बाण कृपाणहुँ पहुँचि समीप चलावैं ॥
कहुँ कूकर शूकर पर छोड़त हूँकारि दपटत बाजी ।
कहुँ चीते झपटत रपटत मृग लपटत लखि अति राजी ॥
हय मुरकावनि सपदि चलावनि थहरावनि झमकाई ।
बाजी कला सकल सीखे सब तदपि अधिक रघुराई ॥
कबहुँ पिता के आगे फेरत बाजिन चारिहु भाई ।
भूप बिलोकत कला कुतूहल हुलसि देत मुसक्याई ॥
दोहा—विस्तर राम शिकार को, इतै न वर्णन कीन ।
ब्याह अन्त मृगया शतक, कहिहौं कछुक नवीन ॥

छन्द चौबोला ।

आवहिं कबहुँ चढ़े स्यंदन लै लै तेहि के जग आमैं ।
आमैं विपिन कबहुँ संचारैं चारैं वर दुनिया मैं ॥
उपजामैं सुख जब घर जामैं रथचरजामै जामैं ॥
जामैं दुख जन जूह न जामैं सो ठानत वसु जामैं
हरि कुल हरि रथ हरि सञ्चारत हरि हरि हरि रथ वेगू ॥
हरि मुख हरि प्रिय हरि मद गंजित हरि हरि हरि कर तेगू ॥
धामै धाम धाम धामै रवि वामै वामै वामै ।
वसुधा मै जिन वानि सुधा मै वसुधा मै सुद्धामै ॥
बाण चलामै रिपु विचलामै दीठि लक्ष विचलामै ।
वेधत विशिष चलामै तामै तामै है रुचलामै ॥
हारैं हारैं करत विहारैं सिंहारैं संहारैं ।
असहारैं कबहूँ नहिं हारैं देव देत उपहारैं ॥
हारैं ही में युवति निहारैं बार बार बलिहारैं ।

हारैं नहिं सुहृदन व्यौहारैं प्रथमहिं गुरुन जोहारैं ॥
चारैं बन्धु सुधर्म प्रचारैं परचारैं बहु चारैं ।
चारैं नेग जनन सञ्चारैं अपचारैं उपचारैं ॥
खंडैं खंडैं दंडिन खंडैं नहिं खंडैं श्रुति खंडैं ॥
खंडैं इव मीठे निज खंडै खंडे खंड पखंडै ॥
शुचिताई गुणिताई ताई है न रहै उचिताई ।
ताई नहिं प्रभुताई के महि जग जाहिर शुचिताई ॥
दोहा—बाग गहनि स्यन्दन चढनि, हय फेरनि संग्राम ।
तजनि विशिष बैठनि गठनि, सिख्यो सकल विधि राम ॥

कवित्त ।

कमलसी कमलासी कौशिक कारन्दहासी,
कामसी अकामसी कपूरहीसी केशसी ।
केशव के कंबुसी सुकेशव के कौस्तुभसी,
कौमोदकीसी कौमुदीसी कुमुदेशसी ॥
कहै रघुराज कामधेनु कल्प कुंज कैसी,
कंजकैसी कुंद कैसी कन्द कुधरेश सी ।
कोलहीसी कच्छप कमुच्छ कोशलेश जूकी,
कीरति कसायनी है कलिकी कवेश सी ॥
बाण सन्धानन में कमानहूके तानन में,
शरके पयानमें सुखैंचि निज बान में ।
लक्षपात बान में प्रत्यक्ष दर्शवान में,
विपक्ष छयवान में त्यों कर्तबकृपान में ॥
भनै रघुराज धनु दृढ़तानन में,
बैठनि त्यों आनन में चलनि प्रमान में ।
लक्ष धीर मानन में वीर वे प्रमानन में,

कोई ना धनुष मान राम सों जहानमें ॥
धीर शिरोमणि वीर वर, लसत पाणि धनु तीर ।
बुद्धि गिरा गम्भीर अति, वसत अवध रघुवीर ॥

छन्द चौबोला ।

कबहूँ चारिहु बंधुन को लै खेलत विपिन शिकारा ।
कबहूँ चढ़े मतंग तुंग वर विहरत अवध बजारा ॥
भाइन सहित सदा रघुनन्दन करत जनक सेवकाई ।
राखे रहत सदा पितुकी रुख मानत रोचि रजाई ॥
सदा कहत करजोरि वचन मृदु मनहुँ खसत मुख फूला।
पितु शासन सुनि सपदि सँवारत देत अनन्द अतूला ॥
पूंछि पूंछि पितुसों रघुनायक करत पौर पुरकाजा ॥
राम सनेह शील रति रांचे मगन रहत महराजा ॥
कबहुँ चरण चापत पितुके प्रभु कबहूं विजन डोलावैं ।
पितुसों विदा माँगि रघुनन्दन भोजन करन सिधावैं ॥
जबलों रहत राम अन्तहपुर करत जननि सेवकाई ।
जननी वचन सुनत त्वरिताकरि जात काज हित धाई ॥
कौशल्या कैकयी सुमित्रा औरौ मातु अनेका ।
भेद विगत मानत समान सब जानत धर्म विवेका ॥
वृद्ध वृद्ध रघुवंशिन को प्रभु जानत जनक समानैं ।
तेऊ निज सुत ते प्रभु सौगुण मानत मानहुँ प्रानैं ॥
धनि दशरथ धनि अवध प्रजा धनि कौशल्या महरानी ।
तजि विकुण्ठ जाके अंगनि में खेलत शारँगपानी ॥
पितु सेवन जस करत राम नित तैसहि तीनिहुँ भाई ।
राम संग डोलत मृदु बोलत पुरजन आनँददाई ॥

दोहा—यद्यपि सकल समान सुत, शील सनेह सकोच ।

तदपि अधिक कछु राजमणि, करत राम रुचि रोच ॥

छन्द चौबोला ।

भोरहिं ते चारिहु भाइन को पट भूषण पहिराई ।
लघुकरवाल ढाललघु ढालैं पग पावँरी सोहाई ॥
मेवा विविध कलेवा दै दै सेवा सखनि सजाई ।
पठवहिं मातु भूप दरबारै टीको श्याम लगाई ॥
यद्यपि संग संग विहरत सब सखन सहित सब भाई ॥
तद्यपि लषण सनेह राम पर दिन दिन दून देखाई ॥
लषण करन लागे बालहिं ते रघुपति पद सेवकाई ।
अति सुन्दर सुकुमार गौर तनु देखत मदन लजाई ॥
खेलत बैठत बागत धावत आवत जावत माहीं ।
सोवत जोवत विविध तमासे विपिन शिकार सदाहीं ॥
सकल समैमहँ सब कारजमहँ लछिमन परम सुजाना ।
जग अभिराम रामपद सेवत बहिर्भूत जिमि प्राना ॥
जेठ बन्धु पुनि दीनबन्धु गुणि कुमुद बंधु सुउदोते ।
सो रघुपति पद सेवत लछिमन छनभरि विलग न होते ॥
जहिमहँ होहिं प्रसन्न राम अति सोई मनते करहीं ।
यथा राम सबके प्रिय तैसहि लषणहुँ जन सुख भरहीं ॥
यथा राम सीख्यो धनुविद्या लषण सिख्यो तिमि सोई ।
यथा राम सेवत पितुके पद तिमि लछिमन मुद मोई ॥
रामहुँ को तैसहि लछिमन प्रिय सकल काल सब थलमें ।
विना लषण नहिं लहत नींद प्रभु रजनी सेज अमलमें ॥

दोहा—विना खवाये लछिमनहिं, भोजन करत न राम ।
विना पियाये जल तिन्हैं, पियत न जल अभिराम ॥

छन्द चौबोला ।

कौशल्या के भवन कबहुँ प्रभु चारिहु बन्धु सिधारैं ।

व्यञ्जन विविधप्रकार सुधा सम संयुत सखन अहारैं ॥
कबहुँ कैकयी चारि बन्धु को व्यञ्जन विरचि बोलावैं ।
सुधा सरिस व्यञ्जन परोसि यक थारहिमाहँ खवावैं ॥
सुमित्रा चारि कुमारन करवावतीं कलेवा ।
दुलरावत निज पाणि खवावत महामधुर रस मेवा ॥
लछिमनको प्रभु अपने करते भोजन विविध करावैं ।
तैसहि भरत शत्रुसूदनको बहु अनुमोदि खवावैं ॥
जब भोजन लछिमन करि चुकते तब प्रभु खाय सुखारी ।
मातनसों मृगया हित माँगत बिदा पाणि धनुधारी ॥
चारिहु बन्धु उमङ्ग भरे अति होत तुरङ्ग सवारा ।
लै बरछी तिरछी गति गमनत संयुत राजकुमारा ॥
कहूं जमावत कहूँ कुदावत कहूँ धवावत बाजी ।
कहूँ फिरावत कहुँ बैठावत कहूँ उड़ावत ताजी ।
देखि कुरङ्गन को कानन में है आनन करि सूधो ।
रघुकुल पञ्चानन दपटत द्रुत जेहि जब कतहुँ न रूधो ॥
भागत मृग मारत बरछिन सों इक एकन ललकारैं ।
कबहुँ खड्गसे कबहुँ बाणसे हनि मृग करत शिकारैं ॥
जहँ जहँ राम धवावत बाजी तहँ तहँ पाछे पाछे ।
धनु शर लै रक्षत रामहिं तहँ गच्छत कम्मर काछे ॥
दोहा—गिरि कानन सम विषम थल, जहँ जहँ विहरत राम ।
तहँ तहँ रक्षत राम कहँ, गच्छत लक्ष्मण वाम ॥

छन्द चौबोला ।

कौनौ समय कौनहूँ थल महँ जहँ जहँ प्रभु चलि जाहीं ।
लषण तजत नहिं रघुकुल मणि कहँ रहत समीप सदाहीं ॥
जैसे रहत राम ढिग लक्ष्मण रक्षन हित वसु यामा ।

जैसे भरत समीप शत्रुसूदन सोहत अभिरामा ॥
प्राण समान राम जस मानत लछिमनको सब काला ।
भावत तैसहि भरत भक्त निज जिय सम मम रिपुशाला ॥
राम भरतको जस सनेह तस कवि न लहत कहि पारा ।
प्रीति रीति चारिहु भाइन की मैं किमि करौं उचारा ॥
राम लषण अरु भरत शत्रुहन चारिहु राजकुमारा ।
विहरत अवध नगर पुरवासिन आनँद देत अपारा ॥
चारिहु कुँवरन सहित भूपमणि जब बैठत दरबारा ।
सोहत चारिहु लोकपाल युत मनहुँ मुदित करतारा ॥
दिन रजनी जननी सजनी युत सुत सेवत क्षण जाहीं ।
भव संभव दुख सुख अनुभव जब जानि परत कछु नाहीं ॥
मचो रहत नित नव अभिनव सुख सब पुरवासिन पूरे ।
दशरथको आनंद कहौं किमि जासु राम सुत रूरो ॥
एक समय दशरथ वसिष्ठ मुख सुनते रहे पुराना ।
निकसी कथा विराग योग जप करि पावत भगवाना ॥
इतनेमें रघुनन्दन आये बैठिगये पितु अङ्का ।
लखि मुनि सजल नयन भूपतिसों बोले वचन अशङ्का ॥

दोहा—योग याग जप तप नियम, कथा वृथा सुनि लेहु ।
सकल सुकृत को जौन फल, तुमहिं चहौ तेहि देहु ॥

छन्द चौबोला ।

तुमहिं न बाकीकछु भूपतिमणि जगमहँ सुकृति अधारा ।
ज्ञान विराग योग जप तप व्रत जाके राम कुमारा ॥
दशरथ वंदि वसिष्ठ चरण युग जोरि कहै कर दोई ।
जापर राउर कृपा नाथ अस असन होइ कस सोई ॥
ताही समय भरत लक्ष्मण रिपुदमन पिता ढिग आये ।
चारिहु बन्धुनको विलोकि दशरथ अतिआनँद पाये ॥

नीति विवेक अनेक गुणनयुत नेकु नीति नहिं हीना ।
ज्ञान मान जग जान शिरोमणि वीर प्रधान प्रवीना ॥
नहिं सुन्दर त्रिभुवन महँ अस कोउ जस दशरथ सुतचारी।
धनुधारी हितकारी भारी सुर नर मुनि मनहारी ॥
दिग सिन्धुर कुंभनमहँ मण्डित जिनकी कीरति माला ।
करामलक इव विद्या सिगरी सबको ज्ञान त्रिकाला ॥
नहिं अनीति रत नहिं कुसङ्ग कृत नहिं अधर्म व्रतधारी।
सदा दीर्घदरशी नृपनन्दन पितु पद वंदनकारी ॥
दीपति दीप शिखासी दीपति अवनीपति सुत चारी ।
तेज प्रताप ओज माधुर्य्य महा सौंदर्य जितारी ॥
कौशलपति पुत्रनकहँ देखत बहुरि वसिष्ठ उचारे ।
जगतीपति व्याहन के लायक भये कुमार तुम्हारे ॥
गुरु के वचन सुनत सकुचे सब भरत कह्यो कर जोरी।
भै तयार ज्योंवनार भवनमहँ मातु बोलायो मोरी ॥

दोहा—राम लषण रिपुहन सहित, बालन वृद्ध समेत ।
चलिय पिता भोजन करन, अब विलम्ब केहि हेत ॥

छन्द चौबोला ।

सुनत भरत के वचन विहँसि कछु उठ्यो भूप शिरताजा।
रघुकुल राज समाज उठी तहँ कहि जै जै महराजा ॥
वृद्ध वृद्ध रघुवंशिन को लै बालन बोलि भुवाला ॥
करिकै गुरु वसिष्ठ पद वन्दन चले नरेश उताला ॥
आगे आगे चले चारि सुत पाछे दशरथ राऊ ।
वृद्ध वृद्ध रघुवंशिन लीन्हे अतिशय सहज सुभाऊ ॥
सोहत अवध नाथ सुत संयुत बंधुन सहित उदारा ।
मानहु लोकपाल देवनयुत जात भवन करतारा ॥

वृद्ध वृद्ध रघुवंशी सोहत मनहुँ सतोगुण रूपा ।
चारि फलन इव चारिहु नंदन शुद्ध सतोगुण भूपा ॥
कैकयि भवन भूप पगु धारे करन हेतु ज्योंनारे ।
राम जाइ जननी सों आतुर ऐसे वचन उचारे ॥
मातु मोहिं अति क्षुधा सतावति देहु सुधा पकवाने ॥
मैं खैहौं सबके प्रथमहि इत पिता सङ्ग नहिं खाने ॥
मातु चूमि मुख सुत दुलरावति कह्यो वचन हे लाला ।
पाक भवनमहँ भोजन कीजै सहहु न क्षुधा कशाला ॥
त्रिभुवनधनी भवन भोजनमें भोजन करन लगे हैं ।
खात खात खायो सिगरे जे व्यञ्जन स्वाद जगे हैं ॥
सूपकार सब जाइ हँसत कैकयीसों वचन उचारयो ।
राजपट्ट महिषी तिहरो सुत सिगरो अशन अहारयो ॥
दोहा–सुनत कैकयी उठि तुरत, देख्यो व्यञ्जन भौन ।
रह्यो अन्न संपन्न जो, बच्यो न सो भरि लौन ॥

छन्द चौबोला ।

सूपकार सब जाय भूपसों विस्मित कह्यो हेवाला ॥
अन्न पाकशालाको खायो तिहरो जेठो लाला ॥
सुनि भुवालमणि रघुवंशिनयुत लागे हँसन ठठाई ॥
जननी मानि अजीरणका भय गुरु वसिष्ठ बोलवाई ।
गये तहां तुरतै वसिष्ठ मुनि कही कैकयी बानी ।
जेठो लाल अन्न बहु खायो रही न पाक निशानी ॥
मोहिं अजीरनका भय लागत नाथ करहु उपचारा ।
गुरु वसिष्ठ हँसि कह्यो रामसों खायो भोजन सारा ॥
राम कह्यो मैं क्षुधित अहौं गुरु अबलौं नाहिं अहारी ।
मानहुँ मृषा जाय व्यञ्जन घर लीजै नैन निहारी ॥

लै सँग सकल सूपकारनको जाइ वसिष्ठ निहारे।
दून दून व्यञ्जन सब देखे भोजन भवन मँझारे॥
प्रभुचरित्र गुणि मुनि मनहीं मन रामहिं कियो प्रणामा।
कह्यो कैकयीसों नृप हूँ सो राम न कियो कुकामा॥
तिहरो सुत भूखो मुख सूखो झूँठहि वदत सुआरा।
लेहु बोलाइ खवाइ देहु नृप और न करहु विचारा॥
राउ रानि सिगरे रघुवंशी गुणे वसिष्ठ प्रभाऊ।
सुतको अमितप्रभाव न जाने जामें है सब भाऊ॥
पुनि कुमारसंयुत कोशलपति लै सिगरे परिवारा।
केकयसुता भवनमहँ कीन्ह्यो व्यञ्जन विविधअहारा॥

दोहा–यहि विधि करत अनेक तहँ, कला कुतूहल राम।
जननी जनक प्रजानको, नित पूरत चितकाम॥
बालकेलि महँ हरि मगन, जननी जनक सनेह।
अवलोकत अनुदिन अमर, उपज्यो अति संदेह॥
कहहिं परस्पर वचन अस, दशरथ मखमहँ आइ।
करी प्रतिज्ञा जगतपति, चतुराननहिं सुनाइ॥
दशरथ भूभरतार घर, लै अवतारहिं आसु।
दशकंधर को मारिकै, करिहैं सुर दुख नासु॥
बिसरिगयो सो प्रण प्रभुहि, राजभवनमहँ आइ।
किधौं विकुंठ धनी अबै, नहिं प्रगटे महिं जाइ॥
ताते चलहु विरंचि पहँ, पूँछि मिटावहिं शोक।
जबलों दशकंधर जियत, तबलों सुखी न लोक॥
अस विचारि करि देव सब, गे करतार अगार।
ह्वै दशमुखसों अति दुखी, कीन्हे विकल पुकार॥
दशरथमखमें विष्णुप्रभु, कीन्ह्यो प्रणहिं उदार।

मैं रावणको मारिहौं, लै मानुष अवतार ॥
सो प्रभु दशरथभवन में, प्रगटे भ्राता चार ।
बालकेलि रत लखि तिन्हैं, हमहिं होत भ्रम भार॥
राजसम्पदा पाय प्रभु, भूलि गये प्रण सोइ ।
धौं अबलौं अवनी प्रगट, भये न श्रीपति ओइ ॥
लोक लोक अरु लोकपति, काहि न रावण भीति ।
को अब शोक निवारिहै, बली लङ्कपति जीति ॥
सुनि विधि विबुधनके वचन, विहँसि वदे वर बैन ।
भयो महा भ्रम सुर तुम्हैं, अब पैहौ सब चैन ॥
अवधनगर दशरथभवन, हरि लीन्ह्यो अवतार ।
शम्भु कही मोसे कथा, सो मैं करौं उचार ॥

छन्द चौबोला ।

रघुपति बालचरित्र विलोकन धरि धरि मनुजशरीरा ।
कागभुशुंडि और हम गवने जहँ विचरहिं रघुवीरा ॥
सङ्ग सङ्ग देखत चरित्र सब परम विचित्र अपारा ।
करत प्रणाम मुदित मनहीं मन बहति नयनजलधारा ॥
बालविनोद विलोकत प्रभुको पुरबालक सँगमाहीं ।
संग संग खेलत जस प्रभु रुचि जन जानै कोउ नाहीं ॥
कहुँ कहुँ कागभुशुंड अकेले मेरो संग विहाई ।
धरि लघुरूप काग देखत नित प्रभुचरित्र लरिकाई ॥
उठि प्रभात कछु लैकर भोजन खेलत चारिहु भाई ।
गिरत टूक जो कछु प्रभुकरते काग लेत सो खाई ॥
अति सुन्दर मंदिर अंगनमहँ खेलत चारिहु भाई ।
मंजुल श्यामल गौरकलेवर अंग अंग छवि छाई ॥
नवराजीवकमल कोमलपद नख दुति शशि छविहारी ।

कुलिशध्वजादिक उपटनमांहिमहँ जहँ जहँ प्रभुसञ्चारी॥
मणि मञ्जीर मंजु मनरञ्जन छाइ रहत झनकारी।
कटि किङ्किनि अंगदभुज सोहत मुक्तमाल मनहारी॥
रेखा तीनि उदर मधि राजत जनु विधि जग शुभगाई।
खांचि दियो त्रै बार लीक कहि अस नहिं कतहुँ देखाई॥
चारु चिबुक कलकंठ कंबु सम सुन्दर बाहु विशाला।
शिशुवर वपुष चौतनी शिरपर गोरोचन छवि भाला॥

दोहा—कहति तोतरी वाणि कछु, सुनत मोद पितु मात।
खग निहारि धावत धरणि, कहि मुख वायस जात॥

छंद चौबोला।

बालकेलि रत देखि नाथ को वायस उर भ्रम आयो।
प्राकृत शिशुसम इनकी लीला वेद ईश कस गायो॥
इतना ताके मनमहँ आवत धरनहेत प्रभु धाये।
भज्यो भभरि वायसअंबरउड़ि गुणि हरि कहँ नियराये॥
जहँ जहँ जात परात काग नभ बहुरि बिलोकत पाछे।
द्वै अंगुलको रहत बीच कर भजत वेग करि आछे॥
सात लोक ऊरधके भाग्यो सातहु लोक पताला।
गयो विरञ्चिलोक कहँ वायस हत्यो न भुजा विशाला॥
प्रभुचरित्र जिय जानि बहुरि पुनि अवधपुरी कहँ आयो।
प्रभु बिलोकि वायसको बिहँसे सो द्रुत वदन समायो।
तहँ ब्रह्मांड अनेकन देख्यो पृथक पृथक बहु रचना।
नील निषधआदिकसुमेरुगिरि कहि न जाय सो वचना॥
एक एक ब्रह्मांडन वायस शत शत वर्ष बितायो।
तदपि राम मायाको नेकहुँ उड़ि उड़ि पार न पायो॥
देख्यो विविध भांति जग वायस सुर नर आनहिं आना।
एक न देख्यो आन रूप कहँ दशरथ सुत भगवाना॥

गयो बहुरि अपने आश्रम कहँ नील शैलके शृङ्गा।
यकशतकल्प बैठि ध्यायो हरि तदपि न मनभ्रम भङ्गा॥
सुन्यो श्रवण प्रगटे कोशलपुर राम विकुंठ अधीशा।
देखन बालचरित आयो पुनि जहँ खेलत जगदीशा॥
दोहा—विहँसे तब दशरथ सुवन, कढ्यो बाहिरे काग।
उतै बीतिगे कल्प बहु, इतै दंड युग लाग॥

छंद चौबोला।

यहि विधि करत अनेकन लीला शुभ शीला तनु नीला।
अवध बसीला चरित रसीला नृप वर राम रँगीला॥
यहि विधि बीति गये कछु वासर करत मातु पितु चायन।
राम लषण रिपुदमन भरतकी भई वैस दश हायन॥
शीश चौतनी कानन कुंडल नासा मणि मन मो है।
कठुला कण्ठ विकुण्ठनाथके मुक्तमाल उर सोहै॥
अंगद भुजनि काम रद हद प्रद कञ्चन कटक कलाई।
चौरासी कटि परम प्रकासी लघु धोती छवि छाई॥
मणि मञ्जीर नवल नूपुरपग लघु अँगुली झलकाती।
लघु फेटे कटि कसे कनकमय तोतारिवाणि सोहाती॥
लघु लघु लसत उपानत लघु पद लघु धनुहीं कर माहीं।
लघु सायक लायक शिशु ढालें लघु लघु तूण पिठाहीं॥
लघु ढालें लघु लघु करवालें लघु लघु कर उरमालें।
लघु लघु उरमालें छवि जाल लघु बालें लघु हालें॥
लघु बोलनि लघुचलनि हँसनिलघु लघुचितवनिलघुधावनि।
लघु लघु सखा सङ्गमहँ खेलत नहिं लघु सुख उपजावनि॥
भोरहि मातु उठावति लालन सम्बल कछुक खवाई।
पोछि शरीर ऐंछि कारे कच भूषण पट पहिराई॥
भूपति सभा शृंगारनके हित सिगरे सखन बोलाई।

निजसुत सरिस खवाइ प्याइ जल करि शृँगार सुखदाई ॥

दोहा–भाल विशालहि लालके, दियो दिठौना विंदु ।
मात मदन मनु मानिके, लियो अङ्क करि इंदु ॥
धुँघुवारी अलकैं लटकि, हलकैं अमल कपोल ।
मनहुँ शशांक सशङ्कि शनि, पहिरचो नील निचोल ॥
जलजयुगललर गल उभै, महापदिक मधि भाइ ।
मनहुँ कम्बु गुनि बन्धु विधु, मिलत करन पसराइ ।
कज्जल रेख विशेष चप, कोरन लों छवि देत ।
श्याम जाल मनु रेशमी, फँसे मीन युग सेत ॥

कवित्त ।

छोटीकरवालैंकरछोटीपीठिढालैंढकीछोटीकसीकम्मरदुआलैंमणीजालकी
छोटीउरमालैंमंजुछोटीउरमालैंमुक्तछोटीचारुचौतनीविशालैंदुतिभालकी
पगनपनहियाँसुछोटीमणिआलवालैं हालैंरघुराजजनकरननिहालकी ।
सङ्गसमवैसवालैआवैपितुआलैरामचटपटचालचित्तसालैनृपलालकी ।
कहूंनृपअङ्गनमें खेलैंबालसङ्गनमें कहूंनृपअङ्गनमेंदौरिलपटाते हैं ।
चढ़तेमतङ्गनमें कबहूं तुरङ्गनमें कबहूं सतांगनमें दूरि कढ़िजातेहैं ॥
सौधनि उतङ्गनिअरोहिके उमङ्गनमें मणिनकुरङ्गनविहङ्गनलरातेहैं ।
बालकेलिजङ्गनमें जीतिरसरङ्गनमेंरघुराजचित्तचोपिचङ्गनचढ़ाते हैं ॥

दोहा–अति चञ्चल अति चारु वपु, चित चोखे सुत चार ।
चमत्कार सब गुणनमें, चतुर सुविमल विचार ॥
यहि विधि भाष्यो शंभु मोहिं, अवधनगरते आय ।
थोरे कालहिमें हरी, देहैं शोक नशाय ॥
सुनि विरञ्चिवाणी विबुध, मानि प्रबल विश्वास ।
दशकन्धरकी मानि भय, गे निज निजै निवास ॥

इति सिद्धिश्रीसाम्राज्य महाराजाधिराज श्रीमहाराजा बहादुर श्रीकृष्णचन्द्र कृपापात्राधिकारि श्रीरघुराज सिंह जू देव जी. सी. एस. आई कृते श्रीरामस्वयंवरग्रन्थे बाललीलावर्णननाम षष्ठः प्रबंधः ॥ ६ ॥

दोहा—बसत अवधपुर देत सुख, रघुनंदनयुत भ्रात ।
द्वादश वर्षहिके भये, मुदित करत पितु मात ॥

छन्द चौबोला ।

कोउ न रामसम वेद विज्ञाता त्राता जगसुखदाता ।
अति अवदाता गुणनि विधाता प्रजा सनेह अघाता ॥
चढ़ि तुरङ्ग झमकावत आवत जब कहुँ खेलि शिकारा ।
सखन बन्धुयुत अति छविछावत करत अवधउजियारा ॥
लषण कुमारनके आवन हित जाय उतङ्ग अगारा ॥
खड़े होत पुहुमीपतिनायक लहत अनंद अपारा ॥
जहँते लखत पिता कहँ रघुपति त्यागत तुरतहि याना ।
करत प्रणाम पिताढिग आवत बन्धुनसहित सुजाना ॥
जैसी पितुके उर अभिलाषा तैसे करत अगारी ।
सुखी होत सब प्रजा बन्धुजन सचिव पिता महतारी ॥
बाल जननि ढिग पितु ढिग सेवक स्वामी प्रजनसमीपा ।
सुहृदसखनढिगकविकविजनढिग नृपगणनिकटमहीपा ॥
परम विचक्षण सकल सुलक्षण रक्षण वाणि सदा की ।
लक्षणसहित रहत प्रभुक्षण क्षण छवि अक्षन फलदाकी ॥
यहि विधिनिरखि कुमारनको तहँ मनमोदित नरनाहू ।
कियो विचार सार सब सुखको होइ विवाह उछाहू ॥
तब तुरन्त बोल्यो सुमन्तको ल्याउ वसिष्ठ लेवाई ।
सुहृद सचिव पुर प्रजा वृद्ध जन दीजै सभा लगाई ॥
कछु भाषनकी अभिलाषा उर उपजी अवशि हमारे ।
करिहैं गुरुशासन शिर धरि जो संमत होइं तिहारे ॥

दोहा—सुनत सुमन्त तुरन्त चलि, ल्याये गुरुहि लेवाइ ।
सुहृद सचिव पुरजन सुजन आये सुनत रजाइ ॥

छंद चौबोला ।

वृद्ध वृद्ध सिगरे रघुवंशिन पौर सचिव मतिवाना ।
नृप की सभा मध्य सब बैठे करत विचार विधाना ॥
बंधु पुरोहित सचिव पौर जन प्रभु मुख रहे निहारी ।
कहि न सकत पूछे बिन कोई भै समाज तहँ भारी ॥
सब कहँ देखि भूपमणि बोले सुनहु सकल मम बैना ।
भये कुमार विवाहन लायक उचित झेल अब हैना ॥
ईश कृपा भे कुँवर चारि मम तुम्हरे पुण्य प्रभाऊ ।
अस विचारि अब करत मोर मन करहुँ विवाह उराऊ ॥
जो तुम्हार सबको संमत अस होइ हिये हुलसाये ।
तौ जेहि जहँ जस परै योग लखि बनतो अबहि सुनाये ॥
निज अभिलषित सुनत सिगरे जन बोलि उठे इक बारा ।
राम ब्याह अब करहु भूपमणि दूसर कछु न विचारा ॥
सबको संमत सबको यह सुख सब ऐसहि अभिलाषी ।
राम ब्याह कब लखब नयन इन सत्य कहैं शिव साषी ॥
बांधे मौर चारि भ्रातन को कब देखन दिन होई ।
अस अनन्द महँ जेहि संमत नहिं ताते मंद न कोई ॥
सुनहु भूमि भूषण हत दूषण कह वशिष्ठ मुसकाई ।
जो प्रभु दियो पुत्र तुमको सोइ देहै योग लगाई ॥
इतनेही में द्वारपाल द्वै आतुर आये धाई ।
करि वंदन ते अजनंदन को दीन्हे वचन सुनाई ॥

दोहा—महाराज महिपति मुकुट, जासु महा मुनि ख्याति ।
सोई विश्वामित्र इत, आये बिनहि जमाति ॥

छंद चौबोला ।

बोलि द्वारपालन इमि भाष्यो दीजै द्रुतहि जनाई ।
महाराज के दरशन आसी हम आये इत धाई ॥

तिनके वचन सुनत हम सिगरे खबर जनावन आये ।
आज्ञा होइ महा मुनि आवैं आप दरश ललचाये ॥
द्वारपाल के वचन सुनत नृप उठे समाज समेतू ।
लेन चले मुनि की अगुवाई जिमि विधि कहँ सुरकेतू ॥
महाराज देख्यो चलि आगे मुनि ठाढ़े दरवाजे ।
ज्वलत तेज तप कर व्रत कृश तनु तापस वपुष विराजे ॥
दंड समान प्रणाम कियो नृप मुनि पद पङ्कज माहीं ।
पुनि उठि अर्घ्यपाद्य आचमनहुँ दीन्ह्यो सविधि तहांहीं॥
सचिव पौर सामन्त भृत्य भट लै लै निज निज नामा ।
विश्वामित्र ब्रह्मऋषिके पद कीन्हे दंड प्रणामा ॥
नृप कर पूजन लियो महामुनि सकल शास्त्र अनुसारे ।
विश्वामित्र लगाइ हिये महँ मिले भूमि भरतारे ॥
हर्षि कह्यो कौशिककहिये नृप सब विधि कुशल तिहारी।
सचिवन सहित शत्रु गण शासन मानत हैं हितकारी ॥
मानुष दैव कर्म सब राउर होत यथा विधि पूरे।
सचिव साहनी सुभट सुतन युत सदन अहैं सब रूरे
विश्वामित्र विलोकि वसिष्ठहि करि प्रणाम शिरनाई ।
वामदेव आदिक मुनिजन सों मिले भुजन पसराई ॥

दोहा—कुशल प्रश्न पूछ्यो सबन, अपनी कुशल सुनाय ।
दशरथ के सँग भवन में, किय प्रवेश सुख पाय ॥

छन्द चौबोला ।

कनक सिंहासन आसन के हित विश्वामित्रहि दीना ।
तैसहि गुरु वसिष्ठ कञ्चन के आसन भे आसीन ॥
वामदेव मुनिवरन यथोचित नृप आसन बैठाये ।
सचिव पौर सामन्त महाजन सबही आनँद पाये

सविधि किया पूजन महीश जगदीशै मानि मुनीसै।
अव खीसै परगति तोहिं दीसै मुनि दिय नृपहि अशीसै॥
मुनिपद कञ्जन निज कर कञ्जन दावत दशरथ भाषे।
परम प्रमोदित सुकृत उदोदित सत सेवन अभिलाषे॥
यथा लाभ पुरपन पियूषको सूखत धानहिं पानी।
जिमि समकुल विवाहिता तियमें पुत्र जन्म सुखखानी॥
प्राणहुते प्रिय बहुत कालमहँ यथा मीत पुनि आवै।
महा महोदै जिमि उछाहके अति प्रवाह उपजावै॥
तिमि आगमन रावरो मुनिवर हम सब कहँ सुखदाई।
भले नाथ आये हमरे घर आजु महानिधि पाई॥
कारज करौं कौन मुनि आरज दीजै सपदि रजाई।
तुम सेवनके योग भाग्यवश तुम्हरी भई अवाई॥
धर्मधुरन्धर धरणि धन्य तुम अतिशै कृपा पसारे।
कियोजन्म मम सफल सकुल प्रभु जीवन गाधि कुमारे॥
आजु दरश पाये पदपङ्कज सब फल फल्यो प्रभाता।
प्रथम भये राजर्षि बहुरि ब्रह्मर्षि भये अवदाता॥

दोहा—तरणितुल्य तप तेज तुव, पूजन लायक नित्त।
तुमहिं समर्पण करतहौं, तन मन वाहन वित्त॥
अश्वमेधको फल लह्यो, प्रभु आगम ते आज।
सकलधर्मको फल यही, तुव दरशन कृतकाज॥

सवैया।

राकस भीति दवारि दही बुधि बेलिसी कौशिकके दुख पागी।
धर्मसरोवर सूखत सींचि सहाय नहीं सरिता जल जागी॥
श्रीरघुराज सो श्रीरघुराजकी वाणि महा वरषा ऋतु लागी।
फावि रही तिमि फैलिरही तिमि फूलि रही त्यों फली बडभागी॥

दोहा–विश्वामित्र अनंद लहि, रोमांचित सब गात ।
गजसिंहसों कहत भे, विस्तर बैन विख्यात ॥

कवित्त ।

विदितवसुंधराविभाकरविशुद्धवंशवंदितवसुंधराधिराजनसों सर्वदा ।
सगरदिलीपअंबरीषअंशुमानअज जैसे भये तैसे आप भुवनकेशर्मदा ॥
रघुराज रावरेकोभापिवोअचर्यनाहिं परमप्रतापदेवराजहूकोभर्मदा ।
जाकेहैं वसिष्ठसे हमेश उपदेशवारे ताकेवैनविप्रनके धर्म कर्मवर्मदा ॥

दोहा–जाके हित आयो इतै, सो सुनिये महराज ।
तहि पूरण करि होहु अब, सत्यप्रतिज्ञ दराज ॥

छंद चौबोला ।

करनलगे मख सिद्धाश्रममें हम जेहि काल भुवाला ।
तहँ मारीच सुबाहु निशाचर आये कठिन कराला ॥
जब हम व्रत करि यज्ञ समापत करन चहे द्विजसंगा ।
निशिचर युगल कामरूपी तब करि दीन्हे मख भङ्गा ॥
रुधिर मांस मल हाड पीब कच बरषे वेदीमाहीं ।
यज्ञ विध्वंस किये मम निशिचर तब तजि नेम तहांहीं ॥
निरानंद दुख भार भरे अति त्यागि यज्ञ संभारा ।
जानि नरेश धर्मरक्षक तोहिं आये अवध अगारा ॥
जो अस कहहु नाथ जग जाहिर है राउर तप तेजा ।
निशिचर केतिक बात शाप दै करिये भस्म करेजा ॥
तौ यह यज्ञमाहँ सुन भूपति कोप करब विधि नाहीं ।
यज्ञ व्रती जो करै कोप कछु महा विघ्न है जाहीं ॥
तातें मैं नहिं कियो कोप कछु दुष्टन दियो न शापा ।
करिकै कोपनाशि मखफल सब लहौं बहुरि परितापा ।
तातें अस विचार मन आयो कोप न मन उपजाऊं ।
लै सहाय करिकै उपाय अस क्रतुको विघ्न बचाऊं ॥

सो उपाय अब सुनहु महीपति जेहि मख रक्षण होई ।
गयो आजुलों और द्वार नहिं है न सहायक कोई ॥
यदपि होत अनरस अस माँगत वचन कठिन कस कहिये।
तदपि धर्म मर्याद सोचि मन मौन कौन विधि रहिये ॥
दोहा—और उपाय देखाय नहिं, मखरक्षन के हेतु ।
कठिन वस्तु माँगन परचो, सुनु दिनकर कुलकेतु ॥

कवित्त ।

नीरदवरणवारोपङ्कजनयनवारो भ्रुकुटीविशालवारोलम्बभुजवारोहै ।
पीतपटकटिवारोमन्दमुसुकानवारो शूरसरदारोरणकबहूं न हारो है ॥
रघुराजरावरेकोरोजरोजप्राणप्यारोजालिमजुलुफवारोकोशिलादुलारोहै
माँगनोहमारोहोयमेरोमखरखवारोरामनामवारोजेठोतनयातिहारोहै ॥
दोहा—मेरे तप के तेज ते, रक्षित राजकुमार ।
ह्वै है समरथ सकल विधि,करि निशिचर संहार ॥

छन्द चौबोला ।

विविध रूप करिहैं हम साति साति राम कुवँर कल्याना ।
तीनिहुँ लोकन में तिहरो सुत पै है सुयश महाना ॥
नहिं रघुपति सनमुख द्वउ निशिचर खड़े होन के योगू।
राम छोड़ि अस कोउ नहिं तिनकर करै जो प्राण वियोगू॥
महाबली तिमि अति अभीत शठ कालपाश वश दोऊ ।
नाहिं बचिहैं रिपु राम समर महँ अस भाषत सब कोऊ ॥
सुत सनेह संदेह करौ जनि यदपि राम अति प्यारे ।
जानो यही सत्य नरनायक गये निशाचर मारे ॥
जैसे राम जौन जस विक्रम सो सिगरौ हम जानैं ।
जानत हैं वसिष्ठ औरौ मुनि जे नितहीं तप ठानैं ॥
धर्मलाभ जगती महँ थिर जस जो चारहु जगतीसा ।

तौ रामहिं अब देहु भूपमणि दुतिय विचार न दीसा ॥
जो वसिष्ठ आदिक मंत्री तुव देहिं सलाह विचारी ।
तौ मर रघुनन्दन को देहु पठाय सुखारी ॥
जेठो तनय तुम्हार प्राणप्रिय यदपि देत कठिनाई ।
विप्र काज लगि विन विलम्ब नृप दीजै तदपि पठाई॥
दश दिन ते नहिं अधिक लगी दिन करत यज्ञ रखवारी ।
जाते यह मख काल टरै नहिं सोई करहु विचारी ॥
अस कहि वचन धर्म युत मुनिवर मौन भये तेहि काला ।
मुनिनायक के वचन सुनत नरनायक भयो विहाला ॥

दोहा—सींच्यो राम सनेह जल, नृप मन तरु सुकुमार ।
तापर गाधि सुवन गिरा, गिरी गाज यक बार ॥

कवित्त ।

कोमलकमलपैतुषारकोतोपाउजैसेनवलतिकापैज्योंदमारिदीहज्वालहै ।
जैसे गजराजपैगराजमृगराजकेरी पुनिग्रहराजपैज्योंसिंहिकाकोलालहै ।
भनै रघुराजरघुराजकोविरहजानि मुखपियरायगयोकोशलभुआलहै ।
परम कशालापायह्वैगयोविहालाअतिगिरिगोसिंहासनतेभूमिभूमिपालहै।

दोहा—विकलविलोकत नृपति मणि, परिचर अतिअकुलाइ।
सुमन विजन हांकन लगे, सुरभित जल छिरकाइ ॥
उठ्यो दंड द्वै महँ नृपति, लीन्ह्यों श्वास अघाय ।
मन्द मन्द बोलत भयो, कौशिकपद शिरनाय ॥

कवित्त ।

बूढ़ेभयेज्ञानीभयेतपसीविख्यातभय, राजऋषिहूतेब्रह्मऋषितुमह्वैगये ॥
विमलविरागीभयेजगतकेत्यागीभये, विश्वबड़भागीभयेविषयउरनावये।
भनैरघुराजभगवानभक्तिवान भये, महाधर्मवानसत्यवानजगज्वैगये ॥
क्षमामेंअछेहक्षमामानभयेकाहेमुनि, मेरेछोटेछोहरा पैदयावाननाभये ॥

षोड़शहूवर्षकोनपूरोभयोमेरोसुन दूधमुखमूधनहिंसीखोशास्त्रकलाको ।
वीरतानपूरीत्योहीधीरतानपूरीदूरीबुद्धिकीगंभीरतावखानेंअस्त्रवलाको ।
भनैरघुराजवलविक्रमविचारिकैनमाँग्योमुनिएकजौनजीवनकोशलाको ।
देशकोपदेहौंसैनसाहिवीकोदेहौंधनप्राणहूंकोदेहौंपैनदेहौंरामललाको ।
विचरत विपिन विलोकि वृक, हहरत हिय सुकुमार ।
ते किमि रजनीचर समर, करि हैं लखि विकरार ॥

कवित्त।

चौथेपनपायोपुत्रचारिरावरेकीकृपा, माँगोमुनिराजनहिंवचनविचारिकै॥
संवेसवकशिदेहुंहियमेंउछाहछाइ, वनतनदेतसुकुमारतानिहारिकै ॥
भनैरघुराजनेहसवपैसमानमेरो, तदपिजियोंगोकैसेरामकोनिकारिकै ।
तुमहिंकहोजूकहूंशावकमरालनके, करतमतङ्गनसोंसमरहँकारिकै ॥
दोहा—तुमहिं दिहे कछु हानि नहिं, सवविधि सुतन सुपास ।
सुनि कानन कानन गमन, मैं किमि रहौं अवास ॥

छंद चौबोला।

यह सुन्दर साहनी सजी मम रिपु दाहनी विशाला ।
तेहि लै रक्षण मैं करिहौं हति रक्षस कठिन कराला ॥
महाविक्रमी शूर सकल मम निपुण समर सरदारे ।
ते मारिहैं निशाचर के गण नहिं माँगहु मम वारे ॥
ना तो नाथ हमीं संग चलिहैं लै कर में धनु बाणा ।
रजनिचरण रण करि संहरिहैं जौं लगि तनु में प्राणा ॥
विघ्न रहित पूरण मख होई करिये कछु न खँभारे ।
अति साँकर तुव शासन साधन नहिं माँगहु मम वारे॥
नहिं जानत कछु वाल वलावल अस्त्र शस्त्र नहिं ज्ञाता।
सङ्गर दाँउ पेंच सीखे नहिं किमि करिहैं रिपुघाता ॥
निशिचर महा वली छलकारी मायावी उतपाती ।

होई भले पै रघुवर बिछुरन निमिषहु नहिं सहिजाती ॥
सत्य सत्य जानहु मुनिनायक कहौं न कछु कदराई ।
जेठो कुँवर प्राणजीवन मम जीहौं नहिं बिलगाई ॥
जो रामहिं लै जान चहौ हठि तौ चतुरङ्ग समेतू ।
मैं चलिहौं मखरक्षन के हित यह मम जीवन नेतू ॥
साठि हजार वर्ष वीते मोहिं तब पायो सुत चारी ।
सह्यों महादुख सन्तति के हित किमि सुत देहुँ निकारी ॥
यद्यपि चारि सुवन सेवक तुव मोर सनेह अथाहू ।
तदपि जेठ पर प्रीति रीति अति नहिं रामहिं लै जाहू ॥

दोहा—कहहु नाथ राक्षसन को, बल विक्रम केहि भाँति ।
काके सुत कैसे वपुष, कैसी शत्रु जमाति ॥
कैसे करिहैं रामरण, रजनीचर के सङ्ग ।
मखरक्षण की कौन विधि, जेहि व्रत होइ न भङ्ग ॥
मोहिं काह अब उचित है, कौशिक देहु निदेश ।
दानव मानव भषत हैं, कपटी क्रूर हमेश ॥
मैं केहि विधि रिपु जीतिहौं, कहौं सकल समुझाइ ।
बली भयंकर रजनिचर, करत युद्ध छल छाइ ॥
सुनि दशरथ के वचन मृदु, कौशिक मुनि मुसकान ।
करन लगे विस्तर कछुक, राक्षस वंश बखान ॥

छन्द हरिगीतिका ।

पौलस्त्य वंश प्रसिद्ध जग जेहि भयो राक्षस राज है ।
जेहि नाम रावण लोक रावण सुहित असुर समाज है ॥
सो पाय प्रबल विरञ्चि वर त्रैलोक बाधत भूरि है ।
जेहि चलति चारि दिशा चमू रविभास छावति धूरि है ॥
सो महाबल है महा विक्रम लंक नगर निवास है ।

भ्राता धनद विश्रवाको सुन सुन्यो अस इतिहास है ॥
जेहि पाय परमग्रताप सुरपुर पग्न रोज परावने ।
भ्रुकुटी निहारत लोकपति नहि युगल वीर भयावने ॥
मारीच और सुबाहु दशमुख पाय शासन सान सों ।
मख विघ्न करत विशेष जग में वीरता अभिमान सों ॥
अस सुनत मुनि के वचन भूपति कह्यो पद शिर नायकै।
ऋषि करत रावण समर हम असमर्थ हैं तहँ जाय कै॥
अब होहु मेरे सुतन पै कौशिक प्रसन्न कृपा भरे ।
मोहि जानि दीन दया करौ सेवक अहैं हम रावरे ॥
गन्धर्व चारण यक्ष पन्नग देव दानव व्रात हैं ।
हठि तजत रण रावण निरखि तहँ मनुज केतिक बात हैं॥
अति बलिन को बल समर में दशकंठ नाशत क्षनहिं में।
ताके लरन को देहु शिशु यह बात राखहु मनहिं में॥
लै सङ्ग मुनि चतुरङ्ग यद्यपि जाहुँ सुतन समेतहू ।
तद्यपि न रावण सकौं जीति सहाय नाक निकेतहू ॥

दोहा—अमर सरिस सुंदर सुछवि, तापर अति गभुवार ।
नहिं जानत रण विधि कछू, नहिं देहौं निज वार ॥
सुवन सुंद उपसुंद के, सङ्गर काल समान ।
भले करहिं मख विघ्न नहिं, देहौं पुत्र अयान ॥
जने यक्ष कन्या उदर, खल मारीच सुबाहु ।
रण पंडित खंडित दुवन, मंडित समर उछाहु ॥
सीखे शस्त्र कला सकल, दायक दैत्य अनंद ।
सनमुख सुरभी सिंह के, पठवावहु कुलचंद ॥
लगत कातरी अस कहत, होतो शासन भङ्ग ।
ताते द्वै में एक सों, मैं हठि करिहौं जङ्ग ॥

कही दीनता यदपि वहु, शंक सकोच सुजान ।
नर नायक के वचन सुनि, मुनिनायक अनखान ॥
हव्य वाट जिमि होम की, ज्वालामाल विशाल ।
लहि आहुति लपटै कढ़ैं, तिमि मुनि कोप कराल ॥
विनय रीति विसराय सव, लखि वसिष्ठ की ओर ।
बोले विश्वामित्र तव, कीन्हें अमरष घोर ॥

कवित्त ।

प्रथमप्रतिज्ञाकरीशासनकरहुँगोसव सुतके सनेह वश कसविसराइये ।
यहविपरीतरघुवंशिनउचितनाहिंआजुलौंनऐसीभानुवंशिनसेपाइये ॥
भनैरघुराजजोकल्याणहोइरावरेको तौतोहमआयेजसतैसेफिरिजाइये ।
मिथ्यावादीह्वैकेभूपभोगभोगियेअनूपवंधुनसमेतसुखसम्पतिकमाइये ॥
कहतसकोपविश्वामित्रकेवचनऐसे डोलिउठी धरा धराधरनसमेत हैं ।
भागेदिगकुञ्जरदहनलगीदशोदिशा देवतापरानेतजिनाककेनिकेतहैं ॥
भनै रघुराज वारवारिधसुवेलनको ह्वैगयेअनेक जल जंतुहू अचेतहैं ।
हायहायमाच्योविश्वधायधायभाषैंसुरकालविनुकाहेप्रभुवाँधैंप्रलैनेतहैं ॥

दोहा—व्याकुल विश्व विलोकि सव, मुनि वसिष्ठ मतिधीर ।
दशरथ सों बोले वचन, हरन हेत जग पीर ॥

छन्द चौबोला ।

सुनु इक्ष्वाकु वंश पङ्कज रवि द्वितिय धर्म अवतारा ।
सुयशमान श्रीमान करहु नाहिं सत्य धर्म संहारा ॥
धर्म धुरंधर त्रिभुवन जाहिर धरमात्मा अवधेशा ।
सत्य धर्म को धरहु धरापति ताजि अधर्म दुख वेशा ॥
कौशिक सों पूरव प्रण कीन्ह्यो जो कछु शासन होई ।
सो करिहौं मैं अवशि गाधिसुत नाहिं संशय अब कोई ॥
प्रण करिकै झूठो करि डारत सकल धर्म तेहि केरो ।
जात रसातल तनु ते तुरतहिं वेद पुराण निवेरो ॥

तातें विदा करहु कौशिक सँग रामहिं मोह विहाई ।
करहु न कछु भय भूमिनाथ अब राखहु धर्म सदाई ॥
जानहिं बाणहिं जानहिं सिगरे अस्त्र शस्त्र रघुराई ।
कौशिकते रक्षित रघुनन्दन का करिहैं अरि आई ॥
ज्यों पियूष पावकते रक्षित सक्यो न हरि अरि कोई ।
तिमि तुव सुत कौशिक ते रक्षित भगिहैं रिपुरण जोई ॥
भूप धर्म विग्रह कौशिक मुनि बलिनहुँ माहिं बलीना ।
अस नहिं विद्यावान जगतमहँ महाकठिन तप लीना ॥
अस्त्र शस्त्र जानत जस कौशिक कोउ न चराचर तैसो ।
इन सम कोउ नहिं यहू कालमहँ नहिं जनिहै पुनि ऐसो ॥
देव सिद्ध मुनि असुर राक्षसहु यक्ष प्रवर गंधर्वा ।
किन्नर चारण सहित महोरग इन सम जग नहिं सर्वा ॥

दोहा—पुरा प्रजापति एक रह, जासु कृशाश्वहि नाम ।
अस्त्र शस्त्र सब देत भो, सो कौशिकहि ललाम ॥
दिव्य शस्त्र अरु अस्त्र सब, अहैं कृशाश्व किशोर ।
अङ्ग उपनिषद् रहस युत, शिवसों लियो निहोर ॥
रह्यो चक्रवर्ती नृपति, विश्वामित्र महान ।
कियो राज शासन पुरा, जाहिर भयो जहान ॥
ते सब पुत्र कृशाश्वके, धार्मिक रहे सुनाम ।
दक्षसुता युगते रहीं, जया सुप्रभा नाम ॥
यक यक कन्या प्रगट किय, पुत्र पचास पचास ।
जयकारी द्युतिमान अति, रूप अनेक विकास ॥
सत संख्यक दिव्यास्त्र सब, प्रगटे भूरि विभास ।
कामरूप वरिबंड अति, जिन किय असुर विनास ॥
जन्यो सुप्रभा जे सुवन, ते तिनके संहार ।

सब अमोघ दुर्धर्ष ते, जानत गाधिकुमार ॥
विश्वामित्र चहैं जो नृप, विरचैं अस्त्र नवीन ।
ऐसो समरथ धर्मवित, मुनि सर्वज्ञ प्रवीन ॥
त्रिकालज्ञ यह गाधिसुत, कछु नहिं जो नहिं जान ॥
तिनके सँग रघुपति गमन, नृप संशय जनि मान ॥
यदपि निशाचर हननमें, समरथ गाधिकुमार ।
तव सुत के हित हेतु हठि, याचत जानि उदार ॥

सवैया ।

ऐसी सुनी वर वानी वसिष्ठकी भूपतिके मन आनँदआयो ।
कौशिकके सँग में सुतको गुन्यो गौन सुमंगल भौन सोहायो ॥
श्रीरघुराजको शोक मिट्यो रघुनंदन देन हियो हुलसायो ।
फेरि महीप विचारि मनै वन एक को गौनन योगजनायो ॥

इति सिद्धि श्रीसाम्राज्य महाराजाधिराज श्रीमहाराजा बहादुर श्रीकृष्णचन्द्र कृपापात्राधिकारि श्रीरघुराजसिंहजू देव जी. सी. एस.आई. कृते रामस्वयम्बर-ग्रन्थे विश्वामित्रगमन वर्णनं नाम सप्तमः प्रबंधः ॥ ७ ॥

दोहा—यदपि गाधिसुत सङ्गमें, नहिं दुख पैहैं राम ।
लषण गमन सँग उचित हैं, मारग सेवन काम ॥

छन्द चौबोला ।

अस विचारि मनमहँ धरणीपति तुरत सुमन्त बोलायो ।
गद्गद गर अतिशय धीरज धरि मंजुल वचन सुनायो ॥
जाहु सुमन्त राजमंदिर महँ लै आवहु इत रामैं ।
लै आइयो लषणहूं को इत जो उनके सँग आमैं ॥
सुनत सुमन्त नाथ वन्दन करि रघुनन्दन ढिग आयो ।
चलहु राम अभिराम जनक ढिग भूपति तुमहिं बोलायो ॥
सुनि पितु शासन गुणि दुखनाशन उठि आसनते आसू ।

गहे लषण कर कमल जगतपति चले पिताके पासू ॥
रामहिं लषण सहित आवत लखि दुखी सुखी समराजा ।
कियो जनक वन्दन रघुनन्दन उठी तुरन्त समाजा ॥
भूपति दै अशीस अपने ढिग बैठायो रघुनाथै ।
विश्वामित्र वसिष्ठ कमलपद धरयो राम निज माथै ॥
तैसहिं लषण वन्दि मुनि पितु पद बैठे रघुपति पासा ।
रघुपति वदन विलोकि गाधिसुत पायो परम हुलासा ॥
राम जाहु कौशिक मुनि के सँग कहत न नृप मुख बानी ।
राज समाज जकीसी ह्वै गै मनमहँ परम गलानी ॥
अवसर जानि वसिष्ठ कह्यो तहँ सुनहु राम मम प्यारे
आइ परयो इक द्विज कारज अब बनतो गये तिहारे ॥
कौशिक मुनि मख रक्षणके हित चहत पठावन राजा ।
मुनि प्रताप ते काज सिद्धि सब तुमको सुयश दराजा ॥

दोहा—मातु पिता गुरु सदन ते, तिहरो अधिक सुपास ।
तुम क्षत्रिय रघुकुल धनी, कीजै वैर विनास ॥

छंद चौबोला ।

सुनि वसिष्ठके वचन धीरधरि धरणीपति पुनिभाष्यो ।
विप्र काज लगि आजु देहुँ मैं नहिं सरवस कछु राष्यो ॥
धर्म धरा सुरहित क्षत्रिनके लागत तन धन धामा ।
ते क्षत्री त्रिभुवनमहँ पूजित होत सिद्धि सब कामा ॥
सुनहु प्राणप्रिय राम आजुते जबलगि मुनि सँग रहियो ।
मातु पिता गुरु भाव गाधिसुत महँ सब विधिते गहियो ॥
जननि जनकते अधिक गाधिसुत करिहैं संच तिहारो ।
कौशिकशासन सकलशीशधरि सिगरो काज सिधारो ॥
अस कहि सजल नयन गद्गद गर भूपति भये दुखारी ।

उठि तुरंत कर जोरि सुखी सुठि रघुवर गिरा उचारी ॥
विप्रकाज लगि पुनि पितुशासन गुरु निदेश पुनि भायो।
मोते कौन धन्य धरणीमहँ सकल सुकृत फल पायो ॥
जाउँ मातु पद वंदन करिकै गुरु पितु पद शिरनाई।
विश्वामित्र सङ्ग जैहौं हठि करिहौं सब सेवकाई ॥
अस कहि उठे लोक लोचन फल जननी सदन सिधारे।
तब पितुपद प्रणाम करि लछिमन हर्षित वचन उचारे ॥
रघुपति सङ्ग विप्र कारज लगि मोरेहु गमन उराऊ।
देहु निदेश नाथ निहशङ्कित यहिमें मोर बनाऊ ॥
भूपति कह्यो उचित अस तुमको जाहु राम हित लागी।
सावधान रहियो निशि वासर ज्येठ बंधु अनुरागी ॥

दोहा—लषण मनहुँ सर्वस लहे, चले रामके संग।
जननी सदन सिधारिकै, भाषे भरे उमंग ॥
आयो विश्वामित्र मुनि, नृपसों मध्य समाज।
माँग्योरघुपतिको हुलसि, मखरक्षणके काज ॥
महि सुरकाज विचारि कै, पिता राम को दीन ॥
होंहूं सङ्ग सिधारतो, रहौं न राम विहीन ॥
जननी शंक न कीजिये, सादर देहु रजाय।
दश दिनमें द्विज काज करि, ऐहौं इत अतुराय॥

कवित्त।

सुनतठगीसीरहीमातुनहिंवाणीकही महादुखसानीसहीसोचनसमातहै।
सुरतसँभारिनैनपरतअमितवारि बोलीहैपुकारिकौशिलाजूऐसीबातहै ॥
भनैरघुराजमेरोजीवनअधार सुकुमारहैकुमार न विदेशरीति ज्ञातहै।
भूपैकिधौंलाग्योभूतरोक्योंह्वैनमजबूतहायमेरोपूतअवधूतलीन्हेंजातहै ॥
ह्वैगईसमाजकेसीलागतअनैसीऐसी जैसीहोतआजऐसीकहूंनादेखातहै।

अहैंसबकोऊशूरसचिवसुहृदवोऊ वरजैं न सोऊदोऊमुनिकावतातहैं ॥
भनै रघुराज सूधदूधमुखमेरोलालजानैनाभुआलयहकालकरामातहैं ।
करिकौनकरतूतमुनिकोलग्योधौंभूतदेखोमेरोपूतअवधूतलीन्हेजातहैं ॥
सोरठा—सुनि कौशिला प्रलाप,आई सब रानी तहां ।
लागीं करन विलाप,राम गमन काको रुचत ॥
जननी विकल विचारि, रघुनन्दन बोले वचन ।
तोको शपथ हमारि, करै खेद जो नेकु मन ॥

छंद चौबोला ।

द्विज कारज लगि क्षत्रिनको तन गाधिसुवन सेवकाई ।
गुरु अनुमत पुनि पितु निदेश शिर तामें मोर भलाई ॥
क्षत्री कुलमहँ जन्म विप्र दुख कानन सुनि नहिं जातो ।
सो अति अधम तासु यह अपयश जननी जग न समातो ॥
गुरु पितु अरु तुव पद प्रतापते मोर सिद्ध सब काजा ।
जो अनुचित कछु जानत तौ कस जान देत महराजा ॥
ताते अब नहिं कछु शङ्का करु मङ्गल करु महतारी ।
रञ्चक नहिं विसंच कौशिक सँग जात लषण सहकारी ॥
सुनत सुवनके वचन कौशिला धरि धीरज उर भारी ।
बोली वचन सूँघि सुतको शिर जैसी खुशी तिहारी ॥
अस कहि मंगल द्रव्य साजि सब दधि दूर्वा धरि थारी ।
गौरि गणेश पुजाय पूतकर मंगल वचन उचारी ॥
रक्षहिं नारायण सब थलमहँ सहित विरञ्चि पुरारी ।
सकल देव दाहिने दशोदिशि रहैं शोक भयहारी ॥
रंगनाथ को हौं सुत सौंपति इष्टदेव भगवाना ।
मो गरीबिनीके दोउ बालक रक्षैं कृपानिधाना ॥
अस कहि सावित्री तियके शिर धरि धरि कलश सदीपा।

पढ़ि स्वस्त्ययन दही टिकुली दै कह्यो जाहु कुलदीपा॥
जननीपद पङ्कज प्रणाम करि हर्षि चले दोउ भाई ।
लौटीं सकल मातु मंगल पढ़ि द्वारदेश पहुँचाई ॥

दोहा—बोलि भरत अरु रिपुदमन, कह्यो राम समुझाइ ।
तुम्हैं मोरि पदकी शपथ, किह्यो मातु सेवकाइ ॥

छन्द चौबोला ।

जो जननी जनत्यों अधार कछु जात्यों तुम्हैं न छोड़ी।
दिवस दशकमहँ करि द्विज कारज ऐहौं आनँद बोड़ी ॥
सुनि पद शपथ भरत रिपुसूदन विमनस कहत न बानी।
प्रभु पद पङ्कज परशि पाणि पङ्कज ते हिये गलानी ॥
बार बार उर लाइ राम भरतहि शिर सूँघि सुखारी ।
विदा कियो तैसहि रिपुहनको बोधन वचन उचारी ॥
गये पिता दरबार बंधु दोउ दीनबंधु बलरासी ।
उठी समाज सकल रघुराज विलोकत अवध विलासी ॥
शीश किरीट कान कुण्डल छवि कर कोदंड विराजै ।
कटि निषंग करवाल बाण कर पीत वसन छवि छाजै ॥
महाराजको करि प्रणाम तहँ राम लषण दोउ भाई ।
गुरु वसिष्ठ के पदवन्दन करि सब बृद्धन शिरनाई ॥
कौशिक संग गमन कानन कहँ मखरक्षन के हेतू ।
पूषण कुल भूषण हत दूषण रूषन चित धृत सेतू ॥
माँगी विदा पितासों रघुपति मख रक्षण उतसाही ।
उठि तुरन्त दशरथ भुआल मणि गहि पुत्रन की बाही ॥
सौंप्यो गाधिसुवन कर अस कहि तुम इनके पितु माता।
कहो विधाता मुनि गुरु भ्राता सुखदाता दोउ त्राता ॥
अस कहि धरा धान्य धन बहु विधि पुत्रन दान कराई ।

पढ़नलगे स्वस्त्ययन भूपमाण सब संदेह विहाई ॥

दोहा–विजयमंत्र पढ़ि सहित विधि, अभिमंत्रित करि अंग ।
मंगल लागे पढ़न पुनि, गुरु वसिष्ठ दुखभंग ॥

छंद चौबोला ।

कुशिकतनय पुनि दशरथनृपको दीन्हे आशिरवादा ।
तुमहीं विन को राखै मेरी सकल धर्म मर्य्यादा ॥
शीश सूंघि दशरथ पुत्रनको फेरि पीठिमें पानी ।
दियो कुमारन कुशिकतनयको जे मंगल अनुमानी ॥
राम लषणको आगे करिकै विश्वामित्र सिधारे ।
चले कछुक भूपति पहुँचावन सहित वसिष्ठ उदारे ॥
आगे राम लषण पुनि कौशिक गुरु वसिष्ठ महराजा ।
राम लषण दशरथ आसीसब सोहति राजसमाजा ॥
द्वार देशलों जाय गाधिसुत बोले मंजुल वानी ।
सीखदेहु तौ अब हम गमनहिं बसहु अवध सुख खानी ॥
भूपति चरण पकरि पुनि पुनि कह ये तुम्हरे दोउ वारे ।
इनको सौंपत सकल भांतिसों मुनिवर हाथ तिहारे ॥
राम लषण पुनि गुरु वसिष्ठ कहँ कीन्ह्यो दंड प्रणामा ।
आशिर्वाद दियो मुनि हर्षित होहिं सिद्ध सब कामा ॥
पुनि नरेश रघुनाथ लषणको शीश सूंघि उर लाई ।
विदा कियो पढ़ि मंगल मंत्रन दुख सुख आंसु बहाई ॥
फैलि गई सुधि सकल अवधपुर धाये सब पुरवासी ।
मुनि भय वश कछु वचन कहत नहिं सङ्ग गमनकेआसी ॥
राम तिन्हैं समुझाइ कह्यो बहु ऐहौं दशदिनमाहीं ।
धरहु धीर नेसुक प्रिय पुरजन मुनि सँगमें भय नाहीं ॥

दोहा–राम लषण लै मुनि चले, धन्य जन्म निज मानि ।

शीतल मंद समीर तहँ, बहन लग्यो सुखखानि ॥

छंद चौबोला।

जगत प्रसन्न भयो तेहि अवसर देव महासुख माने ।
दै दुंदुभी धुकार गगनमहँ वरषैं फूल अमाने ॥
रञ्चक रजनहिं गगनपंथमहँ अतिनिर्मल दश आशा।
वदहिं परस्पर देव दुखी सब भयो अवशि दुख नाशा ॥
चढ़ि विमान जब गगनपंथमहँ देवन दियो नगारे ।
सो सुनि अवध शंख सहनाई बाजन लगे अपारे ॥
सगुण होत अति सुखद दशो दिशि विप्र करत जै कारा ।
फरकत दक्षिण नयन बाहु भ्रुव चित उत्साह अपारा ॥
सावित्री द्विज नारि कलश शिर लै शिशु सन्मुख आवैं ।
बछरा प्यावत मिलैं धेनु ढिग मृगगण दक्षिण धावैं ॥
क्षेमकरी ऊपर थहराती मिलहिँ पढ़त द्विज वेदा ।
दधि तंदुल कहुँ मिलहिं मीनपथ बारवधू विन खेदा ॥
बोलहिं विविध विहङ्ग सोहावन लोवा दरशन देती ।
अग्निहोत्र पावक ज्वाला माला हवि बढि बढ़ि लेती ॥
नीलकण्ठ उड़ि बैठत तरुपर हंसावली उड़ाती ।
आवत सन्मुख सजे वाजि गज पीठि पवन रिपुघाती ॥
आगे विश्वामित्र चले तहँ पाछे राम सुजाना ।
लषण चले तिनके पाछे पुनि लिहे शरासन बाना ॥
जहँ जहँ जात राम लछिमन मुनि तहँ तहँ अम्बर माहीं ।
मन्द मन्द मृदु बिंदु वरषि घन करत पन्थमहँ छाहीं ॥

दोहा—अति सुकुमार कुमार दोउ, मुनिमुख निरखत जात ।
करत पान पीयूष छवि, तदपि न नेकु अघात ॥

कवित्त ।

भानुसेकिरीटवारेकुंडलझलकवारे कुंचितअलकवारेगोर[illegible]कारे हैं ।

मन्दमुसकानवारेनकुंनैनअरुणारे कटिमेंनिषङ्गकरबालनकोधारे हैं ॥
बामकरचापवारेदाहिनेसुधारेशर पीतपटवारेतीनों लोक रखवारे हैं ।
भनैरघुराजमुनिसङ्गमेंसिधारेदोऊ काकपक्षवारेदशरत्थके दुलारे हैं ॥
हाथनमेंसोहतेदस्तानेगोधचर्मनके कठिनकरालकरवालकटिकालसी ।
लोचनविशालहियेलालनकीमालपीठसोहैढकोढालमूर्तिकोटिरतिपालसी
भनैरघुराजरघुराजवंशपालमुख उदैउड़पालहारावलीउड़जालसी ।
आगेमुनिपालपुनिसोहैंरघुलालत्योंलषणलालपीछेशोभासांचीतीन्यालसी ।

छन्द गीतिका ।

ग्रामीण निरखत कुँवर दोउ मुनि सङ्ग विपिन सिधारहीं।
सुकुमार अति सुकुमार काके मदन मदहि उतारहीं ॥
नर नारि जुरि जुरि ते परस्पर विविध वचन उचारहीं।
कानन कठिन कोमल चरण कोउ सुजन कसन नेवारहीं॥
भल जननि जनक दया विहीन पठाय दीन सुकानने ।
अवधूत यह निर्दय अकूत न बारिजहूपर मानने ॥
कोउ कहत पुनि कारण कवन मुनिसङ्ग बालक आनने ।
हमको लगत अनुचित अमित नाहिं हेतु कछु पहिचानने॥
कोमल वदन नहिं घोर आतप चलत पथ कुम्भिलात हैं।
श्रमबिंदु वदन विराजते मनु ओसकण जलजात हैं ॥
कोउ कहत क्षत्री कुँवर दोउ संग्राम हेत जनात हैं ।
करि अमित छल उपजाय भ्रम मुनि माँगि लीन्हें जात है॥
कोउ आय पूछहिंनिकट चलि बालकयुगल मुनि कौनके।
केहि हेतु तुम लै जाउ कहँ कस भये प्रिय नाहिं भौनके ॥
कौशिक कहत दोउ तनय मेरे रहैं सँग पुनि कौनके ।
जिमि तुम सुतन निज चहहु जहँ लै जाहु कारज कौनके॥
लखि ग्रामनीतिय युगल जोड़ी कहहिं वचन विचारिकै।

यह मुनि कठिन अतिशै निठुर नहिं द्रवत कुँवर निहारिकै ॥
कोउ कहहिं हमरे ग्राममहँ मुनि बसहिं कहहु सुधारिकै ।
कोउ कहहिं जो नहिं बसहिं तौ अब जाहिं धूपनेवारिकै ॥
कोउ सलिल शीतल ल्याय भाषहिं कुँवर कछुक पियाइये ।
कोउ ल्याय भोजन विविध व्यञ्जन कहहिं नेकु खवाइये ॥
कोउ नारि नर निज भवनद्वारहि कहहिं मग इत आइये ।
कोउ कहहिं कौशिक करहु करुणा इतहि रजनि विताइये ॥
दोउ राज कुँवरन लखन हित नर नारि सङ्ग सिधारहीं ।
कोउ निकट चलि पूछहिं भवन कहँ कौन हेत पधारहीं ॥
रघुपति कहत हँसि मुनिजनक मम औरकछु न विचारहीं ।
जहँ जात मुनि तहँ जात हम सेवा धरम निरधारहीं ॥
जिन चरण पुहपन पाँखुरी चाहति गड़नि अति कोमले ।
ते कठिन कङ्कर सहत किमि पठये जनक जननी भले ॥
कोउ कहत क्षत्री जाति राजकुमार हैं सँग निर्मले ।
नहिं गनत परहितहेत निज दुख वंशके अति उज्ज्वले ॥
कोउ कहति सखि तैं जा दिठौना विंदु दीजै भालमें ।
जामें न टोना लगै दोहुँन उचित है यहि कालमें ॥
कोउ कहत गमनत पीर ह्वै है चरण वरण प्रवालमें ।
मैं जाहुँ नेसुक दावि आऊं चलत चाल मरालमें ॥
जुरि जुरि कहहिं नर नारि अस छवि आजलों देखी नहीं ।
नर नाग सुर गन्धर्व सर्व अखर्व यद्यपि हैं सहीं ॥
कोउ कहहिं सुंदरतासमेत रच्यो विराञ्चि उमाहहीं ।
सुनियत मदन की परम छवि सो सत्य इनकी छाहहीं ॥

दोहा—दोउ घन तन समता चहत, शरदवर्ण सित श्याम ।
चढ़े गगन हिय हारि पुनि, उड़त रहत वसुयाम ॥

कवित्त

वीररस रङ्गवारे जुरजङ्ग जैतवारे नैन अरुणारे बाण धनुपानि धारेहैं ।
मूरतिपै कोटिमैनवारेखङ्ग तूणवारे वदनप्रकाश दशादिशानि पसारेहैं ॥
भनैरघुराजदोऊविश्वामित्रसङ्गवारे मुनिमखरक्षणके हेतु पगुधारे हैं ।
कीटयकतूणयककरशरनाकर्तीजे मानोतीनिफनकभुजंगभयकारे हैं ॥
पङ्कजपगनिविश्वामित्रसंगपंथडोलैं आपतौअक्षुद्रक्षुद्ररक्षकुलघाती हैं ।
करशरसहितशरासनकृपाणतूण चमकैं अनेकरङ्गभूषणकीजाती हैं ॥
भनैरघुराजमुनिपाछेपाछेआछेलसैं काछेकटिकाछनानसङ्गमजमातीहैं
मानोकरतारविश्वव्याधिकेनिवारनकोलीन्ह्योसङ्गअश्विनीकुमारछविमातीहैं
भाषैमुखएकरामलषणकीशोभाकौन शेषशिवशारदाउचारिहियहारेहैं ।
मोहतमनुजमन मंडितकरतमहि मन्दमन्दमगमेंगयन्दगतिवारेहैं ॥
भनैरघुराज विश्वभूषणविराजैं दोउ धर्मके धुरन्धरधरामें धाक धारेहैं ।
कोमलकमलहूतेकाठेनकुलिशहूतेमानोशांतभानुभानुकाननपधारे हैं ॥

सवैया ।

मुनिसंग चले रघुनन्दन सोहत निन्दत मैन अनंदित रूप है ।
दोउ अनंदित वंदित विश्व ते आपही ते अपने अनुरूप हैं ॥
पावकके हैं कुमार मनो युग गो द्विज रक्षक धर्मके जूप हैं ।
गाधितनै मख राखनके हित भेज्यो कुमारन कोशल भूप हैं ॥

दोहा—यहि विधि विश्वामित्र सँग, चलत चलत मग राम ।
अवध नगरते कोस षट, आये अति अभिराम ॥

बरवै ।

अतिकठोरलगिआतपकोमलगात। श्रमजलकणतनुनिकसेअतिहिसोहात
तरुतमालमहँमानहुसीकरओस । झलमलझलकतचहुंकितपायप्रदोस ॥
गौर लषण तनु सोहत जलकणचारु । मानहुँरजताचलपरतारविहारु॥
अतिशैकोमलआननकछुकुम्हिलान।साँझसमयजिमिअंबुजनेकुमलान॥

देखि महामुनिमनमें मानिगलानि । तरुछायालखिसीरीश्रमसुखदानि ॥
ठाढ़े भये महामुनि समयविचारि । मधुरवचन बोले पुनि राम निहारि ॥
सुनहु राम रघुनन्दनराजकुमार । कौशल्या सुखकारी प्राण पियार ॥
वन्योनल्यावतमोसेमन पछितात । कारज वशकाकरिये बनतनजात ॥
अमलकमल पद कोमल भूमि कठोर । कैसे पन्थ सिरैहै राजकिशोर ॥
इतै सलिल अति शीतल कीजैपान । तरुछायामें बैठो सुखकुम्हिलान ॥
असकहिऐंचि कमंडलुजल भरिल्याय। राजकुमारनमुनिवरपानकराय ॥
पोंछिप्रस्वेदपाणिनिजव्यजन डोलाय।रामलषणसे बोले मुनिअकुलाय ॥
सुनहु वत्स मम प्यारे मंत्र उदार । बला अतिबला विद्या मोद अगार ॥
पढ़े युगलविद्याके सकलसुपास।नहिंश्रमतनुनहिं भ्रममननहिंबुधिनास ॥
नाहिं विपरीतरूपकी कबहूँ होय। बला अतिबला विद्या पढ़ै जो कोय ॥
सोवत जागत बैठत वागत माहिं । करैं धर्षणा निशिचर कबहूँ नाहिं ॥
जो विद्या पढ़िलैहौ रामसुजान तौ । तुम्हरी भुजबलसमजग नहिंआन ॥
तीनि लोकमहँ तुमसम होइ न कोय।पढ़ै जोकोउ यह विद्या जानैसोय ॥
भाग्यमान अरु चतुरहुँ तेहिसमकौन। सब प्रश्नको उत्तर भाषत तौन ॥
निश्चय काज करनमें सोइ प्रवीन । ज्ञानमान मतिमानहुँ धीरधुरीन ॥
जो विद्या पढ़ि लेहो तुम रघुबीर तौ । तुम्हरे सम होई कोइ न धीर ॥
पंथ पढ़त युग विद्या दुख नहिं होइ।सकल ज्ञानकी माता जानहुदोइ ॥
क्षुधातृषानहिंबाधति लगति न थाक।जोकोउ पढ़ेपंथमहँतेहिबलधाक ॥
लेहु युगल विद्या तुम राजकुमार । सकललोकके रक्षण हेत उदार ॥
बला अतिबला जो तुम पढ़िहौ राम।तौ तिहरो यशव्यापीतीनिहुँधाम ॥
दोउ विरञ्चिकी तनया तेजअपार । तुम लायकविद्याके धर्मअधार ॥
सुर नर मुनिके कारज तुमसे लाग । तपकरिपावतविद्यासहितविभाग ॥
लेहु राम रघुनन्दन विद्या दोय। तुमसम कोउ प्रिय मोरेपरै न जोय ॥

दोहा–सुनि प्रभु मुनिके वचनवर, चरण करन जल धोय ।

अति प्रसन्न मन शुचि सदा, बैठे मुनि मुख जोय ॥

छंद चौबोला ।

अवसर जानि गाधिनंदन तहँ विद्या मंत्र उचारे ।
कण्ठ कराय सिखाय न्यास सब बोले वचन सुखारे ॥
जन अभिराम राम यहि रजनी इतहीं करहु निवासा ।
सकल वासको है सुपास इत आगे चले प्रयासा ॥
राम लषण लहि विद्या मुनिसों शोभित भये प्रकाशी ।
मनहुँ हजारन किरणि पसारत उदित शरद तम नाशी ॥
परमरम्य सुन्दर अमराई सरयू सुखद किनारे ।
विश्वामित्र निवास कियो तहँ संयुत राजकुमारे ॥
संध्यासमय विचारि गाधिसुत राम लषण सँग लीन्हे ।
चलि सरयूतट शुचि निर्मल जल संध्यावंदन कीन्हे ॥
पुनि आये तीनौं निवास थल मुनिवर बोले वानी ।
शयन करब अब उचित लालइत मम आँखी अलसानी ॥
सुनि कौशिकके वचन बंधु दोउ कोमल तृण बहु ल्याई ।
निजकरकमल सुधारि शयन हित दीन्हीं सेज बनाई ॥
विश्वामित्र बहुरि अपने कर कियो सेज विस्तारा ।
करहिं शयन सुखसहित उभै दिशि जामें राजकुमारा ॥
शयन करन जब परे महा मुनि राम लषण दोउ भाई ।
लगे चरण चापन कौशिकके करपङ्कज पसराई ॥
जाके कौशिक आदि ब्रह्मऋषि पदपङ्कजरज ध्यावैं ।
सो प्रभु कुशिकतनैपद मींजत यह अचरज सुर गावैं ॥

दोहा—ऋषि बोले मञ्जुल वचन, करहु शयन अब लाल ।
कौन तुम्हारे सरिस जग, सत्य धर्मको पाल ॥
गुणि गुरुशासन बंधु दोउ, शयन कियो तृण सेज ।

लागे कहन कथा कछुक, विश्वामित्र सुतेज ॥

कवित्त ।

पावनिपरमयहरजनीसुहावनीहै आवनिमयङ्ककीअनन्दअधिकाई है ।
उदैउडगणउपजावनिशयनप्रीति धावनिसमीरअलसावनिसदाई है ॥
रघुराजदिनश्रमसकलनशावनि सनङ्ककी बढ़ावनिमयङ्कप्रभुताई है ।
चोरसुखछावनिबिछावनिनयननींदशांतगतिभावनिविभावनिसुहाई है ।

दोहा—ऐसी कहि नेसुक कथा, शयन कियो मुनिनाथ ।
सोवत गुरु गुणि लषणयुत, शयन कियो रघुनाथ ॥

कवित्त ।

कोमलकलितसुमसेजकेसोवैयादोऊमंदिरमणिनमातुव्यजनडोलावई ।
सरससुगन्धफैलीरहतिअनेकभाँति मणिनप्रदीपकीप्रकाशताजहांछई ॥
सोईरघुराजदोऊसोवैंतृणसेजहीमें वृक्षनकीछायावनभूमिकातमोमई ।
तदपिऋषीशमुखलालनतेपालनते औधतेअधिक सुखशर्वरीसोदैगई ॥

इति सिद्धि श्रीसाम्राज्य महाराजाधिराज श्रीमहाराजा बहादुर श्रीकृष्णचन्द्र कृपापात्राऽधिकारि श्रीरघुराज सिंह जू देव जी. सी.एस.आई कृते राम स्वयंवरग्रन्थे रामगमनवर्णनं नाम अष्टमः प्रबन्धः ॥ ८ ॥

दोहा—सुख सोवत रघुपति लषण, आगम जानि प्रभात ।
विश्वामित्र उठे प्रथम, राम दरश ललचात ॥

छन्द चौबोला ।

झलमल गगनपंथ तारागण निरखि मयङ्क मलानो ।
मनो समर करि भान सङ्गमहँ हारो हहरि परानो ॥
विकसनलगींकमलकलिकाकल कुमुदिनि गणसकुचाने ।
मनो विभाकर वीर विलोकत निशिकर सुभट सकाने ।
करन लगे कलवर विहङ्ग वर बैठे वृक्षन डारैं ।
अंशुमान आगम गुणि मानो द्विजगण वेद उचारैं ॥
तमहिं हटावत क्रम क्रम आवत पूरब दिशि अरुणाई ।

मनहुँ राम आवनि गुणि छीजन निशिचर आयुर्दाई ॥
कोकी कोक अशोक लोकमहँ मिलन लगे मुदमाती ।
विजय करन गुणि राम गमन जिमि सुखित साधुसुरजाती॥
पसरत पवन मंद अति शीतल भूतल परिमल सानो ।
रामप्रताप प्रयात प्रथम मनु कीरति करत बखानो ॥
अंशुमान भे उदैमान दिशिप्राची कर पसराई ।
मनु निज वंश निशान जानिकै लेत राम अगुआई ॥
उदयाचल रवि अस्ताचल शशि वसुधा बीच विराजैं ।
मनहुँ राम कीरति करनीके युग घंटा छवि छाजैं ॥
गोगण चरन चले कानन कहँ द्विज संध्या अवराधे ।
मनहुँ राम रक्षक गुणि सुर मुनि निज निज कारज साधे ॥
कन्दर दुरे उलूक मूक ह्वै दीपावली बुझानी ।
रामप्रताप तातते तापित जिमि निशिचर भय मानी ॥

दोहा—पाय प्रमोद प्रभात मुनि, मज्जन समय विचारि ।
चहे जगावन रामको, छके स्वरूप निहारि ॥
अलकैं अमल, रहीं वदन कछु आय ।
मनहुँ श्याम घन पटलते, कढत शशी बिलगाय॥
राम वदन सोहत रह्यो, वामपाणि निश्शङ्क ।
मनहुँ तरणि रिपु गुणि कमल, कीन्ह्यो अङ्क मयङ्क॥
युगलबन्धु सोवत श्रमित, सुन्दर वदन सोहाय ।
समर सुरासुर जीति मनु, रवि शशिके इक ठाँय ॥
पंथ श्रमित सोवत सुखित, छकित रह्यो मुनि देखि ।
सकत जगाय न रामको, समय प्रभात परेखि ।
जस तस कै साहस सहित, जागन समय विचारि ।
मुनि बोल्यो मंजुल वचन, सुन्दर वदन निहारि ॥

छन्द चौबोला

पुरुषसिंह जागहु रघुनन्दन कौशल्याके प्यारे ।
करहु विमल सरयू जल मज्जन सज्जन प्राण अधारे ॥
हे रघुनन्दन सन्ध्यावन्दन को अब अवसर आयो ।
उदै उदैगिरि अंशुमान भो तुव दर्शन ललचायो ॥
विश्वामित्र वचन सुनि रघुपति उठे नयन अलसाने ।
लषणहुँको जगाय मुनिवर पद वंदे हिय हरषाने ॥
पर्ण सेज तजि प्रातकृत्य करि सरयू तीर सिधारे ।
सविधि कियो सरयू जल मज्जन धौत वसन तनु धारे ॥
दै दिनकर को अर्घ्य मन्त्र पढ़ि उपस्थान पुनि कीन्हे ।
गायत्री को जपन लगे पुनि ब्रह्मबीज मन दीन्हे ॥
यहि विधि करि संध्या वंदन रघुनन्दन मुनि ढिग आये ॥
मुनिपद पद्म पराग शीश धरि भूषण वसन सोहाये ॥
कसि निषंग कोदंड चण्ड शर लै कर क्रीट सवाँरी ।
पहिरि युगल दस्ताने दोउकर कीन्हें चलन तयारी ॥
राम लषणको देखि गाधिसुत अतिशय आनँद पाये ।
लै मृगचर्म कमण्डलु मुनिवर आगे चले सोहाये ॥
राम लषण गमने तिन पाछे आछे वेष बनाये ।
गंगा सरयू संगम पहुँचे तहँ मध्याह्न नहाये ॥
करि मध्याह्न कालकी संध्या मुनिवर निकट सिधारे ।
मुनि दीन्हें फल मूल सुधा सम दोऊ बन्धु अहारे ॥

दोहा—मुनिके आगे आयकै, बैठे लषणहुँ राम ।
लखि गंगा सरयू मिलनि, लहत भये सुखधाम ॥

छन्द चौबोला ।

गंगा सरयू संगमके तट आश्रम लखि बहु मुनिके ।
करत रहे पूरब जहँ वर तप निकट सरयु सुर धुनिके ॥
राम कह्यो कर जोरि सुनहु मुनि काके आश्रम अहहीं ।

देहु बताय कृपा करि हमको सुनन बन्धु दोउ चहहीं ॥
मुनि कोशल किशोरकी वाणी कौशिक मुनि सुखपाई ।
कह्यो विहँसि अवधेश लाल सुनु आश्रम जासु सोहाई ॥
मदन रह्यो जब मूरतिवन्त काम जेहि बुधवर भाखैं ।
योगी तपी ब्रह्मचारी जन जासु सदा भय राखैं ॥
तौन काम को बोलि शक्र ढिग ऐसे वचन उचारा ।
हर गिरिजा को व्याह भयो अब कैसे जनै कुमारा ॥
सेनापति सो होइ हमारो भयो व्याह यहि हेतू ।
आई गौरि गेह जबते तबते किय शिव तप नेतू ॥
जाहु करहु तुम विघ्न शम्भु तप यह उपकार हमारो ।
चल्यो शक्र शासन सुनि मनसिज उरमें जन्यो खँभारो ॥
शीतल मंद सुगन्ध समीर वसन्त लिये सँगमाहीं ।
हन्यो कुसुम शर शंकरके उर पूरब राम इहाँहीं ॥
सावधान तप करत रहे इत निश्चल अङ्ग गिरीशा ।
हेरयो करि हुंकार कोपि हर जरयो काम नहिं दीशा ॥
जबते काम जरायो शङ्कर गिरिगे यह थल अङ्गा ।
कहवावन लाग्यो तबहींते जगमें मदन अनङ्गा ॥

दोहा--गिरे अङ्ग यहि देश में, अङ्गहीन भो काम ।
अङ्ग नाम यहि देश को, भयो तबहिं ते राम ॥

छन्द चौबोला।

सो अनङ्गको है यह आश्रम ये मुनि शिष्य हमारे ।
सबै निरन्तर निरत धर्ममहँ विगत पापहैं प्यारे ॥
आजु रहहु इतहीं रघुनन्दन सिगरी रजनि सुखारी ।
महा पुण्यप्रद दोउ सरिता वर उतरब उये तमारी ॥
रजनीमें उतरन नहिं लायक उतरब, भये प्रभाता ।
चलब सबै पुनि सिद्धाश्रमको महापुण्य फलदाता ॥

रघुनंदन निज पद रज पावन यह आश्रम करि दीजै ॥
तुव दर्शन अभिलषित सकल मुनि लोचन सफल करीजै ॥
करि मज्जन जप हवन सकल मुनि बैठे आश्रम माहीं ।
तप विज्ञान दृष्टिते जाने आये राम इहाहीं ॥
निज गुरु सहित लषण रघुपतिकी सब मुनि जानि अवाई ।
आये आसु दरशके आसा मनहुँ महानिधि पाई ॥
गुरुको कियो प्रणाम चरणमहँ रामहि दियो अशीशा ।
कंद मूल फल आगे राखे पूछी कुशल मुनीशा ॥
अर्घ्यपाद्य आचमन आदि दै पूजे गुरुहिं अपारा ।
अनुपम अतिथि विचारि राजसुत कीन्हें बहु सत्कारा ॥
मुनिजनते सत्कार पाय बहु कहि निज कुशल कहानी ।
सरयू सुरसरि सङ्गम गमने संध्याकालहिं जानी ॥
राम लषण कौशिक करि मज्जन संध्यावन्दन कीने ।
मुनि लेवाइ लै गये आश्रमाहिं करि विनती मुद भीने ॥

दोहा–राम लषण कौशिक तहाँ, बैठे मुनिन समाज ।
कामाश्रम वासी मुनिन, भयो अनंद दराज ॥
मुनि कहि कथा विचित्र अति, सब अभिमत अभिराम ।
लषण राम अभिराम को, कीन्ह्यो मन विश्राम ॥
शयन काल पुनि जानिकै, तृण साथरी बिछाय ।
सोये विश्वामित्र मुनि, लषणहुँ राम सोवाय ॥
यहि विधि कामाश्रम सुखी, राम लषण मुनि सङ्ग ।
वसत भये मुनिगण सहित, लहि आनंद अभङ्ग ॥

इति सिद्धिश्रीसाम्राज्य महाराजाधिराज श्रीमहाराजा बहादुर श्रीकृष्णचन्द्र कृपापात्राऽधिकारी श्रीरघुराजसिंह जू देव जी. सी. एस. आई. कृते रामस्वयंवर ग्रन्थे कामाश्रम निवास वर्णननाम नवमः प्रबन्धः ।

दोहा--भानु आगमन जानिकै, लालशिखा धुनि कीन।
सबन जागे जगतपति, जागे राम प्रवीन॥

छन्द चौबोला।

कह्यो लषण कहँ उठहु लाल अब भयो भोर सुखदाई।
इतनेमें मुनिनाथ उठे पुनि हरि हरि हरि मुख गाई॥
राम वदन नव निरखि गाधिसुत मंजुल वचन उचारे।
सुरसरि सरयू संगम मज्जन गमनहु संग हमारे॥
कौशिक संग चले सरिमज्जन राम लषण रणधीरा।
विश्वामित्र शिष्य सिगरे मुनि गवने बुद्धि गँभीरा॥
सुरसरि सरयू संगममें सब सविधि कियो अस्नाना।
दै रवि अर्घहि उपस्थान करि गायत्री जप ठाना॥
नित्य नेम निर्वाहि उछाही आश्रम आइ तुरन्ता।
करी गमनकी सपदि तयारी कह्यो मुनिन मतिवन्ता॥
आनहु नाव उतारनके हित उतरैं गंग सुखारी।
अस कहि तीर गये सुरसरिके मुनियुत सुर भयहारी॥
ल्याये सुखभरनी मुनि तरनी गुरुसों कहैं सुबैना।
उतरहु नाथ विलम्ब करहु जनि होइ पंथप्रद चैना॥
कौशिक कह्यो भली भाषे मुनि को तुम सम उपकारी।
अस कहि चढ़ि मुनिवर कुँवरन युत नाउ नवीनहिं भारी॥
राम लषणयुत लखण लगे तहँ सरयू गंग हिलोरे।
जल उच्छलत स्वच्छ मच्छन युत कच्छप पीठि कठोरे॥
मंद मंद कहुँ चलत विमल जल कहुँ सवेग धुनि धारा।
भूरि भ्रमर गम्भीर परत कहुँ शोर घोर घहरारा॥

दोहा—उठतीं तुंग तरंग बहु, बोलत विपुल विहंग।
यू स सुरसरि दरश ते, होत तुरत अघ भंग॥

सरयूजल जब गंगजल, मिलत मध्यमहँ जोर ।
घोरशोर तब होत तहँ, लहिकै पवन झकोर ॥

छन्द चौबोला ।

लरिकाई वश करि चपलाई सहित लषण रघुराई ।
पूछत भये शोर कस होतो देहु मुनीश बताई ॥
अतिकौतुक मोहिं लगत शोर करि मिलहि नाथ जबधारा।
हहरत कहुँ घहरत पुनि घनसों सरयू शोर अपारा ॥
राम वचन सुनि कौशिक मुनि हँसि सरयू कथा बखानी।
गिरि कैलास माँह इक मानसरोवर सर सुखदानी ॥
रच्यो सरोवरसो विरंचि मन ते मंजुल हंसालै ।
ताते मानस नाम कहायो विमल सलिल सबकालै ॥
सोई मान सरोवर ते सरयू सरिता निकसी है ॥
राम रावरे अवध नगरते उत्तर दिशि बिलसीहै ॥
कढी सवेग सरोवर ते यह घोर शोर है ताते ।
मिली जाह्नुकन्या में पुण्या घहरारे अधिकाते ॥
सकल मनोरथ पूरणवारी अहै पापकी आरा ।
करहु प्रणाम प्रतीति प्रीतियुत कोशलराजकुमारा ॥
कियो प्रणाम राम लछिमनयुत सुरसरि सरयू काहीं ।
दाक्षिण तीर जाय नउकाते चले विपिन पथ माहीं ॥
महाघोर वन सघन भयानक परत पंथ अँधियारी ।
देखि राम पूछ्यो मुनिवरसों नाथ कौन वन भारी ॥
मुनिवर महाभयानक कानन झिल्लीगण झनकारा ।
महाभयावन बोलत पक्षी दारुणपंथ अपारा ॥

दोहा—विविध सिंह अरु बाघ बहु, वारण विविध वराह ।
गर्जत तर्जत ओर चहुँ, कैसे पथिक निबाह ॥

छन्द चौबोला।

औरहु आमिषभक्षक जे पशु विचरहिं वन भयकारी।
रहहिं न मूक उलूक दिनहुँ महँ नादत काक सियारी॥
अश्व करन धव ककुभ बिल्व वक पाटल तिंदु पलासा।
वंस झौर गंभीर भीनि कर नहिं सूझत दश आसा॥
तापर वदरी खदिर ववूरन कंटनकी अधिकाई।
खेले वहु शिकार सरयू वन लखी न अस वनताई॥
मुनिवर देहु वताय कौन वन सूझत मारग नाहीं।
रवि प्रकाश आवत नहिं धरणी शाखा पत्रन छाहीं॥
सुनि रघुपतिके वचन गाधिसुत कही विहँसि वर वानी।
सुनहु वत्स रघुवंश विभूषण जासु विपिन सुखदानी॥
पूरव मलद करूप देश द्वै देव किये निरमाना।
पूरण रहे धान्य धन जनते सरित तडागहु नाना॥
प्रथमहिं जव वृत्रासुर मारयो समर मध्य मघवाना।
लगी ब्रह्महत्या वासवको क्षुधा कलेश महाना॥
सुर मुनि जानि दुखी सुरपतिको मज्जन गङ्ग कराई।
कलशन भरि अभिमंत्रित करि जल दियो शक्र नहवाई॥
द्विजहत्या वासवके तनुते दीन्ह्यो सकल छोड़ाई।
मिटी क्षुधा पुरहूत उदरते विमल भयो सुरराई॥
विगत क्षुधा मल देखि देवपति सुर मुनि भे सुख भीने।
सो मल क्षुधा देवपति दोहुँन देशनको पुनि दीने॥

दोहा—ताते मलद करूष भो, दोउ देशनको नाम।
द्विज हत्या लहि देश दोउ, सब विधि भये निकाम॥

छन्द चौबोला।

निज उपकार जानि सुरनायक दिय देशन वरदाना।
मम मल धरयो करूष मलद दोउ देश लहैं सुख नाना॥

रहैं धान्य धन जनगण पूरण आधि व्याधिते हीने ।
सुर सुरपतिके वचन देव सब परम प्रशंसा कीने ॥
मलद करूष देश दोउ जैसे किये शक्र उपकारा ।
तथा पाकशासन वर दीन्ह्यो लहे देश सुखभारा ॥
बहुत काल लगि मलद करूषहु रहे पूर धनधामा ।
आधि व्याधि अरु सकल उपाधि विहीन भये सब ठामा ॥
कछुक कालते पुनि इक यक्षी कामरूपिणी घोरा ।
धारण करि हजार हाथी बल होत भई बरजोरा ॥
सुन्द नामको यक्ष भयो यक रही ताहिकी दारा ।
नाम ताडुका भूरि भयावन जेहि मारीच कुमारा ॥
जाको शक्र समान पराक्रम भयकर महाशरीरा ।
महाबाहु अरु महाशीश जेहि वदन दरी गम्भीरा ॥
सोइ राक्षस मख मोर विनाशत त्रासत देश निवासी ।
जननि तासु ताडुका भयावनि खाति मनुजकी रासी ॥
मलद करूप देशमह जबते किय ताडुका निवासा ।
तबते दियो उजारि देश दोउ दै जीवनको त्रासा ॥
भये भयावन देश सकल थल गये मनुज सब भागी ।
यह पन्थाते बसति कोश षट धावति रोज अभागी ॥

दोहा—कौशल नाथ कुमार तुव, होइ सदा कल्यान ।
यही पंथ पगु धारिये, वन ताडुका महान ॥

सवैया ।

निज बाहुनके बल केवल राम करौ वध ताडुका को तुरतै ।
निहकण्टक देश करौ रघुनंदन आसुमरी तुम ते जुरतै ॥
यह शासन मोर गुनो रघुराज करौ द्विजकाज सुबंधु युतै ।
अवधेशके लाड़िले वीर शिरोमणि केतिक बात तुम्हैं करतै ॥

दोहा—राम ताड़का भीति ते, इत नहिं आवत लोग ।
पापिन के वध करन को, मिल्यो भले संयोग ॥
दारुण वन वृत्तांत यह, मैं वरण्यों रघुनाथ ।
देश उजार्‌यो ताड़का, अब तुम करो सनाथ ॥
विश्वामित्र मुनीशके, सुनत बैन वर राम ।
जोरि पाणि शिरनाइकै, बोले वचन ललाम ॥

छन्द चौबोला ।

यक्षी होति अल्प बल मुनिवर सुनी सनातन रीती ।
यह ताड़का सहस गज बलयुत कैसे भय विपरीती ॥
महाधीर रघुवीर वचन सुनि कौशिक कह सुखारी ।
भई जोर वारी जेहि नारी सुनहु राम धनुधारी ॥
पूरव भयो सुकेत यक्ष यक स्वर्ग लोक बलशाली ।
शुभ आचार धर्मको ज्ञाता रह्यो तनय ते खाली ॥
कियो महातप जाय विपिनमें भे प्रसन्न करतारा ।
कन्या रत्न ताड़का दीन्हीं तेहि बल नाग हजारा ॥
सहस नाग बलवारी कन्या पायो यक्ष सुकेतू ।
पुत्र दियो नहिं ताहि चारि मुख जानि तासु कछु हेतू ॥
नाम ताड़का नाग सहस बल कन्या पाइ उछाही ।
जम्भ पुत्र इक रह्यो सुन्द तेहि दुहिता दियो विवाही ॥
पाय जम्भ संयोग ताड़का जन्यो पुत्र अतिपापा ।
नाम जासु मारीच भयो जग भो राक्षस लहि शापा ॥
दै अगस्त्य मुनि शाप सुन्दको कीन्हों जबै विनाशा ।
सुत मारीच समेत ताड़का चली करन मुनि नाशा ॥
महाकोप करि गर्जत तर्जत धाई भक्षण हेतू ।
आवत देखि अगस्त्य ताड़कै दियो शाप मुनिकेतू ॥

र मारीच होहि राक्षस तैं महाभयङ्कर वेषा ।
पुनि ताडुकै शाप दीन्ह्यो मुनि कै कै कोप विशेषा ॥
मनुज भक्षणी होसि तैं, महा कुरूप कराल ।
सुन्दर रूप विहाय यह, दारुण वपु यहि काल ॥

छन्द चौबोला ।

पाय शाप मारीच ताडुका मुनि भयते तहँ भागे ।
सो अगस्त्य को वैर विचारत देश उजारन लागे ॥
भो मन्त्री मारीच जाय पुनि दशकन्धरको प्यारो ।
महाक्रोध करि तौन ताडुका मलद करूष उजारो ॥
रहैं अगस्त्य देश दोउ अति प्रिय विचरत रहे मुनीशा।
मुनिको कछु करिसकी न पापिनि किये देश दोउखीसा॥
अति दुर्धर्ष महादारुण यह यक्षी द्विज दुखदाई ।
गो ब्राह्मण हित हनहु राम यहि मुनिपालक रघुराई॥
महादुष्ट अतिशय पराक्रमी शाप विवश विकराला ।
याके सन्मुख होत न कोउ भट वसुधा वीर विशाला॥
तुमहिं विना सुनिये रघुनन्दन अस को त्रिभुवन माहीं ।
हनै ताडुका को विक्रम करि मृषा कहौं कछुनाहीं ॥
नाहिं नारीवध दोष गुणो तुम नेकु दया न करीजे ।
चारि वर्णके हेत राम अब पापिनिको वध कीजे ॥
तुम हौ राजकुमार अनोखे अविचल हैं तुव धर्मा ।
रक्षण प्रजाहेतु करिबो हित क्रूर अक्रूरहु कर्मा ॥
पातक होय सदोष होय वा निन्दै कोउ कितनोई ।
जामें रक्षण प्रजन होय हठि करैजु रक्षक होई ॥
जिनके शिरमें राजभार है करैं राजको काजा ।
तिनको धर्म सनातन है यह होत न दूषण भाजा ॥

दोहा—महाअधर्मिनि ताड़ुका, है न धर्मका लेश।
हनहु याहि रघुवंशमणि, मेटहु मनुज कलेश ॥

छन्द चौबोला।

दैत्य विरोचनकी दुहिता इक नाम मन्दरा जाको।
रही महाबलवंतिनि चाही नाशन वसुंधराको ॥
तेहि लै वासव बली वज्रकर जाय तुरंत सँहारचो।
नारीवधको पाप नेकुनहिं अपने मनहिं विचारचो ॥
एक समय महँ शुक्राचारज कीन्ह्यो मनहिं विचारा।
शिवप्रसादते सुर पुरोहिती पाऊं मिटै खभारा ॥
असविचारि मुनि कियो महातप गिरि कैलासहिं जाई।
इतै असुर सब शुक्र जननि सों भाषे जाय डेराई ॥
शुक्र चहत सुरपति पुरोहिती हम सब भये अधीरा।
अबतो वासव ओर बिनाश्रम होत असुर हर पीरा ॥
शुक्रजननि अब शक्रनाश करु तबतौ असुर सुखारी।
अंब करी अब कौन शुक्र बिन असुरन की रखवारी ॥
सुनि भृगुरमणी शुक्र मातुसों करन लगी अभिचारा।
सुनासीरते सून होय जग रहै न अमर अधारा ॥
अपनो जानि विनाशव वासव जाय मुकुंद पुकारचो।
करुणानिधि लै चक्र चटकचलि शुक्र मातुको मारचो ॥
यह सब कथा प्रसिद्ध पुराणन चतुरानन शिवगाई।
राजसुतन कर मारि गईं जे भईं नारि दुखदाई ॥
ताते मम शासन शिर धरिकै रघुपति दया विहाई।
करहु तुरंत ताड़का ताड़न नहिं वैरिनि बचिजाई ॥

दोहा—सुनि मुनिवरके वचन वर, जोरि पंकरुह पाणि।
नाय शीश नेसुक बिहँसि, राम कही मृदुवाणि ॥

छन्द चौबोला ।

जब मुनि गये आप कौशलपुर पिता सभा मधिमाहीं ।
मांग्यो मोहिं यज्ञ रक्षण हित दियो पिता हमकाहीं ॥
तबते तुम्हहिं अहौ पितु माता भ्राता त्राता मोरे ।
हम दोउ बंधु रावरे सेवक वचन सूत्रमहँ जोरे ॥
जो कछु कहौ तौन करिहैं सब तुव शासन है शीशा ।
पिता वचन गौरव पितु शासन नहिं उलंघि भल दीशा ॥
चलन लगे जब अवध नगरते तब पितु मम गुरु आगे ।
मोहिं बुझाय कह्यो नरनायक बार बार अनुरागे ॥
पिता मातु भ्राता गुरु सुहृदहुँ कौशिक अहैं तिहारे ।
जो कछु देहिं तुम्हहिं शासन मुनि कीन्ह्यो विनहिं विचारे ॥
सो पितु शासन पुनि तुव शासन लंघन केहि विधि करिहैं ।
इष्टदेव पितु आप ब्रह्मऋषि यह अपयश कहँ धरिहैं ॥
गो ब्राह्मण हित सकल लोक हित तुव शासन हित नाथा ।
मैं करिहौं ताडुका निधन हठि जो है हौं रघुनाथा ॥
अस कहि श्रीरघुवीर वीर मणि गहि कोदण्ड प्रचण्डा ॥
कियो धनुष टंकोर घोर रव भरिगो भुवन अखण्डा ॥
भगे विहंग कुरंग विपिनके वज्रपात जिय जानी ।
धुनि टंकोर कठोर घोर अति सुनि ताडुका डेरानी ॥
करिकै क्रोध बोध नहिं कीन्ह्यो कौन योध वर आयो ।
काके काल शीश पर नाच्यो को यह शोर सुनायो ॥

दोहा--उठी तुरंतहि राक्षसी, दीन्ह्यों काल जगाय ।
महा मीच मूरति मनहुँ, एड़ानी जमुहाय ॥

छन्द बामन ।

जेहि दिशि भयो टंकोर । गिरि धरणि कानन फोर ॥

तांह दिशि चली अतुराय । धावत सुधरणि कँपाय ॥
जेहि रूप अति विकराल । मुख वमति पावक ज्वाल ॥
भुज मनहुँ पादप शाल । वपु शैल सरिस विशाल ॥
बहु वृक्ष टूटत जात । मनु वेग वन न समात ॥
अस वदन बोलत बात । को कियो शोर अघात ॥
मगचली आवति कोपि । निज शत्रु भक्षण चोपि ॥
आनन अमर्षित ओपि । वन धूरि धुंधहि तोपि ॥
करि दियो धुंधाकार । अवनी अकाश मँझार ॥
फूटत पषाण अपार । टूटत तड़ातड़ डार ॥
जहँ जहँ चली सो जाति । तहँ धूरि भूरि देखाति ॥
तेहिं देह नहिं दरशाति । केवल अवाज सुनाति ॥
वन जीव भगत चिकारि । वपु बिकट तासु निहारि ॥
घन घटाकी अनुहारि । विकराल वदन वगारि ॥
सो काल रजनि समान । जनु चहति खान जहान ॥
रद दरत उड़त कृशान । चिक्करत शोर महान ॥
को धस्यो यहि वन आय । यमसदन भीति विहाय ॥
को कियो शोर कठोर । नहिं जानतो बल मोर ॥
अस कहत आई दौरि । जग पापिनी शिरमौरि ॥
शिर नील चन्दन खौर । बहु खुली केशर झौर ॥

दोहा—यहि विधि आई ताड़ुका, कीन्हे भषन उमङ्ग ।
राम लषण मुनि जहँ खडे, पावक मनहुँ पतङ्ग ॥

छन्द झूलना ।

तेहिनिरखिरघुवीररणधीरकरतीरलै वचनगम्भीरसौमित्रिसोंकहतभे ॥
अरुणनेसुकनयनसकलसुखमाअयन भयेसंग्राममके चयनधनुगहतभे ॥
यहपर्वताकारविकरारबपुताड़ुका झरतअङ्गारसुखमीचुकी जननिसी ।

उरफटतवादरनसलखतकादरनक भगतबादरनस भटप्रलयरजनिसी ॥
दुर्धर्पमायाप्रबलकरतगलबलचपलभरीछलबलसकलभीतिभलभासिका ।
कोदंडसंधानिलगिकानयुगबानते करतहोंहानियहिकरन अरु नासिका ॥
बिननाकऔकानकीभईपुनिभाजिगई कुपथपुनिनालई मीचुतेबचिगई ।
नारिअनुमानिनहिंउचितवधजानिजुपरानपरणते कहौवीर छांतेकाठई ॥

दोहा–यहि विधि भाष्यो लषण सों, राम ताड़ुका देखि ।
राजकुमारनको निरखि, धाई सो लघु लेखि ॥

कवित्त ।

कीन्हेबाहुऊरधकोमूरधकेखोलेकेशलेशनदयाकोताकोकोपहिकोभाराहै ।
करतचिकारविकरार मुखको बगारि धावतधरणि धाईधूरिधुंधधाराहै ॥
भनैरघुराजमुनिप्रीतिके विवशह्वैकैकारिकैहुंकारमुखवचन उचाराहै ।
समरमँझार पावैविजयअवार यह श्याम सुकुमाररणबाँकुरोकुमाराहै ॥

सवैया ।

शामल गौर महा सुकुमार कुमारन अङ्गन कोमलताई ।
त्यों मुख माधुरी मंजु विलोकत कोटिन कामकी सुंदरताई ॥
ताड़न ताड़ुका आई हुती सोजकीसी तकी नहिं सामुहें धाई ।
श्रीरघुराज विचारै लगी छवि आजु लों ऐसी न आँखिन आई ॥
दैत्यन देवन देखे कितेकन चारन सिद्धनकी समुदाई ।
राजकुमारन देखे अनेकन पै नहिं देखे यथा दोउ भाई ॥
श्रीरघुराज कहा करिये नहिं खात बनै नहिं जात पराई ।
ताते उड़ाय कै धूरिकी धार कुमारन देहुँ मैं आसु भगाई ॥

दोहा–अस विचारि जिय ताड़ुका, धुरी धूरिकी धार ।
अति गर्जन तर्जन लगी, कियो महा अँधियार ॥

छन्द गीतिका ।

बरजोर भुजनि उठाय कराति कठोर शोर भयामिनी ।

वरषन लगी पाषाण दशो दिशान किय नभ यामिनी ॥
माया करति बहु भाँति पापिनि गिरत गगन पषान हैं।
तब भये नेसुक कुपित दोऊ बन्धु समर सुजानहैं॥
कोदण्ड करि टंकोर घोर करोर शर छोड़न लगे।
अवनी गगन शर भये पूरित सुर विमानन लै भगे॥
तहँ ताड़ुका कृत उपल वृष्टि समान रजकन सी भई।
दश आश परम प्रकाश प्रगट्यो तासु माया मिटि गई॥
तब यातुधानी कोप सानी कियो मन अनुमान है।
शिशु लखत छोटे परम खोटे लेन चाहत प्रान है॥
अस गुणि भयङ्कर रूप करि दोउ भूपनन्दन खानको।
धाई धसावत धरणि गर्जत राहु जैसे भान को॥
तहँ ताड़ुका तकि तीर लै तुकि तज्यो श्रीरघुवीर है।
काट्यो युगल कर तासु तुरतहिं भई अतिहि अधीर है॥
भै छिन्न भुज अति खिन्न तनु शरभिन्न नदति कराल है।
काट्यो कुपित तेहि कान नासा शरन लक्ष्मण लाल है॥
तहँ ताड़ुका बिन बाहुकी बिन कानकी बिन नाककी।
शोभित भई जनु वृक्ष शाख विहीन भयप्रद नाककी॥
तनु बही शोणित धार समर मँझार सहित प्रवाहसी॥
मायाविनी कीन्ह्यो अनेकनरूप रण जलवाहसी॥
दोहा—कहुँ घनसम कहुँ शैल सम, कहुँ तरु सम विकराल।
कहुँ सिंहसम व्याघ्र सम, कियो वपुष ततकाल॥

छन्द जयकरी।

रघुवीर लक्ष्मण धीर हनि हनि तीर तहँ सहसान।
कीन्ह्यो व्यथित नहिं रुकन पाई भई अन्तरधान॥
वरषन लगी सो विविध वृक्ष पषाण शैल समान।

नभ पंथ धावति रव सुनावति मनहुँ फोरति कान ॥
कहुँ रहति आगे जाति पाछे भ्रमति दशहु दिशान ।
नहिं देखि परति अकाशमें अँधियार करति महान ॥
कहुँ लूक बरसावति उलूकन सरिस लेति उड़ान ।
करि कोप कहुँ प्रगटाति दूरि देखाति पुनि नियरान ॥
कहुँ मांस बरषति हाड़ बरषति रुधिर बरषति भूरि ।
कहुँ दूरिते तरु तूरि हनि पुनि पूरि देती धूरि ॥
तहँ लखत लक्ष्मण राम कौतुक सरल बाण चलाय ।
प्रभु करत क्रीड़ा समरकी व्रीड़ा न मनमें ल्याय ॥
खेलत समरमहँ राम लक्ष्मण जोहि मुनि मति धीर ।
कर कमल गहि कोमल बचन बोलत भये गंभीर ॥
अवधेश लाल न कीजिये यह पापिनी सँग खेल ।
लरिकई अबलों ना गई बाढ़ि होत बधकी झेल ॥
याकी कला लखि हँसहु तुम सुर मुनिन उपजत शोक ।
यापै दया करिबो न योग कुरोग मेटहु लोक ॥
यह महापापिनि यज्ञनाशिनि करति अतिहि अधर्म ।
कर कान नासा विन बचै तौ होइ निन्दित कर्म ॥
रघुलाल आवत साँझ अब होई बली लहि रैन ।
रजनीचरन रजनी लहत बल दून होत सचैन ॥

दोहा--जबलों आवै साँझ नहिं, तबलों राजकिशोर ।
हनहु ताड़का को तुरत, पुनि होई बरजोर ॥

छन्द चामर ।

उतैमहाभयङ्करीनिशङ्करीअमर्षिकैअतूलशूलखड्गआदिशस्त्रकोप्रवर्षिकै
उड़ातिआसमानमेंदेखातिनापयानमेंनिपातवज्रशोरसोकठोरकैदिशानमें
पषाणपादपानकोसमूहभूमिडारती नरेन्द्रकेकुमारकोअदृश्यह्वैप्रचारती

प्रचंडधूंरधुन्धकार अन्धकार कादयाअनकतारभासकारचदमदसोकियो
देखातनादिशानिशाभईमनौसुसामनीअनेकभाँनिगर्जिनार्जिनाडुकाभयावनी
अनेकल्कवारतीविदाहतीवसुंधरा। प्रकाशतीअनेकशैलसानुमानकंदरा
तहाँसबंधुकौशलेशकोकुमारकोपिकैप्रचंडलैको दंडतासुअन्तचित्तचोपिकै
पतत्रिधारवारवारवारवारंछोडतै । वचैनतेयर्हा उचारिशस्त्रधार ओडत
देखातनाअकारतासुशब्दहींसुनातहै। विचारिशोरओरवाणमारतअवातहे
नरेशकेकुमारमारिशब्दवेधिवानमें। कियोसुतासुगौनरोधजौनआममानमें
पयानकैसकीनव्योमवाणजालछाइगो। रहीनसंधिनेकुताहिशोकओकआइगो
प्रचंडकोपताडुकाअखंडओजमायनी। गिरीधराधडाकदैसुरेशशोकदायनी
अमर्षिघोरशोरकैनरेशकेकिशोरपै। सबंधुरामपैचलीचमक्किचित्तचोर पै
अकाजदेवकारिणीसुगाजसीगराजिकैयथामयङ्कओर जातराहुओजसाजिकै
विलोकिदेवरामओरजातघोरताडुका। कियेहहापुकारभाषिभाषिआजुआडका
डगैधरामनोमतङ्गनावमेंसवारभो । वसुंधराधरौगिरैदिगीशशोकभारभो
नरामकोनलक्ष्मणैनकोशिकैततक्षणै। वचाइहोविशेषितेकरौंतुरन्तभक्षणै
अनेकवारयोंपुकारिताडुकाभयङ्करी। नगीचआयजोरसोंमनोकलासुसंकरी
नपाणिहैनकानहैनाकहैभयामिनी । रँगीशरीरशोणितैमनोसुकालकामिनी
नरेशकेकुमारकोननेकुभीतिहोतिभै । विजैप्रभाप्रमोदिनीक्षणैक्षणैउदोतिभै

दोहा—जब ताड़िता सी तड़पि कै, सो ताडुका तुरन्त ।
महाविकट आई निकट, करती कटकट दन्त ॥
तब नेसुक मुसकाइकै, चितै लषणकी ओर ।
साज्यो धनु सायक सहज, वीर धीर शिरमोर ॥

छन्द तोटक ।

हरि वज्र समान सुबाण लियो। दुख देवन देखत कोप कियो ॥
धनु सायक साजि सुकाननलों। गुण खैंचि अकम्पित आनन लों॥
तकिकै तुकिकै उर पापनिको। लखिकै द्विज देवन शापनिको॥

अस ठीक विचार कियो मनमें । वधको अब काल यही छनमें ॥
प्रभु सो शर त्यागि न दीठि दई । पवि पात अवात अवाज भई ॥
दिशिदामिनि सों दमक्यो शर सोनहिं देखिपरचोनिकरचोकरसो॥
उर जाय लग्यो तिय पापिनि के । द्विज देवनके दुख दायिनिके ॥
तनुको शर फोरि धस्यो धरणी । तहँ तासु विलाय गई करणी ॥
शर लागत घोर चिकार कियो । सिगरे सुर कानन मूँदि लियो ॥
तहँ यक्षिणि सो भ्रमि भूमि परी । पुहुमी जनु गाज गराज गिरी ॥
गिरते धरणीतहँ डोलि उची । मुनि कौशिकको यह बात रुची ॥
उलटे दृग भे रसना निकरी । वह राक्षसि सो पुहुमी पसरी ॥
मरिगै जब यक्षिणि संगरमें । सुर दुंदुभी दीन सुअंबरमें ॥
सुर फूलनकी बहु वृष्टि किये । निजको निहकण्टक जानि लिये ॥
जगमें जयकारहि माचि रह्यो । धनि हौं धनि राघव शक्र कह्यो ॥
अति भीम अपावनि यक्षिणिया । तेहि दीन परागति अक्षिणिया ॥
तुमहीं विनको यहि नाश करै । द्विज देवनको दुख दीह हरै ॥
मुनि कौशिक मोदित होत भये । रघुनन्दनको मुख चूमि लये ॥
ऋषि वारहिंवार अनंद भरे । निज आँखिनते अँसुआन ढरे ॥
रघुनायक मोहिं सनाथ कियो । यहि पापिनिको परधाम दियो ॥
तुमहीं सम कौन दयालु अहै । जनदीननको भल कौन चहै ॥
करि हैं अब शयन सुखी सिगरे । जन जे यहि पापिनिते बिगरे ॥

दोहा—हन्यो ताड़ुका राम जब, सुखी भयो सुरराज ।
आयो कौशिकके निकट, लै सब सुरन समाज ॥

छन्द चौबोला ।

सकल देव अति भये प्रमोदित वासव सँगमहँ आये ।
देव देवपति करि कौशिक नति जोरिपाणि अस गाये ॥
सुनहु महामुनि राम ताड़ुका हत्यो भयो कल्याना ।

हम अरु देव मरुद्गणसंयुत सन्तापन विधि नाना ॥
ताते कहत सबै मुनि तुमसे रघुपतिको कछु दीजै ।
लखैं लोक तुव नवल नेह फल अनुपम जग यश लीजै ॥
नाम प्रजापति जो कृशाश्व है ताके पुत्र अपारा ।
दिव्य अस्त्र अरु शस्त्र तेज जिन मानहुँ भानु हजारा ॥
तप बल ते सिगरे अमोघ जे जानहुँ सब मुनिराई ।
ते सब लषण रामको दीजै तासु पात्र रघुराई ॥
दिव्य अस्त्र पावनके लायक रघुनायकयुत भाई ।
अबै बहुत करिहैं सुरकारज राजकुँवर कहुँ जाई ॥
अस कहि देव देवपति सिगरे करि प्रणाम पुनि रामै ।
वन्दि चरण लक्ष्मण कौशिकके गये सुखी सब धामै ॥
विश्वामित्र चरण वंदे पुनि राम लषण दोउ भाई ।
लियो उठाय अङ्क महँ मुनिवर मनहुँ महानिधि पाई ॥
बैठे इक तरुतर मुनिवर लै गोद लषण अरु रामै ।
बार बार शिर सूँघि सराहत पूरण भो मन कामै ॥
फेरत पीठि पाणि पोछत मुख चूमत वदन सुखारी ।
अङ्ग अङ्ग पुलकावलि छाई ढारत नैननि वारी ॥

दोहा—इतनेमें संध्या भई, अस्ताचल गे भान ।
राम लषणसों कहत भे, कौशिकमुनि हर्षान ॥

सवैया ।

पायो महाश्रम राजकिशोर इतै यह ताड़ुकाके रण माहीं ॥
ह्वै हैं पिरात सुपङ्कज पाणि प्रस्वेदके बिंदु शरीर सोहाहीं ।
श्रीरघुराज सुनो रघुराज विचारि कह्यो नहिं बात वृथाहीं ।
आज निवास करौ रजनी इत काल्हि चलौ मम आश्रमकाहीं १
कौशिकके सुनि बैन मनोहर राजकिशोर महा सुख पाई ।

पङ्कज पायँ गहे मुनि के शिरनाइकै कीन्हे विनै दोउ भाई ॥
श्रीरघुराज सुनौ मुनिराज न नेसुक है हमरी प्रभुताई ।
आप प्रताप ते ताप विना जग ताड़नि ताडुकै मीचु सताई २

दोहा-रहहु आज रजनी इतै, यह सलाह भल कीन ।
भोर चलौ जेहि ओर मन, चलब सङ्ग श्रम हीन ॥
तेहि रजनीमें सुख सहित, वन ताडुका मँझार ।
विश्वामित्र वसे सुखी, लै दोउ राजकुमार ॥
गयो शाप तै छूटि वन, ताही दिन ततकाल ।
लसतभयो जिमि चैत्ररथ, बाग कुबेर विशाल ॥

कवित्त घनाक्षरी ।

मारिताडुकाकोरामवसेतेहिकाननमें सुयशदिशाननमेंफैलिगोदराजहै।
आयेऋषिवृन्दरघुनन्दकीप्रशंसाकरैं आतिहिअनंदपायमुनिनसमाजहै ।
शापहूंते तापहूंते विगतविपिनभयो रजनीविमलसजनीसीसुखसाजहै ॥
मुनिराज काज करि मुनिनसमाजयुत लषणसमेतसोयो सुखरघुराजहै॥

दोहा-सजनी सी रजनी भई, वन भो भवन समान ।
कौन शोक जेहि लोकमें, वस्यो भानु कुल भान ॥

इति सिद्धिश्रीसाम्राज्य महाराजाधिराज श्रीमहाराजा बहादुर श्रीकृष्णचन्द्र कृपापात्राऽधिकारी श्रीरघुराज सिंह जू देव जी. सी. एस. आई. कृते रामस्वयंवरग्रन्थे ताडुकावधो नाम दशमः प्रबन्धः॥ १०॥

दोहा-अरुणाई प्राची दिशा, नेसुक कियो पसार ।
शशि विकास कछुहास भो, जहँ तहँ झलमल तार॥
विश्वामित्र उठे प्रथम, सुनि धुनि लालशिखान ।
अति मंजुल बोले वचन, सुनहु भानु कुल भान ॥
समर श्रमित शोभित विजै, शमित शत्रु सुख पाय ।
सूर मिलन आवत ललकि, उठहु लषण रघुराय॥

मुनिवरकी वाणी सुनत, दृग मींजत अलसान ।
परन सेजमें जगत भे, दिनकर वंश प्रधान ॥
मुनिपद वंदन करि मुदित, रघुनन्दन दोउ भाय ।
संध्यावंदन करत भे, निर्मल सरित नहाय ॥
मुनि मज्जन करिकै तुरत, नित्यकृत्य निरवाहि ।
आये ताही तरु तरे, जहँ सोये सुख माहि ॥
वेला विमल विलोकि कै, वासव बात विचार ।
विश्वामित्र वदे वचन, बंधुन विगत विकार ॥

छन्द चौबोला ।

दीनबंधु दोउबंधु वीर वर आवहु निकट हमारे ।
दिव्य अस्त्र सब लेहु शत्रुजित कौशल्याके प्यारे ॥
अस कहि निकटबोलाय गाधिसुत रामलषण दोउ भाई ।
न्यास अङ्ग युत मंत्र अस्त्र सब कहन लगे हरषाई ॥
मैं संतुष्ट अहौं तुमसे अति कीन्ह्यो बड़ उपकारा ।
देउँ अस्त्र अरु शस्त्र दिव्य सब कौशलनाथ कुमारा ॥
जिन अस्त्रन शस्त्रनते रघुवर दानव देव भुजङ्गा ।
दैत्य सर्व गंधर्व सिद्ध चारण जीतहुगे जङ्गा ॥
तीनहुँ लोक वशीकर ह्वैहौ नहिं तुव विश्व समाना ।
की जानत शिव की हम जानत नाहिं जानत जग आना ॥
ते सब अस्त्र शस्त्र रघुनंदन शत्रु विजय कर वारे ।
प्रीति प्रतीति सहित देतो मैं तुमको पात्र निहारे ॥
महादंड अरु महाचक्र जे दिव्य लेहु रघुराई ।
धर्मचक्र अरु कालचक्र पुनि ग्रहण करहु युत भाई ॥
वज्रअस्त्र लीजै नर भूषण शंभुशूल वरजोरा ।
पुनि ऐषीक अस्त्र लीजै अब महा ब्रह्मशर घोरा ॥

देहुँ राम ब्रह्मास्त्र अवारन महाबाहु रघुराई ।
शिखरी त्यों मोदकी गदा युग दीपति भरी सदाई ॥
धर्मपाश अरु कालपाश पुनि दुव दारन दोउ फाँसी ।
सूख ओद लीजै असनी युग रघुनंदन सुखरासी ॥

दोहा—पाशुपतास्त्र अमोघ नहिं, सकै सुरासुर वारि ।
त्यों नारायण अस्त्र यह, सकत क्षणैं जग जारि ॥

छन्द चौबोला ।

अग्निअस्त्र अरु पर्वतास्त्र पुनि त्यों पवनास्त्र प्रमाथी ।
है शिर अस्त्र क्रौंच अस्त्रहु पुनि लेहु लषणके साथी ॥
रुद्रशक्ति अरु विष्णुशक्ति द्वउ लीजै दशरथ लाला ।
किङ्कनि अस्त्र कराल काल सम त्यों कपाल कंकाला ॥
ये सब अस्त्र देव धारत नित जौन तुम्हैं शिखवाऊं ।
महाअस्त्र विद्याधर लीजै पुनि नंदन जेहि नाऊं ॥
खड्गरत्न देतो नरवर सुत अस्त्र महा गन्धर्वा ।
मोहनअस्त्र लेहु रघुवल्लभ मतिमोहन रिपु सर्वा ॥
प्रस्वापन अरु प्रशमन ये युग लीजै प्राणपियारे ।
सूरजअस्त्र लेहु रघुनंदन सूरजके कुलवारे ॥
धर्षण शोषण अरु सन्तापन वैरि विलापनकारी ।
मदन और कंदर्प अस्त्र दुर्धर्ष हर्ष प्रद भारी ॥
तथा पिशाच अस्त्र अरिमोहन लेहु राज दुलहेटे ।
तामस सोमन लेहु बार बहु शत्रुनको दरभेटे ॥
महादुरासद संवर्तक यह अस्त्र लेहु रघुनाथा ।
मौसल अस्त्र महारण कौशल फोरत शत्रुन माथा ॥
सत्यअस्त्र मायास्त्र महाबल घोर तेज तनुकारी ।
पुनि परतेज विकर्षण लीजै सौम्यअस्त्र भयहारी ॥

शीतलअस्त्र त्वाष्ट्र अस्त्रनहु पुनि सकल मनोरथ ०।०॥ ।
पुनि दारुण गभस्तिको अस्त्रहु लेहु जगत विख्याता ॥

दोहा—शीतअस्त्र अति मानवै, लीजै राम सुजान ।
कामरूप सब अस्त्र हैं, बल है विगत प्रमान ॥

छन्द चौबोला ।

परम उदार वार नहिं कीजै दशरथ राजकुमारा ।
दीन विप्र यह क्षिप्र देत सब लेहु अस्त्र सम्भारा ॥
अस कहि विश्वामित्र महामुनि बैठि पूर्व मुख करिकै ।
सकल अस्त्रके मन्त्र रामको दियो सविधि मुद भरिकै ॥
त्रिभुवन वशकारक रिपुदारक दुर्लभ सुरासुरनके ।
राम लषणको दियो अस्त्र ते जैकर जगत नरनके ॥
जस जस मंत्र पढ़त मुनिनायक अस्त्रन के तेहि काला ।
तस तस प्रगटत रूपवान सब अस्त्रहु शस्त्र विशाला ॥
जोरि पाणि रघुनंदन सन्मुख खड़े भये सब आई ।
कीन्ही विनय राम तुम्हरे वश दीजै नाथ रजाई ॥
तुम्हरे किङ्कर सकल अस्त्र हम जो जो शासन दीजै ।
सो सो करब ततक्षण सब हम कछु संदेह न कीजै ॥
कहे महाबल अस्त्र शस्त्र जब तब भाष्यो रघुराई ।
बसौ हमारे मनमें सिगरे करियो काज सदाई ॥
अस कहि तिनको पाणि पकरि प्रभु धारण करि मनमाहीं ।
जानि आपने सेवक सबको दीन्ही बिदा तहाँहीं ॥
अस्त्र शस्त्र सब पाय राजसुत मुनिवरके पद वंदे ।
विश्वामित्र अशीष दियो तब रहहु सदैव अनंदे ॥
चलहु लला अब सिद्धाश्रमको पद रज पावन कीजै ।

नेसुक रह्यो और उतकंटक निजभुजबल हरि लीजै ॥
दोहा—सुनि कौशिकके वचन वर, राम लषण कर जोरि ।
कह्यो चाय चलिये चटक, नहिं विलंब मति मोरि ॥

छन्द चौबोला ।

यहि विधि पाय अस्त्र अरु शस्त्रहु प्रभु प्रसन्न मुखभयऊ ।
परमपवित्र लोक पावनपद चलनपंथ मन दयऊ ॥
चलत समय पुनि विश्वामित्रहिं कह्यो जोरि युग पानी।
सकल सुरासुर दुराधर्ष सब अस्त्र लहे सुखदानी ॥
करिकै कृपा देहु मुनिवर मोहिं अस्त्रनको संहारा ।
सुनि मुनि सकल अस्त्र संहारन कीन्हे सविधि उचारा ॥
सत्यवन्त अरु सत्यकीर्ति अरु हर्षन अरु संरंभा ।
नाम पराङ्मुख और अवाङ्मुख प्रतीहार विन दंभा ॥
लक्ष अलक्ष युगल दृढ़नाभ सुनाभ दशाक्ष शतानन ।
दश शिरषन अरु महा सतोदर रिपु गण गज पंचानन ॥
पद्मनाभ अरु महानाभ दोउ द्वन्दहु नाभ सुनाभा ।
ज्योति निकृन्त निराश विमल युग जोगंधर बड़ आभा ॥
अरु विनीद्र तिमि मत्ताहि प्रसमन तैसहि सारचिमाली ।
रुचिरवृत्ति मतापितृ सौमनस धन धानहुँ धृत माली ॥
तिमि विभूति अरु वनर कह्यो युग तैसहि वन कर बीरा।
कामरूप मोहन आवरणहुँ लेहु काम रुचि बीरा ॥
जृम्भक सर्वनाभ सन्धानहु बरन आदि संहारा ।
ते कृशाश्वके पुत्र प्रकाशी सदा काम संचारा ॥
अस्त्रनके संहार सकल ये लीजै राजकुमारा ।
तुमहीं ग्रहण करनके लायक दुतिय न दुनी निहारा ॥

दोहा-मुनि अस्त्रन संहार मनु, कीन्हें सविधि बखान ।
गुरु पद वंदि अनंदितै, लीन्हें राम सुजान ॥

कवित्त ।

प्रगटभयेतेमूर्तिमन्तअतिभासमन्तकोईधूमधामकोईमनहुँअँगार है ।
चंदरवितुल्यकोई जोरेहाथहर्षमोई मधुरवचनकीन्हे रामसे उचार है ॥
भनैरघुराजहमरावरेकेकिङ्करहैं कीजैजौनशासनसोकरैं विन वारहै ।
हँसिरघुवंशमणिकह्योवसौमेरेमन करियोसहाइअबैजाइयोअगारहै ॥

दोहा-रामवचन सुनि हर्षि कै, दै परदक्षिण चार ।
मन वसिहैं अस कहि गये, ते सब उपसंहार ॥
गये जानि तिनको मुदित, विश्वामित्रहि राम ।
चरणवंदि बोलत भये, चलहु नाथ जहँ काम ॥
शीशसूँघि मुखचूमि मुनि, आगे करि दोउभाइ ।
चले प्रमोदित पंथमहँ, बार बार हरषाइ ॥

छन्द चौबोला ।

महाभयावन रह्यो ताडुका विपिन वृक्ष समुदाई ।
भयो सोहावन अतिशै पावन परशत पद रघुराई ॥
निकसि ताडुका वनते रघुपति निरख्यो दूरि पहारा ।
ताके निकट मेघ इव मंडित देख्यो श्याम पतारा ॥
तब अति मधुर वचन रघुनायक मुनिनायक सों बोले ।
नाथकौन वन श्याम मनोहर पादप अतिहि अमोले ॥
वृक्ष खंड अति रुचिर विराजित अति अचरज मन मोरे ।
कुसुमित लता ललित लहराती तरुगण जिमि कर जोरे ॥
आय भूमि तरु शाखा फल फूलनके भारा ।
नाना रङ्ग कुरङ्ग सङ्ग यक चरैं सुढंग अपारा ॥
बोलत सुखी विहङ्ग रंग बहु अङ्ग अङ्ग छवि माते ।

मंडित मधुकरके गुंजारन थल थल विमल दिखाते ॥
यह ताड़ुका भयावन वनते निकसी पन्था सूधी ।
सोई विपिन मनोहर जाती नाथ कतहुँ नहिं रूधी ॥
यही पंथ ह्वै चलव सहित सुख देश मनोहर लागै ।
नव पल्लव पिक वल्लभ मंजुल पिक कूजै वड़ भागै ॥
कहुँ सर कहुँ सरसी रस संयुत सरस सरस सरसाते ।
अति गंभीर नीर मणि सन्निभ सीर समीर चलाते ॥
कल कुञ्जन गुंजत मंजुल अलि वंजुल सुरभि सोहाई ।
मनरंजन कंजनकी शोभा मंजन योग जनाई ॥

दोहा—कहहु नाथ कानन कवन, पंचाननते हीन ।
काको यह आश्रम विमल, देखतही सुखदीन ॥

कवित्त ।

केतीदूरनाथरावरीहै भलीयज्ञथली पुण्यतेपलीहैकौनगलीगुरुताकीहै ।
आवैंजहांब्रह्मघातीराक्षसजमातीदुष्टयज्ञउतपातीसुनैगतिअतिबाँकीहै ॥
भनै रघुराज मखराखनकेहेतुमोहिं भेज्योमहाराजवसुधाकेधर्मधाकीहै ।
राक्षसनंमारिमखरक्षणक्रियाकोकरिपूरणकरौंगोआसुआशमनशाकीहै।

दोहा—यह सुनिबेकी आश मोहिं, वर्णन करहु मुनीश ।
कहँ आश्रम तुव कौन मग, काको वन यह दीश ॥

छन्द चौबोला ।

सुनत वैन रघुकुल नायकके मुनिनायक मुद मानी ।
सो काननकी आदि अन्तते लागे कहन किहानी ॥
यहि आश्रममें वर्ष हजारन सौ युग लौं भगवाना ।
करत कठिन तप नारायण प्रभु वसे मुदित विधि नाना ॥
यह पूरुब वामनको आश्रम छल्यो जो बलि असुरेशै ।
याको नाम रामसिद्धाश्रम भे सिध करत कलेशै ॥

पुरासुरासुर भयो समर जब सुधाहेत अति घोरा।
जीते देव दैत्य भागे रण दानव मरे करोरा॥
शुक्राचारज सबन जिवायो पढ़ि पढ़ि मन्त्र महाना।
बलिहि विश्वजित यज्ञ करायो असुर भये बलवाना॥
चढ्यो महाबल बलि वासव पै अमरावति कहँ घेर्‌यो।
भगे देव सब देखि दैत्य बल बलि शासन निज फेर्‌यो॥
सुरपुर नरपुर और नागपुर बलिकी फिरी दोहाई।
लग्यो करन राज त्रिभुवनकी वासव लुक्यो डिराई॥
महायज्ञ कीन्ह्यो अरंभ बलि विमल नर्मदा तीरा।
आप भयो यजमान शुक्र आचारज भे मतिधीरा॥
देव अग्निको आगे करिकै यहि आश्रमको आये।
विष्णु जगतपतिको विपत्ति निज आतुर वचन सुनाये॥
हे करुणानिधान नारायण अखिल जगतपति स्वामी।
कौनि भाँतिते विनय करैं हम तुम हौ अंतर्यामी॥
दोहा—लीन्ह्यो बलि सुरराज्य सब, शक्रहि दियो निकारि।
आये हम तुम्हरे शरण, राखहु लाज मुरारि॥

छन्द चौबोला।

हे प्रभु जबलौं यज्ञ समापति होइ न यहि बलि केरी।
तबलौं करौ देव कारज प्रभु हानि होति लहि देरी॥
सत्यसन्ध असुरेशयज्ञमें जे जे याचक जाहीं।
जो जो माँगत सो सो देतो रहत आश पुनि नाहीं॥
बलिको दान पाय याचक जग होत दरिद्र दरिद्री।
समरथ महामनोरथ पूरत होत अभद्री भद्री॥
ताते प्रभु सुरकारजके हित करहु देव कल्याना।
माया बटु ब्राह्मणको वपु धरि बलि पहँ करहु पयाना॥

प्रभु हँसि सुनि देवनकी वाणी एवमस्तु मुख भाषे।
तेहि अवसर कश्यपहु अदिति हरि आराधन अभिलाषे॥
अदिति और कश्यपहु करत तप बीते वर्ष हजारा।
करि समाप्त व्रत मधुसूदनकी प्रस्तुति किये अपारा॥
कृष्ण तपोमय तपोराशि तुम तपमूरति तपरूपा।
तप करि देखत तुमहिं यथारथ पुरुषोत्तम सुरभूपा॥
यह जग सब तुम्हरे शरीर महँ जोहत यदुपति योगी।
तुम अनादि मन वच अतीत हौ जग विकार बिन भोगी॥
परब्रह्म परपुरुष परात्पर परगति परमप्रभाऊ।
हम शरणागत हैं तिहरे प्रभु करुणा मृदुल सुभाऊ॥
कश्यप वचन सुनत जगनायक बोले मंजुल बानी।
तुम हौ विगत सकल कल्मष मुनि माँगहु वर विज्ञानी॥

दोहा—वर पावनके योग हौ, अभिमत मुहिं वर देव।
पैहौ तुम कल्याण बहु, विफल कतहुँ मम सेव॥

छंद चौबोला।

सुनि मुकुन्दके वैन अनंदित कह्यो मरीचि कुमारा।
मम अरु अदिति अमर अभिलाषा पूरहु परम उदारा॥
देहु यही वर दानिशिरोमणि होवहु पुत्र हमारे।
पुत्रवती ह्वै अदिति आपसे त्यागै सकल खभारे॥
लहुरे होउ बंधु वासवके बहु विधि विबुध विषादी।
करहु सहाय नाथ देवनकी होय आसु अहलादी॥
यह आश्रम राउर प्रसादते सिद्धाश्रम कहवाई।
उठहु देवहित देव देव अब कर्म सिद्ध ह्वै जाई॥
कश्यप कही मानि मधुसूदन अदिति गर्भमहँ आये।
प्रगट भये लहि श्रवण द्वादशी वामन नाम कहाये॥

इक कर छत्र कमण्डलु इक कर शिखा सूत्र अति सोहै ।
तरुण तरणि सम तेज प्रकाशित तनु सुंदर मन मोहै ॥
वामन वपु धरि वासुदेव अस वैरोचनपहँ आये ।
वटुवपु अति विचित्र अवलोकत वलि विस्मय रस छाये ।
असुर राज शिर नाइ कह्यो पुनि माँगु विप्र मन जोई ।
तोर मनोरथ पूरण करिहौं बात और नहिं होई ॥
तीन पाद पुहुमी प्रभु माँग्यो देन लगे बलिराई ।
शुक्राचारज वारन कीन्ह्यो दीन्ह्यो विष्णु जनाई ॥
सत्यसंध बलि तदपि न मान्यो पुहुमी दियो त्रिपादा ।
पावत दान बढ्यो तहँ वामन जहँ लग जग मरयादा ॥

दोहा—तीन पाद महि माँगि इमि, नापि जगत निज पाय ।
वासुदेव वासवहि दिय, तीनि लोक सुखछाय ॥
जानहु तुम अपनी कथा, पूछहु यथा अजान ।
जो जानो मेरो रह्यो, नेसुक कियो बखान ॥
यह आश्रम संसार को, श्रमनाशन रघुराज ।
वामन प्रभु परभाव ते, सिद्धाश्रम कृतकाज ॥
वामन प्रभु पदभक्ति वश, मैं इत करहुँ निवास ।
का पूछहु जानहु सबै, रवि किन जान प्रकास ॥

सवैया

याही लिये लला माँगि महीप सों ल्याये लेवाय इतै दोउ भाई ।
आवैं इतै रजनीचर घोर करैं उतपात महा दुखदाई ॥
श्रीरघुराज सुनो रघुराज न दूसरि आश तिहारी दोहाई ।
धीर धुरंधर वीर शिरोमणि देखिहौं रावरे की मनुसाई ॥ १ ॥
खेलि उतै मृगया सरयू वन मारे अनेकन बाघ बराहू ।
सीखी कला विकला धनु की लहे अस्त्रन तामें निहोरन काहू ॥

श्रीरघुराज गरीब निवाज करौ सुधि ज्यों गजराज औ ग्राहू ।
ज्यों मधुकैटभ ज्यों मुरकोतिमि मारियेआजुमरीच सुबाहू २

दोहा—सुनि धुनि संयुत मुनि वचन, विहँसे राज किशोर ।
तुव प्रताप सब सिद्ध गुरु, नहिं कछु मोर निहोर ॥

छन्द चौबोला ।

सुनि रघुनन्दन वचन मनोहर मुनिवर हिय हरषाने ।
मिटी शंक सब ह्वै निशंक अति कहे वैन सुखसाने ॥
पहुँचब आजु राम सिद्धाश्रम हम तुम प्राणपियारे ।
यथा हमारो तथा तिहारो भेद न परत निहारे ॥
अस कहि मुनिनायक रघुनायक लषण सहित पगु धारे।
मनहुँ पुनर्वसु युगल तार विच इंदु प्रकाश पसारे ॥
सिद्धाश्रम महँ राम लषण मुनि कीन्ह्यो जबै प्रवेशा ।
लखि तहँ के वासी तपराशी धाये विगत कलेशा ॥
विश्वामित्र चरण पंकज महँ प्रमुदित किये प्रणामा ।
गुरु को पूजन कियो सविधि पुनि जाने हम कृतकामा ॥
राम लषणको मुनि सिगरे पुनि अनुपम अतिथिविचारी ।
कन्द मूल फल फूल भेंट दै दीन्हे शीतल वारी ॥
दीनबंधु दोउ बंधुन को मुनि किये परम सत्कारा ।
दियो अशीश मुनीश ईश गुणि स्वागत वचन उचारा ॥
बैठे राम लषण मखशाला विश्वामित्रहि आगे ।
मुनि मण्डल मण्डित रघुनन्दन निरखहिं सब अनुरागे ॥
कुशल प्रश्न पूछत रघुवर को बीति गये द्वैदंडा ।
तब कर जोरि कह्यो कौशिक सो प्रभु करि कर कोदंडा ॥
आजुहिं ते बैठो मुनिनायक निज मख दीक्षा माहा ।
करहु निशंक यज्ञ विधि संयुत ऐह निशिचर नाहा ॥

दोहा—होइसिद्ध सिद्धाश्रमहु, वाणी सत्य तुम्हार ।
आप प्रताप न दाप कछु, पाप आप ग जारि ॥
राजकुमारन के वचन, भरे वीररस रङ्ग ।
सुनि कौशिक मुनि मुदित मन, कियो अरम्भ प्रसङ्ग॥
राम लषण मुख भाषि अस, कियो निशा सुख शैन ।
कौशिक मुनि सब मुनिन युत, शैन किये भरि चैन ॥
पाय प्रभात प्रहर्षि उठि, करि मज्जन दोउ भाय ।
तिमि संध्यावन्दन विमल, दियो अर्घ्य दिन राय ॥
गायत्रीको जाप करि, प्रातकृत्य निर्बाहि ।
होम करत कौशिक चरण, गहे तुरन्त उछाहि ॥
देश काल ज्ञाता युगल, त्राता राज किशोर ।
देश काल अनुरूप तहँ, कहे वचन वरजोर ॥
जानन चाहैं नाथ हम, रजनीचर जेहि काल ।
विघ्न करन क्रतु आवते, प्रेरित काल कराल ॥
रहैं सजग तौने समय, नहिं, भ्रम होइ मुनीश ।
हमको समय बताइकै, सुचित भजौ जगदीश ॥
समर उमङ्ग भरे सुनत, राम लषणके वैन ।
सिगरे मुनि बोलत भये, तिनहि सराहि सचैन ॥

सवैया ।

सुंदर साँवर राजकिशोर भली यह बात कही मन भाई ।
हौ समरत्थ सबै विधि ते दशरत्थ के लाडिले आनँददाई॥
कौशिक दिक्षा लई मख की भए मौन वदे विधि जैहै नशाई ।
आजु ते औ षटवासर लौं रघुराज जू रक्षण कीजै बनाई ॥

दोहा—सुनत मुनिन वाणी विमल, यशी अवधपति लाल ।
सयुग कसे कम्मर कठिन, करन समर तत्काल ॥

कवित्त घनाक्षरी ।

चामीकरकवचविराजतवपुषदोऊ कटिमेंकरालकरवालकालकेसमान
मुकुटविशालमाथेमाणिकप्रवालगाथे हाथेमेंविशालचापदाहिनेदिसतवान॥
भनै रघुराजयुगकंधननिषंगसोहैं अंगअंगवीररसरंगअतिउमगान ॥
जंग जैतवारेदशरत्थकेदुलारेभये समरतयारेअरुणारे दृग दरशान

दोहा—सुनत दुगुन देखत त्रिगुन, चौगुन समर मँझार ।
मनहुँ फोरि बख्तर कढ़त, राम अंग सुकुमार ॥

कवित्त ।

लसतदुकूलपतिभूषणनखतज्योति उदैमान शीतभान वदनविराजते ।
करनसुहाने दसतानेमणिकंचनकेजानेजगवीरत्योंबखानेमुनिराजते ॥
भूपतिकिशोरवागैयज्ञशालाचारोंओर तपोवनरक्षितहैराक्षससमाजते ।
भनैरघुराज कोशलेशकेकुमार सुकुमारमारमदमारत्यागेनींदआजते ॥

दोहा—राम लषण षट निशि दिवस, नींद भूख अरु प्यास ।
तजे तमकि संगर सजे, मख रक्षणके आस ॥

सवैया ।

बीति गये जब पंच निशा दिन आयो छठौ दिन पूरणमासी ।
पूरण आहुति को समयो भयो भे मुनि वृन्द विषादित त्रासी ॥
श्रीरघराज कह्यो लषणै लला होउ तयार विलंब विनासी ।
जानि परै हमहीं हठि आजु निशाचर सैनकी आवनि खासी ॥

दोहा—राम वचन सुनि मुनि सकल, भरे समरके जोम ।
उपाध्याय उपरोहितौ, करन लगे विधि होम ।
स्रुवा कुशा अरु चमस युत, कुसुमहु समिध समेत ।
विश्वामित्रहि हवनमें, ज्वलित धूम को केत ॥
ज्वालमाल लखि वेदिका, मुनि सब अशुभ विचारि ।
कौशिकते बोलत भये, गुणि आगम निशिचारि ॥

पंच दिवस मख विधि सहित, भयो मन्त्रयुत काज।
छठवें दिन अब विघ्न कछु, जानि परत मुनि आज॥

कवित्त।

भाषतपरसपरऋषिनकेभीतिभरेमौनमुनिकौशिकनबोल्योरामहेरिकै॥
दक्षिणादिशातेमनोभादँवनिशाहैघोरउठ्योअंधकार [illegible]

[illegible] ॥
हाहाकारमाचिरह्योविश्वामित्रआश्रममेंहँसिरघुराजरामकेतननेवारे हैं॥
बैठ्योगाधिनन्दनभरोसे रघुनन्दनके जानतहमारे रघुबीर रखवारेहैं॥

दोहा—उठैं यथा कारीघटा, पूरब पवनहिं पाय।
श्याममेघमाला गगन, दक्षिण परी देखाय॥

छन्द भुजङ्गप्रयात।

धरामें मच्यो धूरिको धुन्धकारा। प्रलैयामिनीसों भयो अंधकारा॥
भई गाज कैसी गराजे दराजे। कहैं विप्र कैधौं प्रलय होति आजे॥
करैं रात्रिचारी महाघोर शोरा। किहे मूढ़ माया सोदायानथोरा॥
चले आवते आस आकाशचारी। महा भीम काया निशाके विहारी॥
द्रुतै व्योम धावैं यथा राहु केतू। किये यज्ञके विघ्नको भूरि नेतू॥
लखे यज्ञ धूमैं हियेमें उराये। चहूँ ओरते शस्त्र लै वेगि धाये॥
महामूढ़ मारीच तैसे सुबाहू। सुने गात को घात आघात दाहू॥
महाराक्षसी सैनके बीच माहीं। प्रचारैं दोऊ बार बारै तहांहीं॥
धरादेवको अध्वरै ध्वांसि डारौ। रची यज्ञशाला भटौ जायजारौ॥
बचैं विप्र नाहीं सबैको अहारौ। लगे यज्ञ जूपै जरै ते उखारौ॥
भरौ यज्ञवेदी मलौ मूत्र धारा। उपाधी महा गाधिको है कुमारा॥

करै यज्ञ मानै नहीं वार बारा । सहाई बोलायो उभै भूप बारा ॥
सुनै बैन मारीचके रात्रिचारी । चले चाय चारौदिशा शस्त्रधारी ॥
नहीं जानते आपनो हाल काला । करै यज्ञकी रक्ष त्रैलोक्यपाला ॥
महाभीमकाया करै भूरि माया । चढ़ैव्याघ्रवाराहव्यालौनिकाया ॥
कहूं भास होते कहूं अंधकारा । कहूं मेघ धावैं तजैं रक्तधारा ॥
भरी वेदिका शोणितै ओघमाहीं । लगे वषन माँस हाडौ तहांहीं ॥
यही भाँति कीन्ह्यो महायज्ञ भंगा । न जानै महा मीचको मूढ़संगा ॥
करै शोर भारी कहूं देत तारी । निशाकाल चारी कहूं देतगारी ॥
कहूं दन्त पीसैं कहूं खीस काढ़ैं । कहूं छोट होते कहूं वेगि बाढ़ैं ॥
यही भाँति सो राक्षसी सैन भारी । कियोहै उपद्रव महाभीतिकारी ॥
नहीं धर्मको लेश नेको शरीरा । करै नित्य गो विप्रको भूरि पीरा ॥

सोरठा—यहि विधि जव मारीच, सहित सुबाहु अनेक भट ।
जानि न आपन मीच, किये उपद्रव अति कठिन ॥
उड़ि उड़ि आसु अकाश, भरे कुण्ड शोणित समल ।
करि करि कोप प्रकाश, धाये दाहन मख भवन ॥

कवित्त ।

आयगेनिशाचरविलोकिरघुवंशवीरवेदीकोविलोकेभरेशोणितकीधारहै ॥
धाये कंजपायनसोंदोऊबंधुकोपकैके राक्षसीचमूनिहारे गगन मँझारहै ॥
प्रबलमरीचऔसुबाहुचोंपि चलेआवैं भाषतवचनआजुकौनरखवार है ॥
भनैरघुराज नवनलिन विशाल नैन बोले मंजु बैनचैनउरमेंअपारहै ॥
देखोदेखोलषणभषनकोभरोसकीन्हे चखननिकारेमांसभखनपियारे हैं ॥
धाये चलेआवैंधर्मधुराधसकावैं भीरुभीतिउपजावैंनहिंसमरजुझारे हैं ॥
भनैरघुराजसीखेदिव्यअस्त्रकौशिकसे तिनकीपरीक्षालेनमनमेंहमारेहैं ।
मारिमानवास्त्रकोउड़ाइदेतोअंबरमें कादरकुटिलक्रूरकौनफलमारेहैं ॥
भाषिरघुवीरसनधानिएकतीर धनुमानवास्त्रकोप्रयोगकीन्ह्योमंत्रपढ़िकै ।
खैंचिगुणकानलैंसमानपविशोरकैकैतकिउरअरिकोचलायोबाणबढ़िकै ॥

भैनेरघुराजरामसायकउड़ायोताहि फेक्योशतयोजनसमुद्रहूतेकाढ़िकै ।
भ्रमतभ्रमतगिरयोअतिहिअचेतह्वैकैवम्योपारावारपारआयोनाहिंचढ़िकै ॥

दोहा—ताते कारज जानि कछु, हरन हेत भुव भार ।
प्रानदान मारीचको, दीन्ह्यो राम उदार ॥
उड़ै यथा घनकी घटा, पौन प्रचंडहि पाय ।
उड़यो तथा मारीच रण, परयो सिंधुमहँ जाय ॥

छन्द मोतीदाम ।

मारीच को लखि राम । बोलेसु करुणा धाम ॥
यह मानवास्त्र महान । मैं हन्यो करि संधान ॥
लै गयो शत्रु उड़ाय । दिय सिंधुमध्य गिराय ॥
कीन्ह्यो न तेहि बिन प्रान । लखि लेहु लषण सुजान ॥
राक्षस अनेक प्रचंड । आवत इतै बरिबंड ॥
सबमें सुबाहु प्रधान । आवत इतै अनखान ॥
मानत नहीं यह दुष्ट । मोपर भयो अति रुष्ट ॥
हनिहौं निशाचर वृन्द । बचिहैं न करि बहु फन्द ॥
ये सकल धर्म विहीन । अति हैं अधर्म प्रवीन ॥
छावत पुहुमिमहँ पाप । मुनिजन करत संताप ॥
बहु विघ्न करते यज्ञ । है मूढ़ मति अति अज्ञ ॥
नित करत शोणित पान । अबलौं न अघानि अघान ॥
राक्षस पिशाची योनि । हठि हेरि ते अनहोनि ॥
ताते हनौंगो आजु । आये बिघन मख काजु ॥
इनके बधे नहिं दोष । कर धरहु धनु करि रोष ॥
अस वचन कहि अभिराम । कोपे समर श्रीराम ॥
उत उड़त लखि मारीच । शुभबाहु कोप्यो नीच ॥
बोल्यो भटन ललकारि । करि कठिन कर तरवारि ॥

धोखो दियो मुनि मोहिं । मैं लियं प्रथम नहिं जोहि ॥
ल्यायो कुमार बोलाय । निज करन हेत सहाय ॥

दोहा—रूप अनोखे अति नवल, चोखे रण संचार ।
धोखे धोखे युध करत, हैं कोउ राजकुमार ॥
सरल युद्ध मारीच किय, इन दिव्यास्त्र चलाय ।
धोखे धोखे रोषि रण, दीन्ह्यो ताहि उड़ाय ॥

छन्द पद्धरी ।

मुहि तदपि शंक नहिं लगति नेक । अब मारे युगल राखिहौं टेक ॥
धावहु प्रवीर बाचैं न भागि । मख भवन मध्य करिदेहु आगि ॥
अब खाय लेहु दोउ भूप बाल । अब दयाकेर कछु है न काल ॥
पुनि दौरि खाहु कौशिकहि जाय । द्विज बचैं नहीं कतहूं पराय ॥
मारीच बहुरि आवत तुरंत । हम करब उभै द्विजवंश अंत ॥
बचिहैं न धेनु धरणी मँझार । नहिं रही धर्मको कहुँ प्रचार ॥
कहि यों सुबाहु करि घोर शोर । धायो तुरंत जहँ नृपकिशोर ॥
बोल्यो प्रगर्भ वाणी कठोर । धोखे उठाय दिय भ्रात मोर ॥
बचिहौ न आजु ताजि समर ठोर । मैंलखत तिहारो बाहु जोर ॥
प्रभु कह्यो मंद मुसकाय बैन । हम क्षत्रि जाति कछु लगति भैन ॥
नहिं शंक करौ मम भगन हाल । रणक्षत्रि जाति पीछे देवाल ॥
तुम वीर बडे बहुपाप कीन । ताते विरंचि अब फलहु दीन ॥
तुम हने बापुरे द्विज वृथाहि । अबलौं न पर्‍यो रण क्षात्रि पाहि ॥
कस करौ न विक्रम भूरि आज । मैं खडो समर मख रखनकाज ॥
करियो सचेत संग्राम काम । मम विश्व विदित है राम नाम ॥
तुम संग सैन ल्याये अपार । हमहैं अकेल भ्राता हमार ॥
अब कठिन परी मख भवन जाब । सकिहौ न लंकपति दै जवाब ॥
सुनि अस सुबाहु रघुनाथ बैन । भरि कोप महा करिलाल नैन ।

करवाल काढ़ि कर करि कराल। धायो प्रचण्ड मनुकाल काल॥
भूधराकार ताको शरीर। करि घोर शोर द्विज देत पीर॥
दोहा–धावत आवत भीम भट, समर सुबाहु सुबाहु।
संधान्यो शर भानुकुल, कुमुद नवल निशि नाहु॥

कवित्त।

परमकराल मानौ कालहूको काल व्याल,
मुनिननिहालकर तेज आलवाल है।
अतिहि उताल बढ्यौ पावकको मंत्रजाल,
उठी ज्वालमाल डग्यो दिग्गजको मालहै॥
चन्द्र भाल चारि भाल लोकपाल भे विहाल,
हल्ला परयो स्वर्ग ते रसातल पताल है॥
सूखे ताल बंदगाल विहँसे लषण लाल,
रघुराज जबै शर साज्यो रघुलाल है॥
दोहा–छोड़त वाण कठोर तहँ, भयो धनुष टंकोर।
दिग दन्तिन के फोरि श्रुति, चल्यो विशिख बरजोर॥

कवित्त।

कोटिपविपातसों अघात घोर शोर छयो,
अवनी गगन उतपात अतिछायगो।
दिशि अवदात होन लाग्यो है प्रभात दाह,
उल्कापात वज्रपात धरणि देखायगो॥
भनै रघुराज राम सायक प्रबल शत्रु,
छातीको विदारि कै निषंग पुनि आइगो।
सहित सनाहु भरो समर उछाहु,
महाबाहु सों सुबाहु बारि बुल्लासों विलायगो॥
दोहा–पावकशर छोडयो इतै, प्रभु करि जै अभिलाष।
उतै समरमहँ शत्रुकी, उड़त देखानी राष॥

छन्द गीतिका ।

उड़िगो मरीच सुबाहु जरिगो देखिकै रजनीचरा ।
करि घोर शोर अथोर भूप किशोर पै धाये धरा ॥
भूधराकार शरीर धरु धरु मारु मारु उचारहीं ।
तलवार पैनीधार धारे बार बार प्रचारहीं ॥
कोउ लिये कुन्तल फरश तोमर आस पाश पसारहीं ।
कोउ परिघ मुद्गर मुशल हल गल हलकि रण संचारहीं ॥
कोउ करत माया भीमकाया वमत पावक ज्वाल हैं ।
कोउश्वानमुख कोउस्यारमुख कोउ विकटवदन बिड़ालहैं ।
कोउ नागमुख कोउ कागमुख कोउ नाग छोरे बार हैं ।
मुख मुच्छ मानहु भ्रमर गुच्छ बुभुच्छ कुच्छ अपार हैं ॥
सब समर चोखे सकल रोषे स्वामि जोखे जीतिके ।
कुलके अनोखे बाल धोखे चले पुषित अनीतिके ॥
राक्षस हजारन घनाकारन नृप कुमारन मारने ।
रणमें न हारन शस्त्र डारन लगे प्रबल प्रचारने ॥
लखि लषण तैसहि लक्ष्मणाग्रज तज्यो तुकि शर धार हैं ।
कोदंड मण्डल करत रण संचरत बारहिं बार हैं ॥
सायक चले विकराल व्याल विशाल इव तेहि काल हैं ।
निशिचर करत वश काल हाल कृपाल कौशलपाल हैं ॥
भट कटत चटपट हटत नहिं कटकट करत खल दंत हैं ।
लटपट गिरत झटपट उठत अटपट न मानत अन्त ॥
भै घुसी घट घट कहत हट हट समर नटखट करत ।
कोउ बढ़त मढ़त प्रमोद रणको गढ़त असिमुख लरत हैं ॥
रणधीर श्रीरघुवीर छोडत तीर वेग समीर हैं ।
अरि पीर दैत्यन जीरकै भयभीर किय खल भीर हैं ॥

कोउ कटे कंधहु कमर बंधहु उठे अमितकबंधु हैं।
अरिअन्ध किय सतिसन्ध हनि रण बाँकुरे दोउ बन्धु हैं॥
परिगयो हाहाकार समर मँझार खलन अपारमें।
तनु कटे अति विकरार शोणित धार बहि संहारमें॥
महि मुंड रुंडन झुण्ड मंडित कुंड शोणितके भरे।
जिमि चंड मुण्डन दल्यो चंडी राम तिमि खल संहरे॥
तहँ काक विपुल बलाक गीध शृगाल आमिष भखतहैं।
योगिनि जमाति कराल कीकैं देत पल अभिलषत हैं॥
कर खड्ग खप्पर विगत कप्पर पुहुमि उप्पर नचत हैं।
बैताल भूत पिशाच केती कला गहि महि रचत हैं॥
अंबर उड़त निशिचरनिकर शर लगत झरि पुनि परतहैं।
भरभर भगत खरभर मचत कोउ डरत कोउ उठि लरतहैं॥
छाये गगन मंडल अखंडल बाण मण्डल रामके।
चंडांशु परम प्रचंड कर मूँदे भये संग्रामके॥
लै भगे देव विमान नहिं अवकाश रह्यो अकाशमें।
शर भरे नाग निवास नरन अवास नाक निवासमें॥

दोहा—समर कोपि रघुवंशमणि, जानि मुनिन बड़ रोग।
निशिचरनिकर विनाश हित, किय पवनास्त्र प्रयोग॥

छन्द तोटक।

जब छोड़ि दियो पवनास्त्र हरी। प्रगटे शर लाखन ताहि घरी॥
शर झुंडन झुंडन छाइ गये। रजनीचर वीर विलाय गये॥
अवशेष रहे रिपु जे सिगरे। इक एकनपै शर लाख गिरे॥
पद जानहु जंघ भुजा शिरको। किय खंड अखंड रहै थिरको॥
अति आरत शोर मच्यो रण में। छनदाचर क्षीण भये क्षण में॥
कोउ तातन भ्रात पुकार करैं। कोउ आँतन गातन ऐंचि मरैं॥

सब सेन सुबाहु मरीचहुकी । हतिगै रण दूर नगीचहुकी ॥
नहिं बाचि कोऊ घर फेरि गये । रघुनन्दनके शर प्राण लये ॥
पुनि पौन प्रचंड अखंड चल्यो । रजनीचर सैन बहोरि मल्यो ॥
सब एकहि बार उड़ाय दियो । रण लोथिनसों तहँ सून कियो॥
रघुवीर विचित्र पराक्रमको । लखि देव सबै न कछू श्रमको ॥
यक बार बजाय नगारनको । बरषे तहँ फूल अपारनको ॥
जय शोर मच्यो चहुँ ओर तहाँ। सुर पावत भे मनमोद महाँ ॥
नभ अप्सर नाचि रही अमला । सुर गायक गाय रहे सकला ॥
जय कौशलपाल कृपाल हरी । सुरवृन्दनकी भय भूरि हरी ॥
निज सायक ते इन पापिनको। निज लोक दियो द्विज दापिनको॥
इमि गाय बजाय नवाय शिरै । सुर गे निज धाम विचारि फिरै॥
इत कौशिक आय प्रमोद भरे । मुनिसंग सुनावत जैति हरे ॥
दोउ बंधु खड़े रणजीति जहां । चलि आवत भे मुनिनाथ तहां ॥
युत बंधु लखे रघुनन्दनको । जिन काटि दियो दुख द्वंद्वनको ॥

दोहा—आनँद वश मुनिनाथ सों, बोलि न आयो बैन ।
लखन लगे दोउ बंधुकी, शोभा अनमिष नैन ॥

कवित्त ।

सहज निशाचर समरअवगाहिठाढ़े उरमें उछाहि तनुअतिरणधीर हैं ।
नेकुश्रमबिंदु इंदु वदन विराजमान मन्दमन्दफेरतसुबामकरतीर हैं ॥
भनै रघुराज रघुराज दुलहेटे दोऊ मेटे महिदेवनकी देवनकी पीर हैं ।
मानहुँ निहार फारि युगलतमारिकढ़े मढ़ेसुखमाते तैसे युगरघुवीर हैं ॥
कहूँ कहूँ शोणितकेकन तनुराजें अति उडिरिपुतनुतेपरेहैं बाण जोरते ।
सुभगतमालतरुडारनविहार करैं चुनीराय मुनी मानो आनँद अथोरते ॥
भनैरघुराजमुनिराजकाजकीन्ह्योपूर देवनसमाजकोउबारचोदुखघोरते ।
कटिमेंनिषंगकसेलषणप्रवीरसंग कौनरणधीरआजुकौशलकिशोरते ॥

अस्तुतिकरतमुनिवृन्दठाढेचारोंओर विश्वामित्रचूमैंमुखलेतहैंबलैयाको ।
झारिकैतमीचरसँहारिकैपसारियशदुन्दसोंउचाग्योमोहिंलीन्हैंमंगभैयाको ॥
भनैरघुराजवेदविप्रकोपलैयापायो संगकोडोलैयारघुकुलकेजोन्हैयाको ।
बोलेमुनिभैयासत्यवचनकैहैयाकिधौंयाकोधन्यमैयाकिधौंमेरीधन्यमैयाको ॥

दोहा–राम बाँह पूजे मुनिन, अस्तुति करत तहाँहिं ।
यथा सुरासुर रण जिते, सुर पूजे हरि काहिं ॥

सवैया ।

कौशिकको लखि श्रीरघुनन्दन धाय गिरे पदपङ्कजमाहीं ।
जोरिकै पङ्कज पाणि सुखी मुख मंजुल वाणि कही मुनि पाहीं ॥
श्रीरघुराज सुनो ऋषिराज न मोर है जोर निहोरहु नाहीं ।
केवल रावरेकी कृपा पाय जित्यौं क्षणमें रणमें रिपु काहीं ॥
कीजै समापत यज्ञ द्रुतै रघुराज प्रमोदित शंक विहाइ ।
आये इतै शठ भारि गये जोरिजैहैं बहोरि बचैं न पराई ॥
हाजिर मैं हौं हुजूरमें रावरे सेवा वरे सहितै लघु भाई ।
जो दशकन्धरहू चढ़ि आइहै तौ हनि जाइहै नाथ दोहाई ॥
मुनिनायक बोले सुनो रघुनायक आप हमारे सहायक हौ ।
अति दीनन आनँददायकहौ कहँ लौं वरणौं सब लायक हौ ॥
रघुराज सुनो रघुराजकुमार धरे करमें धनु सायक हौ ।
मखपूरणमें अब शोच कहाँ तुमहीं यह रक्ष विधायक हौ ॥

दोहा–सुनि मुनिकी वाणी विमल, राम परम सुख पाय ।
सज्जन प्रिय मज्जन किये, प्रथम लषण नहवाय ॥
रघुपति शासन पायकै, मुनि अरम्भ मख कीन ।
सविधि सऋत्विज यागकी, पूर्णाहुति करि दीन ॥
कौशिक यज्ञ समाप्त करि, लखि दश दिशि निरबाध ।
राम लषणको बोलिकै, बोले बुद्धि अगाध ॥

सवैया ।

कीन्ह्यो यथारथ मोहि कृतारथ है न अकारथ कर्म तिहारो ।
स्वारथ सत्य कियो पितु वैन तथा परमारथ पूरो हमारो ॥
सत्य भयो अब सिद्धको आश्रम छायरह्यो यश विश्व मँझारो ।
श्रीरघुराज सुनो रघुराज अहै तुव हाथ पदारथ चारो ॥

दोहा—प्रभु विहँसे मुनिवचन सुनि, कह्यो जोरि युग पानि ।
हम सेवक तुम स्वामि हौ, लेहु सत्य यह जानि ॥
मुनि मोदित मनमें भये, जानि शयन को काल ।
सुखी शयन कीन्हे सुचित, तिमि सोये रघुलाल ॥

इति सिद्धिश्रीसाम्राज्यमहाराजाधिराज श्रीमहाराजा बहादुर श्रीकृष्णचन्द्र कृपापात्राधिकारि श्रीरघुराजसिंहजू देव जी. सी. एस. आई. कृते रामस्वयंवरग्रन्थे यज्ञरक्षणमारीच सुबाहु वधो नाम एकादश प्रबन्धः ॥ ११ ॥

दोहा—सिद्धाश्रम सोवत सुखी, लषण राम मुनिव्रात ।
आनँदप्रद प्रगट्यो तहां, निशा प्रयान प्रभात ॥

चौपाई ।

करन लगे कोयल मृदु कूका । होन लगे सब मूल उलूका ॥
शशि मलीन झलमल भे तारे । कोकी कोक अशोक निहारे ॥
कलरव लागे करन विहङ्गा । वन को चारि चारि चले कुरङ्गा ॥
शीतल मन्द सुगन्ध समीरा । बहन लग्यो नाशक सब पीरा ॥
तजन लगे तरु कुसुम अपारा । कहुँ कहुँ खग बैठहिं उड़ि डारा ॥
बिकसीं बहु राजिवकी राजी । चले पथिक पंथनमहँ काजी ॥
निशा सिरानि भयो भिनसारा । पूषन पूर्व प्रकाश पसारा ॥
कली गुलाबनकी चटकातीं । दै चुटकी मनु विश्व जगातीं ॥
जानि प्रभात गाधिसुत जागे । रघुपति लषण जगावन लागे ॥
उठहु लाल शुभ भयो प्रभाता । मज्जन करहु देव मुनि त्राता ॥

उठे राम तब लषण जगायो । तजि आलस मुनिपद शिर नायो ॥
धौतवस्त्र लै मुनिसँगमाहीं । मज्जनहेत चले सरि काहीं ॥
प्रातकृत्य करि सविधि नहाये । अर्घ्य प्रदान दीन सुख छाये ॥
करि संध्यावन्दन रघुनंदन । रघुकुल चन्दन दीन्ह्यो चन्दन ॥
आये मुनिआश्रम रघुराई । लषणसहित शोभित सुखदाई ॥
दै शिर क्रीट विभाकर भासी । काननमें कुण्डल दुति खासी ॥
कसि निषंग लै कर धनु सायक । सजे सुभग लछिमन रघुनायक ॥
मुनि आश्रम मज्जन करि आये । पूजन हवन कियो सुख छाये ॥
बैठे मुनि मनु पावक ज्वाला । मुनिसमाज तहँ लसी विशाला ॥
अवसर जानि राजसुत आये । सानुराग मुनिपद शिरनाये ॥
—निरखि युगल जोरी सुभग, दशरथ राज किशोर ॥
अनमिष मुनि सिगरे लखत, जैसे चन्द्र चकोर ॥

चौपाई ।

सहज सुभाउ सहज दोउ भाई । कौशिक लियो अंक बैठाई ॥
शीश सूँघि फेरत तनु पानी । पठत रामरक्षा मुनि ज्ञानी ॥
समय जानि बोले रघुराई । सुनहु मोरि विनती मुनिराई ॥
हम किङ्कर दोउ बंधु तुम्हारे । सौंप्यौ तुमको पिता हमारे ॥
मातु पिता भ्राता तुम ज्ञाता । स्वजन बंधु गुरु प्रिय अवदाता ॥
हौ सरवस मुनिनाथ हमारे । तुम्हरी कृपा शत्रु सब मारे ॥
अब जो शासन करहु मुनीशा । सो करिहौं निशंक धरि शीशा ॥
शासन होइ अवधपुर जाऊं । मातु पिता कहँ सुखी बनाऊं ॥
अथवा चलौं संग जहँ जाहू । तुवसँग सब सुपास मुनिनाहू ॥
सुनि विनीत मंजुल प्रभुवानी । कौशिक भन्यो त्रिकाल विज्ञानी ॥
इत रण रुधिर बही सरि धारा । प्रगटति है दुर्गन्ध अपारा ॥
ताते चलहु और थल प्यारे । जहँ सुपास सब भाँति तुम्हारे ॥

देखि देशन रघुराई । जाहु भवन कहँ आनँददाई ॥
पुनि जो मुनि सब संमत करहीं । हमहुँ तुमहुँ तेहिविधिअनुसरहीं॥
अस कहि कह्यो मुनिन मुनिराई । काह उचित भाषहु सब भाई ॥
सिगरे मुनि कौशिक रुख जानी । एकबार बोले मृदुबानी ॥
अस संमत मुनिनाथ हमारा । सुनहु तुमहु अरु राजकुमारा ॥
मैथिल महाराज विज्ञानी । धर्मधुरन्धर यज्ञ विधानी ॥
तिनके भवन सुनी अस बाता । धनुषयज्ञ होई विख्याता ॥
है यक धनुष धरणिपति धामा । हरकोदण्ड कहावत नामा ॥
दोहा-- धनुष रहा अद्भुत परम, अप्रमेय अति घोर ।
परम प्रकाशी गुरु परम, कोटिन कुलिश कठोर॥

चौपाई ।

देवन आय यज्ञमहँ दीने । लिये विदेह महा मुदभीने ॥
देव दैत्य गन्धर्वहु नाना । चारण सिद्ध सबै बलवाना ॥
सके न कोऊ ताहि चढ़ाई । मानुषकी का कथा चलाई ॥
रच्यो स्वयंवर भूप विदेहू । सुनियत मुनि कीन्ह्यो प्रण येहू॥
सकै जो कोउ कोदंड चढ़ाई । सीता सुता लेइ सो भाई ॥
यह सुनि केते राजकुमारा । गये विदेहनगर बलवारा ॥
राज राजसुत जुरे तहांहीं । सके चढ़ाय अबै लगि नाहीं ॥
तहां चलहु लै राजकुमारा । हमहुँ चलब तुवसंग उदारा ॥
रंगभूमि देखब छबिछाई । लखब स्वयंवर अतिसुखदाई ॥
तुमहूं राजकुमारन काहीं । धनुष देखायो अवसर माहीं ॥
अति विचित्र मखभूमि सोहाई । चित्र विचित्र विदेह बनाई ॥
धरो धनुष तेहि जनक निवेसू । पूजित चन्दन पुहुप हमेसू ॥
धूप दीप नैवेद्य अपारा । पूजत नृप षोड़श उपचारा ॥
देवन रचे धनुष निज हाथा । दियो शंभु कहँ अति सुख साथा॥

लह्यो यज्ञफल धनुष विदेहू। तबते धनुष धरयो तेहि गेहू॥
रच्योस्वयंवर सोइ धनु केरा। जनक चहत भूपन बल हेरा॥
चलहु जनकपुर गाधिकुमारा। लै कौशलकुमार सुकुमारा॥
अस हमरो सबकी अभिलाषा। प्रथमहिते संमत करि राषा॥
पूरहु गुरु अभिलाष हमारी। जो कौशिक रुचि होइ तुम्हारी॥
सुनि मुनिवचन महामुद पाई। विश्वामित्र कह्यो अतुराई॥

दोहा—भली कही मुनिजन सकल, संमत सब विधि मोर।
चलिहौं मैं हठि जनकपुर, लै सँग राजकिशोर॥

चौपाई।

अस कहि कौशिक सुदिन बनायो। तहँ तुरन्त प्रस्थान पठायो॥
भई जनकपुर गवन तयारी। साजे सहस शकट तपधारी॥
अग्निहोत्र पात्रन धरि लीने। उचित वस्तु सब भरे प्रवीने॥
लै मुनिमण्डल गाधिकुमारा। राजकुमारनसंग उदारा॥
गह्यो जनकपुर पंथ सुहाई। वनदेवता सकल शिर नाई॥
गमनसमै मुनि वचन उचारा। पावहु तुम कल्याण अपारा॥
सिद्धाश्रमते हम अब जाहीं। रक्षण कियो सदा यहि काहीं॥
उत्तर दिशा गंगके तीरा। तहँ ह्वै जाब सहित रघुवीरा॥
यह हिमवंत सिलोच्चै नामा। शृंग गंग तट अतिअभिरामा॥
ताके दक्षिण शुभ पंथाना। तहँ ह्वै हम सब करब पयाना॥
सुखी रहौ वनदेव इहांहीं। कबहूं मिलब बहुरि तुम काहीं॥
अस कहि मुनिवर सुखी अपारा। आगे करि दोउ राजकुमारा॥
मुनिसमाज लै तहां ततक्षिन। सिद्धाश्रमको करि परदक्षिन।
कौशिक चल्यो जनकपुर काहीं। गौरि गणेश सुमिरि मनमाहीं॥
तहँके सकल कुरंग विहंगा। बोलि उठे सब एकहि संगा॥
भये शकुन मंगलप्रद नाना। मंगल मूल संग भगवाना॥

कछुक दूर लगि कौशिक काहीं। पहुँचायो पशु पक्षि तहाँहीं ॥
चली सकल मुनिराज समाजा। मध्य सबंधु लसत रघुराजा ॥
युगल यामलों पंथ सिधारे। पहुँचे जब सब सोन किनारे ॥
लख्यो महानद सोन सुहावन। पुण्य बढावन पाप नशावन ॥

दोहा--युगल याम बीत्यो दिवस, निरखि पुण्यप्रद सोन।
सोन कूलमें बसत भे, श्रमित दूर करि गौन ॥

चौपाई

सोनभद्रमहँ सबै नहाये। अतिनिर्मल जल अतिसुख पाये॥
कीन्ह्यो होम सविधि मुनिराई। जानि अस्त गमनत दिनराई ॥
राम लषण दोउ सोन नहाये। संध्यावंदन करि सुख पाये ॥
गये गाधिसुत निकट तुराई। कौशिकसहित मुनिन शिरनाई॥
मुनि लीन्ह्यो निज निकट बोलाई। आगे बैठायो दोउ भाई ॥
सोन महानद पाप विनाशी। लगे प्रशंस करन तपराशी ॥
लषणसहित प्रभुवर्णन कीन्ह्यो। मुनिमण्डल अतिआनँद दीन्ह्यो ॥
विश्वामित्रहु सोन प्रभाऊ। कीन्ह्यो वर्णनसहित उराऊ ॥
लषण राम मुनि भये सुखारी। सुनिकै सोन महातम भारी ॥
राम कह्यो कौशिकहि बहोरी। सुनहु देव विनती कछु मोरी ॥
परम सोहावन है यह देशा। बसन चहत चित इहाँ हमेशा ॥
ताते अचरज मनमहँ लागै। सोन निरखि मन अतिसुख पागै ॥
कौन देश यह वन अभिरामा। सब सम्पत्ति भरी सब ठामा ॥
कुंज मंजु अलिगंज विराजै। लसत कुरंग विहंग समाजै ॥
[illegible] देश कहानी। इत को भयो भूप यशखानी ॥
[illegible] स्तारसमेतू। अति अभिलाष सुनन मुनिकेतू ॥
[illegible] न सोहाये। कौशिक मुनि अतिआनँद पाये ॥

ऋषि बदन बोले मृदु बानी । पूँछो भले राम गुणखानी ॥
अस कहि विश्वामित्र सुजाना। लगे करन निजवंश बखाना ॥
तौन देशको सब इतिहासा । मुनिमण्डल माधि सहितहुलासा॥

दोहा—रघुपति अनुमति पाय कै, त्रिकालज्ञ मुनिराय ।
लग्यो सुनावन राम को, कथा प्रबन्ध लगाय ॥

छन्द चौबोला।

ब्रह्मयोनि ते प्रगट भयो इक कुश नृप महायशीला ॥
सज्जन पूजित सतिव्रत धारत धर्म कर्म शुभ शीला॥
वैदर्भी ताकी पटरानी रूपवती कुलवारी ।
ताके भये कुमार चारि गुण गण युत विक्रम भारी ॥
अपने सम विचारि पुत्रनको युत उत्साह प्रकासी ।
सतिवादी धर्मिष्ठ सुतनसों बोल्यो वचन हुलासी ॥
करौ धर्मपालन पुहुमी को पैहौ धर्म महाना ।
पितुके वचन सुनत चारिहु सुत करि संमत सुख माना॥
निज निज नगर बसाय निपुण अति बसे चारिहू राजा।
नाम कुशांबु रच्यो कौशांबी संयुत प्रजा समाजा ॥
धर्मात्मा कुशनाभ रच्यो पुर भयो महोदै नामा ।
नृप अमूर्तिरज धरमारण्य रच्यो पुर अति छविधामा ॥
वसु जेहि नाम भूप सो विरचो गिरिब्रज नगर सोहावन।
यह वसुमती भूमि बसु की है पंच शैल ये पावन॥
नदी मागधी अति रमणीया मगध देश ह्वै बहती ।
पंच पुहुमि धर मध्य विराजत गिरिमाला इव महती ॥
बसु नृप के पूर्वज ते सेवित अन्न प्रदाइनि भूरी ।
नदी मागधी अति निर्मल जल इत ते है नहिं दूरी ॥
नृप कुशनाभ राजऋषि के जो रही घृताची रानी ।

सो शत सुता जनी अति सुन्दर युवती भूषण जानी ॥

दोहा—ते भूषण पट पहिरि कै, निकसीं बागन बाग।
जिमि घन महँ बहु दामिनी, शोभित सहित सोहाग ॥

छन्द चौबोला।

नाचहिं बाज बजावहिं पावहिं आनँद भारी।
मची सकल वाटिका मनोहर नूपुरकी झनकारी ॥
चितवनि चलनि अनूप रूप तिन सम नाहिं भूमि मँझारा।
कुञ्जथली महँ भली विराजहिं जिमि घन बिच बिच तारा ॥
गुणाकरी लखि भरी सुयौवन पवन मोहि अस भाष्यो।
राजसुता तुम होउ दार मम मेरो मन अभिलाष्यो ॥
बड़ आयुष पैहो सिगरी तुम त्यागहु मानुष भाऊ।
मनुष योनिमहँ यौवन चल है होवहु देव प्रभाऊ ॥
अक्षै यौवन लहहु अमरता का तुम्हरी है हानी।
पवन वचन सुनि विहँसि कन्यका बोलीं मंजुल बानी ॥
अन्तर चरहु पवन प्राणिन के कछु नहिं तुमहि छिपाना।
सुनहु देव वर वृथा करहु तुम कस हमरो अपमाना ॥
हम कुशनाभ भूप की कन्या धन्या धर्म समेतू।
निज तप बल जो चहहिं अनिल तोहिं देहिं छुडाय निकेतू॥
होसि कालवश कुमति प्रभञ्जन पिता सुनत अति माखी।
हठि कै तोर विनाश करैंगे सत्य चन्द्र रवि साखी ॥
बरहि कहौ किमि अपने ते बर पिता अनादर होई।
अहै पिता प्रभु भाग्य हमारे जेहि देहै बर सोई ॥
सुनत कन्यका वचन प्रभञ्जन प्रविशि कोप तनु माहीं।
कियो कूबरी सकल कुमारिन रहिगै शोभा नाहीं ॥

दोहा—पवनप्रपीड़ित नृपसुता, व्रीडित दुखी दराज ।
जनकभवनको गवन किय, रोदन करत नराज ॥
सुता दीन लखि कुवरी, विस्मित कह्यो नरेश ।
कहा भयो को कुवरी, कियो तुमहिं केहि देश ॥
को अधर्म कीन्ह्यो महा, भाषहु कस न कुमारि ।
तड़फराहु अति ताप भरि, करहु विलाप पुकारि ॥
अस कहि भूपति योगिवर, कीन्ह्यो अचल समाधि ।
जानन हित दुख कन्यका, कीन्ह्यो कौन उपाधि ॥

छन्द चौबोला ।

सुनि कुशनाभ वचन कन्या सब कही गिरा शिरनाई ।
पिता पवन गहि अशुभ पंथ यह कीन्ह्यो धर्म विहाई ॥
हमहिं कह्यो तुम होउ दार मम देहैं देव बनाई ।
तब हम कह्यो ताहि अस मम पितु जेहि देहै विधि ल्याई ॥
होई सो पति अवशि हमारो जेहि विवाह पितु करिहैं ।
नहिं वरिहैं हम अपनेते पति यह अधर्म कहँ धरिहैं ॥
सुनि मम वचन पवन कोप्यो अति परख्यो नहिं तुव वानी ।
प्रविशि अंगमहँ कियो भंग सब अनिल भयो दुखदानी ॥
सुनि दुहितनके वचन धरणिपति धार्मिक सो कुशनाभा ।
शत कन्यासों कह्यो वचन वर भूप तेज रवि आभा ॥
क्षमामान जे क्षितिमहँ सज्जन सदा क्षमा ते करते ।
क्षमा कियो तुम संमत करि सब याते अघ सब जरते ॥
राखी कुलकी लाज आज तुम कीन्हीं क्षमा कुमारी ।
क्षमा होति दुर्लभ देवनमहँ मनुजन काह उचारी ॥
जैसी क्षमा करो दुहिता तुम सिगरी धर्म विचारी ।
तैसी क्षमा होति कतहूँ नहिं वेद पुराण विचारी ॥

क्षमा दान अरु क्षमा सत्य तिमि क्षमा यज्ञ तुम जानो ।
क्षमा अहै यश क्षमा धर्म पर क्षमा जगत थिति मानो ॥
देव आभ कुशनाभ भाषि अस कीन्ही बिदा कुमारी ।
कीन्ह्यो मंत्र बोलि मंत्रिन सब सुता विवाह बिचारी ॥
दोहा—सचिव किये स्वीकार सब, सुता विवाह विचार ।
उचित कुमारी व्याह अब, देश काल अनुसार ॥

छन्द चौबोला।

तौने कालमाहँ रघुनन्दन भयो महा मुनि चूली ।
सिद्ध ऊर्द्धरेता शुभचारक किय तप ब्रह्म न भूली॥
ताहि करत तप लखि गन्धर्वी सेवन कियो तहांहीं।
नाम सोमदा सुता उर्मिला धर्म सहित वन माहीं॥
परमप्रीतिकरि मुनिसेवनरत वसीविपिनमुनिसङ्गा।
कछुक कालमहँचूलि नाममुनि बोलेवचन अभङ्गा॥
हे गन्धर्वी तुव सेवासे भो प्रसन्न मन मेरो ।
कौन करौं उपकार कहो तुम माँगु जौन मन तेरो॥
अति सन्तुष्ट जानि मुनिको तहँ गन्धर्वी भरि चैना ।
कह्यो जोरिकर परमप्रीतिसों अतिशय मंजुल बैना॥
ब्रह्मतेजसंयुत मोहिं दीजै धार्मिक एक कुमारा ।
नहिं मेरे पति नाहिं मेरे सुत नाहिं काहूकी दारा ॥
सुनहु विप्रवर मैं शरणागत दीजै विमल कुमारा ।
सुनि गन्धर्वी वचन चूलि मुनि दीन्ह्यो पुत्र उदारा॥
संकल्पहि ते दियो ताहि सुत ब्रह्मदत्त अस नामा।
ब्रह्मदत्त सोमदा तनय सों भयो तेज बलधामा ॥
बस्यो कांपिलीपुरी सोहावनजिमि सुरपुर सुरराजा।
भूपति को नृप कुशनाभ दराजा ॥

चाह्यो दैन सबै दुहितनाको तुरत बरात बोलाई ।
क्रमसों दियो बिबाहि उछाहित दै संपति समुदाई ॥
दोहा—ब्रह्मदत्त कन्या करन, कियो ग्रहण जेहि काल ।
मिट्यो पवन क्रम कूबरो, बिलस्यो रूप बिशाल ॥
देखी सुंदर सब सुता, बिगत पवनकृत रोग ।
महाराज कुशनाभ तब, हर्षित भो बिन शोग ॥
ब्रह्मदत्तको व्याह करि, दै दाइज धन भूरि ।
कीन्ह्यो बिदा सदार तेहि, पहुँचायो कछु दूरि ॥
पुत्रवधू लखि सोमदा, पायो परम अनन्द ।
कर गहि गहि गृह लै गई, नृपहि सराहि सुछन्द ॥
इतै भूप कुशनाभ तहँ, करि कन्यका विवाह ।
पुत्रइष्टि सुतहेत किय, रह्यो पुत्रहित दाह ॥
इष्टि समापति जब भई, तब कुश ब्रह्म कुमार ।
कह्यो आप कुशनाभतें, पैहौ पुत्र उदार ॥
तुव समान धार्मिक महा, नाम गाधि अस जासु ।
सो पैहौ सुत तासु बल, कीरति करी प्रकासु ॥
अस कहि कुश कुशनाभसे, गगनपंथ ह्वै आशु ।
गयो सनातन ब्रह्मपुर, कुश करि सुयश प्रकाशु ॥

छन्द चौबोला ।

थोरे काल माहिं रघुकुल मणि सो कुशनाभ अगारा ।
धर्म धुरन्धर जग महँ जाहिर जन्म्यो गाधिकुमारा ॥
सोई मोर पिता रघुनायक धर्म धीर धन धामा ।
है हमार कुशवंश राम यह ताते कौशिक नामा ॥
सत्यवती जेठी भगिनी मम पिता ऋचीकहि व्याही ।
गमनी सहित शरीर स्वर्ग सो पति सेवन उत्साही ॥

धर्मवर्द्धनी सत्यवती सो पतिव्रत धर्म प्रचारा ।
महानदी सो भई कौशिकी जगमें परम उदारा ॥
दिव्य पुण्य जल अति रमणीया हिमगिरि ते प्रगटानी ।
करत अमल परशत जल जग में लोकन मङ्गलदानी ॥
हमहुँ वसे हिमवान कंदरा नदी कौशिकी तीरा ।
भगिनि सनेह सने कीन्हे तप कछुक काल रघुवीरा ॥
नेमहेत पुनि सिद्धाश्रम में आये भगिनि बिहाई ।
सो सिद्धाश्रम सत्य भयो तुव विक्रम ते रघुराई ॥
यह वरण्यों उत्पात्ति आपनी वंशहु कियो बखाना ।
जो पूछ्यो तुम दशरथनंदन देशहु कर अख्याना ॥
कथा कथत रघुनायक तुमसों बीति गई अधराता ।
युगल बंधु अब शयन करीजे ह्वै हैं पाउँ पिराता ॥
बहुत दूरि चलि आये मारग अति सुकुमार कुमारे ।
तुमहिं चलावत होत पंथ दुख कौशल्या के बारे ॥

दोहा—मुनिजन कीजै शयन सब, हमहुँ कछुक अलसान ।
नवल नृपति नंदन युगल, नलिन नयन अरुणान ॥

चौपाई ।

यह यामिनि कामिनि सुखदाई । जगउ जीव कहँ आलसदाई ॥
तरु निहचल जनु अति अलसाने । मुकुलित कंज मुकुद बिकसाने ॥
शशी प्रकाशित भासित तारा । भयो मंद मनु जन संचारा ॥
सोवन लगे बिहंग अपारा । सोवहिं चरहिं कुरङ्ग सदारा ॥
अंधकार छै रह्यो दिशानन । झिल्ली झनक परैं सुनि कानन ॥
प्रचरहिं प्रचुर निशाचर घोरा । प्रेत पिशाच प्रमोद न थोरा ॥
कहुँकहुँ कूकत मुदित मयूरा । करत मनहुँ बंशी रव पूरा ॥
कहुँकहुँ चातक बोल सोहावन । भये अमूक उलूक भयावन ॥
क्रम क्रम संध्या सकल सिरानी । मनु नखतनकी मिटी गलानी ॥

ज्यों सिंधु ते शशी सोहायो। मनहुँ जीति रण रविहि भगायो ॥
निरखत शशि हरषत जग प्रानी। कौन इंदु सम आनँद दानी ॥
रवि कर घोर ताप जग छावत। कहु मयङ्कबिन कौन मिटावत ॥
फैल रही छवि फरश जोन्हाई। मानहुँ हिम वितान सुखदाई ॥
नव पल्लव चमकत चहुँ ओरा। मुकुनमाल जनु विपिन करोरा ॥
अंधकार रजनी कर भारी। कौन विना हिमकर हठि हारी ॥
संयोगिनि रजनी सजनी सी। होति वियोगिनि सोइ अहिनी सी॥
भयो निशा वश विश्व सनाका। परयो मनौ रविकर पर डाका॥
तोयतरंग मंद मृदु वाता। कोकी कोकन शोक अघाता ॥
चरहिं फणी धरि मणी सुखारी। कंजन कोस ओसकन धारी ॥
यहि विधि कौशिक निशा बखानी। आलस वलितवन्दकिय वानी॥

दोहा—लगे प्रशंसा करन मुनि, साधु साधु मुख गाय।
अति उज्ज्वल कुशवंश यह, निरत धर्म समुदाय॥
जे नर भे यहि वंश महँ, ते करतार समान।
पुनि विशेषि कुश कुल कमल, विश्वामित्र प्रधान॥
नदी कौशिकी सरित बर, कुल को करति उदोत।
सुयश रावरो धरणि में, वरणि पार को होत॥
यहि विधि सुनि मुनिजनवचन, मुनिवर मुदित अगाध।
गाधिसुवन सोवत भये, जानि विगत सब वाध॥
राम लषण सुनि सुयश युत, विश्व विदित कुशवंस।
हंस वंश अवतंस दोउ, विस्मित किये प्रशंस॥
सोवत जानि मुनीश को, भयो अस्त जनु भान।
तृण साथरी विछाय कै, सोये राम सुजान॥

इति सिद्धिश्रीसाम्राज्य महाराजाधिराज श्रीमहाराजा बहादुर श्रीकृष्णचन्द्र कृपापात्राधिकारि श्रीरघुराज सिंह जू देव जी. सी. एस. आई कृते श्रीरामस्वयंवरग्रन्थे कौशिक वंशवर्णनं नामद्वादशः प्रबंधः ॥ १२॥

दोहा—सुखद सोनतट मुनिनिकट, सोवत लक्ष्मण राम ।
ब्रह्म मुहूरत होत भो, जागे मुनि मतिधाम ।
अरुणाई छाई ललित, प्राचीदिशा निहारि ।
मुनि मंजुल बोले वचन, करि अस्मरण मुरारि ॥

सवैया ।

हे रघुवंश के वारिज भान प्रधान प्रधानन में सुखदाता ।
श्रीअवधेश के नंदन बाँकुरे वीर शिरोमणि विश्वविख्याता ।
श्रीरघुराज सुनो कृतकाज सुदेव मुनीन समाज के त्राता।
श्यामल गात दृगै जलजात उठो अब तात भयो है प्रभाता १
मोहि गई इन नैनन में तजि है नहिं नींद तुम्हें तजि दीजै।
आलस त्यों अँगिरान की व्याजन छोड़ति अंगन संग करीजै॥
श्रीरघुराज दिनेश हुलासित अर्घके आसित तोषित कीजै ।
पायँन पर्शन को पुहुमी पथ के मिस चाहति प्रेम पतीजै२
रावरेके यशसों लजिकै भजि चंद्र दुरयोगिरि अस्त मँझारी।
आप प्रतापते कोमल तेज विलोकन आवत तोषि तमारी॥
श्रीरघुराज लला लखो कौतुक सांझ गये फँसि भौंर दुखारी।
वारिजके विकसे निकसे पिकसे तनु के परै पीत निहारी३

दोहा—करत शयन बीती निशा, भयो राम भिनसार ।
उठहु तात मज्जन करहु, सज्जन के आधार ॥

छन्द चौबोला ।

सुनि मुनि वचन उठे रघुनायक अलसाने अँगराने ।
कर सों कर गहि लषण उठाये मुनि वंदे सुखसाने ॥
मज्जन हेत गये नद तट पर प्रातकृत्य निरबाही ।
सविधि नहाय कियो संध्या पुनि दीन्ह्यो अर्घ्य उछाही॥
ह्वै तयार कर लै धनु सायक रघुनायक दोउ भाई ।

विश्वामित्र संग पगुधारे लखे सोन सुखदाई ॥
सुनि सो मृदुल बैन बोले प्रभु सोनभद्र यह पावन ।
अहै महानद महा पुण्यप्रद दुहुँ दिशि पुलिन सोहावन॥
मज्जन करत रहै पापन को हेरि हहै हुलसावै ।
सकल नदिन महँ नद विराजत सदै सुयश जग छावै॥
विमल नीर गंभीर न कहुँ थल तीर तीर वन सोहै ।
कढ्यो महीधर मेकल सों यह हरत कलुष जो जोहै ॥
फोरत विविध धराधर आयो वसुंधरा छविदाई ।
निर्मल जल भल उथलसकल थलमलतमनुजमलिनाई॥
मुनिवर उतरव अव पायँन सों नहिं तरनी कर कामा ।
विश्वामित्र बैन बोले हँसि सुनहु लषण अरु रामा ॥
जो मारग मुनिजन दरशायो तेहि मारग ह्वै जैहैं ।
आजु दूर नहिं गंग तीर महँ तुमरो वास करैहैं ॥
अस कहि राम लषण सँग लैके मुनिवर सहितसमाजू ।
उतरे सोन भौन आनँद के चले पंथ कृतकाजू ॥

दोहा—चलत चलत तेहि पंथ महँ, वीति गये युग याम ।
विष्णुपदी सरिता लखे, गंगा जग जेहि नाम ।

कवित्त ।

स्वच्छहैकछाराहँसिकरतविहारामहातुंगहैकगारामुनिमज्जतअपाराहै ।
एकओरदेवदारा देवनकरतारालिहे विविधप्रकाराकेलिकरतहजाराहै ॥
रघुराजहीरनकेहारा इव धौलधारा धरणीमँझाराधावैकरिवहराराहै ।
पुण्यकोपसाराअधमानकोअधाराकरपापनकोछाराकलिकालकोपछाराहै

दोहा—कलरव सारस हंसको, मच्यो गंग दुहुँ ओर ।
चक्रवाक माला विमल, करत मनोहर शोर ॥

देखि सरित वर सुरसरी, मुनि युत राजकुमार ।
करि प्रणाम अस्तुति किये, आनँद लहे अपार ॥
विष्णुपदी के तीर में, कीन्ह्यो कौशिक वास ।
राम लषण मुनि मंडली, पाये सकल सुपास ॥

छन्द चौबोला ।

कीन्ह्यो मज्जन सविधि गंग महँ देव पितर संतोषे ।
सविधि कियो पुनि होम अनल में सकल धर्म के चोषे ॥
यहि विधि मुनि तहँ राम लषण को मज्जन विधि करवाई ।
ऋषिन सहित आपहु मज्जन करि वासथली महँ आई ॥
कंद मूल फल सुधा सरिस लै राजकुमारन दीने ॥
अपने ढिग भोजन कराय कर पायँ धोवाय प्रवीने ॥
बैठे राम लषण संयुत मुनि मुनिमंडली विराजी ।
सुचितचित्तकरिनित्यकर्मसब लखिसुरसरि अतिराजी॥
अवसर जानि जोरि कर पंकज राम कह्यो शिरनाई ।
नाथ सुनन की कछु अभिलाषा सो अब देहु सुनाई॥
कौन भाँति त्रैलोक्य नाकि कै गंग धरा महँ आई ।
पावन करत अपावन जन को मिली नदीपति जाई ॥
सुनत राम के वचन महामुनि मधुर महा सुखदाई ।
वृद्धि जन्म गंगा को वर्णन करन लगे हुलसाई ॥
है हिमवान महान महीधर आकर धातुन केरो ।
जहाँ लसत सुंदर वदरी वन तपसिन वृन्द बसेरो ॥
ताके प्रगटीं परम सुंदरी युग सुकुमारि कुमारी ।
नाम मेनका हिमगिरि की तिय मेरु सुता छबिवारी ॥
सोइ मेनका सुता जनी द्वै जेठि गंग भो नामा ।
ताकी अनुजा भई दुतीया उमा नाम छवि धामा ॥

दोहा–हिमगिरि की जेठी सुता, गङ्ग नाम की जोय ।
सुरकारजके करन हित, सुर माँगे सुख मोय ॥

छन्द चौबोला ।

सुनि देवनकी विविध याचना अति हर्षित हिमवाना ।
लोकपावनी अघनशावनी कियो सुता कर दाना ॥
तीन लोक मङ्गल के कारण कामचारिणी गंगा ।
लै तेहि सुखी स्वर्ग गमने सुर माने सिद्ध प्रसंगा ॥
तीनि लोक हित जब गंगाको लै सुर स्वर्ग सिधारे ।
उमा दूसरी हिमगिरि कन्या तब तप करन विचारे ॥
गई विपिन कहँ कियो महातप शिव पति होयँ हमारे ।
जानि सुता रुख हिमपति व्याह्यो शंकरको सुखधारे ॥
लोकवंदिनी पापकंदिनी हिमगिरि युगल कुमारी ।
तिनको यह चरित्र कछु वरण्यो राम लषण धनुधारी ॥
गंगा जेठी उमा दूसरी देवी शंभु पियारी ।
जेहि विधि गमनी गंग सुरालै सो सब दियो उचारी ॥
प्रथम गई गिरवान सदन कहँ गगनपन्थ ह्वै गङ्गा ।
सोई सुरसरिता रमणीया करति कलुपकुलभंगा ॥
सुनहु सुजन गतिदान शिरोमणि तुव पद पाथ प्रवाही ।
कस पूछहु अनजानतसे मोहिं तुम्हहिं विदित का नाहीं ॥
जब सुरलोक गई सुरसरिता सुरपुर अघ हरिलीन्ही ।
मन्दाकिनी नाम अस पायो अमरन आनँद दीन्ही ॥
सोई यह राजति अवनीमहँ कलि कल्मषकी आरा ।
अधरम धुरा विध्वंस करति ध्रुव धरणी धावति धारा ॥

दोहा–जे मज्जत पीवत सलिल, नैनन निरखत गङ्ग ।
नाम उचारत नित वदन, होत पाप तिन भङ्ग ॥

छन्द चौबोला ।

यहि विधि सुनि मुनिवरकी वाणी राम लषण सुख पाई ।
चरण वंदि बोले अति हर्षित मन विस्मित दोउ भाई ॥
ब्रह्मवंश शिरमौर धर्मयुत तुम वरणी यह गाथा ।
हिमगिरि जेठि सुताको चरित कहो सिगरो मुनिनाथा ॥
दिव्य लोक अरु मानुष लोकन किमि सुरसरि चलि आई।
तीनिहुँ लोक प्रवाह प्रथित भो कौन हेत मुनिराई ॥
यह सुरधुनी कथा न सुनी हम कहहु मुनीश उदारा ।
त्रिकालज्ञ तुम सुनन आश मोहिं करहु कथा विस्तारा ॥
केहि विधि गंगा भई त्रिपथगा जाहिर तीनहुँ लोका ।
हे धर्मज्ञ कर्म कैसे किय तीनिहुँ लोक अशोका ॥
विश्वामित्र तपोधन सुनिकै राजकुँवरकी बानी ।
लागे कहन गंग गाथा मुनि मंडल मध्य विज्ञानी ॥
प्रथमहिं भयो विवाह शंभुको उमा वरचो बरिआई ।
निरखि भवानीको शंकर प्रभु मोहित भे ललचाई ॥
रास बिलास करत गौरी हर बीति गये शत बरषा ।
नहिं जन्म्यो कुमार सुरसैनप भये देव बिन हरषा ॥
तब विरंचि आदिक सिगरे सुर गमन किये कैलासा ।
करि अस्तुति शिरनाइ बार बहु कह्यो सुनहुँ कृतवासा ॥
देव देव हे महादेव तुम लोकनके हितकारी ।
वंदत देववृन्द तुमको प्रभु करहु प्रसाद पुरारी ॥

दोहा—नाथ तिहारो तेज यह, सकै लोक नहिं धारि ।
विहित वेद विधि करहु तप, उमासहित त्रिपुरारि ॥

छन्द चौबोला ।

तीनि लोक हित हेतु शंभु प्रभु धारण कीजै तेजा ।
रक्षहु सकल लोक लोकनपति कंपत सुरन करेजा ॥

सुनत महेश्वर देवन वाणी वचन तथास्तु उचारा ।
कह्यो सुरनसों पुनि गिरिजापति शोक टरै नहिं टारा ॥
धारण करब तेज अपनेमें होइ त्रिलोक सुखारी ।
पतित तेज जो भयो हमारो कहहु देवको धारी ॥
तब बोले सब देव जोरि कर धरणी धारण करिहैं ।
सुनहु महेश शंभु वृषभध्वज यहि विधि जग सुख भरिहैं॥
वामदेव सुनि विबुधन विनती त्याग्यो तेज कराला ।
रह्यो छाइ पृथिवी गिरि कानन जगी ज्वलनइवज्वाला॥
सकी न धरणि सम्हारि तेजसो तब भे देव दुखारी ।
कह्यो पाकशासन अति दुखित हुताशन काहि हँकारी॥
प्रविशहु शंभु तेजमहँ पावक पवन सहाय बोलाई ।
सुनत शक्र शासन कीन्ह्यो तस पवन हुताशन जाई ॥
प्रविशत पावक पवन तेजहर भयो श्वेत गिरि रूपा ।
कछुक काललहि सरवनभयऊ दिनकर अनलस्वरूपा॥
सो सरवनमें भयो स्वामिकार्तिक जेहि नाम उचारा ।
सकल देव मुनि ह्वै अति हरर्षित गे कैलास पहारा ॥
उमा शंभुकी अस्तुति कीन्हे जै जै शंभु भवानी ।
भये प्रसन्न सुनत गिरिजापति सुरसमाज हरषानी ॥

दोहा—गीर्वाणनको देखिकै, गौरी गुणि सुर दोष ।
अरुणनयन बोली वयन, करि देवन पर रोष ॥

छन्द चौबोला ।

सुत अभिलाष हमारी हरि लिय किये देव अपकारा ।
ताते सुनो कुमार आजुते नहिं जनि है तुव दारा ॥
सुत संभव पौरुष ते हीने ह्वैहौ नाकनिवासी ।
पुत्र जन्म सुख कबहुँ न पैहौ रैहौ संतत आसी ॥

तवते देवनको दारनमे जन्म नहीं कुमारा ।
गौरी शाप आजुलौं लखियतु हे रघुराज उदारा ॥
यहि विधि देवन शिवा शाप दै दई शाप धरणीको ।
धरयो तेज तैं मेरे पतिको धिक २ तुव करणीको ॥
पृथ्वी तेरे होइँ रूप बहु होइँ बहुत पति तेरे ।
पुत्र प्रमोद लहै कबहूं नहिं शाप प्रभावहि मेरे ॥
मोर पुत्र सुख तुही निवारयो ताते सुत नहिं होई ।
रे कुमतिन पातिव्रत धर्म रही नहिं बहुपति जोई ॥
शिवा शाप सुनि सुरसमाज सब शोकित भे सुख हीने।
देवन दुखी देखि गिरिजा हर गमन वरुणदिशि कीने ॥
जाइ हिमाचलके उत्तरदिशि गौरीयुत गौरीशा ।
करन लगे तप कठिन उमा हर मिलनहेत जगदीशा ॥
भन्यो चरित्र भवानीको यह करि नेसुक विस्तारा ।
सुनहु बहुरि गंगाचरित्र अब दशरथराजकुमारा ॥
जप तप करन गये गौरी हर हिमगिरि उत्तर आसा ।
अनिल अनलयुत अमर सिद्ध मुनि गे तब ब्रह्म अवासा॥

दोहा—सैनापतिको सुरनको, होइ यही अभिलाष ।
इन्द्र अनिल यम वरुणशिखि,आदि देव ऋषि लाष ॥
वंदन किये स्वयंभुको, अस्तुति करि नहिं थोरि ।
सुनहु पितामह यह विनय, कहत देव करजोरि ॥

छंद चौबोला ।

जो प्रथमहिं दीन्ह्यो सैनापति देवनको करतारा ।
सो अबलों नहिं भयो भूमिमें करै को रिपुसंहारा ॥
उमा शंभु तप करत हिमाचल सेनापति किमि पावै ।
याको करि विचार करतार करो पूरण मनकामै ॥

देवन के अज अहो परमगति पूरक उर अभिलाषा ।
सुनि सुर बैन प्रबोधि विबुधगण मधुर चारिमुख भाषा ॥
अब नहिं ह्वै है देवन के सुत दीन्हो शाप भवानी ।
शिवाशाप को मेटि सकै जग लेहु सत्य सुर जानी ॥
यह आकाश गामिनी गंगा पावक पाय सहाई ।
महाप्रबल सुरगण को नायक सेनापति प्रगटाई ॥
जेठि सुता हिमगिरि की गंगा जबहिं पुत्र लै आई ।
तबै उमा अमर्ष नहिं करिहै लैहै सुत अपनाई ॥
ऐसे सुनि करतार वचन सुर अतिशय आनँद पाई ।
गमनत भये देव कैलासै चतुरानन शिरनाई ॥
देख्यो अति उतंग भूधर मणि मंडित धातु हजारा ।
पुत्र हेतु पावक बोलाइ कै ऐसे वचन उचारा ॥
धूमकेतु सुरकारज के हित शम्भु तेज जो धारा ।
सो अब तजहु तुरत गंगा महँ प्रगटै प्रबल कुमारा ॥
सुनत गीर्वाणन की वाणी अग्नि गंग ढिग जाई ।
कह्यो देवि अब गर्भ धरहु उर देवन को सुखदाई ॥
दोहा—अनल बैन सुनि सुरनदी, धरयो दिव्य निज रूप ।
लखि सुरसरि महिमा अनल, त्यागो तेज अनूप ॥

छंद चौबोला ।

त्यागत तेज सुनो रघुनंदन गंगा सोतन माहीं ।
गयो पूरि सब थल दोउ पारन ज्वाल माल दरशाहीं ॥
अतिविकरालज्वालनिकसतजलमनहुँकुंडघृतडारयो ॥
सकल देव के आनि पुरोहित गंगा ताहि उचारयो ॥
तुव उद्भूत त्रिनेत्र तेज यह सकौं न मैं अब धारी ।
भई व्यथित अति जरत अंग सब क्षण महँ चाहत जारी ॥
पावक भाष्यो विष्णुपदी सो शंभु तेज अति घोरा ।

तजहु हिमाचल के पाषा में यह सम्मत है मोरा ॥
सुनत अनल के वचन जाह्नवी तेज ऐंचि सो तनते ।
तज्यो हिमाचल कंदर अंदर बंदर भागे वनते ॥
तजततेजजोगिरयोधरणिमें कनक भयो पुनिसोई ।
तप्त सुजांबूनद सम भाषित लखे देव सब कोई ॥
तीक्षणता जो रही तेज की तामें लोह सु भयऊ ।
रह्यो तेज कोमल जो सोई सीस राँग ह्वै गयऊ ॥
यहि विधि धरणि तेज धूर्जटि को परत भई बहुधातू ।
शङ्कर तेज प्रभाव हिमाचल भयो कनक संघातू ॥
पर्वत कानन लता कुंज तरु तृण पाषाण अपारा ।
भये कनक के चटक चारु अति पुरुष सिंह यक बारा॥
जातरूप तबते कहवायो यह सुवरण जग माहीं ।
प्रगट्यो एक कुमार चारु अति शंकर तेज तहांहीं ॥

दोहा—देव मरुतगण सङ्ग लै, आयो बासवधाय ॥
अति सुकुमार कुमार लखि, लीन्ह्यो अङ्कलगाय ॥

छन्द चौबोला ।

को बालक को क्षीर पियावै यह शङ्का प्रगटानी ।
षट कृत्तिका सुरेश बोलायो कही विमल तिन बानी ॥
जो यह बालक होइ हमारो तौ हम दूध पियावैं ॥
देव कह्यो शिशु अहै तिहारो यह संमत ठहरावैं ॥
षट् कृत्तिका मानि सुत आपन बालक क्षीर पियायो ।
तब बासव तेहि कार्तिकेय अस शिशुको नाम धरायो॥
पुनि तहँ सकल देव अस भाषे यह कृत्तिका कुमारा ।
ह्वै है तीनि लोक महँ जाहिर बल विक्रमी अपारा ॥
षट् कृत्तिका सुनत सुर वाणी गर्भमलिन सुत जानी ।

नहवाया तहि विमल गङ्गजल शिशु आभा प्रगटाना ॥
पावक ज्वाल सरिस बालक सो अति सुंदर सुकुमारा ।
भो असकंद गर्भ ताते असकंदहि नाम उचारा ॥
क्षीर पियावन लगी कृत्तिका यक बालक पट नारी ।
पटमुखकरि शिशुपटजननीको किय पयपान सुखारी ॥
एक दिवसमें पट जननीको पटमुख करि पय पाना ।
भयो युवा सुकुमार मनोहर विक्रम ओजनिधाना ॥
वाहन भयो मयूर तासु पुनि लैकर शक्ति प्रचंडा ।
कीन्ह्यो दलन दैत्यदल निज बल तारक हन्यो उदण्डा ॥
सुखित भये सुर कार्त्तिकेयको सुरसेनापति कीन्हे ।
किय अभिषेक देवदलनायक नाम तासु करि दीन्हे ॥

दोहा—अग्निसहित सिगरे अमर, देखि अतुल दुति तासु ।
हर्षवंत सब होतभे, पूरण भयो प्रयासु ॥
यह गङ्गाको चरित मैं, वरण्यो राज कुमार ।
महा धन्य अति पुण्यप्रद, संभव कह्यो कुमार ॥
कार्त्तिकेयके भक्त जे, हैं अनन्य महि माहिं ।
बड़ आयुष सुत नाति लहि, तासु लोकको जाहिं ॥
यह कौशिकमुनि रामसों, कथा माधुरी गाय ।
लगे कहन इतिहास पुनि, रविकुलका हरपाय ॥

छंद चौबोला ।

भयो अयोध्या अधिप भूप यक बल प्रताप तपधामा ।
कीन्ह्यो नवौ खण्डमहँ शासन रह्यो सगर अस नामा ॥
यक वैदर्भभूपकी दुहिता नाम केसिनी जाको ।
भई जेठ महरानी नृप की धारयो धर्म धुराको ॥
दुतिय अरिष्टनेमकी दुहिता सुमति नाम नृपनारी ।

रह्यो न पुत्र सगरभूपतिके ताते भयो दुखारी ॥
भूप सगर लै दोऊ रानी गयो हिमाचलमाहीं ।
भृगु प्रश्रवन निकट तप कीन्ह्यो भृगुमुनि रहे तहाहीं ॥
करत करत तप विते वर्ष शत भृगुमुनि भये प्रसन्ना ।
दिय वरदान सगरभूपतिको ब्रह्मतेज संपन्ना ॥
महाराज तुम संतति पैहौ अति कीरति संसारा ।
यकतिय जनी वंश करसुत यक यक तिय साठि हजारा॥
भृगुके वचन सुनत दोउ रानी कह्यो वंदि कर जोरी ।
कैसो यक सुत साठि सहस कस भापहु नाथ वहोरी ॥
सुनि रानिनके वचन ब्रह्मऋषि दीन्ह्यो वचन उचारी ।
एक कुमार वंश कर होई करी उपद्रव भारी ॥
साठि हजार कुमार अपार वली ह्वैहैं उत्साही ।
इइमें कौन कौन वर लैहै कौन आश केहि काही ॥
सुनि मुनि वचन केसिनी लीन्ह्यो पुत्र वंश कर जोई ।
लहुरी सुमति गरुड़ भगिनी तहँ लियो वहुत सुत सोई॥

दोहा—कीर्त्तिवंत बलवंत सुत, होवैं साठि हजार ।
लीन्ह्यो अस वर सगर तिय, भृगुसों राजकुमार ॥

छंद चौबोला ।

सगरभूप रानिनते संयुत भृगु परदक्षिण दीन्ह्यो ।
अति आनंदनसों रघुनन्दन अवध आगमन कीन्ह्यो ॥
काल पाय जेठी महरानी जनम्यो एक कुमारा ।
भयो भुवन जाहिर असमंजस ताकर नाम उचारा ॥
गरुड़ भगिनि जनम्यो यक तुंवा तामें वीज अपारा ।
वीज भेदते भे कुमारते सुंदर साठि हजारा ॥
सुमति कुंभ तव साठिसहसलै भरिभरि घृत सबमाहीं।

यक यक बीज डारि यक यक घट दीन्ह्यो धाइन काहीं ॥
यक यक बीजन ते यक यक सुत होत भये दुति खासी ।
धाय सकल पय प्याय बढ़ायो भये युवा बलरासी ॥
यहिविधि सगर अवधपतिके तहँ अतिशैप्रबल कुमारा ।
जेठ भयो असमंजस आत्मज लहुरे साठि हजारा ॥
जेठो सगरसुवन असमञ्जस करनलग्यो अघ भारी ॥
अवध प्रजनके पुत्र पकरिकै देतो सरयू डारी ॥
बूड़त तिनहिं निरखि कै विहँसत रोवत प्रजा दुखारी ।
हाहाकार मच्यो कौशलपुर देहिं प्रजा सब गारी ॥
प्रजा अहित रत निरखि पुत्रको नहिं सहिगयो पुकारा ।
दियो निकारि सगर भूपति तब कानन कुटिल कुमारा ॥
रह्यो एक असमञ्जसके सुत अंशुमान अस नामा ।
महाबली भो परम धर्मरत सम्मत लोक ललामा ॥

दोहा—यहि विधि बीत्यो काल कछु, रघुवर सगर नरेश ।
अश्वमेधके करनको, कियो मनोरथ वेश ॥
मंत्रिनसों करि मन्त्र नृप, ज्ञाता वेद विधान ।
कीन्ह्यो यज्ञ अरम्भ को, सगर नरेश सुजान ॥

छन्द चौबोला ।

रघुनंदन सुनि मुनिवरवाणी बोले करि अति प्रीती ।
सुनन चहत विस्तार सहित हम कथा यथा मख रीती ॥
कैसे कियो यज्ञ वेदज्ञ सो पूरव पुरुष हमारे ।
सुनि नरनायक कुँवर वचन वर मुनिवर वैन उचारे ॥
सुनहु राम नृप सगर यज्ञ जस कीन्ह्यो परम उदारा ।
शङ्कर श्वशुर हिमाचल नामक है अति तुङ्ग पहारा ॥
तैसहि दक्षिण दिशा विंध्यगिरि पावन परम उचारा ।

दोउ धरणीधर बिचकी धरणी अति शुचि वेद विचारा ॥
यज्ञ दान जप तपके लायक तेहि माहि सगर भुआला ।
यज्ञ अरम्भ कियो मुनिसंयुत रचि विशाल मखशाला ॥
देखि परैं जहँ ते दोउ पर्वत विंध्य और हिमवाना ।
अंतर्वेद इक नाम देशको भारतखण्ड प्रधाना ॥
छूटचो अश्वमेध को बाजी अंशुमान रखवारा ।
कीन्ह्यो ताहि सगर नरनायक भेज्यो कटक अपारा ॥
यज्ञपर्वमहँ वासव आयो राक्षस रूप बनाई ।
हरयो तुरंत तुरंग यज्ञको भये दुखित द्विजराई ॥
उपाध्यायगण जाय कह्यो तब सुनहु भूप यजमाना ।
मखबाजी लै गयो चोर कोउ यह भयो विघ्न महाना ॥
मारहु तुरत तुरंगचोरको ल्यावहु वेगहि बाजी ।
विगत विघ्न ऋतु करहु समापत हम ह्वै हैं तब राजी ॥

दोहा—यज्ञ विघ्न हठि करत है, सबहिं अमंगल घोर ।
करहु वाजिमख निर्विघन, हनहु हेरि हयचोर ॥

छन्द चौबोला ।

सगर राज सुनि सभा बैठि अस उपाध्यायकी बानी ।
बोल्यो साठि हजार कुमारन शासन दियो विज्ञानी ॥
मन्त्र पवित्र ब्रह्मऋषि मण्डल करहिं यज्ञको कर्मा ।
तहँ रक्षसन शक्ति नहिं आवनि हरै तुरंग अधर्मा ॥
तातें तुरत जाहु हय हेरहु मंगल होय तुम्हारा ।
यह समुद्र माला महि मण्डल बचै न विना निहारा ॥
जो वसुधा विस्तार विलोके नाहिं विलोकहु बाजी ।
तौ खनि डारहु सकल मेदिनी इक इक योजन राजी ॥
जहँ लौं मिलै न मखको बाजी तहँलगि करि सुत करनी ।

यक २ सुत यक २ योजन लगि खोदि धसावहु धरनी ॥
मख दिक्षित हम उपाध्याय युत बैठे लै निज नाती ।
जबलगि नहिं तुरंग देखब हम तबलगि अति दुख छाती॥
सुनि पितु शासन साठि हजार कुमार महाबलवारे ।
चले अश्व खोजन अवनीमहँ पितु रजाय शिर धारे ॥
डारे खोजि सकल धरणी कहँ लखे न कतहुँ तुरंगा ।
साठि हजार कुमार महाबल रँगे कोपके रंगा ॥
एक कुमार एक योजन लों वज्र सरिस निज बाहू ।
डारयो खोदि खूब धरणीको भयो मेदिनी दाहू ॥
कुलिश सरिस लै शूल करनमहँ तिमि दारुण हलधारा ।
गई खोदि वसुमती विकल अति कीन्ह्यो घोर चिकारा ॥

दोहा—मारे गये भुजंग बहु, भो बहु असुर विनास ।
राक्षसहू केते हते, भय जीवन बड़ि त्रास ॥

छन्द चौबोला ।

हाहाकार मच्यो महि मंडल, प्राणिन कियो पुकारा ।
सगर सुवन खनि डारयो धरणी योजन साठि हजारा ॥
सुनहु पुरुष पंचाननते सब खनत खनत महि काहीं ।
पहुँचे जाइ रसातल सिगरे अंत धरातल माहीं ॥
यहि विधि जंबूद्वीप शैल युत खोदत सगर कुमारा ।
चारिहु ओर अवनि फिरि आये नहिं मख वाजि निहारा ॥
तब सुर असुर और गन्धर्वहु पन्नग भये दुखारी ।
जाय सत्यलोके अति विस्मित जहाँ बसत सुखचारी ॥
सुर सब करि अस्तुति विरंचि को अति विषन्न मुख कीने ।
कहे पितामहसों सन्तापित वचन भूरि भय भीने ॥
हे चतुरानन सगर कुमारन धरणि खोदि सब डारे ।

अपने चलते बिन अपराध वृथा जल जीवन मारे ॥
यही हमारो यज्ञ विघ्न किय यही तुरंग चोराये ।
अस कहि कहि मारे बहु जीवन सगर सुवन भ्रम छाये ॥
सुनि देवनके वचन पितामह तिनको देखि दुखारी ।
काल प्रभाउ सकल मोहित गुनि कही गिरा सुखचारी ॥
जाकी यह सिगरी वसुधा है वासुदेव भगवाना ।
कपिल रूप ह्वै पालत पुहुमी नाशत नेवर नाना ॥
तासु कोप पावकमहँ जरिहैं सिगरे सगर कुमारा ।
कल्प कल्पमहँ खनत मही जारत तिन कपिल उदारा ॥

दोहा—सगर सुवनको और विधि, कबहुँ होत नहिं नास ॥
सुनि विधि शासन तेंतिसौं, देव गये निज बास ॥

छन्द चौबोला ।

इतै प्रचंड सगरके नंदन साठि हजार उदंडा ।
खनत महीको हनत भूमिचर माच्यो शोर अखंडा ॥
मनहुँ होत पविपात पुहुमिपर धुंधकार भो भारी ।
उछलत सिंधु सलिल अंबरलौं लागत शूल कुदारी ॥
यहि विधि खनत खनत धरणी को चारिहु दिशि फिरि आये।
सगर सुवन चलि अवध नगरमहँ जनकहि वचन सुनाये ॥
डार्यो ढूँढ़ि भूमि भूधर वन मार्यो जंतु अपारा ।
दानव देव पिशाच उरग निशिचर किन्नर संहारा ॥
मिल्यो न पिता अश्व मख बाजी हरनहार नहिं पायो ।
काह करैं दीजै अब शासन बुद्धि विचारि सुनायो ॥
सुनि पुत्रनके वचन सगर नृप करि अमर्ष अतिघोरा ।
बहुरि कुमार खनहु वसुधातल लौटौ हनि हय चोरा ॥
मख वाजी बाजी कर हरता जब लगि मिलै न प्यारे ।

तब लगि खोजहु खनहु भूव महि पालत वचन हमारे ॥
सुनि पितु शासन सगर सुअन सब साठि सहस्र बलीने।
खनत खनत महि गये रसातल पितु शासन सति कीने ॥
लखे पर्वताकार महा दिग्गज धरणी धरि ठाढ़ो।
वन पर्वत सरि सिंधु सहित महि धरे शीश बल गाढ़ो ॥
बहत गण्ड मद रद उदण्ड अति विरूपाक्ष जेहि नामा।
सगर सुवन दै दिग्गज को परदक्षिण किये प्रणामा ॥

दोहा—पर्व पाय दिग्गज जबै, श्रमित कँपावत माथ।
तबहिं होत भूकम्प महि, ताहि दिशा रघुनाथ ॥

छन्द चौबोला।

यहि विधि खनि पूरव दिशि धरणी लखि दिग्गज सनमानी।
दक्षिण दिशि लागे महि खोदन सगर सुअन बलखानी ॥
तहँ दिग्गज देखे नृप नन्दन महापद्म जेहि नामा।
महा पर्वताकार शरीर धरे शिर धरा ललामा ॥
अति विस्मय करि सकल सगरसुत दै परदक्षिण ताको।
साठिहजार कुमार सगर के लगे खनन वसुधाको ॥
पूरव दिग्गज दक्षिण दिग्गज देखत सगर कुमारा।
खनत खनत महि पश्चिम आये दिग्गज तहाँ निहारा ॥
नाम सौमनस धरे धरा शिर विंध्य गिरीन्द्र समाना।
पूछि कुशल शिरनाय सगर सुत कीन्हे खनत पयाना ॥
खनत रसातल उत्तर आये दिग्गज लखे महाना।
भद्र नाम तनु श्वेत विराजत मनहुँ खड़ो हिमवाना ॥
दै परदक्षिण करि प्रणाम तेहि धरी धरणि शिर देखी।
साठि सहस्र सगर नृप नन्दन तहाँ तुरङ्ग न पेखी ॥
लागे खनन कोप करि पुहुमी पूरव दिशा पधारे।

गये जबहिं ईशान दिशामहँ सिगरे सगर कुमारे ॥
महा भीमकाया जिनकेरी अति उदण्ड बल बाहू ।
खोदत महि तुरंग नहिं देखत भरे दीह उर दाहू ॥
सगर कुमार जाय कछु आगे कीन्हे कोप महाना ।
लखे सनातन वासुदेव अवतार कपिल भगवाना ॥

दोहा—कछुक दूरमहँ कपिलके, देखो चरत तुरंग ।
रघुनन्दन सब सगर सुत, ह्वै गये आनँद दंग ॥

छन्द चौबोला ।

करिकै कोप कराल काल दृग आपुसमहँ अस गाये ॥
धावहु धावहु धरहु धरहु अब घोर चोर हम पाये ॥
अस कहि कोउ कर किये कुदारी कोउ करमें हलधारी ।
कोउ धाये पाषाण पाणि गहि कोउ बहु वृक्ष उखारी ॥
धाये सगर कुमार कोप करि साठि हजार अपारा ।
ठाढ़ो रहु ठाढ़ो रहु भाषत बचिहै नाहिं गवाँरा ॥
हमरे पिता यज्ञको बाजी ल्याये चोर चोराई ।
अब नहिं बचत मीचु नगचानी पहुँचि गये हम आई ॥
तेरे हेत खोदि महि डारे जीव अनेक सँहारे ।
भाग्य विवश पाये अब तोको लहब मोद तोहिं मारे ॥
अस कहि महा कराल काल सम सगर कुमार अपारा।
आये कपिल देव सन्मुखते कहत मारु धरु मारा ॥
कपिल कुमारनको आवत गुणि नेसुक नैन उघारा ।
करिकै कोप कराल काल सम पुनि कीन्ह्यो हुंकारा ॥
कपिल देवके करत तहाँ यकबार नेकु हुङ्कारा ॥
साठि हजारहु सगर कुमार भये तुरतै जरि छारा ॥
जरिगे सकल सगरके नन्दन लाग्यो भसम पहारा ।

रघुनंदन करिये नहिं अचरज कपिल कृष्ण अवतारा ॥
परि पावकमहँ ज्यों पतंगगण जरिगे करि अपकारा ।
जस को तस बैठो समाधि करि कपिलकछू न विचारा ॥
जो शठउर दासनको रघुवर करत कछुक अपचारा ।
ताकी होत दशा यहि विधिकी वेद पुराण पुकारा ॥

दोहा—बिते बहुत दिन सुतनको, गये सगर जिय जानि ।
अंशुमान निज नातिसों, बोल्यो वचन वखानि ॥

छन्द चौबोला ।

शूर शिरोमणि शास्त्र विलासी अपने तेज प्रकाशी ।
अंशुमान तुम नाति हमारे शुद्ध बुद्ध बलराशी ॥
गये तुम्हारे काकनको अब बीते वष अनेका ।
अबलों पायो खोज कतहुँ नहिं अवनी खनी कितेका ॥
पायो तुरँग किधौं नहिं पायो ताते सुनु न पतारे ।
खोजन साठि हजारन काकन बनिहै गये तिहारे ॥
बसत बली बहु जीव धरातल ताते लै धनु बाना ।
गमनहु सहित युद्ध सामग्री तुम बल बुद्धि निधाना ॥
वंदन लायक वंदन करिकै युध लायक युध ठानी ।
सिद्ध अर्थ करि लौटहु नाती मम मख पारग ज्ञानी ॥
सुनि आजा राजाको शासन अंशुमान बलवाना ।
चल्यो धनुष शर लिहे विक्रमी कटिमें कसे कृपाना ॥
निज काकनको खनित धरातल तेहिपथ कियो पयाना ।
सगर भूप शासन शिरधरिकै अंशुमान मतिमाना ॥
दानव दैत्य पिशाच राक्षसहु सिद्ध विहंग भुजंगा ।
सादर लहत प्रशंसा तिनसों देख्यो दिशा मतंगा ॥
करि प्रणाम परदक्षिण दै तेहि सादर पूछि भलाई ।

निजकाकन के बाजे हरनकी पूछी खबरि तुराई ॥
अंशुमानके वचन सुनत दिग सिंधुर वचन उचारा ।
लौटहुगे लहि सिद्ध बाजि युत हे असमंज कुमारा ॥
दोहा—दिशानागके सुनि वचन, अंशुमान हरषाय ।
चल्यो यथाक्रम दिग्गजन, मिल्यो सुखित शिरनाय ॥
सकल दिशा गज कहत भे, अंशुमान तुम जाहु ।
पैहौ वाजी अर्थ सिधि, रही न उरमें दाहु ॥

छन्द चौबोला ।

अंशुमान सुनि दिग्गज वाणी चल्यो चपल बलवारा ।
पहुँच्यो जाय इशान दिशामें देख्यो राख पहारा ॥
ताके निकट चरत बाजी तहँ विस्मित भयो अपारा ।
जानि भस्म अपने काकनको आरत कियो पुकारा ॥
इनकी प्रेत क्रिया किमि कीजे किमि दीजे जल दाना ।
अंशुमान अति शोकित दुःखित भयो न हो अनुमाना ॥
सलिल देन को चहत तहीक्षण सलिलाशय नहिं देखै ।
चकित व्यथित अकुलाय चहूँ कित चख फेरत वनपेखै ॥
एकबार देखत अतिदूरी देख्यो विहँग अधीशा ।
निज काकनके मातुलको तहँ तुरत नवायो शीशा ॥
अंशुमानको गरुड़ कह्यो तब करहु न शोक कुमारा ।
जार्‌यो साठिहजार कुमारन करिकै कपिल हुँकारा ॥
तुव काकनको वध जग संमत भयो करो न खँभारे ।
साधारण जल देन योग्य नहिं काका कुवँर तिहारे ॥
जेठी सुता हिमाचल केरी इतै ल्याय द्रुत दीजै ।
त्रिभुवन पावन गंगा जलमें काकन क्रिया करीजै ॥
तुव काकन की भस्म राशिपर परी गंग जब धारा ।

जैहैं सकल स्वर्ग लोकहिं तब तरिहैं साठि हजारा ॥
बाजी लै तुम जाहु अवधपुर यज्ञ समापति कीजै ।
सगर पितामहसों हवाल सब काकन को कहि दीजै ॥

दोहा—पन्नगारिके वचन सुनि, अंशुमान सुखपाय ।
लै बाजी आयो बहुरि, कह्यो सगरसों जाय ॥
अंशुमान मुख सुनत नृप, गरुड़वचन दुख पाय ।
कियो समापति वाजिमख, गयो अवध अकुलाय ॥
केहि विधि आवै गंग महि, तारै मोर कुमार ।
लाग्यो करण विचार बहु, पावत शोक न पार ॥
करत विचार नं पार लहि, हायन तीस हजार ।
सगर भूप करि राज महि, गमन्यो स्वर्ग अगार ॥

छन्द चौबोला ।

सगर भूप जब गयो देवपुर काल धर्म कहँ पाई ।
अंशुमानको भूप कियो तब प्रकृत प्रजा समुदाई ॥
अंशुमान तहँ महा धर्मरत पाल्यो प्रजन महीपा ।
ताके भयो सुनहु रघुनन्दन भूपति नाम दिलीपा ॥
सो दिलीप शिरराज भार दै तपहित गो हिमवाना ।
गंगा ल्यावनहेत भूप सो अति दारुण तप ठाना ॥
बत्तिस सहस वर्ष हिमगिरिमें अंशुमान तप कीनो ।
कियो तपोवनमें तनु त्यागन गयो स्वर्ग सुख भीनो ॥
भयो दिलीप महीप महीमें सुनि आजन मुनि जारा ।
कौन भांति ते लहैं सगरसुत विमल गंग जलधारा ॥
कैसे धरणी सुरसरि आवै किमि होवै जल दाना ।
तरैं सगरसुत साठि हजारहु यह उर शोक महाना ॥
निश्चय नहिं पायो दिलीप सुत कीन्ह्यो बहुत विचारा ।

भयो भगीरथ तासु कुमार धर्म धुर धारण वारा ॥
कियो दिलीप यज्ञ जगतीम सविध अनेकन राजा ।
तीस हजार वर्ष महि पाल्यो संयुत प्रजा समाजा ॥
करिकै राज्य दिलीप महीपति गंगा गवन खँभारा ।
व्याधि पाय तनु तज्यो कालवश गवन्यो देव अगारा ॥
इन्द्रलोक जब गो दिलीपनृप अपने कर्म प्रभाऊ ।
भयो भगीरथ भूपति धार्मिक सो कोशलपुरराऊ ॥

दोहा—सुनहु राम राजर्षि सो, भूप भगीरथ नाम ।
पायो नहीं कुमार सो, यत्न कियो सुतकाम ॥

छन्द चौबोला ।

कपिलदेव कृत जारन सुनिकै सगरकुमारन काहीं ।
गंगधार बिन साठि हजारन अहै उधारन नाहीं ॥
सगर अंशुमानहु दिलीपनृप कीन्ह्यो तप यहि हेतू ।
भूप भगीरथ सुनि वृत्तांत नितांत कियो तप नेतू ॥
बोलि सचिवगण सौंपि राज्य तब गयो हिमाचल राजा ।
तहँ गोकर्ण नाम यक तीरथ सुखित बस्यो रघुराजा ॥
भूप भगीरथ किय अरम्भ तप करि निज ऊरध बाहू ।
तापत पञ्च अग्नि इन्द्रियजित रोजहि सहित उछाहू ॥
एक मासमहँ इक वासर तहँ भूपति करत अहारा ।
यहि विधि करत घोर तप ताको बीते वर्ष हजारा ॥
मिलै मोहिं गंगाकी धारा तारौं सगरकुमारा ।
भूप भगीरथके मनमें यह दूसर नाहिं विचारा ॥
की गंगाको आनि स्वर्ग ते सगरकुमारन तारौं ।
की तप करि गोकर्णक्षेत्रमें यहि शरीरको जारौं ॥
तीसर बात लिखी नाहिं ब्रह्मा यह संकलपहि मोरा ।

अस विचार करि भूप भगीरथ किय तप परम कठोरा ॥
भूप भगीरथको तप लखि कै भो प्रसन्न करतारा ।
देववृन्द लै संग चारिमुख नृपतिनिकट पगु धारा ॥
अति संतापित करत महातप भूप भगीरथ काहीं ।
बोल्यो वचन विरंचि सुधासम अतिप्रसन्न मनमाहीं ॥

दोहा—तेरे तपते भूप मैं, तोषित हौं बड़भाग ।
जौन कामना होय मन, तौन आज वर माँग ॥

छन्द चौबोला ।

लखि स्वयंभुको भूप भगीरथ गुणि निज भुवि बड़भागा ।
करि प्रणाम युग पाणि जोरिकै मनवांछित वर माँगा ॥
मोपर होहु प्रसन्न पितामह तौ ऐसो वर देहू ।
सगर सुवन सुरसरि जल पावैं मिटै मोर संदेहू ॥
जो तपको फल देहु पितामह तौ प्रपितामह मेरे ।
मो कर पाय गंगजल सिगरे सुरपुर करहिं बसेरे ॥
सगरकुमारन साठि हजारन कपिलदेव मुनि जारा ।
मेरे संग गंगकी धारा बोरै भस्म पहारा ॥
संतति देहु मोहिं त्रिभुवन पति नहिं कुल होय दुखारी ।
यह उपकार करौ रविकुलको ऐसी विनय हमारी ॥
भूप भगीरथको सुनि याचन ह्वै प्रमुदित करतारा ।
बोल्यो महा मनोहर वाणी सिगरे देव मँझारा ॥
सुनहु महारथ भूप भगीरथ महाराज मम बैना ।
सिद्ध मनोरथ होय तिहारो मृषा वचन मम है ना ॥
हे इक्ष्वाकु भूप कुल वर्द्धन तप कीन्ह्यो अति घोरा ।
होई सकल सुलभ चितचाही सुनहु वचन कछु मोरा ॥
सुता हिमाचलकी जेठी यह त्रिभुवन पावनि गंगा ।

ताकी धार धरनको समरथ है इक दहन अनङ्गा ॥
गंगप्रवाहपतन पुहुमी यह सकिहै नाहिं सँभारी ।
अति बर जोर धार सुरसरिकी बिना शंभुको धारी ॥
दोहा—ताते करहु उपाय नृप, होहिं प्रसन्न पुरारि ।
अस कहि देवन वृन्दयुत, गये धाम सुखचारि ॥
सत्यलोकमहँ जाय विधि, गंगै कह्यो हँकारि ।
करहु धरणि संचार तुम, सगर कुमारन तारि ॥
ब्रह्मा जब वरदान दै, गये आपने धाम ।
हर प्रसन्नहित तप कठिन, कियो भूप तेहि ठाम ॥

छन्द चौबोला ।

भूप भगीरथ एक वर्षलगि इक अँगुठाके भारा ।
ठाढ़ो रह्यो धरणिमहँ निहचल मानस प्रणव उचारा ॥
पूरण भयो जबै संवत्सर शंकर औघड़ दानी ।
सर्वलोकवंदित गिरिजापति पशुपति परम विज्ञानी ॥
आये भूप भगीरथ आश्रम शंकर वृषभ सवारा ।
देखि भगीरथ गिरयो चरणमें प्रस्तुति कियो अपारा ॥
जै शंकर जै जै गिरिजापति जै जै औघड़ दानी ।
जै महेश मुनि मानसवासी जै जै रमन भवानी ॥
जै कैलासवास कृतवास निराश विषै विज्ञानी ।
जै करुणाकर जनतारण हर महिमा वेद बखानी ॥
जै जै शंभु दंभु दुखभंजन रंजन संत सदाहीं ।
जै जै आशुतोष संतापित रोषित कबहूँ नाहीं ॥
जै जै दीनदयाल काल सब कालहुके तुम काला ।
जै गजचरमांबर विशालधर जै कपाल उरमाला ॥
जै काशीपति जै त्रिभुवनपति जै त्र्यंबक भगवाना ।

जै यदुपति गुरु जै यदुपति प्रिय जै सब गुणनिनिधाना ॥
जै जै दक्षयज्ञविध्वंसन जै जै त्रिपुरविनाशी ।
जै गणेश षटवदन पिता प्रभु जै शशिभाल प्रकाशी ॥
जै धुरजटी जटनमें धारहु शंभु सुरधुनीधारा ।
शरणागत हम अहैं रावरे यह अभिलाष हमारा ॥

दो०—भूपभगीरथके वचन, सुनि शंकर हरषाय ।
कह्यो दिलीप कुमार सों, गिरा अमीरस प्याय ॥
हम प्रसन्न तुमपर अहैं, सुनहु भगीरथ भूप ।
धारण करिहैं सुरधुनी, धारा धरणि अनूप ॥
अस कहि शंकर नृपति सों, गवन कियो कैलास ।
बैठे जटा बगारि शिर, गंग धरणकी आस ॥
उत स्वयंभुशासन लहत, गङ्ग वेगि करि वोर ।
चली चपल सुरलोकते, धसी धरणिकी ओर ॥

कवित्त ।

रघुराज भूपति भगीरथके प्रणहेत भद्रहेत भवके अभद्रकालिकालके ।
स्वर्गतेगिरीहैधाराहारावलीमुक्तकैसीशोभाकीअगारागनमंडितमरालके ॥
शरद घनावलीसी गगनगलीमें भली चलीआवैचपलउधारनउतालके ।
पुहुमीपरनलागेपापनपरावनेत्यों पापिनके आये अबबखतानिहालके ॥

दोहा—गंग दुरासद वेग करि, किय विचार तेहि काल ।
शंकरको निज धार धरि, करहुँ प्रवेश पताल ॥
अति दुरधर्ष सहर्ष तहँ, अति उत्कर्षहि धार ।
गिरी गंग अति कोप करि, शंकर जटनि मँझार ॥

कवित्त ।

गंगधारभारभूमिसहिहैनएकोबार जाइहैरसातलमँझारपाय झोकको ।
माचिहैहैहाहाकारप्राणिनसँहारह्वैहै ह्वैहैकरतारजूअगारएक शोकको ॥
रघुराजऐसोकरिविमलविचारशंभुकृपापारावारदीन्ह्योमंगलात्रिलोकको॥

शरदघटानकेछटानसीसुगङ्गधार धारयोहैजटानकामकीन्ह्योनाकझोकको॥
कोटिनयुगनयोगीजपततपततप अंबुकोपियतविश्वबासना बिसारे हैं ।
पावननजाकोअन्तनेतिनेतिभाषैंसन्त वेदविधिविबुधबखानैबारबारे हैं ॥
रघुराजआनँदकेकंद देवकीके नंद पदअरविंद मकरंदके पनारे हैं ।
नैन वारि ढारे धन्य जनमविचारे धूरजटीजटाजूटनमेंगंगधारधारे हैं ॥
दुरितविदारादीनदुखिनउधाराहरि कीरतिअकाराकलिकर्मकृतछारा है।
पुण्यकेपसाराविरजाकोअवतारासबैसुकृतअगारातीनोंलोकमेंप्रचारा है
मुक्तिकोनगारा बैकुंठकोदुआरा रघुराजकीअधारायमनगरउजारा है ।
भुवनकोहारापरम्पदकोकराराजटाजूटनमँझाराशंभुधारयोगंगधारा है॥

दोहा—गंग गरूर गिरीश गुणि, करिकै कोप अपार ।
जटाजूटमें लेत भे, घोर गंगकी धार ॥
जटाजूट मेरे परत, कैसे कढ़ि है गंग ।
देखत हौं अब जोर मैं, कहँ लगि करिहै जंग ॥

छन्द भुजङ्गप्रयात ।

परी शंभु के शीशमें गंगधारा । महा जोर सों शोर कै एक बारा ॥
यथा शैल में सोहती मेघ माला । जटाजूट त्यों गङ्गधारा विशाला ॥
धसी त्यों जटाजूटमें वेग भारी । सुकेसाटवी में भ्रमै गङ्ग बारी ॥
न पावै जटाजूटको अन्त गंगा । भ्रमै ओरचारो भयो वेग भंगा ॥
बिते भूरि सम्बत्सरैं गंग काहीं । हिमाधार शैलाटवी सी तहांहीं ॥
नहीं बिंदुलों गंगकी धार जाती । जटाजूटमें बार बारै भ्रमाती ॥
तहां है गयो गंगको गर्वभङ्गा । भयो भूपके शोकको सो प्रसंगा ॥
न धाई धरामें जबै गंग धारा । तपस्या भगीरत्थ कीन्ह्यों अपारा ॥
महादेवते पाइबेको प्रसादा । रखो मोर मर्य्याद नाशौ विषादा ॥
भगीरत्थको शंभु देख्योकलेशा । जटाको निचोयो तुरंतै महेशा ॥
परी बिंदु नामा सरैमें सुधारा । भयो भूमिमें गंगधारा प्रचारा ॥

कही बिंदु नामा सरै सु विख्याता । तहाँ ह्वै गई गंग की धार साता ॥
चलीं तीनि पूर्वै शुभै मालिनीतें । कहै ह्लादिनी पावनी नालिनीतें ॥
गईं तीनि धारा जबै पूर्वओरा । चलीं तीनि धारा प्रतीचीस जोरा ॥
शतद्रू सुतीता तथा सिंधु नामा । हरैं लोक के पाप को पुण्यधामा ॥
रही सातईं धार जो गंग केरी । चली भूप के संग आनन्द घेरी ॥
भगीरत्थ हूं स्यन्दनै ह्वै सवारा । कहै कौन आनन्द ताको अपारा ॥
महा जोर सों स्वर्धुनी धार आई । भगीरत्थ के रत्थ के सत्थ धाई ॥
गिरी व्योमतें शम्भु के शीशमाहीं । जटाजूट में सो भ्रमी थोर नाहीं ॥
निकारयो जबै गंग को सो पुरारी । तबै सात धारा भईं भूमिचारी ॥

दोहा—चल्यो भगीरथको सुरथ, जेहि पथ आगे धाय ।
पाछे भागीरथी, चली महारव छाय ॥

छंद चौबोला ।

गिरी गगनते गंग शम्भुशिर फेरि धरणि महँ आई ।
बगरि गयो जल चहुँकित जगती घर्घरधुनिक्षितिछाई ॥
मच्छ कच्छ शिशुमार ग्राह बहु देते उछलि हिलोरा ।
गिरे सकल जलधार संग महँ सोहत धरणि करोरा ॥
हल्ला परयो त्रिलोक महहल्ला गिरी गंग की धारा ।
धाये सकल विलोकत कौतुक सुर नर सिद्ध अपारा ॥
तहँ देवर्षि महर्षि असुर सुर विद्याधर गन्धर्वा ।
चारण यक्ष राक्षसहु आदिक त्यों महि मानव सर्वा ॥
गिरत गगन ते गंगधार को सकल विलोकन आये ।
चढ़े विमानन हय गै आनन गगन पंथ छवि छाये ॥
गिरी धरणि महँ जहँ सुरधुनि की धारा अघ की आरा ।
लागे ठट्ट विमानन के तहँ सोहत सुर सुरदारा ॥
गंग पतन अवनी महँ अद्भुत अवलोकन के आसी ।

देखि देखि सुर सकल बखानत सुरधुनि धार सुधासा ॥
जस जस गंगा गिरत गगन ते तेहि धारा के साथै ।
आवत चले विमान करोरिन देव नवाये माथै ॥
चमकत अंबर अमर आभरण मनु रवि उये अनेका ।
तरल तरंग गंग की राजहिं उछलत जल लगि ठेका॥
महा मीन शिशुमार ग्राह तहँ उठैं तरंगन माहीं ।
अतिचञ्चल छलकत जलझलकतचपलासम चमकाहीं॥

दोहा—मनहुँ हजारन दामिनी, गगन पंथ दरशाहिं ।
प्रगटी तहँ सुखमा अमित, कबहुँ लख्योकोउनाहिं ॥

चौपाई ।

विमल खेत जल उछलत आवै । धारन रूप हजारन भावै ॥
मिलिमिलि धार बहुरि बिलगाहीं । चारुचलत चमकत चहुँवाहीं ॥
मनहु शरद जलधर नभ धावैं । माल मराल विशाल सोहावैं ॥
चक्रवाक सारस करि शोरा । गंग संग नभ उड़त करोरा ॥
कहुँ द्रुततर गमनत जलधारा । कहूँ जाति पुनि कुटिलअपारा ॥
कहुँ कहुँ करति महा विस्तारा । कहूँ सूध धावति जल धारा ॥
क्रम क्रम जाति कहूँ पुनि गंगा । करति अपार करारन भंगा ॥
मन्द मन्द कहुँ चलति स्वच्छन्दा । नीच होति कहुँ होति बलन्दा ॥
कहुँ सुरसरि अति सरल सिधावति । कहुँ पुनि जोर शोरकरिधावति ।
परम भयावन भवँर महाना । उछलत तुंग तरंगनि नाना ॥
कहूँ भिरहिं धारनि सों धारा । जल उतंग मनु लसत पहारा ॥
पर्वत फोरि कहूँ कढ़ि जाती । दरशत विमल नीर बहु भाँती ॥
प्रथम उतंग गंग की धारा । चली गगनपथ तुंग अपारा ॥
पुनि सुरधुनी धार ढरकानी । भरतखण्ड सागर समुहानी ॥
गिरी शम्भु शिर पुनि महि आई । भय सुरधुनी धार चकराई ॥

पापिन पापन परस्यो पगवन। परपद पाथ पापि पर पावन ॥
तहँ महर्षि गन्धर्व अपारा। दनुज मनुज सुर असुर कतारा ॥
जीव सकल वसुधातल वासी। रहे और जे नाक निवासी ॥
हरिपद्जलपरस शिवअङ्गा। आयोधरणिजानि जलगङ्गा ॥
मज्जन कीन्हे सकल सप्रीता। कोटि जन्म अघ भये पुनीता ॥

दोहा—शापी पापी जगतके, सन्तापी जन वृन्द।
ते परशत सुरसरि सलिल, भे हत कलुष अमंद ॥
शाप पाप वश जे विबुध, किये धरातल वास।
ते सुरधुनी नहाइ कै, कीन्हे नाक निवास ॥

चौपाई।

भयोलोकसब मुदित महाना। सुरसरितोय तेजपसराना ॥
विविध विहङ्ग पतङ्ग कुरंगा। गङ्ग नहाइ लहे सुर संगा ॥
सुरसरि तोय तेज उजियारा। रह्यो न लोकन अघ अँधियारा ॥
कौतुकनिरखि भगीरथराजा। मान्योसिद्धिसकलनिजकाजा ॥
चढ़ो दिव्यस्यन्दन नृपनंदन। चल्यो गंग संगहि कुलचंदन ॥
भयो गंग धाराके आगे। चल्यो भूप अतिशय अनुरागे ॥
भूप भगीरथ रथके पाछे। गङ्ग तोय धायो अति आछे ॥
हर्षि महर्षि सहित सुरवृन्दा। राक्षस दानव दैत्य सुछन्दा ॥
तहँ गन्धर्व सर्व गण यक्षा। किन्नर चारण भुजग सपक्षा ॥
सुर सुंदरी करत कल गाना। किये भगीरथ संग पयाना ॥

दोहा—मच्छ मकर कूरम उरग, ग्राह गोक्ष शिशुमार।
बिछलत पछिलत उच्छलत, धावत सुरधुनि धार ॥

कवित्त।

ढाहतकरारे त्योंकरतअररारेशोर बोरतवगारेबेशुमारे चली त्रिपथी ॥
पुण्यकोपसारेपापपुंजनकोजारेसोहै देवनविमाननंकतारेहीमेंज्योंनथी।

भनैरघुराज देवलोकन के द्वारेखोले अधमअपारेतारेपापके महारथी ।
बड़भागीभूपतिभगीरथकेपाछेलागीजातज्योंभगीरथत्योंजातिहैभगीरथी॥

छन्द चौबोला ।

आवत आवत धार गंगकी जह्नु आश्रमहि आई ।
करत रहे तहँ यज्ञ जह्नु नृप सिगरो साजु सजाई ॥
जह्नु यज्ञ सामग्री सिगरी बोरयो धारन गंगा ।
जानि राजऋषि गंग गर्व अति कीन्हो कोप अभंगा ॥
जह्नु नरेश तपोबल कीन्ह्यो गंग सलिल सब पाना ।
यह अद्भुत लखि करन लगे सुर हाहाकार महाना ॥
ठगि सो रह्यो भगीरथ भूपति जान्यो सरवसु हानी ।
लाग्यो अस्तुति करन जह्नुकी मनमहँ मानि गलानी ॥
देव यक्ष गन्धर्व आदिसब करि अस्तुति शिरनाये ।
निज दीनता देखाय विविध विधि राजऋषीश मनाये ॥
तज्यो जह्नु गंगा काननसों अपनी सुता बनाई ।
तबते तीनिहुँ लोक सुरसरी नाम जाह्नवी पाई ॥
पुनि सुरसरी प्रचंड वेग सों चली सिंधुकी ओरा ।
मिली कलिंदी और गण्डकी सरयु सोन बरजोरा ॥
लगी भगीरथ रथके पाछे भागीरथि बड़भागी ।
पहुँची जहाँ सगर कुँवरनकी रही राख बुझि आगी ॥
भूधर रह्यो भस्मको भारी परी गंगकी धारा ।
रंचक रही न राख लखनको माच्यो जैजैकारा ॥
सगर कुमारन खाख धार धरि गंगा सिंधु समानी ।
गई रसातल फोरि धरातल चक्र पाणि पदपानी ॥

दोहा—गंगाजल परशत भसम, नृपसुत साठि हजार।
देव महल्लामें घुसे, हल्ला करि इकवार॥
भये देव कल्मष विगत, नन्दन विपिन विहार।
करत रहत नितप्रति अहै, पूरण पुण्य अगार॥
भूप भगीरथ भाँति यहि, तप करि ल्याये गंग।
सगरसुवन तारयो तुरत, पायो सुयश अभंग॥

छन्द चौबोला।

यहि विधि लै सुरनदी भगीरथ सगर कुमारन तारा।
आय कह्यो तब अतिप्रसन्न ह्वै सकल लोक करतारा॥
सुनहु भगीरथ तुवकर तारित सिगरे सगरकुमारा।
बसे देव सम दिविलोकनमें सुंदर साठि हजारा॥
सुनहु भगीरथ जबलगि जलनिधि जलरैहै जगमाहीं।
तबलों सुरसम सगर कुमार स्वर्ग बासिहैं अति नाहीं॥
यह गंगा जेठी दुहिता तव ह्वै है पुण्य प्रचारा।
तुवकृत भागीरथी नाम अस करिहैं मनुज उचारा॥
गङ्गा और त्रिपथगा दिव्या भागीरथी ललामा।
तीनिहुँ लोकनमें प्रवाह तेहि हेत त्रिपथगा नामा॥
देहु तिलांजलि पितामहनको गंगाजल महराजा।
पूरण करी प्रतिज्ञा अपनी भये भूप कृतकाजा॥
पूर्व पुरुष जे रहे तिहारे धर्मात्मा यश वारे।
तिनके पूर भये न मनोरथ जैसे भये तिहारे॥
अंशुमान महराज कियो तप जिन सम भयो न दूजो।
ल्याय सके नहिं गंग जगतमें नाहिं मनोरथ पूजो॥
पुनि राजर्षि महर्षि तेज जिन ममसम तप जिन केरो।
क्षत्रधर्ममहँ एक महीप दिलीप पिता रह तेरो॥

दोहा–तीन दिलीप महीपहूं, सुरसरि आनन काज ।
करत करत तप तनुतजे, भये न अस कृतकाज ॥

छन्द चौबोला ।

जस तुम उतरे प्रण पयोधि नृप करि तप कठिन अपारा ।
तुम्हरे यशते भयो भगीरथ आज सेत संसारा ॥
जो तुम कियो गंग अवतारन अधम उधारन राजा ।
तेहि कारन वैकुंठ अगारन बसिहौ सहित समाजा ॥
तुमहु करहु मज्जन सुरसरिमहँ सत्य ब्रह्मद्रव नीरा ।
भूप भगीरथ सकल पुण्य फल रूप अहौ मतिधीरा ॥
करिकै पूरव पुरुषन को अब तर्प्पण श्राद्ध विधाना ।
जाहु अवधको हमहुँ जाहिं घर लहौ भूप कल्याना ॥
अस कहि भूप भगीरथते विधि गये आपने धामा ।
तर्पण कियो भगीरथ विधियुत सगर सुतन कृतकामा ॥
दै जल सविधि श्राद्धकरि भूपति अवध नगरको आयो ।
सुयश भगीरथको परिपूरण तीनिहुँ लोकन छायो ॥
पूर मनोरथ प्रजा प्रमोदित कियो राज्य बहु काला ।
संशय शोक तापत्रय निरगत भयो प्रताप विशाला ॥
रघुकुल चंदन हे रघुनंदन यह गंगा इतिहासा ।
मैं वरण्यों विस्तार सहित सब तुव पुरुषन यश खासा ॥
संध्याकाल लाल अब आयो पूछौ अब कछुनाहीं ।
संध्याकरन चलहु गंगातट मुनिन संग सुखमाहीं ॥
धनप्रद यशप्रद आयुषकोप्रद सुखप्रद स्वर्ग प्रदाता ।
यह गंगा इतिहास अपूरव मैं वरण्यो अवदाता ॥

दोहा–जो विप्रन अरु क्षत्रियन, वैश्य शूद्रन काहि ।
गंगाचरित सुनावतो, अथवा सुनहिं सदाहि ॥

ताके ऊपर प्रसन्न अति, देव पितर सब होत ।
सहजहि कारज सिद्धि सब, दशदिशि सुयश उदोत ॥
यह गंगा अवतरन महि, श्रद्धा करि जो कोय ।
सुनत तासु मन कामना, सकल सिद्धि द्रुत होय ॥
यह गंगा गाथा सुनत, सिगरे पाप पगात ।
बढ़त आयुषा जगत में, कीरति अति अवदात ॥

इति सिद्धि श्रीसाम्राज्य महाराजाधिराज श्रीमहाराजा बहादुर श्रीकृष्णचन्द्र कृपापात्राधिकारि श्रीरघुराजसिंहजू देव जी. सी. एस.आई. कृते रामस्वयम्बरे-गंगावतरणं नाम त्रयोदशः प्रबंधः ॥ १३ ॥

दो०—राजकथा कौशिक कथित, सुनत लषण अरु राम ।
अतिशय विस्मित चित्त ह्वै, बोले वचन ललाम ॥

छन्द चौबोला ।

यह गंगा अवतरन पुण्यप्रद अति अद्भुत मुनिराई ।
मोहिं सुनायो जेहि विधि सुरसरि मिली सिंधुमहँ जाई ॥
ममपूरब पुरिखनकी गाथा बिच बिच सकल सुनायो ।
आजु नाथ तुम्हरे मुख सुनिकै अतिआनँद हम पायो ॥
अस कहि राम लषण मुनि संयुत सन्ध्यावंदन कीन्हे ।
मुनि शासन लहि तृणशय्यामहँ सुखद शयनमन दीन्हे ॥
कौशिक कथित देवसरि वर्णन मनमहँ करत विचारा ।
युगलबंधु सुखशयन किये तहँ उठे जानि भिनुसारा ॥
प्रातकृत्य करिकै रघुनंदन सहित लषण लघु भाई ।
विश्वामित्र समीप आइकै कहे चरण शिरनाई ॥
नाथ व्यतीत भई रजनी सब क्षण समान हम काहीं ।
चिन्तत गंगचरित्र भनित तुव चुक्यो न सो मन माहीं ॥
तुमहि जानि उतरनके आसी मुनिन उतरनी तरनी ।
आई सुख भरनी मनहरनी गंगपारकी करनी ॥

राजकुमार वचन सुनिमुनिवर मुनिन सहित चढ़ि नाऊ ।
उतरे गङ्ग सङ्ग दशरथ सुत त्रिभुवन विदित प्रभाऊ ॥
उत्तरकूल जाय मुनिनायक सब ऋषिगण सत्कारे ।
कियो निवास राम लक्ष्मण युत सुंदर गङ्ग किनारे ॥
महामनोहर पुरी सुहावनि जाको नाम विशाला ।
देखि सकल मुनि लगे सराहन पाय अनंद विशाला ॥

दोहा—राम लषण युत गाधिसुत, चले नगरकी ओर ।
अमरावती समान छवि, रमणीयता अथोर ॥
पुरी मनोहर पेखि प्रभु, जोरि सुपंकज पानि ।
कौशिक मुनि सर्वज्ञ सों, कही वाणि सुखदानि ॥
कौन राजको वंश यह, वसत कौन अब राज ।
पुरी विशाला किमि भई, कहौ सकल मुनिराज ॥
सुनि दशरथनन्दन वचन, विश्वामित्र प्रवीन ।
पुरी विशालाकी कथा, कहन लगे प्राचीन ॥

छन्द चौबोला ।

सुनहु राम वासवकी गाथा भयो जौन यह देशा ।
पूरब दिति अरु अदिति सुवन सुर असुर भये बल वेशा ॥
पुरुषसिंह तहँ वैठि सुरासुर दोऊ किये विचारा ।
केहि विधि अजर अमर होवैं हम रहै न रोग अपारा ॥
चिन्तत सकल सुरासुर के तहँ एक बुद्धि दृढ़ कीन्हे ।
क्षीरसिंधुमथि अमी निकासैं सकल यही मन दीन्हे ॥
मथन क्षीर सागर निश्चय करि रजु करि वासुकि नागा ।
मंदरागिरिकी विरचि मथानी मथन लगे बड़भागा ॥
वीते मथत हजारन हायन दब्यो वासुकी नागा ।
वमत महाविष बहु मुख दंशत शिलन कोप अति जागा ॥

मथत क्षीरनिधि कढ्यो महाविष हालाहल जेहि नामा ।
ताते जरन लग्यो सिगरो जग सुर नर असुर सधामा ॥
जरत सुरासुर जानि जगतको गे कम्पित कैलासा ।
त्राहि त्राहि शङ्कर संकटहर अब रक्षहु कृतिवासा ॥
जै जै देव देव पशुपति प्रभु शङ्कर शरण निवाजी ।
जयति रुद्र गिरिजापति जै हर तुम देवन हित काजी ॥
करत सुरासुरके अस्तुति तहँ प्रगट भये भगवाना ।
शंख चक्र शारङ्ग गदाधर देवन वृन्द प्रधाना ॥
रुद्र शूलधर सों भाष्यो हरि नेकु मन्द मुसकाई ।
मथत क्षीरनिधि कढ्यो प्रथम विष जारत जग समुदाई ॥

दोहा—तुम पूर्वज सब सुरनके, कढ्यो पूर्व विष घोर ।
ताते तिहरो भाग है, पान करहु मत मोर ॥
असकहि नारायण भये, तेहि थल अन्तर्धान ।
हरिको शासन हर सुनत, कियो मनहि अनुमान ॥
देवनको दुख देखि शिव, प्रभुशासन शिरधारि ।
हालाहल विष सुधा सम, पान कियो त्रिपुरारि ॥
देवनको तहँ त्यागि हर, गवन कियो कैलास ।
लगे सुरासुर मथन पुनि, करि करि अमित प्रयास ॥

छन्द चौबोला ।

धस्यो महा मन्दर अधार बिनु पहुँच्यो जाइ पताला ।
तब गंधर्व सर्व सुर असुरहु ध्याये कृष्ण कृपाला ॥
तुमहीं हो सब प्राणिनके गति सुरगति नाथ विशेशा ।
मंदरको उधार कीजै अब रक्षहु हमहिं रमेशा ॥
सुनि देवनकी आरतवाणी प्रगटे शारँगपानी ।
धरि कमठावतार नारायण गे पताल बलखानी ॥

धरच्यो पीठपर मन्दर गिरिको तहँत ताहि उठायो ।
एक रूपते बैठि शैल शिर पदते ताहि दबायो ॥
तीसर रूप धारि जगनायक मिलि देवन बड़भागे ।
कंज करन सों मंदरको गहि आपहु मंथन लागे ॥
बिते हजार वर्ष हरि मंथत धन्वन्तरि तब निकसे ।
आयुर्वेद लिहे इक कर इक दण्ड कमण्डलु बिलसे ॥
तिनके पीछे कढी अप्सरा अतिसुंदर सुकुमारी ।
अप मंथनते कढी ताहिते नाम अप्सरा धारी ॥
कढीं अप्सरा साठि कोटि तहँ छाईं वदन जोन्हाईं ।
परिचारिका असंख्यन तिनकी रहीं जगत मन भाईं ॥
ग्रहण कियो नहिं तिन्हैं सुरासुर साधारण जिय जानी ।
ताते साधारणी नाम तिन लह्यो जगत छबिखानी ॥
वरुण सुता पुनि कढ़ी वारुणी वर वर खोजन लागी ।
असुर कियो नहिं ताहि ग्रहण सुर ग्रहण कियो अनुरागी ॥

सुरा लिये सुर ताहिते, सुर पाये सुर नाम ।
असुर सुरा नहिं ग्रहण किय, असुर कहाये आम ॥
देव वारुणी पाइकै, पाये परम अनन्द ।
उच्चैश्रवा तुरंग मणि, कौस्तुभ कढ्यो अमन्द ॥
क्षीरधिते निकस्यो बहुरि, सुधा सकल सुखदान ।
देखत देव अदेव सब, लेन हेत ललचान ॥

छन्द चौबोला ।

भयो सुधाहित महाभयावन देवासुर संग्रामा ।
हने देव दैत्यन कहँ रणमहँ भये पूर मन कामा ॥
पुनि राक्षस असुरन सहाइ करि बहु देवनकहँ मारे ।
श्रीरघुवीर महारण माच्यो भे त्रिभुवन भय भारे ॥

जानि पियूष लेत असुरन कहँ किया मोहिनी माया ।
हरच्यो महाबल विष्णु सुधाको तड़कि तुरत रघुराया ॥
भये देव देवेश शरण सब पुरुषोत्तमके जाई ।
हरि करि कृपा सुरनको संगर करन दियो पठवाई ॥
दैत्य दानवन मारि देव सब दीन्ह्यो समर भगाई ।
दैत्य दानवन जीति देवपति कियो राज्य बरिआई ॥
शासन कीन्ह्यो सुखित पुरंदर ऋषिन सहित त्रैलोका ।
है गन्धर्व सर्व सिधि चारण बसे सकल निज ओका ॥
निजपुत्रनको लखिविनाशदितिकश्यपनिकटसिधारी ।
अतिशय दुखित मरीचि सुअन सों रोवत गिरा उचारी ॥
मारिगये प्रियपुत्र हमारे तुव पुत्रनने रनमें ।
ताते शक्र विनाशी बालक पावनको मम मनमें ॥
महा घोर तप करब कंत हम देहु गर्भ करि दाया ।
सो बालक मारै वासवको रहै अछै तेहि काया ॥
दितिके वचन सुनत कश्यप मुनि बोले वचन प्रमाना ।
सहस वर्ष लगि जो शुचि रैहै सुत पैहै बलवाना ॥

दोहा—समर शक्रजेता अवशि, ह्वै है तोर कुमार ।
जो तप विघ्न न ठानि है, बीतत वर्ष हजार ॥
जो शुचि रैहै दिति प्रिया, पूरण वर्ष हजार ।
बीते जग विजयी सुवन, पै है वचन हमार ॥

छन्द चौबोला ।

अस कहि करते दिति कर परशत कश्यप स्वस्ति उचारे ।
गर्भाधान कियो दितिमें मुनि तप हित विपिन सिधारे ॥
गे पति विपिन तबै दिति हर्षित कुशप्लवन अस्थाना ।
करन लगी दारुण तप सुत हित कश्यप कथित विधाना ॥

जानि शक्रहंता सुत भावी छल करि वासव जाई ।
अतिसनेह दर्शाय मातुकी करन लग्यो सेवकाई ॥
अग्नि काठ कुश सलिल फूल फल ल्यावत सुनत रजाई ।
औरहु वस्तु जो मातु चहै सो आनत विलँव विहाई ॥
कर पद मर्दन विजन डोलाउव सेज विछाउव आदी ।
सेवन करत शक्र दितिको नित उर छल मुख मृदुवादी ॥
यहि विधि वीते सहस वर्ष जव रहे वर्ष दश बाकी ।
तवदिति हर्षित कह्यो शक्रसों जानि शुद्ध मति ताकी ॥
सुनहु पुत्र सुरनायक निहरो पितादियो वरदाना ।
सहस वर्ष वीते सुत पैहौ जगविजयी बलवाना ॥
सहस वर्ष मोहिं विते करत तप अब बाकी दश वर्षा ।
सो बीते लखिहौ भ्राता को पैहौ अतिशय हर्षा ॥
याँच्यो तुव हित पुत्र कंत सों त्रिभुवन जयके हेतू ।
विजयमान ह्वै निज भ्राता युत वसिहौ नाक निकेतू ॥
अस कहि वासवसों दिति हर्षित मध्य दिवस अलसानी ।
शिरहन ओर चरण करि सोवन लगी अविधि नहिं जानी ॥

दोहा—अविधि अशुचि गुणि शक्र तेहि, चरण ओर शिर देखि ।
हँस्यो मनहिंमन मुद पगन, सोइ अवसर अवरेखि ॥
दिति शरीरके विवर ह्वै, कीन्ह्यो उदर प्रवेश ।
सत खण्ड दिति गर्भको, किय लै कुलिश सुरेश ॥
करत खंड तहँ वज्रसों, रोयो गर्भ पुकारि ।
मारुद मारुद शक्र कह, दिति जगिचकी निहारि ॥

छन्द चौबोला ।

नहिं रोवै अस कहत जात हरि गर्भहि काटत जातो ।
रोवतहूं नहिं दया करत कछु सुमिरत वैर अघातो ॥

तब दिति कह्यो न गर्भनाश करु दया करहु सुरराई ।
लिहे कुलिशकर जोरिपाणि दोउ कह्यो वचन शिरनाई ॥
मातु अशुचि ह्वै शयन कियो तैं करि शिरहन युग पादा ।
यह अन्तर हौं पाय प्रविशि उर नहिं गुणि तोर विषादा ॥
ले कर कुलिश शक्रहंता तुव गर्भखंड किय साता ।
यक यक खंडन सात खंड किय क्षमु अपराधहि माता ॥
जानि तहाँ दिति गर्भखंड बहु महाशोक दुखपाई ।
दुराधर्ष वासव सों बोली अति सनेह दरशाई ॥
सतखंड यह गर्भ भयो जो सो अपराध हमारो ।
तिहरो प्रिय करनो हम चाहति नहिं अपराध तिहारो ॥
भयो विपर्यय जौन गर्भ मम तेहि अस करौ सुरेशा ।
मारुद मारुद कह्यो ताहि ते मारुत माम हमेशा ॥
यक यक खंडहि सात खंड किय ते सब भे वंचासा ।
भयो सात गण सात सात वपु करैं सुनाक निवासा ॥
वातसकंध थान पावैं सब विचरैं स्वर्ग सदाहीं ।
मारुत नाम विख्यात त्रिलोकहि लैहैं दिव्य वपु काहीं ॥
बहै एक गण ब्रह्मलोक महँ इन्द्रलोक महँ दूजो ॥
दिव्य वायु विख्यात भुवन महँ बहै मरुतगण तीजो

दोहा—रहे चारि जे मरुत गण, शासन पाय तुम्हार ।
बहत रहैं दशहू दिशन, वासव मोर कुमार ॥
देव रूप सुत होहिं सब, अति बलीन दुतिमान ।
सात सात को एक गण, मारुत देव प्रधान ॥
सुनि विमातु के वचन वर, वासव पाय विनोद ।
जोरि पाणि पङ्कज कह्यो, मोहिं जानु निज गोद ॥

छन्द चौबोला।

जैसो वचन उचारयो माता यहि विधि सिगरो होई ।
यामें कछु संशय नहिं मानो मोर बंधु सब कोई ॥
जेहि जेहि लोकन कह्यो मातु तैं तेहि तेहि लोकन माहीं।
कह्यो जौन विधि तेहि विधि बहिहैं तेरे पुत्र सदाहीं ॥
यहि विधि निश्चय करि माता सुत गये स्वर्ग कहँ दोऊ ।
त्यागि तपोवन बसे नाक महँ अस भाषत सब कोऊ ॥
हे रघुनंदन यही देश सो कीन्ह्यो दिति तप भारी ।
कियो विघ्न वासव मारुत गण प्रगटे जग संचारी ॥
कुशालवन यह देश नाम है दूसर नाम विशाला ।
नृप इक्ष्वाकु पुत्र यक सुंदर अलंबुषी को लाला ॥
नाम विशाल विशाला नगरी यह थल भूप बसायो ।
हेमचन्द्र भो पुनि विशाल सुत महाबली जग जायो ॥
हेमचन्द्र के पुनि सुचन्द्र भो सुत सुचन्द्र धूम्रासू ।
भयो पुत्र धूम्रासु भूप के संजै नामक तासू ॥
संजैनंदन भो सहदेव कृशाश्व तासु सुत भयऊ ।
पुनि कृशाश्व के सोमदत्त भो सुयश जासु जग छयऊ ॥
सोमदत्त के भो ककुत्स्थ सुत जासु पराक्रम भारी ।
विद्यमान ताको सुत है अब सुमति नाम सुखकारी ॥
दुर्जय परम शत्रुदल गंजन तुव बांधव रघुनाथा ।
देव समान स्वरूप धर्मधर कारक प्रजन सनाथा ॥

दोहा—नृप इक्ष्वाकु प्रसाद ते, भये जे वंश विशाल ।
धर्म धुरन्धर धरणिपति, ते जीवत बहु काल ॥
होत महात्मा सकल ते, धर्मात्मा महिपाल ।
भानुवंश भूपति सकल, समर शूर रघुलाल ॥

बसे विशाल पुरी निशा, आजु सबै सुख पाय ।
कालिह लखब मिथिलेश को, मिथिलापुरमहँ जाय ॥
गाधिसुवनके सुनि वचन, राम लषण सुख पाय ।
निशा विशाला में वसन, संमत दियो सुनाय ॥
बसे सरित तट तरुन तर, लै कौशिक मुनि भीर ।
संध्योपासन हेतु किय, गवन लषण रघुवीर ॥
विश्वामित्र मुनीश को, आगम सुनि हरषाय ।
सुमति भूप आवत भयो, अगवानी हित धाय ॥
सहित पुरोहित सचिव सब, सुमति सबांधव आय ।
विश्वामित्र मुनीशके, परयो चरण शिरनाय ॥
जोरि पाणि पङ्कज कह्यो, कुशल रहे मुनिराय ।
मोहिं धन्य धरणी कियो, दर्शन दीन्ह्यो आय ॥

इति सिद्धि श्रीसाम्राज्य महाराजाधिराज श्रीमहाराजा बहादुर श्रीकृष्णचन्द्रकृपापात्राऽधिकारि श्रीरघुराज सिंह जू देव जी. सी.एस.आई कृते रामस्वयंवरग्रन्थे क्षीराधिमंथनमरुतजन्मवर्णनं नाम चतुर्दशः प्रबन्धः ॥ १४ ॥

दोहा—सुनत सुमति वाणी विमल, विश्वामित्र सचैन ।
वसुधाधिपहि सराहि बहु, बदे विमल वर बैन ॥
ईश कृपा हम तुम कुशल, रहहिं सदा सब ठाम ।
सुमति सुशील सुभाव तव, लखि पाये सुखधाम ॥
यहि विधि भाषत मुनि नृपति, वचन विदित व्यवहार ।
संध्या करि आये उभै, दशरथ राजकुमार ॥

कवित्त ।

मानोएकसङ्गआवैंभानुसितभानुदोऊमानोंद्वैशरीरकैकृशानुछबिछावैं हैं ।
फैलतप्रभाकेपुंज गंजन मदनमद हदसुखमाकेभरेचखन चोरावैं हैं ॥

भैनरघुराज विश्वमोहनीनजरिपाश फाँसैंमनविहँगनजानअन्तपावैहैं ।
देखतस्वरूपअवधेशजूके लालनके पलकप्रदातैमंदकरणी बनावैहैं ॥
सोरठा—लषण राम अवलोकि, उठी तुरंत समाज सब ।
सुमति नैन जल रोकि, कौशिक सों पूछत भये ॥

छन्द झूलना ।

आफताव सो एक महताव सो दूसरा चश्मके चोर खूबसूरतीखूब हैं ।
रुआब यों ख्वाब में देखने में नहीं शान औ शौकमें सच्चई सूब हैं ॥
कहैं रघुराज मुनिराज हमसे कहौ कौन के फबे फरजंद दिलहूब हैं ।
विहिश्तकेनूर मशहूर दिलहूर हरजान में जहाँके जान महबूब हैं ॥
इनकी भौंह टेढ़ी कसी जेव देती दुनौ चश्म ते हद्द कत्लाम करतैं ।
नये चांदसे वदन विदुरानिखासी त्यों जवाहिरजड़ेकड़े दिलकोदरतैं ॥
क्या सजीली जवानी की है रोशनी जवर्दस्ती हमारे हिये हरतैं ।
रघुराज मैं आजतक देखा नहीं ऐसीअजबसूरत के जंगल में फिरतैं ॥

दोहा—सुमति भूपके कहत अस, दोउ कुमार सुकुमार ।
आये मुनिवरके निकट, सब समाज मनुहार ॥
मुनि उठि अङ्क लगाइ कै, लिय आगे बैठाय ।
भे चकोर चख सबन के, निरखि वदन निशिराय ॥
सुमति सकोच सनेह वश, सुठि सुख तहँ सरसाय ।
कौशिक सों पूछो बहुरि, विनय प्रीति दरशाय ॥

छन्द सुंदर ।

गाधिसुतसुनहु कल्यानहैं रावरे । कौनके पुत्र ये गौर अरु साँवरे ॥
देवसेरूपवरविश्वमें विक्रमी । मंदगति सिंह अरु सिन्धुर अतिक्रमी ॥
ओजशार्दूलसमत्तवृषभाकृती । मदनमदकदनकसविपिनचारणव्रती ।
विशदनवजलजदलविमलयुगनयनहैं।भौंहजनुमदनधनुदेतउरचयनहैं ॥

लसैं कटिकसीतुनढालकरवालहैं । पीठितूणीरयुगशरनकेजालहैं ॥
धनुर्धरधर्मधरधीरधरधरनिमें । हायगोकोउनइनगुणनसमकरनिमें ॥
मनहुँजोरी विबुधवैदकी सोहती । जो बनाईअरुणता हियो मोहती ॥
कहौमुनिकिधौंयुगदेवइतआयगे । पुरीपुरजनअमितमोदसरसायगे ॥
लसतकोदंडशरचण्डभुजदण्डमें।करनअरिखंडयहखण्डनवखण्डमें ॥
कुसुमकोमलचरणकठिनधरनीचलैं।परशिकंकरनिकरनाथमोमनमलैं ॥
कहौमुनिकौनआगमनकोहेतुहै । कौन इनको पितासुकृतिकोसेतुहै ॥
कहाँइनकोसदनबसतकेहिनगरमें । कौनहितफिरतदोउडांगकीडगरमें।
कौनकारणरहतरावरेनिकटमें। डरतमुनिक्योंनतुमल्यायबनविकटमें ।
युगलजोरीभलीअसनदेखीकहूँ । फिरचोमुनिनाथमैंदिशाविदिशाचहूँ ॥
चित्त चोरत चितै चखन चहुँओरहैं। विप्रकुलतिलककीभूपशिरमौरहैं ॥
किधौंविधिधामकेकामअवतारहैं । किधौंजगसुछविकेसछविआगारहैं ॥
हियोवरवसहरैं वेशबानिकबनें। चुकत नाहिंरूपसौंदर्य्ययकमुखभनें ॥
विरचिविधिइन्हेंधौंधोइकरबैठिगो । पेखिमनमोरमुदमहोदधिपैठिगो ॥
वदनविधुदेखिसुरसुन्दरीरीझतीं। पलकपरिकलपयुगनिपलकपरिखीजतीं
कृपाकरिकहौमुनिराजअबआजई।प्रथमइनकुँवरकोआगमन काजई ॥
सोरठा—सुनत सुमति के बैन, विश्वामित्र हुलास भरि ।
दे रघुपति छवि नैन, चैन ऐन कह बैन बर ॥

कवित्त ।

आफ़ताब औलाद मरजादवारे सङ्ग चलते पील असवार प्यादे ।
रहनेवाले ये ऐश आराम के हैं मघवान ते शान औ शानजादे ॥
रघुराज दोउ आले मरातिवा के इसीवक्त में पूर करि दिये वादे ।
समर बाँकुरे ठाकुरे अवध के हैं दशरत्थ बादशाह के शाहज़ादे ॥

सवैया

नीच मरीच सुबाहु महाखल लै रजनीचर की समुदाई ।

आश्रम आय हमारे महाबल घोर घमंडभरे दुखदाई ॥
मो मख मंडप मंडल वेदिका शोणित मांसहु की झरिल्याई ।
श्रीरघुराज सुनो सुमती नृप जारयो ममाश्रम आगि लगाई १
ठाढ़े रहे रणबाँकुरे दोऊ महा रजनीचर धाये प्रचारी ।
सायक लै बिनहींफर को रघुनायक ताकि सुभायक मारी ॥
नीच मरीच को आसु उड़ाय गिराय दियो शतयोजन चारी ।
श्रीरघुराज कुमार महा सुकुमार कियो मख की रखवारी २
आयो सुबाहु उमाहु भरो रण जो सुरनाहु को दाहु दैवैया ।
आसुही आस्यबगारि उचारि यो ठाढ़ो रहै नृप लाल लड़ैया ॥
पावक सायक ताके दियो उर नेसुक कोपित ह्वै रघुरैया ।
भाषत हौं रघुराज किहे शिव साख सो खाख भयो दुख दैया ३
धाये तुरंत तमीचर औरहु ताकि तिन्हैं लषणौ ललकारयो ।
झारयो शरासन ते शर वृन्दन बारहिं बार प्रवीरप्रचारयो ॥
श्रीरघुराज बड़ो रण बाँकुरो भाँति भली रिपु सैन सँहारयो ।
फागु सोखेलिलियोक्षणमेंहँसिहोलिकासोंखलकोदलजारयो ४
कीन्ह्यो भली विधि रक्षन यज्ञको लक्षन मारिनिशाचरतक्षन ।
होत विलक्षन यज्ञ विदेह की जात निरक्षन आपने अक्षन ॥
श्रीरघुराज विशाल पुरीपति है इनते पर दूसरो दक्षन ।
पक्ष अपक्षन के शुभ लक्षण जेठ हैं राम कनिष्ठ हैं लक्षन ॥

सोरठा—सुनिमुनिवर के बैन, अति आनँद भूपति लह्यो ।
छके देखि छवि नैन, मैन माधुरी वारि दिय ॥

छन्द चौबोला ।

अतिथ अपूरव जानि अवनिपति दशरथ राजकुमारा ।
भूषण वसन विचित्र मँगाय कियो अनुपम सत्कारा ॥
पाय सुमति सत्कार गाधिसुत राम लषण सुख साने ।

कीन्ह्यो निशा निवास हुलासिन आसिन भोर पयान ॥
सुमति सराहि सुशील सनेह गेह गवन्यो शिरनाई ।
भूप विशाल सराहि काल कछु शयन किये दोउ भाई ॥
उठि प्रभात सब प्रातक्रिया करि कोमलपद जलजाता ।
अतिअवदात विख्यात विश्वमुनि संग चले दोउ भ्राता ॥
गह्यो मंजु मारग मिथिलाको मुनिन समाज समेतू ।
मंद मंद गमनत गयंद गति ऋषि सँग रघुकुल केतू ॥
गये दूर पथ युग योजन जब जनक नगर रहि गयऊ ।
मिथिलापुरके तुंग पताके मुनिगण देखत भयऊ ॥
अति उतंग मंदिर सुंदर सब चमचमात चहुँघाहीं ।
फहरैं नाके नाक पताके सुखमाके पुर माहीं ॥
मानहुँ पूरब उदय दिवाकर विलसत करन पसारे ।
नहिं ठहरात दीठि जगमग द्युति चौंधा चखननिहारे ॥
कनक कलश विलसत तारा इव छुअन चहत नभमानौ ।
जगमगातजनुकनककलशामिसमिथिलापतियशजानौ ॥

दोहा–लगे सराहन सकल मुनि, जनक नगर छवि भूरि ।
राम लषण दर्शावहीं, कहहिं अबै पुर दूरि ॥

कवित्त ।

प्राचीदिशि प्रगट दिवाकर द्वितीय कैधौं,
शरद निशाधौं चन्द्रतारायुत भावती ॥
मायाको विलास कैधौं ब्रह्मको निवास कैधौं,
विष्णुको अवास कैधौं छाया छबि छावती ॥
रघुराज यह जनकनगर शोभा,
देखत बनत नाहिं मुख कहि आवती ।
कैधौं अलकावती है कैधौं अमरावती है,

पद्माकी बनाइ कैधौं पुरी मदमावती ॥

दोहा—सकल भुवन शोभा भरी, दूरिहिते दरशाइ ।
निकटगये कस लखि परी, यह मुख कही न जाइ ॥

छन्द चौबोला ।

और कछू नेरे जब गवने मुनियुत राजकुमारे ।
मिथिलापुरी निकट अमराई शीतल सघन निहारे ॥
तहँ यक मंजु मनोहर मुदकर आश्रम सून दिखाना ।
जोरि पाणि पंकज रघुनन्दन मुनिसों वचन बखाना ॥
सुनत रामके वचन गाधिसुत बोले मृदु मुसकाई ।
हौं सब कथा कहत जैसो इत भो वृत्तांत महाई ॥
जासु शापते भयो सून यह आश्रम प्रथम सुजाना ।
गौतम मुनि इक रहे महातप यहि आश्रम मतिमाना ॥
तिनकी रही अहल्या नारी अति सुन्दर सुकुमारी ।
दोउ मिलि कीन्ह्यो इहाँ महातप वर्ष अनेक सुखारी ॥
गौतमनारि निहारि महाछबि सुरनायक मन मोह्यो ।
घात लगायो मिलन हेत तेहि नहिं अवसर कछु जोह्यो ॥
तब गौतमको रूप धारि हरि आयो आश्रम माहीं ।
मज्जन हेतु गये मुनिवर जब प्रविश्यो तुरत तहाँहीं ॥
कह्यो अहल्यै वचन विहँसि कछु सरस सनेह दिखाई ।
जानि सुमुखि ऋतुकाल तिहारो हौं आयो इत धाई ॥
मोहि लियो मन रूपमाधुरी तुहिं सम विश्व न नारी ।
हौं रतिदान माँगने आयों जरत अनंग दवारी ॥
गौतम वेष जानि वासवको मोहि वचन रचनाई ।
कियो विहार विचार अहल्या महाकुमति उर आई ॥

दोहा–कियो विहार सुरेश सँग, गौतम मुनिकी नारि ।
पुनि मुनिको डरि शक्रसों, कही गिरा भयभारि ॥

छन्द चौबोला ।

अपनेको अरु हमरेहुको अब रक्षण कियो उपाई ।
जो जानि हैं मुनीश कर्म यह देहैं तुरत जराई ॥
कह्यो पुरंदर अति प्रसन्न ह्वै राख्यो जीवनप्यारी ।
नहिं जानिहैं प्रसङ्ग महामुनि हौं अब जात सिधारी ॥
यहि विधि मुनितियसों रमि वासव चल्यो कुटी सों आसू ।
कढ़त कुटी ते मिलिगे गौतम उर उपजो अतित्रासू ॥
ज्वलित तेज तप दुराधर्ष अति आश्रम करत प्रवेशा ।
अपनो रूप धरे छल बल वश देख्यो त्रसित सुरेशा ॥
समिध सहित कुश लिये पाणि मुनि यक कर कुंभसनीरा ।
वासव छल बल जानि तपोबल कियो कोप मतिधीरा ॥
बोले वचन अरे सुरनायक कियो महा अपकारा ।
दुराचार मम दार नष्ट किय पैहै फल यहि बारा ॥
मेरो वपु धरि अरे सुराधम नहिं कछु धर्म विचारी ।
रम्यो विप्रनारीसों सुरपति मेरी त्रास बिसारी ॥
ताते वृषण हीन होवै हठि पावै अति संतापा ।
यहि विधि कहि वासव को गौतम दियो अहल्यै शापा ॥
रीपापिनि तैं धर्म छोड़ि सब सुरपतिसों रति ठानी ।
अन्तर्हित ह्वै बस यहि आश्रम बिना अन्न अरु पानी ॥
आठौ पहर तपतरहि है तनु जब बीती बहुकाला ।
तब ऐहैं दशरथके नन्दन रघुपति कौशलपाला ॥

दोहा–तिनके परशत चरणयुग, लहि आपन आकार ।
मेरे निकट पुनि, करि रामहिं सत्कार ॥

अस गौतम के कहत भो, वृषण हीन सुरराज ।
भई अहल्या रूप विन, आश्रम रही अकाज ॥

सोरठा—यहि विधि दै मुनि शाप, निज तियको अरु शक्रको ।
तजि आश्रम लहि ताप, गये हिमाचल करन तप ॥
किन्नर चारण सिद्ध, सेवित हिमगिरि सर्वदा ।
आश्रम एक प्रसिद्ध, तहां लगे तप करन मुनि ॥

छन्द चौबोला ।

इतै विकल वासव विन वृषणन गमन्यो स्वर्ग दुखारी ।
भस्म सैन अन्तर्हित वपु ह्वै रही तहां मुनि नारी ॥
अतिशय पीडित भयो पुरंदर देवन मुनिन बुलायो ।
सुरगुरु सों अरु पावक सों तहँ व्यथित वदन अस गायो ॥
गौतम तपको विघ्न करन हित मैं कीन्ह्यों अपचारा ।
दियो शाप मोहिं घोर महामुनि साधत काज तुम्हारा ॥
अण्डकोश विन भये शापवश अबका करिय उपाई ।
दै कै शाप अहल्यहुको मुनि दीन्ह्यो भस्म छिपाई ॥
हे सुरमुनि सुर कारज साधत भै यह दशा हमारी ।
तातें करौ सहाइ सबै मिलि मैं नहिं होहुँ दुखारी ॥
अग्नि देव गुरु औरौ सुर ऋषि मुनि वासवके बैना ।
पितरन देवन और मरुतगण बोलि कहे भरि चैना ॥
भयो पुरंदर गौतम शापित वृषणहीन यहि कालै ।
सकल देव मुनि मेख वृषण लै देहु वृषण सुरपालै ॥
सवृषण वासव होय यही विधि मिटै दुसह दुख भारा ।
वृषण हीन ह्वै मेख स्वतन दे है तोष अपारा ॥
मेख वृषण लै जा सुरपतिके देहौ देव लगाई ।
इन्द्र दुसह दुख मिटी यही क्षण मेख लही शुचिताई ॥

मख वृषण अस नाम शक्रका कहत सब संसारा ।
अवृषण मख देव पितरनको दैहैं तोष अपारा ॥

दोहा—जो कोउ अवृषण मखको. सुर पितरनके काज ।
करि उद्देश जग देइगो. तेहि फल विहहु दराज ॥

छन्द चौबोला ।

अग्नि वचन सुनि देव पितर सब मखन वृषण उखारी ।
दियो लगाइ देवनायक के मिटी पीर तनु भारी ॥
धर्यो पुरन्दर को सुर मुनि सब मखवृषण अस नामा ।
अति पवित्र भो मख मांस तबहीं ते सुर नर कामा ॥
यह पूरब की कथा कही सब गौतमकी अतिप्यारी ।
अब धनुधारी पगुधारी मुनिनारी आसु उधारी ॥
विश्वामित्र वचन सुनि रघुपति करि आगे मुनिराई ॥
गौतम आश्रम गये लषण युत पीछे मुनि समुदाई ॥
परत पाँय पंकज रज तेहिथल गौतम शाप नशानी ।
प्रगट भई तहँ आसु अहल्या गुणमंदिर छविखानी ॥
राम लषण मुनि लखे अहल्या बड़ भागिनि तेहि जानी ।
जबते गौतम शाप दियो तेहि तब ते अबै लखानी ॥
तिय भूषण विरंचि कर विरची रूपवती मनु माया ।
मनहुँ महोदधि मथि प्रगटायो प्रभा रेख दिनराया ॥
मनहुँ तुपार अपार विराजित द्वितिय चन्दकी रेषा ।
अतिशय कृशित वपुष मुनि नारी लखि सुन्दर प्रभु वेषा ॥
बार बार दृग वारि बहावत पुलकावलि तन माहीं ।
नहिंनिकसतकछुप्रेमविवशमुखअनिमिषलखतितहाँहीं ॥
सावधान है पुनि करजोरी प्रभुके आगे ठाढ़ी ।
अस्तुति करति अहल्या मुद भरि प्रेमभक्ति उर बाढ़ी ॥

सोरठा–जै जै कौशलनाथ, परब्रह्म व्यापक जगत ।
प्रभु मोहिं कियो सनाथ, करुणा वरुणालय विदित ॥

(स्तुति छन्द)

परसत पद पावन पाप नशावन पावन पतित होत क्षणमें ॥
देखत रघुनायक जग सुखदायक लायक होत देवगणमें ॥
अति प्रेम अधीरा पुलक शरीरा धारि उर धीरा वचन कही ।
अति निर्मल वानी अस्तुति ठानी मन हुलसानी चरणगही ॥
जै ज्ञान गम्य विमुखन अगम्य आनम्य शंभु अज चरणा ॥
मैं नारि अपावनि अति अघ छावनि अधम चारहू वरणा ॥
राजीव विलोचन भव भय मोचन दीन सकोचन आये ।
मैं शरण तिहारे राजकुमारे जग उजियारे भाये ॥
मुनि शाप जो दीन्हा अति भल कीन्हा चीन्हा मोहिं अवभारा
देख्यों भरि आँखी प्रभु जग साखी भाखी विनय अपारा ॥
विनती प्रभु मोरी मैं मति भोरी खोरी मम विसराई ।
निज पद रति दीजै दासी कीजै छीजै तनु सेवकाई ॥
तुव पद सुर सरिता जग अघ हरिता धरिता शिव निज शीशा ।
अघदाहक नाऊँ कहँ लगि गाऊँ पाऊँ भक्ति अशीशा ॥
करि कृपा सनेहू जो कछु देहू सो लेहू फल फूला ।
मैं रही अनाथा भई सनाथा माथा मम पद मूला ॥

दोहा–यहि विधि करि अस्तुति विमल, प्रेम पुलकि मुनिनारि ।
रही अचञ्चल मूँदि चष, लखि मूरति मनहारि ॥

छन्द चौबोला ।

गौतम घरणी राम लषण गुणि पद गहि कियो प्रणामा ।
निज पति वचन सुरति करि मुनि तिय भै पूरण मनकामा ॥
कंद मूल फल फूल विविध विधि दीन्ह्यो प्रभु कहँ ल्याई ।

पूजन कियो सविधि युग बंधुन प्रीति रीति दरशाई।
जानि अहल्या प्रीति प्रेम प्रभु लिय सादर सत्कारा।
जै जै कहि प्रभु अघम उधारन दीन्हे देव नगारा॥
चढ़े विमानन लेख अलेखन वर्षहिं मुदित प्रसूना।
तहँ गन्धर्व अप्सरहु किन्नर पाये आनँद दूना॥
आये सकल अहल्या आश्रम प्रभु दर्शन हित लागी।
महासमागम भयो कुटीमें कहहिं सकल बड़भागी॥
धन्य धन्य मुनिनारि अहल्या जोहिं हित हरि पगुधारे।
धनि गौतम जिनकी अस गेहिनि शाप व्याज नहि तारे॥
अस कहि कराहिं अहल्या पूजन सुर मुनि किन्नर नाना।
महातपोबल ते गौतम मुनि यह चरित्र सब जाना॥
योग प्रभाव आइगे गौतम प्रभुपद पंकज वंदे।
राम लषण मुनि पद प्रणाम किय वारहिं वार अनंदे॥
राम लषण कौशिक मुनि गण को गौतम किय सत्कारा।
सुखी अहल्या सहित भये मुनि गे तप हित लै दारा॥
गौतम और अहल्या करते राम लषण दोउ भाई।
वार वार सत्कार पाय वसि वार चले अतुराई॥

दोहा—यहि विधि गौतमनारिको, नाम अहल्या जासु।
तारयो पदरज झारि निज, भजै न को पद तासु॥

इति सिद्धिश्रीसाम्राज्य महाराजाधिराज श्रीमहाराजा बहादुर श्रीकृष्णचन्द्र कृपापात्राऽधिकारि श्रीरघुराजसिंहजू देव जी. सी. एस. आई. कृते रामस्वयंवरे अहल्या उद्धारणं नाम पञ्चदशः प्रबन्धः॥ १५॥

दोहा—जा दिन प्रभु गौतम घरणि, तारयो पदरज झारि।
ताही दिन ताकी कुटी, कियो निवास मुरारि॥

छन्द चौबोला।

लखि प्रभात पूपनकी आवनि यामिनि जानि सिरानी।
हुलसत कोक अशोक होन हित तागवलि बिलगानी॥
मुनिनायक युत रघुनायक उठि प्रातकर्म सब कीन्हे।
मुनि मंडली सहित रघुनंदन जनकनगर पथ लीन्हे॥
चले महर्षि महा उत्साहित जनक दरश अभिलाषी।
विश्वामित्र महामुनि मोदित चलत राम रुख राषी॥
उत्तर पूरबकोण पंथ मृदु पग पग शीतल छाया।
चले जात मुनि मंडल मंडित लषण सहित रघुराया॥
आगे आगे चलत गाधिसुत पाछे राजकुमारा।
पहुँचे जनकनगर उपवन हेमंत वसंत बहारा॥
यज्ञथली मुनि भली जनकपुर राम लषण अस भाखे।
सुनहु महामुनिनाथ जनक नृप अतिसुंदर करि राखे॥
बहु वासव सी वर विभूति यह ऋद्धि सिद्धि समुदाई।
तापर पुनि मुनि होत स्वयंवर अद्भुत परै लखाई॥
जनकनगर महँ होत स्वयंवर धनुषयज्ञ संभारा।
देखनको देशन देशनते आये भूप हजारा॥
महाभीर भूपातिक पुरमें लाखन विप्र जुहाने।
चारिहुँ वर्ण अनेकन आये यज्ञ लखन ललचाने॥
चारिहुँ ओर जनकपुरके मुनि रहीं जहां अमराई।
उपवन वर वाटिका बजारन भरीं जनन समुदाई॥

दोहा—वैदिक विप्रन के विविध, शकटनकी समुदाय।
अमराइन डेरा परे, विलग कहूं न देखाय॥

छन्द चौबोला।

ताते करहु निवास महामुनि जहां स्वच्छ थल होई।

जहां जलाशय होय विमल अति सहसा जाय न कोई ॥
सुख उपजावनि मनभावनि अति जनकपुरी छबि छाई ।
लखी आजुलों अस कतहूं नहिं यथा विदेह बनाई ॥
आजु भयो अतिकाल महामुनि ताते चलहु तुराई ।
नीर निवास सुपास सकल विधि जहँ शीतल अमराई ॥
मुनि सुनि वचन पाय आनँद अति चले पंथ तजि दूरी ।
देखे यक थल सकल हर्ष भल विमल जलाशय पूरी ॥
शीतल अमराई छविछाई मंजु विहङ्गन शोरा ।
अति इकांत जहँ होत शांत चित विगत मलिन सब ठोरा ॥
बहत नदी अति निकट सुगम तट शाखा सलिल बिलोरै ।
मधुकर गुंजनि कुञ्जनि कुंजनि मंजु पुंज तरु झोरै ॥
सकल सुपास निवास योगथल लखि मुनि लषण खरारी ।
कीन्हे वास हुलास भरे सब भयो नाश श्रम भारी ॥
देखत जनकनगरकी शोभा लोभा मन अविकारी ।
भनत परस्पर वचन सकल ऋषि नृप विदेह बड़वारी ॥
कञ्चन कोट कँगूरे कलशा गोपुर गुंजें दुआरा ।
अति सुन्दर मंदिर उतंग वर कनक सुवनक केवाँरा ॥
शशिशाला अंतहपुर शाला शाला सभासदन के ॥
गजशाला तुरंगशाला वर निर्मित मनहुँ मदन के ॥

दोहा—हाट बाट घर घाटके, सुछबि पाट नव ठाट ।
हाटकके फाटक लसत, मनहुँ तेज हवि वाट ॥

सवैया ।

चाँदनी सी चमकै चहुँ ओर तनी चुनी चाँदनी चारु महाई ।
चित्रित चित्र विचित्र बने चितये जेहि चित्त गहै चकिताई ॥

कौन कहै मिथिलेश कि संपति शक्रहु देखि लहै लघुताई।
श्रीरघुराज जहाँ जगदंब अलंब भई तहँ कौन बड़ाई॥

छन्द हरिगीतिका।

कहुँ धरणिपति सैना परी फहरत अनेक निशान हैं।
हय गय अनेकन विविध स्यंदन शिविर विशद वितान हैं॥
नौवत झरत बहु नृपति डेरन दुन्दुभी धुनि ह्वै रही।
कहुँ नचत नट कहुँ बजत बाजन बार तिय गति लै रही॥
कहुँ लसत उपवन मुनिन मण्डल करत वेद उचार हैं।
कोउ करत संध्या करत कोउ अभ्यास शास्त्र अपार हैं॥
कौपीन दण्ड कमण्डलहु मृगचर्म छत्र विराजते
आये लषण धनुयज्ञ कौतुक सहित मुनिन समाज ते॥

दोहा–अभिलाषन लाखन मनुज, अवलोकनि धनु यज्ञ।
आये मिथिला नगरमहँ, अज्ञहु तज्ञ कृतज्ञ॥
यथायोग्य भूपन जनक, कीन्ह्यो अति सतकार।
निमि कुल कमल पतङ्गको, छायो सुयश अपार॥
यहि विधि भाषत मुनिनके, कोउ पुरवासी जाय।
जाहिर कियो विदेहको, गाधिसुअन गे आय॥
विश्वामित्र मुनीशको, सुनि आगम मिथिलेश।
सतानंदको बोलि द्रुत, चले मिलन शुभवेष॥

छन्द चौबोला।

सदानंद आगे करि लीन्ह्यो द्विज मण्डली सोहाई।
पढ़त वेद वैदिक धरणीसुर जयधुनि चहुँकित छाई॥
चलत पयादे मुनि दर्शन हित सबै सराहत लोगू।
मिलन जात मनु ब्रह्म सतोगुण करि विराग भव भोगू॥
आवत देखि विदेह भूपको मुनिजन देखन धाये।

आय आय कौशिक मुनिके ढिग सुखित समाज लगाये ॥
आवत जानि भूपको कौशिक द्वै मुनि तुरत पठाये ।
ते निमिकुल भूपतिको करगहि मुनिनायक ढिग ल्याये ॥
विश्वामित्रहि भूप विलोकत कीन्ह्यो दंड प्रणामा ।
कौशिक धाय उठाय लाय उर आशिष दियो ललामा ॥
दै आसन बैठाइ भूपको अति सत्कारि मुनीशा ।
सादर कुशल प्रश्न पूछ्यो पुनि मोदित अहहु महीशा ॥
तब करजोरि कह्यो मिथिलापति कुशल कृपा तुव नाथा ।
कीन्ह्यो पावन पुरी हमारी अब मैं भयो सनाथा ॥
सैन सहोदर सचिव सहित प्रभु सब विधि कुशल हमारी ।
सफल भयो मम धनुपयज्ञ अब करी कृपा मुनि भारी ॥
बोले विहँसि गाधिनंदन तब रचना भली बनाई ।
लखन स्वयंवर कसि कसि कम्मर आये नृप समुदाई ॥
महा भागवत है मिथिलापति ज्ञान विज्ञान निधानू ।
लखन स्वयंवर धनुपयज्ञ युत हमहूं कियो पयानू ॥

दोहा—गये हुते संध्या करन, पुरुषसिंह दोउ भाय ।
आये सहज समाज मधि, जिमि उडुगण दिनराय ॥

पद खेमटा ।

मिथिलापुर आये मुनिराई ।
सुनि मिथिलापति सकुल जाइ तहँ बारबार वंदे शिरनाई ॥
ताही समय लखन फुलवाई गये हते सलषण रघुराई ।
आइ गये तनु गौर श्याम तहँ कौशिकमुनि समीपसुखदाई ॥
लोचन सुखद विश्वचितचोरन वैकिशोर अति सुंदरताई ।
उठी समाज राजसुत देखत मुनि निज निकटलियो बैठाई ॥
सुखीसकलजलबहतविलोचनपुलकितगातनकछुकहिजाई ।

मूरति मधुर मनोहर जोरी जोहि विदेह विदेह सोहाई ॥
प्रेम मगन नृप कौशिक सों कह गद्गद गिरा गरूर गवाँई ।
ई दोउ बालक नृपकुलपालक धौं मुनि वंश वतंश बनाई ॥
किधौं उभै वपु धर्‌यो ब्रह्म इत वेगि बताइय नाहिं दुराई ।
सहज विराग वलित मन मेरो इनहिं निरखि अवगयो थकाई ॥
छोड़ि ब्रह्मसुख रँग्यो रूप रस जैसे चंद्र चकोर मिताई ।
जनक वचन सुनि कह्यो गाधिसुत सत्यसत्यतुम मृषानगाई ॥
तप बल मदन शृंगार रूप धरि आये करन आप सेवकाई ।
महाराज रघुराज राजवर राजकुँअर जानहु दोउ भाई ॥

छंद झूलना

तामरसनयनतनुश्यामघनश्यामइवकिर्त्तिजिनआमदिकारिनकरणाभरन ॥
तरनिसमपरमप्रतापमुनितापहर शापहरपापहरदुखिनदारिददरन ॥
नृपतिशिरमौरचखचित्तकेचोरचट मदनमदमोरयुगचरनभवभयहरन ।
भनैरघुराजराजानकेराज दशरत्थमहराजके कुँवर आनँद भरन ॥

दोहा—राजकुमारन देखि तहँ, सिगरी उठी समाज ।
भये अचंचल सबनके, नयन लखनके काज ॥
सहित समाज विदेह तहँ, राम लषणको देखि ।
पलकन ते कीन्हे विदा, निमि नृपको दुख लेखि ॥
देव रूप सिगरे भये, चहे देवपति होन ।
भये विदेह समान सब, निरखि राम छवि भौन ॥
सुरति सम्हारि नरेश तब, कौशिकको करजोरि ।
पूछे गद्गद गर गिरा, प्रेम पयोनिधि बोरि ॥

सवैया ।

सुंदर श्यामल गौर शरीर विलोकत धीर रहै कस काके ।
लोचन विश्वके चित्तके चोर किशोर कुमार छयेसुखमाके ॥

आपने आनन इंदु छटानि ते हारक भे सबके मनशोके ।
श्रीरघुराज कह्यो मुनिराज अनोखे ललानि के नाम पिता के
हैं धौं उभै मुनि के कुलपालक कीधौं महीपति बालक दोई ।
देखत रूप अनूप सुनो मुनि मेरी दशा हठिकै अस होई ॥
भूलो विराग विज्ञान स्वरूप इन्हैं लखि और देखात न कोई ।
ब्रह्मको आनँद बाद भयो उपज्यो उर आनँद जोइ न जोई ॥
वारिय गौन में सिंधुर सिंहनि शारद नीरज नैननि वारिये ।
वारिये मत्त महावृष ओजहि चंद्रछटा मुसकानि उवारिये ॥
वारिये श्रीरघुराज भुजानि पै भोगिन भोगन तुल्य विचारिये।
वंचक सी विधि की करनी इनकी रुचि रंचक में न उचारिये ॥

दोहा--यहि विधि भाषत नृपति के, आये राम समीप ।
मुनि सादर लक्ष्मण सहित, बैठाये कुलदीप ॥

कवित्त ।

कटिमेंकराले करवालैकसौं द्वालैबीच लालैउरमालैउरमालैबालैगंगकी ।
माथनमेंमुकुटरसालैमणिहीरलालै फैलतिविशालैप्रभावदनपतंगकी ॥
भनैरघुराजमिथिलापुरसमाजराज देखिततकालैहालैहालैभूलैअंगकी ।
दुअनकोकालकालैमीतनकोमोदमालै देखिरघुलालचालकाछविअनंगकी ॥

दोहा--कहत परस्पर पुरप्रजा, पेखत राजकुमार ।
इनहिं देखि आँखिन तरे, को आवत सुकुमार ॥
विरति अछेह सुब्रह्म रति, जनक ज्ञान को तेह ।
सो सरसाइ सनेह सुठि, भये विदेह विदेह ॥

कवित्त ।

काकेउदैपूरवकीपुण्यपरिपूरणहै कौनपैविधाताआजुदाहिनोदयालहै ।
काकेअँगनामेंआजुखेलतीहैंसिद्धिनिधिकौनलूटिब्रह्मानंदह्वैगयोनिहालहै ॥

आजुलों नदेखेऐसेकुँवरकलानिधिसे विरतिवलितमन ह्वैगयोविहालहै ।
भनैरघुराजमुनिराजक्योंवताओनहिंसाँवरोसलोनोकहौकाकोयहलालहै
मदनकहानीसुनीहतीसुंदराईकेरी कोऊनहिंदेखीनयनदूरहू निरायकै ।
कहतअनेकमुनिअश्विनीकुमारकथा वृथासोजनातिइनजोटाछविछायकै
ह्वैगईनहोइगीनहेरेहूँमिलैगीअव देखीयहजोरीजैसीआजुइतआयकै ।
रघुराजकैधोंपरब्रह्मह्वैप्रसन्नतोहिं रूपदरशायो युग मूरतिवनायकै ॥
कहांपायेकौनकेपठायेसंगआयेनाथ कैसेकैछोड़ायेभौनभलेपितुमाताहैं ।
कोमलकमलहूंतेचरणवगायोवन कंकरकठिन काहेआपअवदाताहैं ॥
आतपसहतसुकुमारयेकुमारकाहे आपनेहीहाथन ते विरचे विधाताहैं ।
भनै रघुराज मुनिराजमोहिंजानोपरै सुभगसहोदरकुमारदोऊभ्राता हैं ॥
भूषण भुवनकेनदेखे परैं दूषन के पूषनप्रकाशकेपियूषनसुभाउके ।
जीतेएकएकछविसिंधुकीतरंगनसों सितासितसुखमाउमंगनिउराउके ॥
विश्वमनहारेअरुणारेनयनप्यारेअति जंगजैतवारेधनुधारेचित्तचाउके ।
भाउकेप्रभाउकेवनाउकेभलेहैंमुनि वेगिहीवताउसुतकौनराजाराउके ॥

—सुनि विदेह के वर वचन, वोले मुनि मुसकाय ।
जौन कही तुम सत्य सब, मृषा न नेक जनाय ॥

कवित्त ।

विश्ववरविदितवसुंधराधिराजधीर वीरमणिअवधअधीशनरपालहैं ।
विबुधसहाईशक्रजाकीरुखराखेचलै वंदतचरणधराधीशनकेमाल हैं ॥
धरमधुरंधर धरामें धाकधावैध्रुव ध्रुवसोंसमुद्धतप्रतापसर्वकाल हैं ।
भनैरघुराजराजराजमणिमहाराजदाहिनेदुनीकेदशरत्थजूकेलालहैं ॥
शारदशशीसीकौमुदीसीमुखदीसीभलीभीजीमुखमसीमींसीरदनिसोहाईहै
देवनकीखीसीसुंदराईविसेवीसीभूरि कनकतपीसीतनुदुतिअधिकाई है ॥
क्षमाअवनीसीरीसीअरिनपैकालपीसीवोलनिमधुरसुधासीसीठरकाई है ॥
भनैरघुराजमहाराजमिथिलेशसुनो रामवनश्यामको लषणलघुभाई है ॥

दोहा—जेहि कारण आये इतै, दशरथ राजकुमार ।
सुनो कथा सिरगसिरी, मिथिला भू भरतार ॥

सवैया ।

लंक बसै रजनीचरनाह महाभट रावन रावरो जानो ।
ताके पठाये मरीच सुबाहु उपद्रव यज्ञमें कीन्ह्यो महानो ॥
ह्वां तप भंग भै शाप दियो नहिं कौशलनाथ पै कीन्ह्योपयानो ।
माँग्यो नृपै सुत द्वै रघुराज दियो दशरत्थ दयाल ह्वै दानो ॥
ये युग नन्दन कौशलनाथ के लै सँग आश्रम बाट सिधारे ।
मारगमें मिली ताडुका आय भयावनि धावति दंत निकारे ॥
खेलसों खेलतही रघुनन्दन बाणन वृन्दन ताहि सँहारे ।
श्रीरघुराज विशोक भये तहँके मुनि मानव पापिनि मारे ॥
आयकै आपने आश्रम में कियो यज्ञ अरंभ प्रमोद प्रफुल्ला ।
आये निशाचर साहनी साजि मरीच सुबाहु सुने मख गुल्ला ॥
श्रीरघुराज सुनो मिथिलेश दोऊ दशस्यन्दनके रण दुल्ला ।
मारिकै बाण दिशानन भेजे बिलाय गये जिमि वारिके बुल्ला ॥
रावरी राजसुताको स्वयंवर त्यों धनुयज्ञ सुने सब कोई ।
आवन लागे इतै हमहूँ तब राजकुमार कहे मुद मोई ॥
श्रीरघुराज हमू चलिहैं सुख पैहैं विदेहकी जागहि जोई ।
ताते लेवाय चले सँगमें मुनिकै क्षण छोड़े महादुख होई ॥
श्रीरघुराज समेत जबै मुनिवृन्द विशाल पुरीमहँ आयो ।
भूप सुबुद्धि कियो अतिआदर द्वै दिन लौं कहुँ जान न पायो ॥
ज्यों त्यों कै आवन दीन्ह्यो नरेश बसे पुनि गौतमआश्रमआयो ।
भूप सुनो जो चरित्र भयो तहँ आजुलों ऐसो न आँखिनआयो ॥
साँवरो राजकुमार गयो कुटी एक पषाण परो रह्यो भारी ।
तामें धरयो सहजै पद पंकज ताते कढ़ी यक सुन्दरनारी ॥

अस्तुतिकै गवनी पतिधामको आपनो नाम अहल्यापुकारी।
शाप प्रताप शिला सो रही रघुराज लला तेहि दीन्ह्योउधारी॥

दोहा–अब आये मिथिलानगर, संयुत राजकुमार ।
भयो प्रसन्न हमार मन, लहि तुम्हार सत्कार ॥
कियो स्वयंवरको महा, मिथिलाधिप सम्भार ।
धनुषयज्ञ लखि कुँवर दोउ, जैहैं अवध अगार ॥
सुनि कौशिकके वचन वर, गौतम जेठ कुमार ।
सतानंद बोल्यो वचन, धनि धनि अवधभुआर॥

छन्द चौबोला ।

जाहि विधाता दियो कुँवर अस अनुपम त्रिभुवन माहीं ।
तासु भागि वर्णन समरथ अब अहै विश्व महँ नाहीं ॥
अस कहि बार बार रघुनन्दन लषण वदन छवि देखी ।
रोमांचित तनु सतानन्द तब मोदित भयो विशेखी ॥
सतानन्द कौशिक सों बोल्यो सुनिये गाधिकुमारा ।
परश कराय राम पद जननी कीन्ह्यो तासु उधारा ॥
कहहु फूल फल लै जननी मम कियो प्रभुहि सत्कारा ।
पूरब कथा सुनाय दियो तुम वासव कर आचारा ॥
कहहु कहहु पितु आये की नहिं राम दरशके हेतू ।
राम लषण वन्दे मम पितु कहँ लै आशिष सुख सेतू ॥
सतानन्दके सुनत वचन तहँ कौशिक मुनि मुसकाने ।
बारहिंबार सराहि गौतमहि कहे वचन सुखसाने ॥
जो कर्तव्य रह्यो हमरो कछु सो सब पूरण भयऊ ।
मिली रावरे पितु कहँ पत्नी शाप ताप मिटि गयऊ ॥
अस सुनि ह्वै प्रमुदित गौतमसुत विश्वामित्र सराहीं ।
कह्यो रामसों वैन चैन भरि तुम सम कोउ जन नाहीं ॥

आय दरश दीन्ह्यो मिथिलापुर विश्वामित्र समेतू ।
हे ब्रह्मर्षि महामुनि कौशिक सिद्धि सकल तप सेतू ॥
मैं वरणों अब सुनहु राम तुम विश्वामित्र प्रभाऊ ।
भये जौन विधि महा ब्रह्मऋषि जगत विदित सब काऊ॥

दोहा-रह्यो चक्रवर्त्ती नृपति, पूरव गाधिकुमार ।
पाल्यो पुहमी धर्मयुत, दियो प्रजन सुखसार ॥

छन्द चौबोला ।

एक समय पुहमी विचरतमें सैन्य सहित महिपाला ।
गयो वसिष्ठ आश्रमहि राजा लखि रमणीय विशाला ॥
तहँदेवर्षि महर्षि ब्रह्मऋषि करैं महातप नाना ।
होम करत कहुँ वालखिल्य मुनि जप तप तेज निधाना ॥
निरखि वसिष्ठ गाधिनंदन तहँ कीन्ह्यो मुदित प्रणामा ।
आशिष दै विधि सुत बैठायो आसन दियो ललामा ॥
मूल फूल फलदै सत्कारयो कुशल प्रश्न कर नाना ।
नाथ कृपा सब कुशल हमारी कौशिक वचन बखाना ॥
विदा होन जब लगे गाधिसुत तब वसिष्ठ अस भाषा ।
करन हेत आतिथ्य रावरी सैन सहित अभिलाषा ॥
नृप कह मूल फूल फल राउर याते अधिक न कोई ।
चहौं भवनको गवन नाथ अब लह्यो दरश मुदमोई ॥
पुनि पुनि कियो वसिष्ठ निमंत्रण कियो भूप स्वीकारा ।
जाय वसिष्ठ धेनु सबलासों वंदत वचन उचारा ॥
विश्वामित्र भूप इत आये वर्षहु वस्तु अपारा ।
सैन्यसहित मैं गाधिसुवनको करन चहौं सत्कारा ॥
सुनि मुनि विनय सुरभिसबलातहँ प्रगटी वस्तु अनेका ।
खान पान स्थान थान पट बहुविधि सहित विवेका ॥

साजिन समाजहि कौशिक रानाहि राजभवन सब भूला ।
बासव बास बास सुख पायो भये सकल सुर तूला ॥
दोहा -विश्वामित्र विलोकि कै, सबला परम प्रभाउ ।
[illegible] ॥

छन्द चौपाला ।

लाख गऊ लीजै हमसे मुनि सुरभी सबला दीजै
चौदह सहस कनक भूषित गज अबहीं ग्रहण करीजै
नहिं मानौ तौ कोटि गऊ मुनिनायक हमसे लेहू
होइ जो संपति सकल हमारे सो लै सुरभी देहू
[illegible] गऊ [illegible] दीजै ।
तदपि न देहै सबला तुमको अस न मनोरथ कीजै ॥
वसुधाकी संपति लै सिगरी जो तुम हमको देहौ ।

दोहा—ब्रह्मण [illegible] मांगे कृपा, मुनियनको मन पेड़ ।
नहीं पुत्र यद्यपि अहैं, तब पद सरिस न कोइ ॥

छन्द चौबोला ।

शासन धेनु ओहिं कुशिकात्मज देखहु समर तमाशा ।
पञ्चबान मैं भूप गाधिसुतअनको करिहौं कृपी बिनाशा ॥
कह्यो [illegible] धेनु [illegible] भाषे [illegible] कामीं ।
इतना कहत धेनु कोपित ह्वै सिरज्यो यवन [illegible] ॥
[illegible] पुनि यवन [illegible] कढ़े [illegible] हुँकारा ।
विश्वामित्र विलोकत सिरजी कियो सैन संहारा ॥
गाधितनय तब करि अमर्ष अति कियो धनुष टंकोरा ।
छोड़ि दिशानन बाणन मारि मलेच्छनको मुँह मोरा ॥
सुरभी ओहिं यवनगण भागत निज प्रति रोमनि तेरे ।
सिरज्यो कोटिन महा मलेच्छन भरिगे भूमि घनेरे ॥
आयुधवंत यवन धाये सब मारन गाधि कुमारे ।
भूपति मारि मारि बाणन बहु कियो यवन संहारे ॥
कह्यो वसिष्ठ धेनु सिरजहु फिरि इतना सुनि सुरभी सों ।
कोटिन यवनसकलसिरज्योतनुकरिअद्भुत करनी सों ॥
हय गय स्यंदन सहित पदातिन कीन्हे सैन निपाता ।

छन्द चौबोला।

शंभु प्रसन्न हेतु कीन्ह्यो तप सहि आतप जलधारा।
महाकठिन तप लखि गिरिजापति ह्वै प्रसन्न इक बारा॥
आये विश्वामित्र आश्रमहि कह्यो माँगु वरदाना।
महादेवके वचन सुनत नृप मंजुल वैन बखाना॥
जो प्रसन्न मोपर गिरिजावर तौ करि जनपर नेहू।
अस्त्र शस्त्र सब विश्व भरेके मंत्र सहित मोहिं देहू॥
एवमस्तु कहि शंकर गवने पाइ अस्त्र महिपाला।
मृतक समान वसिष्ठ मानि तहँ बाढ्यो दर्प विशाला॥
आयो कुपित ब्रह्मसुतपहँ सो पावक अस्त्र पँवारा।
अति रमणीय वसिष्ठ आश्रमहि ज्वालन मालन जारा॥
भगे भभारि सब शिष्य पुकारत अति आरत दिशि चारी।
जीव विहीन कुटी भै मुनिकी रह्यो एक तपधारी॥
ब्रह्मदंड लै खड़ो ब्रह्मसुत करत ब्रह्म कर ध्याना।
अति निर्भय रवि कोटि तेज तनु कोपित वचन बखाना॥
रे रे दुराचार मूरख वर आश्रम मोर जरायो।
ताते जानै निज आयुष हत का करिहै सजि आयो॥
अस कहि खड़ो वसिष्ठ अकेलो ब्रह्मदंड कर धारे।
विगत धूम इव पावक ज्वाला तीक्षण तेज पसारे॥
अग्नि अस्त्र छोड्यो कौशिक नृप सो मुनि दंड समाना।
सिगरे अस्त्र चलाय दियो सहँ ब्रह्मदंड किय पाना॥

दोहा–लियो ब्रह्मशर गाधिसुत, मुनि पै दियो चलाय।
ब्रह्म तेजमहँ मिलत भो, मानहुँ गयो बुताय॥
ग्रासि लीन्ह्यो ब्रह्मास्त्र जब, प्रगट्यो तेज कराल।
जरनलग्यो त्रिभुवन तहां, भे सुर सिद्ध विहाल॥

छन्द चौबोला।

आय न कल तहँ मुनि वसिष्ट की अस्तुति करि कह बानी।
भयो पराजित मूढ़ महीपति तेज समटहु ज्ञानी॥
विश्वामित्र विलोकि दशा निज मानि हारि अस भाख्यो।
धिक क्षत्रिय बल धन्य विप्र बल अबलों भ्रम उर राख्यो॥
अतिशय तपित हृदय उसाँस लै पुनि पुनि मनहि विचारी।
हारि गयो मैं मुनि वसिष्टसों करिये काह मुरारी॥
अब करिहौं मैं घोर महातप विपिन बीच कहुँ जाई।
की तजि हौं तनुकी ह्वै हौं हठि अब ब्रह्मर्षि बजाई॥
अस गुणि गयो दिशा दक्षिण मुनि गाधिसुवन युत रानी।
कियो घोर तप सहस वर्ष लों फल मूलाशन ज्ञानी॥
करत महातप भये पुत्र शत मधु छंदादिक नामा।
वर्ष सहस्र बीते चतुरानन आयो पूरणकामा॥
विश्वामित्रहि कह्यो चारिमुख भये राजऋषि राजा।
अस कहि गमन्यो लोक आपने लै निज सकल समाजा॥
किय ब्रह्मर्षि होन हित अतितप नाम राजऋषि पायो।
विश्वामित्र दुखी ह्वै तहँ पुनि करन महातप ठायो॥
इतै त्रिशंकु भूप कौशलपुर भयो जगत विख्याता।
यज्ञ करन हित गुरु वसिष्ठसों बोलि कही अस बाता॥
गुरु अस यज्ञ करावहु हमको सहित देह दिवि जाहीं।
कह्यो वसिष्ठ अशक्य भूप यह हम करवैहैं नाहीं॥
दोहा—तब त्रिशंकु गुरुसुतन पहँ, दक्षिण दिशा सिधारि।
सोई यज्ञ करावने, कह्यो चरण शिरधारि॥
गुरुसुत बोले सुनु नृपति, पितु न करायो जौन।
कैसे हम करवावहीं, कहब उचित नहिं तौन॥

सुनि रिसीन गुरुकुल वचन, कह्यो त्रिशंकु बहोरि ।
आन गुरु करिहौं कहूँ, दियो खोरि नाहिं मोरि ॥
तहाँ वसिष्ठकुमार सुनि, भूपति वचन कठोर ।
दीन्हे शाप त्रिशंकु को, करि अमरष अतिघोर ॥
रे त्रिशंकु गुरुद्रोह किय, लेहु तासु फल हाल ।
अति [illegible] शरीर च्युत, होहु जाय चंडाल ॥

चौबोला

भूपालभवन कुशा फिर आयो शोचत निशा बितायो ।
होत भोर भो घोर वपुष नृप श्याम वसन तनु जायो ॥
कनकआभरण भये लोहके अति विकराल शरीरा ।
ताहि देखि मंत्री पुरजन सब भागे भयभरि भीरा ॥
तपत त्रिशंकु दिवानिशि डगरयो लहयो न कहुँ सुखप्रीती ।
[illegible]

सो निवास ह्वै है बहु सम्पति सोइ मुँह लाम उदारी ।
अस कहि चल्यो कानन माहिं मुनि नृप त्रिशंकु सुखकारी ।

दोहा- भाग देन देवन सकल, आन्यो गाधिकुमार ।
नहिं आये लखि देवगन, कीन्ह्यो कोप अपार ॥
कौशिक तप बल सुरनकौं, कियो त्रिशंकु पयान ।
पहुँच्यो स्वर्ग समीप जब, तब रोक्यो मघवान ॥
रे गुरु विमुख त्रिशंकु नृप, गिरौ भूमि पुनि जाय ।
नीचे शिर ऊरध चरण, गिर्यो भूप दुख पाय ॥

छन्द चौबोला ।

विश्वामित्रहि दुखित पुकार्यो त्राहि त्राहि मुनिराई ।
तिष्ठ तिष्ठ कहि गाधितनय तहँ रोक्यो तेहि परिआई ॥
महातपोबल रचन लग्यो तहँ दूसर स्वर्ग महाना ।
विविध देव नर पशु पक्षि फूलफल अन्न रचे तहँ नाना ॥
देखि द्वितीय स्वर्ग निर्माणत है सुर सुरपति आयो ।
कौशिक मुनिसों कह्यो वचन वर वृथा मुनीश रिसायो ॥
जैसो कह्यो करैं हम तैसहि वचन प्रमाण तुम्हारे ।
मम निर्मित सुर विटप अन्न पशु रहैं सदा नभ तारे ॥

लाग्यो करन यज्ञ विप्रन युत मख पशु हरयो सुरेशा ।
कह्यो विप्र सब पशु हेरहु नृप नहिं पाइहौ कलेशा ॥
हेरत हेरत अंबरीष नृप भृगु तुंगहि चलि गयऊ ।
तीन पुत्र युत तहँ ऋचीक मुनि दार सहित तप ठयऊ ॥

दोहा- याच्यो यक मुनि सुत नृपति, करिकै धर्म चपेट ।
लहुरो दियो न मातुतहँ, पिता दियो नहिं जेठ ॥
नाम जासु शुनशेफसो, मँझिलो रह्यो कुमार ।
सो अपने ते कहत भो, मोकहँ लेहु भुआर ॥
लाख सुरभि दै नृपति तेहि, शुनशेफहि लै लीन ।
अंबरीष डगरयो अवध, पुष्कर डेरा कीन ॥
मातुलहैं शुनशेफ के, विश्वामित्र उदार ।
सो विचारि मुनि को तनय, कीन्ह्यो जाय पुकार ॥

छन्द चौबोला ।

हैं मातुल हम शरण तुम्हारे राउर चरण अधारा ।
यहि अवसर नहिं मातु पिता मम तुमहीं हौ रखवारा ॥
अस कहि खबरि कही सिगरी जस अंबरीष ले आये ।
लाख गऊ लै मख पशु कीन्ह्यो जननि जनक यश गाये ॥
सुनि मुनि उर उपजी अति करुणा बही नयन जलधारा ।
लियो अंक बैठाय भगिनि सुत समुझायो बहु बारा ॥
शतौ आपने सुतन बोलि तहँ कौशिक वचन उचारे ।
याके बदले माहिं एक सुत होहु यज्ञ पशु प्यारे ॥
परम धर्म है पर उपकार सार यक वेद बखाने ।
ताते अंबरीष भूपति सँग जाहु पुत्र सुख माने ॥
सुनि पितु के अस वचन पुत्र शत कहे वचन रिसि साने ।
आनै के सुत हेतु आपनो पुत्र देहु का जाने ॥

दै निज सुत वधहित कग्यित ज्यों निज तनु मांस अहारा।
इतना सुन न सुतन की वाणी मुनि भे कुपित अपारा॥
तुरत शाप दै घोर महामुनि निज पुत्रन को जारा।
दियो मन्त्र द्वै पुनि शुनशेफहि यहि विधि वचन उचारा॥
यज्ञ यूप महँ जब तोहिं बांधिहि भूपति भगिनि कुमारा।
तेहि अवसर द्वै मंत्र पढ्यो तुम मिटी भूरि भय भारा॥
अस कहि विदा कियो शुनशेफहि अंबरीष सँग माहीं।
यज्ञ यूप बांध्यो तेहि जबहीं पढ्यो सुमंत्रन काहीं॥
भे प्रसन्न हरि वासवहु, अभय कियो सुरराउ।
अछत गयो शुनशेफ घर, विश्वामित्र प्रभाउ॥

छन्द चौबोला।

भई समापति यज्ञ भूप की वासव बहु फल दीन्ह्यो।
महा विघ्न गुणि तहाँ महामुनि जाय अंत तप कीन्ह्यो॥
पूरण सहस वर्ष बीते जब करत महातप ताके।
आय देवपति देव सहित कह तुम ऋषि हौ वसुधाके॥
विश्वामित्र बहुरि विमनस ह्वै करन लग्यो तप घोरा।
वासव मोहिं नहिं कह्योब्रह्मऋषि नहिंजान्योश्रम मोरा॥
एक समय सुंदरी अप्सरा तहां मेनका आई।
मज्जन करत ताहि लखि कौशिक मोह्यो तप बिसराई॥
ह्वै कंदर्प दर्प के वशमहँ ल्यायो कुटी लेवाई।
सेवक सरिस कियो सत्कारहि राख्यो सदन टिकाई॥
करत विहार मेनका के सँग बीतिगये दश वर्षा।
जान्यो जात काल कौशिक नहिं भयो विघ्न उत्कर्षा॥
एकादश वर्षहि मुनि के पुनि गुनि देवन कृतकर्मा।
करि गलानि मनमानि विघ्नतप कह्योगयो सब धर्मा॥

शाप देन मुनि उरपत सन्मुख खड़ी मेनका प्यारी ।
विदा कियो मेनका महामुनि मंजुल वचन उचारी ॥
कौशिक जाय कौशिकी के तट महाघोर तप ठाना ।
बीते वर्ष सहस्र करत तप सहत शोक दुख नाना ॥
[illegible] सब आय कहे तुम भये महर्षि मुनीशा ।
पुनि विरंचि तेहि [illegible] महर्षि [illegible] कृपा [illegible]
मुनि बोले नहिं ब्रह्मऋषि, भये कौन अपरा[illegible]
विधि कह इन्द्रियजीत नहिं, गही कियो तोहिं [illegible]

छन्द चौबोला

[illegible] विरंचि [illegible] मुनि ठान्यो [illegible] धारा ।
[illegible] करत [illegible] रह्यो [illegible] पवन झकोरा ॥
ग्रीषमऋतु तापत [illegible] आगिनि वर्षा रहत उघारे ।
शिशिर सलिल महँ रहत याम वसु बीते वर्ष हजारे ॥
करत महातप गाधिसुअन कहँ भयो देव संतापा ।
रंभा को बोलाय वासव अस बोल्यो वचन अमापा ॥
[illegible] महातप को तप करहु विघ्न तुम जाई ।
जोरि पाणि पंकज रंभा तहँ बोली वचन डराई ॥
मोहिं शाप दै भस्म करी हठि कृपा करहु सुरराई ।
शक्र कह्यो जय काम संग है का करिहै मुनिराई ॥
जाहु वसंत काम रंभा सँग मुनि तप देहु नशाई ।
चली चारु रंभा नाशन तप काम वसंत लेवाई ॥
भयो वसंत विपिन मंजुल महि फूलन सेज बिछाई ।

रंभा न पाषाण ह्वै है [illegible] अभि वर्षो ।
पुनि [illegible] कहिहैं वसिष्ठ मुनि [illegible] पुनि हर्षो ॥
ऐसे शाप देत [illegible] लखि भयो [illegible] ।
कह्यो नाम [illegible] फिर कन्यो ऐसा शाप [illegible] ॥

दोहा—इतै महामुनि मन गुन्यो, कोप कियो [illegible] ।
लागे कोप शरीर ते, दूरि करौं अति [illegible] ॥
नहिं बोलौं हरिहौं नहीं, रोकौं श्वास शरीर ।
नहिं ह्वैहौं [illegible] मैं, तबलौं लहिहौं पीर ॥
करि अस कौशिक नेम मन, सहस वर्ष को धीर ।
दुराधर्ष तप करत भो, चलि गङ्गा के तीर ॥
त्यागि हिमाचल गाधिसुत, पूरब दिशा सिधारि ।
सहस वर्ष लौं मौन व्रत, कीन्ह्यो मनहिं विचारि ॥

बीति वर्ष [illegible]

आयो वासव विप्ररूप धरि [illegible]
दीन देखि दीन्ह्यो व्यञ्जन सब कौशिक [illegible]
कह्यो न कछु पुनि मौन धारि व्रत तपपथ अहँ पद [illegible] ॥
आसन अचल मौन व्रत धारे रह्यो रोकि पुनि श्वासू
तपत महातप श्वास रोकि मुनि ध्यावत रमानिवासू

अति कलमसत जरत तनु धाये गे विधि लोक दुखारी ।
जोरि पाणि पंकज सब भाषे सुनहु विनय मुख चारी॥
लोभ करायो क्रोध करायो बहुविधि गाधिकुमारै ।
बढ़त गयो दिन दून तासु तप नेकहु नहिं हिय हारै ॥
जो नहिं तासु मनोरथ पूरण करिहौ तुम चतुरानन ।
नाशन चहत भुवन तप तेजहि ज्वाला उठति दिशानन॥
क्षुभित सिंधु धरणी नित कंपति मारुत बहत कठोरा ।
फूटन चहत धरणि धर धसकत बढ्यो तेज तप घोरा॥
-जबलों निज तप तेज ते, दहै न भुवन मुनीश ।
तबलों तासु मनोरथहि, पूरण कीजै ईश ॥
देवराज की राज जो, माँगै गाधिकुमार ।
तौ हमरौ संमत अहै, दीजै विनय विचार ॥
सुनि अलेख लेखन वचन, गुणि अशेष तप शेष ।
करन रेख ब्रह्मर्षि की, विधि आयो विन द्वेष ॥

छन्द चौबोला ।

विश्वामित्रहि कह्यो वचन वर अब ब्रह्मर्षि भये हौ ।
अतितोषिततुम्हरे तप ते हम धनि धनि धरणि जये हौ॥
है कल्पांत तिहारी आयुष तदपि स्वच्छन्दहि मरना ।
जात अहैं हम लोक आपने सुखी रह्यो सुख भरना ॥
सुनि विरंचि के वचन महामुनि कीन्ह्यो दंड प्रणामा ।
कह्यो विरंचिहि वचन जोरि कर सिद्धि कियो मनकामा॥
जो प्रसन्न तुम होउ दयानिधि जानहुँ मोहिं प्रशांता ।
परब्रह्म वपुष प्रतिपादक दीजै वेद वेदांता ॥
क्षत्रधर्मविद वेदब्रह्मविद मुनि वासिष्ठ तुव सूना ।
कहहिं मोहिं ब्रह्मर्षि हर्षि हिय करहिं नेह दिन दूना ॥

सुनि मुनि वचन देवगण धाये तुरत वसिष्ठहि ल्याये ।
विश्वामित्र वसिष्ट दुहुँन की अतिशय प्रीति कराये ॥
कह्यो वसिष्ठहु विश्वामित्रहि तुम ब्रह्मर्षि भये हौ ।
जगत् चराचर अपने तप बल साँचे २ जीति लये हौ ॥
सुनि वसिष्ट के वचन विनोदित विश्वामित्र सुखारी ।
पूजन कियो वसिष्ठहि गुरु गुणि सुनहु राम धनुधारी ॥
यहि विधि भये ब्रह्मऋषि कौशिक कथा सकल मैं गाई।
येई रघुपति मुनिन शिरोमणि तपमूरतिमनभाई ॥
धर्म धुरंधर तेज तरणि इव विश्वामित्र मुनीशा ।
धन्य धन्य तुम धन्य बंधु दोउ नित नावहु तेहि शीशा॥

दोहा—अस कहि गौतम को सुवन, मौन भयो मतिमान ।
राम लषण मिथिलेश युत, सुनि गाथा हरषान ॥

इति सिद्धिश्रीसाम्राज्य - महाराजाधिराज श्रीमहाराजा बहादुर श्रीकृष्णचन्द्र-कृपापात्राऽधिकारी श्रीरघुराज सिंह जू देव जी. सी. एस. आई. कृते रामस्वयंवरग्रन्थे विश्वामित्रचारित्रवर्णनं नाम षोडशः प्रबन्धः॥ १६॥

दोहा—जोरि पाणि पंकज हरषि,कह्यो बहुरि मिथिलेश ।
धन्य धन्य प्रभु गाधिसुत, सत्य धर्म तप वेश ॥

छंद चौबोला ।

मोहिं धन्य कीन्ह्यो धरणी महँ धर्म धुरंधर नाथा ।
धनुषयज्ञ देखन मिसि आये सहित लषण रघुनाथा ॥
किये देश घर कुल मम पावन कृपा कही नहिं जाई ।
शतानंद मुख सुनी रावरी महिमा मुदित महाई ॥
सहित समाज राम लक्ष्मण युत तुव गुणगण गरुआई।
तौलि न जात चित्त ताजियामहँ बड़ाई॥
है अनंत बल है अनंत तप है अनंत गुण रूरे ।

[illegible] होत भवण सुख पूरे ॥
[illegible] बीते सुख नाना दिवस के कछु लखे परस्यो न जानी।
[illegible] मातु पश्चिम आशा कहँ सुनहु विनय [illegible] ॥
पाय रजायसु जाउँ भवन कहँ ऐहौं बहुरि प्रभाता ।
[illegible] हर्ष देखि पद पंकज सोहित नयन दोउ भ्राता ॥
अति प्रसन्न ह्वै कह्यो गाधिसुत भली कही मिथिलेशू ।
[illegible]हुँ राम राजमंदिर कहँ मैं रखिहौं यहि देशू ॥
सुनि मुनि वच मुदित मिथिलापति मुनिपद कियो प्रणामा।
आशिष लै दीन्ह्यो [illegible] गयो सदन निज धामा ॥
[illegible] अनेक विशेष विमल वर बहु विदेह व्यवहारा ।
[illegible] विश्वामित्र मुनीशहि तैसहि राजकुमारा ॥
[illegible]तानंद मुनि आय मुनीशहि रघुपति लषण समेतू ।
सादर सपदि लेवाय जाय दिय डेरा विमल निकेतू ॥

दोहा—अति रमणीय विशाल वर, गृहाराम अभिराम ।
बसे महातप धाम मुनि, सहित लषण श्रीराम ॥

चौपाई ।

कथा मनोहर अति अब आई । ताते रचन चहौं चौपाई ॥
चौपाई सम छंद न आना । सुभग मधुर पद लै विधि नाना॥
लहि मिथिलापति अति सतकारा।भे प्रसन्न मुनि नृपति कुमारा ॥
करि सेवा मुनि की दोउ भाई । भोजन कीन स्वाद समुदाई ॥
सुभग सेज करि कछु विश्रामा । उठे राम दिन रह यक यामा ॥
भूषण वसन पहिरि तेहि काला। बाण शरासन लसत विशाला ॥

[illegible] पुरुषाई ॥

दोहा—[illegible] शोभा सुभग, कहँ न जासु समान ।
[illegible] लखि रूप की, लाजत निधि अधिकान ॥

कवित्त ।

[illegible] ।
[illegible] ॥
[illegible] ।
[illegible] मुसकात है ॥

दोहा—जानि जनक पुर लषण रुख, प्रभु [illegible] मुसकाय ।
[illegible] जलज कर कहत भे, मुनि सों पद शिरनाय ॥

सवैया ।

नाथ कछू विनती सुनिये रघुलाल चहै लघु बंधु हमारो ।
पावन [illegible] निहारि मनसों देखन चै मिथिलापुर सारो ॥
मोहिं लजाय डरै तुमसो प्रभु याते कछू नहिं बैन उचारो ।
[illegible] है आऊं देखाय पुरी यदि आसन होय निहारो १
सुनि के [illegible] पियूष के बैन निहारे कह्यो रघुराई ।
सो सुनि गाधिकुमार विचारि कह्यो सुख अंबुधि चित्त सुभाई ॥
जाहु लला लषणै संग लै पुर देखहु पै न कियो लरिकाई ।
राखो नहीं तुम जो मर्याद कहौ मुनि दीन बसैं कहँ जाई २

दोहा—सुनि मुनि वचन मुदितमन, पुरुष सिंह रघुवीर ।
धर्म धुरंधर बंदि गुरु, चले रुचिर रणधीर ॥

कवित्त ।

रघुराज गरीब नेवाज दोऊ अवलोकन काज चले शहरै १
पट पीत विराजि रहे कटि में तनु कोटिन कामके दर्प्प दहे ।
उर मोतिन माल विशाल लसै करवाल कराळजे शत्रु जहे ॥
झनकारा मचा पग नूपुर की जिनको सुर सिद्धमुना
अवधेश के डावरे साँवरे गौर करैं मन बावरे पंथ गहे २

दोहा–तिलक रेख राजति रुचिर, सुंदर भाल विशाल ।
मनहुँ अष्टमी नखत पति, पहिरचो चंपक माल ॥
घुँघुवारी अलकैं लटकि, हलकैं छलक कपोल ।
मनु अरविंद मरंद हित, अलि अवली अति लोल ॥
कारी कारी अहिन सी, भ्रुकुटि लहै श्रुति संग ।
उपजत विनशत फलत जग, लहि नेसुक जिन भंग ॥
छहराति हँसनि मरीचिका, महि मंडित चहुँ ओर ।
मुख मयंक लखि आजु पुर, ह्वै है सकल चकोर ॥
कटि निषंग धनु वाम कर, दाहिन फेरत बान ।
मोल लेन जनु जात हैं, जनक नगर जन जान ॥

चौपाई ।

पुरुष सिंह सुंदर दोउ भाई । पहुँचे पुर फाटक जब जाई ॥
ऋषिन भीर रणधीरन संगा । नगर विलोकन भरी उमंगा ॥
रहे कोट पुर बाहर जेते । देखि युगल जोरी तब तेते ॥
ठाढ़े भये आय पथ आई । निज निज सब कारज बिसराई ॥
देखि मनोहर मूरति जोरी । त्यागे पलक भई मति भोरी ॥
कहते कौन भूप के ढोटा । आये इतै अपूरब जोटा ॥
कोउ कह दोउ अश्वनी कुमारा । चहत स्वयंवर नयन निहारा ॥
कोउ पूछहि मुनि जनन बोलाई । कुँवर कौन के देउ बताई ॥
केहि कारण मग पग चलि आये । गज तुरंग रथ क्यों नहिं ल्याये ॥

कौने भाग्यवंतके जाये । मानहु विधि निज हाथ बनाये ॥
जो कोउ तिनहि बतावन लागैं । ते धनि कहत अवधपनि भागैं ॥

दोहा—इक एकनते कहत महँ, फैली खबर अपार ।
आवत देखन नगर दोउ, सुन्दर राजकुमार ॥

कवित्त घनाक्षरी ।

कहैं एकएकनते तेऊएकएकनते खबरखुइयालीभै महल्लन महल्ला हैं ।
नवलकिशोरदोऊ चारुचितचोरअब आवैंयहिओरठौरठौरजोरहल्लाहैं ॥
रघुराज देखन उमंग भरे नारीनर त्यागेसंग छाकेरंग अंगन उतल्ला हैं ।
गलिनमेंगल्लावृन्दअलिनविहल्लापूछैंकौनकेमहल्लामध्यदशरथलल्लाहैं ॥

दोहा—जो जोहत सो जकि रहत, नैननि पलक निवारि ।
चित्र पूतरीसे भये, जनकनगर नर नारि ॥
देख्यो गोपुर जनकपुर, वनक विकुंठ समान ।
तनक हीन नहिं विधि रचनि, कनक कलश असमान ॥
नृपबालक प्रविशत नगर, धाये बालक वृन्द ।
पुरपालक आगू लिये, नहिं मालक मतिमंद ॥

सवैया ।

छोटे बड़े पुरवासी सबै लखैं रूप अनूप सु भूप किशोरन ।
मेचक कुंचित केश मनोहर चंचल नैनन चित्तके चोरन ॥
श्रीरघुराज चलैं मग मंद अनंद उदोत करैं सब ठोरन ।
खूब खुशीके खजाने खुले पुर धावन धावन खोरन खोरन १
बिज्जु छटा ज्यों घटा घनमें तिमि ऊँची अटान चढीं पुरनारी ।
धामको काम बिसारि वधू युगबन्धु विलोकहिं होहिं सुखारी ॥
श्रीरघुराजके आनन अंबुज भे अलि अंबक आसु निहारी ।
पावैं यथा सुर पादपको यकबारही मागते भूखे भिखारी ॥२॥
युवतीते झरोखन झुंडनि ते झरफैं करटारी ।

देखि मनोहर सुन्दर रूप अचञ्चल कीन्हें दृगञ्चल प्यारी ॥
श्रीरघुराज सखीन समाजमें लाजको काज परै न निहारी ।
आपुसमें वर बैन भनैं सखि आजु लही फल आँखि हमारी ३
भाखतीं चाखतीं शोभ सुधारस कोई नहीं अस है तनुधारी।
जोहरी होत न चारि भुजा तौ समान कही इनके अनुहारी ॥
बूढ़ो महामुनि शांत उपासी चलाइये क्यों चरचा मुखचारी।
श्रीरघुराज सुनो सखि सत्य अहै तिमि आनन पंच पुरारी ४
देवनके पलकैं न परैं दृग तैसहि दैत्य भयङ्कर भारी ।
देखे हजारन राजकुमारन आये स्वयंवर कारण कारी ॥
श्रीरघुराज हमारे विचार सुधाधरसे मुख मंजु निहारी ।
कैसे अनङ्ग लहै समता जेहि अङ्गन जारि दियो त्रिपुरारी ५
दानव मानव देव अदेवहु देखे न काहि विदेह पुरी में।
पूरव गाथ पुराणनमें सुनि ताते कहौं सखि बात फुरी मैं ॥
श्रीरघुराज स्वयंवरके दिन ऐहैं नरेश समाज जुरी मैं।
ता दिन देखि परी सबकी छवि कौन मिली इनकी मधुरीमें ६
सो सुनि बोली द्वितीय सखी टक लाये कुमारनके मुख माहीं ।
ते कवि क्रूर कुबुद्धि सही जिन आनन इंदु समान बताहीं ॥
पक्ष घटै पुनि पक्ष बढ़ै त्यों कलङ्क मढ़ै रहै रोगी सदाहीं ।
मो मन आवत श्रीरघुराज इन्हैं लखि लाजि बसै नभ माहीं ७
कौनौ सखी पुनि बोली विनोदित सत्य सखीहै विचार हमारो ।
शंभु विलोकी इन्हें कबहूँ समता करतो कछु देखिकै मारो ॥
सोई विचारि बड़ो अपराध प्रकोपिकै तीसर नयन उघारो ।
श्री रघुराज मनोजकी मौज उतारि भले दई मारेको जारो ८
और कह्यो सजनी सुनिकै पुनि कौनके लाल महा छवि छाये।
कौन है नाम त्यों ग्राम है कौन कहौ केहि कारण कौन पठाये॥

कस ग्ह जननी जनकी नहीं नेसुक नयन दया रस लाये ।
श्रीरघुराज सुकोमल पायँन जात चले चख चित्त चोराये ॥९॥
दूसरी बोली सुनो रघुराज अहैं अवधेश नरेशके ढोटे ।
कौशिक ल्याये मखैहित रक्षण खेत खपाय दिये खलखोटे ॥
गौतम नारिको नारि तुरंतहि आये विदेह पुरी भल जोटे ।
श्यामको नाम कहैं सब राम कहैं लषणै अस बंधु जो छोटे १०॥
धन्य है कौशिला राम प्रभू लषण जननीसो सुमित्रा कहावै ।
आली इन्हैंअवलोकिकै आँखिन औरकहौकिमिनयनसमावै॥
श्रीरघुराज सखीन समाजमें आज मोलाजको काज परावै ।
जातिचलीअबरोकिगलीमिलैंछैलछलीकोभलीयहभावै ॥११॥

दोहा–विप्रकाज करि बन्धु दोउ, आये नगर विदेह ।
यक विदेह यहि पुर रह्यो, इन किय अमित विदेह ॥

सवैया ।

पुनि कोई तहां लखि राजकिशोरन बोलि उठी मधुरी बतिया ।
सखि येहि सुबाहु मरीच हते नहिं लागत सत्य किछू भँतिया ॥
रघुराज महा सुकुमार कुमार हमार हरै हियकी गतिया ।
निशिचारिनसङ्कलड़ावतमें कसकौशिककीनफटी छतिया ॥१॥
अपराअलिसोसुनिबैन कह्यो सखि जौन भयोसो भलो ह्वै गयो ।
विधि बैठ विदेहके कंठ इन्हैं सिय व्याहैं विशेष तो मोद मयो ॥
यह श्यामल राजकुमार सखी वर जानकी योगहि जन्म लयो ।
रघुराज तथा मिथिलापुर राज अकाज यही जो न काजभयो २॥
कोई कह्यो रघुराज सुनो दुख होत अरी क्षणहीं क्षणहीं मन ।
भूप विदेह प्रतिज्ञा करी तुम जानती हौ सिगरी सजनी जन ॥
सो तजिहैं किमि चित्त कठोर चितै चित चोर किशोरनके तन ।
जो न कियो परनै पन पेलि पषाण परैं पुहुमी पतिके पन॥३॥

दोहा—जन्म अनेकनकी सुकृति, जो कछु होइ हमार।
तो व्याहैं वर जानकी, सुन्दर श्याम कुमार॥

सवैया।

सो सुनि कोपि कही कोउ कामिनी नेक नहीं सखि भेद लहैहैं।
कौशिक पै मिथिलेश पधारि लेवाय टिकाय दियो वर गेहैं॥
श्रीरघुराज विचारिकै ताते कहौं हियसे नाहिं मोहिं सदेहै।
कौशल राजकुमारको छोड़ि कहौ मिथिलेश सिया केहि देहै॥

दोहा—रूप मनोहर बंधु दोउ, जो नहिं भूप लोभान।
तौ झूठहि कहवावतो, विश्व विदेह सुजान॥
ऊँचो अञ्चल ओढ़ि कोउ, कहति विरंचि मनाय।
श्याम कुँवर व्याहै सिया, यह सुख देहु देखाय॥

सवैया।

कोऊ कहै रघुराज सखी यह सूरजसों रुचि श्याम कुमार है।
चन्द्रसों गौर लसै लघु बंधु मनोजहुको मद मोचनहार है॥
देखि इन्हैं गुणि त्यों प्रण भूपको लागति री हियमें अतिहारहै।
लैपुरवासिनकी विधि पुण्य करै सबको हमरो उपकार है॥१॥
कोऊ कहै कर जोरि कै ऊरध शम्भु स्वयंभुविनय सुनि लीजै।
हे भुजचारि मुरारि रमा पुरवासिनके अब प्रेम पतीजै॥
शारदा गौरि मनोरथ पूरहु दीनता देखि यही वर दीजै।
श्रीरघुराजसु श्याम कुमारको जानकी व्याह विशेषि करीजै॥२॥
नैन लजाते हिये पछिताते बताते सुबैन कही सखि सोई।
येकब आते हमैं मिलिजाते देखाते स्वरूप महामुद मोई॥
जो मह्विजाते विवाह भयो तो दोऊ रघुराज सुभ्राते सदोई।
ये मिथिला ते न जैहैं कहूँ ससुरारके नाते लखी सब कोई॥३॥

दोहा—कोई सखि बोली तहां, किलकि कामना पूरि ।
जो अभिलाषा तुम करी, दैव करी नहिं दूरि ॥
अपर अली बोली बहुरि, कही सखी अति नीक ।
होइ श्यामसिय व्याह जो, सकल सुकृत फलठीक ॥

सवैया ।

कोई कही मटकाइ कै नैन चढ़ाइ कै भौंह सुशीश डोलाई ।
तू ना सुनी री प्रभाव कुमारको भाषति हौं जो पैहौं सुनि आई ॥
येई अबै गये गौतमकी कुटी सो इनके पगुकी रज पाई ।
श्रीरघुराज भयो बड काज अहल्या सु पाहन ते प्रगटाई १
सो सुनिकै कछु खेद भरी सुकुमारता लालनकी लखि गाई ।
श्रीरघुराज कहौ सिधि काज लखैं हम आजुही कौन उपाई ॥
शंभु कोदंड कठोर महा नव राजकिशोर सुकोमल माई ।
क्यों प्रण छोरि हैं तोरिहैं चाप बहोरिहैं सुंदर सीयके आई २
कोई कह्यो धरो धीरज धाममें राम हमैं सुख बोरिहैं बोरिहैं ।
सोमिथिलाधिपको प्रण बंधन विर विशेषि कै छोरिहैं छोरिहैं ॥
श्रीरघुराज समाजके मध्य महीपनको मद मोरिहैं मोरिहैं ।
श्याम महा अभिराम विना श्रम शंभु शरासन तोरिहैं तोरिहैं ३
विश्वकी सुंदरताई समेटि कै चंद सुशीलता तासु मिलाई ।
कोमलता लियो कलपलताकी क्षमा क्षिति छीन दियोतेहिछाई ॥
जौन विरंचि रची सिय मूरति श्रीरघुराज भरी निपुणाई ।
सो विधि साँवरी सूरति सोहनी मोहनी मंजुल दीन्ह्यो बनाई ४

दोहा—नहिं संशय कछु कीजिये, हठि करिहै विधि व्याह ।
मिथिलापुर वासिन हमैं, होई अवशि उछाह ॥
सुनि सिगरी ताके वचन, बोलीं एकहि बार ।
होइ ऐसही ऐसही, यही करै करतार ॥

पुरवासिन नारिन कहत, ऐसे बहु विधि बैन ।
राजकुँवर निरखत नगर, मंद मंद भरि चैन ॥

छन्द हरिगीतका ।

जहँ जात राजकुमार पथ पुर बार संग अपार हैं ।
तहँ बार बार अनेक बार अनंद ढारत धार हैं ॥
करि अमितसत्कारन हजारन युवति वृन्द निहारहीं ।
ऊंचे अगारन लगि केवाँरन नैन पलक निवारहीं ॥
वर्षहिं प्रसूनन वृन्द उमँगि अनंद श्रीरघुनंद पै ।
कहुँ मंद सुरभित सलिल नलिका झरहिं गवन गयंद पै ॥
आगे बतावत पंथ बालक लाल यहि मग आइये ।
यहिओरकौतुकविविधविधि निजअनुजकोदरशाइये ॥
चितवत चहूँकित चारु नगर प्रयात अमित सोहातहैं ।
मनु छविपुरीमहँ मार अरु शृंगार वपु दरशात हैं ॥
कंचन कलश विलसतविमल मानहुँ गगन तारावली ।
फहरत पताके तुंग चमकत चारु जनु तड़ितावली ॥
फावित फटिककी फरस फाटक हाटकी हिय हारने ।
फैलत फुहारन सलिल सुरभित द्वार द्वार हजारने ॥
मनु कामकर निरमान विविध दुकान धनद धनीनकी ।
पन्ना पदिक तिमि पदुम रागन राशि लाग मनीनकी ॥
कंचन कपाटन ठटे ठाटन बाट बाटन द्वार हैं ।
सरसीन घाटन हेरि हाटन मुदित राजकुमार हैं ॥
कहुँ चलत चारु तुरंग मत्त मतंग एकहि संग हैं ।
कहुँ नगर अंगन नृपनकी चतुरंग उदित उमंग हैं ॥
ऊंची अटा शारद घटा सो कलित कंचन तोरने ।
गोले गवाक्षहु छजत छज्जा देव गृह मद मोरने ॥

पिक मोर सुकहुँ कपोत जिनके लसत सन्य समान हैं ।
बहु विहँग बैठहिं निकट परुशान जानि उड़त डेरान हैं ॥
जहँ लखहु तहँ चौहट्ट मंदिर ठट्ट विशद बजार हैं ।
राजत कनक सब वस्तु पूरित विविध अन्नागार हैं ॥
जेहि बाट गमनत राजसुत तहँ तहँ लगत जन ठाट हैं ।
हर हाट में वर बाटमें घर घाट में नहिं आट हैं ॥
अमरावती अलकावती पद्मावती नहिं सरि लहैं ।
गंधर्व चारण सिद्ध विद्याधर पुरीको सम कहैं ॥
निरखत नगर हरषत कुँवर बरषत सुमन सुरवृन्द हैं ॥
वैदिक महीसुर पढ़त मंगल जैति रघुकुल चंद हैं ।

दोहा—पुनि पूरबदिशि गवन किय, उभै बंधु रणधीर ।
पंथ बतावत संग में, चली बालकन भीर ॥

छन्द गीतिका ।

कोउ कहत बालक इतै आवहु युगल राजकुमार ।
तुमको देखावहिं जहँ स्वयंवर होनहार अवार ॥
प्रभु चले बालक संग पीछे भरे लषण उमंग ।
देखे धनुप मख भूमि चलि जेहि लखत लजत अनंग ॥
अति विशद थल सम मध्य गच बिल्लौरकी मनु नीर ।
विलसत वितान महान झालर झुकी मुकुतन भीर ॥
चहुँ ओर परम उतंग मंच विरंचि विरचित भूरि ।
नहिं कतहुँ रंचक जन विसंचक संच कर नहिंदूरि ॥
तहां पाछे कछुक मंचावली यक और ।
माँह बैठहिं जानपद संकेत होइ न ठौर ॥
पाछे तिनहुँके धवल धाम विदेह दिय बनवाय ।
पुर नारि बैठि निहारि कौतुक लहैं मोद निकाय ॥

सोहत रजत के मंच छड बैठक कनकके भूरि।
कलसी कलित रतनावली तेहि भरे चंदन चूरि॥
वासव निवास विलास सम कीन्हें निवास प्रकास।
हठि हेरि होत निराश विश्वकर्मा निपुणता भास॥
प्रभु पाणि पंकज पकरि बालक देत सकल दिखाय।
पूछेहु बिना पूछेहु वनक थल देहिं विविध बताय॥
बालक बतावन व्याज प्रभु कर करत परश तुराय।
मुसकाय कबहुँ लजाय कबहुँ बताय आगू जाय॥
रचना स्वयंवर भूमिकी लखि करत कौतुक नाथ।
जकिसे रहत ठगिसे रहत हरि हेरि मींजत हाथ॥
लषणहिं बतावत विविध विधि कोदंड मख संभार।
मानत मनहि महि आय निज कर कियो कुलि करतार॥
कोउ कहत बालक प्रभुहिं निकट बोलाय पाणि उठाय।
तुम कतहुँ देखे अस नहीं अस मोहिं परत जनाय॥
अवधेश राजकुमार सुनियत साहिबी शिरमोर।
मिथिलेश राज विभूति देखो छुअति छाहन छोर॥
प्रभु कहहिं कमला अतिहि चंचल भै अचंचल आय।
हमरे हगंचल टरत नाहिं हिमंचलौ लजि जाय॥
इन भवन सम नहिं भुवनमहँ कहुँ गवन मन नहिं देखि।
लक्ष्मीरमण गिरिजारमण मोहत विलोकि विशेखि॥

दोहा—जाके भ्रुकुटि विलासते, उपजत बनत जहान।
भक्ति विवश सो जनकपुर, चकित लखत भगवान॥
यह प्रत्यक्ष देखहु सबै, रघुपति भक्ति प्रभाउ।
रीझत राम सनेहसों, कौन रंक को राउ॥
पुनि आई मनमहँ सुरति, बड़ि विलंब हम कीन।

बीति गये युग याम इत, निरखत पुर लवलीन ॥
मुनि अनखैहैं अवशि अब, जैहैं जो न तुराय ।
लषण लाल चलिये भवन, अस्त होत दिनराय ॥
लषण सुनत प्रभुके वचन, चले नाथके संग ।
करी विदा बालकनकी, राखत प्रेम प्रसंग ॥
यह अचरज देखहु सबै, जाको डरहु डेराय ।
सो कौशिक डर मानि मन, जात चलो अतुराय ॥
सभै सप्रेम विनीति अति, सकुच सहित दोउ भाय ।
गुरुपद पंकज शीश धरि, बैठे आयसु पाय ॥
संध्या समय विचारि मुनि, आयसु दीन उदार ।
नित्यनेम संध्या करहु, श्रीअवधेश कुमार ॥
मुनि शासनसुनि कुँवरदोउ, संयुत मुनिन समाज ।
संध्यावंदन सविधि तहँ, किये युगल रघुराज ॥
करि संध्यावंदन विमल, मुनि समीप पुनि आय ।
राम लषण बैठे मुदित, गुरुपद शीश नवाय ॥

कवित्त ।

शीशसूँघिपाणिपोंछिपीठहिअशीशदैकेपूछ्योमुनिकौशिकनगरहेरिआयेहाल॥
कहांकहांबागेकहांकहांअनुरागेअतियाभूमिआगेकैसीसुखमालखीविशाल ।
रघुराजमिथिलाधिराजकेमहलदेखेलेखेकौनलोकसेसिहातजाकोलोकपाल॥
बीथिनबजारनअगारनहजारनमेंपुरनरनारिनकोआयेलालकैनिहाल १॥
जोरिपाणि बोलेरघुवीर रणधीर दोऊ करतप्रवेशपुर भईअतिजनभीर ।
देखेहैं हजारनं अगारन बजारनमें भाँति बेशुमारनधरीहै पंथ तीरतीर ॥
रघुराजरंगभूमिदेखेहैंस्वयम्बरकी गयेनहिंराजभौन जहांमिथिलेशवीर ।
शिष्यरावरेकेअवधेशजूकेडावरे बोलायेबिनबावरेसेकैसेजायँमतिधीर २

दोहा–सुनि रघुनन्दनके वचन, मन्द मन्द मुसक्याय।
मुनिन वृन्द मधि गाधिसुत, कह अनंद उर छाय॥
जो नहिं राखहु राम तुम, सकल जगत मर्याद।
तौ संहिता पुराण श्रुति, वृथा किये बहु वाद॥

चौपाई।

कौशिक मुनिकी मति हुलसानी। कहन लगे पुनि कथा पुरानी॥
मूल पुरुष निमि नृप ह्वै गयऊ। ताते जनक वंश यह भयऊ॥
सुनहु राम निमि कुलकी गाथा। पैहौ मोद मुनिनके साथा॥
एक समय निमि भूप उदारा। यज्ञ करनको किये विचारा॥
कह्यो वसिष्ठहि वेगि बोलाई। यज्ञ करावहु गुरु सुखदाई॥
कह वसिष्ठ सुन निमि नरनाहा। मख हित मुहिं बोल्यो सुरनाहा॥
म वासव कहँ यज्ञ कराई। तुमहिं करैहौं क्रतु इत आई॥
अस कहि गे वसिष्ठ सुरलोका। निमि नरेशके उपज्यो शोका॥
सुरपतिसों बहु सम्पति पावन। गे गुरु वासव यज्ञ करावन॥
तज्यो मोहिं गुरु लोभ बढ़ाई। यह कैसे हमसे सहिजाई॥
अस गुणि कीन्ह्यो यज्ञ अरंभा। समुझि महीप गुरू कर दंभा॥
आधी यज्ञ भई जेहि काला। आयो गुरु दिवि ते रघुलाला॥

दोहा–यज्ञ करत निमिको निरखि, गुरु वसिष्ठ किय कोप।
दई शाप निमि भूपको, होइ तोर तनु लोप॥

चौपाई

निमि राजर्षि विनहि अपराधा। पाय शाप करि कोप अगाधा॥
दीन्ही शाप गुरू कहँ घोरा। लोभी तनु अब रहै न तोरा॥
गुरु चेला किय शाप प्रकाशा। मुनि नृप तनुकर भयो विनाशा॥
कछुक कालमहँ पुनि रघुराई। मित्रावरुण वीर्य घट पाई॥
मुनिवसिष्ठ लीन्ह्यो अवतारा। निमिको देवन वचन उचारा॥

निमि नरेश तुम धरौ शरीरा । प्रविशहु तेहि मिटिहैं सब पीरा ॥
निमि कह नहिं ह्वैहौं तनु धारी । मैं रहिहौं सब भाँति सुखारी ॥
जेहि तनु तजन हेत मुनिराई । हरि सुमिरत बहु करत उपाई ॥
सो गुरुकृपा विवश तनु छूटो । को मोसम शठ जो फिरि जूटो ॥
देव प्रसन्न भये निमि पाहीं । वास दियो तेहि पलकन माहीं ॥
पलक निमेषन अरु उनमेषन । निमि वश रहत राम यह श्रुति भन ॥
रह्यो धरयो निमि नृपति शरीरा । मथन कियो तेहि मुनि मतिधीरा ॥

दोहा—जेहि शरीर ते पुरुष यक, प्रगट भयो तेहि काल ।
तेजवन्त छविवन्त अति, मनहुँ सत्य दिगपाल ॥
तीन नाम ताके धरे, मुनिजन योग विचार ।
सुनिये राजकुमार सो, मैं सब करौं उचार ॥
भयो जन्म ते जनकसो, विन तनु भयो विदेह ।
भयो मिथिल सोइ मथन ते, मिथिला रच्यो सनेह ॥
ताते जे यहि वंशमें, होत नरेश प्रवीन ।
मैथिल जनक विदेह तिन, कहत नाम जग तीन ॥

सोरठा—कही कथा यहि भांति, मुनि समाज मधि गाधिसुत ।
विती याम युग राति, अलसाने कौशल कुँवर ॥
मुनिवर आलस जानि, कह्यो राम अभिरामसों ।
शयन करहु सुखखानि, हमहुँ शयन करिहैं लला ॥
अस कहि उठे मुनीश, पौढ़ि गये कुश सेज पर ।
सुमिरि चरण जगदीश, सुखित शयन कीन्हे तहाँ ॥
युगल बंधु तहँ जाय, लगे चरण चापन करन ।
अति अचरज उर लाय, कहत देव देखत दृगन ॥

कवित्त ।

जाकी पदरेणु चित्त चाहि कै स्वयंभु शम्भु,
शिर में धरन हेत नेति नेति ठानै हैं ।

योगी जन जनम अनेकन वितावैं नहिं पावैं;
करि योग याग युक्ति बहु आनै हैं ॥
भनै रघुराज आजहूं लौं अन्त पाये नाहिं,
नेति नेति वेद औ पुराणहूं बखानै हैं ।
ओई प्रभु विप्र चारु चापत चरण निज,
कोमल करन धन्य धन्य भगवानै हैं ॥

सवैया ।

हैं नख दीरघ चारिहूं ओर कढी कितनी तरवान बेवाँई ।
कोर कठोरनि कंटकसी रज पंक भरी उधरी सब ठाँई॥
रेखन रेख बसी हैं पिपीलिका ते पद आपने अङ्क उठाईं ।
कोमल कौलहू ते कर सों रघुराज मलैं डर सों दोउभाई ॥

दोहा—जेहि पद रज पावनहितै, तरसत मुनिवर देव ।
सो प्रभु भक्त अधीन ह्वै, करत विप्र पद सेव ॥
चापत चरण निहारि मुख, मुनिवर कह अकुलाय ।
जाहु लाल करिये शयन, निशा सिरानी जाय ॥
बार बार जब मुनि कह्यो, चरण वंदि रघुबीर ।
कियो शयन तृणसेज में, धर्म धुरंधर धीर ॥
लषण चरण चापन लगे, शरद कञ्ज युग हाथ ।
बैठत उड़त मराल युग, तरु तमाल जनु साथ ॥

सवैया—अतिकोमल हाथनसों रघुराज मलैं प्रभुपंकज पाँयनको ।
डरपैं कर मोर कठोर महा कछु पीर न होय सुखायनको ॥
पछितात मनै रहि जात कहूं हुलसात मलै भरि चायनको ।
हरषात क्षणै बिलखात क्षणै धनि रामके बन्धु सुभायनको १
पदकी रज लै कहुँ शीश भरैं कबहूं पद पंकज शीश धरैं ।
मनमाहिं विचार करैं क्षणही क्षण को जग मोसम मोद भरैं ॥
परिचारक लाखन औध अहैं तिनको सुख लूटि हमैं अफरैं ।
भरतौ रिपुसूदन श्रीरघुराज न आजु बराबरो मोरि करै २

दोहा—लखि सेवा लघु बंधु की, ह्वै प्रसन्न कह बैन।
लाल पौढ़िये सेज पर, जाति व्यतीती रैन॥
रघुनायक आयसु सुनत, चरण वंदि लघु बंधु।
कियो शयन प्रभु सों विलग, होय न अंग संबंध॥

चौपाई।

यहि विधि शयन किये दोउ भाई। रैन चैन भरि शयन सोहाई॥
शशि कर विमल विभासित तारा। वहत मंद मारुत सुखधारा॥
पादप पुहुपनकी झरि लाई। रही सुगंध भूमिमहँ छाई॥
कहुँ कहुँ बोलत मंजु पपीहा। सोवत और विहंग निरीहा॥
छिटकी चन्द्र चन्द्रिका चारू। चमकत नव पल्लव हरहारू॥
चरहिं अभीत जंतु वनचारी। जिमि सुराज लहि प्रजा सुखारी॥
कुमुद प्रफुल्लित मुकुलित कंजू। जिमि नय अनय मनुज मनरंजू॥
बलित वियोग विथित चकवाका। चोर उलूकहु भये उडाका॥
प्रविशत तम शशि कर हटि जाई। कलिप्रभाव जिमि हरिगुणगाई॥
परी सनंक विश्वमहँ कैसी। योग विवश इन्द्रिन गति जैसी॥
विरही दुखित सुखित संयोगी। जिमि विषयी अरु हरि रसभोगी॥
नखतउअत कोउ अथवत जाहीं। पुण्य पाप फल जिमि जगमाहीं॥

दोहा—सोवत रघुकुल तिलक निशि, मध्य मुनीन समाज।
मनु रवि शशि तारावली, भली सुछवि रघुराज॥

इति सिद्धिश्रीसाम्राज्यमहाराजाधिराज श्रीमहाराजा बहादुर श्रीकृष्णचन्द्र कृपापात्राधिकारि श्रीरघुराजसिंहजू देव जी. सी. एस. आई. कृते रामस्वयंवरग्रन्थे नगरदर्शनो नाम सप्तदशः प्रबन्धः॥ १७॥

सोरठा—सुख सोवत रघुनाथ, लषण सहित तृण सेज महँ।
सकल मुनिनके साथ, रही याम बाकी निशा॥
दोहा—गुणि प्रभात आगम हरषि, लालशिखा धुनि कीन।
मनु नकीब दिननाथके, बोलत परम प्रवीन॥

चौपाई

जहँ तहँ उठि सुमिरहिं हरि योगी । विगत जानिनिशि बिलखहिं भोगी ॥
गावहिं कोउ कहुँ भैरव रागा । रवि बंदीजन युत अनुरागा ॥
कीन्हे कलरव सकल विहङ्गा । चटकीं कली सुमन बहु रङ्गा ॥
प्राचीदिशि प्रगटी अरुणाई । रवि आगम अनुराग जनाई ॥
कोकी कोक मिलन बहु लागे । मूक उलूक चूक गुनि भागे ॥
शीतल मंद सुगंध समीरा । वहत सुरत श्रम हरत शरीरा ॥
मुकुलित कंज प्रफुल्लित होहीं । सकुचत कुमुद दिवाकर द्रोही ॥
शरण चरण उड़ि चले मराला । गगन पंथ मंडित इव माला ॥
भये तेजहत झलमल तारा । चन्द मन्द दुति भो भिनुसारा ॥
चले पंथ पंथी निज काजा । मज्जन लगी मुनीन समाजा ॥
झरि झरि फूल बिछे महि माहीं । उडति पराग सुरभि चहुँघाहीं ॥
चुअत चारु चहुँ कित मकरंदा । पियत पुहुपरस मत्त मलिंदा ॥

दोहा— चले धेनुगण वन चरण, वेणु बजावत गोप ।
द्वार द्वार मिथिला नगर, नौवत बजति सचोप ॥

छन्द चौबोला ।

निशा सिरानी जग सुखदानी यहि विधि भयो प्रभाता ।
चहर पहर चहुँकित सुनि चायन जग्यो राम लघु भ्राता ॥
कछु अँगिराय उठ्यो सथरी पर सुमिरि राम कहि रामा ।
रामचरण पंकज शिरनायो लषण धर्म धृत धामा ॥
लषण कमल कर परशि पाय पद कछु कौशिक ते आगे ।
जगे जगतपति सुमिरि गुरूपद गुरुहि जगावन लागे ॥
उठहु नाथ रवि लसत उदयगिरि भयो भोर भव माहीं ।
मुनिजन जात सकल मज्जन हित शयन काल अब नाहीं ॥
जगे मुनीश मनहिं मन सुमिरत रामचरण जलजाता ।

नयननि खोलि लखे रघुपतिमुख यह मुद मनन समाना ।
चूमि वदन शिर सूँघि पीठ कर फेरत कह मुनिराई ।
जाहु नहाहु खाहु कछु खाजन यश भाजन दोउ भाई ॥
सुनि मुनि वचन अनंदन रघुनंदन वंदन कीन्हे ।
सज्जन सहित सुमज्जन करि मन संध्यावंदन दीन्हे ॥
प्रातकर्म करि धर्म धुरंधर वसुंधराधिप वारे ।
आये पुनि अपने निवास महँ केसरि तिलक सँवारे ॥
ऐंछि पोंछि कच कुंचित मेचक भूषण वसन सुधारे ।
कियो जाइ गुरुवंदन कर रघुनंदन शर धनु धारे ॥
कोटिन दई अशीष गाधिसुत मंगल प्राणपियारे ।
पूजाकरन लगे कौशिक मुनि राम रूप उर धारे ॥
रहे फूल नहिं तेहि औसरमहँ चेलन चूक विचारी ।
जानि अनेक हेतु कुलकेतुहिं रामहिं कह्यो हँकारी ॥
तात जाय तुम जनकवाटिका सुमन सुगन्धित लावो ।
तहँकी सकल कथा कहि हमसों महामोद मनछावो ॥
सुनि गुरु आयसु रघुनायक तहँ सहित लषण धनु पानी ।
चले कुसुम तोरन चितचोरन थोरन आनँद आनी ॥
वाम पाणि दोउ दोन विराजत दाहिने कर शर फेरें ।
तीर भरे तूणीर कन्ध युग मंद मंद दृग हेरें ॥
बाहुमूल यक लसत शरासन वदन मदन मदहारी ।
पीत वसन तनु विमल विराजत पग नूपुर झनकारी ॥
मंद मंद गमनत गयंद गति दशरथ नंदन बाँके ।
वक्रभ्रुकुटिअतिशयनिशंकमनरघुकुलकलशप्रभाके ॥
चलत पंथ सत पंथ प्रचारक क्षीरधि मंथनकारी ।
मनहुँ लेत मन मोल सुछवि दै मिथिलापुर नर नारी ॥

अतिअभिराम अरामरामलखि लहिसुखधामललामा ।
कह्यो लषणसों ललित वचन अस यह वन मनविश्रामा ॥
यह विदेह वाटिका सोहावनि सुख छावनि सवहीकी ।
आनँद उपजावनि मनभावनि हठि हुलसावनि हीकी ॥
यहि विधि करत बंधु सन बातन गये वाटिका द्वारे ।
द्वारपाल चित चकित निहारे सुंदर राजकुमारे ॥
जोहि कुँवर दोउ मोहिगये मन सोहि रहे दोउ भाई ।
रामहि लखत सकल नर नारी राम लखत फुलवाई ॥
जो विकुंठ को वन निःश्रेयस नितप्रति विहरनवारो ।
सोई चकित चहूँकित चितवत जनकवाटिका द्वारो ॥
वोले मंजुल वचन राम तहँ द्वारपाल कछु सुनिये ।
आये फूल लेन फलवाई जानदेहु भल गुनिये ॥
द्वारपाल बोल्यो कर जोरे हरि लीनो मन मोरा ।
यह विदेहकी फूल वाटिका जाहु चले चितचोरा ॥

सोरठा—दशरथ राजकुमार, प्रविशे फुलवारी हरषि ।
क्षणक्षण विपुल वहार, सदा विहार वसंत जहँ ॥

कवित्त ।

गुच्छकलशासेत्योंवितानलकशासेखासेपुहुपअवासेवहुरंगके प्रकासेहैं ।
कलपलतासे लतावृन्दनविलासेझुकेअजवाकितासेभूमिलोरनकेआसेहैं ॥
शिशिरतरासे ऋतुपतिकीहवासेहरे किशलैनिकासेफूलेहीरनहरासे हैं ।
भनैरघुराजकलपवृक्षउपमासेफले अतिअनयासेतरुकरततमासे हैं ॥

दोहा—मधु ग्रीषम वर्षा शरद, सुखद शिशिर हेमन्त ।
निज गुण निज थल प्रगट ऋतु, सब थल वसत वसन्त ॥
षट्ऋतु के मंदिर बने, षट्ऋतु प्रगट प्रभाउ ।
तामें अधिक प्रभाउ करि, सोहि रह्यो ऋतु राउ ॥

कवित्त ।

पल्लवलसत पिकवल्लभकेपन्नासम शाखाभूमिलेरैंफलफूलनकेभाराहैं ।
मंजुकुंज महा मनोरंजनमुनीशनकी भौंरनकेपुंजनकोगुंजनअपाराहैं ॥
विछेवसुधामेंझरे फूलनकीसेजहासी पवनप्रसंगपरिमलकोपसाराहैं ।
चैत्ररथकामवननंदनकीनाकीछवि कहैं रघुराजरामकामकोसमाराहैं १
तालनतमालनकेतैसेहिंनतालनके रुचिर रसालनकेजालमनभायेहैं ।
हेम आलवालनकेरजतदेवालनके आलैलोकपालनकेलोकनलजायेहैं ॥
दिल देवबालनकेदेखेतेबिहालहोत षटऋतुकालनके फूलफलछायेहैं ।
और महिपालनकेबालनकीबातैंकौनरघुराजकैशलेशलालनलोभायेहैं

दोहा—राजत राजत रुचिर तरु, मनहुँ चंद्रकी ज्योति ।
कनकलता लहरैं ललित, मनु रवि दोत उदोति ॥

कवित्त ।

कंचन कियारिनमें फटिक फरश फाबें,
तामें झरें मालती सुमन मनु तारा हैं ।
वदन कुरंगनके विविध विहंगनके,
मुखन मतंगन तुरंगन फुहारा हैं ॥
केते कुंजभौन लताभौन लोने लोने लसें,
वल्लिन वितान त्यों निशान हू अपारा हैं ।
भनै रघुराज नवपल्लवित मल्लिकाके,
अ नल अगारा हैं मुनारा हैं दुआरा हैं १
कीरनकी भीर कामिनीनते सहित सोहैं,
कूजि रहे कुंज कुंज मुनि मन हारने ।
कोकिला कलापैं चित्त चोरत अलापैं परैं,
मनकी कलापैं थापैं थिरता अपारने ॥
भनै रघुराज केकी कूकैं सुनि चूकैं चित्त,

करत चकोर चारि ओरहू विहारने ।
पिककी पुकारैं त्यों पपीहाकी पुकारैं,
हिय हारैं हर हारैं वेशुमारैं देव दारने २

छन्द गीतिका ।

वर बाग मध्य तड़ाग चारिहु भाग कनक स्वपान हैं ।
मणि सरिस निर्मल नीर परम गँभीर गगनसमान हैं ॥
फूले कमल कल अमल भल मकरंद मधुप लोभान हैं।
कल्हार इन्दीवर सुउत्पल पुंडरीक अमान हैं ॥
विकसित विमल अरविन्द झरत मरन्द मुदित मिलिंद हैं।
गुंजन मही मन रंजनी श्रम गंजनी जनवृन्द हैं ॥
जिन पक्ष स्वच्छ विशाल मंजु मराल बस सब काल हैं।
बोलत रसाल उताल उड़त निहाल कर सुरपाल हैं ॥
बक चक्रवाक कराकुलादिक विविध रंग विहंग हैं ।
बोलत मधुर नहिं खग विधुर सुम धूरि धूसर अंग हैं ॥
बहु पीन मीन अदीन तहँ सुख भीन जल संचरत हैं ।
कुलिकमठ पीठि कठोर चारिहु ओर चरि सुख भरतहैं॥
बहु रंग कुसुम पराग उड़त प्रसंग पवनहिं पाइकै ।
मिलि सलिल बहु विधि रंग तरल तरंग रचत सुहाइकै ॥
छितराइ पुच्छन गुच्छ नचत मयूर मोरिन संगमें ।
मनु देव करत विहार नंदन विपिन आनँद दंग में ॥
शीतल सुमंद समीर सुरभित बहत सकल सरोवरै ।
तेहि वश उड़त झूने सु सीकर परम शीतल तृण परै॥
ते विंदु तृण लगि लसत अति मनु फरश पर मुक्ता फरै।
रवि कर विवश लगि दलनिरंध्रनि पुष्पराज छटा छरै॥
सर निकट गिरिजाभवन राजत कनक मंडित सुंदरै ।

मरकत कलश विलसनविमलदिनकर बसतमनु मंदरे॥
बहु रत्न खचित प्रदेश मंदिर बने वेश सुहावने।
चहुँ ओर विलसत कनकखंभ सुरंभ थंभ लजावने॥
बहु द्वार छज्जा छजित फावित फटिक फरश अपार हैं।
आवरन देवनरूप वेद विधान विविध अगार हैं॥
तहँ घाट हाटकके अनूपम नारि मज्जनके बने।
मुनि मनोरंजन ताप भञ्जन नहिं प्रभंजन आमने॥
नहिं पुरुष तहँ कोउ जात माली रहत इक विश्वासको।
सब नारि रक्षण करहिं उपवन तरु तड़ाग अवासको॥
जिहि देव तकि तरसत रहत निन्दत सुरेश अरामको।
अभिराम नाको कहि सकत आराम देत जु राम को॥

सोरठा—लखि मिथिलेश अराम, लषण राम आराम लहि।
कहे वचन अभिराम, बागमानके धाम चालि॥

सवैया।

एहो महीपति माली सुनो गुरुपूजनके हित फूल उतारन।
आये इतै हम बन्धुसमेत उतारैं प्रसून जो होइ न बारन॥
कैसे कहे विन फूल चुनैं मिथिलेशकी वाटिकाके मनहारन।
वस्तु विरानीको पूछे विना रघुराज जू लेव न वेद उचारन १
राम के वैन अराम को पालक कान परे गृह बाहर आयो।
देखि अनूपम भूपकुमार रह्यो तकि कै पलकैं न लगायो॥
पायँनमें परि पाणिको जोरि पग्यो प्रभु प्रेम सु वैन सुनायो।
श्रीरघुराज जू रावरो बाग न बावरो मोहिं विरंचि बनायो॥

दोहा—लेहु फूल फल दल विमल, सुंदर राजकिशोर।
जो बरजै सोइ बावरो, विश्वविलोचन चोर॥

सवैया।

वाटिकामें युग राजकुमार निहारत फूलन टोरत बामैं।

दोना लिये अति लोना उभै कर छोना मृगेशसे जोवनजागें ॥
कोशलभूपके बाँकुरे वीर कहै रघुराज लता अनुरागें ।
फूलैं फलैं तरु ताही क्षणै हरि कोमल कौल करैं जहँ लागें १
बीनत वंजुल मंजु प्रसूनन कुञ्जन कुञ्जन गुंजनि भोरैं ।
मल्लिका मालती माधवी मालन फूल प्रवालन जालन तोरैं ॥
बागकी पालिनी मालिनी जेते विहालिनी होतीं चितै चितचोरैं ।
चाखतीं रूपसुधा भल भाषतीं श्रीरघुराज सुराजकिशोरैं २
तुम श्यामल गौर सुनो दुउ लालन आये कहां से उरायनमें ।
मिथिलेशकी बाटिकामें विहरो हियरो हरो हेरि सुभायनमें ॥
इत कौन पठायो दया नाहिं लायो सुफूलन तोरो उपायनमें ।
रघुराज कहूँ गड़ि जैहैं लला पुहुपानि की पाँखुरी पायँनमें ३
कामकला जित कोशलनाथ वचो मम संसृणु हे भवभावन ।
तानि हरे कुसुमानि दलानि चिनोखिन पश्यसि मामिह पावन॥
श्रीरघुराज तवेन्दुमुखे मम चित्त चकोरमवेहि विभावन ।
त्वत्पदसेवनमद्य विना नहिं मे शरणं क्वचिदस्ति जनावन ४

दोहा—सुनत मालिनीगण वचन, दशरथ राजकुमार ।
मंद मंद मुसक्याइ किय, नेकु नयन सत्कार ॥

सवैया ।

कहुँ लेत प्रसून प्रमोद भरे ललिते लतिकानके झोरनमें ।
कहुँ कुंजनमें विसराम करैं अवनीरुह छाँहके छोरनमें ॥
वर वाटिका ठौरन ठौरनमें रघुराज लखैं चहुँ ओरनमें ।
चितचोरन राजकिशोरनको मन लागि रह्यो सुम तोरनमें १
सुर सिद्ध महर्षि सुरर्षि सबै जिनके पद पूजत सेव करैं ।
सुरपादपफूलनको जिनपै अज शंकर हू बरषैं वगरैं ॥
रघुराज सोई निज भक्त अधीन विदेहकी वाटिकामें विहरैं ।
मुनि कौशिक शासन मानि सुखी कर फूलन तोरि कै दोन भरैं२

दोहा–चित चोरत तोरत कुसुम, इत अवधेशकिशोर ।
उत विदेह रनिवास में, कियो पुरोहित शोर ॥

चौपाई ।

जनकपट्टमहिषी छबिखानी । नाम सुनैना परम सयानी ॥
शतानंद तिहि वचन उचारा । काल्हि स्वयम्वर होवनहारा ॥
ताते आजु जानकी जाई । करै गौरि पूजन चित चाई ॥
सुनत पुरोहित की वर बानी । मैथिल महाराज महरानी ॥
सखिन बोलि सब साजु सजाई । गिरिजा पूजन सियहि पठाई ॥
कनकथार भरि सुमन सुहावन । हरद दूब दधि तंदुल पावन ॥
धरि धरि शीशन सखी सुहाई । लिहे चारु चंदन चित चाई ॥
कनककुंभ जल भरि धरि शीशा । आगे चलीं सुमिरि जगदीशा ॥
सखी सहस्रन सजे शृँगारा । लीन्हे चमर छत्र छवि सारा ॥
पानदान लीन्हें कोउ नारी । पीकदान कोउ पाणि पियारी ॥
अतरदान कोउ गहे दुलारी । लिये गुलाबदान कोउ झारी ॥
लिहे बाल उरमाल रसाला । कोउ बीजन कोउ दर्पण माला ॥

दोहा–छरी हजारन संग में, रत्नजड़ित सखि पाणि ।
जय विदेहनृपनंदिनी, बोलिरहीं वर वाणि ॥

चौपाई ।

महा विमल यक नवल पालकी । बनी हाल की रत्नजालकी ॥
कीन्ही सीता सुखित सवारी । लिय उठाइ बाहकी सुनारी ॥
पहिरे अंबर अंग सुरंगा । भूषण भूषित सुंदर अंगा ॥
मची तहां नूपुर झनकारी । सोहि रही सिय सजी सवारी ॥
चली गौरि पूजन मन भाई । सियछबियक मुख किमि कहिजाई ॥
गावहिं मङ्गल गीत सयानी । सहित ताल सुर सातहुँ सानी ॥
कोउ सखि तहां प्रेमरस बोरा । करहिं मनोहर सोहर शोरा ॥

कोउ विदेहकुल विरद उचारैं। कोऊ राई लोन उतारैं ॥
कोउ सिय भाल दिठोना देही। कहि युगयुग जीवहि वैदेही ॥
जंरी रत्न कर छरी अमोलैं। आगे फरक फरक सखि बोलैं ॥
पहिरे पीत निचोल अमोला। घेरदार घांघरो सुगोला ॥
यहि विधि गिरिजा पूजन हेतू। चली जनककुल कीरति केतू॥

दोहा—राजमहल सों बाग लों, अंतहपुर विस्तार ।
मोट कोट कञ्चन बन्यो, नहिं तहँ पुरुष प्रचार ॥
सीय चलत बाजन बजे, महा मनोहर शोर ।
बाल बजावहिं विविध विधि, माचि रह्यो चहुँ ओर ॥

कवित्त।

दासीसंगखासीछबिराशीचपलासीचारुआनँदाविभासीरानिवासकीनिवासिनी
चन्द्रचद्रिकासीलसैकमलाकलासीकलकनकलतासीसबैसीयकीसुपासिनी
भनैरघुराजसियप्रेमकीपियासीरहैंसर्वदाहुलासीजेप्रकासीमंदहाँसिनी ।
रतिसीसुरम्भासीतिलोत्तमासीमैनकासीमायासीमयासीमंजुमिथिलामवासिनी

दोहा—सखी सकल गावहिं मधुर, सुंदर चरण बनाय ।
वीण वेणु मिरदंग डफ, ऊँचे सुरन मिलाय ॥

पद।

जय जय मिथिला राजकुमारी ।
जय विदेहनंदिनी अनंदिनि चंद मंद दुतिकारी ॥
निमिकुलकमल दिवाकर की दुति रमा रमन मनहारी।
श्रीरघुराज दिगंतनलौं निज कीरति लता पसारी १
जय जय धरणिसुता सुकुमारी ।
शीलसरित करुणा की आकरि मंजुल मूरति धारी ॥
जाके पद वंदत विरंचि शिव मुनि मानस संचारी ।
श्रीरघुराज सखीसमाज मुख स्वामिनि सिया हमारी २

सिय छवि को कहिसकै उचारी ।
जिहि मुख सम सर करत कलानिधि, घटत बढ़त हिय हारी ॥
हँसनि छटनि शशि छटनि लजावनि, द्विगुनी द्युति उजियारी ।
पिक कोकिल जिहि मधुर बैन सुनि, लज्जित भे वनचारी ॥
खंजन कंजन मीन कुरंगन, दृग छवि छीन निकारी ।
केतन वास दियो जल भीतर, केतन विपिन मँझारी ॥
किमि कहि जाइ कनक लतिका जड़, सिय भुज सरिस विचारी ।
तारन सहित पूर्णिमा रजनी, लखि लजानि तन सारी ॥
चरण चारु नख अवलि विमंडित, विन जावक अरुणारी ।
बसी विश्व की कोमलता तहँ, करि कंजनसों रारी ॥
श्रीरघुराज कहौं पटतर किहि, उपमा कविन जुठारी ।
महा मनोहर मूरति मुद कर, वार वार बलिहारी ॥ ३ ॥
जय जय जनकलली सुखरासी ।
मिथिला नगर क्षीरनिधि संभव कांतिमती कमलासी ॥
स्वेच्छाचार विहारिनि तारिनि उमा गिरा जिहि दासी ।
वर्णत वेद विश्व ठकुराइनि पूरण ब्रह्म कृपासी ॥
सरल स्वभाव प्रभाव विदित जग जिहि कीरति कलिकासी ।
श्रीरघुराज आजु को यहि सम विरद विशाल विकासी ॥ ४ ॥
—यहि विधि गावहिं सहचरी, सानुराग बहु राग ।
मानहुँ कूकत कोकिला, विरचहिं विश्व विराग ॥

छन्द हरिगीतिका ।

वेणु बीण मृदंग डफ मुरचंग पटह उपंगहैं ।
कोइ ललित सलिल तरंग सहित उमंग लिय सारंग हैं ॥
कोउ कर किये करतार सरस सितार सुरशृंगार हैं ॥
कोउ मंजु मुरज अमोल ढोलन तवल अमल अपार हैं ॥

यहि विधिअनेकनबाजबजत न लहत कवि कहि पारहैं ।
सखि चलहिं रचहिं अनेक गति करि नूपुरन झनकार हैं ॥
सखि गावतीं अहलादिनी अहलादिनी वर रागिनी ।
गुणकली रामकली भली सुरकली सरस सुहागिनी ॥
यक याम आयो दिवस तहँ सुर सुखद समय विचारिकै ।
चढ़ि चढ़िविमानन विविधआनन सीयगवन निहारिकै ॥
हिय हर्षि वर्षहिं कुसुम सुरभितकहहिं जय जगदंबिका ।
जिहि भजत शंकर अंबिका सो जाति पूजन अंबिका ॥
घन गगन छाया करत ताके ओट देखत देव हैं ।
सिय राम मिलन विचारि फूलन बरषि ठानत सेव हैं ॥
सिय सहचरी छवि की भरी सुरसुंदरी तिन देखिकै ।
पछितांहिं मनहिंसिहाहिंभागसोहाग धनि धनि लेखिकै ॥
सिय बामभुज दृगभ्रुकुटिफरकहिं सुभग शकुन जनावहीं ।
तैसहि सखिन को शकुन मंगल मोद अवधि न पावहीं ॥
मणि नालकी महँ जानकी चहुँओर आलिन वृन्द हैं ।
मनु विमल तारागण बिराजत मध्य पूरण चंद हैं ॥
यहि विधि बजावत बाज गावत गीत सखिनसमाज है ।
सुर मधुर छावत क्षिति चहूंकित हर्ष भरि रघुराज है ॥
गिरिजा भवन आराम आई नवलि निमिकुल चंदिनी ।
अनयास होत हुलास पुरिहै आश हिमगिरिनंदिनी ॥
मिथिलेशजूकी लाड़िली आगमन गुणि तहँ मालिनी ।
हरबर चलीं भर भर सकल साजि वसन रूप रसालिनी ॥
बहु विरचि भूषण कुसुम के भरि फूल फल दल थारने ।
अति चारु उपवन द्वार चलि आगे धर्‌यो करि बारने ॥
सिय सहित सखिनसमाज यहि विधि गौरि गेह सिधारिकै ।

मज्जन कियो सजनीनयुत सगंसन दुकूलन धारिकै ॥
पुनि पहिरि पट भूषण अदूषण शीश पूषण नाइकै ।
गवनी सुगौरी गेह पूजन पूजिकीन बुलाइकै ॥
सोरठा—तहँ बहु बाजन शोर, झनकारी नूपुरनकी ।
रही माचि चहुँओर, दियो मदन मन दुंदुभी ॥
श्यामल राजकिशोर, कह्यो लषणसों बैन वर ।
लषहु लाल यहि ओर, आवत इत मिथिलेश धौं ॥

सवैया ।

बाजि रहे बहु बाजन वेश सुआवतसी बढ़ि भीर जनाई ।
देखन नेसुक नयननि नेरे चली वहि ओर कछू नियराई ॥
फूलन तोरि चुके भरि दोनन कौतुक देखि गुरू पहँ जाई ।
श्रीरघुराज सबै कहि देव महामुनिसों करिकै सेवकाई १
यों कहिकै प्रियबंधुसों राम चले गिरिजामणिमंदिर ओरे ।
दूरहिते दोउ देखि सखीगण ठाढे भये मनमें भये भोरे ॥
श्रीरघुराज कह्यो मुरिकै लखि सुंदरी वृन्द अनंद हिलोरे ।
आगे न जात बनै अब तात सखीनको व्रात दिखात करोरे२
कैधौं शची सुरदारन लै मिथिलेशको बाग निहारन धाई ।
कैधौं उतारि तरैयनको जू जोन्हैया लसै प्रगटाइ जुन्हाई ॥
श्रीरघुराज किधौं कमला परिचारिका संग रही छवि छाई ।
शक्तिनलै किधौं बाग विलोकन गौरिही मंदिर ते कढ़ि आई ३
मेरे विचारमें आवै यहीमिथिलेशकीहैं रनिवासकी बासिनी ।
सारी सबै जरतारीसजी उजियारी करैं मनमोदहुलासिनी ॥
श्रीरघुराजललासुनियेसखिप्यारीसबैनिजस्वामिसुपासिनी ।
है मिथिलेश कुमारी यहीपगुधारी सुगौरिके पूजन आसिनी ४
जैबो न लायक लाल उतै परदारनके बिच धर्मविचारी ।

आये इतै मुनि शासन लै नहिं जानी रही मर्याद हमारी ॥
रीति है धर्मधुरीननकी रघुवंशिनकी जग जाहिर भारी ।
पीठि परै नहिं संगरमें नहिं दीठि परै स्वपन्यो परनारी ५
संकटहूं परिकै जिनके मन धर्मते टारे टरे नहिं भोरे ।
जो मुख भाषत वज्रकी लीक तनौ तजै सो बहुरै न बहोरे॥
जाके दुवारमें याचक जाय न पावै नकार जु होइ करोरे ।
ऐसे महामति श्रीरघुराज महीमहँ मानव होत हैं थोरे ६
साँची कहौं नहिं काची कछू जगमें सब जानत हैनदुराऊ ।
सूरज ते अरु आजुलौं यों रघुवंशिनको परत्यक्ष प्रभाऊ ॥
श्रीरघुराज परै कबहूं नहिं साँकरहूमें कुपंथमें पाऊ ।
वंश प्रशंस करौं नहिं तात विचारिये जू सहजै को सुभाऊ७
हासी न मानहु लक्षण लाल विलक्षण लक्षण हैं सब तेरे ।
धोखहूमें पुनि रोषहूमें है प्रतीति महामनकी हिय मेरे ॥
श्रीरघुराज विकार जनै नहिं प्रेमवती परनारिनिहेरे ।
नीतिकीरीति सु जीतीचहै करि ठीक फिरैस्वपन्योनहिंफेरे८
जिहि हेत अनेकन भूप अनूप स्वरूप बनाइकै बागैं गली ।
जिहि हेत कियो मिथिलेशप्रणैजु महेशकेचापकोटोरैबली॥
लहै तौन स्वयंबरमें दुहिता विजयी तिहिकीरति विश्वचली।
सुकुमारि महा मनहारि गुणो यह सोइ विशेषि विदेहलली९
साजु सजाइ सबै जननी हित पूजनके गिरिराजकुमारी ।
संग सखीनके दीन्ही पठाइ सुआईसजीशिविकाकीसवारी॥
श्रीरघुराज सयानी अली सिगरी सजी सोहैं सुरंगित सारी।
गौरिको बंदति मंदिरमें यह बाग प्रभानकै पुंज पसारी १०
आवतही लखि नेसुक ताकि लखीनहिं आँखिनमें असशोभा
शारद शेश महेश गणेश न भाषि सकैं उरराखिकै शोभा॥

श्रीरघुराज सुनो सहजै मन मेरोपुनीत सोऊ लखि लोभा ।
छोड़िकहौंछलछंदनकोअसआजुलौंक्षोणिमेंचित्तनक्षोभा ११
लक्ष्मण लाल सुनो रघुराज बढ़ै उर लाज कढ़ै मुख बाता ।
आकसमात अमात न आनँदमानद होइगो कौन विख्याता॥
या क्षण दक्षिण बाहु विलोचन क्यों फरकैं कछुजानिनजाता।
कीन्ह्यो विचार मनै बहुबारन सो सब कारन जानै विधाता १२

दोहा—अस कहि रघुपति लषण सों, कियो कुंज विश्राम ।
तरुछाया सीरी घनी, कुसुमगुच्छ अभिराम ॥
उत मंदिर अंदर गई, पूजन राजकुमारि ।
खड़ी रहीं बाहर सखी, चमर छत्र कर धारि ॥

चौपाई ।

वृद्ध वृद्ध द्विजवधू सिधाइ । पूजन साजु सबै लै आइ ॥
तहँ जानकी वेदविधाना । षोडश विधि लै वस्तुनि नाना॥
पूजा करी सहित अनुरागा । विप्रवधू जस कह्यो विभागा ॥
इ एक सखि चली अकेली । टोरन लगी कुसुम कर वेली॥
सहजहि तहँ मालिनि इक आई । देखी रही लषण रघुराई ॥
सखी पाणि पङ्कज गहि बोली ।अपने उरकी आशय खोली ॥
कहि न सकौं डरवश तुहिंपाहीं । बिनाकहे मन मानत नाहीं ॥
कोउ सुंदर युग राजकिशोरे । आय बागमहँ फूलन तोरे ॥
इतनी वयस सिरानि हमारी।अस शोभा नहिं नयन निहारी ॥
देखत बनत कहे न सिराई । नयननि सों न कढ़ैं दोउ भाई ॥
कहि न सकौं देखनके लायक। नाम लषण लघु बड़ रघुनायक॥
मालिनि वचन सुनतसखि काना।देखनहित तिहि मनललचाना॥

दोहा—तू दिखाय दैहै सखी, मोहिं महीपकिशोर ।
यह उपकार अपार मैं, अवशि मानिहौं तोर ॥

चौपाई ।

मालिनि तासु पकरि करकञ्जन । चली लखावन मुनिमन रञ्जन ॥
लतनि ओट कहुँ कुञ्जन ओटू । चली चलावत चखकी चोटू ॥
किये मंद नूपुर झनकारी । जाति कुसुम तोरन मिस प्यारी ॥
रुकति कहूँ पुनि चलति सयानी । राजकुँवर दर्शन ललचानी ॥
मालिनिसों पुनि पुनि फिरि भाषति । तू तो नहिं कछुछलउरराखति ॥
कौन कुंजमहँ राजकुमारा । मालिनि वेगि बताउ अवारा ॥
परत पुहुमि पग परम हुलासी । कबै विलोकहुँ बागविलासी ॥
मनोभिरंजन कुंज निवासै । विलसत इह वाटिका विलासै ॥
कुसुमाहरन शील शुभ रूपौ । नयन महासुखदायक भूपौ ॥
कब लखिहौं युग राजकिशोरा । कहुमालिनि सुंदर किहि ओरा ॥
यहि विधि दर्शन उदधि उमंगा । उठति वचन मुख तरल तरंगा ॥
दूरिहि ते मालिनि मन भाई । दिय बताय अंगुली उठाई ॥
दोहा—देखु सखी यह कुञ्ज में, सुंदर युगल किशोर ।
हरयो मोर चित चोर चित, हरि लैहैं हठि तोर ॥

सवैया ।

सीय सखी मृगशावक नैनी सुनैन उठाय लखी तिहि ओरैं ।
मंजुल वंजुल कुञ्जनमें चित चोर उभय अवधेश किशोरैं ॥
श्रीरघुराज रुकी सो जकी पलकैं ठमकी ठगिकै दृग ठौरैं ।
चञ्चलासी परी चौंध चखैं मन भूलिगयो तहँ मोर औ तोरैं १
कौन कहै कछु कौन सुनै पुनि जोहनही ते मनोजियजीवति ।
अंग जहांके तहां हीं रहे सब दीठिकीसूजी मनो छवि सीवति ॥
श्रीरघुराज विलोकतही अभिलाषन इंदु उज्यारीसी ऊवति ।
ठाढ़ी महासुख बाढ़ीअली वह छैल छली मुख पानिप पीवति २
आयो इतै सुरनायक धौं सुरनायकके तौ अनेकन आँखी ।

आयो इतै रतिनायक धौं रतिनायक अंग बिनै श्रुति साखी ।
आयो इतै रमानायक धौं रमानायक चारिभुजा मुनि भाखी ॥
श्रीरघुराज विचारि किये इन प्रेमको रूप दियो विधि राखी ३
सुख को सुख साँचो सुहावन काम यही छवि ते छवि पायो ॥
शील सुधा सुखमा सुकुमारता पायो शशी इनको कछु ध्यायो।
देख्यो नहीं न सुन्यो अस रूप सुभूपकुमार को जो दृग आयो।
जानकी जौन रच्यो रघुराज सोई रघुराज को रूप बनायो ४
श्री की यथा श्रीअहै सिय मेरी तथा यह साँचो शृंगार शृंगारो।
कीरतिकी जिमिकीरति जानकी त्यों यशको यश याहिनिहारो॥
वा छवि की छवि या सुख को सुख जोरी भली विरची करतारो।
या उन के सम वा इन के सम श्रीरघुराज न और विचारो५
आइ अकेली निहारी मही यह आनँदसिंधु नरेश दुलारो ।
जाइ जबै उत भाषिहौं हाल सबै मनिहैं हमरो अपकारो ॥
मीठो पदारथ बाँटिकै खाइये धर्म सुवेद पुराण उचारो ।
ल्याऊं लिवाइ सियै इतहीं रघुराज मनोरथ पूजै हमारो ॥६॥

दोहा—कहा कहौं मालिनि सुनै, किहि विधि सियपहँ जाउँ ।
परी प्रेम बेरी पगन, किमि त्यागौं यह ठाउँ ॥

सवैया।

नैन चहैं पलकै बिसराइ निरंतर या मुख देखनहीको ॥
पाणि चहैं परशैं पद पंकज त्यों हियरो मिलिबो चहै हीको।
श्रीरघुराज कियो मनको वश नेह के बंधन बाँध्यो है जीको।
काह करौं अब कैसे चलौं न तिलौभर त्यागत पाउँमहीको ॥

बरवै।

नयना बाणन मारयउ राजकुमार ।
कैसे जाउँ सिया जहँ गौरि अगार ॥

लैचलु लैचलु मालिनि मुहि पहुँचाउ ।
अब नहिं वल मेरे तनु लाग्यो घाउ ॥
असकहि घायलसी सखि गिरिगै भूमि ।
उठी आहिकरि प्यारी डगरी घूमि ॥
पुनि पुनि चित चाहन को चितवति जाति।
पुनि आवति पुनि जावति पथ न सिराति ॥
कहुँ लतिकन महँ अरुझति अरुझी नेह ।
भइ बिहाल बैकल सी सुधि नहिं देह ॥
उतरि परे कहुँ कंकन टूटी माल ।
तनक न तनहि सँभारति भइ बिहाल ॥
लरखराति कुंजन महँ गहि तरुडारि ।
पुनि चितवति चितचोरन चखन उघारि ॥
सियहि दिखावन की रुचि राजकुमार ।
जस तस क गमनति सो तनु न सँभार ॥
कहुं तमाल तरु भेटति भुजनि पसारि ।
कहु इंदीवर अंबुज रहति निहारि ॥
जल थल नभ तरु खग मृग देखति जौन ।
श्यामरंग सब जानति तीनहुँ भौन ॥
मालिनि तिहिकर कर करि चली लिवाइ ।
कहुँ बिहँसति कहुँ हुलसति कहुँ बिलखाइ॥
वदति विलोकति बहुरति बारहि बार ।
वादीगिरि जादू किय राजकुमार ॥
रूपमाधुरी फाँसी लियो फँसाय ।
हाय दई का करिये कछु न बसाय ॥
यहि विधि भ्रमत भ्रमत सो मन पछिताति।
आई जहां सहेली अति अकुलाति ॥

दोहा—तासु रूप निरखी सखी, अनि विवरण ननु स्वेद ।
पकरि पाणि पूछन लगी, भयो काह तुहिं खेद ॥

कवित्त ।

ठढ़ी तृजकीसी त्यों थकीसी मुख मीसी मंद,
खीसी त्यों अनंद कीसी बैकलसी दीसी है ।
पीसी है मनोजकीसी छूटिगे छनीसी छटी,
सुरति उड़ीसी भरी भागकी नदीसी है ॥
घाउकी लगीसी विसे वीसी त्यों घसीटी प्रीति,
त्यागे कुल कानिहीसी औचक उचीसी है ।
रघुराज नेह नीति रुचिर रचीसी पची,
तची विरहानलसों ऊधम मचीसी है ॥

सवैया ।

एरी अली तुहिं कैसो भयो नहिं पूछेहु पै कछु उत्तर देती ।
आनँद भीजी सनेहमें सीझी चितै कछु पाछे उसासनलेती ॥
श्रीरघुराज कहे कहँ रीझी भई तनु लीझी अजौ दशा एती ।
काह लखी अरु काह चखी सखी वेगि बताउ दुराउ न हेती ॥

दोहा—सखी सखिन के वचन सुनि, लखी पाछिले ओर ।
मन पियूष फल सो चखी, कही गिरा रस बोर ॥

कवित्त ।

पूछती कहा है उतै कौतुक महा है,
नहिंजात सो कहा है अब जौन लखिपाईरी ।
विधिके सँवारे राजकुँवर पधारे प्यारे,
विश्वमनहारे धारे छिव सुंदराईरी ॥
साँवरो सलोनो दूजो दुति को दिमाग वारो,
दृगते टरै न टारो मति अकुलाईरी ।

कहे ना सिराई रघुराज देखे बनिआई,
आजुलौं न देखी जौन आजु देखि आईरी १
नीलमणि मंजुताई नीरदकी श्यामताई,
अतसी कुसुम कोमलाई हठि आई है ।
केसर सुगंधताई बिज्जु दीपताई सोन,
जुही नहि पाई पट पीत पियराई है ॥
भौंहन कमान कसि प्रीति खरसान चोखे,
नैन बाण मारे फूटि गाँसी अटकाई है ।
रघुराज कैसो राजकुँवर अनोखो अरी,
हौं तो इतै घायल ह्वै घूमि घूमि आई है २
श्रद्धा अनुराग भरि प्रेमहीको नेम करि,
नैननके नवल सुटाबनमें जाइले ।
अति प्रतिकूल जग सुखके दुकूल त्यागि,
सारी अभिलाषहीकी तनुको ओढाइ ले ॥
रघुराज तीर्थराज महाराजके कुमार,
भारतीकी धार हार माणिक मिलाइ ले ।
कल्मष कलक कटि जैहैं कोटिजन्मनके,
सितासित शोभाकी त्रिवेणीमें नहाइ ले ३

पद ।

सखीरी जो जैहै वहि ओर ।
बनाइ बनाइ कछू नहिं राजकुँवर चितचोर ॥
जो न मानिहै सीख सयानी पुनि न चली कछु जोर ।
श्रीरघुराज हाल होइ सोई जौन भयो अब मोर १
कौनके राजकुँवर दोउ आये ।
रूप माधुरी मोहे साधुरी तिय गण कौन गनाये ॥
औचकही यक बार निहारयो तूरत सुमन सुहाये ।

मग्न भई रघुराज विलोकत नहिं बिसरन बिसराय ॥२॥
लखी हौं जब ते राजकुमार ।
तबते इन आँखिन अस दीसत श्याम भयो संसार ॥
कहौं तबहिंलौं हमहिं बावरी मानहुँ मोहिं गँवार ।
श्रीरघुराज लखी जबलों नहिं वा मूरति मनहार ॥३॥
दोहा–ऐसे सुनि सजनी वचन, देखि दशा पुनि तासु ।
उदित इंदु अभिलाष हिय, कियो हुलास प्रकासु ॥
चौपाई ।
सिय समीप इक सखी सिधारी । बीजमन्त्र सम दियो उचारी ॥
इक सखि कछु कौतुक लखि आई । जनकलली तुहिं चहत सुनाई ॥
सुनत याग सजनीकी बानी । चलु चलु सुन जो कहत सयानी ॥
सिय सुनि सखी वचन सुख पाई । मन्द मन्द मनमहँ मुसक्याई ॥
पूजि गौरि मिथिलेश दुलारी । मन्दिरते बाहर पगुधारी ॥
मधुरअली तिहि सखि कर नामा । मधुर वचन ताको रसधामा ॥
कहत भई मिथिलेशकुमारी । कहु कौतुक तू कौन निहारी ॥
कैसी भई दशा सखि तेरी । तुहिं विभ्रम है असि मति मेरी ॥
सो सखि सिय छवि नखशिखहेरी । सुधि करि राजकुवँर छविढेरी ॥
नयन मूँदि गुणि सुन्दर जोरी । ईश आज पुजवै अब मोरी ॥
बहुरि बाल बोली बरबानी । बुधिवर वदति विशेष बयानी ॥
हौं बाटिका विलोकन काजू । गई विहाय सखीन समाजू ॥
दोहा–घनी कुञ्ज लोनी लता, फूले फूल अपार ।
लखे कुसुम तोरत तहाँ, सुन्दर युगल कुमार ॥
सवैया ।
साँवरोसुन्दर एक मनोहर दूसरो गौर किशोर सुखारी ।
का कहिये मिथिलेश लली वह मूरति पै मन है बलिहारी ॥
श्रीरघुराज बनै नहिं भाषत राखतहीमें बनै छबि प्यारी ।

नैन विना रसना रसना विन नैन कहौ किमि जाय उचारी ॥

दोहा–मधुरअलीके वचन सुनि, विमला अली तुराइ ।
जनक ललीसों विहँसि कह, भली वानि हुलसाइ ॥

सवैया ।

हौं सुनी आजु महीपति मन्दिर कौशिक सङ्ग महासुकुमारे ।
राजकुमार उभै कोउ आये निजै छवि मारहुको मद मारे ॥
काल्हि निहारि गये नगरी नर नारि लखे जिन तेई उचारे ।
श्रीरघुराजस्वरूपकीमाधुरीआजुलौं ऐसी न नैननिहारे ॥१॥
जे उनको चितये भरि नैनन धोखहु वे जिहि नैन निहारे ।
ते सिगरे विगरे निज वानि द्रुतै तिनपै तनहूं मन वारे ॥
श्रीरघुराज सबै नर नारिन कीन्हे वशै निज राजकुमारे ।
यामिथिलापुरमेंविचरे निजरूपकीमोहनी का पै नडारे ॥२॥

दोहा–ह्वैहैं तेई अवशि ये, और न दूसर होइ ।
राम लषण अस नाम जिन, कहत सखी सब कोइ ॥

सवैया ।

सुनिकै विमला वतियां सिगरी हरषीं सुसखी निरखी सियको ।
उतकण्ठित वेश विलोकनको कब आनँद ओघ भरों जियको ॥
रघुराज सखीन समाज निहारति को कहै सीय गुणो हियको ।
अवलोकनकी अभिलाषउठी पिय छोड़िउतैहठि होइयको ॥

दोहा–पुनि नारदके वचनकी, सुधि आई तिहि काल ।
दुसह विरह दारुण व्यथा, जान्यो मिटि है हाल ॥

चौपाई ।

जब मुहिं कह्यो जगतपति बोली । लीला करन हेत सब खोली ॥
देव दुसह दुख देखि दयाला । रावण विवश त्रिलोक विहाला ॥
हरन हेत अवनी कर भारा । लेहौं कौशलपुर अवतारा ॥
तुम अब वसहु जनकपुरजाई । वेदवती कहँ लियो मिलाई ॥

है उत्पति धरणी ते प्यारी । अवशि करहु मिथिलेश सुखारी ॥
तदपि दुसह दुख होत वियोगू । यदपि धर्यो शिर नाथ नियोगू ॥
जगती ते लै जन्म तुरंता । इत वसि चह्यों मिलैं कब कंता ॥
विरह विवश दुख सह्यो न जाई । प्रभु पठयो नारद मुनिराई ॥
कही देवऋषि मों मैं वाणी । कब मिलिहैं मुहिं शारँगपाणी ॥
मुनि कह जनक वाटिका माहीं । जगत जननि लखि है प्रभु काहीं ॥
यह सुधि सकल सीय कहँ आई । दरश लागि लालच अधिकाई ॥
अबै प्रगट नहिं भाउ जनाई । कौनहुँ मिसि देखौं पिय जाई ॥

दोहा–नयन मूँदि यहि भाँति तहँ, सीता करति विचार ।
लखिविलंब सखि शशिकला, कीन्ह्यो वचन उचार ॥

पद ।

चलो सिय देखन फुलवारी ।
गौर श्याम दोउ कुँवर सलोने आये मनहारी ॥
लसत कर पल्लव कर दोना ।
चाप चारु शर सुभग विराजत कटि निषंग सोना ॥
मुकुट मण्डित मणिमयमाथे ।
सिंह ठवनि चितवनि अति बाँकी दोउ बंधु साथे ॥
हँसनि हठि हेलिनि हिय हारी ।
रूप स्वरूप लख्यो न सुन्यो अस मारहु मदगारी ॥
चुनत फूलन तरु तरु माहीं ।
वीर धीर रघुवीर नाम अस उन सम कोउ नाहीं ॥
कहत रघुराज राजढोटा ।
पुनि देखनको नहिं मिलिहैं अस जस सुन्दर जोटा ॥

दोहा–सुमिरत प्रीति पुरातनी, करत जानकी ध्यान ।
लखी सखी तब माधवी, बोली वचन प्रमान ॥

पद ।

जनकतनया तजि गौरी ध्यान ।
लखि लीजै लुकि राज लाड़िलो अस सुन्दर नहि आन ॥
खंजन कंजन मृगन मीनगण लोचन लखत परान ।
मंजु मयंक मरीचि मंद परि तकि माधुरि मुसक्यान ॥
कोटि मदन मद कदन वदन छवि होनो जासु समान ।
घटत बढ़त दिन प्रति तारापति सोच यही पियरान ॥
सकल सुकृत फल कोटि जन्मको देहि जो गौरि इशान ।
तौ रघुराज राजढोटा दोउ करहिं नयन थल थान ॥

दोहा--जनकलली सजनीनकी, जानि उदित अभिलाख ।
पाय मोद मुसक्यानि मन, गहि तमालकी शाख ॥
पल्लव डार विलोकि कहुँ, कुंज विलोकन व्याज ।
चली चारि पद आर तिहिं, चितवत सखिन समाज ॥
कहुँ किसलै कहुँ कुसुम कहुँ, कहुँ कलिका कहुँ कुंज ।
कहूँ कमल कहुँ केतकी कहूँ कुरंग करंज ॥
कहुँ विहग कहुँ तुंग तरु, कहुँ कहि लतन प्रसंग ।
कहुँ मलिन्द मकरंद कहुँ, कहुँ पराग बहुरंग ॥

चौपाई ।

देखत करति सखिनसों बातैं । लषण लाल लालसा अघातैं ॥
लाज विवश प्रगटति नहिं भाऊ । खग मृग निरखति करतिदुराऊ ॥
मंद मंद गमनति सुकुमारी । चतुर सखी सब संग सिधारी ॥
माचि रही नूपुर झनकारी । वर्षत रस वाटिका मँझारी ॥
घनी कुंज प्रविशहिं कढि भामिनि । मनहुँ सघन घन दमकति दामिनि ॥
रहीं ललित लतिका लहराई । ललना लुकहिं लपेटि लजाई ॥
तहँ सियकी सखि सोहहिं कैसी । शशी जोन्ह घन जलधर ऐसी ॥
गावहिं मधुर सुरन सुकुमारी । मनु मराल पिक शिखी सुखारी ॥
परत पुहुमिपद संयुत ताला । मनहुँ लतन सिखवैं गति बाला ॥

परी पुहुमि बहु रंग परागा । जानि मनहुँ अपनी बड़ भागा ॥
रचि तरुनंभ चूनरी धारी । देन जानि महि प्रभुहि कमारी ॥
प्रभुहि लखन उमँग्यो अनुरागा । उदय इंदु मनु पूर विभागा ॥
दोहा—यदपि लाजवश सिय चलति, मन्द मन्द मुसक्यात ।
तदपि प्रीति वश चरण गति, अधिक अधिक अधिकात ॥

चौपाई

फलि रहीं साख कुंजन माहीं । मनहुँ चदेनी चारु सुहाहीं ॥
मधुर अली कर कर गहि सीता । प्रभु दरशैं विलंब हिन भीता ॥
चितवत चहुँकित कुंजन माहीं । चली चतुर चिन्तति प्रभु काहीं ॥
वसन सुरंग सखी सब संगा । मनहुँ उदधि अनुराग तरंगा ॥
शोचति मन मिथिलेश कुमारी । कौन हेत नहिं परैं निहारी ॥
जे पल तहँ दर्शन विन जाहीं । ते पल अल्प कल्प ते नाहीं ॥
को कहि सकै दरश उत्साहू । होहिं यदपि शारद अहिनाहू ॥
लतनि लतनि तरु तरु आरामैं । हेरति सिय रामै अभिरामैं ॥
फूलन फूलन निज प्रभु नेही । नैन दीठि अलि किय वैदेही ॥
लखी न जब प्रभु राजकिशोरी । भई चंद्रविन यथा चकोरी ॥
मधुर अली पहँ सैन चलाई । पूछी लाज विवश नहिं गाई ॥
मधुर अली अंगुली उठाई । लताभवन सो दियो बताई ॥
दोहा—चली चटक चित चाह चुभि, चतुरि चितै चहुँओर ।
मनहुँ दृगंचल चंचलनि, रचन चहति चितचोर ॥

चौपाई ।

उतै सुनो नूपुर धुनि जबहीं । लख्यो लषण लाखन सखि तबहीं ॥
कह्यो राम सों मंजुल वानी । इतै लखिय लाखन छविखानी ॥
वन विहरन आवैं सखि वृन्दा । मानहुँ उये अनेकन चन्दा ॥
लषण वचन सुनि सहज सुभायक । लता भवनते कढ़िरघुनायक ॥

सिय मनकी गति सुणि रघुनाथा । खड़े लषण कंधहि धरि हाथा ॥
सिय देखन उमँग्यो अनुरागा । सकल वियोग जनित दुख भागा ॥
जो विकुंठमहँ दियो निदेशू । हृदय सकल सुधि कियो रमेशू ॥
वाम पाणि टेके धनु धरणी । चितवत दृग जहँ सिय वर वरणी ॥
मनहुँ मदन मातंग पराजी । खड़ो शृगाल सिंह रुचि राजी ॥
आवनि जानि जानकी केरी । निज दर्शन लालसा घनेरी ॥
जो सुख भयो राम मनमाहीं । यक मुख वरणि जाय सो नाहीं ॥
हरन हती उतै सिय रामै । इत रघुपति सिय लोक ललामै ॥

दोहा—दोहुँनके अभिलाप वश, नयन चतुर इक बार ।
मिले धाय प्यासे सुछवि, रहे वियोगित चार ॥

सवैया ।

दोहुँनकी रही प्रीति सनातन दोहू तहां पलकैं दृगत्यागे ।
ह्वैगो वियोग कछू दिन दोहुँन देवन कारजमें अनुरागे ॥
वे प्रगटे अवधेशके मंदिर वे मिथिलेश किये बड़भागे ।
दोहुँनके दृग दोहुँनमें परि दोहुँनकी छवि पीवन लागे ॥

दोहा—दोहुनके चखमें परचो, चपलासी सो चौंध ।
उन्हैं बिसरिगो जनकपुर, उन्हैं बिसरिगो औंध ॥
चारु चार नयनन मिलत, मंजु अली तहँ जोइ ।
कला रचत कर कमल गहि, कह्यो वचन मुद मोइ ॥

पद ।

अवलोकिय सखि राजकुमारौ ।
ललित लतान लये विलसंतौ कृत सुंदर शृङ्गारौ ॥
घ्राण कलित कल कंज करौ कुसुमानि चेतु मभिसारौ ।
मंजुल वंजुल मंडित मालौ चित्त नयन गति हारौ ॥
नव नीरद नव कनक शरीरौ जगत यशो विस्तारौ ।
विश्व विदित वृन्दारक वृन्द सुवंदित मधुराकारौ ॥

ललनानन्द विमल विधु वदनी कोटिमार सुकुमारी ।
अभिरामा रामे रमणीया जन रघुराजाधारी ॥

कवित्त ।

दोहुँनकेबाँकेनयनदोहुँनकोदेखिथाके, दोहुँनकेहीनउपमाकेशोभमाकेहैं।
कंजमीननाकेभेरप्रेमकेसुधाकेमंद, करनमृगाकेनगिराकेनउमाकेहैं ॥
भेनरघुराजअनुरागकेमजाकेमढ़े, काकेसमताकेएकएकछविछाकेहैं ॥
मेरेमनसाकेगुणकहौंनमृषाकेबैन, शीलकरुणाकेकछुअधिकासियाकेहैं ।

सवैया ।

कौन कहै सिय नेहकी नीति प्रतीति त्यों प्रीतिकी पूरणताई ।
श्रीरघुनायक आनन इंदु में नयन लगाइ चकोर लजाई ॥
श्रीरघुराज सुकोटिन बार निछावरि चातक मेह मिताई ।
मानो लजाइ पराइ गये निमि त्यागि दृगंचल चंचलताई १
देखतही सियकी सुखमा उपमा हरि हेरि कहूँ नहिं पाई ।
केती करी कविताई कवीनन कौन अनूठ कहौं समताई ॥
श्रीरघुराज विचारि रहे मन आजुलों ऐसी न आँखिन आई ।
ज्यों छवि भौनमें होन प्रकाश सुदीपशिखा विधि बारी बराई २
जो कहौं विश्वकी सुंदरताई समेटिकै सीयकी मूरति राची ।
जो निज मोहनी रूप कहौं सम तौ मतिमें रहै लाजही माची ॥
श्रीरघुराज गुणैं मनमें न कविंदन सों उपमा कछु बाची ।
है छविकी छवि शील भरी महा माधुरिकी महामाधुरी साँची ३

दोहा—कहत बनत नहिं सिय सुछबि, पटतर परै न हेरि ।
रहे मौन अनमिष दृगनि, फिरे न फेरे फेरि ॥

सोरठा—पुनि कछु उरहि लजाय, लता ओट निजरूप करि ।
चितवत चित्त तुराय, अनमिष नयनन नरहरी ॥
सिय मुख कंज भुभाय, चंचरीक रचि चारु चख ।
नहिं क्षण क्षणहि अघाय, पियत मधुर मकरंद छवि ॥

दोहा–परयो लतापट दीठि जब, सीय उठी अकुलाय।
मनहुँ महानिधि नयनकी, दीन्हीं तुरत गँवाय॥

सवैया।

जानि लतान वितानको अंतर मंजु अली करकंज उठाई।
बोलि विदेह ललीसों भली विधि नयन नचाय कछू मुसकाई॥
श्रीरघुराज विलोकिय वीर सुवाल्लिन बीच महाछवि छाई।
साँवरो राजकिशोर खरो चितचोर चितै तजि दे अकुलाई॥१॥
होतहीं ओट लगी चित चोट भये लला पल्लव कोट कराले।
मंजु अलीकी सुनी वतियां तब ह्वै के निहाल विलोकत हाले॥
ज्यों निधि जाइ हिराइ कहूं पुनि पाइ समाइ न मोद विशाले।
त्यों रघुराज ललीन समाजमें लाज लुकाइ लखी लली लाले २
जे पलको परो ता क्षण अन्तर ते पल भे क्षिधि वासर पूरे।
पाये बहोरि महानिधि लोचन ह्वै गये चंद्र चकोर से रूरे॥
देखि सखीगण सीय दशा अनुराग भयो वपु तासु बिसूरे।
जोरी भली रघुराज बनी तरुणीगण लै तकि कै तृण तूरे॥३॥
नयन हजारन एकहीबारन राजकुमारनके तनु लागे।
मानो अपार मलिंद मरंद सुपीवन अंबुज पै अनुरागे॥
कौन कहै पलकैं परिवो थिरता अति मैं तनहूं मन जागे।
श्रीरघुराज विलोकैं सदा सजनीनके वृन्द विरंचिसों माँगे॥४॥
पूरव पूरण इंदु उदै लहि ज्यों विकसैं विलसैं कुमुदाली।
ज्यों पुनि पूषन प्रात प्रकाशहि पाइ प्रफुल्लित हैं कमलाली॥
श्रीरघुराजको आनन त्यों ललनानि के आननमें करीलाली।
देखैं जकी लसी रूपकी माधुरी चित्रकी पूतरीसी सबआली ५
सियकी दशा कौन कहै तहँकी अभिलाषकी मूरतिह्वैगई है।
वर राजकिशोरकी साँवली सूरति आँखिनमें मनौ धैलई है॥

रघुराज कहै प्रभु प्रेम भरी यह सत्य विचारिकै यकई न ।
अब जान न पैहै कहूँ इतते पलकानि कपाटनको दई है ॥ ६ ॥

दोहा--सीय समेत सखीन की, देखि दशा रघुराज ।
कुञ्जभवनमहँ गवन किय, विप्रलंब सुख काज ॥

सवैया ।

शारद इंदु उदै जिमि जोहि लखैं चहुँ ओरते चाइ चकोरी ।
पौन प्रवेग वसात शशी घनी मेघ घटानि दुराइ बहोरी ॥
श्रीरघुराज सखीन समाज त्यों चौंकि परीं चितई चहुँ ओरी ।
हाइ दई यह कैसी भई सिगरी कहैं चोर कियो कोउ चोरी ॥

दोहा--प्रेम विवश तहँ जानकी, मूँदे नयन विशाल ।
यथा बचावत योग रत, करि समाधि निज काल ॥

सवैया ।

पूछहिं एकते एकन आली कहां वनमाली भये दृग खाली ।
हाइ दई यह कैसी भई इन नयननमें उपजी दुख जाली ॥
श्रीरघुराज नरेशके लाडिले देहु दिखाइ कृपालु कपाली ।
श्यामघटा छविके वरसेबिन आलिनकी अब सूखतशाली ॥

दोहा--प्रेम विवश सीतहि निरखि, सकैं न कहि सकुचाय ।
रहत बनत नहिं विन कहे, रहीं सबै अकुलाय ॥

कवित्त ।

कोई कहैंजीरीबानि वदनमें पीरीपरी, कहांगये जिनपै लगीरी नैन पूतरी॥
शीरीप्रेमबेलिबईनेहकीहरीरीहोति, बाढ़तजरीरीविरहानलकीलूतरी ॥
रघुराजआजसुखबीरीकोखवायवह, अवधछलीरीछल्योरीतिभैअनूतरी ॥
प्रीतिकीअमीरीसखीकहहिंअरीरीमरी, घायलसीलोटैंजैसेलोटनकबूतरी॥

सोरठा--निरख्यो सखिन विहाल, बूड़त वारिधि विरहके ।
दोऊ दशरथ लाल, लताभवनते प्रगट भे ॥

सवैया ।

अरविंदके काननते कढ़िके जिमि हंसके सावक ह्वै सरसे ।
पुनि ज्योंहीं तुषार अपारहि ते युत वासरनाथ प्रभा वरसे ॥
प्रगटे घनश्याम घटानिते ज्यों रजनीपति ह्वै हियके हरसे ।
तिमि कोशललाल दोऊ रघुराज लतागृहते ... के दरसे १

जैसे चकोरहि चन्द्र मिले पपिहाको पयोद मिले जिमि स्वाती ।
ज्यों जल बाहर आइ परै पुनि जाइ परै दह मीनकी जाती ॥
सूखत शाली यथा वरसे घन धार सुधाकी सुये सुख आती ।
त्योंहीं सखीन समाजकी आज लखे रघुराज भै शीतल छाती २

दोहा—जनकलली सों तिहि क्षणै, मधुर अली कह बैन ।
लखहु रूप जो ध्यान धरि, खोलि लखहु सो नैन ॥

सवैया ।

कानमें वाणि परी सखिकी जबसों स्वपनोसो भयो सियकाहीं ।
खोलि विलोल विलोचन कंज विमोचन शोच विलोक्योतहांहीं ॥
श्रीरघुराज हियो हुलसाय लजाय रुषाय रही मनमाहीं ।
वा सुख क्यों मुख सों कहिजाय जो जानती जानकी दूसरनाहीं ॥

दोहा—आपुसमें भाषण लगीं, भूपकुमार अनूप ।
पगीं प्रेम सिगरी सखी, रँगीं रामके रूप ॥

छन्द भुजङ्गप्रयात ।

महाशोभ सीमा उभै बंधु वीरा । हरैं हेरिहीकी सहेलीन पीरा ॥
न इंदीवरौ देहकी दांज पावै । गोराई लखे पीतकंजौ लजावै ॥

छन्द गीतिका ।

राजति रतन चौतनी शीशन सुभग तनु सित श्याम ।
मनु सितासित घन घटन शिर दिनकर युगल अभिराम ॥

शिर सजत सुंदर श्याम चीकन काक पक्ष नवीन ।
बिचबिच सुमनके गुच्छ स्वच्छ सुतार छवि किय छीन ॥
जनु सजल नीरदमें लसति सुंदर बलाकन माल ।
मनु उभय दिशि घेरचो विधुंतुद पर्व लहि उडपाल ॥
अध इंदु उपमा हरत सोहत भूरि भाल विशाल ।
तिहि मध्य केसर रेख युगल विशेष लसति रसाल ॥
मनु श्वेत श्याम घटानिमें युग दिपति दामिनि रेख ।
जिमि कमल कोसहि ओस कन श्रम बिंदु वदन अशेख ॥
युग श्रवण मकराकार कुंडल सकल शोभासार ।
मनु मदनवापी मीन युग खेलत करत संचार ॥
अलकैं हलकि लटकैं कपोलन मोल जिय जनु लेहिं ।
मनु चंद्र मंडल भुजग पियत पियूष मुख अवलेहिं ॥
भ्रुकुटी विकट लगि श्रवण सोहत काम धनु छविछीन ।
जनु हद सुखमा रेख विश्व विरंचि निजकर कीन ॥
पुनि कहति कोउ अवलों न ऐसे लखे नयन विशाल ।
जिन सैन शर लगि कौन अस जो होत नाहिं विहाल ॥
कोउ होत हाल विहाल लखि कोउ होत हाल निहाल ।
कोउ तजत जग जंजाल अतिहि उताल ह्वै कंगाल ॥
नहिं सोनिमा सुखमा सरोजनि बसी इन दृग आय ।
इनकी कटाक्षन लगे को नहिं घूमि घायल जाय ॥
कोउ कहति इनके अधर वसत अमोल अमल पियूष ।
जिहि एकबारहु पान कीन्हे रहति नहिं पुनि भूष ॥
सखि गोल लसत कपोल मंडल मुकुर सुछवि पराजि ।
अस विमल वस्तु लखी न कबहूँ पटतरी किमि छाजि ॥
अलि चारु चिबुकसुनासिका मधि लसति विमलबुलाक ।

शुक मुकुनगहि मुखचहत मनु लघुआम फल छुनछाक ॥
मृदु माधुरी मुसक्यानि मुखकी मढ़ति मही मरीचि ।
अवलोकि उर आनंदकी उठतीं अनेकन वीचिं ॥
सखि श्याम गौर सुवदन शोभा सदन वरणि न जाय ।
निज गर्व कदन विचारि मदनहुँ रहत रदन दिखाय ॥
कल कंवु कंठहि मुकुत कंठी युग लरनि मधि हीर ।
मनु वंधु विधु गुणि कंवु भुजनि पसारि मिलत अधीर ॥
यह श्याम सुंदर तनु लसत चौलर सुहीरन हार ।
दिनकर सुता मधि करत मंडल मनहुँ सुरसरि धार ॥
भुजदंड सुंदर कलित अंगद लसहिं सुठि सित श्याम ।
लखि फणी मणिधर सिखे कुंडल करण मनु छविछाम ॥
मणि चटक कटक सुपाणि निकटहि देखि अटकत चेत ।
जनु कियो रक्षण वंधु रवि निज किरणि हिमि भै हेत ॥
इन पाणि पंकज परस प्यारी भाग्यवश जेहि होइ ।
तनु ताप दाप न व्याप तिहि सम जगतमें नहिं कोइ ॥
पट पीत कटि तट कंध लौं छहरत सुछोनी छोर ।
मनु दमकि दामिनि श्याम सित घन करति पुहुमि हिलोर
मृगराज भरि उर लाज किय वनवास लंक निहारि ।
पद लहन सम सरि तपत पंकज सहत आतप वारि ॥
कोमल चरण कमलन विनिंदक कठिन पुहुमि पयान ।
तापर उपानह हीन लखि किमि रहै सखिन अपान ॥

दोहा—पुनि कोऊ बोली सखी, बाढ़्यो प्रेम दराज ।
मोर काज अब कछु नहीं, लखब छोड़ि रघुराज ॥

पद ।

आली लखौ वनमाली सलोना ।
जालिम जुलुफ विपुल व्याली सम मोहिं डसी किमिजाउँरीभौना ॥

हरि लीन्ह्यो हिय राजकुँवर यह मंजुल हँसनि कुसुम कर दीना।
ठाढ़ो लताभवनके द्वारे जिमि कंदर्प कढ़ि कढ़ि छीना॥
नैन सैन हनि हर्‌यो चैन सब मैन है न सम कोउ अरु झीना।
लागी लगन साँवली मूरति शपथ मोरि अब कोउ वर जीना॥
श्रीरघुराज राज ढोटापर तन मन वारि भई अब मीना।
लोकलाज कुलकाज विसरिगो आजुहि होनी होइ सो होना॥

दोहा—जनकलली अनिमेष चितै, श्यामल राजकुमार।
धर्‌यो ध्यान मीलित दृगनि, ठाढी गहि तरुडार॥
प्रेम विवश भइ जानकी, मधुरअली जिय जानि।
पकरि पाणि पंकज विहँसि, बोली मंजुल वानि॥

सवैया।

दूर भई गहि शाख तमालकी ठाढ़ी अहै पग पार न जोवै।
ध्यान धरे गिरिजा वपुको मिथिलेशलली तू वृथा क्षण खोवै।
पूजन कीजै बहोरि उतै चलि माँगियो जो मनमें कछू होवै।
देखिले साँवरो राजकुमार खरो रघुराज महा मुद मोवै॥

दोहा—सखी वचन सुनि सकुचि सिय, दीन्ह्यो दृगन उघारि।
सन्मुख ठाढ़े कुँवर लखि, करी मनहिं बलिहारि॥

सवैया।

नखते शिखलौं लखि राजकिशोर सिया चखमें न परैं पलकैं।
मिलिहैं मोहिं नाथ विशेष हुतै हठि होत विश्वास हिये भलकैं॥
रघुराज न लाज तजे बनतो नहिं जात बनै शरणौ कलकैं।
छविकी छलकैं अलकैं झलकै लखिकै हिय में हलकैं ललकै १
पितुके प्रणकी सुधिकै पुनि सो पछिताति मनैं नहिं धीरधरै।
हरको धनु है अतिही कठिनै महिपालनको नहिं टारो टरै॥
रघुराज महा सुकुमार कुमार कहो किमि टोरि हैं मंजु करै।

विधि कर्मा करौं इनहींके गरे मम हाथनसों जयमाल परै २
चाप महेशको होय हरू अवधेशको लाडिलो पाणिसों टौरै।
वा दिन देव दिखाउ हमैं जयमाल धरौं इनके गल ठौरै॥
श्रीरघुराज सदा निरखौं हरषौं यहि औसर जो चित चोरै।
साँवरो होइ हमारो पिया अरु देवर होइ लला लघु गोरै ३

सोरठा--मनमहँ करति विचार, परी प्रेम परवश सिया।
चलति नयन जलधार, चंद्रकला बोली वचन॥
वचन सयुक्ति बनाय, सीतहि सरस सुनाइकै।
मधुर अली इत आय, सुनै कछुक चाहति कहन॥

सवैया।

ह्वैगे विलंब बैठी इतही अब अंब गये विन कोप करैगी।
पूजन बाकी अहै जगदंबको लंब भये रवि बेला टरैगी॥
श्रीरघुराज निहारि लई मनकी उपजी नहिं फेरे फिरैगी।
आउब कालिह यही बेरिया इत गौरिकृपा सब पूरी परैगी।

दोहा--अस कहि सखि मुसक्यायमृदु, नयन नचाय नवाय।
सियहि चितै चितई सखिन, राजकुँवर दरशाय॥
चंद्रकलाके वचन सुनि, मातु भीति उर आनि॥
चली पलटि पग जानकी, गूढ गिरा जिय जानि॥

सवैया।

देखै बहोरि बहोरि कुरंगन त्यौंहीं विहंगन भृङ्गन सीता।
तामिसि राजकुमार विलोकति होत अघाउ न चित्त पुनीता॥
लालच लागी विलोकनकी इत त्यौं उत है जननी ते सभीता।
खेलत चंगसे चित्त चली ज्यों बँधी रघुराजके प्रेमके फीता॥१॥
दूर सिधारत जानिकै जानकी पाटी तहाँ अपनो मन कीन्ही।
प्रेम तरंगन रंग अनेकन त्यों मतिकी लिखनी करि दीन्ही॥

नहकी स्याही जलै अनुरागकी श्रीरघुराज पिया निजचीन्ही ।
श्रीरघुवीरकी यों तसवीर बनाइ सिया हियमें धरि लीन्ही ॥७॥

दोहा—दूर दरश तिमि जानि कै, रचि रचि रुचि रघुवीर ।
चित मिथिलेश कुँवारिकी, रची रुचिर तसवीर ॥

चौपाई ।

बहुरि बहुरि सिगरी सखि देखैं । बिछुरनि जानि महादुख लेखैं ॥
करहिं परस्पर वचन बखाना । अस सुन्दर नहिं आन जहाना ॥
देखि भूपसुत साँवल गोरा । अब नं चहत चित चितवन ओरा ॥
करहिं विरंचि सिद्ध यह योगू । साँवल कुँवर जानकिहि योगू ॥
प्रण मिथिलेश विचारि बिसूरैं । किहिविधि राम शम्भु धनु तूरैं ॥
को सखि जाय नृपहि समुझावै । प्रण परिहरि सिय व्याह करावै ॥
अपर कह्यो भल भाषहु सजनी । लखहु होतका बीते रजनी ॥
मोरे मनहिं गौरि विश्वासा । करिहैं पूरि हमारी आसा ॥
कोउ कह सबै सखी जुरिआई । भूपद्वार बैठहिं बरिआई ॥
की नृप श्याम कुँवर सिय व्याहैं । लेइँ कि तिय वध अघ नरनाहैं ॥
कोउ कह चलहु सुनै नहिं कहहीं । ऐसहि होइ यथा चित चहहीं ॥
श्याम कुँवर छबि सुनत सुनैना । सोऊ प्रण करिहै कछु भैना ॥

दोहा—जननि जनक संमतहि ते, होत सुताको व्याह ।
जो जननी वारण करी, प्रण तजिहैं नरनाह ॥

चौपाई ।

रि गेह गवनी जब सीता । प्रभु कह लषणहिं वचन पुनीता ॥
लखी लला मिथिलेश कुमारी । हम तौ अस नहिं सुछबि निहारी ॥
कालिह स्वयंवर होवनहारा । धौं केहि देइ सुयश करतारा ॥
जागी कौन भूपकी भागा । का पै ईश कियो अनुरागा ॥
सुनत लषण बोले मृदु वानी । रीति हमारि नाथ असि जानी ॥

जहां रहत कोउ रघुवंसी । तहँ न होत दूसरो प्रशंसी ॥
लषण वचनसुनिमृदुमुसकाई । राम कह्यो बेला बड़ि आई ॥
तोरि प्रसून चुके भरि दोना । चलहु कालिह होई जो होना ॥
अस कहि चले गुरूपहँ रामा । हिय वर्णत सिय छवि अभिरामा ॥
मिलन देखि सियरघुपतिकेरो । देव पाय उत्साह घनेरो ॥
पूरण जानि काम निहि बारा । लगे बजावन विबुध नगारा ॥
चढ़े विमान कुसुम झरिलाये । राम लषण मुनिवर पहँ आये ॥
दोहा—गुरु समीप सुम दोन दोउ, धरि पद कियो प्रणाम ।
कौशिक कह्यो विलंब करि, किमि आये इत राम ॥

कवित्त ।

धरि धनुबाणजोरिपाणिवाणिबोलेरामसरलस्वभावछलछन्दनाछुआनहै ।
गयेमिथिलेशफूलवाटिकामें फूलहेतफूलनकेलैतलख्योकौतुकमहान है॥
भनै रघुराजआईजनकदुलारी तहां पूजनकेकाजगौरीसहित इशानहै ॥
सखिनसमाजदेख्यौंविभवदराजआजऐसोनाउमाकोनारमाकोसुन्योकानहै॥
दोहा—सकल जानि मुनि योगबल, रामहि दियो अशीश ।
होइ मनोरथ पूर तव, कृपा करहिं जगदीश ॥

चौपाई ।

करि पूजन मुनि सविधि सुखारी । भये मूल फल कन्द अहारी ॥
बहु विधि व्यञ्जन सुखद बनाये । युगल बन्धु कहँ बोलि जिमाये ॥
जो अघाइ नहिं यागन भागा । सो अघान लहिमुनिअनुरागा ॥
करि भोजन कर चरण पखारी । मुनि समीप बैठे धनुधारी ॥
कहन लगे मुनि कथा पुरानी । यद्यपि रही रामकी जानी ॥
सुनियत मनुज कहत सब कोई । होत प्रभात स्वयंवर होई ॥
कीन्ह्यो नृप विदेह प्रणभारी । भंजै धनु सो लहै कुमारी ॥
अहै शंभु कोदंड कठोरा । तासु कथा सुनु राजकिशोरा ॥
दक्ष यज्ञ वध पूरव काला । शंकर कीन्ह्यो कोप कराला ॥

यही धनुष गहि देवन भाख्यो । सुर नहिं यज्ञ भाग ममराख्यो ॥
तातें यही धनुष शर मारी । कीन्हों नाश सकल असुरारी ॥
सुनत शंभुके वचन कराला । डरे देव संयुत दिगपाला ॥
दोहा—कियो प्रसन्न पुरारि को, दियो यज्ञ कर भाग ।
शांत कोप शंकर भये, तब कीन्ह्यों धनु त्याग ॥

चौपाई ।

निमि नरेश के छठयें वंशा । देवरात भो नृप अवतंसा ॥
देवरात कहँ शंभु बुलाई । दियो धनुष तिहि भवन धराई ॥
थाती सम शिव धनुष धरे हैं । सोइ धनुकरनृप प्रणहि करे हैं ॥
मिथिला देश माहँ यक काला । पर्यो अवर्ष कराल अकाला ॥
मुनिजन कह्यो जनकपहँ जाई । निज कर करहु कृषी नृपराई ॥
मिटै अकाल प्रजा सुख पावैं । नृप चाल्यो तब हल वसुधामें ॥
हल चालत महि कढ़ी कुमारी । सीतानाम महा छविवारी ॥
राख्यो भवन सुता सो राजा । एक समय पूजनके काजा ॥
भूमि पखारन कह्यो नरेशा । शिव धनु रह्यो धरो तिहि देशा ॥
सोइ अयोनिज सीय कुमारी । धनु उठाइ कर भूमि पखारी ॥
भूपति लखि अचरज मन माना । तबते यह कठोर प्रण ठाना ॥
जो कोउ शंभु शरासन तोरी । तिहि व्याहिहौं अयोनिज छोरी ॥
दोहा—यह प्रण सुनि मिथिलेश को, आये भूप अपार ।
तौन स्वयंवर भोरहीं, ह्वैहै राजकुमार ॥

चौपाई ।

यह सब कथा कही मुनिराई । संध्या समय जानि दोउ भाई ॥
गुरु कौशिक शासन शिर धरिकै । संध्या कियो वेदविधि करिकै ॥
पुनि साधारण अंबरधारी । बैठे तरु छाया सुखकारी ॥
तब पूरब दिशि भयो प्रकाशा । ह्वै गै मनहुँ फटिककी आशा ॥

किरणि हजारन छई दिशाना । मंद परी नखतावलि नाना ॥
ज्यों मयंक मयूख पसारी । दिशि सुंदरी बिंदु मनहारी ॥
अरुण राग राजत चहुँ ओरा । मनु मधि रजत थार चितचोरा ॥
विरहिन को दुखदायक पूरो । संयोगिन सुखदायक रूरो ॥
दियो दिवाकर ताप मिटाई । जोन्ह भूमि मंडल पसराई ॥
चितै चकोर कुमुद हरषाने । मुकुलित कमल मनहुँ सकुचाने ॥
उदित निशाकर लखि रघुराई । सीता वदन सुछवि सुधि आई ॥
कह्यो लषण सों प्रभु मुसक्याई । लखहु मयंक महासुखदाई ॥
सोरठा–शशि मंडल अवलोकि, कछु सिय मुख मंडल सरिस ।
कह्यो बुद्धि थिर रोकि, पावै किमि सम सरिस सो ॥

कवित्त ।

जलतजनमतापै घटतबढ़तरोज बंधुविषवारुणीको सहित कलंकहै ।
वासरमलीनरोगयक्ष्मातेदीनपुनि पाइपूर्णमासीपर्वराहुतेसशंकहै ॥
मध्यश्यामताई विरहीजनको दुखदाई परिपरिवेशनहिं ठहरैनिशंकहै ।
रघुराजसियमुखसमकिमिभाषौमुख भाषत मयंकसमसोईमतिरंकहै ॥
दोहा–सिय सुधि आवत प्रभु हिये, कीन्ह्यो प्रेम पसार ।
कह्यो चंद्रहीसों वचन, विरहीजन अनुहार ॥

सवैया ।

रे विधु कोकन शोक प्रदायक तू जग जाहिर पंकज द्रोही ।
कामको मीतकरै अति शीत कियोगुरुको अपकारहैकोही ॥
भाषत श्रीरघुराज सुनै सिय के मुख की सरि तोहिं न सोही ।
नीक न लागत मोहिं मयंक बड़ो विरहीजनको निरमोही ॥
दोहा–सीय प्रेमवश प्रभुहि लखि, लषण कह्यो वर बैन ।
चलिय नाथ गुरु निकट अब, बहुत व्यतीतीति रैन ॥
सुनत वचन अस अनुज के, चले राम मुनि पास ।

बैठि निकट शिरनाइ कै, सुनन लगे इतिहास ॥
विश्वामित्र विलोकि तहँ, अल्पमान कछु रैन ।
कह्यो लाल कीजै शयन, बैठन अवसर है न ॥
सुनि मुनि शासन बंधु दोउ, किय शयन सुखपाय ।
स्वपन्याहू में सिय सुरति, बिसरै नहिं बिसराय ॥
उतै सीय रे गौरि गृह, राजकुँवर धरि ध्यान ।
जोरि पाणि पंकज करी, नति नति वेद विधान ॥

छंद मनोहरा ।

जय प्रिया पुरारी शैल कुमारी नहिं विकरारी मनहारी यशविस्तारी ।
षटमुख महतारी वर तपधारी दैत्यविदारी दुखहारी जग संचारी ॥
कृत भव रखवारी धर्म प्रचारी सुजन निहारी उर भारी दायाकारी ।
देनी फल चारी अधम उधारी स्वामि हमारी गतिसारी शक्तिनधारी ॥

छन्द हरगीतिका ।

जय जय हिमाचल दिव्य कन्या विश्व धन्या सुखमई ।
जय शंभु चन्द्रानन चकोरी काहि तैं नहिं गति दई ॥
जय जय गजानन जननिशुंभनि शुंभ रण संहारिनी ।
दुखहारिनी सुखकारिनी उपकारिनी जनतारिनी ॥
जय शंभु भामिनि वसनदामिनि कालयामिनि कोपमें ।
कैलासवासिनि जगप्रकाशिनि करति जन हित चोप में ॥
भव भव विभव संभव पराभव अभव भव सब कारिनी ।
दुर्लभ सुलभ तुहिं सहज सब ब्रह्मांड स्ववश विहारिनी ॥

दोहा—पतिव्रता पतिदेवता, जहँ लगि हैं जग नारि ।
तिनमें तुमहिं शिरोमणि, भाषत वेदहु चारि ॥

छन्द चौपाई ।

सेवत तुहिं प्रीते बहु दिन बीते नहिं मांगी कछु माता ।
अब कारज आयो मो मन भायो तैं चारौं फल दाता ॥

का कहौं भवानी तव सब जानी जो मन की गति मेरी ।
कहुँ दीपक बारे भानु निहारे होत ज्योति की ढेरी ॥
सुर नर मुनि जेते तुहि भजि तेते लहे सबै मनकामा ।
है मोहिं विश्वासा पुरिहै आशा तैं करुणा की धामा ॥
मैं शीशनवाई विनय सुनाई खड़ी जोरि युग पानी ।
तुहि कौन दुराऊ प्रगट प्रभाऊ अभिलाषा तुव जानी ॥
अस लागन मोही सब जग द्रोही नहिं हितकर कोउ मोरा ।
अब तुव अवलंबा है जगदंबा कहँ जाउँ किहि ओरा ॥
करिहै नहिं दाया तौ यह काया जानि परत नहिं रहिहै ।
मैं बड़ी गरीबिनि तुवपद सेविनि तुम बिनको मुहिं चहिहै ॥
पितु प्रण अति घोरा नाहिं हित मोरा कोउ न कहै समुझाई।
हरु तैं गरुआई धनु कठिनाई का कठिनाई माई ॥
अथवा प्रण फेरै करै न देरै हरै मोर संदेहू ।
शंकर महरानी देहु निशानी जाउँ जौन लै गेहू ॥
दोहा—तुहि अविदित नहि चरित कछु, कहँलौं कहौ बुझाय ।
नहिं सुहाय पितु माय मुहिं, दे जिय जरनि बुझाय ॥

सवैया ।

तैं संबंध सबै विधि जानसि जौन युगै युगको चलि आयो ।
कौनहूं काल में तू ननदीमम होतिहौ जन्म जबै व्रत पायो॥
तैंहूं परिक्षा लई कबहूं पिय ते छल कै मम रूप बनायो ।
पै रघुराज हमैं यहि काल सबै सुधि प्रेम को नेम भुलायो॥
दोहा—सुनत जानकी के वचन, प्रगट भई तब गौरि ।
करि प्रणाम मन हँसि कह्यो, देविनकी शिरमौरि ॥

चौपाई ।

यदपि प्रेमवश तुमहिं भुलाऊ । तदपि न मोहिं प्रभाव दुराऊ ।

प्रगटी प्रीति प्रतीति पुरानी। तासु होइ कबहूं नहिं हानी ॥
नारद सकल चरित्र सुनायो। कैसे होइ मृषा गुणि गायो ॥
बहुत कष्ट को फल अब होई। भली भाँति महिमा निज गोई॥
जिहि कारण लिय इन अवतारा।सो जान्यों सब भाँति हमारा॥
पै अब कहौं काल अनुसारा। सधैं सकल नरनाथ तुम्हारा ॥
आवति हँसी मोहि मनमाँहीं। याचति स्वामिनि सेवकपाहीं ॥
पै जस राउर शासन होई। तसहि कहब न जानी कोई ॥
सकल कामना पूरण होई। जो मन माहँ मिलिहि वर सोई ॥
अस कहि दीनी माल भवानी। जनु पूजी ठकुराइनि जानी ॥
गौरि कह्यो पुनि कुँवर साँवरो। शील नेह भल जानि रावरो ॥
सो करुणानिधान जग जाना। तिहि समान को आन सुजाना॥

दोहा—पार्वती के वचन सुनि, सिय नेसुक मुसक्याइ।
चली प्रणति करि सदन को, आनँद उर न समाइ ॥

चौपाई।

मुख प्रसन्न सियको सखि देखी। कारज सिद्धि सत्य मन लखी ॥
चढ़ी पालकी सीय सुहाई। मंद मंद गवनी सुख छाई ॥
बाजन बाजि उठे यक बारा। बोलहिं सखी नकीब अपारा ॥
चलीं हजारन सँग सुकुमारी। कहैं जयति मिथिलेश दुलारी॥
यहि विधि गौरिपूजिकरिनेहू। गई जानकी जननी गेहू ॥
सीतहिं देखि जनक महराणी। बोली सबै सखिन सों वाणी ॥
बड़ि विलंब कर कारण कहहू।सिय सँग सब सयानि सखि अहहू॥
मधुरअली तहँ गिरा सुनाई। जननि चरणपंकज शिरनाई ॥
देखत रही सिया फुलवाई। फेरि सरोवर माहँ नहाई ॥
पूजी गौरि वेद विधि करिकै। आवत जननि बेर भइ घरिकै ॥

रानी कह्यो जाउ सँगमाहीं । करवाओ भोजन सिय काहीं ॥
गई संग लै सखि वैदेही । करवायो भोजन पुनि तेही ॥

दोहा—पौढ़ायो पर्यङ्क पर, अली अशन करवाय ।
लगी चरण चापन हुलसि, मंत्रन दीठि झराय ॥
फुलवाई वरण्यो कछुक, तुलसी कृत अनुसार ।
अर्थ भाव धुनि युक्ति वश, भयो विमल विस्तार ॥
जे बांचें समझें सुनें, यह फुलवारिविहार ।
तिन रसिकन सज्जनन को, मम प्रणाम बहु बार ॥

इति सिद्धिश्री साम्राज्य महाराजाधिराज श्रीमहाराजा बहादुर श्रीकृष्णचन्द्र कृपापात्राधिकारि श्रीरघुराजसिंहजू देव जी. सी. एस. आई कृते रामस्वयंवरग्रंथे पुष्पवाटिकावर्णनं नाम अष्टादशप्रबन्धः ॥ १८ ॥

दोहा—राम लषण कौशिक सहित, कियो रैन सुख शयन ।
मनहि भयन उर चयन भरि, मीलित मंजुल नयन ॥
चारि दंड जब रहि गइ, रजनी अति अभिराम ।
ब्रह्म मुहूरत आइगो, जगे लषण युत राम ॥
कह्यो लषणसों राम तब, आजु तुरंत नहाय ।
प्रातकृत्य निर्धारि सब, बैठें गुरु ढिग आय ॥

चौपाई ।

आज राजमंदिर महँ प्यारे । सुता स्वयंवर होत सकारे ॥
नृप मिथिलेश नरेश बुलैहैं । गुरुहि बुलावन सचिव पठैहैं ॥
लषण स्वयंवर कौशिक जैहैं । हमहुँ तुमहुँ गुरु संग सिधैहैं ॥
निरखि स्वयंवर सकल तमासा । हमहुँ तुमहुँ बहु लहब हुलासा ॥
अस कहि सज्जन के सुखदायक । मज्जन करन चले रघुनायक ॥
लषण लगे मज्जन बहु योगी । विकसित कमल कोक संयोगी ॥
अरुण किरणि कढ़ि पूरव आशा । कीन्ह्यो रजनिजनित तम नाशा ॥

गगन भये दुति झलमल तारे । मनहु समर करि रवि सों हारे ॥
विकसित कमल कुमुद सकुचाने।शशि मलीन लखि मनहु लुकाने ॥
बोलि उठे विहंग बिन खेदा । रवि लखि पढ़हिं विप्र जनु वेदा ॥
पूरण प्रभा प्रभात परेखी । पुरुष सिंह परिमल पथ पेखी ॥
पुहुमि पटल पुहुमी परिपूरी । पग पग परी परग प्रचूरी ॥
दोहा—मज्जन किन्ह्यो बंधु दोउ, दीन्ह्यों अर्घ्य प्रदान ।
निर्धारी संध्या सकल, करिकै तिलक विधान ॥

चौपाई

पहिरि वसन आये निजवासा । धार्‌यो विमल विभूषण वासा ॥
दियो किरीट दिवामणि भासी । गहि कोदंड चंड रिपु नासी ॥
कंधन धरे निषंग विशाला । कसि कम्मर बांधे करवाला ॥
पीतांबर तनु सोहत कैसे । मेदुर घन रवि आतप जैसे ॥
कह्यो लषण सों प्रभु मुसकाई । आजु स्वयंवर लखव सिधाई ॥
बोले लषण कंज कर जोरी । सुनहु नाथ विनती कछु मोरी ॥
होत स्वयंवर जनकसुताको । देखत बल वीरज यश जाको ॥
पै अचरज लागत मनमाहीं । हरि सन्मुख शृगाल नहिं जाहीं ॥
उये शशी सोहत नहिं तारा । तहां गवन तस नाथ तुम्हारा ॥
रघुनायक बोले मुसक्याई । वहां न लषण किहेहु लरिकाई ॥
सानुकूल जापर विधि होई । रंगभूमि पैहै यश सोई ॥
अस कहि गवने गुरू समीपा । पुरुष सिंह सुंदर कुलदीपा ॥
दोहा—करि मज्जन पूजन सविधि, जहां रहे मुनिराय ।
जाय नाय शिर पांय प्रभु, वैठे आशिष पाय ॥

चौपाई ।

उतै उठे मिथिलेश प्रभाता । कियो विचार बुद्धि अवदाता ॥
आजु सुखद शुभ योग सुहावन । शतानंद कहँ चही बुलावन ॥

अस विचारि मिथिला महराजा । मज्जन पूजनादि करि काजा ॥
शतानंद कहँ पठयो धावन । ल्यायो तुरत पुरोहित पावन ॥
करि प्रणाम बोले मिथिलेशू । बोलि पठावहु सकल नरेशू ॥
रंगभूमि महँ सकल प्रकारा । करहु स्वयंवर कर संभारा ॥
सीय स्वयंवर सुनि चित चाये । देश देश के भूपति आये ॥
यथा योग्य मंचन बैठावहु । यथा योग्य सत्कार करावहु ॥
पौर जानपद सभ्य सुजाना । विविध देशवासी जन जाना ॥
आवहिं देखन सकल स्वयंवर । सुर विमान चढ़ि देखहिं अंबर ॥
नगर देहु डौंड़ी पिटवाई । नारि वृद्ध शिशु देखहिं आई ॥
कोशलेश दशरत्थ कुमारे । कौशिक मुनि के संग सिधारे ॥

दोहा—विश्वामित्र समीप चलि, मुनि समेत दोउ भाय ।
मेरी विनय सुनाय तिन, ल्यावहु आसु लिवाय ॥

चौपाई ।

सुनि मिथिलेश निदेश मुनीशा । एवमस्तु कहि दियो असीशा ॥
उठि तहँ ते सचिवन बुलवायो । जनक राज कर हुकुम सुनायो
सचिव सपदि सब कियो विधाना । शतानंद शासन परमाना ॥
सकल नृपन शासन पठवाये । रंगभूमि सुंदर सजवाये ॥
देश देश के सकल महीपा । सजे समाज सहित कुलदीपा ॥
भूषण वसन विविध विधि धारे । भूप अनूप रूप शृंगारे ॥
निज निज सब साहिबी समेतू । चले स्वयंवर देखन हेतू ॥
वंदी विरदावली बखानैं । भरे गर्व मन शक्र समानैं ॥
मोछन पर सब फेरहिं हाथा । चहुँकित चितै कँपावहिं माथा ॥
कहहिं परस्पर वचन विशाला । परिहै कौन कंठ जयमाला ॥
कोउ कह आजु शंभु कोदंडा । दोर्दंड बल करब त्रिखंडा ॥
कोउ कह हमहिं विलोकिकुमारी । किमि जयमाल और गल डारी ॥

दोहा—कोउ निज भुजन निहारि नृप, भरे घमंड अखंड ।
अति निर्भर वरवर वदन, को हम सम बरिबंड ॥

छन्द भुजंगप्रयात ।

चढ़े मत्तमातंग पै भूप केते । मनो आजुही स्वर्ग को जीतिलेते ॥
महा सानवारे बड़ी सैनवारे । चले आवते झूमते वीजवारे ॥
कोऊ पंथ भूमैं तुरंगैं नचावैं । सुनारीन के वृन्द शोभा दिखावैं ॥
कोऊ स्यंदनै मैं बनाये सुवेशा । दिहे कोटि मुक्ता गुथे केश केशा ॥
कोऊ पालकी पै महीपै सवारे । धनेशै लजावैं सुअंगै सुधारे ॥
कोऊ बल के यान पै बैठि आमैं । चढे नक्रनासै कोऊ नामजामैं ॥
प्रतीहार बोलैं छरी पाणि धारे । छजैं छत्र चौरै चलैं और चारे ॥
तुरंगैं मतंगैं सतांगैं अनेका । मच्यो शोर भारी यकै एक टेका ॥
उड़ी धूरि पूरी नभै पंथ जाई । रही भानु के भास को भूरि छाई ॥
अनंत कितोके लसैं ते पताके । अरूझैं मनो भानुके यान चाके ॥
भई भीर भारी पुरी चारि ओरा । बजैं वेश बाजे मच्यो मंजु शोरा ॥
सबै देशवासी पुरी के निवासी । गये रंगभूमै लखैं के हुलासी ॥
युवा वृद्ध बालौ नरो नारि जाई । परै जानि ऐसो न होती समाई ॥
जहां रंगभू को बनो तुंग द्वारा । तहां होत धूरे पषाणौ पवारा ॥
बने वेश बांके बड़े ऐंडवारे । जुरे रंगभूके सबै भूप द्वारे ॥
प्रतीहार धाये विदेहै जनाये । महाराज भू के सबै भूप आये ॥

दोहा—जनक बुलाये सचिव सब, दियो निदेश सुनाय ।
यथा योग्य सब नृपन कहँ, बैठावहु तुम जाय ॥

चौपाई ।

मंत्री सचिव मुसाहिब धाये । लगे सबन बैठावन चाये ॥
रहीं मंच अवली जो आगे । बैठाये राजन बड़ भागे ॥
तिनमहँ बड़पन के अनुसारा । भे आसीन भूमि भरतारा ॥

तिन पाछे मंचावलि माहीं । बैठाये सब सज्जन काहीं ॥
तृतिय मंच अवली जो भाई । पौर जानपद दिय बैठाई ॥
अति उतंग मंदिर चहुँ ओरें । बैठि नारि नर बाल करोरें ॥
रंगभूमि महँ अति उत्कर्षा । भयो महा मानव संघर्षा ॥
कसमस परत कढ़त जन काहीं । अंग अंग दीसैं जनु जाहीं ॥
सिय प्रताप महिमा प्रगटानी । नहिं संकेत परयो काहु जानी ॥
पूरब पश्चिम दक्षिण ओरा । बैठ भूपति मनुज अथोरा ॥
राज प्रकृति उत्तर दिशि पाहीं । जनकासन ढिग बैठत जाहीं ॥
फटिक तुंग मंदिर तिहि पाछे । तहँ रनिवास विराजत आछे ॥

दोहा—रंगभूमि के मध्य में, रह्यो विमल मैदान ।
कनक खंभ झालर मुकुत, तान्यो विशद वितान ॥

चौपाई ।

रंगभूमि यहि विधि जब भरिगै । राम दरश लालस हिय अरिगै ॥
पुर चारण महँ जे पुरवासी । राम रूप देखे छवि खासी ॥
ते आपुस महँ अस बतराहीं । युगल कुँवर आये कस नाहीं ॥
जिनहिं लखे वहि दिन पुरवागत । को अस जोन उन्हैं अनुरागत ॥
कोउ कह जनक बुलाये नाहीं । यह समाज किमि रच्यो वृथाहीं ॥
कोउ कह हम तो अति ललचाये । उनहीं को इत देखन आये ॥
कोउ कह उत विदेह लखि आये । दीठि लगन भय नाहिं बुलाये ॥
कोउ कह तुम जानहु नहिं हेतू । मन महँ जनक कियो अस नेतू ॥
नृपन बोलि उत्तर दै देहीं । पुनि रामहि व्याहैं वैदेही ॥
कोउ कह धनुपभंग बिन कैसे । प्रण तजिहैं भूपति नहिं ऐसे ॥
वा दिन जे न लखे रघुराई । ते पूछहिं कैसे दोउ भाई ॥
तिनहिं देहिं उत्तर जे देखे । उन बिन सकल वृथा मम लेखे ॥

दोहा—यहि विधि सिगरे नारि नर, कहैं परस्पर बैन ।
कौशलनाथ कुमार के, लखन लालची नैन ॥

चौपाई।

यहि विधि राज समाज विराजी। सचिवप्रधान सुमति कृत काजी॥
देखि स्वयंवर सब संभारा। जाय जनक सों वचन उचारा॥
नाथ सभा महँ धारिय पाऊ। आये सकल भूप भरि चाऊ॥
रंगभूमि महँ जुरी समाजा। तुव आगमन चहत सब राजा॥
सुनि विदेह भूषण पट धारे। रंगभूमि कहँ सपदि सिधारे॥
शासन भेजि दियो रनिवासा। बैठि झरोखन लखैं तमासा॥
नृप विदेह महिषी छबिखानी। नाम सुनैना शची समानी॥
सो निज संगहि सीय लिवाई। बैठी झीन झरोखन जाई॥
मंत्रिन युत मिथिला महराजा। गयो रंगमहि सहित समाजा॥
उठी समाज विदेह विलोकी। कोउ उर हर्षित कोउ उर शोकी॥
नृप विदेह को जेठ कुमारा। लक्ष्मीनिधि जिहि नाम उचारा॥
रंगभूमि महँ पितु सँग आयो। मनहुँ वीर रस रूप सुहायो॥

दोहा–सुहृद प्रकृति सरदार भट, परिचर सहित समाज।
सिंहासन आसीन भो, निमिकुल को शिरताज॥

चौपाई।

शतानंद उत चलि मतिधामा। विश्वामित्रहि कियो प्रणामा॥
कौशिक आशिष दियो अनंदे। युगल कुँवर गौतमसुत वंदे॥
गाधिसुवन बोले मति सेतू। कहहु आगमन कर मुनि हेतू॥
शतानंद तब वचन सुनायो। तुमहि विदेह नरेश बुलायो॥
कोशलनाथ कुमार समेता। रंगभूमि कहँ चलहु सचेता॥
मुनिसमाज संयुत मुनिराई। चलो स्वयंवर लखन तुराई॥
देश देश के भूपति आये। रंगभूमि महँ नृप बैठाये॥
अब बाकी आगमन तुम्हारा। जब जैहौ तुम सहित कुमारा॥
तब शिवधनुष भूप मँगवैहैं। निज प्रण कहि भूपन दरशैहैं॥
शतानंद की सुनि अस बानी। कौशिक मंजुल गिरा बखानी॥

आप चलहु हम आवत पाछे । लै दोउ राजकुमारन आछे ॥
शतानंद मुनि उठे तुरंता । गये जहां मिथिलापुर कंता ॥

दोहा—कौशिक आवत कुँवर युत, कीन चहिय सतकार ।
सबते ऊपर अवनि महँ, अवध भूमि भरतार ॥

चौपाई ।

इत स्वयंवर देखन हेतू । विश्वामित्र कियो असनेतू ॥
राम लषण सों कह मुसक्याई । बैठहु इतै अबै दोउ भाई ॥
जबलगि नहिं मिथिलेश कुमारा । तुमहिं बुलावन कहँ पगुधारा ॥
उचित न तबलगि जाब तुम्हारा । तुम समान नहिं राजकुमारा ॥
प्रथम जात हम जहां विदेहू । जब बुलवैहैं तब चलिदेहू ॥
अस कहि मुनिसमाज तहँराखी । चल्यो विदेह दरश अभिलाखी ॥
पहुँच्यो रंगभूमि के द्वारा । प्रतीहार तब जाय पुकारा ॥
महाराज कौशिक मुनि आये । राजकुमारन नहिं लै आये ॥
सुनि विदेह विस्मय उर आनी । चल्यो लेन मुनिकी अगुवानी ॥
कियो जाय नृप दंडप्रणामा । दिय मुनीश आशिष तपधामा ॥
रंगभूमि लैगयो लिवाई । हर्ष लखि समाज मुनिराई ॥
सब मंचन ते मंच उतंगा । राजमंच जिहि शोभ अभंगा ॥

दोहा—कौशिक को बैठाय तिहि, कियो विविध सत्कार ।
पूँछ्यो कारण कौन नहिं, आये राजकुमार ॥

चौपाई ।

मुनि मुसक्याय कही तब बानी । अहो विदेह बड़े विज्ञानी ॥
शतानंद मुनि गये बुलावन । आये हम तुव सदन सुहावन ॥
वे तो अवध अधीश दुलारे । आवहिं किमि बिन गये कुमारे ॥
नहिं समान भूपति के बेटा । राजराज दशरथ दुलहेटा ॥
लक्ष्मीनिधि तिन जायँ बुलावन । आवहिं राजकुँवर मनभावन ॥
सुनि विदेह बोले हरषाई । भलो सिखापन दिय ऋषिराई ॥

तुम नहिं कहहु कौन अस कहई। तुम मम नहिं ज्ञाता जग अहई ॥
पुनि बोल्यो लक्ष्मीनिधि काहीं। आयो कुँवर तुरंत तहांहीं ॥
कह्यो विदेह जाहु तुम ताता। आनहु अवध कुँवर अवदाता ॥
लक्ष्मीनिधि पितु शासन पाई। चढ्यो तुरंग चल्यो अतुराई ॥
कौशिक एक शिष्य पठवायो। राजकुमारन कहि बुलवायो ॥
जहँ अवधेश कुमार उदारा। आयो लक्ष्मीनिधि सुकुमारा ॥

दोहा—तजि तुरंग अति दूर ते, पगन चल्यो महि माहिं ।
चलि आगू लेन भेय, राम लषण तिहि काहिं ॥

चौपाई।

मिले परस्पर राजकुमारा। मनहु चंद्र रवि अग्नि उदारा ॥
पूँछि परस्पर तिन कुशलाई। लक्ष्मीनिधि बोल्यो शिरनाई ॥
रंगभूमि आये सब राजा। भगिनि स्वयंवर होत दराजा ॥
आप पधारहु पिता बुलायो। हय गय रथ वाहन पठवायो ॥
प्रभु कह जबते गुरुसँग लागे। हय गय रथ वाहन सब त्यागे ॥
चलिहैं पगन पुहुमि पर प्यारे। रंगभूमि जहँ पिता तिहारे ॥
कौशिक शिष्य कह्यो पुनि आई। राजकुँवर बोल्यो मुनिराई ॥
गुरुशासन सुनि दोउ रघुराजा। चले सहित सब मुनिन समाजा ॥
विश्वामित्रहि उतै विदेहू। कह्यो नायशिर सहितसनेहू ॥
कहौं काह जानौ मुनिराई। जिहि विधि शिव दिय धनुपधराई ॥
जौन भाँति कोपे ईशाना। भाग न पायो यज्ञ विधाना ॥
यह कोदंड विरचि करतारा। दीन्ह्यो हरकहँ योग विचारा ॥

दोहा—सोई धनु लै कोप करि, देवन कह्यो महेश ।
खंड खंड करि अंग सब, दहा महाकलेश ॥
तब अस्तुति करि देवता, कियो प्रसन्न पुरारि ।
यज्ञभाग हरको दियो, आपनि विपति विचारि ॥

पूर्वपुरुष यक मम भये, देवरान महराज ।
धरवायो हर निज भवन, सोइ धनुष गुणि काज ॥
कंपन महिहल कनकमय, प्रगटी सुता अनूप ।
तासु स्वयंवर होत पुनि, जुरे बहुरि सब भूप ॥

चौपाई ।

जब प्रगटी सीता सुकुमारी । मैं राख्यो निज भवन कुमारी ॥
धरयो धनुष जहँ तहँ इक काले । मैं बुलाय भाष्यों सिय बाले ॥
पूजन हेत पखार कुमारी । मैं नहाइ आवतो सिधारी ॥
अस कहि मज्जनकरि जब आयो । कौतुक देखि महाभ्रम छायो ॥
धनु उठाइ बायें कर सीता । धरयो और थल परमपुनीता ॥
मम पूजन हित भूमि पखारी । यह लखि हृदयशंकभइभारी ॥
रैन समय जब शयनहि कीन्हा । शंकर मोहिं स्वप्न अस दीन्हा ॥
जो कोइ लेवै धनुष उठाई । साजे गुनि खैंचै बरिआई ॥
जो तोड़ै कोदंड हमारा । सुता दिह्यो तिहि बिनाहिंबिचारा ॥
स्वप्न देखि जाग्यो मुनिराई । मम महिषी तब कह्यो बुझाई ॥
सुता विवाहन योग्य भई है । करहु रानि सोइ प्रीतिमईहै ॥
मैं स्वप्नो भाष्यों तिहि पाहीं । कौतुक लख्यो जु नैननमाहीं ॥

दोहा—महिषीको संमत समुझि, रच्यो स्वयंवर नाथ ।
देश देशके भूप सब, जुरे एकही साथ ॥

चौपाई ।

तब मैं वंदीजनन बुलायो । तिन मुखअसप्रणनृपन सुनायो ॥
जो शंकर कोदंड कठोरा । राजसमाज आज इत तोरा ॥
तिहि गल परी आज जयमाला । व्याही सो अनूप मम बाला ॥
यथा लगी मुनि आजु समाजू । रही एसही तबहुँ दराजू ॥
तहँ रावण मंत्री इक आयो । नाम प्रहस्त जासु जग गायो ॥

बाणासुर बलिराज कुमारा । महाबली जिहि बाहु हजारा ॥
पूर्वकाल वर बाज बजायो । सहसबाहु कृतिवास रिझायो ॥
औरहु रहे सकल भूपाला । सुनत सोर प्रण आज विशाला ॥
लगे सवाँरन कीट अनेका । नमकि उठे एकन ते एका ॥
कोउ नरनाह मंद मुसक्याहीं । कोउ सम्हारन खड्गन काहीं ॥
उठिउठि पुनि पुनि बैठहिं भूपा । छाया निरखि बनावहिं रूपा ॥
तिहि अवसर सीता तहँ आई । सुनत धनुष जननि पठवाई ॥

दोहा—सविधि शरासन पूजि सिय, सखी सहस्र ससेन ।
जननि भवन को गवन किय, भूपनि भये अचेन ॥

चौपाई ।

राज समाज सुनत प्रण सोरा । निरखि शम्भु कोदण्ड कठोरा ॥
कसि कसि कम्मर अंबर बेरी । उठे उठावन भूपति ढेरी ॥
कोउ नृप गये धनुष नियराई । देख्यो धनुष भुजग भयदाई ॥
आयो भागि कहन असलाग्यो । धनुष न होइ ब्याल विषजाग्यो ॥
और गयो कोउ तासु समीपा । भयो अंध सो तुरत महीपा ॥
धरयो धनुष कहँ पूछनलागा । सकल समाज हास रस जागा ॥
अपर गयो कोउ तहाँ भुआला । लख्यो चाप वपु बाघ विशाला ॥
बैठ्यो बहुरि मंच निज आई । कह्यो जनक दिय बाघ बँधाई ॥
कोउ पुनि गयो अवी नरनाहा । छूतहि चाप भयो तनु दाहा ॥
धरयो धनुष कोउ मधिमहँजाई । सकोनतिलभरिचापडुलाई ॥
पुनि भूपाल गयो कोउ नेरा । शंभु स्वरूप शरासन हेरा ॥
करि प्रणाम बैठ्यो पुनि आई । कहि न सक्यो काहू भयपाई ॥

दोहा—करि सम्मत शत भूमिपति, जाय एकही बार ।
लगे उठावन शंभु धनु, उठ्यो न एकहु बार ॥

चौपाई

बाणासुर तव उठ्यो प्रकोपी । धनुष उठावन को चित चोपी ॥

देखि परयो शिव गौरि स्वरूपा। कियो प्रणाम दैत्य कुल भूपा॥
चल्यो सभा ते मदन तुराई। मम प्रभु को धनु सवनि सुनाई॥
तब प्रहस्त कह वचन कराला। लंकनाथ को दीजै बाला॥
नातो वरवस हरि लै जैहैं। जग भरि जुरी काह करिलैहैं॥
तब हम बोले अमरष वयना। रेप्रहस्त बोलत तुहिं भय ना॥
जो वरवस हठि हरी कुमारी। सीता ताहि मारि हठि डारी॥
रावण सचिव सुनत अस वाता। गयो भवन मुहिं धिरै अघाता॥
पुनि यक नाम सुधन्वा राजा। मोहिं कह्यो करि कोप दराजा॥
धनुष सहित कन्या मुहिं दीजै। ना तो अवशि आज फल लीजै॥
सुनि मम भट अति अनुचितवाणी। धाये तापर काढ़ि कृपाणी॥
भूप भाग लै सैन्य घनेरी। बहुरि लियो मिथिलापुर घेरी॥

दोहा—भयो वर्ष भरि युद्ध तहँ, भई क्षीण मम सैन।
ध्यायो देव महेश हम, तब पायो पुनि चैन॥

चौपाई।

द्वैरथ भो संग्राम हमारा। समर सुधन्वै मैं हति डारा॥
भागी फौज चले हम पाछे। मारे गये वीर बहु आछे॥
पुरी सुधन्वा की संकासी। दई कुशध्वज को सुखरासी॥
यहि विधि पूरव भयो हवाला। भयो स्वयंवर नहिं तिहि काला॥
होत स्वयंवर सो अब नाथा। आय आप मुहिं कियो सनाथा॥
इतना कहत जनक नृप केरे। प्रतीहार दूरहिं ते टेरे॥
महाराज भूपति शिरताजा। आवत अवध कुँवर रघुराजा॥
सुनिविदेह अति आनँद पाई। रामहि लेन चल्यो अगुवाई॥
द्वार देश ते चलि कछु दूरी। देख्यो राम लषण छवि पूरी॥
निरखि राम मिथिलेश महीपै। कियो प्रणाम सिधारि समीपै॥
मुनि मंडली महीपति वंदे। राम लषण लखिभये अनंदे॥

लक्ष्मीनिधि अरु लषण उदारा । किये विदेह प्रणाति सुकुमारा ॥
दोहा–राम लषण कर कमल गहि, चल्यो विदेह लिवाय ।
जनु शृङ्गार वसंतको, वात्सल्य रस आय ॥

छन्द हरिगीतिका ।

सोहत महीप विदेह संग कुमार दशरथ राजके ।
करतार संग मनो दिवाकर निशाकर छबिछाजके ॥
मिथिलाधिराज कुमार लक्ष्मीनिधि विराजत संगमें ।
मनु अमरगण सैनाधिपति करतार संग उमंगमें ॥
पाछे लसति मुनि मण्डली तहँ तेज तरणि अखंडली ।
देखत सबै नर नारि अनमिष सरस सुठि शोभा भली ॥
हल्ला परचो मिथिला नगर युग राजकुँवर सभा गये ।
जे रहे रक्षक भवनके ते श्रवण सुनि धावत भये ॥
जे संच बैठे मंच नृप अरु नारि नर सब देशके ।
उचि उचि विलोकत छकत छवि मुखकहत सुत अवधेशके ॥
तहँ राजमंडल मधि विमंडित कुँवर कौशलपालके ।
वारचो मदन महताब युग मनु विविध बीचमशालके ॥
कोउ कहत कोशलनाथक नन्दन महारण बाँकुरे ।
जग साखि मुनमखराखि लिय सुकुमार कोशल ठाकुरे ॥
मनु मुदित मंदहि मंद गमनत मत्त मातंगज नती ।
चहुँ ओर हेरत नैन फेरत हरत जनु राजन रती ॥
प्रभु आगमन गीर्वाण गुणि गावत गोविंद गुणानको ।
गहगहे गन डहडहे मन गवने गगन लै यानको ॥
गंधर्व किन्नर सिद्ध चारण सुर हजारन अप्सरा ।
आये स्वयंवर लखन अंबर साजि विमान परंपरा ॥
दोउ बंधु सुखमा सिंधु लसत निषंग कंधनमें कसे ।

वनमाल उर मणिमाल कटि करवाल ढालनमें गसे॥
आजानुबाहु उदग्र विक्रम दुराधर्ष सहर्ष हैं।
उत्कर्ष कीरति वर्षवर्ष सुनैन जन सुख वर्ष हैं॥
दुर्जन दुरासद वर सभासद विश्व रक्षासद शाह हैं।
जिनके नवल नागर कुँवर धनि अवध शाहनशाह हैं॥
श्रम बिंदु मुख अरविंद मनु मकरंद बिंदु सुहावने।
उडु वृन्द नृप युग उदित इन्दु सुइंदिरा मनभावने॥
रघुराज राजकुमार लखि अवनीप कुल शिरताजको।
भे भूमिपति वश लाज जिमि गजराज लखि मृगराजको॥
निज काज गर्व दराज मनहुँ पराज ह्वैगो आज है।
जस गाज हत तृणराज तरु तस आज भूप समाज है॥

दोहा--जाकी जैसी भावना, रही मनहिं तिहि काल।
ताको तैसे लखि परे, दोउ दशरथके लाल॥

सवैया।

जे नृप आये शरासन तोरन गर्व भरे रणधीर महाने।
ऐसे विचार किये मनमें जितिहै कहुको हमरे समुहाने॥
आँखिनमें तिनके रघुराज सुवीर शिरोमणि वेष दिखाने।
वीर रसै की बनी मनो मूरति रोष बिसारि लखैं ललचाने १
क्षितिनाथ छली कुटिलै कितवै दगाबाज समाज जे आये रहे।
कपटी कलि मूरति कूर महा करि माया कुमारिको व्याह चहे॥
रघुराज लखे रघुनायकते महाभीम भयावन दण्ड गहे।
शिर काटन चाहत ज्यों अबहीं करवाल कराल लिहे उबहे २
सीय स्वयंवरमें जिन दानव मानवके वर वेष बनाये।
आये उठावन शंभु कोदंड अखंड बली भुजदण्ड उठाये॥
ते रघुराज लखे प्रभुको महाकालको रूप ज्यों लेत हैं खाये।

नयन कराल विशाल भुजा बचिहैं नहिं आज दिगन्त पराये ३
जे मिथिलापुर वासी महासुखराशी रहे छवि पीवन आसी।
रूप उपाशी सबै दुखनासी विलोकन और के ओर निरासी॥
ते रघुराजकी मूरति खासी विलोकि सुधासी चखे हैं मिठासी।
नेहकी फाँसी परे निरखैं निज नयनन नीके निमेष निकासी ४
नारि विलोकहिं साँवली मूरति मूरति माधुरी की मनु भाई।
प्रीतिमई रसरीति छई अनुरागकी आभ अनूप निकाई॥
श्रीरघुराज मनौं जुलफैंकी जँजीरन की कुलफैं खुलवाई।
जानि दृगञ्चल चञ्चल चोर अचञ्चल कैदियो वेरी भराई ५
दोहा—कोटि मदन मद कदन वपु, शोभ सदन सुकुमार।
कहैं सखी किहि पटतरिय, निउछावरि शृङ्गार॥

सवैया।

पंडित ब्रह्म विज्ञानी बड़े ते विराट स्वरूप सो लागे निहारन।
शीश विलोचन कानहुँ आनन पाद औ पाणि परेखे हजारन॥
रोमनि रोमनि अण्ड अनेकन थूलहु सूक्षम विश्वको कारन।
श्रीरघुराजस्वयम्भु औ शम्भु सुरेशगणेश औ शेषअपारन १
बैठे रहे निमिवंशी सबै तहँते निरखे नवनीरद श्यामै।
लागे सगे संबन्ध जगे अनुराग रँगे अतिशय अभिरामै॥
श्रीरघुराज विचारैं मनै प्रण टारैं हमैं मिथिलेश बुझामै।
जातिके जाय सबै जुरिकै अब व्याहैं विशेषिकै जानकीरामै २
देखतही नृपरानी सुनैनै पयोधर में भयो क्षीर स्रवाऊ।
तैसहि पांचहि वर्षके देखत रामहि श्रीमिथिलाधिप राऊ॥
श्रीरघुराजको चूमतसो मुख दंपतिको प्रगट्यो शिशु भाऊ।
कोशलपालके कौशलाके नहिं लाल हमारे हैं बाल सुभाऊ ३
योगिन जोहे जबै रघुनाथ परम्पददायक पूर्ण प्रकाशी।

आनं अखण्ड अनीह अनन्त अनामय आदि अजो अविनाशी॥
शुद्ध सतोगुण शांत स्वरूप सदा अहै सच्चिदानन्दहि राशी।
धारणा ध्यानमें धारण योग सनातन श्रीरघुराज सुपासी ४
जे हरिभक्त अनन्य रहै ते लखैं करुणा वरुणालय नाथै।
दीन सहायक सवन लायक दायक दासके शीश पै हाथै॥
श्रीरघुराज विकुण्ठके नायक भायक भावके आनँदगाथै।
शुद्ध सतोगुण हैं पर तत्त्व विचारिकै नावत भे सब माथै ५
जो हरि हेरनही सियके हिय होत भयो हठि हौंस हुलासै।
सो कवि कौन कहै सिगरो नहिं कै सकैं शेश अशेश प्रकासै॥
मैं मतिमन्द किहौं केहि भाँतिसों जुगुन क्यों करै भानुहिं भासै।
जानहिं राम सिया हियकी सिय जानति रामकी अन्तरआसै ६

दोहा–राजत राजसमाज मधि, कौशलराजकिशोर।
सुंदर श्यामल गौर तनु, विश्व विलोचन चोर॥

छन्द हरिगीतिका।

यहि विधि कहत सब नारि नर लखि लषण संयुत राम।
ल्याय लिवाइ विदेह सहित सनेह अति अभिराम॥
चहुँ ओर नयनन फेरि पुनि हँसि हेरि बोले राम।
मिथिलाधिराज गुरू हमारे बैठ कौने ठाम॥
बोले विहँसि मिथिलेश जो अति मञ्च तुङ्ग विशाल।
कमनीय निर्मित नागरद तापर गुरू तव लाल॥
अस कहि लषण रघुनायकहि लै जाय अतिसुख छाय।
मुनिपदकमल शिरनाय दिय बैठाय दोनों भाय॥
पुनि कह्यो कौशिकसों जनक सब रंगभूमि दिखाय।
पृथिवीपतिनकी पृथक पृथक परम्परा दरशाय॥
निर्माण निज अनुमान ते सो किय बखान बताय।

कीन्ही भली रचना रुचिर अस कहत भे मुनिराय ॥
मिथिलेश मुनिपद नायशिर अस कह्यो वचन बहोरि।
अब देहु शासन शंभु धनु आवै विनय अस मोरि ॥
बोले महा मुनि मुदित मन मँगवाइये हर चाप।
पूजन करावहु सीय कर आसन विराजहु आप ॥
करिकै प्रणाम मुनीशको नृप बैठ आसन जाय।
शासन दियो सब सचिवगण भट प्रबल विपुलबुलाय ॥
ल्यावहु शरासन शंभुको तर धरहु विशद वितान।
सीता करै पूजन सविधि नहिं होइ आन विधान ॥
सुनि नृपति शासन सचिवगण धाये भटन लै संग।
जनवाय दिय रनिवास महँ मिथिलेश कथित प्रसंग ॥
जबते अवधपति कुँवर आये बीचि सकल समाज।
तबते सबनको भयो वदन विलोकनो यक काज ॥
कोउ कहत सुनियत काम सुंदर अंग सुनियत हीन।
सोइ कुकवि बुद्धि विहीन समता जौन इनकी दीन ॥
कोउ कहत पुनि अस बुधि विशारद सुखद शारद चंद।
इनको वदन लखि भयो भारद यथा पारद कंद ॥
कोउ कहत रतनारे नयन हिय हेरि हारे कंज।
ये भरे शील सनेह नित वै भरे जड़ता गंज ॥
कोउ कहति चितवहु चतुरि तुम चितचोरि चखनि चितौनि।
जिहि होत हृदय दुशाल नहिं अस कामिनी कहु कौनि॥
-अमल कपोलनमें लसैं, कुंडल मंडल लोल।
विमल आरसीमें मनहु, कल कृत हंस कलोल ॥

छन्द गीतिका।

सुंदर अधर मन हरत जिन प्रतिबिंब बिंब विचारिये।

देखन दशन दाडिम कली कल कुंदकी छवि वारिये ॥
अति चारु चिबुक विचारु सखि मनमोर उपमा अस कहै ।
मानहुँ छलकि शशि ते सुधा इक बिंदु अध चूवन चहै ॥
कोउ नारि कहति विचारि देखहु कुँवर सुंदर साँवरो ।
दे बोल मोलहि हरत मन पुनि करत जनगण बावरो ॥
कोउ कहहि निशिकर वदन ते निकसति हँसनिछाजितछटा ।
बैठी अटापर छन छटा सी करति कुलि कामिनि कटा ॥
कोउ लिहे शुककर ताहि लखि सखि कहति वचन विचारिकै
निज नासिका ते तुव सुछबि लिय राजकुँवर प्रचारिकै ॥
कोउ कहति भामिनि भ्रुकुटि विकटविलोकि श्रवणसमीपलौ
ये साफ सैफ करैं कतल नहिं क्षमैं तिय सजनीपलौ ॥
कोउ कहति भाल विशालमें रघुलालके चंदन लसै ।
मनु विश्व छबि धरि इन्दिरा नवहीर मंदिरमें बसै ॥
मेचक रुचिर कचकंठ चहुँकित ऐंचि पोछे चीकने ।
मनु सजल सावन श्यामघन निशिनाथको घेरे घने ॥
पुनि कह्यो कोउ नर निरखि कौशलपाल लालनको तहाँ ।
अब लेहु लोचन फल सकल भल भई पुण्य उदय महा ॥
चौकोरकी मणिगण जडित चौतनी क्रीट प्रकार है ।
सो लसत माथे मनहुँ हाथे रच्यो निज करतार है ॥
जो नीलमणि गिरि फटिक गिरि पै उदै युगपत भानु द्वै ।
अस होहिं कौनौं काल तो नेसुक सकैं उपमा न छ्वै ॥
जिन कंठकी नहिं पाय सारि लजि कंबु सागरमें बसैं ।
तिन कंठ रेखा रुचिर त्रय छबि रेख जनु विधि कृत लसैं ॥
गज मुक्तमाल विशाल उर त्यों लाल माल रसाल हैं ।
तिमि तुलसिकादलमाल मालति कुसुमके बिच जालहैं ॥

मनु शंभु गिरि गिरिनील पै यकबार पावस कालमें ।
लहि भानु आतप उदै वासव धनुष बुंदन जालमें ॥
कोउ कहत ये दोउ अवधपतिके कुँवर हैं रण बाँकुरे ।
आजानुबाहु बिलोकि इन अब को लखै बिय ठाकुरे ॥
दोउ पुरुषसिंह बिराजमान मुनीशके दुहुँ ओर हैं ।
कटि छाम वृषभ समान कंध अनूप भूप किशोर हैं ॥

दोहा—नव यौवन मुख अरुनिमा, अति निशंक रणधीर ।
इनके सन्मुख नृप भये, जिमि बिन फरके तीर ॥

कवित्त ।

कंधननिषंगराजैंहाथनधनुष भ्राजै बाम बामकरनदराजैंछबिछाजैहैं ॥
आये मुनिकाजैंकरिबैठेहैंसमाजैंमध्यजैसेगजराजनमें उभै मृगराजैहैं ॥
धन्यरघुराजैकियेराखीहैअहल्यालाजैदीननिवाजैरंगभूमिआयेआजैहैं ॥
देखिरघुवंशशिरताजैचहैंभाजैंभूप तजिकैतबाजैंजिमिलवालखिबाजैहैं ॥

दोहा—पीतवसन अभिराम तनु, सोहत दोनों भाय ।
जलद पटल सित श्याम जनु, आतप रह्यो सुहाय ॥
पीत यज्ञउपवीत वर, कन्ध नाभि पर्यंत ।
मनहुँ कनक मरकत शिला, कनकरेख बिलसंत ॥

सवैया ।

यद्यपि बैठे हज़ारन भूप हज़ारन भाँति शृँगार सँवारे ।
तद्यपि जेते रहे नर नारि विलोचनमें पलकानि निवारे ॥
श्रीरघुराज सुखारे सबै अवधेश कुमार न दीठि पवारे ।
ज्यों मकरंद के पीवनको अरविंदपै जात मलिंद कतारे ॥

।—कहहिं परस्पर नारि नर, देखे किते कुमार ।
पै नहिं देखे अस कतहुँ, नख शिख ते मनहार ॥

कवित्त ।

कोऊनिजबंधुकोऊदेखेदीनबंधुकोऊ शत्रुसेनिहारेकोऊमित्रसे निहारेहैं ।

कोइलखमालकसकोइलखबालकसे कोईपखेपालकसेविश्वरखवारे है ॥
भेनगधुगजजाकेजेंसरह्योभावहींमेंताकोतेसेजोह्निपरे अवधदुलारे हैं ।
मरमननान्योकोइकीन्ह्योंजोचरित्रगमवरापप्रमूनदेवदेतभेनगारेहैं ॥

दोहा–उतै गये सब सचिव भट, धनुष लेन के काज ।
दै बलि पूजन विविध विधि, बंदे सहित समाज ॥

चौपाई ।

मंजूषा आयसी कठोरा । बड़ि शृंखला लगीं चहुँ ओरा ॥
जब सीता टारचो धनु काहीं । पितुनिदेश धरिदिय तिहिमाहीं ॥
पूरब भयो स्वयंवर जबहीं । ल्याये मंजूषा भट तबहीं ॥
यहू कालमहँ तिही प्रकारा । लागे करन सचिव उपचारा ॥
वैदिक ब्राह्मण बहुत बुलाये । विविध भाँति स्वस्त्ययन पढ़ाये ॥
गौरि गणेश सविधि पुजवाये । मंगल हेत महेश मनाये ॥
मंजूषा महँ आयस केरे । अष्ट चक्र वर लगे करेरे ॥
बली मल्ल जे पांच हजारे । शत शत सिंधुरके बलधारे ॥
गहे चक्र कर खींचन लागे । आनन अरुण जोर अति जागे ॥
औरहु मनुज हजारन आई । लगे चक्र चालन बरिआई ॥
मंजूषा सो टरै न टारी । सकल वीर अतिशय हियहारी ॥
मंत्री सभ्य विप्र वर ज्ञानी । कीन्ही विनय जोरि युग पानी ॥

दोहा–शिव शासन लै जनक नृप, सभा मँगायो तोहि ।
रंगभूमि गमनहुँ धनुष, ओर आपनी जोहि ॥

चौपाई ।

अस कहि दियो महेश दुहाई । लगे चलावन चक्र चलाई ॥
जय महेश बोले जन जबहीं । चली धनुष मंजूषा तबहीं ॥
महामल्ल जे पंच हजारा । लै गवने जन ओर अपारा ॥
भयो कोलाहल नगर मँझारी । देखन हित धाये नर नारी ॥

आयमखेल मरिस मंजूषा । निज नासु प्रगट्यो जनु पूषा ॥
यहि विधि जस नसैक भट भारे । ल्याये रंगभूमिके द्वारे ॥
दिय विदेहहिं खबरि जनाई । द्वार धनुष मंजूषा आई ॥
धरें तहां जहँ होइ रजाई । कह्यो विदेह वचन विदुराई ॥
तन्यो वितान जौन थल पाहीं । वनी जहां वेदी महि माहीं ॥
नाना वर्ण चौक रचि लेहू । अर्चित मंजूषा धरि देहू ॥
तेसहि किये सचिव सब जाई । धरी धनुष मंजूषा ल्याई ॥
वली मल्ल जे पांच हज़ारे । धरि मंजूषा अनत सिधारे ॥

दोहा–अभिमानी भूपति सकल, लगे बजावन गाल ।
कायर कुमती क्रूर तब, देखत भये बिहाल ॥

चौपाई ।

गाधिसुवन कहँ जनक लिवाई । गयो जहाँ धनु दियो धराई ॥
विश्वामित्र संग दोउ भाई । चले मत्त गज गवन लजाई ॥
मुनि कहँ मंजूषा दरशाई । जिहि विधि सुन्दर चौक पुराई ॥
रचना विविध विशेष बनाई । गाधिसुवन कहँ सकल दिखाई ॥
हरकोदंड जानि तप धामा । कियो महामुनि धनुष प्रणामा ॥
मुनि कह अब विलंब नहिं कीजै । सिय आगम अनुशासन दीजै ॥
कह्यो विदेह नाथ नहिं देरी । लेहु सकल रचना मुनि हेरी ॥
मुनिकह भल रचना नृप कीना । लेखा लै लजाय तुम दीना ॥
भूप विदेह मुदित मन भयऊ । मुनि आसन लिवाय पुनि गयऊ ॥
विरचित गजरद कनक उतंगा । जहँ तहँ लगे रत्न बहुरंगा ॥
बैठे लै मुनि अवध कुमारे । निज आसन विदेह पगु धारे ॥
निरखे सब नृप अवध कुमारा । भे मलान जिमि शशि लखि तारा ॥

दोहा–जे हरिभक्त नरेश तहँ, प्रभु लखि कियो प्रणाम ।
जानि जगतपति राम कहँ, सिय लक्ष्मी छविधाम ॥

छन्दपद्धरी ।

अस कियो नृपनते तिन उचार । अब चलहु सबै निज निज अगार ॥
तोरि हैं राम हठि शम्भु चाप । बहु बलकि वृथा मुख लेहु पाप ॥
नहिं गुणहु भूप सुत राम काहिं । वैकुंठनाथ हरि विष्णु आहिं ॥
भूभार हरण अवतार लीन । पदकमल भजहुरे मन मलीन ॥
यह जनक लली इंदिरा माय । प्रगटी विदेहके भवन आय ॥
जो नहिंहु तोरि हैं धनु विशाल । सिय राम गले मेलिहै माल ॥
सम्बन्ध नित्त इनको विचारि । घर चलहु रोष रंजहु बिसारि ॥
हम भये धन्य प्रभु दरश पाय । नहिं लाभ अधिक याते जनाय ॥
अस भाषि भूप जे भक्तिवान । प्रभु चरण वंदि कीन्हे पयान ॥
सुनि अपर भूप जे गर्व गेह । तिन बैन कहे मुख भरे तेह ॥
शिव चाप भंग बिन कौन भूप । यह व्याहि सकै दुहिता अनूप ॥
कोउ यंत्र मंत्र वश यदपि आय । हरचाप लेइ छल बल उठाय ॥
इत तदपि न पैहै होन व्याहु । हम समर सजे साजे सनाहु ॥
लै जान न पैहै कुँवरि व्याहि । मम दोरदण्ड का ओज नाहि ॥
यक बार लड़ब किन काल होय । लै जाब कुँवरि रिपुखूदि खोय ॥
का करी जनक करि घोर रोष । नहिं रही सुधन्वा समर घोष ॥

दोहा—यहि विधि बलगत बहुत नृप, अभिमानी मतिअंध ।
नहिं जानत अज्ञान वश, राम सिया सम्बन्ध ॥

छन्दपद्धरी ।

सुनि वचन कुमति भूपन अपार । किय मुनि त्रिकाल ज्ञाता उचार ॥
जनि वृथा बजावहु गाल भूप । नहिं जानि परे कछु रामरूप ॥
जानहु सुजानकी जगतअंब । रामहि विचारु सज्जनालंब ॥
जग पिता पितामह सत्य राम । त्रैलोक्य नाथ आनंदधाम ॥
इनको महेश ध्यावत हमेश । महिमा अशेश कहिसक न शेश ॥

करि दरश नाथके विवश भाग। देखहु चरित्र जो होन लाग॥
नहिं मृग मरीचि की हरति प्यास। कत कूप खनहु सुरसरित पास॥
भरि नयनलखहु रघुकुलकुमार। तजि देहु और जगकी झवार॥
नहिं तुमहिं बराजि कारज हमार। हम गये आज फल पाय चार॥
अस कहि मुनीश सब भये मौन। हग लखन लगे प्रभु शोभ भौन॥
तहँ देव सीय आगम विचारि। बर्षहिं प्रसून हर्षहिं निहारि॥
पुनि करत भये दुंदुभि धुकार। अप्सरा नचन लागीं अपार॥
कल करहिं गगन गंधर्व गान। गुणि रंगभूमि सियको पयान॥
अवसर विचारि भूपति विदेह। निज सचिव बोलि बोल्यो सनेह॥
रनिवास जाय दीजे जनाय। सिय मातु देहिं सीतहि पठाय॥
सिय धनुष पूजि जब फिरी फेरि। तब हम सुनाइहैं प्रणहि टेरि॥

दोहा–शिवधनु पूजन हेत सिय, आवै इत अतुराय।
सुमति सचिव शासन सुनत, दिय रनिवास जनाय॥
पति अनुशासन सुनि तहां, हुलसि सुनैना रानि।
चतुर सखीन बुलाइ कै, बोली मंजुल बानि॥
धूरजटीके धनुषको, पूजन साज लिवाय।
जाहु जानकी लै अबहिं, शुभ शृंगार बनाय॥

चौपाई।

सुनत सुनैना की सखि बानी। सियहि शृँगार सदन महँआनी॥
प्रथम सखी मज्जन करवाई। सुरभित अँग अँगराग लगाई॥
सारी सुरँग सखी पहिराई। सुभग अंग आभरण सजाई॥
अरुण कंजपद सुंदर नीके। फीक महाउर लागत सीके॥
मनहुँ कमल महँ छयो परागा। दल अरुणिमा अरुण रँग लागा॥
जिन पदपंकज मुनिमन भृंगा। रहत निरंतर तजत न संगा॥
जे पदकमल भाग्यवश ध्यावत। उर आवत त्रयताप मिटावत॥

नख मणि लसन आँगुरिन माहीं । अंगुलीय संयुत दरशाहीं ॥
कुमुदबंधु जनु रवि जन जानी । बस्यो पकरि रूप बहु ठानी ॥
कमलबंधु कमलन हित भाये । करि बहु रूप छुड़ावन आये ॥
कनक कड़े झालरि बड़ हीरा । जनु घेरे रवि तारन भीरा ॥
अति कोमल सुंदर अरुणारे । सीय चरण जग रक्षणहारे ॥

दोहा—सीय चरण वर्णन करत, कवि नहिं पावत पार ।
विदित वेद महँ जिन विरद, मोसम अविन अधार ॥

छन्द ।

यहि भाँति सिय शृंगार करि लै चलीं अली लिवाय ।
पहिरे सुरंगित अंग अंबर अंगराग लगाय ॥
भूषण विभूषित रत्न गण कीन्हे सकल शृंगार ।
जिनको निहारहि हारि हिय गिरिजा गिरा बहु बार ॥
कंदर्प दारा दर्प दरनी सेव करनी सीय ।
बरनी श्रुतिनकी वेशवरनी नैन हरनी तीय ॥
थिर चंचलासी चन्द्रिकासी चपल चखनि चलाय ।
चालैं दुहूं दिशि चारु चामर चतुर चंचल चाय ॥
कोइ छबीली क्षपाकर सम लिहे छत्र विशाल ।
कोउ पीकदानहु पानदानहुँ अतरदानहुँ बाल ॥
कोउ लिये झारी कनक थारी व्यजनवारी कोय ।
कोउ लिये माल विशाल कर उरमाल कोउ मुदमोय ॥
चामीकरनकी छड़ी मणिगण जडी लीन्हें पानि ।
बोलत चलीं आगे अली शोधत गली छवि खानि ॥
गहगहे गावत गीत मंगल किये मंडल मंजु ।
कोउ बाल विरद बखानती गति ठान गजगति गंजु ॥
यहि भाँति प्रविशी रंगभूमि विदेह कन्या आय ।

मनु नखतमण्डल में अखण्डल पूर्णचन्द ।
उठि उठि सबै देखनलगे आपस परस्पर बैन ।
मिथिलाधिराज लली भली आवत चली चित चैन ॥
अभिमान अक्षनि अन्ध अवनिप सीयको अवलोकि ।
मूछैं मुररत नैन फेरत बाहुदण्डन ठोंकि ॥
नर नारि सिय लखि कहहिं यहि हित यह स्वयंवर होत।
अनुरूप सोई भूप जाकर पूर्व पुण्य उदोत ॥
सज्जन सुशील सुजान हरिजन जानि सिय जगदम्ब ।
कीन्ह प्रणाम अकाम मन कहि जयति जगदवलम्ब ॥
कुमती कुपपि अति कुटिल कामी कहहिं आपुस माहि।
टोर न टोरे धनुष कन्या लेब बरबस ब्याहि ॥
कोउ कहहिं हम ये रण्ड दण्ड समान दलि कोदण्ड ।
नव खण्ड सुयश अखण्ड करि ब्याहब बलनि भुजदण्ड॥
कोउ कहहिं अबहीं हरहु दुहिता करहु कस बकवाधि ।
बैठ रहैं मिथिलेश मन्दिर ठानि अचल समाधि ॥
जे रसिकसाधु सुजान भूपति सुनत वचन कठोर ।
ते देत उत्तर उमँगि अमरष घोर करि तहँ शोर ॥
तुम्हरे हियहुकी आँखि फूटी लेहु वदन निहारि ।
नाहिं मिलति खरको धेनु टोरहु तार पाणि पसारि ॥
हम सब लरब सिय हेत हठि घर रहैं बैठि विदेह ।
सिय ओर ताकत मारि बाणन करब छाती बेह ॥
तब भयो कोलाहल महा तिहि रंगभूमि मँझार ।
मुनिजन सभासद जाय कीन्हें मौन भूभरतार ॥
दोहा—सिय कोलाहल सुनि डरी, खड़ी समाज मझार ।
चितवति चहुँकित चकित चित, कह हैं राजकुमार ॥

कवित्त ।

उभैपाणिअलकउठायमैथिलेशललीहेरोचारिओरकहांसाँवरोकुमारहै ।
जहांजहांभयोदृष्टिपातमैथिलीकोमंजुतहांतहांबैठोजोजोभूमिभरतारहै ॥
सोसोसबजोहिजोहिमोहिमोहिमोहिमञ्चनपैगिरिगोननेकुरह्यो तनुको सँभार है
रघुराजरामपदकञ्ज लागेनैननजायकीन्हेमनोराजनसमाजाखिलवार है १
कोई भूमिपालरहे दन्तनसेदाविढाल कोई करवालनकोछोड़ेतिहिकालहैं ।
कोईमोहवारिधमेंबूड़िउतरानलागे कोई गिरे मञ्चनते वपुषविहाल हैं ॥
दुमेदभुवालनकेहालकोकहांलोंकहोंछूटीढालटूटीमालबन्द भये गालहैं।
मानोमोहनीकोरूपधारयोहैविदेहवाल,रघुराजमनमुसक्यातरघुलालहैं

दास देखें स्वामिनी सी दुष्ट कालयामिनी सी,
सखी वर भामिनीसी देव जगदम्बा सी ॥
मातु दुहिता सी दासी कलपलतासी दैत्य,
भूप कालिका सी मुनि आनन्दकदम्बा सी ॥
सज्जन कृपा सी योगीजन अजपा सी,
सुरनारि कमला सी शठ मूरति त्यों सम्बासी ॥
रहे जस आशी तिन्हैं तौन विधि भासी,
लखे माता सी लषण रघुराज अवलम्बा सी ॥ ३ ॥

घनाक्षरी ।

शिरतेचरणलगिप्यारीकीसमारीभलीसोहतीनवलसारीजनककुमारीतन
परमप्रकाशीआभआनँदकीराशीफूलीकलपलतासीमध्यफुल्लितकुसुंभवन
भनैरघुराजमनोसावनकेसंध्याकालचारुचपलासीलसैंअरुणसघनघन ।
रजोगुणमंडलकेभीतरविराजैमनोंसतोगुणमण्डलअखण्डलरसिकधन ॥

दोहा–गजगामिनी सुभामिनी, मधुरअली जिहि नाम ।
सो लिवाइ गवनी सियहि, शम्भुशरासन ठाम ॥

छन्द चौबोला ।

चाप समीप गई वैदेही सखिन समाज समेतू ।
राजन लषण व्याज निरख्यो तहँ उभय भानुकुलकेतू ॥
लागी पूजा करन धनुष की मन रघुपतिपद लागा ।
धूप दीप नैवेद्य आदि सब दीन्ह्यो सहित विभागा ॥
जिहिदिशि बैठभानुकुलनायक तिहिदिशि ह्वै सियठाढ़ी।
करसों पूजति शंभुशरासन हिये रामरति बाढ़ी ॥
करसों फेरति धनुष आरती मनसों प्रभुहि उतारै ।
मानहुँ सबकी लगी दीठि गुणि आरति मंत्रनि झारै ॥
देत प्रदक्षिण धनु को सीता जब प्रभु सन्मुख आवै ।
करन बात आलिन के व्याजे तहां कछुक रुकि जावै ॥
यहि विधि चारि प्रदक्षिण देके कियो प्रणाम पुनीता ॥
मनहीमन विनवति महेश को समुझि पिता प्रण सीता ॥
जय महेश करुणागुणसागर यह कोदंड तुम्हारा ।
सुनत कौन की विनय दीन गुणि कियो न आसु उधारा ॥
आशुतोष गौरीपति शंकर जन हित औघड़दानी ।
रामहि परशत करहु तूल सम धनुष धूरजटि ज्ञानी ॥
बार बार विनऊँ महि शिर धरि शंकर दीनदयाला ।
हरहु धनुष गुरुता तुरता करि लग्यो काम यहि काला॥
अंतरहित ह्वै कह्यो आय शिव सीता कानन बानी ।
नहिं अभिलाष असत्य रावरी लेहु सत्य यह जानी ॥
कछु आनँद उर मानि जानकी पूजि धनुष तिहि काला ।
चली बहुरि जननी समीप कहँ लै सखिवृन्द विशाला ॥
मधुर अली सहजा को कर गहि बात करन के व्याजै ।
पुनि पुनि चितवति चारु चखन सों लषण राम रघुराजै॥

राम लखन सीता की छवि को सीय राम अभिरामै ।
उभय दृगंचल भये अचंचल प्रीति पुनीति मुदामै ॥
जनकनगर नर नारि निहारहिं सिय मूरति मनहारी ।
कहहिं परस्पर वचन सरस अति किहि पटतरिय कुमारी ॥
गौरि शंभु अरधंग अंग विन पतिरति देखि दुखारी ।
शची पुलोमा दानव कन्या छाया है रवि नारी ॥
किमि पटतरी उरग दुहितन को जन्म विपिनते जिनको ।
प्राकृत नारि गंग रिपुव्याकुल सुरतियपलक न तिनको ॥
ताते सत्य सत्य हमरे मन ऐसहि होत विचारा ।
त्रिभुवन की ईश्वरी इंदिरा लियो आय अवतारा ॥
पै जब भई प्रगट कमला वह क्षीरधि मंथन काला ।
विप वारुनी संग प्रगटे तहँ पिता पयोधि कराला ॥
जनक पिता लक्ष्मीनिधि भ्राता क्षमा जननि सिय केरी ।
यह समता अनुरूप रूप नहिं और कहौं कहँ हेरी ॥
कोउ कह जो अस होइ बहुरि अब सुधा समुद्र महाना ।
विप्रलंब संयोग असुर सुर होयँ रूप धरि नाना ॥
छवि रजु कच्छप मदन बसै अध मंदर ह्वै शृङ्गारा ।
प्रेम रूप धरि त्रिभुवननायक मथैं सहित श्रम भारा ॥
प्रीतिमयी मूरति कमलाकी जो निकसै सुखदानी ।
तौ समता कछु यहि मूरति की परति मोहिं जिय जानी ॥
कोउ कह विना रमा के अस किहि कहियत सुंदरताई ।
धन्य भाग्य हमरे भूपति की घर वैठी श्री आई ॥
कोई कह्यो सत्य सखि भाषासि होत हुलास हरासू ।
समुझि विदेह कठिन प्रण मन में नाहिं संदेह बिनासू ॥

दोहा--देव असुर अतिशय बली, दानव मानव भूरि ।

तूरि चाप लै जायँगे, हमरी सिय को तूरि ॥
काहि दृरि पुनि ज नव इन, परी भाग्यमहँ धूरि ।
जनकनरेश प्रजानिकी, सीता जीवनिमूरि ॥
सुनि अपरा बोली वचन, तोहिं कहत नहिं लाज ।
को अस समरथ तूरिहै, शंभु शरासन आज ॥
पै मनकी मन में रहै, कहत बनै नहिं बीर ।
को समुझावै नृपतिको, व्याहै सिय रघुवीर ॥
सुनिद्वितीय बोली हुलसि, एसहि उठत उछाह ।
धनुषभंग लखिलखब पुनि, सिय रघुवीरविवाह ॥
गहगहाय सिगरी तहाँ, बोलीं एकहि बार ।
तेरो वचन विचार बिन, सत्य करै करतार ॥
यहि विधिपुरनारिनवचन, सुनतसकुचिसुखमानि ।
गई जननि ढिग जानकी, सुमिरत शंभु भवानि ॥

छन्दचौबोला ।

नर नारी पुनि पुनि छवि देखहि राजकुमारनकेरी ।
परिहरि नयन निमेष नेहवश उपजी प्रीति घनेरी ॥
समुझि मनहिं मिथिलेश भूप प्रण नहिं उर शोचसमाई ।
बार बार बिनवैं बिरंचि पहँ फेरु जनक जतड़ाई ॥
हे विरंचि तैं विश्व विधायक जो कछु सुकृति हमारी ।
दशरथको ढावरो साँवरो व्याहै जनककुमारी ॥
जो विदेह प्रण त्यागि आजु विधि राम जानकी व्याहैं ।
तौ हम सब धन भवन द्विजन कहँ देव सहित उत्साहैं ॥
यज्ञ करब अरु कूप खनाउब बाग लगाउब धाता ।
वेदविहित बहु धर्म चलाउब राखु हमारी बाता ॥
बैठि विदेह कंठ प्रण फेरै देहु गिरै समुझाई ।

यह जोरि तोरि विरंची भलि हमरे मनमहँ भाई ॥
जो प्रण फेरनको नहिं समरथ तौ करु यही उपाइ ।
शंभुशरासनको गरुताहरि रामपाणि तुरवाई ॥
विरचु विरंचि विवाह राम सिय पूरण करु अभिलाखा ।
नातो तुहिं देहैं निज वध अघ यह विचार करि राखा ॥
निमिकुल तोहरि महा मनोहरि आन योग नहिं सीता ।
वर साँवरो जानकी योगै करु यह व्याह पुनीता ॥
कोउ कह बड़े बड़े विज्ञानी बसैं जनकपुरमाहीं ।
कस नहिं समुझावत विदेह कहँ हठवश परे वृथाहीं ॥
अंब नेह वश भूप करहिं हठ पुनि पाछे पछितैहैं ।
अवध किशोरसमान और वर जन्म प्रयंत न पैहैं ॥
जो वसिहैं वैकुंठहु महँ नृप मिटी न दारुण दाहू ।
हठ तजि क्यों नहिं लेतजन्मफल करि सिय राम विवाहू॥
चलौ सबै अस कहहिं भूपसों बंद स्वयंवर कीजै ।
प्रण परिहारि नरनाह जानकी अवध कुँवर कहँ दीजै॥
कोउ कहसुनहु सयानि कहौं सति नेकु शंक नहिं करहू।
नहिं तोरिहैं राम शिवको धनु यह विभीति परिहरहू॥
जे समाजमहँ बैठ राज सब तिनके वदन मलाने ॥
छ्वै सकिहैं नहिं शंभु शरासन बातन बलगि बताने ॥
देखु वदन साँवरे कुवरको उदय दिनेश समाना ।
को इन बिन हरचाप तोरिहैं मुहिं विश्वास महाना
कोउ कह अति कोमल सुंदर तन श्यामल गौर किशोरा।
नहिं भरोस आवत सजनी उर हर कोदंड कठोरा ॥
अब विधि हाथ लगी सिगरी गति मिथिलापुर वासिनकी।
पूरव पुण्य सहाय होइ हठि राम व्याह आसिनकी॥

हरि हर विधि वासव सुरन शशि गौरि गणेश गोसाईं ।
हर कोदंड प्रचंड करौं मृदु कमलनालकी नाईं ॥
कोउ कह अवनीहि और भाँतिमाहि रचत विधान बनाये ।
चलहु वेगि बैठहिं विदेह कहँ आनमवान लगाये ॥
की ब्याहैं अभिराम राम कहँ सीता कुँवरि हमारी ।
की पुरवासिन प्राणदानफल लेहिं कठिनप्रणधारी ॥
यहि विधि कहैं सकल पुर नारी रामैं नयन निहारी ।
महाकठिन सुधिकरि विदेहप्रण पुनिपुनि होहिं दुखारी ॥
लगे ठट्ट विमान गगनमें देखन देव तमासा ।
बाज बजावत सुम बरसावत भेर लंकपति त्रासा ॥
पापी पुहुमी पतिन छोड़ि कै को अस तोनि समाजा ।
जो नहिं चहत जानकी ब्याहैं तोरि धनुप रघुराजा ॥

-अवसर जानि विदेह तहँ, वंदीजनन बुलाय ।
शतानंद अभिमत सहित, शासन दियो सुनाय ॥
निमिकुलकी विरुदावली, वंदीवर तुम जान ।
ऐसो मैं कीन्ह्यो प्रणै, सो नाहिं तुमहिं छिपान ॥
तातें जाय समाज मधि, ऊंचे स्वर गुहराय ।
प्रगट अर्थ करि मोर प्रण, दीजै नृपन सुनाय ॥
सुनि वसुधाधिपके वचन, वंदी वंदि विदेह ।
चले सुनावन प्रण नृपन, करि उरमें संदेह ॥
राज समाजहि मध्यमें, द्वै वंदीवर जाय ।
बोलत भये पुकारिकै, दोऊ भुजा उठाय ॥
मौन होउ नरनाह सब, करि कोलाहल बंद ।
महाराज मिथिलेशको, यह प्रण सुनहु स्वछंद ॥

कवित्त रूप घनाक्षरी ।

त्रिदिन पुरारि को पिनाक नवखंडन में,
परम प्रचंड त्यों अखंड ओज पारावार ।
बड़े बड़े वीर बरिबंड भुज दंडन सों,
खंड महिमंड यश जान चाहे पैरि पार ॥
आजलों न देखे तीर केते बली बूडे वीर,
गुरुता गँभीर नीर पीर पाय माने हार ।
बाहुबल विरचि जहाज रघुराज आज,
पावै पार सोई शिरताज भूमि भरतार ॥ १ ॥
उदित उदंड जो हजार भुजदंडनसों,
दिग्गजन जीत्यो शैल फोरचो बलिको कुमार ।
राजत अचल अर्धंग शिव समेत तौल्यौ,
करमें कमल सों निशाचरको सरदार ॥
दोऊ महामानी वीर शंभुके शरासनको,
नाय शिर आसनको गवने गमै लचार ॥
कोटिन कुलिश सों पुरारिको पिनाक आज,
तोरि रघुराज सिय व्याहैं विनहीं विचार ॥ २ ॥
पूरव स्वयंवर जो होन लाग्यो एक बार,
जुरे सबै इतै द्वीप द्वीपनके महिपाल ।
राजनको बाहुबल पूरण सो राकापति,
ग्रस्यो तिहि शंभु धनु विधुंतुद विकराल ॥
रघुराज बहुरि विदेह सोइ सीता हेतु,
विरच्यो स्वयंवरमें कम्मर कसे भुवाल ॥
तोड़ै जो पुरारिको पिनाक नाक नाके यश,
मेलिहै विदेह कन्या ताके कंठ जयमाल ॥ ३ ॥

सोरठा—यहि विधि वाहु उठाय, सुमनि विमानि वंदी उभय ।
प्रण मिथिलेश सुनाय, सब राजन को जान भे ॥

छन्द तोटक ।

सुनिकै मिथिलेश महाप्रनको । नृप मोद भरे धनु तोरनको ॥
भुजदंड उमंठि उठे तुरितै । धनु को न गुणै गुरुता गिरितै ॥
कोउ मोछनपै नृप ताउ दये । कोउ भूप उरागमन मांह गये ॥
कोउ वाहु सकेलत धाय परे । कोउ मंदहि मंद मिजाज भरे ॥
कोउ आपुसमें झगरो करते । इक एक उठावहु क्यों डरते ॥
मिलिकै सब चाप उठावहुना । यक बार समीपहि आवहुना ॥
तिनमें कोउ मल्ल महीप रह्यो । द्रुत जायमँजूषहि पाणि गह्यो ॥
करि जोर महा अति शोर कियो । मनु खोलि शरासन ऐंचि लियो ॥
गिरिगो मुँहके भर भूमि तहाँ । चलि बैठ पराय लजाय महाँ ॥
कोउ देखि महीप मँजूष डर्‌यो। नहिजायसक्योलहिलाजफिर्‌यो॥
कोउ सर्पस्वरूप लख्यो धनुको । अति कंपित अंगकियो तनुको ॥
अस बोलि उठ्यो नृप चाप नहीं। मिथिलाधिपको यह साँप सही ॥
कोउके दृग सिंह स्वरूप लग्यो। धनु देखतही निज भौन भग्यो ॥
शिव भक्त रहे महिनायक जे । भव रूप लखे भव भायक जे ॥
नहिं चापसमीप महीप गयो । शिरनाय समाजहि त्यागि दयो ॥
हरिके जन जे नृप ज्ञान भरे । महिमें शिर दै परणाम करे ॥

दोहा—मंजूषा हर चाप की, सके खोलि नृप नाहिं ।
विन खोले ही यह दशा, का पुनि खोले माहिं ॥

छन्द तोमर ।

भे कोपवानं महीप । जुरि खड़े धनुष समीप ॥
सब करत मनहिं विचार । अब करिय का उपचार ॥
दशसहस भूप बलीन । धनु भंग महँ लवलीन ॥

नहिं सकत धनुष निकारि। मंजूष कर पट टारि ॥
कोउ करहि अतिशय जोर। पुनि गिरहि महि तिहिठोर॥
कोउ कह्यो नृप अति पाप। जीवन दियो संताप ॥
हरि हर लियो बहु द्रोह। सो भरो अतिशय कोह ॥
मंजूष निकट सिधारि। धनु चह्यो छुअन उघारि ॥
सो भयो भस्म तुरंत। जिमि अनल चूर्ण उड़ंत ॥
अचरज गुणे सब लोग। मुनि कहे अघकर भोग ॥
तहँ भूप दशौं हजार। गे सिमिटि सब इक बार ॥
मंजूष खोलन लाग। तनु जोर अतिशय जाग ॥
यह देखि सभ्य सुजान। सब कहे अस न प्रमान ॥
एकै उठावै जोय। जयमाल लायक सोय ॥
पै भूप माने नाहिं। अमरष भरे मनमाहिं ॥
नहिं हिलत सो मंजूष। जिमि मटनि झूरो रूष ॥

दोहा—तूरन की बातैं कहा, सब भूपन बल जागि।
मंजूषा ते धनुषके, ऐंचन की अब लागि ॥
मंजूषा खोलन लगे, करि बल एकहि बार।
उठी पटल नहिं उपरकी, हारे दशौं हजार ॥
जैसे कामीके वचन, कोमल सरस अघात।
बसैं सती मनमें नहीं, उपर उपर उड़ि जात ॥

सवैया।

ज्यों ज्यों करैं नरनायक जोर हटैं पुनि आसन बैठहिं आई।
स्वेद भरे मुखहारे हिये बल पौरुष कीरति देह गमाई ॥
त्यों त्यों सबै मिथिलापुरके जन राजनको हँसैं हेरि ठठाई।
श्रीरघुराज मनावें विरंचि दलै शिवके धनुको रघुराई ॥

दोहा—कीरति बल विक्रम विगत, नृपन देखि करि हास।
कहहिं लोग भे भूप जिमि, बिनविराग संन्यास ॥

छप्पय ।

बुधि बल विक्रम विजय बड़ापन सकल विहाई ।
हारि गये हिय भूप बैठि शोशन औंधाई ॥
हँसहिं सबै पुरलोग बलगि यश आपन खोये ।
पंजा प्रथम डबोरि नीच शिर करि अब गोये ॥
जे तजि विचार पहिले मनुज करन काज अनुरायकै ।
ते इन मतिमंद महीपसम सरबस जात गँवायकै ॥

दोहा—धनु तोरन जोरन सुगुन, रह्यो एकही ओर ।
मंजूषाते खैंचिबो, कठिनपरो यहि ठोर ॥

सोरठा—निरखि दशा तिहि काल, राजनकी सुसमाज मधि ।
भये विदेह विहाल, भट विहीन अवनी गुणी ॥
शतानंदको बोलि, मंद मंद बोले वचन ।
लियो भूप बल तोलि, कह्यो देव का करिय अब ॥
दोउ बंदी तिहि काल, बोले वचन पुकारिकै ।
सुनहु विदेह भुवाल, राजसमाजहि लाज भय ॥

छप्पय ।

प्रण राउर सब नृपन सुनाये भुजा पसारी ।
तमकि तमकि बहु भूप आय कीन्हें बल भारी ॥
सके न कोई मंजूषाकी पटल उघारी ।
खैंचब ऐंचब साजि प्रत्यंचा काह विचारी ॥
अब जस अनुशासन रावरो होई यहि क्षण तस करैं ।
धौं धरो रहै दुर्धर्ष धन धौं लै तिहि धामहिं धरैं ॥

दोहा—भूरि भूप निज भवन गे, भूरि रहे शिरनाय ।
भूरिन चितवत सामुहे, काको कहिय बुझाय ॥

छप्पय ।

सुमति विमति के वचन सुनत मिथिलेश रिसाई ।

सिंहासन पर खड़ा भया नयनन अरुणाई ॥
बोल्यो वचन कठोर ओर करि भूरि भयावन ।
छत्र वंश क्षिति छाम जानि मन बहुरि बढ़ावन ॥
धरवाय देहु धनु धाम में धाम धाम धुनि आम करि ।
अब उर्वीतल उर्वीश कोउ गर्वी होइ न गर्व भरि ॥

कवित्त ।

देव दैत्यदानवहूं मानवस्वरूप धारि खासखंडखंडके अखंडबलवारेहैं ।
केतेचक्रवर्तीगुणगर्वंवशवर्तीनर विदितरणाजिरकेकर्तीशत्रुभारेहैं ॥
आयसुनिमेरेप्रणकीररनिकुँवरिलैन दोरदंडओजनिजनयननिनिहारे हैं ।
भेनरघुराजआजराजनकोकाजलेखेउर्वीनिरवीरभईजानमेंहमारेहैं ॥१॥
दिग्गजनकाननलौंकीरतिकरनहार राजनसमाजमें न कोईवीरसाचाहै।
जाहुजाहुसबैभूपभौनकोभलेहींचलेमोदितमजेमेंमौजकीजैपाढ़िमाचाहै॥
रघुराज आज वसुधामें कोईवीरहोतो पूरतहमारोप्रणधर्मकोनकाचाहै।
तातेअसलागैभैयाधनुपतोरैयावीर कुवँरिवरैया न विरंचि विश्व राचाहै२
जानतोजोऐसोपूर्वठानतोनकैस्योप्रण नयो निरमाणरंगभूमिकोनकरतो।
आनतोनयेतोउपहासनृपमंडलमेंछानतोजोमंत्रिनकोमंत्रअनुसरतो ॥
रघुराजआजपहिचानतोप्रवीरजोपै खानतो न गर्वकूप भूपनहिंगिरतो ।
प्राणकोपयानतोनमानतोदुसहदुख प्रणकोपयानजानिजीवजसजरतो ३

दोहा—तजहु आश अब व्याहकी, जाहु भवन नरनाह ।
लिख्यो न प्रणपूरे विना, वैदेहीको व्याह ॥

कवित्त ।

शेषभारखाईकैउतारैफनहूंतेभूमि कमठवराहछोड़िभागैक्षितिजेहको ।
भानुसितभानुतारामंडलप्रतीचिउवैं सोखैसिंधुवाडवतरणितजैतेहको ॥
रघुराजआजकहैमिथिलाधिराजसब राजनसमाजमध्यवचनअछेहको ।
कुँवरिकुँवारिरहैकीरतिकलंकदहै छूटैवरुदेह प्रणछूटै ना विदेहको ॥

सवैया

पुरुष जो जन त्यों जगतीमें नहीं है कहूँ वर वीर प्रतापी ।
क्षत्रिनको करि क्षय भृगुनाथ नहीं पुनि क्षत्रिनको क्षितिथापी ॥
श्रीरघुराज सुनो सब राज प्रणै करतो नहिं मन्य अलापी ।
क्यों धरतो उपहास शिरै करि पूरण पुण्य कहाँ त्यों न पापी ।

दोहा—ते विदेह के वचन शर, भूपति रहे लजाय ।
गये न सहि यक लषण सों, भभकि उठ्यो फणिराय ॥
अरुण नयन फरकत अधर, लषण लखत भुजदंड ।
श्वास लेत भुजगेश सम, अमरष उठ्यो उदंड ॥

सवैया ।

बैठ्यो दुजानु मनौं मृगनायक श्रीरघुनायक के दृग देखै ।
कंपत गात न आवत बात अघात अमर्ष उठ्यो उर शेखै ॥
श्रीरघुराज कमानसीभौंह लखैं तिरछोंह विदेह विशेखै ।
राम की भीतिसों भाषि सकै नहिं राखिसकै नहिं रोष अलेखै ॥

दोहा—तहँ विदेह के वचन शर, भये लषण हिय पार ।
जोरि पाणि पंकज प्रभुहि, कीन्ह्यो विनय उदार ॥
सुनहु दिवाकरकुलकमल, हौं तिहरो लघु भाय ।
जन्म पाय रघुवंश महँ, अस कसकै सहिजाय ॥
ठाढ़े मध्य समाज में, जस जस वदत विदेह ।
तस तस रावर दासकी, दहत रुषानल देह ॥

छन्द झूलना ।

कहत नाहिं उचित मिथिलेश यहि देशमहँ आपकोअक्षपरतक्षपेखैं ।
वदत मुख वीर ते विगत भय वसुमती रतीभर सजतनाहिं भूप तेखैं ॥
सुनौं रघुराज हौं रावरो दास नहिं वावरो वेष करि कहौं रेखैं ।
आसु आयसु करहु मिटै उर दुसहदुख लखैं कौतुकनृपतिनारिवेखैं ॥

छन्द नाराच ।

इक्ष्वाकु वंश को जहाँ जु होइ एक पूतरो ।
अयोग्य बात के सुने विशेष देत ऊतरो ॥
सु अंशुमान वंश को निशान भ्राजमान है ।
अजान सो विदेह के जबान को बखान है ॥
कहों प्रशंस नाहिं मैं कुलावतंस हंसकी ।
स्वभाव के प्रभाव की सुरीति शत्रुध्वंस की ॥
करों निदेश नाथ नेकु नैन ते निहारिकै ।
उठाय भूमि फेंकिहों पताल ते उखारि कै ॥
उठाय अंड तौलिहों सु कंदुकेसमानहीं ।
निदेश होइ फोरि देहु कुंभ के प्रमानहीं ।
सुमेरु को बसेरु मैं सको उजारि आसुहीं ॥
दुखंड मूल सों करौं गिरीन्द्र वे प्रयासुहीं ।
पुरान या पुरारि को पिनाक ना कठोर है ।
उठाय लै चढ़ाय धाय जाउँ क्षोनि छोर है ॥
सुनो दिनेश वंश वीर यों करौं विचार को ।
उठाय चाप तूरि जाहुँ आपने अगार को ॥
मनोभिलाष जो कछू अशेष आप जानते ।
करो हमेश पूर दास को न हेत आनते ॥
विदेह ना कहैं अयोग और भूप के भ्रमै ।
शृगाल हैं भुआल ये इन्हैं न लाज ते श्रमै ॥
कहौं कहा निदेश नेकु नाथ को जु पावतो ।
महेश चाप खंडि खंड खंड मैं फिरावतो ॥
कहौं मुखै करो न जो धरौं न चाप हाथ में ।
असत्य ना नवैं स अहौ नाथ साथ में ॥

प्रचंड दोरदंड ये उदंड ओज के भरे ।
कृपा अखंड पाय के घमंड शत्रु के हरे ॥
कितक बात बापुरो पिनाक रामदास को ।
उठाइबो चढाइबो न नेकु काम त्रास को ॥
अबै न वीर तै वसुंधरा विहीन ह्वै गई ।
कही वृथा विदेह बात शोचि नाभले लई ॥
मुनीश राम शासनै जु नेकु आज पावतो ।
समाज तै समेत मैं विदेह को दिखावतो ॥
जबै प्रवीर लक्ष्मणै सकोप भो समाज में ।
सकान भीति मानि भूप बूड़ि सिंधु लाजमें ॥
प्रकोपवंत देखिकै अनन्त को तुरन्तही ।
भगे विमान गीरवान लै विचारि अन्तही ॥
भई प्रकंपवान बार बारही वसुन्धरा ।
ससिंधु राजसिंधुरा सवंध शैलकुंधरा ॥
कहैं गँधर्व सर्व देव सिद्ध भूत चारनै ।
तजै चहैं फणीश ज्वालमाल लोक जारनै ॥
परे विरंचि थान देवतान के परामनै ।
प्रलय प्रवर्तमान होति विश्व को न सामनै ॥
महर्षि सिद्धहू लगे कल्याण को मनावनै ।
क्षमा करन्त जय अनन्त लोक के बचावनै ॥
विचारि विश्व को विहाल दीन को दयाल जो ।
कराल कोप को न काल हाल विश्वकाल जो ॥
चलाय नैन सैन बन्धु को निवारिलेत भो ।
प्रजानि देवतानि को मिटाय भीति देत भो ॥

सोरठा—मन्द मन्द मुसक्याय, रघुनंदन रणधीरमणि ।

नयनन सैन चलाय. कीन्ह्यो वारण बन्धुको ॥

दोहा—प्रभु नयनन की सैन लखि, लषण वन्दि पदकञ्ज ।
भये मौन छवि भौन तहँ, करि महीप मद गञ्ज ॥

कवित्त ।

अरुण नयन जब लषण बखाने बैन सियहियप्राचीसुखमूरप्रगटानेहैं ॥
लोकपालमानेमोदसुकविबखानेयश मिथिलानगरवासीवीरवरजानेहैं ॥
रघुराजमदमदमृदुमुसक्यानमनानेइवालामनपाणिपीठिफेरेसुखसानेहैं ॥
मिथिलाधिराज सकुचानेन्योंडराने भूप वहरोससानेजलखगसेसकानेहैं॥

दोहा—लषण वचन की धाक सों, पर्‌यो समाज सनांक ।
जिमि सिंधुरगण बाक में, परै सिंह की दांक ॥

चौपाई

विश्वामित्र महामुनि ज्ञानी । बोलत भे अवसर जिय जानी ॥
सुनहु विदेह भूप मतिमाना ।जो अब तुम कछु वचन बखाना॥
सो अनुचित रघुकुलमणि आगे । इनको वयन वाण सम लागे ॥
लषण कही सोऊ लरिकाई । वदन वदत कहुँ वीर बड़ाई ॥
जो अनुशासन होइ तुम्हारैं। धनु समीप अब राम सिधारैं ॥
करहिं यत्न तूरन की येऊ । और न जाहिं भूप तहँ केऊ ॥
अथवा पुनि जिहि होइ घमंडा । तेई करै जोर बरिवंडा ॥
कोशलपाल कुँवर सुकुमारे । सबके पाछे चहत सिधारे ॥
अबै लेहिं करि भूप अघाऊ । रहै न पुनि पाछे पछिताऊ ॥
मख कौतुक देखन चित चाये । मेरे संग कुँवर दोउ आये ॥
धनु दरशन परशन अभिलाखा । येऊ अपने चित करि राखा ॥
जो राउर अब होय रजाई । धनुष समीप जायँ रघुराई ॥

दोहा—सुनिक विश्वामित्र के, वचन विदेह विचारि ।
बोल्यो पदवंदन करत, नयन बहावत वारि ॥

चौपाई ।

का कहिय मुनि नहिं कहि जाई । कोमल कुंवर धनुप कठिनाई ॥
प्रण परिहरे न होत प्रबोधा । हारि रहे जगती के योधा ॥
जो मम भाग्य विवश रघुराजू । तोरहिं शंभु शरासन आजू ॥
तौ पुनि इनहिं छोडि मम बाला । काकगल मेली जयमाला ॥
तुम जानहु हमरी गति सिगरी । जानहु सोउ बात जो बिगरी ॥
नाथ तुम्हारि अनुग्रहताई । करिहहि अवशि रघुराज सहाई ॥
ताते कहहु कृपा करि नाथा । चाप समीप जायँ रघुनाथा ॥
राम धनुप भंजैं मुनिनाहा । तौ देखौं सिय राम विवाहा ॥
मिटै मोर परिताप कराला । जिमि रवि उदय नाश तममाला ॥
अस कहिमुनिसोंपुनि मिथिलेशू । दीन्ह्यो वंदिन विदित निदेशू ॥
द्वीप द्वीप के सकल महीपा । अब नाहिं गवनहिं धनुप समीपा ॥
अब अवधेश कुँवर तहँ जैहैं । निज भुज बल सबको दरशैहैं ॥

दोहा—प्रभु शासन सुनि तैसही, वंदी किये विधान ।
परी सनंक समाज कोउ, कहत न कानौ कान ॥

सवैया ।

भूपति बैन विचारि मुनीश मनै मन श्रीजगदीश सम्हारी ।
मंजुल मंदहि मंदहि बैन कह्यो रघुनंदहि नैन निहारी ॥
श्रीरघुराज सुराज समाज में लाज भई सब गे हिय हारी ।
लाल उठौयहि कालतुम्हीं मिथिलेश कलेशकोदेहुनिवारी ॥

सोरठा—सुनि कौशिक के वयन, प्रेम लपेटे निपट सुख ।
उठे सहज छविअयन, गुरु पद पद्म प्रणाम करि ॥

ठाढ़ेमंचसहजसुभायअँगिरायनेक रघुकुलकमलदिवाकरउदैभये ।
अभिमानीभूपतिउलूकहौसमूकमुखवीरवरतारागण झलमलह्वैगये ॥

ह्वैगईत्यनीनत्यों बिदैहूडुचिनाईनिशा कोककोकनदपुरवासीसुखसोंछ्ये।
रघुराज परम प्रताप ताप पाय देव दीह्हदुखनीमनम तुरतविदाभये॥१॥
उतरिचलेहैंमंदमंद उच्चमंचहीते मंदरतेमानोकढ़िआयो मृगराजहै ।
मानोमहामत्त मंदचलतमतंगमग मानोमानमंड्यो मानो वीररसराजहै ॥
भूमि भरतारनकोतारनसोंतेजहारि आवतउदैगिरितेमानोदिनराज है ।
काजकरिबेकोमनलाजभरीनयननमेंराजनसमाजमध्यराजैरघुराज है२॥
सोरठा—प्रजा निमेष निवारि, रघुनंदन आनंदकर ।
देखि सबै नर नारि, लगे मनावन इष्ट निज ॥

सवैया

जो कछु पूरब पुण्य उदै मम संचित औ क्रियवानहु होहै ।
जो जप यागहु योग विरागहु भागहु में हमरे शुभ जोई ॥
तौ यह साँवरो कौशलपाल कुमार महा सुकुमार सदोई ।
जानकी को वरहोइ हरी हर को धनुतोरि महा मुद मोई॥१॥
हे करुणाकर देव गजानन तू विघनै निधनै करि दीजै ।
आप त्यों आपके बापप्रताप सों आपही आपहरू धनु कीजै।
श्रीरघुराज सुराजकिशोर के पंकज पाणि में जोर धरीजै॥
कंज मृणाल सों टूटैतडाकहिनाथझड़ाकहि यायशलीजै२

दोहा—छटो छबीलो साँवरो, कौशल राज किशोर ।
मत्त मतंगज गवन करि, चलो जात धनु ओर॥
झांकि झरोखन ते तहाँ, जनक राज पटरानि।
सखीसयानि बुलायढिग,बोली विस्मितबानि ॥

सवैया।

येहो सखी अवधेश कुमार बड़ो सुकुमार लगै शुचि लोना ।
कौशिला वारो तथैव हमारो विलोकिकै कोई करै नहिं टोना॥
चलिकै रघुलाल के भाल विशालमें दै दे सुनील डिठोना ।

काज कियो मुनि को रघुराज पै मोहिं तो लागै मराल सो छौना॥ १॥
ऐसी सुनी सखी कानन में कहुँ कानन में निशिचारिन मारी।
कौशिक को मख राख्यो सही महाभीम निशाचर युद्ध सँहारी।
झूठो लगै सजनी सिगरो मुहिं देखि प्रसूनहुँ ते सुकुमारी।
श्रीरघुराज क्यों काज कियो सके हंस को शावक शैल उखारी॥२॥
कौलहुं ते अति कोमल पाणि चुवै मुख दूध सो बाल सुभाऊ।
कौशिक संगहि कानन के हित कैसे बिदा करी कोशल राऊ॥
कौशला क्यों हिय कीन्ह्यो पषाण महीसुर कारज यों जरिजाऊ।
श्रीरघुराज हौं आज लखी महि शंकर रक्षहिं कंकर पाऊ॥ ३॥
कौन समाज में श्री रघुराजहि ल्यावो शरासन भंग करावन।
चूमन लायक है यहि आनन सो मन होत कलेऊ करावन॥
काहे दया मुनि के उपजै मिथिलेशै कोऊ नहिं जात बुझावन।
सो धनु तोरन जात लला जु छुयो नहिं बाण बली अरु रावन॥ ४॥
कोई कहै नहिं कंत बुझाय भली हठि रावरी है यह नाहीं।
जानकी योग मिल्यो वर भाग्यन छोड़ प्रणै वहि देहिं विवाही॥
जे न करैं लहि औसर कारज ते जन पाछे परे पछिताहीं।
श्री रघुराज कहौ तुमहीं सति बाल मरालकि मेरु उठाहीं॥५॥
तीरथ जाय सुपात्र को पाय न दानको देइ भरो अभिमानै।
संगर शत्रु को पाय न मारत आरत पाय करै नहिं त्रानै॥
श्री रघुराज सुता वर योग जे पाय न व्याहत वेद विधानै।
तू समुझाय कहै पिय को जन चारि कहावत औनि अजानै॥ ६॥

दोहा—तैहीं जाय बुझाय कहु, कंतहि वचन हमार।
ना तो मैहीं लाज तजि, कैहौं चलि दरबार॥
सुनि जानकि जननी वचन, बोली सखी सुजानि।
देवि मोरि विनती सुनो, मन की तजहु गलानि॥

चौपाई ।

युवावयस मृदुगात अनोखो । कोशलपाल बाल चित चोखो ॥
महाभीम भूपति बल वारे । राजकुँवर सम कौन निहारे ॥
बैठ शीशनवाय नरेशा । सके उठाय न धनुप महेशा ॥
लखु छोटो छोहरा छबीलो । चलो जात जिमि गज गरबीलो ॥
लखि लघु करहु न भ्रम महरानी । तोरिहै धनुप परे अस जानी ॥
सूक्षम रूप जीव श्रुति गावै । निज तेजहि तनु पालत जावै ॥
दीपशिखा अतिशय लघु होई । करै प्रकाश भवन भरि सोई ॥
वसत विष्णु बैकुंठहि माहीं । तासु तेज पालत जग काहीं ॥
साधारण बालक नहिं रानी । जानि परत पूरण गुणखानी ॥
चितवन बनत न तेज अपारा । मानहु सत्य विष्णु अवतारा ॥
है अयोनिजा तोरि कुमारी । तासुयोग वर यही निहारी ॥
यह जानहु विधि की करतूती । बैठे भूप गँवाय सपूती ॥

दोहा—रावण बाणादिक सुभट, छुये न परम प्रताप ।
अवध कुँवर तजि कौन अब, तोरहि शंकर चाप ॥

कवित्त ।

मानोसत्य बानीमहरानीबड़िज्ञानीतुमकामलैकुसुमधनुविश्ववशकीन्ह्योहै ।
लघुमंडलदिवाकरउदोतकाल परमप्रकाशजगतमहरिलीन्ह्यो है ॥
मंत्रलघुहोतवशहोतसुरसर्वताके अंबुनिधिकुंभजअचैकैपुनिदीन्ह्योहै ।
जन्हुकरिगंगपानप्रगटकिय कानन ते रघुराजरामैबलहीनकसचीन्ह्योहै ॥

सोरठा—सुनत सखिन की बानि, रानी उर धीरज धर्‌यो ।
मनहिं महेश भवानि, लगी मनावन विविध विधि ॥
चाप समीपहि जात, जनकनंदनी प्रभुहि लखि ।
अतिशय जिय अकुलात, प्रेम विवश भूली सुरति ॥

सवैया ।

हे करुणाकर शंभु सुजान करी तुम्हरी अबलों सेवकाई ।

आय परचो अब काम सुई पर पूरण कीजिये मोरि सहाई ॥
श्रीरघुराजके पंकज पाणि तिहारे शरासनकी गुरुताई ।
मूलहु ते पुनि फूलहु ते तिमि तूलहु ते न लहै अधिकाई ॥१॥
योगप्रदायिनि भोगप्रदायिनि रोगहु शोग नशायिनि जानी ।
तू करुणा कृपा छोहकी मूरति मोहिं दई जयमाल निशानी ॥
ताकी करौ सुधि आयो समय अब श्रीरघुराज मनोरथदानी ।
साँवरेकी परै भाँवरी है अवलंब तुहीं जगदंब भवानी ॥ २ ॥
जय शिवनंदन दोषनिकंदन वंदनयोग हमेश उदारे ।
जय गणनायक जय वरदायक शुद्ध सतोगुणके अवतारे ॥
आपके बापको चंड कोदंड करी लघु दंड सों मोहिं निहारे ।
श्रीरघुराजको राजसमाजमें देखै पिता धनु खंड कै डारे ॥३॥

दोहा–मनहिं मनावति जानकी, गौरि गणेश पुरारि ।
देखि राम शोभा सुखद, यकटक रही निहारि ॥
भरे विलोचन प्रेमजल, पुलकावली शरीर ।
निरखि अवनि पुनि पितु जननि,पुनि निरखति रघुवीर॥
श्याम राम अभिराम छवि, लोयन लागत लोभ ।
परमकठिन पितुप्रण समुझि,पुनि उपजत चित क्षोभ ॥

कवित्त ।

विधिकतदीन्ह्योजन्मदीन्ह्योजन्मभलोकीन्ह्यो कोहपुनिविरचीविदेहकीकुमारीहै
विरचीविदेहकीकुमारीसोऊभलीभई पितुप्रणकसकरवायामुखचारीहै ॥
पितुप्रणभलोकरवायोक्योंबुलायोरामरामैजोबुलायोमानाविनतीउचारीहै
रघुराजशंकरशरासनतोरावैपरै साँवरे कुँवरहीसोंभाँवरी हमारी है ॥१॥
महाराजामिथिलाधिराजआजमेरोपितासंहितसमाजदेवराजकेसमानको ।
रघुराजज्ञानीमुनिसभ्यशूरसभासद कोईनबुझायकहैउचितप्रमानको ॥
लाभतेविहीनप्रणहानितेविहीन परिणामतेविहीनफलकौनअवसानको ।

टूटै नहिंचरुधनुछूटैवरुयहनतु रहैगीकुवाँरीकीवरैगीरघुभानको ॥२॥
सुहृदसचिवगुरुगणकपुरोहितहू वद बुधवंद जो सभीतस्वामिकाजमें ।
धर्मकोअधर्मजायन्यायकोअन्यायहोयउठतउपद्रवविशेषतिहिराजमें ॥
कुलिशकठोरकयलासपतिकोकोदंडडोल्योनाडोलायेभूपमंडलीदराजमें
रघुराजरामदतसाइधनुताारवकागाजपरैऐसी निरदइन समाजमें ॥३॥
कहांकिशलैतेआतकोमलकमलकर कहाकोटिकुलिशकादंडयाकठारहै।
गड़नचहातिपायँपाँखुरीपुहुपहूँकीऐसेसुकुमारकोनयोगएसोजोर है ॥
रघुराजपंकजकी जीर नहिं वेधहीर धरौंकिमिधीरपावैपीरमनमोरहै ॥
अवध किशोरपगसेवनके पाइवेमें शंभुधनु सत्य अब तोरईनिहोरहै ॥४॥
सकलसभाकीभईभोरीमतिमोरीवार शंभुधनुलागीअबआशएकतोरीहै।
जड़ता जननपैपवारेनानिहारैमुख हरूहोइहेरिरामैकारीतिनथोरीहै ॥
देखत सकल सुर मुनि रघुराज आज जनकैनिवारैनहिंकरिबरजोरीहै ।
पाऊंदुखद्वन्द्वकीअनंदछलछन्दछोड़िहौंतोभईभानुकुलचन्दकीचकोरीहै ५

सोरठा—यहि विधि करत विचार, धरत धीर नहिं जानकी ।
लखि अवधेशकुमार, कोटि कल्प बीतत पलक ॥

कवित्त ।

लखिरघुवीरकोनिहारतिधरणिओर मानौकहैमातुमोहिंतैहींअबव्याहिदे।
मूचनिकरतिरामैडाढ़तेउठाइधरा चापकौनबातपितुप्रणनिरबाहिदे ॥
भूमिभारहारहेत लीन्ह्योअवतारनाथमानौंगीभरोसमेरोशोकभारढाहिदे ।
रघुराजराजसुतकीजेनाक्षमासीक्षमा भूपनकीदापको प्रतापही ते दाहिदे॥

सवैया ।

लोयन लोल ललौहैं ललीके मनोज मना मनमें मुद छाकी ।
डोल बनाय मयंकको मंडल ढीली उभै सफरी छवि साकी ॥
श्रीरघुराज सु श्यामकुमारै विदेहसुता मनकी गति थाकी ।
झांकिकै प्रीतिसों झीने झरोखनि झारिकैझांकीझकाझकझाँकी॥

कवित्त

गुरुजनलाज जनीकोपायकंजमुख मुकुलितलोकगमालदासियवानीहै ।
प्राणनैनकोनहीलोआँसुकोंनवासहान जैसेसोनभौनकोनरास्वतअदान
अतिअकुलानीडरपूरणप्रतीतिआनीपूरुवकीप्रीतिनिजानीपुनिसकुचानीहै ।
रघुराजठानीप्रणसुमिरिभवानीमन जानिकीमीजानकीगैंजानिकीहौंजानीहै ॥

दोहा—जापर जाकर होत है,सांचो सरस सनेह ।
सो ताको हठि मिलत है, यामे नहिं सन्देह ॥
जो तन मनते रामपद, ह्वैहैं मोर अधार ।
तौ तेई पद दासिका, करिहैं राजकुमार ॥
तहँ तिहि क्षण सियके हिये, जो दुख होत महान।
तौन भानुकुल भानु सब, जानत राम सुजान॥

सवैया ।

गुरुलोगकी लाज गड़े गड़े गौनन जात अडे अड़े जैननसों ।
मनमोद मढ़े मढ़े वीर रसै नहिं बोलैं बढ़े बढ़े बैननसों ॥
रघुराज खुशीसों यथा खगराज विलोकत व्यालहि सैननसों ।
चितयो तिमि चाप चढ़े चढ़े लाल बड़े बड़े वारिजनैननसों ॥

दोहा—भंग होत अधंग धनु, जानि लषण तिहि काल ।
कह्यो लोकपालन मनहिं, सजुग होहु यहि काल ॥

छन्द ।

दिशा दिग्गजसबैहोहुजुमपतसजगकरहुधारणधरणिधीरधरिजोरसों ।
कोल कूरम धरैं कमठ अहिपति गहें शेष भूकोबहैं भोरनहिंबोरसों ॥
आपने आपने लोक दिग्पाल यहि काल थिरहोयँजगराखि चहुँओरसों ।
त्रिपुरहरचण्डकोदंड खण्डनकरन चहतचितआज रघुराजयहिठोरसों ॥
भाषि अस लषणसंकलपको सुरन सब बैठि तहँ आपहू सावधानै ।
चरणते चापि ब्रह्मांडमंडल सबल प्रबल अहिपतिकमंडलप्रमानै ॥
गगन मग थम्हि रहे सूर तारा शशी सिद्ध भागे भभरिचपलजानै ।

पऱ्यो खरभर भुवन भंग भरभर अमर चरितरघुराजको कोउनजानै २

दोहा—सकल महीपनके लखत चाप समीपहि जाय ।
अचल नीलमणिशृङ्गसम ठाढ़े सहज सुभाय ॥

चौपाई ।

चापसमीप महीप अपारे । रामहि ठाढ़े सहज निहारे ॥
भरे हर्ष विस्मय सब कोई । निश्चय परति न कोउ कहँ जोई॥
कौशिक अरु सीता अरुदेवा । जानत धनुपभङ्ग कर भेवा ॥
जनक रानि अरु भूप विदेहू । क्षण आनँद पुनि क्षण संदेहू ॥
पुरजन सकल नारि नर जेते । लागे देव मनावन तेते ॥
तृरहिं शंभुचाप रघुराई । सविधि करब हम सकल पुजाई
अस कहि लखत मौनजनकैसे । स्वाति बूंद घन चातक जैसे ॥
सिय हिय शोच भूपविकलाई । अंध महीप गर्व गरुआई ॥
रानि सुनैना कर पछिताऊ । हरयो हेरि धनु कह रघुराऊ॥
प्रबल मल्ल जे पाँच हजारे । ठाढ़े धनुसमीप बलवारे ॥
ते सब रामहिं वचन उचारे । खोलहु मंजूषा सुकुमारे ॥
पाणि ठेंगि मंजूषा काहीं । रघुनायक चितयो गुरु पाहीं ॥

दोहा—सहज सुभाव दुराव नहिं, तेज कोटि दिनराउ ।
कह्यो वचन रघुराउ मृदु, सुनहु विनय मुनिराउ ॥

चौपाई ।

हे गुरु अस मानस कछु मेरो । करौं यत्न धनु ऐंचन केरो ॥
धनुप उठाय चढ़ावन काहीं । चढ़ति चोप नेसुक चितमाहीं ॥
पूँछिलेहु मिथिलेश नरेशै । यत्न करन कहँ देहु निदेशै ॥
मुनि मिथिलेशै कहमुसक्याई । तुव निदेश चाहत रघुराई ॥
नृप कह भली कही रघुनाथा । खैंचन चाप लगावहिं हाथा ॥
अस कहि ठाढ़भयो मिथिलेशा । सुमिरण लाग्यो रमा रमेशा ॥
बोले विश्वामित्र पुकारी । गहहु राम धनु पटल उघारी ॥

इतना सुनत सब पुरवासी । ठाढ़ भये लखनके आसी ॥
भूप क्रूरमति कहहिं घमंडी । यह बालकका हरधनुखंडी ।
द्विज सज्जन अरु भूपविज्ञानी । किय प्रणाम जोरि युग पानी ॥
ठाढ़ि भई तहँ सकल समाजा । काह करन चाहत रघुराजा ।
नवकिशोर वय तनु घनश्यामा। अभिरामहुते अति अभिरामा ॥
दोहा-संमत सहित विदेहको, सुनि गुरु आयसु राम ।
गुरुसमेत मुनि जननको, किय करकमल प्रणाम ॥

कवित्त ।

सहजसुभायकरकमललगाय मनभूपाकोउधारिदीन्ह्योझमकिझड़ाकदै।
तातेऐंचिशंभुकोशरासनप्रयासनहिं साजतप्रत्यञ्चाकोनकड़केकड़ाकदै
रघुराजकौतुकसोऐंच्योचापकाननलौंचंचलासीचौंधपरीचखनचड़ाकदै
अवधकिशोरबाहुजोरकोनथोरोसह्योटूटिगोत्रिनेत्रधनुतड़ाकितड़ाकदै ॥
दोहा-टूटत हर कोदंडके, भयो भयावन शोर ।
मनहुँ सहस पविपातयक, बार भयो तिहि ठोर ॥

कवित्त सिंहावलोकन ।

कारामेहरंग व्योम भानुकेतुरंगभाजे,
भाजेभयेभीतिके अरूझे जाय तारामें ।
तारा टूटि टूटिपरे अवनि अपारापारा,
बिंदसे विराजैं राजैं परिंगे खभारामें ॥
भाराभरे लाजहीके हीमें सबैमानिहारा,
हारागयेहीरनके काचके अकारामें ।
कारागार द्वाराकेकिवाँरा खुले जानेदेव,
देवपति माने रघुराजेरक्षकारामें ॥ १ ॥
चौंकिउठ्योचारिमुखचितवतचारोंओर,

चन्द्रचूड़ चन्यो चितचखन उचायकै ।
गगनतेगिरे गीरवाण जे विमाननमें,
श्रोणिको छुअत असउचै अकुलायकै ॥
रंगभूमि भूपतिसमाज नरनारि जेते,
एकै वारगिरिगे प्रचंड शोर पायकै ।
रघुराज लषण विदेह मुनि ठाढ़े रहे,
रामजवतूरयो शंभुचापकोचढ़ायकै २
हाल्यो कैलास हाल्यो महामेरुमंदरहूं,
हाल्यो विंध्यपर्वत हिमाचलहूँ चाल्योहै।
हाल्योइंद्रलोकतैसेहाल्योहैविरंचिलोक,
हाल्योहैब्रह्मांडशब्द शेषशीशहाल्योहै॥
रघुराजकौशल किशोरशंभुचापतूरयो,
हहलि हहलि उठे महल पताल्यो है ।
हाल्योभुवलोकत्योंहीहाल्योध्रुवलोकत्योंहीं,
हाल्यो विश्वएकहरिहाथनहिं हाल्योहै ३
कैधौं उनचासौ पौन फोरिकै कढ़ेहैं मेरु,
फाटिगो सुवर्णशैल ताहीको तड़काहै ।
वामन बढुरिकैधौंफोरयो फेरि ब्रह्मअंड,
मारि पग दंड सोई स्वको भड़ाका है ॥
ग्रहनको सूर शशि तारागण भारापाय,
टूट्यो शिशुमार कैधौं गगन पड़ाकाहै ।
कैधौं रघुराज रणधीर अवधेश ढोटो,
भंज्यो धूरजटिधनुधुनिको धड़ाकाहै ४
चिक्करत दिग्गज पराने पुहुमीको छोड़ि,
गिरिगे पतंगसे विहंग आसमानके ।

टूटि टूटि गिरिगे उतंग शृङ्ग शैलन के,
शैलन बटोही भाग वासी भे मकान के ॥
वंदी करि तरल तुरंग तुंग तोयनिधि,
ह्वै गये तड़ागसे न वेग मारुतान के ।
रघुराज बाहुबल वारिधि में बूड़े वीर,
शंकर जहाज चाप चढ़े जे अज्ञानके ५.

छन्द बरवै ।

ऐंचतगहतउठायचढ़ावतचाप । लख्यो न कोउरघुलालहिकलाकलाप ॥
प्रभुकेरह्योमूठिमहँ एकैखण्ड । परोखण्ड यकमहिमहँ महा उदण्ड ॥
सोऊ खण्डहि फेंक्यो महि रघुनाथ । सहज सिंहसम ठाढ़े झारतहाथ ॥

छन्द हरगीतका ।

धनु भङ्ग कीन्ह्यो रंगभूमि समाज माधि रघुवीर ।
रव भयो घोर अघात बहु निर्घात सम प्रद पीर ॥
जे रहे जहँ ते गिरे तहँ जनु फूटिगे युग कान ।
गन्धर्व किन्नर सिद्ध चारण चढ़े बहुरि विमान ॥
द्वै दण्ड भरि ब्रह्माण्ड खलभल मचि रह्यो तिहि काल।
अस विश्वमें नहिं रह्यो कोउ सुनि होइ जो न विहाल ॥
पुनि सम्हारि सब करि स्वस्थ चित्त विचारकिय असुरारि
शंकर शरासन राम तूरचो भुवन सो झनकारि ॥
चढ़ि चढ़ि विमानन सुखित आनन गगन आय अपार ।
यकबार दीन्हें दुंदुभी कहि जयति अवधकुमार ॥
जय रमा रमण रसाल कीन निहाल मिथिलापाल ।
हरिलीन सुर दुख जाल हाल दयाल दशरथ लाल ॥
धनुभंग शोरहि व्याज भरिगो सुयश भुवन अपार ।
यम वरुण धनद सुरेश मगन अनन्द पारावार ॥
निर्गुण रह्यो असगुण धनुष तिहि सगुणकरत रमेश ।

फुटि गयो असगुण घट चटकभे मनहिं मुदित महेश ॥
बाजे अनेकन दुन्दुभी मचि रह्यो दिशनि धुकार ।
गन्धर्व गावन लगे सर्व अनन्द पाय अपार ॥
नाचन लगीं अप्सरा चन्द्रानन विमानन बीच ।
हियमें हरषि वर्षहिं सुमन सुर आय आय नगीच ॥
शीतल सुगन्ध समीर लाग्यो वहन दशहु दिशान ।
सुरभित सलिल सूक्षम सुबूँदन वर्षिरह मघवान ॥
आतप निवारत सघन घन सुर मधुर गर्जत मन्द ।
बाजन बजावत अति सुहावन देव दून अनन्द ॥
प्रभुपर वरषि पुनि पुनि पुहुप नहिं अमर उरहि अघाउ ।
देखत सुछवि निज नाथ की कहि जयति रघुकुलराउ ॥
प्रस्तुति करत रघुनन्दकी वृन्दारकन के वृन्द ।
आनन्दकन्द गोविन्द जयति मुकुन्द रघुकुलचन्द ॥
समरथ सुशील सुजान साहेब सकल भुवनाधार ।
सुर मुनि कलेशन शेष राखन लेत हौ अवतार ॥
इत धनुष शोर कठोर सुनि जे गिरे पुर नर नारि ।
ते उठि निहारे नयन देखे धनुष भंग पुरारि ॥
ह्वै गयो स्वप्नो सो सबै जो रही मनमहँ आस ।
भइ सिद्ध सकल समाज मध्य प्रसिद्ध विनहि प्रयास ॥
देखे परे पुहुमी पिनाक द्विखण्ड तेज अपार ।
तिनके निकट ठाढ़े सहज अवधेश राजकुमार ॥
पानी पर्‍यो जिमि धान सूखत मृतक वदन पियूष ।
सञ्जीवनी विद्या लहे उलहत विटप जिमि सूष ॥
तिमि सकल पुरजन भये ठाढ़े किये जय जयकार ।
मिथिलेश सुकृति सराहि पुनि जय कहहिं अवधकुमार ॥

गहगहे बाजे दुंदुभी डफ डिंडिमी करनाल ।
करताल वेणु उपंग पटह मृदंग ढोल रसाल ॥
गावन लगीं पुरनारि मंगल गीत चारिहु ओर ।
तिहि समय बढ्यो उछाह अति जनु भुवन लागत थोर ॥
तहँ शंख धुनि चहुँओर पूरी झाँझकी झनकार ।
पुलकावली प्रति अंग नयनन बहति आनँद धार ॥
मिथिलानिवासिन वदनते अस कढ्यो एकहिवार ।
तूरयो चटक गहि चन्द्रचूड सुचाप राजकुमार ॥
दोहा—कही सुनैना जौन सखि, राम तूरिहैं चाप ।
सो उठि पुलकि प्रणाम किय, मिली रानि उठि आप ॥

छन्द गीतिका।

पहिरे रही जो वसन भूषण जड़ित रत्न अपार ।
सो दियो ताहि उतारि रानी तनक तनु न सम्हार ॥
गुरुजननको वंदति सुनैना कहति बारहिं वार ।
पूरण मनोरथ भयो मेरो पूर पुण्य तुम्हार ॥
तहँ सूत मागध सुकवि वंदी विरद करहिं बखान ।
तूरयो महेश कोदंड दशरथ कुँवर सींक समान ॥
नर नारि आपुसमहँ मिलैं नहिं कथा कहत सिराय ॥
हर्षहिं पुलकि वर्षहिं सुमन विहँसहिं न मोद समाय ॥
मिथिलानिवासी नारि नर सज्जन महाजन जाय ।
प्रभुकी निछावरि करहिं मणिगण बचे देहिं लुटाय ॥
कोउ प्रेम वश परिहरि सुलाजहिं बाहु मींजहिं पानि ।
अतिपीर होती होइगी ऐंच्यो धनुष कर तानि ॥
कोउ चरण शिर धरि करहिं वंदन जानि देव कुमार ।
कोमल कमल कर धनुष तूरयो कौन विधि सुकुमार ॥

दर्शी डिठोना भाल काउ नहिं लगै लाले डीठ ।
कोउ वृद्ध तिय कहि कौशिलाके ठोकती प्रभु पीठि ॥
तिहि समय जो सुख जानकीके भयो राम निहारि ।
सो कौन कवि जग बापुरो जो कहै सकल उचारि ॥
यकटक लगी चितवन चखन जिमि चितव चंद्र चकोर ।
जिमि लहत चातक स्वाति बुंद विहाय बिंदु करोर ॥
तोरयो शरासन शंभुको जब अवधराज किशोर ।
भूपति चमूपति लगत इमि चुप बैठ मानहुँ चोर ॥
उड़िगै वदनकी लालिमा फिफरी परी अधरानि ।
इक एक देखत कहत नहिं मनु भई सरवस हानि ॥
मुदके महोदधि मगनभे मिथिलेश गद्गद कंठ ।
को कहै तिनको हिय हरष मानहुँ लहे वैकुंठ ॥
नहिं वचन मुखसों कढ़त नयनन बढ़यो नीर प्रवाह ।
मम धर्म प्रणकी कटी बेरी रही जो पग माह ॥
पुनि सुमति विमति बुलाय वंदी कह्यो वयन विदेह ।
कहि देउ सकल महीप कहँ अब जाहिं निज निज गेह ॥
देखन लषण लोयन ललकि रघुलालको तिहि काल ।
मनु आपहीं तोरयो धनुष अस भयो हर्ष विशाल ॥
मिथिलापुरी तिहि कालमें ह्वै गई आनँदरूप ।
प्रभु चरण वंदे बारबारहिं रहे भक्त जु भूप ॥
मिथिलेश तब चलि गाधिसुतके चरण कीन प्रणाम ।
अस कह्यो तुम इत ल्याइ रामहिं कियो पूरण काम ॥
तोरयो शरासन शंभुको प्रण पूर कीन्ह्यो मोर ।
छायो सुयश क्षिति छोर लों धनि अवधभूप किशोर ॥
यह सकल नाथ प्रताप तुव नहिं और काहु निहोर ।

जो तूरिहै धनु ताहि व्याहौं रह्यो अस प्रण मोर ॥
सो शंभुधनु भंज्यो सहज यह साँवरो रघुलाल ।
अब होय नाथ निदेश तो मेलै सुता जयमाल ॥
तब महामुनि मुसक्याय बोले पुण्य राउर भूरि ।
शिवचाप तृण फल फूल सम क्यों सकैं राम न तूरि ॥
अब देहु आयसु जानकी जयमाल मेलै जाय ।
पुनि अवधपुर ते आसुही लीजै बरात बुलाय ॥
सुनि वचन कौशिकके विमल नृप शतानंदहि आनि ।
जयमाल [illegible] शासन अवसर सुखद जिय जानि ॥

दोहा—शतानंद आनंद भरि, गये तुरत रनिवासु ।
कह्यो जानकी जननि सों, अब कीजै अस आसु ॥
सजि शृँगार गावत मधुर, संग सहस्रन बाल ।
सियहि पठावहु राम के, मेलै गल जयमाल ॥

सवैया ।

सुनिकै मुनिके मुख ते निकसी सर्वस्व मनो सिय लाभ लह्यो ।
उतसाह औ लाज समान भरी सुख सो मुख सों नहिं जातकह्यो ॥
रघुराज सो लाज उठै नहिं देति विलोकन को जियरो उमह्यो ।
करि लीन्ही जो मूंदरी कंकन सी कर कंकन सो अँगुरीन रह्यो ॥

दोहा—उठी सीय आनंद भरि, पहिरि पीत पोशाक ।
डगरी सँग सगरी सखी, नूपुर बजे झनाक ॥

चौपाई ।

चली जानकी लै जयमाला । पहिरावन को दशरथ लाला ॥
[illegible] संग हजारन । सुरदारन सम किये शृँगारन ॥
महा भीर सब राज समाजा । खैर भैर मचि रह्यो दराजा ॥
कुमति कुपति संमति करि लीन्हें । सियहि न त्यागब विन युध कीन्हें ॥
अस सुधि पाय सुनैना रानी । सायुध पठई सखिन सयानी ॥

वल्लभ कुंत कटार कृपानी। कसे नारि कम्मर मरदानी॥
मुख्य मुख्य सजनी मधि माहीं। तिनके मधि सिय लसति तहांहीं॥
सायुध सखि मंडल चहुँ ओरा। गावहिं मंगल मंजुल शोरा॥
मनहुँ समर संभव गुणि देवी। आय भईं सिय स्वामिनि सेवी॥
डरप कुमति कुपति अविवेकी। टरिगे टारि टेंक जो टेकी॥
बाहेर जाय यूथ सब बांधे। रण हित आयुध कांधन काँधे॥
यह सुधि सकल लषण जब पाई। चल्यो सिंह सम जहँ रघुराई॥
ठाढ़ो भयो निकट प्रभु केरे। पंचानन सम भूपन हेरे॥

दोहा—विश्वामित्र विचारि चित, गयो विदेह समीप।
कह्यो अभागी भूप सब, चाहत होन प्रतीप॥
बोले जनक सरोष तब, कौशिक करहु न शंक।
तारागण का करि सकत, पूरण उदित मयंक॥

चौपाई।

गारी देहिं नृपन नर नारी। मंगल माहिं अमंगल कारी॥
प्रथम उठ्यो नहिं धनुष उठाये। बैठे शीश नवाय लजाये॥
अबकिहि हेत करैं शठ रारी। बरवस चाहत हरन कुमारी॥
कोउ कह करहु शंक नहिं कोई। देखब सबै जौन अब होई॥
आवति सिय मेलन जयमाला। यह उछाह लखि होब निहाला॥
सुनत जनक भूपन उत्कर्षा। कियो हर्ष महँ परम अमर्षा॥
चतुरंगिनी सैन्य सजवाई। दियो द्वार महँ ठाढ़ कराई॥
शासन दियो सरोष विदेहू। मारहु नृपन बचैं नहिं केहू॥
करन चहत असमंजस पापी। इनकी मीच लषण कर थापी॥
राज समाज लाज नहिं लागी। दरशावत मुख बहुरि अभागी॥
भूपन कहै न कोउ समुझाई। बसहु जीव लै निज घर जाई॥
सुमति विमति बंदी दोउ धाये। कुमती भूपन वचन सुनाये॥

दोहा—काज तुम्हारो कौन इत, बैठे वृथा समाज।
होन मीच भाजन चहौ, परत लषण शर गाज ॥

चौपाई।

इतै सखीन समाज पुनीता। आई रंगभूमिमहँ सीता ॥
मानहु संग शक्ति समुदाई। कढ़ि कमला क्षीरधिन आई ॥
आवति सिय लखिउठी समाजा। किय प्रणाम भक्त सब राजा ॥
पुर नर नारि जानकिहि देखे। धन्य धन्य निज भाग्यहि लेखे ॥
जब प्रथमहिं पूजन हित आई। रज रंजित ग्रीषम शशि भाई ॥
पहिरावन जयमाल सिधाई। तब शारद मयंक छवि छाई ॥
सीय नयन दोउ बंधु दिखाने। जिनलखि मदनशृँगार लजाने ॥
मनहुँ नीलमणि रजत पहारा। श्याम गौर क्षिति छटा पसारा ॥
उठतीं सुछवि अभंग तरंगा। क्षण क्षण नव नव होति प्रसंगा ॥
परे खंड द्वै धनु महि माहीं। राम लषण मधि खड़े तहांहीं ॥
झुके सकल देखन नर नारी। किहिविधिसिय जयमालाडारी ॥
मंद मंद सिय आवति कैसे। मिलन प्रीति मनु प्रेमहि जैसे ॥

दोहा—राम रूप नख शिख निरखि, अनिमिष नयन लगाय।
रही ठमकि मन अचल करि, देह दशा बिसराय ॥

सवैया।

सोहि रही नख ते शिख लौं मृदु केसरि रंगकी सुंदरि सारी।
भाल विशालमें लाल सो बिंदु करैं पगमें घुँघुरू झनकारी ॥
रामै विलोकि रही रघुराज विदेह लली तनहूं मन वारी।
कै कुज अंक मयंक मनो लसै सोनजुहीके निकुंज मँझारी ॥ १ ॥
शोच सकोच विमोच भयो सुख दोहुँनके सरसान समाने।
दोहुँनकी जुरीदीठि निशंक मयंक दिनेश मनो दरशाने ॥
श्रीरघुराज भरे दृग लाज हिये दोउ प्रेम पयोधि नहाने।

दोऊ विचित्र छके छविमें लिखे चित्रसे जानकी राम सुहाने ॥२॥
दोऊ निमेषन नेवर जानिके नयननते करि दीन्ही बिदाई ।
प्रीतिके पाशमें दोऊ फँसे पदकंज दोऊके गहे थिरताई ॥
लाजको काज अकाज भयो रघुराज उछाहकी भै अधिकाई ।
रामको भूलि गयो धनु भंग सिया पहिरावन माल भुलाई ॥३॥
अंगुलीसो गहि अंगुली कोमल मंजु अली मुखसों मुसक्याई ।
मंजुल वाणी कही सुखसानी सुनेसुक नयनन सैन चलाई ॥
आई इतै पहिरावनको जयमाल विशाल रसाल तुराई ।
सो पहिराय चलो रघुराज सदा निरख्यो यह सुंदरताई ॥ ४ ॥
मंजुल युक्ति भरे सखी बैन सुने सिय नेसुक नैन नवाई ।
नेसुकही सखि ओर लखी मुसक्याइकै मंदहि मंद लजाई ॥
मंदहिं मंद उभै करसों रघुराज चितै जयमाल उठाई ।
वासवचापके बीच मनो चपला चमकै घनश्याम निराई ॥५॥
चारिहु ओर लसै सखिमंडल मध्य विदेहलली छबिछाई ।
सामुहे श्रीरघुराज खड़े दोउ राजकुमार समीप सुहाई ॥
मानहु श्वेत औ श्याम घटा ढिग बीजुरीकी प्रगटी बहुताई ।
मध्यमें पूरण चन्द्र उदै भयो चंद्रिका मंडल मांडि महाई ॥६॥
औसर जानि कही सहजा तहँ येहो विदेहसुता सुनो मेरी ।
या छवि देखन तेरेई भाग्य विरंचिबई विरची सुखढेरी ॥
श्रीरघुराजको आजु अहै बलि तेरे समान न मैं जग हेरी ।
मेलौ गये जयमाल लली रघुलालके हाल करौ कस देरी ॥७॥
आली गिरा सुनिकै रसशाली चहै पहिरावनको जयमालै ।
सीय विचारै मनै मनहीमें परी परिपूरण प्रेमके जालै ॥
कोमल श्रीरघुराजके अंग कठोर महा कुसुमानिकी मालै ।
हाय कहूँ गड़िजाय मरे पछिताय रहौं हियपाय कशालै ॥८॥

सोरठा—तहँ विलम्ब जिय जानि, मन्द मन्द बोले लषण ।
अम्ब अनुग्रह खानि, वितत मुहूरत अति सुखद ॥
सिय सुनि देवर बैन, सकुचि रची रति रामके ।
लखि लषणै भरि नैन, द्रुत जयमाल उठाय कर ॥
दई प्रभुहि पहिराय, विविध रंग जयमाल गल ।
सो छवि कही न जाय, मर्कत गिरि मनु धनु ज्यो ॥

सवैया ।

जा क्षणमें मिथिलेश लली जयमाल दई प्रभुको पहिराई ।
देखन लागी मनोहर मूरति नयन निमेष विशेषि विहाई ॥
श्रीरघुराज समाज सबै है निहाल लखैं दुहुँको टकलाई ।
श्यामघटा क्षण ज्योति छटा ज्यों चटापटदीन्हींरुमालओढ़ाई॥

दोहा—राम गले जयमाल लखि, भे सब लोग निहाल ।
माच्यो जयजयकार तहँ, वार वार तिहि काल ॥

छन्द हरिगीतिका ।

सुर चढ़ि विमानन विविध आनन जयति राम पुकारहीं ।
अभिराम लखि सिय राम छवि सुरद्रुमप्रसून पवारहीं ॥
भेरी बजावत सुयश गावत शीश नावत रामहीं ।
सुरदार नाचहिं गतिन राचहिं हिय हुलास बढ़ावहीं ॥
छायो भुवन मण्डल विनोद विशोक देवसमाज है ।
को कहि सकत यक मुख लह्यो जस सुख जनक महराज है॥
मिथिलानगर नर नारि आनँद मगन अभिमत पायकै ।
फूले फिरहिं चहुँ ओर चायन जगत दुख विसरायकै ॥
तहँ यूथ यूथहिं नारि मिलि मिलि गीत मङ्गल गावहीं ।
यक यकन धनु तोरन कथा पुनि पुनि बुलाय सुनावहीं ॥
सब बात दीन बनाय विधि अस कहत शीश नवावहीं ।

अरुणहिं दृग नाक निग्छौहैं । दहन नृपन जनु बांकन भौंह ॥
चहन मनहिं प्रभु शासन देहीं । क्षणमहँ देखि मार बल लेहीं ॥

दोहा—भस्म करों क्षणमहँ नृपन, बढ़ि बढ़ि बहुत बतात ।
अबं न देखे वीर मुख, चहकारे ऐंड़ात ॥
चहकारे नट भाट के, जे आवत संग्राम ।
ते भागत रण छोड़ि के, बांधि जात परिणाम ॥

चौपाई ।

खर भर होत सखी डरपानी । राम लषण लखि सियमुसक्यानी ॥
मधुकैटभ मुर भौम प्रचंडा । हिरण्यकशिपु कनकाक्ष उदंडा ॥
सहे न जोर जासु भुजदंडा । तिन सन्मुख नृप करत घमंडा ॥
सायुध सखी खड़ीं बढ़ि आगे । कहहिं भूप का करत अभागे ॥
प्रथम हनब हमहीं हथियारन । समर कौन करि सकै निवारन ॥
डरें नर्म सखि सियमुसक्याती । कुपितलषणलखिलजिपछिताती ॥
प्रगटत लक्ष्मण कोप कराला । राम कह्यो हँसि वचन विशाला ॥
अजा महिष खर लखि पंचानन । सुन्यो न कोप करत कहुँकानन ॥
लखौ लषण कौतुक धरि धीरा । काह करत बढ़ि नौबढ़ वीरा ॥
राम वचन सुनि लषण लजाने । लखन लगे महि मृदु मुसुक्याने ॥
गगन गिरा भइ राजन काहीं । निज निज भवन भूप सब जाहीं ॥
जो कुचालि करिहैं यहि ठौरा । हनिहैं तिन्हैं यक्ष बरजोरा ॥

दोहा—सुनि अकाशवाणी तहां, डरे भूप मतिमंद ।
लैलै निज निज साहनी, चले चुपहि तजि फंद ॥

चौपाई ।

भक्त भूप भल भाषन लागे । भले अभद्र भवनकहँ भागे ॥
लखि वीरता होति है हांसी । गे घर बल बुधि विक्रम नासी ॥
आये वदन दिखाय ललाई । गे गृह मुख लगाय करिआई ॥

धर्म छोड़ि जो तिनहि विचारा । करत काज मतिमंद गँवारा ॥
यही दशा तिनकी हठि होनी । जस इन भूपन भई उदोनी ॥
कोउ कह रण विचार कछु करने । लषण रोप पावकमहँ जरने ॥
चहे समर नृप वृथा अभागा । पन्नगारि मम होत न कागा ॥
शशक न करत सिंह समताई । गज न होत खर देह बड़ाई ॥
शंभु विमुख नहिं संपति पावै । भजे विना हरि नहिं भ्रम जावै ॥
कोउ कह लोभिन लाज न होई । धर्म छोड़ि लह कीरति कोई ॥
यहि विधि साधु परस्पर भाखत । हरिपदपंकजमहँ चित राखत ॥
मिट्यो कोलाहल रे जब भूपा । माच्यो मंगल शोर अनूपा ॥
दोहा—इतै मयंक कला सखी, सियहि कह्यो मुसक्याय ।
परशि कंज पद रामके, चलहु भवन सुख छाय ॥

चौपाई ।

सुनि सखि वचन विदेहकुमारी । नहिं परशति पद पाणिपसारी ॥
ये पद गौतम तिय कहँ तारे । परशब उचित न जान हमारे ॥
पूरब भाउ होत पद परसे । यहि अवसर में चहों न उरसे ॥
मिथिला अवध महासुख होई । पूरब भाउ भये कहँ सोई ॥
यदपि नित्य सम्बन्ध हमारा । पै जिहि हेतु लीन अवतारा ॥
सो लीला किमि पूरण होई । सकी न भूमि भार हरि कोई ॥
अस विचारि परशति पद नाहीं । रामजानिअस मनमुसक्याहीं ॥
पूर्व भावकी उपजी भीती । ताते करी अलौकिक प्रीती ॥
नैनन सैनन सों रघुराई । दई जानकिहि जान रजाई ॥
मनहीमन पद वंदन करिकै । साँवलि मूरति हियमहँ धरिकै ॥
चली सीय जननी ढिग काहीं । गावत मंगल सखी सुहाहीं ॥
दोहा—जयमाला पहिराइकै, गई सीय रनिवास ।
राम लषण आवत भये, विश्वामित्रहि पास ॥

चौपाई

परे चरणमहँ दोनों भाई । मुनि लीन्ह्यो निज अंक लगाई ॥
पीठि पोंछि शिर सूँघि सुखारी । बोले वचन महानपधारी ॥
जीवहु युग युग सुंदर जोरी । यहि विधि पुजवहु आशा मोरी ॥
कियो बंधु दोउ मोहिं सनाथा । देहुँ काह कछु है नहिं हाथा ॥
प्रभु शिरनाय कह्यो करजोरी । नाथ कृपा कीरति भइ मोरी ॥
यह सब भयो प्रसाद तुम्हारे । कृपा छोड़ि बल नाहिं हमारे ॥
तिहि अवसर विदेह तहँ आये । विश्वामित्र चरण शिरनाये ॥
दीन अशीश मुनीश महीसै । रहहु मोदमहँ कोटि बरीसै ॥
जोरि कमल कर कह्यो विदेहू । तुव प्रसाद मिटिगो संदेहू ॥
टूट्यो शंभु धनुष मुनिराया । राम लह्यो यश राउरि दाया ॥
रही नाथ निमिकुल मर्यादा । सब सुख हेतु तुम्हार प्रसादा ॥
अब आगे जस शासन देहू । करौं तौन विधि विन संदेहू ॥

दोहा— निमिकुल रघुकुलमहँ तुम्हीं, अहौ सयान प्रधान ।
तुम्हें विदित गति भुवनकी, हम सब मनुज अयान ॥

चौपाई ।

जिहि विधि नाथ शिखापन होई । तिहि विधि हमकरिहैं सब कोई ॥
सुनत विदेह वचन सुखदाई । बोले विहँसि वचन मुनिराई ॥
धर्म धुरंधर निमिकुल राऊ । त्रिभुवन विदित प्रताप प्रभाऊ ॥
तुम्हरी पुण्य सिद्धि सब काजा । उदित सुयश मानहुँ उडराजा ॥
जानहु सकल रीति मिथिलेशू । का हमसों अब लेहु निदेशू ॥
तदपि उचित जस मोहिं दिखाई । पूछे ते अब देत सुनाई ॥
यह चरित्र शुभ मंगल काजा । नहिं जानत कोशल महराजा ॥
लिखिदलविमलसकलसुतकरनी । सहित अशीश मोरि सुख भरनी ॥
पठवहु चारि चारके हाथा । सुनत होइ रघुवंश सनाथा ॥

इतै करहु सब ब्याह तयारी । तुम समान कोउ भूपति भारी ॥
लै बरात आवैं नरनाहा । करैं उछाहित राम विवाहा ॥
रह्यो पिनाक अधीन विवाहू । मिट्यो सकल दुख दारुण दाहू ॥

दोहा—करहु जाय मिथिलेश अब, यथा वंश व्यवहार ।
यथा वेदविधि लोकविधि, होइ सुखी संसार ॥

चौपाई ।

लहै लोक अब लोचन लाहू । भरै भूरि भल भुवन उछाहू ॥
मुनिपति वचन सुनत मिथिलेशू । मोद मग्न नहिं लेश कलेशू ॥
शीशनाय बोल्यो करजोरी । अब अभिलाष यही मुनि मोरी ॥
आयसु देउ तु पत्र लिखाऊं । आसुहि अवध नगर पठवाऊं ॥
व्याह समाज साज सजवाऊं । भूसुर साधु सभ्य बुलवाऊं ॥
सचिवन शासन सकल सुनाऊं । विश्वकर्म कहँ बोलि पठाऊं ॥
इतते अवध नगर पर्यंता । मारग शोधन करहु तुरंता ॥
सुनि विदेहके वचन सुहाये । विश्वामित्र कहे सुख पाये ॥
ऐसहि करहु महीप उदारा । कीन्ह्यो निज अनुरूप विचारा ॥
परमसुजान अहौ मिथिलेशू । का हम करहिं तुमहिं उपदेशू ॥
सुनि मुनि वचन भूप शिरनाई । बैठे राजमहलमहँ जाई ॥
शतानंद कहँ लियो बुलाई । आनहु औरहु सचिव तुराई ॥

—राम लषण संयुत इतै, ऋषि सुखसिंधु नहाय ।
कीन्ह्यो वास निवास चलि, भये अस्त दिनराय ॥
कार्तिक शुदि एकादशी, भयो भंग भव चाप ।
रघुकुल कमल पतंग तहँ, प्रगट्यो प्रबल प्रताप ॥

इति सिद्धिश्रीसाम्राज्य महाराजाधिराज श्रीमहाराजा बहादुर श्रीकृष्णचन्द्रकृपापात्राऽधिकारि श्रीरघुराजसिंह जू देव जी. सी.एस.आई. कृते रामस्वयंवरे धनुर्भंग एकोनविंशः प्रबंधः ॥ १९ ॥

स्वामिनि उपर कृपा करु मोरे । निमिकुल लाज हाथ अब तोरे ॥
अनुभवमहँ सिय कह्यो मुनीशे । सिद्धि सुयश संपति विस वीशे ॥
आठौ सिद्धि नवो निधि काहीं । दियो निदेश बोलि मनमाहीं ॥
पूरण करहु धान्य धन जाई । कौनिउ वस्तु न न्यून दिखाई ॥
सिधि निधि ऋधि सिय शासनपाई । परिपूरण प्रगटीं प्रभुताई ॥
राज रजाय शिल्पिवर धाये । अवध प्रयंत सुपंथ बनाये ॥
योजन योजनमहँ हित वासा । विरचे विविध विलास निवासा ॥
नदी पुलिन विच पुलन बँधाये । मारग सम विस्तार कराये ॥
खोदि अवनि वन सघन कटाई । वसन वगान वास बनवाई ॥
चारि निवास मुख्य बनवाये । तहँ बजार विस्तार कराये ॥

दोहा—रही न कौनिउ वस्तुकी, चाहत की कछु हानि ।
सकल संपदा पूर तहँ, अवध सरिस सुखदानि ॥

चौपाई ।

वापी कूप तड़ाग अनेका । निर्जल महि विरचे सविवेका ॥
दोउ दिशि पंथ लगाये वृक्षा । तुक्ष रुक्ष नहिं गुक्षन स्वक्षा ॥
कहहिं शिल्पिवर आपुसमाहीं । अस मिथिलेश निदेश कराहीं ॥
जवते तजहिं अवध अवधेशा । तवते जिहि जिहि वसहिं प्रदेशा ॥
तहँ तहँ अवध सरिस सुख होई । रचैं न न्यून शिल्पि वर कोई ॥
चारु चारि थल मुख्य निवासा । और पंथमहँ सकल सुपासा ॥
पृथक पृथक सवके गृह सोहे । यथायोग जिनके जस जोहे ॥
अन्नागार वाजि गजशाला । राजमहल ढिग बने विशाला ॥
यहि विधि सकल पंथसजवायो । पुनि जनवास निवास बनायो ॥
राज निवास विलास अनूपा । रहैं सुखी जहँ कोशल भूपा ॥
सभा शयनके अयन अनेका । पूजन मज्जन गृह सविवेका ॥
पृथक पृथक सब कर्म अगारा । वसैं सुभट मंत्री सरदारा ॥

दोहा—वन्या मध्य मांदर महा, राजसभा विस्तार ।
कमला सरि के तीर में, मनुपुर द्विनिय अपार ॥

चौपाई ।

गजशाला बहु वाजिनशाला । रथ ऊँटन के भवन विशाला ॥
धनागार बहु अन्न अगारा । विविध भाँति विरचे सुखसारा ॥
बाग तड़ाग सुहावन लागे । जलकीनहर सकल महिभागे ॥
विविध रंगके फूल लगाये । हौद फटिकके अति छवि छाये ॥
थल थल कंचन लगे फुहारा । कोट चहूंकित तुंग दुआरा ॥
कलित हेम अति सुभट कपाटा । हाटक कलश कँगूरन ठाटा ॥
विविध भाँतिके तने विताना । झालरिझूलि झलकविधिनाना ॥
कनकदंड लगि तुङ्ग महाना । फहरहिं चंपक वरण निशाना ॥
कमला तीर सघन अमराई । जहँ वसंतऋतु रहत सदाई ॥
कीन तहां जनवास विचारा । विरचे थल थल विविध अगारा ॥
रचन लगे रचना यहि भाँती । सकल शिल्पिवर सुघरसुजाती ॥
विश्वकर्मसव शोधन करतो । जहँ जस उचितसुछवितस धरतो ॥
दोहा—मिथिला ते अरु अवध लगि, दियो पंथ वनवाय ।
तिमिजनवास विलास वर, सकल सुपास रचाय ॥

चौपाई ।

जव दै शतानंदको शासन । वैठे विमल विदेह सिंहासन ॥
सुभगाक्षर लेखक विद्वाना । राज प्रशस्ति जाहि सव ज्ञाना ॥
तवहिं महीप समीप बुलायो । कनक विचित्र पत्र वनवायो ॥
दै सव कारज करन निदेशा । लग्यो लिखावन पत्र नरेशा ॥
वद्यो विनोदित वचन विदेहू । पंडित मोर वचन सुनि लेहू ॥
सावधान ह्वै थिर मति करिकै । लिखहु पत्र ललिताक्षर भरिकै ॥
पठवन चहौं पत्र अवधेशै । वुध समाज वहु कौशल देशै ॥

अक्षर लिपि प्रशान्ति अरु अथा। होइ हँसी नहिं देखन व्यथा ॥
यहि विधि लिखहु विप्र विज्ञानी। दशरथ भूप विज्ञ गुणखानी ॥
निमिकुल कमल दिवाकर बैना। सुनि पंडित पायो अति चैना ॥
कह्यो जोरि कर यथा निदेशू। लिखिहौं तिहि विधि नजि अँदेशू ॥
कौशलपाल यदपि बड़ राजा। पै इत नहिं कछु न्यून समाजा ॥
दोहा—अस कहि लाग्यो लिखन सो, दशरथ भूपति पत्र।
कनक कलित कागज़ ललित, करि मानस एकत्र ॥

अथ पत्रिका।

श्री श्री श्री श्री श्री सकल भूमंडलाखंडल विधि कमंडल निस्सरित सरितवत दिग्गज गंडमंडल कुंडलाकार सुयशधारक धर्मधुरंधर धरा धर्मप्रचारक रणधीर वीरशिरोमणि हंसवंशावतंस रघुकुल कमल विमल दिवामणि प्रताप ताप तापित दिगन्त दुरित दुअन सब काल दिग्पाल जाल मुकुटमणि नीराजितः चरण चारुनखचंद्र चक्रवर्ती चक्रचूड़ामणि महिपाल माल मंडित अखंडित अवनि उदंड महाराजाधिराज राजराज राजित अवध अवधेन्द्र दशरथ जू चरण समीप महीप मंडल मौलिमणि मंडित चरण सज्जन सुख ढरन भक्तजन कंठाभरण उत्तमाचरण चारि वर्ण धर्मशिक्षा करन ज्ञान विज्ञानानंद संदोह भरन वेदवेदांतोच्चरण वैराग्यानुराग प्रचंड चंडकर किरण क्षरण निमिकुल कुमुद कलानिधि महाराजाधिराज नरेन्द्रशिरोमणि सीरध्वज करकमल कलित सानंदन अभिवंदन विलसै रावरो कृपा पारावार धार बार बार पाय अपार संसार जनित दुख संहार भये हे महोदार। अवध भूभरतार ब्रह्मर्षि मुनि कुशिक कुमार संग परम सुकुमार मारहू के मदमार धर्म धराधार बलागार श्यामल गौराकार मनोहार रघुकुल सरदार रावरे कुमार नर नारि दुख विपिन उजारि ताड़का संहारि कौशिक मख करि रखवारि

गौतम गेहिनि उधारि जनकपुर पगु धारि रुचिर रचना निहारि मम पन विचारि रंगभूमि सिधारि सकल महीपन को मद गारि दिगन्त यश वितान विस्तारि हियनहारि मोहिं शोचसिंधुते उबारि नसारि कुल कीरति बगारि पङ्कज पाणि पसारि पुरारि पिनाक तिनुकाहीं सो तोरि दये सो हिय सुख न समात क्षण क्षण उछाह उदधि उमगात पुरजन परिजन व्रात अभिलाष यों जनात रघुकुल जलजात रवि दरश ह्वै जात सहित चतुरंगिनी सुभट विख्यात जनकपुर प्रविसात लग्न नगिचात ताते मानस त्वरात पत्र यह जात कृपावसात तात लै बरात वेगहिं पगु धारिये हरिप्रबोधिन्यांनिशानै ॥

सोरठा—यहि विधि पत्र लिखाय, चतुर चारि चारण दियो।
तरल तुरंग चढ़ाय, पठयो अवध विदेह नृप ॥

छन्द चौबोला ।

चारौ चारि चतुर चित चायल लै चीठी चटकीले ।
चले चटक चितवन के चोपी दशरथ भूप रँगीले ॥
बहुरि पुकारि कह्यो मिथिलापति कह्यो प्रणाम हमारो।
कौशलनाथहि कह्यो बुझाय तुराय नाथ पगु धारो ॥
करि प्रणाम धावन सुख छावन कटि फेटो खत कीन्हे।
चंचल चले चटक बाजी चढ़ि अवध पंथ गहि लीन्हे ॥
लग्यो काम जहँ जहँ मग शोधन तहँ तहँ किये पुकारा।
करहु शीघ्रता सकल शिल्पिवर शासन जनक भुआरा॥
लै अधिकारी कहे शिल्प सब सिद्धि सकल यह काजा॥
जब चाहैं तब पगु धारैं इत लै बरात महराजा ॥
यहि विधि देखत कहत चार ते जात तुरङ्ग धवाये ।
दिवस द्वैक महँ चले दिवस निशि कौशलपुर नियराये॥
मिथिला ते अरु कौशलपुर लगि भोथल नगर समाना ।

चंदिर सम अति सुंदर मंदिर थल थल में निरमाना ॥
दुग योजन में लखे अवधपुर महल अनेक उतंगा ।
श्वेत शरद जलधर समान वर मनहुँ हिमाचल शृङ्गा॥
करि प्रणाम धावन धोरन को अतिशय चपल धवाई ।
सरयू सलिल पियायो वाजिन पहुँचि अवध अमराई ॥
लाग बाग चहुँ ओर नगर के द्वादश योजन माहीं ।
लिखनचित्र लायकविचित्र अतिचित्र उवन कहुँ नाहीं॥
कनक कोट अति मोट शैल सम गुरज सुरज सम सोहैं।
परिखा पूरण सलिल विशद अति देवहु दुर्गम जोहैं ॥
त्रय त्रय योजन पर दरवाजे राजे तुंग अपारा ।
कनक कँगूरे भ्राजत हूरे पूरे रतन कतारा ॥
चढ़ीं तोप रिपु सैन लोप कर चोप आरसी कीनी ।
सावधान ठाढ़े रक्षक सब तक्षक तेजहि छीनी ॥
मंदिर विविध बने देवन के पुर बाहर प्रति बागे ।
सड़क स्वच्छ दोउ दिशन वृक्षयुत गच्छत घाम न लागे॥
फवैं फूल फल सकल ऋतुन के शाखा भूपर लोरैं ।
वन विचित्र नंदनहुँ चित्ररथ निज महिमा मद मोरैं ॥
केकी कीर कपोत कोकिलन कलरवचहुँकितछायो ।
सीर समीर धीरअति सुरभित वहत सदा मन भायो ॥
पहुँचि अवध उपबन विदेह के धावन सरयु नहाये ।
दै चंदन करिकै रविवंदन पहिरे वसन सुहाये ॥
करिकै कछु भोजन मन मोजन करि वाजिन श्रम दूरी।
साजु साजि पुनि चढ़े तुरंगन चले मोद भरि भूरी ॥
कनकदंड बहु रत्न खचित कर लघु लघु लगे पताके ।
नाम लिख्यो तिन महँ विदेह कर सूचक धावन ताके॥

राजमहलकी डगर बताओ पूछत पथिकन काहीं ।
निमिकुल नाथ निशान निहारत पथिक खड़े ह्वै जाहीं ॥
कुशल पूछतें बहु विदेहकी कहैं महित उन्माहू ।
मूर्धा राजभवन कहँ लागी चले पंथ यह जाहू ॥
यहिविधि पूछत जनक चार तहँ गये नगर दरवाजे ।
जनक नरेश निशान निहारत द्वारपाल छवि छाजे ॥
किय न चारिहु चारण वारण कुशल उचारण करिकै ।
जानि जनकके जान दिये तिन बड़े जान मुद भरिकै ॥
अवधनगर कीन्हप्रवेनशे मिथिलापतिके धावन ।
जात त्वरात चले यद्यपि ते निरखत नगर सुहावन ॥
दोहा--जा दिन दूत विदेहके, कीन्हे नगर प्रवेश ।
दशरथ कौशल्यालखे, ता दिन शकुन अशेश ॥

छन्द चौबोला ।

आकस्मात प्रसन्न भयो मन उर उपज्यो उत्साहू ।
जानि परत अस कहत चहत कोउ होत राम कर ब्याहू ॥
कौशल्या कैकयी सुमित्रा औरहु दशरथ रानी ।
वाम अंग फर्कत निरखैं निज मिटिगै मनहिं गलानी
दक्षिण भ्रुकुटि नयन भुज फर्कत दशरथके तिहिकाला ।
तैसहि भरत शत्रुसूदनके सूचत सुख अब हाला ॥
नीलकंठ पक्षी गृह आयो लगीं विमल दश आशा ।
वासर परम सुहावन लागत कोमल भानु प्रकाशा ॥
लाग्यो वहन मंद मारुत तहँ स्रवै सुरभि पयधारा ।
नभते भई कुसुमकी वर्षा वाजन लगे नगारा ॥
खसैं फूल देवन प्रतिमा ते क्षेमकरी थहरानी ।
बोलि उठे विहंग बहु रंगन तति कुरंग दरशानी ॥

लखिशुभसूचन शकुनकहहिंसब जुरि जुरि जनन समाज।
कौन अनूपम आनँद आवत अवधनगरमहँ आज ॥
राम विरह व्याकुल कौशल्या बोलि सुमित्रहि कहेऊ।
जबते मुनि लै गे लालनको तबते सुधि नहिं लहेऊ ॥
लषण मातु बोली प्रबोधि निहि आजु खबरि कछु ऐहै।
शकुन होत सिगरे सुखदायक यह निर्फल नहिं जैहै॥
वाकी रह्यो यामभरि वासर तब अजनन्दन भूपा।
बैठ्यो आय सभा सिंहासन भूषण वसन अनूपा ॥
पुरजन परिजन सज्जन सिगरे बैठ राज दरबारे।
सुहृद सखा सरदार सचिव सब जगतीपतिहि जुहारे ॥
तहँ सुयज्ञ जावालि कश्यपहु मार्कंडेय पुराने ।
वामदेव अरु मुनि वसिष्ठ तहँ आये सभा सुजाने ॥
उठि भूपति प्रणाम तिन कीन्हें वर आसन बैठाये।
जोरि पाणि पंकज विनीत ह्वै सादर वचन सुनाये ॥
आज शकुन बहु लखे नाथ हम जानि परै फल नाहीं।
चढ़े स्वप्नमहँ श्वेत शैलपर देखे इन्दु तहांहीं ॥
कछुक काल लगि सुनि विचारि तहँ भाष्यो अवध भुवालै।
लै चीठी अतिशय मन मीठी खबरि कही कोउ हालै ॥
यहि विधि करत वसिष्ठ भूपके सभा सुखित संवादा।
आये चारि चारु मिथिलाते राजद्वार मर्यादा ॥
दशरथ द्वारपाल देखे तिन छरी विदेह निशानी ।
सादर कुशल पूछि मिथिलाकी बैठाये सन्मानी ॥
तुरत जाय अवधेश सभामहँ ऐसे वचन सुनाये ।
धावन चारि पत्र लै आये श्रीमिथिलेश पठाये ॥
सुनि मिथिलेश पत्रकी आवनि लहि नृप मोद महाई।

कह्यो द्वारपालहि विदहक ल्यावहु इन लिवाई ॥
द्वारपाल धाये तुरंततहँ कहे जाय तिनपाहीं ।
भूप शिरोमणि तुमहि बुलायो चलिय सभा सुख माहीं ॥
ते विदहक धावन पावन पाये परम अनन्दा ।
निरखि अवधपुर राजभवन सब करत विचार मुकुन्दा ॥
धा अलकावात धा अमरवात ब्रह्मसदन धा आय ।
करिकै कृपा विकुंठधनी यह सरिस विकुंठ दिखाये ॥
धन्य अवधपुर धनि सरयू सरि धनि दशरथ महराजा ।
धन्य धन्य रघुकुल जगपावन जहँ प्रगटे रघुराजा ॥

दोहा—अस विचारि ते चार वर, चार चतुर चित लाय ।
चढ़े चन्द्रशाला चटक, चहुँकित चितवत चाय ॥

छन्द चौबोला ।

सभा द्वार पहुँचे जब धावन दशरथ सभा निहारे ।
सिंहासनासीन कोशलपति सुनासीर मदगारे ॥
लोकपाल सम भूमिपाल सब बैठे उभय कतारे ॥
ढालन सों ढालन करि चालन करवालन कर धारे ॥
बैठे रघुवंशी रिपुध्वंशी जगत प्रशंसी प्यारे ।
कलँगी सो कलँगी बिलँगी नहिं सान शूरतावारे ॥
अचल अचल इव मौन बैठ भट प्रभु मुख रुखहि निहारैं ।
इष्टदेव सम रघुकुल नायक अपने मनहिं विचारैं ॥
छाजत छत्र क्षपाकर शिरपर प्रगटत परम प्रकाशा ।
चारि चमर चालत परिचारक खड़े चारिहूँ आशा ॥
आतपत्र दुहुँ ओर लसत युग रवि शशि वदन बनाये ।
राम पिता पद सेवन हित मनु दिनकर निशिकर आये ॥
वंदी वदत खड़े विरुदावलि नचत अप्सरा भावैं ।

गानकरहिं गंधर्व गर्व भरि बाजन सर्व बजावें ॥
कनक छरी बहु रत्न भरी कर धरे खरे प्रतिहारा ।
निरखत नयन नरेश बदन वर कारज करत इशारा ॥
बैठ वसिष्ठ कनकसिंहासन भूप दाहिने ओरा ।
मार्कंडेय आदि मुनिनायक राजत नेत अथोरा ॥
सन्मुखखड़ेसुमन्तसचिववर नृपशासनअभिलाखी ।
भृकुटिविलास विचारि काजसब करतराजकरखराखी ॥
यहि विधि मिथिलाधिपके धावन पावन भूप निहारे ।
धर्मधुरंधर अवध अधीशैं धरामरेन्द्र विचारे ॥
कनक मुद्र कछु रत्न लिये कर यथा राज मर्यादा ।
चारों चतुर चार चलि सन्मुख भरे भूरि अहलादा ॥
पुलकित तनु करिकै प्रणाम सब दंड सरिस महिमाहीं ।
दीन्हें नजरि निछावरि कीन्हें कोशलनायक काहीं ॥
जोरि पाणि पंकज पुनि बोले अतिशय मंजुल बानी ।
महाराज मिथिलाधिराज इत पठये हमहिं विज्ञानी ॥
कह्यो रावरेको उराव भरि मिथिला राव जुहारा ।
बहुरि अनंदन वंदन भाष्यो भानु वंश भरतारा ॥
कह्योकुशल पूँछनको बहुविधि अपनीकुशलसुनावन ।
दीन्ह्यो बहुरि विचित्र पत्र यह रघुकुल मोद बढ़ावन ॥
अस कहि चतुर चार लै खत कर धरयो चरणके आगे ।
ठाढ़े रहे मौन चारौ चर अवलोकन अनुरागे ॥
धावन जानि विदेह भूपके राज राज रघुराजा ।
मोद महोदधि मग्न महीपति भये समेत समाजा ॥
लै विदेहको छिप्र पत्र कर दशरथ शीश लगाये ।
मानहुँ मिले विदेह आय इत अस आनँद उर छाये ॥

कह्यो राजमणि पुनि दूतन सों संयुत सकल समाजा ।
अहै कुशल कुल सहित सहानुज श्रीमिथिला महराजा ॥
लही खबरि बीते बहु बासर नहिं पत्रिका पठाई ।
प्राणहुँते प्रिय मित्र हमारे कौनि चूक चित लाई ॥
सत्य कहहु धावन विदेहके सबविधि कुशल विदेहू ।
भक्ति ज्ञान वैराग्य योग विद राखत सरस सनेहू ॥
दूत गहे पुनि पद वसिष्ठके बोले वचन सुखारे ।
कियो दंड सम प्रणत आपको स्वामी जनक हमारे ॥
दियो अशीश मुनीश मोद भरि पूँछी जनक भलाई ।
दूत कह्यो मुनि कृपा रावरी सब विधिते कुशलाई ॥
दोहा—अजनंदन पूँछो बहुरि, ये हो दूत सुजान ।
तुम जानौ कछु खबरि मुनि, कौशिक किहि सुस्थान ॥

चौपाई ।

दूत जोरि कर कियो बखाना । यह कस पूछहु भूप प्रधाना ॥
यह वृत्तांत विदित संसारा । देखिय रवि कहँ दीप उज्यारा ॥
जो ताड़का विश्व उत्पातिनि । मानहु महाकालकी नातिनि ॥
पुनि सुबाहु मारीच प्रचण्डा । दशकंधरके भट बरिबंडा ॥
विध्वंसक कौशिक मख केरे । तिनको जौन हाल सब हेरे ॥
कहत मोहिं लागत अति लाजा । हाँसी कर पूँछयो महराजा ॥
तुमहिं विदित कस नाथ न होई । नहिं जानत अस जग नहिं कोई ॥
जबते राउर युगल कुमारा । लैगे माँगि मुनीश उदारा ॥
तबते जे चरित्र तिन कीन्हे । ते जाहिर जगका कहि दीन्हे ॥
दूतन वचन सुनत अवधेशा । कह्यो आनि आनन्द अदेशा ॥
जबते मुनि लैगये कुमारे । मख राखन हित प्राणपियारे ॥
तबते दूत खबरि नहिं पाई । किहिविधि विपिनबसे दोउ भाई ॥

दोहा—सुनत दूत भूपति वचन, कहे वचन मुसक्याय।
खत बाँचे मिथिलेश को, सिगरी परी जनाय॥

चौपाई।

दूत वचन सुनि अवध भुआला। लग्यो पत्र बाँचन तिहि काला॥
जब बाँच्यो मिथिलेश जुहारा। उभय पाणि पंकज शिर धारा॥
सकल पत्रिका जब नृप बाँची। जानी राम लषण सुधि साँची॥
हर्ष विवश कछु बोलि न आयो। तनु पुलकावलि दृगजल छायो॥
पट मीठी चीठीमहँ देखी। मान्यो ईश्वर कृपा विशेखी॥
प्रथम भयो ताड़का सँहारा। मुनि मख राखि निशाचर मारा॥
तीजे गौतम नारि उधारा। चौथे जनकनगर पगु धारा॥
पँचयों शंभु चाप कर भंगा। सीता व्याह छठौं रसरंगा॥
ये खतमहँ षट लिखी मिठाई। बाँचि भूप रहिगे सुख छाई॥
करत विचार बाल वय थोरी। किहि विधि किय ऐसी बरजोरी॥
किहि विधि लाल ताड़का मारे। डरे न ताके वदन बगारे॥
द्वादश वर्ष बाल पै सींचा। किमि मारे सुबाहु मारीचा॥

दोहा—जानि परै नहिं कौन विधि, तारी शिशु मुनिनारि।
विश्वामित्र प्रभाव यह, और न परै विचारि॥

सवैया।

छोहरा द्वादश वर्षको मेरो सुकोमल कौलहुते कर दोऊ।
तापर कोई रह्यो वरको नहिं एक रह्यो लषणै शिशु सोऊ॥
शंभु कोदंड प्रचंड बड़ो न उठाय सक्यो रँगभूमिमें कोऊ॥
श्रीरघुराज कियो किमि भंग जे दूतहू आये कहैं सति वोऊ॥

दोहा—बालकको न बड़ापनो, विश्वामित्र प्रभाव।
मेरे सुतके करन सों, कियो सकल मुनिराव॥
रामविवाह विदेह कुल, भयो बड़ो उत्साह।

तातें कह्यो वसिष्ठसों, चलहु आशु मुनिनाह ॥

चौपाई ।

अस गुणि लै खत उठ्यो महीशा । धर्‍यो वसिष्ठ चरणमहँ शीशा ॥
विधि सुत पाणि पत्रिका दीन्हीं । जोरि कञ्ज कर विनती कीन्हीं ॥
यह सब नाथ तुम्हारी दाया । रंगभूमि रघुपति यश पाया ॥
बाँचिय खत विदेहकर आयो । तुव प्रताप मम शिशु यश पायो ॥
लै खत पुलकि मुनीशहु बाँचे । लहि सुखसिन्धु राम रति राँचे ॥
प्रेममग्न कछु बोलि न आया । जस तसकै बोले मुनिराया ॥
धन्य धरा तुम दशरथ राऊ । जासु राम सुत प्रगट प्रभाऊ ॥
भये न हैं नहिं होवन हारे । तुम सम भूप भानुकुलवारे ॥
अब दूसर नहिं करहु विचारा । तिरहुत चलहु बजाय नगारा ॥
राजसमाज समाज दराजा । लै बरात गमनहु महराजा ॥
कालिह सुदिन सुन्दर शुभ योगा । सजन बरातहि देहु नियोगा ॥
दशरथ कह्यो न मैं कछु जानों । आप रजाय सिद्ध सब मानों ॥

दोहा—सिगरे सचिवन बोलि अब, दीजै नाथ निदेश ।
उचित सकल उपदेश करि, पूजहु गौरि गणेश ॥

अस कहि गुरुपद पंकज बंदी । बैठ्यो सिंहासनहिं अनन्दी ॥
महामोद मण्डित महराजा । निरखि भई सब सुखित समाजा ॥
पत्र विदेह सुनन अभिलाषे । सचिव सुमन्त जोरि कर भाषे ॥
दोउ मूरति मंगल महराजा । उत मिथिला इत अवध दराजा ॥
मंगलमूल मोदकी खानी । पैरे विदेह पत्र पहिंचानी ॥
सुनन योग जो होइ हमारे । समाचार सुनि होइँ सुखारे ॥
सुनत सचिव विनती नरनाथा । दियो विदेह पत्र तिहि हाथा ॥
कह्यो सचिवदल बाँचि सुनावहु । सकल समाज महासुख छावहु ॥
तब सुमन्तदल बाँचन लाग्यो । सकल समाज सुनन अनुराग्यो ॥

राम लपणकी सुनि प्रभुताई। बुधि विक्रम वीरता बड़ाई ॥
सकल सभासद भये सुखारे। नयनन आनँद आँसु पनारे ॥
भे रोमाञ्चित सबन शरीरा। कहहिं जयति लक्ष्मण रघुबीरा ॥

दोहा—फैलन फैलन बात सो, फैली पुरपर्यंत।
इक एकन पूँछन लगे, नर नारी विहसंत ॥

चौपाई।

राम विवाह सुने तुम काना। पठयो पत्र विदेह सुजाना ॥
सो कह हमहुँ सुनी यहि भाँती। ईश करै द्रुत होहिं बराती ॥
यहि विधि इक एकन लगिकाना। पूँछहिं प्रजा न मोद समाना ॥
पूँछत पूँछत नगरी बाता। राम विवाह उछाह अघाता ॥
खेलत रहे सरयूके तीरा। युगल बंधु लै बालक भीरा ॥
भरत शत्रुहन सखन पठावैं। प्रथमहिं आवैं ते जित जावैं ॥
एक सखा तब पत्र जनायो। खबरि सहित पुर ते लै आयो ॥
सुनत खबरि धाये दोउ भाई। राजसमाज पिता ढिग आई ॥
करि वन्दन अतिशय अतुराने। लटपट अक्षर वचन बखाने ॥
पिता विदेह पत्र किमि आयो। सुनन हेतु हमरो चित चायो ॥
अबहीं देहु मँगाय सुनाई। कौन देश हमरे दोउ भाई ॥
कहां विदेह दूत जे आये। तिनसे मिलब हमहुँ सुख छाये ॥

दोहा—सुनत कुमारनके वचन, दीन्ह्यो पत्र मँगाय।
कह्यो जाय रनिवासमें, दीजै लाल सुनाय ॥

चौपाई।

पावत पत्र त्वरा उठि आई। बाँचन लगे खोलि दोउ भाई ॥
बाँचि सकल मिथिलापति पाती। पुलके युगल बंधु सुखमाती ॥
पिता पाणि गहि बोले बाता। तात चलब हठि हमहुँ बराता ॥
जनक जनकपुर कब पग धरिहौं। राम लषण लखि कब सुखभरिहौं ॥

नृप हँसि कह चलिहौ तुम लाला । तीन बंधु तुमहीं महिपाला ॥
कह वसिष्ठ उत गये जेते हैं । महिपाला धौं दूलह ह्वै हैं ॥
मुनिहि नौमि नृप दूत बुलाई । बोले बयन नयन जल छाई ॥
भैया माति माति दहु बनाई । निज नयनन देखे दोउ भाई ॥
यदपि लिखी मिथिलापति पाती । सो लखि मोरि जुड़ानी छाती ॥
कियो जनक भूपति व्यवहारा । निज कुमार सम गुन्यो कुमारा ॥
पै नहिं आवत मन विश्वासू । जस जग बालक सुयश प्रकासू ॥
होब विवाह सनातन धर्मा । अचरज लागत सुनि शिशु कर्मा ॥

दोहा—ताते मिथिलानाथके, धावन परम सुजान ।
सत्य सत्य वृत्तांत सब, मोसों करहु बखान ॥

कवित्त ।

डरत हुतो जो भौन प्रेत परछाहीं जानि,
ताड़का भयंकरी सो कौनविधि मारयो है ।
जात जो सहमि सुनि राक्षस किहानी कान,
मुनि मख राखि सो निशाचर सँहारयो है ॥
फटिक फरश खेलै कबहूँ न नारी कढ़ी,
गौतमकी गेहनी सो शिला ते निकारयोहै ।
भनै रघुराज साँची भाषौ तिरहूत दूत,
भूतपति धनु मेरो पूत तोरि डारयो है ॥ १ ॥
पूरब कहो जू कैसे जोहि जान्यो मिथिलेश,
कवि धौं जनायो है कवित्त पढ़ि दोहरा ।
कैसे रंगभूमि जाय नेक ना डराय मन,
महीके महीपनको मोरयो कैसे मोहरा ॥
भनै रघुराज दूत लागत अचर्ज मोहिं,
तोरिबो पिनाकीको पिनाक सुने शोहरा ।

जनक उछाह्यो ब्याह छोटा छमा छोहरीको,
कौशिक गये जो लै हमारो छोटो छोहरा ॥ २ ॥
दोहा—अवध भूपके वचन सुनि, अति विस्मय उर आनि।
जोरि कंज कर दूत दोउ, बोले मंजुल बानि ॥

कवित्त ।

महाराज सुनहु महीप मणिराबरेके डाबरेमेंजौनएक साँवरोकुमार है ।
तोरचोशंभुधनुपसरोपरंगभूमिमध्य मोरचोमहिपालनकोमदवेशुमार है
रघुराजसकलसमाजकोनिहारतही मिथिलाधिराजैलियोप्रणतेउवार है ।
भूपनप्रतापतीनोंभुवनप्रकाशकीन्ह्यो कैसेकरैंएकमुखसुयशउचार है १॥
मारे ताडुकाकोजाको देवहूडरातेहुते गयोपंथहीमेंपरितासुभरभेंटा है ।
राखिक्रतुकौशिककीसाखिजगमारेदुष्ट लावनकोकरैजैसेबाजझरपेटा है
रघुराजराजमणितारयोनारिगौतमकी रंगभूमिभूपनखलनखरखेटा है ।
दीपकलैपाणिमेंपतंगकोपरेखैकौन विश्वमेंविदितआपहीकोबरबेटा है ॥
दोहा—तुमहिं लग्यो अचरज सुनत, सो सति अवध भुवार ।
दीप करत उजियार घर, नीचे रहत अँध्यार ॥
धन्य धन्य तुम अवधपति, को नृप आप समान ।
जिनके पूत सुपूत दोउ, राम लषण बलवान ॥

चौपाई ।

चलहु नाथ अब सहित बराता । देखहु पूत सुपूत विख्याता ॥
मंत्री बंधु सुभट सरदारा । चलै संग सब सैन्य अपारा ॥
सुनि दूतनके वचन नरेशा । कह्यो वचन करि प्रेम विशेशा ॥
तुम नीके निज नयन निहारे । तनुते कुशल कुमार हमारे
जबते गये लषण रघुराई । तबते आज साँचि सुधि पाई ॥
नृप कह दोउ मुनि मुहिं अनुकूला । सोइ मोकहँ मुद मंगलमूला ॥
दूतन कह्यो कुशल दोउ भाई । उन्हैं देखि अब कोउ न दिखाई ॥
मोहिं विदेह नरेश बुलायो । सो सुनि अतिआनँद उर आयो ॥

हैं विदेह के सकल कुमारा । उनहीं को सब विभव हमारा ॥
नहिं कोशल मिथिला कर भेदू । जस विदेह वर्णन विधि वेदू ॥
आज करौं इत रैनि निवासा । मैं चलिहौं रवि होत प्रकासा ॥
पुनि अवधेश सुमंत बुलाये । हेरि कानमहँ बैन सुनाये ॥

दोहा—लाख लाख के आभरण, वसन तुरंग मँगाय ।
चारिहु दूतन देहु द्रुत, पठवहु नाग चढ़ाय ॥

चौपाई ।

सुनि सुमंत शासन नृप केरा । ल्याय विभूषण वसन घनेरा ॥
धर्‍यो चारिहू चारन आगे । कहे भूपमणि अति अनुरागे ॥
द्रुत दूत सकुचत मन मोरा । जो कछु देहुँ लगै सब थोरा ॥
तुम पुत्रनकी खबरि जनाई । हम जनु गये फेरि सुत पाई ॥
आज भयो अस मोद अपारा । बहुरि जन्म जनु लहे कुमारा ॥
उऋण जन्म भरि हैं हम नाहीं । और कहा कहिये तुम पाहीं ॥
पान फूल सम यह कछु जाई । लीजै दूत सनेह समोई ॥
देखि दूत पट भूपण भूरी । वाणी कही धर्मरस पूरी ॥
महाराज अब माफ़ करीजै । यही इनाम हमहिं अब दीजै ॥
धर्मधुरंधर ध्रुव अवधेशा । हमरे शिरपर आप निदेशा ॥
रंगभूमिमहँ जबते नाथा । तोर्‍यो शंभु धनुष रघुनाथा ॥
तबते गई विवाहि कुमारी । यह लीन्हों हम सत्य विचारी ॥

दोहा—जस हमार मिथिलेश प्रभु, तैसहि प्रभु अवधेश ।
पै कन्या धन लेत महँ, हमको परत भदेश ॥

चौपाई ।

अस कहि दूत मूँदि निज काना । दिय बहोरि पट भूपण नाना ॥
फेरि सुमंतहि वचन सुनाये । का बाकी जो हम नहिं पाये ॥
समधी राउ राम जामाता । लहे लाभ अस को न अघाता ॥

जबतें लखे लषण अरु रामा । नबतें लगत न कोउ अभिरामा ॥
पुनि देखे कोशलपति आई । सचिव गये सब भाँति अघाई ॥
अब पूरहु इतनी अभिलाषन । सम समधी निरखहिं इकआसन ॥
मिथिला नगर उछाह अवाना । कब देखहिं अवधेश बराता ॥
सुनि भुवालमणि दूतन वानी । आनँद विवश भरे दृग पानी ॥
कह्यो सुमंतहि दशरथ भूपा । दूतन डेरा देहु अनूपा ॥
सकल भाँति कीजे सत्कारा । लहैं सकल सुखसों भिनुसारा ॥
प्रभु निदेश अस सुनत सुमन्ता । दूतन चल्यो लिवाय तुरंता ॥
अति अनुपम अवास दिय वासा । जहाँ भयो सब भाँति सुपासा ॥

दोहा—करि भूपति दूतन विदा, कियो सभा बरखास ।
भरत शत्रुहन संग लै, गये आपु रनिवास ॥

चौपाई ।

कौशल्याके सदन सिधारे । तहँ सब रानिन भूप हँकारे ॥
है आसन आसीन भुवाला । राम मातु कहँ बोलि उताला ॥
बोले वचन अमीरस बोरे । नहिं समात आनँद उर मोरे ॥
धावन चारि विदेह पठाये । राम खबरिको खत लै आये ॥
आई यह आनँदकी पाती । सुनिकै सकल जुड़ावहु छाती ॥
अस कहि भरतहि कह्यो सुनावहु । महामोद मातन मन छावहु ॥
भरत बाँचि पत्रिका सुनाई । सो सुख इकमुख किमि कहिजाई ॥
राम विजय युत राम विवाहू । सुनि रनिवास उछाह अथाहू ॥
सुनि तिय लागीं मंगल गावन । एक एकसों कछु न बतावन ॥
भरयो भवन सुख जब न समाना । उमड़िचल्योजनुमिसिकलगाना ॥
राम मातु उत तुरत सिधाई । रंगनाथके मंदिर आई ॥
करि पूजन बहुविधि सन्मानी । पुरवहु सब सुख शारँगपानी ॥

दोहा—उतै सुमित्रा कैकयी, प्रेममग्न मन माहिं ।

व्याहसाज साजन लगीं, बोल्यो कुलगुरु काहिं ॥

चौपाई ।

सुन वसिष्ठ रनिवास सिधाये । राजा रानिन लखि सुख पाये ॥
नृप रानिन युत कियो प्रणामा । आशिष दीन मुनीश ललामा ॥
रंगनाथको पूजन करिके । कौशल्या आई मुद भरिके ॥
कौशल्या कैकयी सुमित्रा । गुरु सों बोलीं वचन विचित्रा ॥
हमहिं भयो सुख कृपा तुम्हारे । हिय न होत परतीति हमारे ॥
द्वादश वर्ष वैस मम वारे । कौन भाँति ताड़ुका सँहारे ॥
किहि विधि भे मुनिमखरखवारे । डरे न रजनीचरन निहारे ॥
कमलहुते कोमल कर जाको । हर धनुभंग सजत किमि ताको ॥
लाल करी मुनि बड़ी ढिठाई । भय विन राजसमाज मँझाई ॥
तब बोले मन विहँसि मुनीशा । कृपा सकल जानहु जगदीशा ॥
रघुकुलके बाँकुरे कुमारे । कालहुके रण जीतनहारे ॥
रानी कछु न करहु संदेहू । अब विवाह कारज मन देहू ॥

दोहा—कही कौशला कैकयी, गुरु जस देहु बताय ।
व्याहचार तस वेद विधि, करैं विशेष बनाय ॥

चौपाई ।

तब गुरु कह्यो सुनहु महरानी । कुलदेवन पूजहु सुखदानी ॥
इते गीत मङ्गल कर चारा । होई सहित विधान अपारा ॥
व्याहचार औरो सब जेते । मिथिला महँ ह्वैहैं अब तेते ॥
तब दशरथ गुरु निकट सिधारे । वंदि चरण अस वचन उचारे ॥
नाथ सभामहँ सचिव बुलाई । देहु त्वराय रजाय सुनाई ॥
कालिह पयान जनकपुर होई । सजै बरात चलै सब कोई ॥
सुनि नृप शासन ब्रह्म कुमारा । गयो राज कारज आगारा ॥
बोल्यो सचिव सुमन्त प्रधाना । आये मंत्रीगण मतिमाना ॥

दियो सुनाय नरेश निदेशा। कालिह कूच है तिरहुत देशा॥
राम विवाह बरात सुहावन। साजहु सकल साज छबि छावन॥
मंत्री सुभट बंधु सरदारा। रघुकुलके सब राजकुमारा॥
साज साजि मातंग तुरंगा। शकट पालकी तखत सतंगा॥

दोहा—साजि साजि आवैं सबै, साजि विख्यात बरात।
गोधूली बेला विमल, चलि है नृप अवदात॥
जे जे जिहि अधिकारमें, सावधान सब होइ।
करै जु आलस काजमें, दंडनीय है सोइ॥
अस निदेश नरनाथको, सचिवन सकल सुनाय।
भरि हुलास निज वासको, गवन कियो मुनिराय॥
छाय गयो सिगरे नगर, राम विवाह उछाह॥
घर घर मंगल गान तिय, लगीं करन भरि चाह॥

छन्द चौबोला।

कौशल्या कैकयी सुमित्रा औरहु दशरथ रानी।
पूजन लागीं रंगनाथको ईश गणेश भवानी॥
इष्टदेव कुलदेव देव वन ग्रामदेव कहँ पूजैं।
कुशल लखहिं दुलहिन दूलह कहँ मन अभिलाषा पूजैं॥
कारज करहिं नारि सब निज निज गावहिं मंगल गीता।
राम जानकी व्याह गान सुर दश दिशि करहिं पुनीता॥
व्यंजन विविध प्रकारनके रचि जाको जैसो योगू।
ते देवन कहँ देहिं तौन विधि पढ़ि पढ़ि मंत्रन भोगू॥
फूली फिरत राम की माता नहिं सुख उरहि समाता।
द्वार द्वार देवन को विनवति कहि कहि मंजुल बाता॥
गुरुजनको अभिवंदन करती सहज स्वभाउ सयानी।
दृग भरि देखब दुलहिन दूलह तुम्हरी पुण्य महानी॥

महल महलमचिरह्यो अवधपुर चहलपहल निहि रजनी।
कोउ गावै कोउ आवै जावै धामे धामे मजनी॥
भूम धाम पुर धाम धाम महँ काल्हि बरात पयाना।
आपु सजहिं आँगन कहँ साजहिं पट भूषण विधि नाना॥
दीपावली देव आलय महँ भवन बजारन माहीं।
करन बरात तयारी भारी नींद नयनमहँ नाहीं॥
करहिं विनयपुरजन देवन सों सपदि होइ भिनुसारा।
चलै बरात राम ब्याहन हित आसु बजाय नगारा॥
परी खरभरी ताहि शर्वरी करै हर्वरी लोग।
कहैं हर्वरी मेटि कर्वरी कब प्रभु करी संयोग॥
राम विवाह प्रमोद पौरजन देहिं द्विजातिन दाना।
करहिं जनकपुर जान तयारी नारि करहिं कलगाना॥
बाजि रहे घर घर बहु बाजन धरे कलश प्रतिद्वारा।
नौबत झरत राजमंदिरमहँ नादहिं निकर नगारा॥
गायक गण गावहिं गुण गर्वित मंजुल राग सहाना।
अति उत्कर्ष हर्ष वश लेते तीन ग्रामकी ताना॥
करहिं नर्तकी नर्तक नर्तन सर्तन करि विधि नाना
विरुदावली वदतं बंदीजन करि रघुवंश बखाना॥
कहुँ रथ चक्र होत घर घर रव नर्दहिं मत्त मातंगा।
कहुँ हय हेखन शोर मच्यो अति कोउ नहिं हीन उमंगा॥
आये जे विदेह के धावन पृथक पृथक तिन काहीं।
सन्मानी रानी मुद मानी लिये कछुक तिन नाहीं॥
पृथक पृथक पुनि अवध प्रजा सब दूतनको सत्कारैं।
लेत काहुकी कछुक वस्तु नहिं अपनो धर्म विचारैं॥
बढ़ी उमंग अयोध्यावासिन क्षण क्षण शंभु मनामैं।
बेगि दिखाउ कृपा करि लखैं लषण अरु रामैं॥

भरत शत्रुसूदन अति हर्षित नयन नींद बिसराई ।
मुदित करहिं मातनसे बातन कब देखब दोउ भाई ॥
यहि विधि देवी देवन पूजत करत बरात तयारी ।
निर्माणत भूषण पट बहु विधि सन्मानत त्रिपुरारी ॥
राम विवाह उछाहहि आनत ठानत गवन उमंगा ।
बचन परस्पर विविध बखानत सानत चित रति रंगा ॥
अपने कहँ जानत जिय धनि धनि भानत दुख संसारा ।
दान देत विप्रन प्रिय मानत छानत सार असारा ॥
विविध बरातिन को पहिचानत सन्मानत परिवारा ।
नहिं आनत नींदहिं निज नयननि होत भयो भिनुसारा ॥

दोहा—ब्रह्म मुहूरत जानि कै, उठ्यो सु कोशलपाल ।
प्रातकृत्य निरबाहि कै, करि मज्जन तत्काल ॥
अर्घ्य प्रदानादिक कियो, रंगनाथ पद बंदि ।
पहिरि विभूषण बसन वर, बैठ्यो सभा अनंदि ॥

छन्द चौबोला ।

मंत्रिन प्रजा महाजन सुभटन सरदारन कुलवारे ।
पौर जान पद सभ्य सुजानन कोशलपाल हँकारे ॥
आये सकल सभा मंदिर महँ दशरथ राज जुहारे ।
सहित समाजन यथा योग्य तिन प्रतीहार बैठारे ॥
तब सुमन्त को पठै तुरन्तहि गुरु वसिष्ठ बुलवायो ।
राम काज को काज जानि तहँ मुनिवर हरबर आयो ॥
पद अरविंदन बंदन करिकै कनकासन बैठायो ।
आज जनकपुर चलन चाय चित चारु निदेश सुनायो ॥
कनक रजतके रत्न खचित युत हौदन त्यों अंबारी ।
झूलैं जरतारिनकी झूलैं दश हजार गज भारी ॥

युगल देन के चारि दन्त के भूषण कनक सवारे ।
चलैं दुरद बिरद कद के मिथिले संग हमारे ॥
पंचलक्ष अति स्वच्छ साज के गच्छे दक्ष सवारे ।
मन्मथ कृत मनु तीन लक्ष रथ पथ पर रहहिं तयारे ॥
अहलादे दश लक्ष पयादे जादे नख शिख सोहै ।
चलहिं विख्यान बरात संग महँ जिन लजात सुर जोहैं ॥
वृषभ शकट अरु ऊँटजूट बहु खच्चर खचर खासे ।
रत्न जालकी विविध पालकी तिमि नालकी कलासे ॥
पुहुप विमान समान विमानहु महा यान मनहारी ॥
तामजाम अरु तख्त रमानहुँ चलै समान तमारी ।
चलहिं धनिक सब अवध नगर के अर्ब खर्ब धन लीने ॥
खाली रत्न विभूषण संयुत बड़ लघु नवल नगीने ।
साजि साजि सब साजु समाजन चलहिं अवधपुरवासी ।
औरहु जाति ज्ञाति सम्बन्धी लेहु बोलि छवि रासी ॥
रघुकुलके सब राजकुमारन सुकुमारन बुलवाई ।
लेहु बरात संग करि सादर निउतो भवन पठाई ॥
देवलोक ते गन्धर्वन को अरु अप्सरन बुलाई ।
मही मंगला मुखिन सुखिनको दीजै प्रथम चलाई ॥
जे प्रिय गायक लायक सब विधि नाटक कर्म सुजाना ।
नर्तक अरु नृत्यकी अनेकन करनाटकी महाना ॥
औरहु जगके विविध गुणीजन संगहि करहिंपयाना ।
पण्डित शास्त्र अखण्डित मण्डित संसदि सपदि चलाना ॥
कविकोविद वन्दीजन सज्जन सुहृद सखाअतिप्यारे ।
परिजन पुरजन गुरुजन लघुजन चलैं स्वरूप सँवारे ॥
देहु सुमन्त वसन भूषण वर यथा योग्य सबकाहीं ।

कौनिहु वस्तु हीन नहिं कोइ रहे बरात सदाहीं ॥
शिविका अश्व नाग रथ वाहन वाहन हीन न दीजे ।
चलहि बजार अनेक संगमहँ कौनिहु वस्तु न छीजे ॥
शिविर अनेकन भाँति रंग बहु कनक रजत जरतारी।
तिमि नेपथ्य वितान विशद बहु रविशशि सम द्युतिभारी ॥
राजासन अरु विविध सुखासन गुल गुल गिलिमगलीचे।
फटिकफरशइवबृहद फरश बहु सुरभित सलिलनसींचे॥
सभासाज सब सुखद सजावहु करन हेत व्यवहारा ।
भोजन भाजन चलैं विविध सब होन हेत ज्यवनारा॥
चारिहु कुँवरनेक विवाहकी सामग्री लै चलिये ।
कौनसमय किहिभाँतिईश गति जानि न जायअतुलिये ॥
जबते चलै बरात अवधते आवत अवध प्रयन्ता ।
तबते विमुख जाय नहिं कोऊ सन्त असन्त अनन्ता ॥
-एक यान गुरु हेत वर, एक हमारे हेत ॥
अति उत्तम सब साज युत, आनहु द्वार निकेत ॥
मार्कंडेय मुनीश वर, कल्पांतायुष सोय ।
देहु तिन्हैं स्यन्दन विशद, मारग श्रम नहिं होय ॥
कात्यायन जाबालि मुनि, वामदेव मतिमान ।
रथ दीजै सब कहँ बृहद, आगे करहिं पयान ॥
औरहु ऋषि मुनि द्विजन गण, आगे करहिं पयान ।
चलहिं महाजन मध्यमें, पुनि मम गुरुको यान॥
बीच बीच सैना सकल,निज निज वृंद बनाय।
चलहिं सकल सत पंथ गुनि, पंथ पयान सुहाय ॥

छन्द चौबोला।

सबके आगे सुतर सवार अपार शृँगार बनाये ।

पुर जमुरुक तिन पीठिनपर मढ़िन निसान सुहाय ॥
फेरि चले बाजी मंडल करि सजि सवार प्रवीर।
शत्रुशाल तिनके मधि सोहैं चढ़ि बाजी रणधीर ॥
गज मंडल पुनि चलै अमंडल बँधे होद अंबारी।
शत्रुंजय गजमें सवार ह्वै भरत चलैं शुभकारी ॥
पुनि पैदरकी भीर चलै सब वृन्दन वृन्द बनाई।
वर्ण वर्णके यूथ यूथ सब सायुध सजे सुहाई ॥
जौन वर्णको यूथ वर्ण सोइ तहँ तहँ रहै निशाना।
गजमंडल पीछे रथमंडल तहँ तुम होहु प्रधाना ॥
तिनके पीछे पुरवासी सब सहित महाजन नाना।
सभ्य सभासद औरहु जन सब चलहिं बजार महाना ॥
गुरु वसिष्ठ अरु हम तिनके अनु लै परिचर प्रतिहारा।
नहि गतिमंद न गतिद्रुत चलिहैंयहिविधि चलनविचारा॥
चलहिं निषाद राजसेनाके पीछे लै निज सेना।
शोधन करत सकल मनुजनको कोउ थकि कहीं रहैना॥
ऊंट जूट वड़वा वृषभादिक शकटादिक भरि भारा।
चलहिं निषाद राजके सँगमें बालक वृद्धहु दारा ॥
यहि विधि चलै बरात जनकपुर बीचहि चारि मुक़ामा।
यत्नकरहु यहिविधि सुमन्तसब चतुरसचिव तुव कामा ॥
अहै मुहूरत शुभ गोधूली चलन बरात हुलासा।
ताते आज तीर सरयूके होय सुपास निवासा ॥
यहि विधि शासन दै सुमंतको उठन लगे महराजा।
आयेचारि विदेह दूत तहँ त्वरा करावन काजा ॥
कोशलपाल कमलपद वंदे कहे कमल कर जोरी।
गवन विलंब अंब नृप राउर आलस जनी न थोरी ॥

तब पुनि कह्यो विहँसि गुरुसों अस अब विलम्ब नहिं काजा ।
जस जस मोहि त्वरावत धावन तस तस लागति लाजा ॥
दूतनसों पुनि कह्यो अवधपति गोधूली शुभवेला ।
चली बरात जाय सरयू तट रहिहै अब नहिं झेला ॥
जाहु दूत दीजै विदेहको आसुहि खबरि जनाई ।
चौथे दिवस दरश करिहैं हम मिथिलापुरमहँ आई ॥
मुनिके दूत अकूत मोद लहि चले तुरत तिरहूता ।
गये दान मंदिर दशरथ इत बोल्यो विप्रन पूता ॥
हय गय भूमि कनकपट भूषण धेनु धाम धन वेसा ।
किये दरिद्र हीन जग याचक राम लषण उद्देसा ॥
फेरि गीत मंगल करवायो संयुत वेद विधाना ।
कौशल्या कैकयी सुमित्रा नृप रानी तहँ नाना ॥
रंगनाथको पूजन करिकै गौरि गणेशहु पूजी ।
करिकै सकल शृंगार सहचरी रति रंभा जनु दूजी ॥
वृन्द वृन्द युवती तहँ गावत मंगल गीत सुरीली ।
चलीं मृत्तिका लेन सरयु तट आनँदरली रँगीली ॥
बन्यो कनकको महामनोहर मंडप रत्न जडीलो ।
मनो मदनको सदन अनूपम सुर मुनि चित्त गड़ीलो ॥
लै विधि युत सरयू तट ते मृदु गावत मंगल गीता ।
लै आईं मंडपहि मृत्तिका परिचारिका पुनीता ॥
कौशल्या कैकयी सुमित्रा कियो व्याहको चारा ।
इष्टदेव कुलदेव पूजि सब आनँद भयो अपारा ॥

दोहा—खैर भैर माच्यो अवध, सुंदर सजी बरात ।
गोधूली बेला सुभग, आई अति अवदात ॥

छन्द [illegible] ।

[illegible] शुभ मंगल कुमकुम अमल [illegible] ।
[illegible] [illegible] ॥
[illegible] आवो [illegible] ।
दधि दूर्वा तंदुल [illegible] ॥
मुनि वसिष्ठ [illegible] ।
मंगल कुमकुम [illegible] ॥
दधि दूर्वा तंदुल कर [illegible] ।
लखिहौं राम चारि दिन बीते अस कुगि [illegible] ॥
उठ्यो चक्रवर्ती आसनतें मंद मंद पगु धारयो ।
पढ़त स्वस्त्ययन विप्रमंडली [illegible] ॥
कनककलश धरि शीश सहस्त्रन [illegible] नारी ।
कराहिं मंगलामुखी गान बहु मंगल [illegible] ॥
रति रंभा मेनका उर्वशी सरिस चलीं [illegible] आगे ।
जय जय शोर चारिहूँ ओरन करहिं [illegible] अनुरागे ॥
नारी वर्षि वर्षि लाजा शुभ गावहिं मंगल गीता ।
बिज्जु छटासी चढ़ीं अटामें कनककलश छबि सीता ॥
गुरुवसिष्ठ आगू पगुधारे पाछे कोशल भूपा ।
सोहत मनहुँ देवगुरु संयुत देव अधीश अनूपा ॥
यहि विधि चारु चक्रवर्ती नृप चारु चौक पगु धारा ।
भरत शत्रुहन सजे खड़े तहँ सुंदर युगल कुमारा ॥
प्रथम वसिष्ठ चढ़ाये स्यंदन दश स्यंदन नृप राऊ ।
लगी तोप तडपन तिहि अवसर परयो निशानन घाऊ ॥
भयो सावर भूप निज रथमें मणिगण अमित लुटाई ।
आठ आठ घोड़े रथ जोड़े हीरन साज सजाई ॥

छाजत छत्र अप करकी छवि चमर चलैं चहुँ ओर ।
आगे बाजिन्ह चलहिं चारि शशि मनुमधि अग्नि किशोर ॥
भरत शत्रुसूदन सुमंत को कह्यो बुलाय नरेश ।
सैन चलावहु जौन भाँति हम प्रथमहि दियो निदेश ॥
करि अभिवंदन रघुनन्दन पद तीनहुँ गये तुरंता ।
रिपुहन हयगण भरत नागगण रथगण रच्यो सुमंता ॥
चली बरात अवधपुरते तब करि दुंदुभी धुकारे ।
नौबत झरन चली नागनमहँ रव करनाल अपारे ॥
सकल अवधपुर नारि मनोहर गावहिं मंगल गीता ।
दूलह दशरथ लाल राम दुलहिन वैदेही सीता ॥
छैल छबीले राजकुँवर सब शत्रुशालके संगा ।
क्षण क्षण क्षितिमहँ नचन चलावहिं चंचल चारु तुरंगा ॥
मुकुट कनककुंडल हिय हारन पीत पोशाक सँवारे ।
पटुका पाग छोर छहरे क्षिति झरैं मुकुत जनु तारे ॥
कहूँ धवावैं कहूँ कुदावैं वाजिन राजकुमारा ।
झमकावैं असि कला दिखावैं रिपुहन पाय इशारा ॥
चमकावैं नेजा अति तेजा मेजा कहूँ मिलामै ।
रेजा रेजा किये करेजा जिन शत्रुन संग्रामै ॥
बजैं निशान वृन्द वृन्दनमहँ फहरैं वृन्द निशाना ।
राजकुमार देव सम सोहत रिपुहन जनु मघवाना ॥
यहि विधि चल्यो तुरङ्गममंडल सुतर सवारन पाछे ।
राखे अभिलाषे अपने मन राम लखन कब आछे ॥
नवयौवनकी लसति अरुणिमा तिमि बीरी मुखलाली ।
गोरे वदन सदन शोभा जनु उदित अमित उडुमाली ॥

दोहा—छोरे छबीले छयल सब, क्षण क्षण सुछवि अछाम ।
क्षितिनायकके छोहरनि, छूटति छूट ललाम ॥

छन्द चौबोला ।

बाजीमंडल के पीछे पुनि मंडल चल्यो गयंदा ।
मनहुँ पवन पुरवाई पावन उदय श्याम घन वृन्दा ॥
बारन बदन मदन विराजहिं हाटक बँधे मुहाले ।
मनहुँ उवन शशि श्याममेघ मधि उभय नीकछवि माले ॥
तुंग वितुंड शुंड फटकारन सीकर छिड़ पुरटकी ।
मनहु श्याम घन मंडल में छवि क्षण क्षण में क्षणछटकी ॥
जड़ित जवाहिर हौद हेम के लसैं अमित अँबारी ।
मनहु विंध्य मंदर शृङ्गन में सुर मंदिर छविकारी ॥
झलनकी झनकार मची तहँ घन घंटा घहनाने ।
नदत नाग माने मग जाने दिगदन्ती सकुचाने ॥
रघुवंशी सोहत अरिध्वंसी सिंधुर सजे सवारा ।
औरहु भूरि भूमि के भूपति केते राजकुमारा ॥
ढालैं करवालैं कर लीन्हें कसी कमरमहँ डालैं ।
झूमत झुकत मुच्छ कर फेरत उरमालैं उरमालैं ॥
मन्द मन्द सब चलत पंथ महँ हँसत बनात बरानी ।
एक एक सब लोकपाल सम राजत राज सजानी ॥
टूटत पंथ तरुनकी शाखा लागत हौद दरेरे ।
मत्त मतंग गंड मंडल मंडल मिलिंद करि घेरे ॥
शत्रुंजय गजेन्द्र गजमंडल मधिमें भ्राजत भारी ।
राजकुमार सवार भरत तिहि राजत जन मनहारी ॥
प्रमुदित मनहु मयङ्क उदित उदयाचल कर पसराई ।
सकल शैल शृङ्गन पर सोहत तारागण समुदाई ॥
गजमंडल के पाछे सोहत रथमंडल नहिं दूरे ।
वर्ण वर्ण वाजिनकी राजी राजि रही मग रूरे ॥

सुभट शूर सरदार सभ्यजनन सज्जन सुकवि सुजाना ।
चढ़े सकल स्यंदन गमनत पथ भूषण भूषित नाना ॥
पुनि रणधीर भीर प्यादन की सायुध चली अपारा ।
चमकहिं तेग भाल कुन्तनकी सिंधु तरंग अकारा ॥
रथमंडल पीछे पुनि सोहत परिकर भूपनि केरो ।
कनक दंड कर लहि हजारन रत्नन होत उजेरो ॥
हाटक के छोटे सोटे कर पंचानन आननके ।
धरे कन्ध सोहत अति सुंदर अवध जनन ज्वानन के ॥
सोहत वल्लम विविध प्रकारन छरी हजारन हाथा ।
पीत वर्ण पहिरे पट भूषण चले जात प्रभु साथा ॥
जे सेवक कौशल नरेशके गमने राम बराता ।
कड़े करन कठुला कंठनमें कुंडल कान सुहाता ॥
युग स्यंदन सवार सोहत तहँ दिगस्यंदन मुनिराई ।
मनहु देवनायक संग सोहत वाचस्पति सुखछाई ॥
चारि चमर चहुँ ओर विराजैं छत्र क्षपाकर छाजैं ।
अंशुमान इव आतपत्र युग विशद विजन बहु भ्राजैं ॥
विविध किनाके परमप्रभाके फहरैं विपुल पताके
जिन ताके छाके सुरमानस अरुझाने रवि चाके ॥
कोशलपति पीछे पुनि गमनत राजत राज निषादा
लीन्हें भीर निषाद भटनकी हय चढ़ि विगत विषादा ॥
ऊँट जूट ठट्ठन शकटनकी भरे साजके भारे ।
खच्चर वृषभ अनेक जातिके लै सब साज सिधारे ॥
यहि विधि चली बरात जनकपुर अवध नगरते भारी ।
कुशल कहहिं लखि राम लषण को पूजी आश हमारी ॥

सोरठा—उड़ी धूरि तहँ भूरि, पूरि रही अति दूर लौं ।
भरी गगनलौं भूरि, भूलि गये पथ गगन चर ॥

बाजत अनेकन बाजनें दस दिसान छाय अपार ।
तंबूर ढोलहु ढक्क डिंडिम पणव पटह निसान ॥
मंजीर मुरज उपंग मृदु मुहँचंग नफिरि नगार ।
बाजत विशाल करनाल त्यों करताल तालक संग ॥
झल्लरी झर झर झांझ मांझ सुहावनी झनकार ।
गहि पूरि ध्वनि डौंरुन अनेकन मन्य नागाधार ॥
बहु विधि विपंची सुर प्रपंची रची श्रुति मनहारि ।
बहु विगुल सुगुल बजावहीं जनु बुलबुल सुरन उचारि ॥
ध्वनि धरणि धौंसनि की छई नाचन झुरन मग जाति ।
झिंझिन झनक श्रुति प्रिय अनक बाजन स्वाबहु जाति ॥
जागर करत अलाप विरद कलाप भूप प्रताप ।
अतिशय सिताबी चढ़े बाजिन करत अरि उर ताप ॥
बंदी विरुदपक बदत बहु विधि सुयश युक्ति समेत ।
यह भानुकुल कीरति उदधि लौं व्यापि पंथ सपेत ॥
हिम शैल सित हर शैल सित सित क्षीरनिधि सित चंद ।
भुवि भरत भरत सुगान सविस्थो सुयश रघुकुलचंद ॥
निकसी बरात अपार दल करि सकै कौन बखान ।
कंपति धरणि गिरि नगिरनि की शेष डरनि सकान ॥
लै लै विमानन विविध आनन विबुधवृन्द हँकारि ।
नभ विबुधपति आयो विलोकन जक्यो विभव निहारि ॥
मनमहँ कहत शतवाजि मख करि लहत जनपद मोर ।
अब देखि दशरथ साहिबी मुहिं लगत स्वर्गहु थोर ॥
त्रैलोक शासन करन समरथ अहै दशरथ आज ।
कहु कौन अचरज ताहि जिहि जगदीशसुत रघुराज ॥

अब चलहु संगहि संग बरसत सुमन मन हरषात ।
मुहिं आज आये काम नयन हजार लखन बरात ॥
यहि विधि सुभाषत देवपति लै देवगण नभ आय ।
सुरभित सलिल कन झारि मृदु वर्षत कुसुम समुदाय ॥
जब कढ़ी कोशल नगरते मैदान माहिं बरात।
तब भयो देखत भोर मानहुँ सिंधु छितिय दिखात ॥
उठतीं अनेकन तरल तुंग तरंग तरल तुरंग ।
मातंगगण शिशुमार कच्छप नाव रथ बहु रंग ॥
गाजन रनन भूषण रनन जल गाम दरश उमंग ।
लघु बृहद मीन अनन्त पैदर शंख शंख सुढंग ॥
वाड़व अनल दशरथ प्रताप जलेश कौशलराय ।
उड़तीं मरालन की अवलि सुनिशानगण फहराय ॥
बहु ऊँट जूट सुवृषभ खच्चर विविध जलचर जीव ।
चहुँओर वाजिन शोर सन्य हिलोर शोर अतीव ॥
अतिशय अपार बरात सिंधु विख्यात विश्व सुहाय ।
लखि राम पूरण विधुवदन कितनो अधिक अधिकाय॥
सोरठा—यहि विधि चली बरात, रघुपति व्याहन जनकपुर ।
सरयू तट नियरात, भूपति कह्यो सुमंतसों

छन्द कामरूप ।

अब आज अधिक न जात बनत मुकाम सरयू तीर ।
यह पहिल वास सुपास सब कहँ जई जुरि सब भीर ॥
सुनु सचिव मन अभिलाष पूरण कियो मोर मुकुंद ।
साधक सकल गुरुकी कृपा ह्वैहैं अनेक अनंद ॥
तुम जाहु सैननिवास करवावहु सुपास समेत ।
हम चलब पाछे गुरु सहित जहँ शिविर सरिस निकेत ॥

अस कहि चित्राकार सचिव कहँ पुनिकह्यो कुरुवंशभूप ।
यह साहिबी मन ल्याइवी निज कृपा फल अनुरूप ॥
शिशु लह्यो सुयश अथाह होत विवाह परम उछाह ।
सो कृपा रावरि मूल और न मोहिं छितिमहँ छाह ॥
देखहु शकुन सब होत सुंदर शुभ जनावत जात ।
दिशि वाम चारा नीलकंठ विहंग लेत दिखात ॥
यह शकुन सूचत सकल शुभ मुद अधिक आगे होत ।
शुभ खेत दक्षिण ओर वायस लखे जन मुद सोत ॥
पाय नकुल को दरश सब चल दल विटप की छांह ।
शीतल सुमंद सुगंध लगत सुपीठ पवन प्रवाह ॥
धरि कुंभशिर भरि सलिल बालक अंक लीन्हें नारि ।
देखी परी बहु पंथ महँ यह शकुन लेहु विचारि ॥
लोवा दरश बहु बार दीन्ह्यो आय चारिहु ओर ।
सुरभी पियावति वत्स सन्मुख लखे सुंदर ठोर ॥
फिरि फिरि सुआये दहिन दिशि मृगमाल यात्राकाल ।
मनुदियो सकलवनाय शुभ तुव कृपा फलहिकृपाल ॥
ग्रहगन क्षेमकरी सुमस्तक उपर सूचक क्षेम ।
श्यामा सुवामा वैठि तरुपर लखे जन भरि प्रेम ॥
गुरु गवन करते भवनते देखे सबै दधि मीन ।
कर लिहे पुस्तक विप्र युग अध्वनि सुधर्म धुरीन ॥
अति विंदु सूक्षम सलिल वरषे किये मृदुलगराज ।
छाया किये घन गगन शुभ दरशाउ जनु सुरराज ॥
अंबर उडत हंसावली भइ विमल तारा जोति ।
अति मन प्रसन्न प्रजानिके निशि तम न भूरि उदोति ॥
यह सकल राउरकी कृपा फल सुनहु ब्रह्मकुमार ।

अवधेश हमहिं निदेश अस मिथिलेश दीन बुलाय ।
जबनें चलहिं कोशल नगरतें कोशलेश स्वराय ॥
तबतें सुभोजन पान सामग्री दियो तुम जाय ।
जो लगै खर्च बरातको सो लिह्यो सकल उठाय ॥
लघु मनुजहूको संच कियहु विसंच रंच न होय ।
अब होय हमरे शीश शासन नाथ तुमसम दोय ॥
मुनि सचिव वचन विचारि भूप विदेहको व्यवहार ।
मिथिलेश केर निदेश जस तस हमहुँ को स्वीकार ॥
अस कहि वसिष्ठ चढ़ाय स्यन्दन चढ्यो स्यन्दन आप ।
बाजन भये तिहि समय बाजन विविध सुरन कलाप ॥
पूरब कियो जिहि भाँति वर्णन तौनि रीति बरात ।
गमनी सुमिथिला पंथ गहि करि धूरि धुंध अघात ॥
मानहु महीप निजकुँवरि व्याह विचारि अतिसुखमाति ।
मिसि रेणुके विधि लोकको विधिको निमंत्रण जाति ॥
सर नदी नारे परत जे मग रहे जल भरि पूरि ।
आगे चलत ते लहत जल पाछे चलत ते धूरि ॥
पापाण परहिं जे पंथमहँ ते होत रेणु समान ।
युग कोशको विस्तार भरति बरात करत पयान ॥
दोहा—जहँते चली बरात मग, जहँ पुनि रह्यो निवास ।
तहँलों हय गय रथ मनुज, भरे चलत सहुलास ॥

छन्द गीतिका ।

रघुवंश कुलकी जब बरात गई सुगंडक तीरमें ।
करि पान सुधा समान मेटे प्यास निर्मल नीरमें ॥
आये वसिष्ठसमेत रघुकुलकेतु जब तिहि वासमें ।
तब विनय कीन विदेह सेवक राजमणि मुनि पासमें ॥

मिथिलाधिपति रचवाय राख्यो आप उतरन मंदिरै ।
उतरे तहाँ चलि अवधपति जनु रच्यो निज कर इंदिरै ॥
मुनि भूप मुदित पधारि कीन निवास विमल अवासमें ।
सैनिक सकल सरदार राजकुमार बसें सुपासमें ॥
सब पृथक पृथक बसे सुभौन भयो न कहु साँकरो ।
परिजन स्वजन पुरजनमहाजनसहित निजनिजचाकरो ॥
गज वाजि ऊँटन अनडुहनके भिन्न भिन्नहि थान हैं ।
मिथिलेश परिचर करत भे व्यवहार भोजन पान हैं ॥
जिहि वस्तुकी रहि चाह जाको मुखनते न बखानहीं ।
दीन्हें बगतिन पूरि निकटहु दूरि सबन समानहीं ॥
सब करहिं जनक बखान पंथ महान लखि सनमानको ।
सबको भयो अस भान कीन पयान निजहि मकानको ॥
संध्या उपासन कियो साँझहि गंडकीतट जायकै ।
बैठ्यो बहुरि अवधेश आलै सभा सुखद लगायकै ॥
आये अनेकनराज राजकुमार नृप दरबारमें ।
सब कहत कोउ न विदेहसम नृप भयो यहि संसारमें ॥
वर ज्ञान मान विराग मान सुजानबृंद प्रधान है ।
पायो नरेन्द्रसमान समधी सत्य यह अनुमान है ॥
पुनि कह्यो सचिव सुमंत कालिह कहां अराम मुकाम है ।
नृप कह्यो जहँ जहँ जनक सेवक कहहिं तहँ विश्राम है ॥
अतिशय त्वरा लागी लखनकी लषणकी प्रियरामकी ।
परसों पहुँचिमिथिलापुरहिनिरखवसुछांवेआभेरामकी ॥
सुनिकैसभासद अभिलषितनिजनिजअयनगमनतभये ।
भूपति सभा बरखास्त करि कियशयनअतिआनँदमये ॥
असवार युगल हजार लागे भ्रमण चहुँदिशि शयनके ।

लगि रामदरशन आश नींद न निकट आई नयनके ॥
पयपंथ सुधाकर सुधाकरनि पसारि सकल दिशानिकै ।
कीन्ह्यो विलास अकाश कुमुद विकास महि दिशानिकै ॥
लीन्हे अखंडल नाग मंडल करन गगन पयानहैं ।
मनु जात संग बरातके शशि राम दरश लुभान हैं ॥
शीतल सुगंध समीर बहत सुधीर जनु बनि धावनो ।
अवधेशको मिथिलेशपै द्रुत जात खबरि जनावनो ॥
बीति त्रियामा याम त्रय बाकी रह्यो जब याम है ।
बाजे नगारे कूचके जन सकल पायन काम है ॥
सुनि दुंदुभीन धुकार खरभर परी हरबर सैनमें ।
नरवर उठे हरि हर सुमिरि मज्जन किये अति चैनमें ॥
आगे सवार कराय गुरु गमन्यो नरेश प्रभातही ।
चतुरंगिनी सुखरंगिनी सरनी बरात सुहातही ॥
आगे सुतर पुनि वाजिमंडल नागमंडल पुनि लसै ।
मंडल अखंडल पैदरनको देव वृंदनको हँसै ॥
पुनि खास सेवकवृंद सोहत तासु मध्य महीप है ।
जिमि विष्णुके ढिग ब्रह्म राजत तस वसिष्ठ समीप है ॥
तादिन रथन मंडल लिहे नृप अनुविभान सुमन्त है ।
शिबिका सुखासन आदि वाहन तासु अनुग अनन्त है ॥
दोहा—ऊँट जूट अनडुह शकट, भरे साजु ते भूरि ।
चल्यो निपाइ अधीश लै, निज दल सहित न दूरि ॥

छन्द चौबोला ।

करि दूत गये अवधपुर लै विदेहकी पाती ।
जोरि पाणि कीन्हें पदवंदन आय तीसरी राती ॥
दूत विलोकि विदेह विनोदित कहे कुशल सब आये ।

कहहु कुशल कोशल भुआलकी कब पैहैं सुख छोरे ॥
इनन कही मखारि नहँकी सब नृप गनिवाम उगाऊ ।
धौनि गौनि पुनि लै बरातको बरण्यो चलनि स्वभाऊ ॥
पुहुमीपति यहि पुरहि पहुँचि हैं परसों महिनखगाना ॥
कही प्रणाम आपको बहुविधि दशरथ विदयनिस्वाना ॥
दशरथ सुनी हमरो दिनकर विभव सरिस सुखदाना ।
का कहिये सागर नाके सुन भये लपण रघुराना ॥
गदरी कुशल पूछि कोशलपति हमहिं बहुत सत्कार ।
निशिदिन दुपहर हमहिंबिदाकरि साँझ आपपगुधार ॥
प्रथम वास सरयू तट ह्वै है दूसर गंडकि तीरा ।
तृतिय वास इनते युग योजन परैं सिलन मनिधीरा ॥
नाथ कृपा हमपर कीन्हें अति दीन्हें अवध पठाई ।
अति अभिराम रामपुर देख सुखमा वरणि न जाई ॥
आवत सुनत अयोध्याधिपकी प्रेम मगन मिथिलेशू ।
अगुवानी साजनके कारण सचिवन दियो निदेशू ॥
इतै बरात चली रघुकुलकी रामदरश अभिलाषी ।
लषण रामको लखब कालिह हम चले परस्पर भाषी ॥
आनँद विवश होत मग विभ्रम संभ्रम भीषण माहीं ।
को बरणै दशरथ अनंद अब रामहि व्याहन जाहीं ॥
आठ पहर भे आठ युगन सम कब पहुँचैं मिथिलाको ।
विश्वामित्र विदेह सहित कब देखहिं राम लला को ॥
अतिउत्साहित उठत आशुपद ठुमकति छनक नछाया ।
हय गय रथ पैदर सम जाते तदपि न पंथ सिराया ॥
जे याचत याचक जगतीके जगतीपति पथ माहीं ।
ते याचक पुनि होत अयाचक याचत पुनि जग नाहीं ॥

धाय धाय देशनके वासी देखन आय बराता।
पूछत प्रथमहि राम लषणको पिता कौन विख्याता॥
जाके पूत सपूत बाँकुरे तासु दरश अवहारी।
तृणसों जिन त्रिपुरारि धनुष दलि ब्याहत जनकदुलारी॥
मारि ताड़का मुनिमख राख्यो गौतमकी तिय तारी।
सुनि नृप कहत यदपि मन पै मुहिं लगति हँसी असरारी॥
मिथिला देश प्रवेश कियो नृप सँग बरात लै भारी।
नवेन हँसि हँसि हुलसि हुलसि जन देत माधुरी गारी॥
मंगलगान करत युवती जुरि होहिं पंथमहँ ठाढ़ी।
सदल दीप धरि कलश शीश पर वर देखन रति बाढ़ी॥
ते लखि भरत शत्रुशालहु को सुंदर दूलह कहहीं।
कोउ कह दोउ दूलह सहिबाले वर मिथिलापुर अहहीं॥
अतिहि त्वरात प्रयात बरात गई जब कमला तीरा।
तहँते जनक नगर युग योजन जनक सचिव तहँ धीरा॥
जोरि पाणि बोल्यो सुमन्तसों इत सब भाँति सुपासा।
अब मिथिलापुर है युग योजन करै बरात निवासा॥
जाय सुमन्त कह्यो भूपतिसों नृप कीन्ह्यो स्वीकारा।
कमला तीर परे सब डेरा बन रसाल मनहारा॥
तुंग मेरुमंदर सम सुंदर भूपति शिविर सुहाये।
विमल विख्यात सुहात कनातन बड़ वितानछविछाये॥

दोहा–राखे तहँ बनवाय बहु, विविध निवास विदेह।
निज डेरन तजि तहँ बसे, जानि जनक नृप नेह॥

छन्द चौबोला।

गजशाला हयशाला अगणित शाला विविध विशाला।
भोजनशाला मज्जनशाला शाला सैन्य रसाला॥

सकल नगर निवास कियो नहिं सबकी भई समाई ।
अशन वसन पानादिकको नहिं प्रगटी पूरणताई ॥
मिथिलाधिपके परिचर सिगरे अस कीन्ह्यो व्यवहारा ।
मोदित महा अयोध्यावासी अवध विलास बिसारा ॥
करि भोजन सुख शयन अवधनृप उठ्यो रहे दिन यामा ।
सभा मध्य मंडित धरणीपति भयो सुपूरण कामा ॥
प्रचुर पठै परिचारक दलमहँ खबरि बरातिन लीन्हीं ।
आवनको पुनि अशन शयनको सबन खातिरी कीन्हीं ॥
सबै बराती सुखी सकल विधि रंच विसंच न पाये ।
धामन आय धरणिपतिको अस विस्तर वचन सुनाये ॥
कोशलपाल तुरन्त सुमन्तहि बोलि कह्यो अस बानी ।
सजवावहु बरात आजुहिंते काल्हि होन अगुवानी ॥
सचिव काल्हि मिथिलाधिराजको मिलिमुनिराजसमेतू ।
सानुज कौशल्यानंदन लखि मिटी विरह दुख जेतू ॥
बन बन बागत बहुत दिननते कृश तनु ह्वै हैं प्यारे ।
करत रह्यो ह्वैहै को सोपति दूध वदन दोउ वारे ॥
छोड़त रहे न क्षण भरि जिनको खेलत साँझ सकारे ।
एक मास बीत्यो बिन देखे राम लषण सुकुमारे ॥
कह्यो सुमन्त जोरिकर कंजन धन्य धरणि अवधेशा ।
राम लषण जिनके कुमार जग उदित दिनेश निशेशा ॥
राम विवाह विलोकि विलोचन ह्वैहैं सफल हमारे ।
को अस जिहि नहिं राम प्राणप्रिय एकौ बार निहारे ॥
करिकै विदा सभासद वृन्दन उठ्यो भूप संध्यासी ।
दिनकर निरखि अस्तगिरि गमनत दीन्ह्यो अर्घ्य हुलासी ॥
हवनादिक करि नित्यनेम सब अतिथि पूजि श्रद्धालू ।

रंगनाथको ध्यान धरयो कहि पुनवहु भाज कृपालू ।।
सकल शोच तजि भूप बखानिन कियो शयन महराजा ।
देख्यो स्वप्न आय कौशिक मुनि दिय लषण रघुराजा ।।
पुनि जनु कौशिक अरु वसिष्ठ मुनि बोले वचन उछाहीं ।
जैहौ अवध अवधपति मोहिन चारिउ कुँअरन व्याहीं ।।
सीता राम विवाह विदित जग औरहु सुनहु भुआला ।
द्वितिय औरसी नाम उर्मिला जनक भूप लघु वाला ।।
तासु विवाह लषणको होइ कुशध्वज लघु नृप भ्राता ।
तिहि तनया मांडवि श्रुतिकीरति कीरति छवि विख्याता ।।
करिहैं भरत विवाह मांडवी श्रुतिकीरति रिपुशालू ।
यहिविधि चारिहु कुँवर व्याहि जब चलिहौ अवधभुआलू ।।
तब मारगमहँ प्रवल विप्रसों ह्वैहै भीति महानी ।
द्विज निजतेज गवाँय हारि हिय जैहै मानि गलानी ।।
कुशल सहित कौशलपुर जैहौ कोशल नाथ उदारा ।
ऐसो स्वप्न देखि रजनीमहँ नृप जगि कियो विचारा ।।
जबते स्वप्न लख्यो जगतीपति तबते नींद न आई ।
जाय याम बाकी निशि गुरुपहँ दीन्ह्यो स्वप्न सुनाई ।।
कह वसिष्ठ कछु शंक करहु जनि देहु दिवाय नगारा ।
चलहु बरात साजि मिथिलापुर स्वप्न भयोसुखसारा ।।
सजन सैन्य हित दिय निदेश नृप गमन दुंदुभी बाजे ।
सैनिक सकल बाजि गज स्यन्दन अतिहि अनंदन साजे ।।

दोहा—मिथिलापुर हल्लापरयो, एहै आजु बरात ।
अगवानी हित जनक नृप, साजी सैन विख्यात ।।

छन्द त्रिभंगी ।

गज मत्त गरट्टन बाजिन ठट्टन सकल सुभट्टन साजि रहे ।

भट झट्टन पट्टन लै कर पट्टन हट्टन ह्वै चलि गाजि रहे ॥
बहु सजी अमारी हौदा भारी कर जरतारीकी झूलें ।
महत बहु नागे जिनके आगे गिरिश्च विभागे नहिं तूलें ॥
मिथिलेश मतंगा सजि सब अंगा परम उतंगा चलत भये ।
निमिकुल सरदारा करि शृङ्गारा भये सवारा मोद मये ॥
अति चंचल बाजी बनि बनि राजी तुरकी ताजी सोहि रहे ।
राजस अतिसादी उर अहलादी धृति मर्यादी बाग गहे ॥
पैदरन कतारा सुभग शृंगारा देव अकारा छवि छाये ।
तनु वसन सुरंगा भरे उमंगा जुरि इकसंगा तहँ आये ॥
चामीकर स्यंदन वृन्दन वृन्दन चढ़ि अनन्दन भट भारे ।
धरि ढाल विशाला कर करवाला उन्नत भाला अनियारे ॥
निमि वंशिनवारे राजकुमारे सजे शृँगारे पगु धारे ।
नृप जनक हँकारे लहि सतकारे अमित हजारे सुकुमारे ॥
मिथिलापुरवासी आनँदरासी सजि सजि खासी शिर पागे ।
कंचुक तनु कांधे कम्मर बाँधे उर सुख धाँधे अनुरागे ॥
इक एकन भाषैं उर अभिलाषैं अब इन आँखैं सफल करैं ।
लखि राम विवाहा परम उछाहा को महि माहा सुख न भरैं ॥
कोशल महराजू सहित समाजू आवत आजू सुखसानी ।
इतते सजि साजू निमिकुल राजू गमनत काजू अगवानी ॥
अस कहि २ पोरा लै सँग छोरा पश्चिम ओरा गमन किये ।
भइ भीरहि भारी सहित तयारी पुर नर नारी हर्षि हिये ॥
बहु चली पालकी रत्न जालकी नवल नालकी कनक मई ।
मुनिवृन्द सँवारे बेद अकारे ऋचा उचारे पुण्य चई ॥
फहरात निशाना बदत निशाना गायक गाना करत चले ।
सज्जन मतिमाना हिय हुलसाना किये पयाना भाउ भले ॥

रथरत्न सँवारो अति विस्तारो वाजिन चारो चारु महा ।
राकाशशि छत्रा परम विचित्रा आतप पत्रा राचि रहा ॥
तापर मिथिलेशा चढ़यो सुवेशा मनहुँ सुरेशा सोहि रह्यो ।
लक्ष्मीनिधि प्यारो राजकुमारो तुरँग सवारो गैल गह्यो ॥
वर शतानन्द मुनि चढ़ि स्यंदन पुनि चल्यो संग गुनि गाढ़सुखै ।
मुनि याज्ञवल्क्य वर धर्मधुरंधर औरहुतपधर मुदित मुखै ॥
पुरते छवि भारी कढ़ी सवारी भै घहरारी चाकनकी ।
वहु बजे सुहावन वाजन पावन जिन धुनि छावन नाकनकी ॥
दोउ नृपन मिलापा मोद कलापा देव अलापा करत सवै ।
देखनके आशी नाकनिवासी गुणि सुखराशी ठानि जवै ॥
सुर चढ़े विमानन बहुविधि आनन दशहु दिशानन नभ आये ।
बरपैं वहु फूला गत सब शूला मंगलमूला यश गाये ॥
उतते अवधेशा इत मिथिलेशा नहिं कम वेशा महराजा ।
दुहुँ पुण्यहु जागी जग बड़भागी सम अनुरागी छविछाजा ॥
दश सुतर सवारे जनक हँकारे वचन उचारे तुम आवो ।
मम अरज सुनावो नृपद्रुत आवो विलम विहावो सुखछावो ॥
द्रुत धावन धाये नृपदल आये वचन सुनाये दशरथ को ।
कह जनक प्रणामा दरशन कामा चलि यहि यामा गहि पथको ॥
ठाढ़े सुखमानी हित अगवानी आँखिलुभानी दरशनको ।
लै विशद बराता आवहु ताता अव क्षण आता हरषनको ॥
सुनि मैथिल वैना भरि उर चैना सजल सुनैना अवध धनी ।
कह वचन तुरंता सुनहु सुमंता नहिं विलवंता चलै अनी ॥

दोहा—करहु सैन्यको शीघ्रहीं, दुतिया चन्द्र अकार ।
हम अरु गुरु माधिमें रहब, अरु युग राजकुमार ॥
आगे पैदर सुतर युत, पुनि वाजी रथ फेर ।

पुनि मनंगमंडल चले, करहु व्यूह बिन देर ॥
शासन पाय सुमंत तहँ, तैसहि सैन्य बनाय ।
मिथिला ओरहि शीघ्र गति, दियो बरात चलाय ॥

छन्द चौबोला ।

योजन अर्ध गई जब सेना द्वितिया चंद्र अकारा ।
देखा देखी उभय सैन्यकी होत भई तिहि बारा ॥
जैसो व्यूह बनाय अवधपति चले मिलनके काजा ।
तैसे व्यूह बनाय चल्यो उतते मिथिला महराजा ॥
इतते महा महोदधि जावत उत रत्नाकर आयो ।
मानहु मिलत उमंडि सिंधु युग कोलाहल क्षिति छायो ॥
फहरनि नवल निशाननकी छवि तुंग तरंग समाना ।
राजी गज बाजिनकी राजी महा जंतु विधि नाना ॥
मिलत युगल चतुरंग उमंगन विलसैं मनहुँ अकाशा ।
घन मंडल भल युगल अखंडल मिलत आय दुहुँ आशा॥
मानहु लै भारी तारादल तारापति हुलसायो ।
लेन हेत अगवानी आशुहि अंशुमान को आयो ॥
इत दिनकर सम दशरथ सोहत ग्रह सम सब रघुवंशी ।
उत महीप मैथिल मयंकसम उडुगण सम निमिवंशी ॥
जबते भई सैन्य की देखा देखी दूरहि तेरे ।
तबते भये मंदगति दोउ दल इक एकनको हेरे ॥
द्वितिया चंद्र सरिस दोऊ दल ताते प्रथम सिधारी ।
मिले कोन सों कोन चारिहूँ तब मंडल भो भारी ॥
भूमंडल सम सजी सैन्य मिलि निमिकुल रघुकुलवारी ।
इत कोशलपति मिथिलापति को को बड़ छोट उचारी॥
छैल छबीले राजकुँवर कोउ तरल तुरंग धवाई ॥

जनकहि करहिं प्रणाम हर्ष वश वाजी वेश नचाई ।।
तसहि कोउ निमि वंश रँगीले हयवर अत्र उड़ाई ।
अभिवंदन करि अजनंदन को मिलहिं सैन्य निज जाई ।।
पीलवान गज मुखन उठावत हय झमकावत सादी ।
मन्द मन्द दुहुँ दिशि ते आवत दोउ दलके अहलादी ।।
वेला छोड़ि मनहुँ सागर युग बोरन चह संसारा ।
तिमि दोऊ चतुरंग विराजत सूझि न परत किनारा ।।
मिले तुरंगनसों तुरंग वर मिले मतङ्ग मतंगा ।
मिले पैदरनसों पैदर तहँ मिले सतांग सतंगा ।।
किये परस्पर अभिवंदन सब यथा योग्य व्यवहारा ।
मुदित बराती यथा घराती पूँछि कुशल बहु बारा ।।
पगे प्रेम महँ वीर परस्पर हाथन हाथ मिलावैं ।
हुलसि हुलसि हँसि हँसि रस के वश हाँसी वचन सुनावैं ।।
प्रतीहार कहि फरक फरक तहँ किये कछुक मैदाना ।
इतते कोशलपाल गयो तहँ उत मिथिलेश महाना ।।
गुरु वसिष्ठ अरु शतानंद मुनि भरत शत्रुहन दोऊ ।
चल्यो तुरंत कुँवर लक्ष्मीनिधि आय गयो तहँ सोऊ ।।
दशरथ जनक नयन जुरिगे जब दोउ अभिवंदन कीन्हें ।
दोऊ पङ्कज पाणि पसारि मिलाय लूटि सुख लीन्हें ।।
कियो प्रणाम विदेह वसिष्ठहि पूछ्यो कुशल सुखारी ।
शतानन्दको दशरथ वंदे छ्वै पग पाणि पसारी ।।
भरत कुँवर रिपुसूदन संयुत जनकहि किये प्रणामा ।
लक्ष्मीनिधि कोशलपति वंदे लै अपनो मुख नामा ।।
पुनि वसिष्ठ के चरण गह्यो चलि गौतमसुअन सुजाना ।
[illegible] ना ।।

शतानन्दके चरण गहे पुनि भरत शत्रुहन दोऊ ।
आशिष दीन्ह्यो गौतमको सुत भये मग्न मुद ओऊ ॥
दोहा—पुनि लक्ष्मीनिधि मुदित मन, किये वसिष्ट प्रणाम ।
आशिष दीन्ह्यो ब्रह्मसुत, होय पूर मनकाम ॥

चौपाई ।

पूछि परस्पर सब कुशलाई । उभय भूप मुद लहे महाई ॥
कह्यो विदेह बहुरि कर जोरे । तुम्हरी कुशल कुशल अब मोरे ॥
तुम तो कुशल रूप महराजा । धर्मधुरंधर पुण्य दराजा ॥
तुम सम भूप न होवनहारे । राम लषण अस जासु कुमारे ॥
सबविधि मोहिं धन्य करि दीन्ह्यो । मिथिला नगर आगमन कीन्ह्यो ॥
टूटी फूटी मोरि मड़ैया । तिरहुतके सब लोग लुगैया ॥
तिन्हैं जानवी अवध बसैया । सत्य कहौं करि धर्म दुहैया ॥
सुनि मिथिलापति वचन सुखारे । कह दशरथ दृग बहत पनारे ॥
जनकराज तुम हौ सब लायक । कस न कहौ अस वचन सुहायक ॥
ज्ञानवान विज्ञान स्वरूपा । विश्व विरागी भक्ति अनूपा ॥
दानि शिरोमणि निमिकुलभानू । कहँलगि करिय आप गुणगानू ॥
मोपर कृपा कीन मिथिलेशू । सकल भाँति हरिलीन कलेशू ॥
दोहा—आये कौशिक संगमें, मेरे युगल कुमार ।
लहे सुयश जग जो [illegible], तौन प्रताप तुम्हार ॥

चौपाई ।

कहँ मिथिलेश बसे दोउ भाई । कौन हेतु ल्याये न लिवाई ॥
सुनत विदेह कह्यो कर जोरी । दोउ मर्यादा सखी मोरी ॥
जगपालक बालक नृप तेरे । रिपुघालक मालक हैं मेरे ॥
पूत सुपूतन की बड़वारी । सकैं न शेष गणेश उचारी ॥
राउर सुअन सहज जिन जाने । त्रिभुवनमहँ तिन [illegible] ॥

राजराजमणि वेगि पधारो । निज नंदन निज नयन निहारो ॥
अस कहि दोउ नृप स्यन्दन फेरे । वैरख फिरे दोउ दल केरे ॥
चली चारु जनवास बराता । सो सुख इक मुखनहिंकहिजाता ॥
दशरथ लक्ष्मीनिधिहि बुलाई । लियो आपने यान चढ़ाई ॥
जनक बुलाय भरत रिपुशालै । निज रथ लियो चढ़ाय उतालै ॥
उभय महीपनके युग याना । मिले बरोबर कीन पयाना ॥
गुरुवसिष्ठ अरु गौतमनंदन । उभय ओर चढ़ि राजत स्यन्दन ॥

दोहा—निमिवंशी रघुवंशी, अरिध्वंसी रणधीर ।
पूरण जगत प्रशंसी, मिले वीरसों वीर ॥
चली सेन दोउ संग इक, मिलि जनवासे ओर ।
मानहुँ पसरे सिंधु युग, करि वेलाको वोर ॥

चौपाई ।

मिथिला विश्व प्रदै सुख पीरा । साधन अगणित शयन शरीरा ॥
काम क्रोध मद लोभहु चारी । मत्सर मोह शत्रु पट भारी ॥
अहंकार आदिकन समाजा । तेइ सब जे आये खल राजा ॥
जीव जानकी तिनहि विहाई । दृढ़ता राम भक्ति मन लाई ॥
नौधा भक्ति करी फुलवारी । गुरु कौशिक प्रभुलै पगुधारी ॥
धनु भंगादिक प्रभु प्रभुताई । सिय जिय दृढ़ता भक्ति कराई ॥
जनक विवेक जियहि हरि पासा । पहुँचावन चह अति अनयासा ॥
दशरथ प्रेम वसिष्ठ विज्ञाना । जनक विवेक आशु तिहि आना ॥
परब्रह्म रघुपति सुखसीवा । जनक विवेक देत सिय जीवा ॥
कौशल्या प्रापति सुखदाई । अवध परमपद श्रुति सब गाई ॥
सिय जिय चाहत करन पयाना । तिहि उत योग विवाह बखाना ॥
मुक्ति सखीगण संग सिधै हैं । जगत जनकपुर पुनि नहिं ऐहैं ॥

दोहा—अवध भवन कैंकर्यमें, रही मगन आनंद ।
जहँ प्रभु जैहैं तहँ जई, पार्षद रूप स्वछंद ॥

चौपाई ।

नगर निकट ह्वै चली बराता । लखन हेतु पुरवासिन व्राता ॥
यूथ यूथ मारगमहँ ठाढ़े । नर नारी आनँदरस बाढ़े ॥
जनक नगर महँ फैली वाता । जनवासे कहँ जाति बराता ॥
गये निवासहि लषण नहाई । प्रभुको दीन्हीं खबरि जनाई ॥
पिता अवधपुरते चलि आये । आपुसमहँ पुरजन बतराये ॥
कह्यो राम अतिशय सुख मानी । लषण परत हमहूं कहँ जानी ॥
इत सुनात शत्रुञ्जय नादा । मम मतंग मन्दर मर्यादा ॥
बजत विजय कर मोर नगारा । इत मुनिपरत महा घहरारा ॥
तोपैं चलहिं जनकपुर माहीं । देत सलामी मम पितु काहीं ॥
चलहु कहहिं गुरुपहँ अतुराई । पिता दरश हित चलहिं लिवाई ॥
अस कहि गे मुनिपहँ दोउ भाई । कहे वचन मृदु विनय सुनाई ॥
सुनियत नाथ पिता पगु धारे । दर्शन लोभी नयन हमारे ॥

दोहा—दर्शन करि आवहिं तुरत, जो आयसु गुरु होहु ।
उचित होइ तौ आपहू, सहित कृपा चलिदेहु ॥
कहे वचन कौशिक विहँसि, चलिहैं हमहुँ विशेषि ।
आजु न कोउ तुव पितु सरिस, लिह्यो लोक त्रय लेषि ॥

चौपाई ।

मन्द मन्द उत भूपति दोऊ । दोऊ सैन्य वीर सब कोऊ ॥
निरखत नगर जात जनवासा । करत विविध विधि हास विलासा ॥
भरत शत्रुसूदन दोउ भाई । कह लरिकाई वश अतुराई ॥
देहु जनक नृप हमहिं बताई । किहि थल बसत लषण रघुराई ॥
राज कुँवरके वचन सुहाने । सुनत विदेह हर्षि मुसक्याने ॥
चूमि वदन बोले सुनु ताता । यहि पुर बसत युगल तव भ्राता ॥
लखि हौ आजु अवशि निज भाई । कौशिक सहित लषण रघुराई ॥

मुनि पुलके दोउ बंधु अपारा । कह्यो जनकसों अवध भुआरा ॥
सुन्दर भयो पुरी निरमाना । अलका अमरावती समाना ॥
आपु सरिस हरिदास प्रधाना । बसें सहित जहँ ज्ञान विज्ञाना ॥
है वैकुण्ठ सरिस पुर सोई । आवहिं सदा सन्त सब कोई ॥
यहि विधि करत परस्पर बाता । जात चली जनवास बराता ॥

दोहा—धाय धाय देखैं सबै, मिथिलापुर नर नारि ।
वारहिंवार बखानहीं, दशरथ भाग्य उचारि ॥

चौपाई ।

धन्य धन्य कौशल्या रानी । धन्य धन्य दशरथ गुणखानी ॥
जाके राम सरिस सुत भयऊ । अब का भव वैभव रहि गयऊ ॥
अस सब कहहिं विविधविधि बानी । दशरथ भाग्य न जाय बखानी ॥
पुनि कोउ कहहि परम विज्ञानी । परचो हमाहिं सबको अस जानी ॥
जनक सुकृत मूरति वैदेही । जासु प्रभाउ विदित नहिं केही ॥
हम सब धन्य जनकपुरवासी । लखे भूप दोउ पुण्य प्रकासी ॥
कोउ तिय कहै सुनौ सखि बानी । सुन्दर जोरी जस मुनि आनी ॥
तैसहि युगल कुँवर अति लोने । दशरथ सँग आये मिठलोने ॥
और हजारन राजकुमारे । तिनके सरिस न परै निहारे ॥
यहि विधि करहिं परस्पर बाता । सुख न समात विलोकि बराता ॥
वर्षहिं सुमनस सुमन अपारा । चढ़े विमानन देहिं नगारा ॥

दोहा—जय मिथिलापति अवधपति, मच्यो गगन महि शोर ।
उपर अमर अधजन नगर, रह्यो न वाकी ठोर ॥

चौपाई ।

करत बराती हास विलासा । आये सकल सुखद जनवासा ॥
निरखे सब अनूप जनवासा । सत्य सत्य जनु स्वर्ग विलासा ॥
अवध जनकपुर ते अधिकाना । निरखि देवगण चित्त लुभाना ॥

बन्यो राजमंदिर अति भारी । शक्र सदन सम जासु नयारी ॥
महामेरु मंदर सम तुंगा । चमकहिं मनहुँ हिमालय शृंगा ॥
सभासदन अति बन्यो विशाला । सैन्य सदन सुन्दर शशि शाला ॥
मज्जन भोजन भवन विभागा । चहुँकित चारु तड़ाग सुबागा ॥
कल कंचनकी कलित कियारी । झरहिं फुहारन सुरभित बारी ॥
परशि भूमि लतिका लहराहीं । फूलि फूलि परिमल पसराहीं ॥
लता भवन वर लता विताना । फूल सकल ऋतुके फल नाना ॥
कुंजन कुंजन गुञ्जहिं भँवरा । कलरव करहिं विहँग चहुँ ओरा ॥
रन्यो चौकमहँ बसन विताना । कनक रत्न रंजित विधि नाना ॥

दोहा—चारिहु भाइनके भवन, राजभवन विस्तार ।
भिन्न राज कारज भवन, विस्तर कोशागार ॥

चौपाई ।

गजशाला बहु वाजिनशाला । सचिवसदन भटसदन विशाला ॥
चौहट हाट बनी हाटककी । मर्यादा आमन फाटककी ॥
कनक कपाटन कलित दुआरा । परिजन भवन परम विस्तारा ॥
कमला तीर मनोहर वासा । योजन युगल बन्यो जनवासा ॥
शीरी सघन सुखद अमराई । शाखा क्षिति छ्वै छ्वै छवि छाई ॥
अति उतंग चहुँ ओर दिवाला । पुर इव गोपुर बन्यो विशाला ॥
सचिव सभासद भट सरदारा । सबके पृथकहि पृथक अगारा ॥
गमनी जब बरात जनवासा । लखे यथा सुरलोक विलासा ॥
कहे जनक कोशलपति पाहीं । यदपि रावरे लायक नाहीं ॥
तदपि निवास करहु नृपराई । गुनि निज सदन सहित सँकराई ॥
जो कछु बन्यो सु दिय बनवाई । नाथ दिखावत लाजहि आई ॥
कह्यो अवधपति हँसि सुख मोई । याते अधिक विकुंठहि होई ॥

दोहा—भल रचना कीन्हीं नृपति, दिय सुरलोक बनाय ।
बसब इतै हय सब सुखी, आप बसी गृह जाय ॥

चौपाई ।

जनक बेगि अब गणक बुलाई । तनक चित्त दे लग्न शुधाई ॥
गुरु वसिष्ठ गौतम मुनि काहीं । ज्योतिषके आचारज आहीं ॥
शतानन्द आदिक मुनिराई । रचहु समाज आज उत जाई ॥
करि सिद्धांत लग्न महिपाला । फेरि करहु व्यवहार विशाला ॥
याचक बहु याचन विधि कीना । दान होत दाता आधीना ॥
तुम दाता विदेह महिपाला । हम राउर याचक यहि काला ॥
आये अमित नरेश कुमारा । अब सबको नृप आप अधारा ॥
दानि शिरोमणि भूप विदेहू । मिटिहै अवशि सकल सन्देहू ॥
सुनत सयुक्ति अवधपति वानी । भूप विदेह महामुद मानी ॥
बोल्यो मंद मंद मुसक्याई । का क्षति जहँ वसिष्ठ मुनिराई ॥
अस कहि माँगि बिदा मिथिलेशा । वंदन करि पुनि चल्यो निवेशा ॥
जायनिवास विदेह उदारा । पठयो विविध भाँति सत्कारा ॥

दोहा—सुमति सचिव गौतम सुअन, ल्याये सब सत्कार ।
दियो बरातिन वास वर, यथा योग्य आगार ॥

चौपाई ।

सुखी बरात बसी जनवासा । लहे सकल जनु स्वर्ग विलासा ॥
कनक कलश कोपर बड़ थारी । कूंड कुंभ मंजूषा झारी ॥
भरि भरि भोजन पान प्रकारा । सुधा सरिस पकवान अपारा ॥
पुहुप विभूषण रत्न समेतू । विविधभाँति फल सुधा निकेतू ॥
विविध भाँतिकी बनी मिठाई । वस्तु अमित घृत पक्क सुहाई ॥
विविध भाँतिके रुचिर अचारा । लेह्य चोष्य वर पेय प्रकारा ॥
भोजन योग्य वस्तु बहु ओरा । जे नरलोकमाहँ शिरमोरा ॥
जौन वस्तु प्रिय देवन काहीं । दुर्लभ जे महि लोकहि माहीं ॥
सकल बरातिन वसन अपारा । रह्यो जौन जस लघु बड़वारा ॥

कनक रजत रंजित जरतारी । तन धारक पट मुकुत किनारी ॥
जे लखि भूपति देव सिहाहीं । खान पान धारण मनमाहीं ॥
यथायोग्य जस जौन बरानी । अति उत्तम नृप कहँ सब जानी ॥

दोहा—मंडप कुसुमनके विविध, पुहुप फरस विस्तार ।
और पदारथ मोदप्रद, कहँलग करौं उचार ॥

चौपाई ।

भरि भरि काँवरि सुवर कहारा । तिमि भरि शकटन ऊंट अपारा ॥
शतानंद अरु सचिव लिवाई । कोशलपालहि नजर कराई ॥
दीन्हें पूरि बरातिन काहीं । रही कछुक अभिलाषा नाहीं ॥
भूपति हेत पदारथ जेते । सादर लै बांटे नृप तेते ॥
विश्व उदार शिरोमणि राऊ । लघु बड़ जान्यो एकहि भाऊ ॥
शतानंद अरु मंत्रि सुदावन । आये अवधनाथ ढिग पावन ॥
तिन आगे चिउरा दधि राखे । बोले वचन जनक जस भाखे ॥
जोरि पाणि युग नावत शीशा । जनक कह्यो सुनु अवधअधीशा ॥
दधि चिउरा उपहार हमारा । लेहु कृपा करि अवध भुआरा ॥
अवध विभव वासव नहिं तूलै । किमि सत्कार करौं सुख मूलै ॥
जो कछु विभव नरेश हमारा । सो सब अहै विशेषि तुम्हारा ॥
सुनत विदेह वचन नृपराई । दधि चिउरा लै शीश चढ़ाई ॥

दोहा—सादर बोल्यो अवधपति, कहि प्रणाम मुनि मोर ।
पुनि विदेहसों अस कह्यो, सकल अनुग्रह तोर ॥
अहहु महात्मा ज्ञानिवर, निमिकुल पंकज भानु ।
यह प्रसाद सब रावरो, भव भागवत प्रधानु ॥
शतानंद अरु सचिवको, कहि सादर यहि भाँति ।
विदा कियो दशरथनृपति, करि प्रणाम मुद माति ॥
भोजन काल विचारिकै, उठन चह्यो महिपाल ।

हल्ला परयो बरातमें, यकबारहिं तिहि काल ॥
रामलषण लै संगमें, दशरथ दर्शन हेत ।
आवत विश्वामित्र अब, तुरत गाधि कुलकेत ॥
उतै मध्यदिन शुभ समय, जानि गाधिकुल चंद ।
चल्यो अवधपति मिलनहित, सहित लषण रघुनंद ॥

कवित्त ।

भोजनकरतरह्योभोजनविसारिधायो पानकोकरतजोईपानविसरायो है ।
सोवतरह्योजावसहोसो उठिधायोआसु मज्जनकरतधायोनाकननहायोहै ॥
करतहतोजोकाम जौनजौनजोईजन परतअवाजकानतौनहीभुलायो है ।
सकलबरातमाहिंचारोंओरशोरछायोरघुराजआयोआजरघुराजआयोहै १ ॥
रामसखाजेतेरहेतेतेसब धायधाय नगरकहतरामलषणकोलीन्हे हैं ।
नामलैलैआपनेवतायनिजकामधाम बापकोवतायकहैंआपहमैंचीन्हे हैं ॥
मुनिमखराखिबेकोजबतेकढ़ेहोमीत हमकानकाहुएकपातीपठैदीन्हे हैं ।
रघुराजव्याहहोतह्वैगईवेलंदआँखें मिथिलानिवासिनमिताईनईकीन्हे हैं २
खायोएकसाथअरुखेलेएकसाथहीमें साथसाथशयनकीन्हेंमरत्योंशिकारको
मातुपितुमानिएकभेदनहिंराखेनेक टारेनाहिं टेकनाविवेकबारबारको ॥
अबदिनदशतेनिकरिअवधूतसंग मिलतमिजाजनहिंकौशिककुमारको ।
तूरिकैपुरानीधनुहींकोआजरघुराज भूलिगेहमारीसारीयारीप्यारेयारको ३

दोहा—प्रेम लपेटे अटपटे, मुनि सखानके बैन ।
मुनि सकोचवश नाहिं भनत, विहँसत राजिव नैन ॥
कीन्ह्यो शयन प्रवेश जब, राम लषण मुनि संग ।
जुरे अवध बासी सकल, मच्यो महा सुख रंग ॥

चौपाई ।

परहिं चरण कोउ अवधनिवासी । देहिं प्रदक्षिण कोउ सुखरासी ॥
चूमहिं वदन मदन छवि वारी । शालि सुखात लही जनु वारी ॥

गद्गद गर रोमांचित देहा । वचन कहत नहिं अधिक सनेहा ॥
निरखहिं राम लषण मुख चंदा । जिमि कल्प मनु मिल्यो अनंदा ॥
कह्यो नृपतिकोउ भरयो उमंगा । आवत राम लषण मुनि संगा ॥
जात रहे भूपति ज्योनारे । राम लषण कहँ लखन पधारे ॥
भई भीर दशरथके द्वारे । निकसत जन करि जोर निकारे ॥
भरत शत्रुहन अति अतुराई । आय गये सुनि राम अवाई ॥
आयो तहँ निषादपति आसू । वाढ्यो रघुपति दरश हुलासू ॥
आये रघुकुल राजकुमारा । राम दरश लालसा अपारा ॥
राम लषणकी सुनत अवाई । गुरु वसिष्ठ आये हरषाई ॥
गुरु वसिष्ठ अरु कोशल पाला । सहित निषाद भरत रिपुशाला ॥
दोहा—चले लेन आगे कछुक, कौशिककी अगुवानि ।
मनो महासुख सिंधु में, हिले जन्म धनि जानि ॥

चौपाई ।

उत ते आये गाधि कुमारे । सहित युगल दशरत्थ दुलारे ॥
इत ते करि वसिष्ठ मुनि आगे । राज समाज गई अनुरागे ॥
विश्वामित्र वसिष्ठहि देखी । कियो प्रणाम महामुद लेखी ॥
पूछि परस्पर मुनि कुशलाई । वारहिंवार मिले सुख पाई ॥
तिहि अवसर आय दोउ भ्राता । गहे दौरि गुरुपद जलजाता ॥
आशिप दै वसिष्ठ मुनिराई । लियो दुहुँन कहँ अंक उठाई ॥
चूमि वदन सूँघ्यो पुनि शीशा । चिरजीवहु अस दीन अशीशा ॥
निरखि गाधिसुत कोशलराऊ । गिरि गहि रह्यो गाढ़ युग पाऊ ॥
दै अशीप मुनि चहत उठाई । उठत न भूप प्रेम अधिकाई ॥
जसतस कै मुनिनृपहि उठायो । पुनि पुनि मिलत नयनजल छायो
गद्गद कंठ कहत नहिं वाता । खडो जोरि नृप कर जलजाता ॥
पूछत कुशल पुलकि मुनिनाहा । बहत भूप दृग अंबु प्रवाहा ॥

दोहा—धनुष यज्ञ पुत्रेष्टि करि, कौशिक यज्ञ कुमार ॥
आय आजुहीं जनु दियो, युगल कुमार उदार ॥
चौपाई ।
जस तस कै नृप सुगति सम्हारी । बोल्यो वचन बहत हग वारी ॥
नाथ कृपा फल मुहिं दरशायो । राम लषण मैं आजुहि पायो ॥
जो कछु कीरति सुगति बड़ाई । सुनियन राम लषण इत पाई ॥
सो तुव पद पंकज प्रभुताई । द्वितियभाँतिनाहिं सजति बड़ाई ॥
तुम समान को दीनदयाला । दीन्ह्यो मुहिं दिखाय दोउलाला ॥
तापर सुयश प्रताप बड़ाई । जनक वंश महँ ब्याह कराई ॥
तुम सम सज्जन जे जग माहीं । तिन कहँ यह अचरज कछुनाहीं ॥
अस कहि पुनि पुनि वंदत चरणा । दशरथ हर्ष जाय नहिं वरणा ॥
राम लषण पुनि दोउ सुख साने । पिता चरण पंकज लपटाने ॥
लिय उर ललकि लगायभुआला । तुलै न ब्रह्म मोद तिहि काला ॥
अज महेश ध्यावत जिहि काहीं । शेश वर्णियश पार न जाहीं ॥
नेति नेति जिहि वेद बखाना । वेद विबुध मुनि कारक जाना ॥
दोहा—ताहि गोद लै अवधपति, नयनन नीर बहाय ।
कहत गाधिसुतकी कृपा, गयो पूत मैं पाय ॥
चौपाई ।
गद्गद गर कछु बोलि न आवत । पुनि पुनि तन फल पनस बनावत ॥
मनहुँ विरंचि खिलावन हेतू । लियो अंक रवि शशि सुख सेतू ॥
मनु वत्सल रस परम निशंका । कीन्ह्यों दास्य शृँगारहि अंका ॥
मनु कश्यप अश्विनीकुमारा । लीन्हें अंक अनंद अपारा ॥
चूमत मुख सूँघत पुनि शीशा । गद्गद गर नहिं गदत महीशा ॥
सुमनस सुमन वर्षि झरि लाये । दून दुंदुभी दिशन बजाये ॥
भरत शत्रुहन पुनि दोउ भाई । परे चरण रघुपतिके जाई ॥

राम दुहुँन उर लियो लगाई । बार बार दृग बारि बहाई ॥
भरत चरण किय लषण प्रणामा । सो दिय आशिष पूजे कामा ॥
रिपुहन लषण चरण शिर नाये । परम प्रमोद बंधु दोउ पाये ॥
रिपुहन भरत दौरि पुनि जाई । कौशिक चरण गहे हरषाई ॥
गाधिसुवन दिय आशिर्वादा । सुखी रहौ ध्रुव भुव मर्यादा ॥

दोहा—सखा सखा कहि दौरि पुनि, मिले निषादहि राम ।
मिलन देखि रविरथ रुक्यो, भयो दून सो याम ॥

कवित्त ।

गुरुजन जेते रहे परिजन जेते रहे पुरजन जेते रहे मन्त्री सरदार हैं ।
जेते सम्बन्धी जेते खेलनप्रबन्धी जेते और अनुबन्धी रहे भूपनकुमारहैं॥
रघुराजताहीक्षणचरितकियोकृपाल मिलेसबहीकोजानेहमहींपियार हैं।
काकाकहेबाबाकहेभाईकहेबधुकहिमीतकहेसखाकहिहितूकहेयारहैं

दोहा—यहि विधि सबसों मिलि तहां, पितु मुनि बंधुसमेत ।
जाय वितान तरे मुदित, बैठे कृपानिकेत ॥

चौपाई ।

कनक सिंहासन युगल मँगाये । गुरु वसिष्ठ कौशिक बैठाये ॥
चापत चरण महीपति बैठ्यो । मानहु मोद महोदधि पैठ्यो ॥
निकट बैठ तहँ चारिहु भाई । राजकुमार समाज सुहाई ॥
देखत सुछवि लहत अहलादा । सायुध ठाढ़ो राज निषादा ॥
जबते राम लषण दोउ भाई । किये प्रवेश बरातहि आई ॥
तबते विरह ताप दुखदाई । मिटी मेघ जिमि मारुत पाई ॥
सबके हिय नहिं हर्ष समाई । दशरथ दशा जाय किमि गाई ॥
जस तसकै धरि धीरज राजा । बोल्यो कौशिकसों तजि लाजा ॥
गृहते मोहिं बुलाय पठायो । प्रभुशासन शिर धरि इत आयो ॥
चारिहु कुँवर रावरे केरे । मैं नहिं जानहुँ हे मुनि मेरे ॥

उचित होयसो आसन दीजै । मुहिं अपनो सेवक गुणि लीजै ॥
पाले पोषे जो जिहि काहीं । सो ताको पितु संशय नाहीं ॥
दोहा–राजराजमुनि के वचन, सुनि कौशिक मुसक्याय ।
सुखसानी बानी कही, मनमानी मुनिराय ॥
मखरक्षण हित माँगि मैं, ल्यायों युगल कुमार ।
तुमहिं समर्पण करत ते, लीजै अवधभुआर ॥

चौपाई ।

अस कहि राम लषण गहि हाथा । सौंप्यो नृपहि मुदित मुनिनाथा ॥
दशरथ कह्यो न मैं अब लैहौं । दीनवस्तु नहिं घर लैजैहौं ॥
राउर सुत रह राउर पासा । आप कृपावश मोहिं न त्रासा ॥
मुनि मुसक्याय कही तब बानी । राउर सुत सब के सुखदानी ॥
सबके निकट भिन्न सबहीते । कबहुँ न टरत हमारे हीते ॥
को अस जगमहँ भूप सुजाना । इनहिं छोड़ि लागै प्रिय आना ॥
जगत महाप्रिय जग हितकारी । जे इन लखत तासु हृद चारी ॥
धन्य धन्य तुम अवध अधीशा । पायो सुत दाया जगदीशा ॥
अब यह शासन मम सुनि लीजै । चारिहु कुँवर संगमहँ कीजै ॥
भोजन भवन तुरंत सिधारी । अशन करहु लै पुत्रन चारी ॥
हम वसिष्ठ पुनि आउब काली । करब विवाह उछाह उताली ॥
अस कहि कौशिकमुनिसुखसेतू । गये वसिष्ठ समेत निकेतू ॥
दोहा–उठ्यो भूप भोजन करन, संयुत चारि कुमार ।
चले राजवंशी सकल, संग करन ज्यवनार ॥

छन्द चौबोला ।

भोजन करन लग्यो भुवालमणि भोजन शाला माहीं ।
आगे पुरट पटन बैठायो चारिहु भाइन काहीं ॥
सिगरे राजकुमार और तहँ बैठे आसन जोरे ।

बैठ चक्रवर्ती चामीकर चौकीमहं मधि ठौर ॥
कनकथार कंचन भाजन भल भरि भरि व्यंजन नाना ।
प्याले पुरट विशाले जल भरि ल्याये मृदु सुजाना ॥
कंठन कठुले कड़े करनमें हीरन जड़े अपारा ।
सूपकार शुचि पहिरि लसन युग पीतांबरन पखारा ॥
यथायोग्य पुनि यथायोग्य रुचि परसे भोजन मीठे ।
सुधा लगत अंग जिन सीठे कबहुँ न खात उबीठे ॥
दै बलि वैश्वदेव अचमन करि भोजन विधि निरधारी ।
भाषि सबै लक्ष्मीनारायण खान लगे सुखधारी ॥
भोजन करत जान भूपतिमणि लखन लषण अरु रामैं ।
पूछत कौन भाँति मख राखे करि निशिचर संग्रामैं ॥
कौन भाँति ताड़ुका सँहारी लगी न डर लखि घोरा ।
सुनियत गौतम नारि प्रगट भइ परशि पाइँ पुनि तोरा ॥
कौन उपाय पुरारि पिनाकहि भंज्यो मध्य समाजा ।
कहँ पायो इतनो बल लालन जहाँ बली सब राजा ॥
प्रभु मुसक्याय कह्यो पितु मैं नाहिं जानहुँ कारण कोई ।
आप प्रताप कृपाकौशिक की मोर जोर यतनोई ॥
कौन कलेऊ देत रह्यो तुहिं किमि सोये तृण सेजू ।
चले चरण कोमल कठोर महि मुनि कसक्यो न करेजू ॥
वनवन आतप वात सहत बहु व्यथा न भइ तनुमाहीं ।
को सोपति सब भाँति कियो तव घरके कोउ सँग नाहीं ॥
प्रथम लषण लरिकाईं के वश कहे बैन अतुराई ।
पिता अवध ते कढ़त महामुनि विद्या युगल पढ़ाई ॥
का कहिये विद्या प्रभाव पितु भूख प्यास नाहिं लागी ।
थाक नींद आलस्य अबलता हमरे तनु ते भागी ॥

राम कह्यो सोपनि सब जैसी कौशिक करी हमारी ।
तस नहिं कीन्ही अवधमहलमें त्रिशत साठि महतारी ॥
जानिपरी नहिं हमहिं विपिनदुख घरते सुख अधिकाना ।
जिमि राखनीपलकनयननतिमि राख्योमुनिभगवाना ॥
सुनि भूपति करनी कौशिककी महामोद मन मान्यो ।
बारहिंबार सराहि पुलकि तनु समाधान उर आन्यो ॥
यहिविधि भोजन करतसुतनयुत वदतवचन सुखसाने ।
करि आचमन उठे अवनीपति आनँद माहिं अघाने ॥
धोय चरण करपहिरि वसन कछु शयनसदननृप गयऊ ।
इतै राम लै बंधु सखा सब बैठ प्रमोदित भयऊ ॥
पूछन लागे कथा सखा सब भरत लाल करि आगे ।
कहन लगे प्रभु चरित कियो जस सहज लाज रस पागे
हँसि बोल्यो कोउ राम विवाहहु काहे जनक कुमारी ।
जहँ चाहहु तहँ तुम पषाण ते लेहु प्रगट करि नारी ॥
सुनत हास रस हँसे सखा सब प्रभु नेसुक मुसक्याने ।
लषण कही तुम प्रगटत पेखे सब थल नारि पषाने ॥
कोउ कह मारि नारि निश्चरकी रसिक नाम किय हानी ।
हरि हँसि कह्यो हते पापिनिके हानि भई सुखखानी ॥
यहिविधि हास बिलास करत प्रभु सखनसंगयुत भाई ।
धावन चलि तब खबरि जनायो मिथिलाराज अवाई ॥

दोहा—घटिका द्वै बाकी दिवस, जानि उठ्यो अवधेश ।
सभासदन बैठ्यो हुलसि, सुनि आवनि मिथिलेश ॥

छन्द चौबोला ।

परिचर बोलि कह्यो कोशलपति रामहिं ल्याउ लिवाई ।
आवत सभा हेतु मिथिलापति अवें चारिउ भाई ॥

मंत्री सचिव सुभट सरदारन राजकुमारन काहीं ।
कुलके सकल वृद्ध रघुवंशी ल्याउ लिवाय इहाँहीं ॥
डरन डेरन दौरि दूत सो शासन दियो सुनाई ।
सजि सजि साज सबै रघुवंशी आये सभा सुहाई ॥
युगल सिँहासन मणिन जटित तहँ सभा मध्य धरवाये ।
तैसहि युगल सिँहासन सन्मुख धरवाये छवि छाये ॥
तिनते लघु पुनि पंच सिँहासन सन्मुख सुभग सुहाये ।
निमिवंशिन रघुवंशिन आसन यथायोग्य लगवाये ॥
राजकुमार सबै रघुकुलके जस जस आवत जाहीं ।
यथायोग्य अपने अपने थल बैठत जात सुहाहीं ॥
सादर लै सुमंत बैठावत यथा राज मरयादा ।
सचिव मुसाहिब नृप सरदारन वदत भूप धनिवादा ॥
जुरे सभाजित सब रघुकुलके दशरथके दरबारा ।
राज विभूति विराजि रही वर राज समाज अपारा ॥
तिहि अवसर आये रघुनंदन सँग सुंदर त्रय भाई ।
माथे मुकुट मणिनके गाथे भाथे कंध सुहाई ॥
जगमगात जामा जरकसको कसि कम्मर रतनाली ।
डारे ढालनमें करवालन ढालन पीठि विशाली ॥
चरण वसन मणि जड़ित उपानहु वाम पाणि धृत चापा ।
दक्षिण कर सुंदर शर सोहत प्रगटत परम प्रतापा ॥
कानन कुंडल मंडल मंडित आनन शशि मदहारी ।
केसरि रेख विशाल भालमें श्याम अलक मनहारी ॥
पंच मणिनकी अतिविशालउर लसत माल छवि जाला ।
भुज अंगद कर कटकविराजत कटि कटिबंध विशाला ॥
मणि मंजीर हीरके मंडित पदपंकजन सुहाहीं ।

मनु शृंगार रस धारि चारि वपु आवत वन्मल्ल पाहीं ॥
चारि चारि चारहुके चामर चलत चारिहु ओरा ।
उदयमान मनु युग रवि युग शशि भ्राजत भूप किशोरा ॥
आये सभामध्य रघुनायक ठाढ़ी भई समाजा ।
किये प्रणाम पिताके पद गहि आशिष दीन्ह्यो राजा ॥
बैठे कनकासनमहँ सन्मुख सभा प्रभामहँ पूरी ।
धावन धाय आय तिहि अवसर कह्यो जनक नहिं दूरी॥
पठयो वेगि सुमंतहि दशरथ ल्यावहु आसु लिवाई ।
जाय सुमंत विदेह भूपसों कह्यो वचन शिरनाई ॥
महाराज मिथिलेश कुँवर युत आसुहि धारिय पाऊ ।
तुम्हरे दरश आश करि बैठ्यो सभा सु कौशलराऊ ॥
सुनत विदेह वचन मंत्रीके सपदि सैन्य चलवायो ।
मैं आवत हौं आसु उतै अब अस कहि सचिव पठायो ॥
गै अरगन वाजिनकी राजी रथ यूथन तजि द्वारे ।
चलेसुखासनचढ़िमिथिलापतिचहुँकित निमिकुलवारे ॥
सुनि नकीव को शोर जोर तहँ अवधनाथ सुखमानी ।
करि चारिउ कुँवरनको आगे चल्यो लेन अगवानी ॥
उत लक्ष्मीनिधि को आगे करि निमिकुलसहित समाजा ।
मिलनहेत दशरथके आयो वर विदेह महराजा ॥
सभाद्वार लौं जाय अवधपति निमिकुल कुमुद मयंकै ।
करिप्रणामसुखधाम प्रेमवश लियो भुजन भरि अंकै ॥

सोरठा—कियो विदेह प्रणाम, महाराज अवधेशको ।
पूछि कुशल तिहि ठाम, मोद मग्न दोउ भये ॥

छन्द चौबोला ।

दीनबंधु पुनि बंधु चारिहूँ कियो विदेह प्रणामा ।

अजनंदनको पुनि किय वंदन नंदन जनक ललामा ॥
पंच कुमार चले आगे कछु पाछे भूपनि दोऊ ।
सोछवि देखि मग्न आनँदमहँ दोउ कुलके सब कोऊ ॥
मनहुँ ज्ञान अरु प्रेम रूप धरि संग पंच रस लीन्हें ।
मिलतपरस्पर अतिप्रमोदभरिनिजअधिकारहि चीन्हें ॥
उभय उच्च सिंहासन में दोउ बैठे भूप समाना ।
लघु सिंहासन पंच विराजे पांचौ कुँवर सुजाना ॥
अपने दहिने दिशि बैठाये दशरथ निमिकुल राजे ।
आप विदेह वाम दिशि बैठे गुनि मर्यादा काजे ॥
बैठे विदेह ओर निमिकुलके यथायोग्य सरदारा ।
दशरथ ओर बैठ रघुकुलके जिहि जस रह अधिकारा ॥
अतरदान अरु पानदान बहु रत्न सुमनके हारा ।
ल्याय सुमंत ठाढ़ भो आगे धरि पन्नाके थारा ॥
कौशलपति निज पाणि पान दिय सहित सनेह विदेहैं ।
पुनि निज हाथन अतर लगायो मिथिलापति के देहैं ॥
पितु रुख लखि उठिकै रघुनंदन जनकहि अतर लगायो ।
निज कर लै विदेहको सादर प्रभु तांबूल खवायो ॥
पुनि उठि भरत पाणि अपनेसों सुमन माल पहिरायो ।
लक्ष्मीनिधिके राम आय पुनि रत्न माल गल नायो ॥
अतर लगायो भरत अंगमहँ बीरा लषण खवाई ।
शत्रुशाल सिगरी निमिवंशिन किय सत्कार बनाई ॥
प्रतीहार आयो तिहि अवसर मुख जय जीव सुनाई ।
विश्वामित्र वसिष्ठ मुनिनकी दियो सुनाय अवाई ॥
मुनि आगमन सुनत दोउ भूपति चले लेन अगवाई ।
करि आगे पांचौ कुमार कहँ द्वार देशलौं जाई ॥

विश्वामित्र वसिष्ठ चरणमहँ पंच कुमारन डारी ।
किये दंडवन दोउ नरनायक कह नाथ पगु धारी ॥
लै दोउ मुनिनायक नरनायक सिंहासन बैठारे ।
सविधि दुहुँनको पूजि परशि पद कह धनि भाग्य हमारे ॥
लहि शासन निजनिज सिंहासन आसन किये भुआला ।
मनहुँ विवेक धर्म ढिग आये ज्ञान विज्ञान विशाला ॥
पाँचहु कुँवर बैठ कनकासन मुनि नृपके मधि माहीं ।
युगल छत्र क्षिति नाथन माथे चमर चलत चहुँ घाहीं ॥
निमिकुल रघुकुल की समाज लखि दोउ मुनि बैन उचारे ।
धनि कौशलपति धनि मिथिलापति को नृप सरिस तुम्हारे ॥
कोटिन वर्ष व्यतीत लेह तनु कबहुँ न अस मुद लेखे ।
यथा दराज समाज आज हम सम समधी दृगदेखे ।
कहहु विवाह उछाह लखब कब अब सब भव अभिलाषी ।
दोउ नृप जब कहँ लग्न शोधिये तब ह्वैहै शिव साषी ॥
का पूछहु हमसे दोउ मुनिवर यह सब हाथ तुम्हारे ।
निमिकुल रघुकुल तुव अधीन अब नाहिं शिरभारहमारे ॥
कह्यो वसिष्ठ काल्हि कौशलपति जनकानिवास सिधैहैं ।
तहँ हम कौशिक शतानन्द मिलि लग्न विचारि बतैहैं ॥
यही कियो सिद्धांत उभय नृप सुखी भये सब लोगू ।
माँगि विदेह विदा दशरथसों चल्यो भवन बिन शोगू ॥
द्वार देश पहुँचाय अवधपति संध्या करन सिधारे ।
निज निज भवनगवन कीन्ह्यो पुनि चारिहु बंधुसुखारे ॥

दोहा—संध्या करि सिगरे तहां, किये बिआरी जाय ।
रैन शयन कीन्हें सुखी, पितु युत चारिहु भाय ॥

छन्द चौबोल. ।

गये विदेह गेह दशरथके सने सनेह सुखारी ।
कियो शैन भरि चैन रैनमहँ संध्यादिक निरधारी ॥
ब्रह्म मुहूरत उठ्यो महीपति ब्रह्म निरूपण कीन्ह्यो ।
प्रातकृत्य करि कीन्ह्यो मज्जन सज्जन सँग मन दीन्ह्यो ॥
करिकै ज्ञान विज्ञानहु साधन संध्या हरि विधि पूजा ।
मंडित भयो सभा मंदिरमहँ कौन तासु सम दूजा ॥
शतानंद अरु सचिव सुदावन धावन पठै बुलायो ।
पुनि वसिष्ठ अरु विश्वामित्र बुलावन दूत पठायो ॥
गौतम याज्ञवल्क्य आन्यो तहँ भई मुनीन समाजा ।
आये जनक गनक सिद्धांती ज्ञान त्रिकालहु काजा ॥
शतानंदसों कह्यो जनक तब आसुहि दूत पठाओ ।
सांकाशीनगरीको वासी कुशध्वज को बुलवाओ ॥
मम लघु भ्राता अतिशय ज्ञाता लै रनिवास सिधारे ।
सांकाशी शोभा लखि मनमें पुहुप विमानहुँ हारे ॥
इच्छुमती सरिता चहुँ दिशिते घेरे दुर्गम दुर्गा ।
बस्यो कुशध्वज तिहिपुर जबते रक्षति दिन दिन दुर्गा ॥
शतानन्द देखन तिहि चाहौं यहि सुख शामिल होवै ।
करैं राम दशरथ बंधुन युत सिय विवाह दृग जोवै ॥
सुनि विदेहके वचन पुरोहित चारण चारि बुलायो ।
वेगवंत दै चारि तुरंगम शासन सपदि सुनायो ॥
यथा वासवानुज बुलवावत वासव दूत पठाई ।
तथा चारि चारण पठवाय विदेह बुलायो भाई ॥
तरल तुरंग दूत चढ़ि धाये गये पुरी संकासी ।
करिवंदन कुशकेतु चरण गहि कहे वचन सुखरासी ।

नृप मिथिलेश जेठ भ्राता तुव दै निदेश हम काहीं ।
आप बुलावन हेत पठाये त्वरा विवश खन नाहीं ॥
सुनि मिथिलेश निदेश शीश धरि लै सिगरे रनिवासा ।
सैन साजि चतुरंग चल्यो चढ़ि स्यंदन परमप्रकासा ॥
आयो जनक नगर अतिपावन जनकहि खबरि जनायो ।
सुनत अनुज आगमन अनंदित अवनीपति बुलवायो ॥
शीरध्वज महराज सभामहँ वीर कुशध्वज आयो ।
शतानंद पदवंदन कीन्ह्यो जनक चरण शिरनायो ॥
उठि अनुजहिमिलिदैआशिषबहुनिजआसनगहि पानी ।
शीरध्वज महराज कुशध्वज बैठायो मुद मानी ॥
कुशल प्रश्न पुनि पूछि नेह भरि पाछिल कथा बखानी ।
आई अवध बरात जौन विधि लियो यथा अगवानी ॥
रनिवासहि रनिवास पठायो मुदित भये दोउ भाई ।
तिहि अवसर इक प्रतीहार कह कौशिक केरि अवाई ॥
मिथिलाधिप दोउ बंधु चले द्रुत शतानंद करि आगे ।
कौशिक पद पंकज गहि प्रणमे कर पंकज अनुरागे ॥
शतानन्द पुनि गाधिनन्द कहँ वंदे वृद्ध विचारी ।
तिहि औसर वसिष्ठ मुनि आये जनक निवास सुखारी ॥
सब मिलि वंदि वसिष्ठ ब्रह्मसुत ल्याये सभा मँझारी ।
कनकासन आसीन किये नृप युगल महा तपधारी ॥
तैसे शतानन्द बैठाये हेमासन महराजा ।
कीन्ह्यो अति सत्कार बंधु दोउ भये मुदित मुनि राजा ॥
चरण पखारि सींचि सिगरे घर युग वसु विधि करि पूजा ।
युगल बंधु तहँ युगल मुनिनसों कह्यो न हमसम दूजा ॥

दोहा—तुम सर्वज्ञ कृपालु दोउ, वर ब्रह्मर्षि उदार ।

शासन युग आनन करहु, करैं लगैं नहिं वार ॥
विश्वामित्र वसिष्ठ कह, देवहु आशिर्वाद ।
धर्म धुरंधर बंधु दोउ, कस न करहु मर्याद ॥
बोलि पठावहु अवधपति, लग्न शुधावहु आज ।
व्याह करावहु सीय को, छावहु सुयश दराज ॥

छन्द चौबोला

विश्वामित्र वसिष्ठ वचन सुनि अतिशय आनँदपाई ।
जनक गणकगण बोलि तुरन्तहि शासन दियो सुनाई ॥
शोध शुद्ध शुभ लग्न व्याहकी विश्वामित्र वसिष्ठै ।
करिकै संमत शतानन्द को लिखहु होइ जो इष्टै ॥
जनक गणक गण शतानंद लै लग्यो विचार करावन ।
इतै विदेह सनेह सहित पुनि बोल्यो बैन सुहावन ॥
किहेहु विनय कहिकै प्रणाम मम हम तुव दर्शन आसी ।
सुनिमिथिलेश निदेश सुदावन रथ चढ़िचल्योहुलासी ॥
इतै चक्रवर्ती प्रभात उठि करि नारायण ध्याना ।
प्रातकृत्य करि मज्जन कीन्ह्यों दै सज्जन द्विज दाना ॥
सन्ध्या तर्पण होम अतिथि पूजन हरि अर्चन करिकै ।
दै चंदन करि सुर द्विज वंदन बैठ्यो वसन पहिरि कै ॥
आयो सचिव सुदावन द्वारे द्वारप खबरि जनायो ।
जानि विदेह मुख्य मंत्री नृप आसुहि पास बुलायो ॥
अभिवादन करिकै अमात्य वर कह्यो वचन कर जोरा ।
नाथ विदेह विनय कीन्ह्यो अस दर्शन की रुचि मोरा ॥
कौशलनाथ हुलसि हँसि बोल्यो देखन निमिकुल राजै ।
हमरेहु अति बाढ़ी अभिलाषा काज अवशि उत आजै ॥
कह्यो सुमन्तहि देहु दुंदुभी हम विदेहपहँ जैहैं ।

चारिहु कुँवर रहहिं जनवासे नाहिं मम संग सिधैहैं ॥
सुनत नरेश निदेश सुमंतहु दियो दिवाय नगारा ।
सजि आई चतुरंग चमू तहँ सुभट शूर सरदारा ॥
चढ़ि स्यंदन गमन्यो दशस्यंदन अजनंदन महराजा ।
बाजे बाजन विविध सुहावन लम्यो निशान दराजा ॥
जाय सुदावन कह्यो जनकसों आवत रघुकुल नाहा ।
देखनको धाये पुरवासी भरि उमाह मन माहा ॥
देखि देखि दशरथको दृग भरि वंदन करत सराहैं ।
जासु सुपूत पूत रघुपति सों तिहि सम को जग माहैं ॥
लोकपाल ललकत भुआल लखि त्यों सुरपाल सिहातो।
कौन हाल हेरहु महिपालन अस जन माल वतातो ॥
दीनन संपति असित लुटावत आवत मंदहि मंदा ।
गयो विदेह महलके द्वारे करि पुरजन सानंदा ॥
सुनत विदेह अवधपति आगम उठ्यो समाज समेतू ।
विश्वामित्र वसिष्ठ आदि लै गमन्यो निमिकुल केतू ॥
द्वारदेशते लियो भूप कहँ कियो प्रणाम विदेहू ।
कर गहि चल्यो लिवाय सभागृह सादर सन्यो सनेहू ॥
दै आसन दहिने सिंहासन पूछि सकुल कुशलाई ।
बैठ्यो लहि निदेश निज आसन मिथिलापति मुदपाई ॥
अतरपान मँगवाय सचिवकर बीरी खोलि खवा
लै सुगंध सब अंग लगायो किय सत्कार सुहायो
तिहिअवसर लक्ष्मीनिधि आयो शिरनायो नृपकाहीं ।
लियो भूप बैठाय प्रीति भरि अपने अंकहि माहीं ॥
सानंदन कुशध्वज किय वंदन मिले अवधपति ताहीं ।
जनक अनुज सत्कार कियो पुनि सब रघुवंशिन काहीं॥

विश्वामित्र वसिष्ठहि कीन्ह्यो कौशलनाथ प्रणामा।
दियो हुलसि ब्रह्मर्षि भूपको आशिष पूजै कामा॥
बैठि सहानुज सिंहासन महँ कह विदेह वर बानी।
निमिकुल कियो पवित्र राजमणि करिकै कृपा महानी॥
दोहा—अस कहि मणिमाला विमल, गल मेल्यो मिथिलेश।
कह्यो जोरि कर सों करै, जो अब होय निदेश॥
उठ्यो फेरि कुशकेतु तहँ, लक्ष्मीनिधि हरपाय।
रत्नमाल रघुकुल जनन, सबन दियो पहिराय॥

छन्द चौबोला।

लागे करन विदेह बड़ाई रघुकुलके रणधीरा।
को विदेह सम है वसुधापति वसुधा महँ मतिधीरा॥
अवधनाथ बोल्यो विदेहसों जानि समय सुखदाई।
वसुधा महँ है विदित पुरोधा रघुकुलको मुनिराई॥
नाम वसिष्ठ विरंचि पुत्र यह त्रयकालज्ञ सुजाना।
परमपूज्य इक्ष्वाकुवंश को इनते गुरु नहिं आना॥
सकल कृत्तिको जाननवारो ऋषि वसिष्ठ भगवाना।
विनय मोरि इक्ष्वाकुवंशको करै प्रशंस महाना॥
यथावसिष्ठ पूज्य रघुकुलमहँ तैसहि विश्वामित्रा।
वर ब्रह्मर्षि विज्ञान शिरोमणि पामर करन पवित्रा॥
सकल महर्षिनको संमत लै कौशिक अनुमति पाई।
तौ वसिष्ठ इक्ष्वाकुवंशको देइ यथाक्रम गाई॥
विश्वामित्र विनोदित भाष्यो शास्त्रोच्चार समैहै।
कहैं भानुकुलको वसिष्ठ मुनि दूजो कौन बतैहै॥
विश्वामित्र वचन सुनि सिगरे कह महर्षि यक बारा।
भानुवंशकी कुलपरंपरा करैं वसिष्ठ उचारा

विश्वामित्र सहित ऋषिसम्मत गुणि करनार कुमारा ।
कह्यो जनकसों सुनो भूप अब भानुवंश विस्तारा ॥
नारायणकी नाभिकमलते मम पितु भो सुखचारी ।
पाय कृपा हरिकी सिरजी सो सकल सृष्टि संसारी ॥
भयो महामुनि पुनि मरीचिके कश्यप नाम कुमारा ।
भयो ब्रह्मते मुनि मरीचि तव अग्रज अहै हमारा ॥
भानु भयो कश्यपको नंदन भानु पुत्र मनु भयऊ ।
मनु नंदन इक्ष्वाकु भयो पुनि जासु सुयश जग छयऊ॥
यह कुलको है मूल पुरुष सो बस्यो अयोध्या नगरी ।
अबलों जो अमरावतिके सम नेकु कहूँ नहिं बिगरी ॥
नृप इक्ष्वाकु कुमार भयो पुनि कुक्षि नाम महराजा ।
भयो कुक्षिके पुनि विकुक्षि नृप सब भूपन शिरताजा ॥
पुनि विकुक्षिके भयो बाण नृप मही महान प्रतापी ।
महाराज अनरण्य भयो पुनि बाण पुत्र रिपु तापी ॥
जो रावण रण गयो मारि नृप दियो शाप अतिघोरा ।
मेरे वंशमाहँ ह्वै है कोउ सकुल करी वध तोरा ॥
भयो फेरि अनरण्य पुत्र पृथु पृथु को पुत्र त्रिशंकू ।
विश्वामित्र प्रभाव बसैं अबलों दिवि दिपत निशंकू ॥
धुंधुमार भो पुनि त्रिशंकु सुत धुन्धु दैत्य को मारो ।
धुन्धुमार के भयो फेरि युवनाश्व कुमार उदारो ॥
भयो फेरि युवनाश्व भूप के मांधाता महाराजा ।
दशकंधर सों कियो समर जो प्रगट्यो सुयश दराजा ॥
मांधाताको सुत सुसंधि भो तेजवन्त महिपाला ।
पुनि सुसंधि के भये युगल सुत सुनहु विदेह भुवाला ॥
जेठो भो ध्रुवसंधि दूसरो जिहि प्रसेन युत नामा ।

महायशा ध्रुव जन्या फारि मुन भरन नाम बलधामा ॥
भरत भूपके भयो असित सुत राज्य करन जब लाग्यो ।
उठे शत्रु बरजोर चहूँकित राज्य छोड़ि नृप भाग्यो ॥
हैहै ताल जंघ शशबिंदु मलेच्छ भये रण शूरा ।
लीन्ह्यों यवन छुड़ाय अवधपुर असित बस्यो वनदूरा ॥
युगल नारि लै सचिव सहित नृप बस्यो हिमाचल जाई ।
गर्भवती नृपकी दोउ रानी सवति हानि दुखदाई ॥
दोहा—यक रानी को विष दियो, दूजी सवति विचारि ।
गर्भहानि सो जानि जिय, भगी भयाकुल नारि ॥
हिमगिरिमें तहँ कहुँ निकट, रह्यो च्यवन स्थान ॥
च्यवन चरणकी शरण भै, कीन्हीं दशा बखान ॥
कालिन्दी अस नाम रह, कमलाक्षी सुकुमारि ।
मुनि रक्षहु अब गर्भ मम, दाया दीठि पसारि ॥
कह्यो च्यवन मुनि विहँसितिहि, राजप्रिया भय त्याग ।
तेरे गर्भहि में अहै, महाराज बड़भाग ॥
महातेज वर विक्रमी, महा बलीन कुमार ।
जनिहै थोरे कालमें, गरल करी न प्रचार ॥
कालिंदी जनि शोच करु, विष युत जनि सुत तोर ।
अवध राज करिहै अवशि, मारि मलेच्छन घोर ॥

छन्द चौबोला ।

कालिंदी सुनि च्यवन वचन वर निज आश्रममहँ आई ।
मरण भयो तहँ असित भूपको लह्यो विषाद महाई ॥
गर युत जन्यो पुत्र अतिपावन ताते सगर कहायो ।
मारि मलेच्छन अवधराज किय जगतीमहँ यश छायो ॥
भयो सगरके असमंजस पुनि औरहु साठि हजारा ।

खोजन वाजी कपिल शाप लहि भये सकल जरिछारा ॥
असमंजस असमंजस कीन्ह्यो सरयू बालक बोरे ।
दियो निकारि पिता तिहि दोषहि रहे भवन दिन थोरे ॥
अंशुमान इव अंशुमान भो असमंजस सुत ख्याती ।
ताके भयो दिलीप महीपति सगर नरेश पनाती ॥
ताके भयो भगीरथ भूपति जो गंगा महि ल्यायो ।
डारि गंगजल साठि हजारन सपदि स्वर्ग पठवायो ॥
भयो भगीरथ महाराजके नाम ककुस्थ कुमारा ।
वृषभ भयो वासव तापर चढ़ि जीत्यो दैत्य अपारा ॥
रघु महराज भये ककुस्थ के को जग तासु समाना ।
दान वीर अरु धर्म वीर रण धीर महा बलवाना ॥
रघु के भये पुत्र पुरुषादक तेजवंत बलवंता ।
सोइ कल्मापहुपाद कहायो लहि गुरु शाप तुरंता ॥
ताके भयो सूनु पुनि शंखन भयो सुदर्शन ताके ।
अग्निवर्ण पुनि भयो तासु सुत शीघ्रगवन सुत जाके ॥
शीघ्रगवन के पुत्र भयो मरु तासु प्रसुश्रुक भयऊ ।
अंबरीष पुनि भयो तासु सुत नहुष तासु सुत जनेऊ ॥
भयो ययाति नहुषको नंदन सुत ययाति नाभागा ।
नृप नाभाग कुमार भयो अज महाराज बड़भागा ॥
अज महराज कुमार विदित जग यह दशरथ महराजा ।
जासु समाज आज नहिं दूसर भुवि भूपन शिरताजा ॥
आदिवंश अतिशय विशुद्ध यह धर्म धुरंधर धरणी ।
कहँ लौं भाग्य कहौं दशरथकी यक मुखजायनवरणी ॥
लै इक्ष्वाकु भूपते अब लौं यहि कुल माहिं विदेहू ।
भये सत्यवादी भूपति सब वीर सुधर्म सनेहू ॥

तिनके कुँवर राम लक्ष्मण दोउ आप नगर महँआये ।
राम शंभुधनु तोरि सभामहँ संकट सकल नशाये ॥
ताते एक बात अब भाषहुँ जो मानहु मन मोरा ।
पैहौ परमअनन्द भूपवर जंग सुयश जग तोरा ॥
वीरज शुल्का सीता कन्या राम व्याह सो होई ।
व्याहौ लषणै सुता दूसरी लहै हर्ष सब कोई ॥
समकुल समविभूति समकीरति समरति धर्म समाना ।
रघुकुल निमिकुल सरिस आदि जग कहौ कौन कुल आना ॥
यहि विधि सुनि वसिष्ठकी वाणी सकल सभासद हरखे ।
देव दुंदुभी दियो गगनमहँ सुमन विविध विधिबरखे ॥
सुनि मिथिलेश वसिष्ट वचनवर पुलकित दृग जल छाया ।
जोरि पाणि पंकज वसिष्ठके पद पंकज शिरनायो ॥
भयो धन्य मैं मुनि तुव मुखते यह रघुवंश बखाना ।
रघुकुल समकुल कौन दूसरो जान अजानहु जाना ॥
परंपरा जो अहै वंशकी निमिकुलकी मुनिराई ।
शतानन्दको चाहिय सुनावन ऐसो अवसर पाई ॥
सो लै गणकन लग्न शुधावत कैसे ताहि बुलाऊँ ।
ताते राजसमाजमध्य मुनि मैंहीं निज मुख गाऊँ ॥

दोहा–निमिकुलको वर्णन कछुक, सुनु मुनि महा प्रभाउ ।
जाके जो भूपति भयो, कहत अहौं न दुराउ ॥
शाखोच्चार विवाहमें, होत उभय कुल केर ।
ताते मैं वर्णन करहुँ, परी न मुनि कछु फेर ॥

छन्द चौबोला ।

त्रिभुवन विदित भयो निमि भूपति कृत विक्रम धृत धर्मा ।
सकल सुजान प्रधान महायश क्षितिमहँ अक्षय वर्मा ॥

तिन तनुज मिथि भयो महीपति मुख्य जनक कुल राजा ।
भयो उदावसु तासु तनय पुनि कियो सुरनके काजा ॥
भयो नंदिवर्द्धन तिनके सुत ताको ताको तनय सुकेतू ।
भयो सुकेत भूपको नंदन देवरात कुलकेतू ॥
देवरात नृप भयो महाबल सोई हर धनु पायो ।
देवरात राजर्षि भयो सुत नाम बृहद्रथ गायो
भयो बृहद्रथके नंदन पुनि महावीर अस नामा ।
महावीरके तनय भयो धृतिमान धर्म धृति धामा ॥
सुधृतिभूपके दृष्टकेतु भे तिहि हर्य्यश्व कुमारा ।
भयो पुत्र हर्य्यश्व भूपके मरु अस नाम उचारा ॥
मरुके भयो प्रतिधक नन्दन तासु कीर्तिरथ भयऊ ।
पुत्र कीर्तिरथको जग जाहिर देवमीढ जग जयऊ ॥
देवमीढके भयो सामिध सुत महिधृक सामिध कुमारा ।
भयो महीधृकके पुनि नंदन कीर्तिरात बलवारा ॥
भयो महारोमा ताको सुत सुवरण रोमा ताको ।
भयो ह्रस्वरोमा ताको सुत जानहु नाम पिताको ॥
भये ह्रस्वरोमाके हम अरु कुशध्वज अनुज हमारो ।
पिता ह्रस्वरोमा हमको मुनि दियो राज्य संभारो ॥
मेरो करि अभिषेक पिता मम सौंपि मोहिं कुशकेतू ॥
गयो विपिन तप करि तनु तजि तह गमन्यो ब्रह्मनिकेतू ॥
युगल बंधु हम धर्म रीति रचि राज काज सब कीन्हें ।
भ्रात भ्रात दोउ नेह नहे अति विषम रीति नहिं चीन्हें ॥
कछुक कालमहँ भूप सुधन्वा संकासीको आयो ।
घेरि सकल मिथिला नगरीको शासन घोर सुनायो ॥
कमलाक्षी सीता कन्या निज हर कोदंड कठोरा ।

हमको देहु विदेह नेह युत नव होइ भल नोरा ॥
हम नहिं दियो ताहि दुहिता धनु भयो युद्ध नव भारी ।
आप प्रताप नाथ मम करने गयो सुधन्वा मारी ॥
लूटि तासु दल चलि पाछे निहि जाय पुरी संकासी ।
करि अभिषेक कुशध्वजको तहँ कियो भूप सुखरासी ॥
हम अरु अनुज हमार कुशध्वज ठानि प्रीतिकी रीती ।
लषण उर्मिला व्याह करेंगे मानहु मुनि परतीती ॥
कौन कुँवर अब लषण सरिस मुहिं मिली महीतल माहीं ।
लषण योग्य उर्मिला कुमारी यामें संशय नाहीं ॥
राम सरिस हैं लषण लाल ऋपि पै न भेद विचारी ।
तिमि उर्मिला और सीतामहँ किहि विधि भेद उचारी ॥
देहौं देहौं देहौं लषणहिं मैं उर्मिला कुमारी ।
मति संशय मानहु मन मुनिवर दीजै लग्न विचारी ॥
वरण्यो वंश ढिठाई करिकै क्षमियो मम अपराधा ।
तुम रघुकुल गुरु तथा हमारे बुद्धि पयोधि अगाधा ॥
मुनि वसिष्ठ तहँ लगे सराहन निमिकुलकी बड़ि महिमा ।
सुनु महीप मिथिलेश तोहिं सम को महीप है महिमा ॥
तब मिथिलाधिराज बोल्यो अस अवधराज सों बैना ।
नाथ सनाथ कियो निमिकुलको अब बाँछा कछु है ना ॥
कहौं कौन विधि जान भवन ते पै जो उचित विधाना ।
तौ करवाइय जाय कुमारन मंगल हित गोदाना ॥

दोहा—यतनो कहत महीपके, तिहि अवसर सुखछाय ।
शतानंद लै गणकगण, कह्यो जनकसों आय ॥
सकल ज्योतिषिनते सहित, शोध्यो लग्न विचारि ।
आयसु होय सुनाइये, सकल विचार उचारि ॥

तब विदेह बोल्यो हरषि, दोउ ब्रह्मर्षि प्रधान ।
तिनहिं सुनावहु लग्न मुनि, जो कछु होय प्रमान ॥
विश्वामित्र वसिष्टसों, शतानंद तब जाय ।
लग्यो सुनावन लग्न दिन, गुण गहि दोष विहाय ॥

छन्द चौबोला ।

मघा नखत है आजु महीपति सो प्रशस्त नहिं व्याहू ।
पूर्व फाल्गुनि काल्हि सोउ नहिं उत्तम होत उछाहू ॥
उत्तर फाल्गुनि परसों ह्वैहै सो प्रशस्त सब भाँती ।
शोध्यो लग्न परमसुखदायक जुरिकै गणक जमाती ॥
कृष्णपक्ष पंचमी अहै तिथि मार्गशीर्ष शुभ मासा ।
कन्यादान होय तिहि वासर दोउकुल लहैं हुलासा ॥
विश्वामित्र वसिष्ठ लग्न सुनि करिकै विमल विचारा ।
दोउ उत्तरा फाल्गुनिमें सिद्धांत लग्न निरधारा ॥
कृष्णपक्ष शुभ मास मार्ग यह माधव रूप बखाना ।
अति शुभ कर उत्तरा फाल्गुनि होइ विवाह विधाना ॥
होय विवाह उत्तरा फाल्गुनि यह संमत सब केरो ।
सुनत अवधपति अरु मिथिलापति मान्यो मोद घनेरो ॥
निमिकुल रघुकुल सकल सभासद परिजन पुरजन जेते ।
राम लषण उद्वाह लग्न सुनि भये प्रमोदित तेते ॥
कियो विदेह विनय दशरथसों पितर श्राद्ध करिलीजै ।
पुनि गोदान कराय कुमारन व्याह विधान करीजै ॥
अति हर्षित इक्ष्वाकुवंश मणि सुनि विदेहकी बानी ।
कह्यो जनकसों वचन पुलकि तनु देहु विदा विज्ञानी ॥
पितर श्राद्ध गोदान कुमारन करवावहुँ जनवासे ।
भयो लग्न सिद्धांत सुखावधि देखन व्याह हुलासे ।

दिन लग्यो जब विदा जनक नृप दशरथको सुखछाई ।
अवसर जानि कह्यो कौशिक तब वचन हिये हरषाई ॥
निमिकुल रघुकुल दोउ अतिपावन महिमा कही न जाई ।
नहिं समान दोउ कुलके दूसर परे प्रत्यक्ष दिखाई ॥
यह समान सम्बन्ध धर्मयुत दोउ कुल दोउ अनुरूपा ।
राम लषण सिय और उर्मिला व्याह उचित अति भूपा ॥
निमिकुलते अब अधिक और कुल अवधनाथ कहँ पैहैं ।
तैसहि अब मिथिलेश महीपति रघुकुल तजि कहँ जैहैं ॥
ताते मोर विचार होत अस कुशध्वज युगल कुमारी ।
होय विवाह भरत रिपुहनको अनुमति यही हमारी ॥
तुव अनुरूप अनूप विश्वमहँ दशरथ भूप कुमारा ।
निरखत जिनको लोकपाल सब मानत हियमें हारा ॥
सदृश त्रिविक्रम विक्रम जिनको अद्भुत देव अकारा ।
रंगभूमिमहँ राम बाहुबल को अस जो न निहारा ॥
ताके अनुजन व्याहि देहु नृप दोउ कुशकेतु कुमारी ।
करहु चारिहू राजकुमारन सम्बन्धी शुभकारी ॥
रामजानकी लषणउर्मिला जिहि दिन होइ उछाहै ।
ता दिन दोउ कुशकेतु कुमारी भरत शत्रुहन व्याहै ॥
दूलह चारि चारि दुलहिन नृप निरखि जनकपुरवासी ।
रघुकुल निमिकुल धन्य होइगो हमहुँ लहब सुखरासी ॥
ऐसो अहै विचार हमारो पुनि जस तुव मन माहीं ।
तुम सम सुमति कबहुँ नहिं जगमें समय चूकि पछिताहीं ॥
सुनि कौशिकके वचन सभासद मुनिजन अतिहरषाने ।
साधु साधु सब कहैं गाधिसुत मुनिवर उचित बखाने ॥
सुनत जनक पुलकित तनु हर्षित भरि आनँदजल नयना ।

नाय चरण शिर जोरि कंज कर कह कौशिक सों बयना ॥
तुम सम है ना लख्यों न नयना मतिअयना सुखदैना ।
अबमुहि भय ना चितचय चैना का मम सुकृत उदैना ॥

दोहा-धन्य धन्य निमिकुल अहै, जहँ दायक उपदेश ।
विश्वामित्र वसिष्ठ हैं, तहँ नहिं लेश कलेश ॥
धन्य धन्य मेरी भई, मुनिवर चारि कुमारि ।
पायो वर त्रयलोकवर, निज निज वपु अनुहारि ॥
होय एकही संग मुनि चारि कुमारिन ब्याह ।
शांध सांध सुवरी सकल, लखी अथाह उछाह ॥

छन्द चौबोला ।

मिथिलापतिके कहत वचन अस सभामध्य इक बारा ।
परिजन पुरजन गुरुजन सज्जन कीन्हें जयजयकारा ॥
दीन्हें देव दुंदुभी दिविमहँ फूलनकी झरिलाई ।
जयमिथिलेशजयतिकौशलपति यह धुनि दश दिशिछाई ॥
पुनि विदेहसों कह वसिष्ठ मुनि सोइ लग्न महँ आई ।
पाणिग्रहणकरैंचारिउसुत चारिउवधुन सुहाई ॥
परसों है उत्तराफाल्गुनिनखत विवाहन योगू ।
बुध वर कहत विवाह लग्न शुभ महि मुद मंगल भोगू ॥
भग नामक जिहि देव प्रजापति यहि सम लग्न न आना ।
यह सुख निरखि कृतारथ ह्वैहैं भूपति सकल जहाना ॥
विश्वामित्र वसिष्ठ वचन सुनि दशरथ जनक सुखारी ।
प्रेम विवश पुलकित गल गद्गद सके न बयन उचारी ॥
तिहि अवसर विरंचि पठवायो नारदमुनि तहँ आये ।
उठी समाज देवऋषि देखत युगल भूप सुख पाये ॥
दशरथ जनक परे चरणनमें नारद आशिष दीन्हें ।

षोड़श विधि कीन्हें नृप पूजन अतिथि अनुपम चीन्हें ॥
विश्वामित्र वसिष्ठ मिले दोउ मुनिजन कीन प्रणामा ।
सिंहासन बैठाय देवऋषि दोउ बोले मतिधामा ॥
तुव दर्शनते आजु भये मुनि सफल सुनयन हमारे ।
तब नारद मुनि मोद भरे मन ऐसे वचन उचारे ॥
राम व्याहकी लग्न शोधिके मुहिं करतार पठायो ।
मार्ग मास उत्तराफाल्गुनि वासर लग्न सुहायो ॥
तीनों बन्धु सहित रघुपतिको ता दिन होइ विवाहा ।
लग्न दिखावन व्याज मही इत आयो दरश उमाहा ॥
विधिनिदेश तुमसों सब कहि अब राम दरश हित जैहों ।
चारिहु वंधुनको दर्शन करि महामोद नृप पैहों ॥
अस कहि हर्षि वर्षि नयनन जल चल्यो देवऋषि आसू ।
जहां सहित वंधुन रघुनन्दन वर बरात जनवासू ॥
परिजन पुरजन सकल सभासद सुनि नारदकी वाता ।
कहन लगे सब जनक गणकगण हैं सति अपर विधाता ॥
जनकराजसों बिदा होनको अवधराज चित चाये ।
सहित समाज राज दोउ सोहत सुर दुन्दुभी वजाये ॥
फैलि गई यह वात सकल पुर परसों राम विवाहू ।
जहँ तहँ यूथ यूथ जुरि जुरि नर नारि कहैं सब काहू ॥
यह सम्बन्ध महासुखदायक जनक सुकृति वैदेही ।
दशरथ सुकृत रूप रघुनन्दन अपर कौन सम देही ॥
पूरव हमहुँ पुण्य बहु कीन्हीं भये जनकपुर वासी ।
इन नयननसों राम व्याह अब देखत आनँदरासी ॥
जे जानकी राम छवि देखे तिन कहँ कछु नहिं वाकी ।
हमरे भाग्य विवाह भयो यह गूँगन कृपा गिरा की ॥

बारहिंबार विदेह बुलाई निज निवास वैदेही ।
ऐहैं सीय लिवावन रघुबर ह्वै ससुरारि सनेही ॥
बारहिंबार विलोकन रामहिं लैब विलोचन लाहू ।
घर घर राम निमन्त्रण होई अनुपम सुख सब काहू ॥
कोउ कह राम लषण जोरी जस तैसहि युग नृप ढोटा ।
आय दशरथ संग अवध ते सखि सुन्दर भल जोटा ॥
तब बोली कोउ तू नहिं जानति राम अनुज हैं दोऊ ।
जेठो भरत शत्रुसूदन लघु अस भाषत सब कोऊ ॥

दोहा—कोउ कह मैं अबहीं सुन्यो, भूपति मन्दिर माह ।
होई चारिहु कुँवरिको, चारिहु कुँवर विवाह ॥

छन्द चौबोला ।

कोउ कह श्याम राम सम भरतहु रिपुहन लषणसमाना ।
चीन्हें चीन्हें चीन्हि परत हैं अस सुन्दर नाहिं आना ॥
भरत कैकयी तनय कौशला रामहि जन्यो पवित्रा ।
लषण शत्रुहन अहैं सहोदर दोहुन जन्यो सुमित्रा ॥
चारिहु कुँवर शील विद्या बल विक्रम विनय अगारा ।
भूप चक्रवर्ती दशरथके चारिहु चारु कुमारा ॥
अञ्चल ओड़ि मनावहिं विधिसों सबै जनकपुर नारी ।
विघ्न निवारि विवाह करावहु जो कछु पुण्य हमारी ॥
युग युग जीवहिं चारिहु जोरी मिथिला अवध अधारा ।
पुण्य पयोनिधि जनक अवधपति को इनसम संसारा ॥
यहि विधि कहहिं परस्पर वाणी गावहिं मंगल गीता ।
देवी देव मनावहिं प्रतिदिन पुरजन परम पुनीता ॥
आये जे नृप भक्त स्वयंवर ते न गये निज गेहू ।
राम जानकी व्याह लखनको निवसे नगर विदेहू ॥

माँगन विदा चहे दशरथ जब चलनंदन जनवासे ।
तब कौशिक वसिष्ठसों भाष्यो मैथिल वयन सुधासे ॥
सानुज मोर धर्म प्रभु दोऊ दीन्ह्यो सविधि निबाही ।
अहौं शिष्य मैं पदरजधारक प्रतिनिधि है कछु नाहीं ॥
बैठहु युगल राज सिंहासन युगल मुनीश कृपाला ।
थिला अवधराज तुम्हरी दोउ तुमहीं अहौ भुवाला ॥
जैसो दशरथको मिथिलापुर तस कोशलपुर मोरा ।
कछु नहिं भेद जानिये मुनिवर नहिं कछु करौं निहोरा ॥
नहिं संदेह प्रभुत्वमाहिं कछु तुव पद शीश हमारे ।
मन भावै सो करहु नाथ दोउ जस अभिलाप तिहारे ॥
तुम प्रसाद मम काज सिद्धि सब दोउ प्रभु दोउ कुलनाथा ।
अस कहि बैठायो सिंहासन दोउ मुनिवर इक साथा ॥
विश्वामित्र वसिष्ट प्रसन्न भये दिय आशिर्वादा ।
उभय भूप तुम जगत शिरोमणि सकल धर्म मर्यादा ॥
जय जयकार किये सिगरे जन नभमहँ बजे नगारा ।
छूटी कुसुमावली गगनते धनि मिथिलेश उदारा ॥
यहि विधि तिहि समाजमहँ आनँद छाय रह्यो मिति नाहीं ।
हुलसि अवधपति जोरि कंजकर कह्यो जनकनृप काहीं ॥
गुणसागर नागर यश आगर मिथिलेश्वर दोउ भाई ।
कियो महासत्कार मुनिन अस कौन करी नृपराई ॥
राज समाज रावरे करते लहे परम सत्कारा ।
देहु रजाय जाहिं जनवासे वर्णत सुयश तुम्हारा ॥
विश्वामित्र वसिष्ठ कह्यो तब तुम अस तुमहिं विदेहू ।
हम सबको अपने वश कीन्ह्यो पाश पसारि सनेहू ॥
कौशलनाथ संग जनवासे हमहूँ करब पयाना ।

करैं हैं चारिहु कुमारन सविधि विविध गोदाना ॥
अभ्युदयिक करवाय श्राद्ध विधि सब विवाहके चारा।
कृत्ति नल मायन करैं हैं ब्याह विधान अपारा ॥
मुनिवर वचन वचन दशरथ के सुनि मिथिलेश सुजाना।
भन्यो प्रेमवश कहौं कौन विधि इतते राउर जाना ॥
जस अभिलषित होय कीजै तस कारज अवशि विचारे।
उठ्यो अवधपति लै समाज सब उभय मुनीश सिधारे ॥
करि कौशिक वसिष्ठ कहँ आगे चल्यो राय जनवासे।
सकल राजवंशी मंत्री भट गमने हिये हुलासे ॥
दोहा—फहरत चले निशान बहु, बाजत विविध निशान।
देखत पुरजन भनत यश, यहि सम किमि मघवान ॥

छन्द चौबोला।

जनवासे आये कौशलपति बैठे मंदिरमाहीं।
विश्वामित्र वसिष्ठ बोलि तहँ विनय करी तिन पाहीं ॥
अभ्युदयिक प्रभु श्राद्ध करावहु अब न लगावहु देरी।
जो कछु कारज होय बतावहु सेवक गुणि गति मेरी ॥
गुरु वसिष्ठ अरु गाधितनय तब विधिवत श्राद्ध कराये।
भोजन समय जानि कौशलपति चारिउ कुँवर बुलाये ॥
चारिहु कुँवरसहित भोजन करि बैठे नृप पर्यंका।
राम लषण रिपुहन भरतहुको बैठायो निज अंका ॥
लगे शिखावन कुँवर सुहावन बेटा यह श्वशुरारी।
कियो न चपलाई पर घर चलि ह्वै है हँसी तिहारी ॥
श्वशुर सासको वंदन करियो मुहिं सम गुण्यो विदेहू।
विना बुलाये उतै न जइयो नहिं बाग्यो बहु गेहू ॥
बहुत हँसी करियो नाहिं काहू उत्तर दियो सम्हारी।

मिथिलापुरकी चतुर नारि देहिं जुरि जुगुतिन गारी ॥
सुनत बयन पितु राम बंधु युत लज्जित शीश नवाये ।
कर जोरे भोरे इव बैठ मनहींमन मुसक्याये ॥
इतनेहीमें प्रतीहार तहँ आसुहि खबरि जनायो ।
मिथिलाधिप व्यवहार पठायो सुमति सचिव लै आयो ॥
उठ्यो हर्षि देखन कोशलपति सहित कुमार सिधारे ।
एक एक वस्तुनके लागे पूरण पर्वतिन पहारे ॥
बहु विधान पकवाननके तहँ दान विधानहुँ नाना ।
लघु ते लै पर्य्यन्त वस्तु बड़ि वसन विभूषण नाना ॥
निज निज अभिलाषन अनुसारन पाये सकल बराती ।
रही न काहू कछुक कामना तोषित भे सब भाँती ॥
ऋद्धि सिद्धि निधि करि आकर्षण जगदीश्वरी सुसीता ।
पठै दियो सिगरे जनवासे पूरण करन पुनीता ॥
भोग विलास बरातिनको तहँ लहै कौन कहि पारे ।
एक एक रघुवंशिनको थल लोकपाल लखि हारे ॥
घटी घटी सुर नटी नटैं तहँ घटैं न घट घट हर्षा ।
भरि गुण गर्व सर्व गंधर्व गाय करते सुम वर्षा ॥
महा मनोहर बाजन बाजत संयुत ताल बँधाना ।
सबके डेरन बने जरीके विस्तर तने विताना ॥
बाग तड़ाग नहर सुरभित जल बने विचित्र अगारा ।
पूरण सकल अपूरब वस्तुन जो नहिं कबहुँ निहारा ॥
जो जहँ चहत जौन मनमें जन मिलत तौन अनयासा ।
इन्द्र कुबेर वरुण देवन सम पावत भोग विलासा ॥
बीतत वासर रैन चैन महँ जागत शयनहु माहीं ।
अवध विलास बरातिन भूल्यो कहहिं जाब अब नाहीं ॥

ब्याहि कुमार चारि कोशलपति बसे इते सब काला ।
अस सुख कबहुँ न लहे जन्म भरि जस अब लहे विशाला॥
भई साँझ भूपति संध्या करि बैठ्यो कुँवर समेता ।
पूर्वचित्ति मनका उर्वशी रंभा आदि सुचेता ॥
विश्वावसु तुंबुरु आदिक तहँ करन लगे कलगाना ।
साजि समाज विराजि विभूषण नचहिं अप्सरा नाना ॥
मन अभिलाषित भूप दीन तिन वसन विभूषण नाना ।
भाइन सहित विलोकि राम छवि भूल्यो भान अपाना ॥
शयन काल गुनि भूप कुमारन निज निज भवन पठाई ।
महामोद महँ मग्न महीपति शयन किये गृह जाई ॥

दोहा—नाच गान व्यवधान महँ, खान पान सन्मान ।
मगन बराती जगतहीं, पाये पुलकि विहान ॥

सोरठा—बंदी वृन्द अपार, ब्रह्म मुहूरत जानिकै ।
अवधभूपके द्वार, वदन लगे विरुदावली ॥

छन्द चामर ।

जय जय इक्ष्वाकु वंश वारिधिको चंदिरै ।
धर्मको निशान ज्ञानवान मोद मंदिरै ॥
भानुवंश भानुभूप कौशिलाधिराज हौ ।
राजके समाजके दराज शीशताज हौ ॥
आपने सुवंशमें विचारि राम व्याहको ।
अंशुमान आवतो भरे लखै उमाहको ॥
तजौ सुशैन चैन सों सनींद नयन खोलियो ।
प्रदान अर्घ्य कीजिये सुवेद मंत्र बोलियो ॥
दिनेश भीति मानि तारवृन्दहू विलाइगे ।
उलूक चूक हूक मानि मूक ह्वै पराइगे ॥

नरेश आप मित्रमें प्रफुल्ल कंज वंद भे ।
अरीनमें अनेक कैरवानि वृन्द मंद भे ॥
सखा सुमंत्रि बंधुवर्ग देहु देव दर्शने ।
स्वपक्ष रक्ष दक्ष आप चक्र ज्यों सुदर्शने ॥
मुकुन्द ध्यान ठानिके प्रभात कर्म कीजिये ।
अनेक विप्रवृन्दको अनेक दान दीजिये ॥

—अजनन्दन आनन्द भरि, अभिवंदन हित द्वार ।
वृन्दनके वृन्दन खड़े, सचिव सुहृद सरदार ॥
मुनि बंदिनके वर वचन, निशा व्यतीत विचारि ।
जगतीपति जागत भये, नयनन नींद निकारि ॥
पितुके पूरब कछु जगे, चारिहुँ राजकुमार ।
रामदरश तिन आय किय, तीनिहुँ बंधु उदार ॥
रघुनन्दन भ्रातनसहित, पितु दर्शन किय जाय ।
चरण बंदि आशिष लहे, गमने पाय रजाय ॥
प्रातकृत्य निरवाहि सब, सुरभित सलिल नहाय ।
अर्घ्य प्रदानादिक कियो, दिय द्विज दान बुलाय ॥
रघुनन्दन चन्दन दियो, गायत्री जप कीन
नित्य नेम निरवाहि सब, बंधुन बोलि प्रवीन ॥
वसन विभूषण पहिरिकै, करि सुन्दर शृङ्गार ।
चले चारिहू बंधु तहँ, करन पिता दरबार ॥
दशरथ इतै प्रभातको, नित्यनेम निरवाहि ।
बैठ्यो सभा सुरेशसम, बोल्यो कुलगुरु काहि ॥
मार्कंडेयादिक मुनिन, लियो तुरंत बुलाइ ।
विश्वामित्रहि बोलि पुनि, बोल्यो कौशलराइ ॥

चौपाई ।

तेल चढ़ावन आदिक चारा । करवाई जस होइ विचारा ॥
पुनि करवाइ मुनी गोदाना । मंगल मंडित वेद विधाना ॥
सुनि नृपवचन परम अहलादी । विश्वामित्र वसिष्ठहु आदी ॥
लगे करावन पावन चारा । बोलि चारिहू राजकुमारा ॥
पूजन गौरि गणेश कराये । ते निज रूप प्रत्यक्ष दिखाये ॥
पूजन लेन व्याज सब देवा । आवहिं करन रामकी सेवा ॥
करि वाचन पुण्याह सुखारी । लियो बोलि द्विज पंच कुमारी ॥
निकटपुरटघटचटपटधरिकै । सदल सदीप अमल जल भरिकै ॥
नवल पीतपट भूषण नाना । विप्रकुमारी करि परिधाना ॥
लै हरिद्र दूर्वा तिहि बेला । प्रभु कहँ लगीं चढ़ावन तेला ॥
बैठ बरोबर तीनहुँ भ्राता । निरखत जन सुख लहत अघाता ॥
जस जस व्याहकृत्य तहँ होती । तस तस तिन तनु लाज उदोती ॥

दो०—तेल चढ़ावहिं कन्यका, प्रभुको वदन निहारि ।
तकि तकि छवि छकि छकि रहैं, जकि जकि मृदुल विचारि ॥

छन्द चौबोला ।

शिर कंधन जानुनी पगनमहँ फेरहिं पाणि कुमारी ।
मनहुँ पूजि शशि नील रत्नगिरि उतरहिं कुमुद सुखारी ॥
परिकर सचिवादिक अहलादित करहिं निछावरि आई ।
मणिगण सुवरण वसन विभूषण पावहिं धाय धवाई ॥
रतनालिका वीरमणि ठाढ़े राई लोन उतारैं ।
राम सुछवि लखि लखि दृग छकि छकि मानहुँ तन मन वारैं ॥
जासु प्रसाद गणेश आदि सुर हरैं विघ्न करि मंगल ।
सो प्रभु शिरनावत मंगलहित गणपति थापि कमण्डल ॥
नभमाहिं बाजन बजत विविध विधि गावहिं देवन दारा ।

मच्यो हुलास महा जनवासे द्विज धन लहैं अपारा ॥
विश्वामित्र वसिष्ठ रामको दिये नेछ चढ़वाई ।
भये अनंदित सकल बराती बहु धन दियो लुटाई ॥
चारि कुमारनको भूपति पुनि अपने निकट बुलाये ।
गुरु वसिष्ठ गोदान करनको सविधि अरंभ कराये ॥
सुवरण शृंगनसहित बाछरा कनक दोहनी वारी ।
परे दुशाले पीठिनमें जिन रजत खुरी छबि भारी ॥
पय स्रवती निरखत मनहरनी बहु बरनी शुभ शीला ।
ऐसी चारि लाख सुरभी तहँ मँगवायो इव लीला ॥
लाख लाख सुरभी इक इक सुत करते दान कराये ।
लक्ष लक्ष मुद्रा हैमी पुनि तिन दक्षिणा दिवाये ॥
याचक भये अयाचक जगके किये विप्र जयकारा ।
धर्मध्वजा फहरान भूपको विदित सकल संसारा ॥
धेनु दान करवाय कुमारन इक सिंहासनमाहीं ।
बैठ्यो लै पुत्रन कोशलपति वरणि जाय सुख नाहीं ॥
जैसे चारिहु लोकपालयुत राजत सभा विधाना ।
तैसहि चारि कुमारनते युत दशरथ भूप विभाना ॥
तिहि अवसर धावन द्वै आये कहैं जोरि युग पानी ।
केकय महाराजको नंदन नाम युधाजित जानी ॥
आवत काश्मीर नृपनंदन आगे हमहिं पठाये ।
खबरि देन हित रामराजमणि हम आये अतुराये ॥
सुनि आगमन युधाजितको तब कोशलपति हरपाये ।
अगवानी करन भरत रिपुसूदनको पठवाये ॥
कछुक दूरते भरत जाय निज मातुलको लै आये ।
जोहि युधाजित अवधनाथको बार बार शिरनाये ॥

उठ्यो भूप सादर ताको मिलि दै आसन अनुरूपा ।
कह्यो युधाजितसों कुशली हैं कुलयुत केकयभूपा ॥
राम लपण अरु भरत शत्रुहन मातुल किये प्रणामा ।
मिले युधाजित दै आशिष बहु सिद्धि होय मनकामा ॥
कह्यो युधाजित पुनि दशरथसों हमहिं पिता पठवाये ।
बार बार पूँछी कुशलाई भूपनि तुमहिं उराये ॥
हमहिं कह्यो तुम जाहु अवधपुर भरत सुतासुत मोरा ।
लै आवहु तिहि लपण अनुजयुत लखन हेतु यहि ठोरा ॥
काश्मीरते चले प्रथम हम अवधनगरको आये ।
[illegible] दिन भे [illegible] बरातको ताते तुमहिं न पाये ॥
सुन्यो विवाह भागिनेयनको होत जनकपुरमाहीं ।
परम प्रमोदित चले बराबर आये हमहुँ यहांहीं ॥
यहां प्रमोद पयोनिधि बाढ्यो रही भाग्य मम भारी ।
राम विवाह विलोकि विलोचन ह्वैहैं हमहुँ सुखारी ॥

दोहा—सुनत युधाजितके वचन, हरप्यो अवध भुआल ।
बार बार सत्कार करि, कीन्ह्यो श्याल निहाल ॥

छन्द चौबोला ।

दियो युधाजितको डेरा नृप भरत महलमहँ जाई ।
सकल भाँति सोपति भूपति किय करि सत्कार बड़ाई ॥
रह्यो युधाजित चैन पाय अति अयन अनूपम माहीं ।
भोजन समय चारि कुँवरनयुत आन्यो नृप तिहि काहीं ॥
हिलि मिलि भोजन करन लगे नृप ठानत हास विलासा ।
कह्यो युधाजितसों कौशलपति साहितमंदमुख हासा ॥
पुण्यवान मिथिलापति कीन्ह्यों बड़ हमरो उपकारा ।
वधुनसहित करि देत भयो अब चारिहु राजकुमारा ॥

करहु युधाजित तुम उछाहयुत दूसर ब्याह हमारा ।
वृद्ध जानि कीजै जनि मन भ्रम लेहु सुयश संसारा ॥
कह्यो युधाजित आप कुमारन किया मदारन जोई ।
अभिलाषा यह अवशि रावरी पूरण करिहै सोई ॥
यहि विधि हास विलास करत नृप करि भोजन सुखसाने ।
उठि अचमन कीन्हें सुगन्ध जल सुभग वसन परिधाने ॥
निज निज भवन शयन हित गमने आनँद मगन अपारा।
सांझसमय पुनि सहित कुमारन नृप बैठ्यो दरबारा ॥
मन्त्री सचिव सुभट सरदारहु कवि द्विजगुण पगु धारा ।
देव नटी गंधर्व सर्व युत करन लगीं नट सारा ॥
राम लषण अरु भरत शत्रुहन सहित युधाजित आये ।
पुत्रनको सन्मुख केकैसुत निज समान बैठाये ॥
ताही समै जनक पठवायो शतानन्द मुनि आयो ।
उठि आसन दीन्ह्यो अवनीपति चरण कमल शिरनायो ॥
विश्वामित्र वसिष्ठ आदि मुनिमण्डल भूप बुलायो ।
यथायोग्य आसन दै सबको बार बार शिरनायो ॥
गौतमतनय कह्यो भूपतिसों विनती कियो विदेहू ।
बीते चारि दण्ड यामिनिके ब्याह लग्न गुनि लेहू ॥
गोधूली बेला महँ ह्वै है काल्हि द्वारको चारा ।
महाराज लै चारि कुमारन करैं पवित्र अगारा ॥
सुनत चक्रवर्ती अवनीपति मन अभिलषित सुवाणी ।
गद्गद कण्ठ सुमिरि विकुण्ठपति कह्यो जोरि युग पाणी॥
अभ्युदयिक करि श्राद्ध यथाविधि कुँवरन तेल चढ़ाई।
तिमि गोदान कराय सुतन कर बैठे लहि शुचिताई ॥
नहछू काल्हि कराय महामुनि सुन्दर साजि बराता ।

धनुधूलि वलामहँ आउव कहहु जाय मुनि वाना ॥
दोउ ब्रह्मर्षि वसिष्ठ गाधिसुत सहित जनक पहँ जाहूँ ।
वेद विधान साज सब साजहु जस भाषैं मुनिनाहू ॥
मुनिके शतानन्द सानन्दित लै रघुकुल गुरु सङ्गा ।
विश्वामित्रसमेत चल्यो तहँ रँग्यो प्रीतिके रंगा ॥
मुनिवर जाय जनक मन्दिर महँ पाय परम सत्कारा ।
साजे सकल व्याह सामग्री जस विधि वेद उचारा ॥
यथा राम चारिहु भाइनको तेल चढ़्यो जनवासे ।
चारि लक्ष गोदान करायो दशरथ पुण्य प्रकासे ॥
यहि विधि जनक सुनैना रानी सीतहि भगिनिसमेतू ।
तेल चढ़ाय पाय आनँद अति पुनि वैठाय निकेतू ॥
चारि लक्ष सुरभी सालंकृत चारि कुँवरि कर तेरे ॥
दीन्ह्यो दान दिवाय द्विजनको शतानन्दके प्रेरे ॥
पुनि वसिष्ठ कौशिक विदेह ढिग कही मनोहर वानी ।
सकल चार ह्वै गयउ उभयदिशि रह्यो व्याह सुखखानी ॥

दोहा—यथा हुलास प्रकाश है, राउरके रनिवास ।
तैसहि हास विलास सुख, दशरथके जनवास ॥
सहित कुमारन अवधपति, व्याहकृत्य करवाय ।
वैठ्यो तब मिथिलेश मुहिं, देहैं दान बुलाय ॥
दाता तुम दशरथ अहैं, आज अहीता दान ।
यह सुख मुख कहिजातनहिं, समधीउभयसमान ॥
सुनि वसिष्ठके वचन वर, वोल्यो वचन विदेह
दोऊ दशरथ भूप हैं, का विचार निजगेह ॥
मेरो घर कुल राज धन, सब दशरथको आय ।
एक अहै मिथिला अवध, दूसर नाहिं दिखाय ॥

मुनि सिद्धके वचन वर, पाय वसिष्ठ प्रमोद ।
जनवासे गमनत भयो, स्वामि विनोद चहुँ कोद ॥

छन्द चौबोला

फैलिगई यह बात चहूँकित रनिवासे जनवास ।
ह्वै है काल्हि विवाह रामको सुनि सब भये हुलास ॥
घर घर माचिरह्यो नगरमहँ बर बर होनि तयारी ।
अवधलोगउनमज्जन सजावनकाल्हिबरात सिधारी ॥
एक एक रघुवंशिनके डेरन होन लगे नटसारा ।
बैठे राम ब्याह सुख भाषत होत भयो भिनुसारा ॥
हल्ला पर्‍यो अमरलोकनमहँ काल्हि राम को ब्याहा ।
देव बराती होन हेत सब साजे निज निज बाहा ॥
रच्यो बिरंचि हंस अति सुंदर शंकर साजे नन्दी ।
इन्द्र सजायो ऐरावत कहँ षटमुख मोर अनन्दी ॥
महिष अभद्र जम नहिं साज्यो धर्मराज हरिदासा ।
ऐसहि और देव सब वाहन साजे सहित हुलासा ॥
जिनके वाहन अशुभ रूपके ते डरि नहिं सजवाये ।
राम दरश हित होन बराती चढ़े विमानन आये ॥
नहिं जनवासे नहिं रनिवासे नहिं पुरके कोउ सोये ।
करत तयारी महासुखारी जागतहीं रवि जोये ॥
दशरथ सुतन कराय बियारी शयन अयन पठवाई ।
पौढ़े यदपि भूप पर्यंकहु तदपि नींद नहिं आई ॥
बात कहत इव राति सिरानी लाग्यो होन प्रभाता ।
द्वारदेशमहँ गावन लागे बंदी विरुद विख्याता ॥
भूपति उठि उछाहवश आतुर प्रातकृत्य सबकरिकै ।
दैदैदान बुलायद्विजनको सुतन बोलि सुखभरिकै ॥

कारे जलदा ज्योनार बारयुत साधारण पट पहिरी ।
बैठ्यो आय राज सिंहासन जिहि सुखमा अति गहिरी ॥
बुलवायो वसिष्ठ कौशिकको सचिव सुमंत तुरंता ।
दियो निदेश बरात सजावन सुमिरि चरण श्रीकंता ॥
पुनि बोल्यो कौशिक वसिष्ठसों नाथ मुहूरत भाखो ।
तौन मुहूरत साधि चल्यो इन लै बरात सुख चाखो ॥
विश्वामित्र वसिष्ठ मुहूरत शंकर भणित बनाई ।
कह्यो भूपसों वचन विनोदित रहे याम दिनराई ॥
नहछू करहु कुमारन को नृप कुलाचार विधि गाई ।
अभिजित नाम मुहूरनमें नृप चलै बरात सुहाई ॥
धेनुधूलि बेला रेला सुख होय द्वारको चारा ।
याम जात यामिनी लग्न शुभ पाणिग्रहण सुखसारा ॥
अर्द्धरात्रि लों सकल चार करि आय जाहु जनवासे ।
होय विलंब कुमारनको नहिं सोवहिं सुखी सुपासे ॥
कौशिक संमत युत वाणी वर सुनि वसिष्ठकी भाषी ।
कह्यो तुरंतहि वचन सुमंतहि महामोद मिति नाषी ॥
सुनत सुमन्त तुरन्त हज़ारन परिचारन बुलवायो ।
डेरन डेरन रघुवंशिनके शासन सपदि पठायो ॥
आवैं आज पहर दिव बाकी साजि समाज सरदारा ।
सजे मत्तमातंग तुरंगहु पैदर सुरथ अपारा ॥
धामन धाय पुकारन लागे जस सुमन्त कहिदीने ।
आवन लगे बराती साजि २ शक्र सरिस सुखभीने ।
एक ओर बाजिन की राजी एक ओर गजवृन्दा ।
एक ओर रथके रथ पथमहँ पैदर खड़े सनन्दा ॥
नौबत झरन लगी चारों दिशि बाजे विविध नगारे ।

हिहिनात हयवर घहनात घंटा शंख अपार ॥

दोहा—और हु बाजन बजन भे, मच्यो सुहावन शोर ।
चढ़ि विमानन देव नभ, बरषैं सुम चहुँ ओर ॥
जानि समय शुभ भूपवर, राम सबंधु बुलाय ।
नहछू करवावन लगे, बंशरीति दरशाय ॥

चौपाई ।

समयपाय मिथिलापुर केरी । आईं नाउनि सजी घनेरी ॥
अवध भूप पहँ खबरि जनाई । नहछू करन हेतु हम आईं ॥
सुनत जनकपुर नाउनि राजा । लीन बुलाय जानि बड़ काजा ॥
सजी शृंगारन नापित नारी । मनहुँ मनोजवधू छविवारी ॥
सज्जन वचन सुनत तिहिकाला । मज्जन कीन चारि रघुलाला ॥
युगल पीतपट अंबर धारे । बैठे कनक पटन छवि वारे ॥
मनहुँ दरश सावन घनमाहीं । चमकि रही चपला चहुँघाहीं ॥
मिथिलापुरकी नाउनि आई । दूलह देखि दून सुखपाई ॥
युग श्यामल युग गौर कुमारा । हँसी करन लखि कियो विचारा ॥
तिनमहँ चतुर एक छवि छाई । करि कटाक्ष बोली मुसक्याई ॥
दूलह जेठ कौन सिय केरो । पहिचानन चाहत चित मेरो ॥
युगल गौर युग श्याम कुमारा । एकहि पितुके चारहु बारा ॥
सुनि नृप कह यह इहैं बिबेका । एक मातु पितु होत अनेका ॥

दोहा—सुनत सुघरि नापित घरनि, हँसि रस वश अनुरागि ।
नख करतनि लै कंजकर, नखन छुआवनि लागि ॥

चौपाई ।

नखकरतनि नख परश सुहाये । मनुढिग विधुन विधुंतुद आये ॥
कनक थार भरि नीर उरायनि । लागी देन महाउर नायनि ॥
भरि भाजन यावक बड भागी । चरण कमल्ल कर धोवन लागी ॥

परस कमल पदतल अरुणाई । नाउनि अचक रहइ भुलाई ॥
जिन पदसलिल विश्व अघ खोवै । धनि नाउनि ते पद कर धोवै ॥
नरमुनि जिन पदरज कहँ देवा । नाउनि करनि मुनिन पद सेवा ॥
बसहिं स्वयंभु शंभु चित जेई । नाउनि करन मलति पद तेई ॥
जे पद मुनि मानससर वासी । ते नाउनि कर करन प्रकासी ॥
जिनहिं न तुलति मुक्तिप्रदकासी । ते पद भे नाउनि कर वासी ॥
भरयोकमंडलुविधिजिनपदजल । सोइ सुरसरि ह्वै हरनविश्वमल ॥
तेइ पद पंकज पाणि पखारति । नाउनिदशापितुपतिकुलतारति ॥
पतितन पावन जिन पद पानी । धनि नाउनिधोवति निजपानी ॥

दोहा—निज कर कठिन विचारि अति, प्रभु पद कोमल कंज ।
परशति पुनि डरपति हिये, क्षणक रंज क्षण रंज ॥

चौपाई ।

देति महावर चित्र विचित्रा । युग पद पंकज विश्व पवित्रा ॥
लसहिं चिह्न प्रभु पदतल जेते । नाउनि लिखति उपर पद तेते ॥
जानि राम नाउनि चतुराई । दीन्ह्यों ज्ञान हरयो जड़ताई ॥
जानि जगतपति सो बड़भागी । लीन्ह्यो नग भक्तिरस माँगी ॥
दीन्हींभक्ति ताहि रघुराई । चली भवन सो शीश नवाई ॥
जड़ित जवाहिर भूषण नाना । लगे देन नृप नग महाना ॥
सो कह लह्यो नेग हम जैसो । अति दुर्लभ पावत कोउ ऐसो ॥
अस कहि प्रमुदित नापितरमनी । मंगल गीत गावती गमनी ॥
इत अप्सरगण गावन लागा । राम व्याह मंगल शुभ रागा ॥
गावहिं मंगल राग सहाना । राम सुयश पावन कर काना ॥
गुरु वसिष्ठ नहछू कर चारा । करवाये जस वंश प्रचारा ॥
कंकण गुंजा गुच्छन केरे । कनक कलित लगि रत्न घनेरे ॥

दोहा—पहिराये चारिहु वरण, अपने कर मुनिराय ।
जुटी मीत गुणि जलज जनु, इन्द्रवधूटी जाय ॥

चौपाई

पुनि बोल्यो दशरथ नृपराई । ल्याइ बसन पहिरावहु जाई ॥
लाग्यो आपहु करन पुशाका । भिन्न भवन चालिके सुख छाका ॥
यहि विधि करि नहछू कर चारा । मजन भवन गे राजकुमारा ॥
तहँ परिचर पहिरावन लागे । मणिन सुमंन बनावन लागे ॥
बहुमणि मंडित मौर प्रकाशी । करन मंद दिनकर रुचि राशी ॥
सो रघुराजहि शीश विराजा । मनहुँ नीलमणिगिरिदिन राजा ॥
लषण दुअनहन मौर सुहाना । मनहुँ शरद्घन शिर युगभाना ॥
तुर्रा तड़प उभयदिश कैसी । मेदुर मेघ बकावलि जैसी ॥
काकपक्ष बिच भाल सुहावन । जनु रणराहु जीति शशि आवन ॥
भाल विशाल बीच अति लोना । लसत धात्रि कर दीन दिठोना ॥
मनहुँ मयंक मीत मन मानी । शृंगारहि लीन्ह्यो उर आनी ॥
भृकुटि बंक मनु मदन कमानू । तिलक रेख जनु शर संधानू ॥

दोहा—अमल कपोलनके उपर, युग चख डोरे लाल ।
मनहुँ उछलि सर ते लसत, फँसे मीन युग जाल ॥

सवैया ।

को वरणै रघुनन्दनके दृग मीन औ खंजन कंजन जीते ।
सैनके सैफन कीन्हें कटा जिनमानिनि मानके दुर्ग अजीते ॥
हैं रतनारे बड़े अनियारे सदा रघुराजके प्यारे सुजीते ।
नीतिसों प्रीतिसों प्रेम प्रतीतिसोंआजलोंनारसरीतिसोंरीते ॥

दोहा—कुंडल कानन में लसैं, मंजुल मकराकार ।
मनहुँ सुछवि युग वापिकन, झलकत झख शृङ्गार ॥

सवैया ।

पीत सुरंग दियो पहिराय चमाचम चारु मनोहर बागो ।
मंडित मोतिन जालविशाल विचैविच हीरनको सुम लागो ॥

बरु बड़ो मनो फरुसों फाविन मेरु मयूखनसों दुति जागो।
तापर भावे विभाकर ज्यों मणि मोर कहै रघुराज सपागो॥१॥
कटिमें पटुको छवि छाय रह्यो क्षिति छै छवि छोरनकी छहरैं।
पँचरंग मणीनकी ढालबँधी करवाल विशाल विभा भहरैं॥
पद अंबर शंबर शत्रु रचो जनु त्यों पदत्राण प्रभा लहरैं।
नव नूपुर ते पद पंकजमें रघुराज भजे भव शोक हरैं॥२॥

छन्द गीतिका।

हाटक कटक करमें चटक हीरन छटा छूटैं घनी।
नव रत्न अंगद बाहु मूल अतूल विच विच बहु मनी॥
माणिक सुपन्ना पदिक मोतिन जाल सोहत सहरा।
मन मीन फाँसन हेतु मनु मनसिज रच्यो कल केहरा॥
बैकुण्ठपतिके कंठ तेज अकुंठ कंठाभरन हैं॥
मनु अंबु निधि सुत कंबु बंधुहि मिलत लंब सुकरन हैं।
मणि इन्द्रनील सुपद्मराग विभाग कृत सेल्ही भली।
मनु मेरु चारिहु ओर तारन कलित मारुतकी गली॥
हियरो हरति हेरतहि हठि हिय हीरकी हारावली।
मनु तरनि तेजहि तोपि शशि बल तड़पती तारावली॥
जिहि भाँति वरण्यों वसन भूषण राम व्याह शृंगार कै।
तिहि भाँति तीनिहुँ बंधुके शृंगार भूषण भार कै॥
धात्री रुचिर रतनालिका कज्जल दृगन देती भई।
निज पाणि राई लोन वरन उतारि पावक में दई॥
चुटिकीन को चटकाय पुनि बलि जाय बारहिंबारसों।
आनंद अंबु बहाय अंबक सुमिरि त्रिंबक बारसों॥
कर जोरि बोली गुरु वसिष्ठहि यंत्रमंत्रन बाँधिये।
नहीं दीठि लागै ललनके यहि हेत हर अवराधिये॥

गुरु कह्यो इनके दीठि मूठिहु लागती अस का कहै ।
दुनिया भरकी दीठि इनके मूठिमें सब दिन रहै ॥
तब भूप पहिरच्यो पीतपट दीन्ह्यो मुकुट पुखराजको ।
पुखराजके उर हार जामा जरकशी सुखमाजको ॥
कटि कसो पटुको पीत माला पहिरि पीत प्रसूनको ।
मिथिलेशको समधी सज्यो सुख दून देखत सूनको ॥
यक कर सहज करवाल तुलसी माल यक कर सोहई ।
रघुराज पितु ऋतुराजसों राजन समाजन मोहई ॥
देखत हिते चारिहु सुदूलह इन्द्र सम आवत भये ।
दूलह सजे देखत दृगन सुख दून नृप पावत भये ॥
तब कह्यो वचन वसिष्ठ यहि क्षण भूप परछन कीजिये ।
दूलह चढ़ाय तुरंग महँ पुनि गमन शासन दीजिये ॥
तब तुरत तरल तुरङ्ग चारि सवाँरि साज मणीनकी ।
अनुपम सुछवि मुहरा लगाम ललाम दुमची जीनकी ॥
पगमें पुरट पैंजन परे हैकल सु हीरनके जड़े ।
चामर सड़ाके अति प्रभाके गासिया मखमल मढ़े ॥
पायर सुपन्नाके बने कलँगी कलित मणि गुच्छकी ।
यदि जमै मंदर माथ सुरतरु ताहुकी छवि तुच्छकी ॥
चोटी गुही मोती अमल तिन जानुलों लर लरकती ।
मनु शरद वारिदकी घटा जलबिंदु अवली ढरकती ॥
साजे तुरंग निहारि चारि वसिष्ठ दूलह चारिहूं ।
करवाय तिनहिं सवार छवि लखि मुनि तनहु मनवारिहूं ॥
लै पाणि दधि अक्षतशकुनदीन्ह्योत्रिकुटि टिकुली भली ।
मानहु मयङ्क निशंक कीन्ह्यों अंक निज सुत बुध बली ॥
पुनि दियो दधि अक्षतन बिंदु विशाल भाल सुआल है ॥

लाग्यो उताग्न आर्गी निरि काल होन निहाल है ॥
बरषहिं सुमन सुर देन दुंदुभि करन जयजयकारको ।
बाजे बजाय बरात महँ जन लहन मोद अपारको ॥
जिहि नाम शत्रुंजय महासिंधुर नरेश मँगायकै ।
ता पर अरोहण कियो आसुहि अंबु अंबक छाय कै ॥

दोहा—लस्यो नरेश सुनाग पै, मणिगण दियो लुटाय ।
मनहु उयो उदयाचलै, दिनकर कर छिटकाय ॥
होत सवार भुआरके, पर्‌यो निशानन घाव ।
गुरु कौशिक को युगल गज, लिय चढ़ाय तहँ राव ॥

छन्द चौबोला

बरख फिर्‌यो जनकपुरके दिशि तुंग व्योम फहराता ।
बाजन बाजत विविध भाँतिके चली सुचाय बराता ॥
फहरि रहे गज वर निशान बहु मुख्य निशान समाना ।
सुतर सवार चले चमकत पट चट पट सोहत नाना ॥
किहे शृंगार मारमद मारत प्यार सवार अपारे ।
जनु मन्मथ निरमे रथके रथ पथ पर सजत उदारे ॥
पैदर भूरि भार अति भावति पहिरे वसन सुरंगा ।
मानहुँ कुसुम महीतल फूल्यो सब थल एकहि संगा ॥
लसत अखंडल परिकर मंडल घन मंडल जनु साँझें ।
चपलासे चमकत निचोल चय घहरनि दुंदुभि झाँझें ॥
बकमाला मोतिन के माला धुरवा सिंधुर राजी ।
इन्द्रचाप सम चाप अनेकन नचत मोर जनु बाजी ॥
प्रेम प्रवाह बढ्यो परिपूरण सुख अँसुवा झरि लाई ।
पावस रूप बरात विराजति जनकपुरी महि आई ॥
उड़ी धूरि नभ पूरि रही तहँ देव सबै अकुलाई ।

वापि सलिल सुरभित कुसुमन सँग दीन्हें रजनिहि दवाई ॥
झूलैं झूल भूरि जरकसकी चमचमाय रविकरमें ।
महामधुर बोलत नकीब बहु कोलाहल खग बरमें ॥
सोहत नाराम सुकुमारा चहुँकित राजकुमारा ।
चारिहु बंधु मध्य पूरण विधु मन सकल शृंगारा ॥
रत्न अलंकृत भूषण भावत मनहुँ कुसुम चहुरंगा ।
लघु बड़ सघन पल्लवित पादप गज बाजी लघु तुंगा ॥
फहरहिं अतिलंब पताक सूर्यमुखी चहुँओरा ।
मनु सरिता सर विमल विराजित सोहत विहँग तिहि ठोरा ॥
उड़ति धूरि मनु कुसुम धूरि बहु सुरभि चहूँकित छाई ।
आयो सैन्य साजि जनु ऋतुपति दशरथनाम धराई ॥
मंगल अवसर जानि सबै सुर निज निज वाहन साजे ।
लखन बरात विबुधगण गवने विविध बजावत बाजे ॥
दशरथभूप विलोकत जे सुर तिनहिं शक्र लघु लागे ।
लोकपाल युत स्वर्ग साहिबी नहिं समान छवि जागे ॥
कहहिं देव सब आज जनकपुर लोकपाल पुर जीतो ।
विभवसकल आयोमिथिलापुर भुवनरह्यो छविरीतो ॥
इत बरात उत लखि विदेहपुर विशकर्मा विधि देखा ।
अति विचित्रढब अति पवित्र सब निज करनी लघु लेखा ॥
आवत जानि बरात जनकपुर मंगल साजु सँवारी ।
यूथयूथ घट पुरट शीश धरि खड़ीं विलोकत नारी ॥
तिनहिं निहारि हारि हिय जातीं दिवि देवनकी दारा ।
सुरसिहात लखि सकलबरातिन महाविभव विस्तारा ॥
कौतुक मानि तहाँ अति मनमें बोल्यो वचन स्वयंभू ।
यह विभूति आई कहँ ते किमि तब समुझाये शंभू ॥
यह वैकुंठ विभूति जानिये नहिं करतूति तिहारी ।

पसवहुत्रिभुवनपानिविवाह विधि धनि निज भाग्यविचारी।
जासु नाम सुखधाम जपत मुख लहत पदारथ चारी ।
तासु विभूति अधिक नहिं एती जनि भ्रम करु मुखचारी॥
अस कहि परम अनंदी नन्दी चढ़ि शंकर चलि आगे।
लगे विलोकन रामरूप छवि रामचरण अनुरागे॥
घनन ओट करि गणन गगन महँ मगन मोद त्रिपुरारी।
कह गौरी सों गिरा तोरि सति भै वड़ भाग्य हमारी॥

दोहा—देखे जात बरात सँग· दशरथ देवन आन ।
हिये न हर्ष समान तहँ· उर अचरज अधिकान॥

छन्द चौबोला।

करहिं वेद धुनि मंगल भूसुर देहिं अनेक अशीशा। ।
चारिहु दुलहिनि दूलह संयुत युग युग जियहु महीशा॥
कोउ दशरथकी भाग्य बखानत कोउ मिथिलेश बखानै।
कोउ सीताकी करत प्रशंसन कोउ रामहि जे जानै॥
चारिहु बंधु तुरंगन सोहत अंग अनंग लजावन ।
यक जोरी मूरति मर्कतसी युगल पदिक छवि छावन॥
जात नचावत कछुक चलावत पुनि झमकावत बाजी।
वाहन युत शिव सुवन लजावत भावत सखन समाजी॥
जस जस नचत तुरंग तरलगति तिल तिल महि मग काटै।
तस तस छमछमात पैंजनि ध्वनि स्वरन ठाट बहु ठाटै॥
सखा उछालत ऊरध वाजिन तिहि थल पुनिलै आवै।
जन समूह नहिं परश होत कोहु अद्भुतकला दिखावै॥
राम बंधु युग बीच विराजित चहुँकित सखा सुहाये ।
तिन पाछे शत्रुंजय गज पर अवध नाथ अति भाये ॥
चढ़े मतंग महीप उभय दिशि गुरु अरु कौशिक राजें।

जनु मगवन चल्यो पुरंदर शुक्र बृहस्पति आगें ॥
देखि देखि दशरथको सुर मुनि कहहिं कौन अस भागी ।
त्रिभुवनपतिको चल्यो विवाहन पुन प्रेमरस पागी ॥
जस जस झमकत नचत रचतगति राम बाजि अभिरामा ।
तस तस दिल डरपत दशरथको छूटै न पग कहुँ ठामा ॥
कोउ झमकावत कोउ सिखवावत कोउ दरशावत सोई ।
कोउ मुरकावत कोउ बढ़िजावत रुकिजावत रचि कोई ॥
राजकुमार कला दरशावत पावत परम प्रशंसा ।
सखा प्रमोदित परा मिलावत जहँ रघुकुल अवतंसा ॥
अहैं बरोबर वयस सखा सब लहि समान सन्माना ।
भूषण वसन समान सुहावन को समान तिन आना ॥
वृद्ध वृद्ध रघुवंशी कुलके पीछे सिखवन जाहीं ।
करहु न चंचलता बहु लालन अवध नगर यह नाहीं ॥
वृद्धन वचन सुनत सकुचत अति दूलह भूप दुलारे ।
मंदहि मंद चलावत बाजिन देते सखा इशारे ॥
तनक बाग ऊंची करि देते नभ उड़िजात तुरंगा ।
चमकि बीजुरीसों पुनि बहुरत नाहिं कंपत कछु अंगा ॥
चलत हंसगति कहुँ मयूरगति कतहुँ सेनगति लेहीं ।
उच्चैश्रवा करत मद रद हद मानहुँ गरुड़ सनेही ॥
राम तुरंग नाम सुग्रीवहि शैव लषणको बाजी ।
भरत अश्वको पुहुप बलाहक रिपुहन मेघ मिजाजी ॥
चारि चारि चारिहु कुँवरनके चलति चमर अतिचारू ।
छाजत क्षपानाथसे छत्रहु यक यक शिर हिय हारू ॥
झालरि झूलि रही रत्ननकी हलक झलक छवि छलकैं ।
देखे तिनहिं परत नाहिं पलकैं बिन देखे जिय ललकैं ॥

खबर राजमंदिर महँ पहुँची आवत चली बराता ।
कह्यो विदेह बोलि लक्ष्मीनिधि जाहु लेन तुम ताता ॥
जनककुमार सुनत चढ़ि वाजी चल्यो लेन अगवानी ।
धरे पुरट घट शिर सधवातिय चलीं सहस छविखानी ॥
तिहि विधि औरहु बहु पुरनारी धरे कलशयुत दीपा ।
गावत मंगल गीत सुहावन दूलह लखन समीपा ॥
सजनी सजी वृजीमिथिलाकी तिन मिलि रूप छिपाई ॥
शची गिरा गौरी आदिक सब सुरतिय सुखित सिधाई ॥
दोहा—धरे शीश कंचन कलश, गावत मंगल गीत ।
दूलह देखन निकटते, गमनीं परम पुनीत ॥
मिथिलापुरकी कोउ सखी, बोली भरी अनंद ।
करहिं मंद सखि चंदको, नृप नंदन मुख चंद ॥

पद ।

व्याहन आये दशरथ लाल ।
माथे मौर पीत अंबर तनु राजित हिय वनमाल ॥
सुंदर तरल तुरंग झमकावत भावत अति यहि काल ।
श्रीरघुराजनिछावरि याकी त्रिभुवनछवि तिहुँकाल॥१॥
धनि धनि सीता जनक दुलारी ।
जाके हित सुंदर वनरा यह बनि आयो मनहारी ॥
हम सीता बालकपनते यक संगहि रही खिलारी ।
श्रीरघुराजआज अवयहिसमकोउनहिंपरतनिहारी॥२॥
गावहु मंगल गीत सखीरी ।
अस अवसर कबहूँ नहिं पैहौ पुनि विधि नाहिं लिखीरी॥
कौशलपति किशोर चितचोरसुछबि जित नाहिं लखीरी।
तिहि रघुराज कहतजगजीवतसतिविषवेलिभखीरी॥३॥

अब कुलकानि सुरति नहिं आवै ।
देखन बनन अवध बनराको और नही कछु भावै ॥
बरबस चलि लगिहौं निशंक उर कोउ किनेक समुझावै ।
श्रीरघुराज लगनके मनको को पुनिके सुरकावै ॥ ४ ॥
वानिक वेष अवध बनरेको ।
चंपक रंग विराजत बागो उर पुखराज सुछवि गजरेको ।
शीश मौर मढ़रा सोहावन कुंडल कान बनानि मकरेको ।
श्रीरघुराजराज अलबेलो मनिरानिहै हरिहरन हियरेको ॥ ५ ॥
दोहा—कोउ सखि जन संघर्षवश, जस तसके कढ़ि जाय ।
पुनि आवनि चाहत लखन, बोली सजनि सुनाय ॥

पद।

देखनरी चलु अवध दुलारो ।
आयो बनि बनरा मिथिलापुर हों ज्यों त्यों यक बार निहारो ।
नयनन परत धस्यो हियरे महँ कहूँ निकसत नाहिं निकारो ॥
श्रीरघुराज साँवरी छवि पै हौं तुरंत तकि तन मन वारो ॥
दोहा--लक्ष्मीनिधिके संग में, सोहत राजकुमार ।
छटे छबीले छवि भरे, गमने पंच हजार ॥
अगवानी आई निकट, रुकिगै सकल बरात ।
लक्ष्मीनिधि वंदन कियो, नृप पूँछी कुशलात ॥
सुत विदेहको नेह वश, अवधनाथ हरषाय ।
पाणि पकरि निज नागमें, लीन्ह्यो चटक चढ़ाय ॥
नारिन शीशन पुरट घट, दीपावली सुहाय ।
मनहुँ भई थिर वीजुरी, लै तारन समुदाय ॥
रानि सुनैना सहचरी, तंदुल दधि भरि थार ।
राम भाल टिकुली दई, सुमिरि महेश कुमार ॥

महा मणिनके छत्र पुनि, राका इंदु अकार ।
पठवाये मिथिलेशके, चारि बरन हित चार ॥
कोशल छत्र उतारिके, मिथिला छत्र लगाय ।
मिथिलाके परिकर चले, दूलह संग सुहाय ॥
अगवानीको चार करि, गमनी चारु बरात ।
राजकुँवर दुहुँ ओरके, वाजि नचावत जात ॥
सोरठा—जापै राम सवार, सो वाजी को कहि सकै ।
वेग मरुत अवतार, शीलवान मानहुँ शशी ॥
मानहुँ मदन सँवारि, नजरि कियो रामहि तुरँग ।
सकै को सकल उचारि, अंग अंग सुखमासदन ॥

कवित्त

राजै सबै वाजिनकी राजी बीच राम वाजी,
जातिको सुताजी महा मारुत मिजाजी है ।
भानहूं के वाजिनको जीति लीन्ह्यो वेगि वाजी,
उच्चैःश्रवा पाजी करि वेगता विराजी है ॥
रघुराज मानसको काजी मनमाजी गति,
पन्नगारि दाजी करै पतँग पराजी है ।
नाकत त्रिलोकपै बचावत विचारि बुद्धि,
परिहै त्रिविक्रमके विक्रममें भाँजी है ॥ १ ॥
वेगके विवश नासा होत फर फर जाको,
बोटी बोटी थर थर काँपती है अंग की ।
ज्वलन जरत अस परत पुहुमि पाँय,
शीलसे समेटे गति मारुतके संगकी ॥
बाग राग रचितसो तड़िता तड़प इव,
तड़पि थिरत छबि हरत तरंगकी ।

रघुराज जौलों चहै शारदा बखानै तौलों,
आनै आनै होती छवि रामके तुरंगकी ॥ २ ॥

सोरठा—वर्णि लहै को पार, सो तुरंगको अंग छवि ।
जापै राम सवार, दशरथको रणबाँकुरो ॥

छन्द गीतिका ।

रघुनाथ रूप निहारि नहँ त्रिपुरारि करत विचारिके ।
दिखिहों दशौ दूलह हगनि नहिं पांच नयन उघारिके ॥
अति अंग कोमल कठिन हग कछु जाय जो ढिग गरमहू ।
धरिहों कहां यह अयश मिटिहै जन्म जन्मन शरमहू ॥
विधि जानि शिव अनुमान विहँसे आठ अपने नयनसों ।
अभिराम राम स्वरूप पेखत नहिं वृथा हग चैनसों ॥
षटमुख कह्यो तब हर्षि विधिसों आज हम तुमसों बड़े ।
पितु पुत मिलि डेवढ़ द्विगुण सुख लहै नयनन को खड़े ॥
तब विहँसि वचन विरंचि कह हम संग लेव पनातिको ॥
तुलिहौ न तुम सकुटुंब तब जो सहस हग जग ख्यातिको ॥
असकंद बोल्यो विहँसि तब अहिपति विभूषण मम पिता ।
जिहि सहस मुख हग सहस युग समता कहाकिमि भाविता ॥
यहि विधि विनोदित वचन मंजुल सुर परस्पर भाखहीं ।
सबते अधिक सुख शक्र तिहिते दून शेषहि राखहीं ॥
रघुराजसहित समाज आज विराज दोउ कुल राज हैं ।
भरि लाज उर सुरराज देखत चकित सब महिराज हैं ॥
गमनत बरात सुहात यहि विधि निकट शहरपनाहके ।
आई जबै पुरलोग सब देखत भरे सु उमाहके ॥
जुरि सकल जन यूथन अनेकन त्यों बरूथन नारिके ।
देखत बरात अघात नहिं बतरात वचन विचारिके ॥

हमरे सुकृत फल सीय राम विवाह मिथिलापुर भयो ।
को आज हमसम धन्य महितल सफल लोचन करि लयो ॥
कोउ कहैं दूलह देखु सियको मदन निउछावरि करो ।
नाहिं रामसम कोउ भुवन सुंदर नारि तृण धरणी धरो ॥
यह श्याम वर सियको सखी वर उर्मिला तनु गौर है ।
कुशकेतु कन्या मांडवी वर श्याम तनु चितचोर है ॥
श्रुतिकीर्तिको यह गौर वर्ण विराजतो दूलह भलो ॥
अवधेशके नंदन अनोखे लखन हित आगू चलो ॥
अस कहहिं युवती परस्पर झुकि रहीं दूलह देखने ।
भरि प्रीति गावहिं गीत मंगल मोद मग्न अलेखने ॥
सूर्य्यास्तसमय बरात प्रविशी जनक नगर सुहावनो ।
देखत बराती नगर सौभग इन्द्र नगर लजावनो ॥
फहरैं पताके तुंग चहुँकित विविध रंग अनङ्गसे ।
तोरण कनक ताड़िता तड़प घट पुरट द्वार पतंगसे ॥
वर रंभ खंभ खड़े अनेकन द्वार द्वार विराजहीं ।
अतिशय उतंग अवास हिमगिरि शृङ्ग शोभ पराजहीं ॥
सींची गली सुरभित सलिल विस्तार बृहद बजार को ।
द्रविनाधिपति सम वणिक बैठे करहिं वस्तु प्रचार को ॥
शारद घटा ऊंची अटा छन छटासी युवती चढ़ीं ।
अति हर्षि वर्षि प्रसून लाजा वर लखन चोपहि मढ़ीं ॥
आई बरात बजारमहँ नर नारि दूलह देखहीं ।
दशरथ जनक अरु भाग्य अपना अधिक उरहि उरेखहीं ॥
घर घर बजत बाजन विविध मिथिलापुरी ध्वनिमय भई ।
देते बरातिन नारि नर करि युक्ति गारी रसमई ॥
यहि भाँति देखत नगर हास विलास बहु विधि करतई ।

मिथिलेश मंदिर जाय द्वार बरात सब ठाढ़ी भई ॥
तहँ भयो जन संघर्ष अति कसमस परन कढ़ि जातमें ।
मिथिलेश अस नहिं नात सकल बरात ब्रात बरातमें ॥
सोरठा—जब मिथिलापति द्वार, आई अवध बरात वर ।
तिहि क्षण को सुखभार, बरणि पार किमि जाय कवि ॥
दोहा—मिथिला जन निमि अवध जन, निमि सुर सर्व अपार ।
निमि महिके वासी मनुज, प्रगट्यो पारावार ॥
जनक महलके द्वारको, चौक महा विस्तार ।
भरत भीर जस जस मना, तस तस बढ़त अपार ॥

चौपाई ।

कनक खचित वर बसन बनाये । चित्र विचित्र रंग तिन भाये ॥
परिचर तहँ विदेहके ल्याये । डारि पाँवरे अति सुख छाये ॥
गोपुरते अंतहपुर द्वारा । परी पौद विस्तार अपारा ॥
जनक राज महिषी छविखानी । साजि सुआसिनि अतिहरपानी ॥
रचि आरती कनक मणि थारा । पठई जहाँ द्वारको चारा ॥
द्वार चार थल रचो बनाई । मोतिन माणिक चौक पुराई ॥
कनक कुंभ करि वदन स्वरूपा । आवाहन करि मन्त्र अनूपा ॥
थापित करत माहँ तिहि काला । भो प्रत्यक्ष गणनाथ विशाला ॥
गौरि अवाहन किय सन्मानी । मूर्त्तिमंत भइ प्रगट भवानी ॥
राम दरश लालस मन माहीं । समय समय सुर प्रगटत जाहीं ॥
उभय ओर आसन अति पावन । धरे पुरोहित शुचि छवि छावन ॥
गौतम शतानन्द बड़ ज्ञानी । याज्ञवल्क्य आदिक मतिखानी ॥
दोहा—राजत भइ मुनिमण्डली, राम दरश अभिलाप ।
द्वारचार करवावने, बैठे युत श्रुतिसाष ॥

चौपाई ।

उज्ज्वालित आरती अपारा । लीन्हें पाणि पुरटके थारा ॥

खड़ीं सुआसिनि किहे कतारा । कनक कुंभ शिर सजत अपारा ॥
भई भूमि थिर मनहु दामिनी । गावहिं मंगल गीत भामिनी ॥
सचिव सुदावन जनक पठायो । लक्ष्मीनिधि कहँ वचन सुनायो ॥
महाराज अस दियो निदेशा । ल्यावहिं सुतन सहित अवधेशा ॥
रहै चौकमहँ खड़ी बराता । आवहिं रघुकुल वृद्ध विज्ञाता ॥
राम सखा सब संग सिधारे । देखैं दूलह द्वारन चारे ॥
सचिवसकल मिथिलेश निदेशा । राजकुँवरसों कह्यो अशेशा ॥
जनककुँवर दशरथ पद वंदी । पितु रजाय सब कह्यो अनन्दी ॥
सुनिकोशलपतिअतिसुखपायो । तुरँगन ते कुँवरन उतरायो ॥
चारि सुखासन वरन चढ़ायो । सखा और कुल वृद्ध बुलायो ॥
भये पालकी राउ सवारा । शोभा निरखि धनद हियहारा ॥

दोहा—सब तुरंग मातंग रथ, औरहु सकल बरात ।
खड़ी करायो चौक महँ, बाजत बाजन ब्रात ॥

चौपाई ।

परत पाँवड़े पाँयन मंदा । करि आगे दूलह सानंदा ॥
राम भरत लक्ष्मण रिपुशाला । तिन पाछे दशरथ महिपाला ॥
चल्यो द्वारको चार करावन । जनु विधि लोकपालयुत पावन ॥
चढ़ीं अटा अंतहपुर नारी । लखि दूलहछवि तन मन वारी ॥
उतै जनक इत दशरथ राऊ । रत्न लुटाय न लहत अघाऊ ॥
जे लूटहिं जन तेउ लुटावैं । हर्ष विवश नहिं धन मन लावैं ॥
दशरथ तुरत सुमंत बुलाये । सादर सुखद निदेश सुनाये ॥
रघुकुल गुरु कौशिक मुनिराई । दोउ आनहु पालकी चढ़ाई ॥
कश्यप मार्कंडेय उदारो । कात्यायन जाबालि हँकारो ॥
और मुनिन कहँ लेहु बुलाई । द्वारचार करवावहिं आई ॥
ल्यायो तुरत सुमंत लिवाई । राम व्याह प्रमुदित मुनिराई ॥

चढ़ि पालकी वसिष्ठ सिधारे । निमि कौशिक नृप तेज अपारे ॥

दोहा—मुनि मंडल महिपाल मणि. मंडित भयो अपार ।
रवि शशि अश्विनितनय मनु. वेद सहित करतार ॥

चौपाई ।

यहि विधि अन्तहपुरके द्वारे । लै दूलह नरनाथ पधारे ॥
शतानंद तहँ अवसर जानी । बुलवायो जनकहि मुदमानी ॥
तहँ आरती उतारन काजा । चलीं सुआसिन सजी समाजा ॥
तिन मधि तिनको रूप बनाये । शची गिरा गिरिजा सुख छाये ॥
तेउ आरती उतारन आईं । औरहु देवदार मन भाईं ॥
लै दूलह जब अवध महीपा । द्वारचारकी चौक समीपा ॥
आयो मुनि मंडल लै भारी । तब वसिष्ठ अस गिरा उचारी ॥
धरहु सुखासन वरन उतारी । अवधनाथ आपहू पधारी ॥
अस कहि पढ़नलग्यो स्वस्त्ययना । उतरि भूप युत कुँवर सचैना ॥
चौक समीप कुँवर करि आगे । ठाढ़ भये भूप अनुरागे ॥
तहाँ सुआसिनि परमहुलासिनि । सजीं सकल मिथिलापुर वासिनि ॥
तोरहिं तृण लखि रूप अनूपा । भाग्य सराहत दशरथ भूपा ॥

दोहा—ते उतारतीं आरती, सलिल डारतीं भूमि ।
नयनन पलक निवारतीं, लेतीं मनु मुख चूमि ॥
शची गिरा गिरिजा तुरत, राम समीपहि जाय ।
लगीं उतारन आरती, अपनो रूप छिपाय ॥
मंद मंद रघुनन्द तहँ, किय प्रणाम मुसक्याय ।
दै आशिष ते विविध विधि, गवनीं तुरत लजाय ॥

चौपाई ।

उत आयो मिथिला को राजा । इत सुत युत कौशल महराजा ॥
मिले बरोबरि भूपति दोऊ । जय जयकार किये सब कोऊ ॥

कहहिं परस्पर मुनिन समाजू । सम समधी देख हम आजू ।
भूरि भाग्य अस लखी न भूमें । नाहिं नल पृथु ययाति रघुधूमैं ॥
दोउ नृप कीन्हें मुनिन प्रणामा । कहे कृपा तव पूरयो कामा ॥
मुनि आशिष दै वचन उचारे । भये मनोरथ पूर हमारे ॥
मिल्यो बहुरि रामहिं मिथिलेशा । जन्म जन्म कर मिट्यो कलेशा ॥
भरत लषण रिपुसूदन काहीं । मिल्यो विदेह विदेह तहाँहीं ॥
दशरथ चरण परयो कुशकेतू । मिल्यो अंक भरि रघुकुल केतू ॥
मिल्यो बहुरि पुनि चारिउभाइन । सो सुखयह यकमुख कहिजाइन ॥
उभै श्वशुर वंदे जामाता । अंबक प्रेम अंबु उमगाता ॥
तहँ वसिष्ठ दूलह यक ओरे । बैठाये आसन इक ठौरे ॥
दोहा—शीरध्वज निमिकुल कमल, कुशध्वज ताको भ्रात ।
भवन ओर बैठत भये, इक आसन अवदात ॥

चौपाई ।

गौतम शतानन्द आदिक मुनि । बैठे जनक ओर दोउ विधिगुनि ॥
विश्वामित्र वसिष्ठ उदारा । बैठ राम ढिग गुणि अधिकारा ॥
लगीं गवाक्षन में सुखसानी । दूलह देखि सुनैना रानी ॥
नाम लक्ष्मीनिधि रमनी । जनक पतोह क्षमा छविछमनी ॥
औरहु वृद्ध जनक कुल नारी । लखि दूलह तन मन धन वारी ॥
जो सुख भयो सुनैना काहीं । सकै भाषि कवि कोविद नाहीं ॥
मंजुल बाजत बजन अपारा । गायरहीं सुर नर मुनि दारा ॥
लाग्यो होन द्वार कर चारा । कियो वेद विधि मुनिन उचारा ॥
पूजन भयो जौन तिहि देशू । लिय प्रत्यक्ष ह्वै गौरि गणेशू ॥
करवाये मुनि वेद विधाना । माने आपन भाग्य महाना ॥
केतु थंभ पूज्यो भगवाना । जनुनिमिकुलयशध्वजफहरान ॥
तिहि अवसर लक्ष्मीनिधि आयो । सारा जोरी चार करायो ॥

दोहा–चारुउ चन्दन पाणि लै, रच्यो सबंधु भुआल ।
दिय कंध ह्वै बंधु गुन, दीनबंधु के भाल ॥

चौपाई ।

चन्दन पीन विराजत भाला । जनु पहिरयो शशि कुसुममाला ॥
लक्ष्मीनिधि पुनि पाणि पसारी । मिल्यो मुदित तहँ दूलहचारी ॥
पुनि विदेह भरि मोद उमंगा । सहस नाग दश सहस तुरंगा ॥
ढाल ढाल करवाल विशाला । विविध भाँति भूषण मणिमाला ॥
रत्न गथित वर वसन सुरंगा । कटक मुकुट अंगद बहुरंगा ॥
वस्तु अनेक मंजु मनहारी । दियो विदेह विभाग उचारी ॥
दानि शिरोमणि भूप विदेहू । पुनि सिय बसै जासु नित गेहू ॥
तिहि सम्पति कर कौन बखाना । मैं वरणौं किमि ताकर दाना ॥
यहि विधि भयो द्वार कर चारा । भरयो भुवन आनन्द अपारा ॥
दशरथ जनक समेत समाजू । को वरणै जस मोदित आजू ॥
शतानन्द तब वचन उचारा । सुनु वसिष्ठ गुरु गाधिकुमारा ॥
आयो अब लग्नहु कर काला । मण्डपतर वर चलहिं उताला ॥

दोहा–लै मुनि मण्डल नृपति दोउ, करि आगे वर चारु ।
चलहिं जनक रनिवासमहँ, करहिं पूत परिवारु ॥
नाऊ बारी महर सब, धाऊ धाय समेत ।
नेग चार पाये अमित, रह्यो जासु जस हेत ॥
उपरोहित निमि वंशको, शतानन्द मुनिराय ।
लियो नेग बझि रामसों, मम हिय बसो सदाय ॥
बिज्जु छटासी कोउ सखी, बैठि अटा सुखछाय ।
कहत सखीसों वैन वर, औरहु सखिन सुनाय ॥

पद

सखी लखु आये पुर दूलह चार ।

अति सुकुमार मार ते सुन्दर दशरथ राजकुमार ॥
पीत वसन शिर मौर विराजत उर हीरनको हार ।
विहँसत वदन सदन शोभाको रुचिर रदन हिय हार ॥
राजकुँवर सँग छैल छवीले रघुवंशी सरदार ।
श्रीरघुराज निछावरि तन मन होत द्वारको चार ॥
दोहा—कोउ सखि पाछे परिगई, तिहि कोउ कहति पुकारि ।
खरी कहां तू यहि घरी, अरी आव सुकुमारि ॥

पद ।

चलुरी चलु देखु सिया बनरो । यहराजकुमार हरत हियरो ॥
शिरको पागो वागो पियरो । युग जुलुफ जुलुम करती जियरो ॥
जिहि डहरत डहर करत कहरो । चित चख चोरत चेटक चेहरो ॥
सखि प्राण पियार सदा हमरो । रघुराज अनुज सोहहि जमरो १
आजु अली मिथिला महीपके द्वारे होत द्वारको चार ।
कन्त जोरि भू भूपनि ल्यायो कुँवर अपूरव चार ॥
नयन मौन रसना विन विन दृग जीह न करै उचार ।
श्रीरघुराज लखनके लायक रघुनायक महाराज कुमार ॥ २ ॥
दोहा—यहि विधि भाषहिं तिय सकल, वचन सरस रस वोर ।
सिय बनरे मुख चन्द्र के, कीन्ह्यो नयन चकोर ॥
तहँ वसिष्ठ बोल्यो हरषि, सुनहु राज शिरताज ।
दूलह सहित पधारिये, मण्डप तर सुख काज ॥
शतानन्द करत, लग्न गई अब आय ।
व्याह चारके हेत अब, चलहिं राम युत भाय ॥

चौपाई ।

विश्वामित्र महासुख पागे । सुखित स्वस्त्यन भाषण लागे ॥
सकल मुदित मुनिराई । पढ़न लगे स्वस्त्ययन सुहाई ॥

तेहि अवसर बहु बजे नगारे । नाचन अप्सरन लगीं प्रवीन अपारे ॥
उचीं नारि सब एकहि बारा । मंडपतर गवनीं भरि थारा ॥
रघुकुल गुरु तहँ सहित सनेहू । कहे सुनहु महराज विदेहू ॥
ह्वैगो सकल इनको चारा । आपहु मंडप तर पगु धारा ॥
सहित कुमारन कोशलराई । कन्यादान चहत अनुराई ॥
दाता और ग्रहीता दोऊ । दोहुन सम दिगंत नहिं कोऊ ॥
लोक लाभ लीजै महिपाला । धर्म सुयश तुव भयो विशाला ॥
तब विदेह बोल्यो हुलसाना । निज घरमाहिं विचार न आना ॥
को दाता अरु कौन ग्रहीता । को आज्ञा पुनि देइ पुनीता ॥
अवधभूप शासन शिर मोरे । भयो सकल दाया मुनि तोरे ॥

दोहा—शतानन्द कौशिक सहित, प्रभु करवावहु ब्याह ।
यथा अवध आचार्य्य तुम, तथा जनकपुरमाह ॥

चौपाई ।

अवध जनकपुर एकहि जानी । महामुनीश भेद मति सानी ॥
अब विलंब किहि कारण कीजै । लै दूलह प्रवेश करिदीजै ॥
लोक राम अभिराम विवाहा । मिलै जन्म बहु अस न उछाहा ॥
सुनि दशरथ वासिष्टकी वानी । सुमिरि गणेश महेश भवानी ॥
रंगनाथ पद पंकज ध्याई । उठ्यो अनंदित कौशलराई ॥
शतानन्द गुरु गाधिकुमारा । करि आगे मुनि और उदारा ॥
पुनि आगे करि दूलह चारी । अन्तहपुर कहँ चल्यो सुखारी ॥
परत पाँवड़े वसन नवीना । पढ़हिं वेद मुनि वृन्द प्रवीना ॥
राम व्याह गावहिं सब नारी । देहिं सुआसिनि अर्घ्य सुखारी ॥
मणि दीपिका दिपै गृहमाहीं । थल थल करहिं प्रकाश तहाँहीं ॥
कक्षा तीनि विभूति अपारा । निरखत हरषत अवध भुआरा ॥
गये खास रनिवास दुआरा । जहँते नहिं पुनि पुरुष प्रचारा ॥
।—धवल धाम ध्रुव धाम इव, चामीकरके चारु ।

हिमगिरि सुन्दर मेरु जिन, जोहत मानन हारु ॥

चौपाई ।

चारु चंद्रशाला छवि माला । रजत कनकको बनी दिवाला ॥
चित्र विचित्र और सब शाला । लखि ललचत अमरावति पाला ॥
राम निरखि श्वशुरारि विभूती । मनमहँ गुणी सीय करतूती ॥
निरखि विदेह विभव अवधेशा । मनमहँ करत अमित अंदेशा ॥
धौं सुरपुर इत शक्र बसायो । ब्रह्मसदनधौं इत चलि आयो ॥
किधौं विदेह भक्ति जिय जानी । हरिहर पुरी आय निरमानी ॥
निजतपबल यह विभव अपारा । लह्यो विदेह दीन करतारा ॥
यहि विधि देखत सुखअवगाहत । दशरथ बारहिं बार सराहत ॥
गे ड्योढ़ी अन्तहपुर केरी । सजीं नारि तहँ खड़ीं घनेरी ॥
लिहे सहस्रन सखी मशाला । चलीं दिखावत जनु सुरबाला ॥
तहँ रनिवास पौर अधिकारी । जोरि पाणि जयजीव उचारी ॥
करत प्रवेश नेगसो माँग्यो । दिय मणिमाल राव अनुराग्यो ॥
सोरठा—करि आगे मुनिवृन्द, तिन पाछे करि वरनको ।
नहिं समात आनन्द, अन्तहपुर प्रविश्यो नृपति ॥
दोहा—लीन्हीं परिकर करनते, चमर छत्र बहु नारि ।
चलीं चलावत चाय भरि, करि दूलह बलिहारि ॥

चौपाई ।

आये राम जबै रनिवासा । अन्तहपुरमहँ भयो हुलासा ॥
धाईं दूलह देखन नारी । देखि देखि जातीं बलिहारी ॥
रहहिं जोहि जकि कढ़ै न वानी । चित्रपूतरी सी छविखानी ॥
बहुरि परस्पर कहहिं सयानी । निज कर विधि मूरति निरमानी ॥
कहँ अनङ्ग बापुरो अनंगा । कहँ सुर विगत पलक रस भंगा ॥
लखी आजलों अस छवि नाहीं । अबलों लोचन रहे वृथाहीं ॥

आजुहि आँखिन कर फल पायो । विधि बनाय दै पलक नशायो ॥
युवतियूथ अस भाषहिं बानें । राम दरश नहिं नयन अघानें ॥
राउ मुनिन दूलह युत भाये । मणि मंडित मंडप तर आये ॥
फहरि रहे पताक बहुरंगा । छवि सागर जनु तरल तरंगा ॥
कनक इक्षु दंडनते छायो । तापर विशद वितान तनायो ॥
रतन यतन युत जड्यो अमाना । जगमगात द्युति जाति दिशाना ॥

दोहा—मोती माणिककी फबति, झालरि झूलि अपार ।
मनहुँ फँसावन मन विहँग, रच्यो जाल कर मार ॥

चौपाई ।

कनक खंभ कलशा बिलसाहीं । मनहुँ भानासित भानु सुहाहीं ॥
तहँ मणिदीप प्रदीपहिं नाना । फटिक फरश विस्तार महाना ॥
कनक वेदिका विमल विराजै । कनकाचल कंदर लखि लाजै ॥
आपत पीत पुहुप वर नाना । अलंकार वेदिका विधाना ॥
पुरट पालिका अगणित भारी । लसैं जवांकुरकी हरियारी ॥
लसत अमोल कनक करोले । भरे सुरभि जल धरे अतोले ॥
कनक थार कोपर रतनाली । धूप दीप भोजन मणि माली ॥
शंख प्रकाश असंख्य उदोता । धरे सुवास्तुक सुरसरि सोता ॥
अर्घ्यपात्र मंडित मणि मोती । लाजा भाजन सुछवि उदोती ॥
कंचन थारी थार कटोरे । जगमगात चितवत चित चोरे ॥
बिछे पवित्र दर्भ महिमाहीं । तहँ रत्नासन चारि सुहाहीं ॥
मग रोहन छवि नहिं कहि जाई । सहित स्वर्ग छवि मेरु लजाई ॥

दोहा—दिपति दिव्य दीपावली, तारावली प्रमान ।
रत्न विहंग विराजहीं, छवि सुर वृक्ष समान ॥
मण्डप खंभनमें लगे, मणिमय मुकुर विसाल ।
जगमगात प्रतिबिंब बहु, वस्तु व्रात तिहि काल ॥

चौपाई।

यहि विधि जनक महीपविज्ञानी। चारिहु बरन भूप युत आनी॥
तहाँ जनक कौशल महराजै। सिंहासन दिय बैठन काजै॥
निज निज आसन बैठ कुमारा। मंडप तर निज निज अनुहारा॥
तहँ कुशकेतु जनक दोउ भाई। बैठाये सिगरे मुनिराई॥
यथायोग्य आसन तिन दीन्ह्यो। बहु प्रकार सत्कारहु कीन्ह्यो॥
विश्वामित्र वसिष्ठ उदारा। याज्ञवल्क्य गौतम तपभारा॥
वामदेव कश्यप कात्यायन। मार्कंडेय महामुनि चायन॥
नारद सनकादिक सुख छाये। च्यवन बृहस्पति लोमश आये॥
शृङ्गीऋषि पितु सहित सिधारे। मुनि मरीचि अंगिरा उदारे॥
तहँ ब्रह्मर्षि महर्षि समाजा। राम विवाह विलोकन काजा॥
मंडप तर सब आय विराजे। शतानन्द मिथिलेश सभाजे॥
लखन राम जानकी विवाहा। विधि शिव वासव भरे उमाहा॥

दोहा—सबै देव मुनि रूप धरि, मिले महर्षि समाज।
बैठे स्वामी स्वामिनी, व्याह विलोकन काज॥

चौपाई।

विद्याधर चारण गंधर्वा। किन्नर सिद्ध महोरग सर्वा॥
आसमान महँ चढ़े विमाना। वर्षा फूल बजाय निशाना॥
सुर सुंदरी करहिं कलगाना। नचहिं अप्सरा सहित विधाना॥
रही गगनध्वनि चहुँदिशि छाई। तैसहि जनकनगरमहँ भाई॥
बाजन बाजत विविध प्रकारा। द्वार द्वार सोहत नटसारा॥
राजमहल सुख जाय न गाई। थल थल नाचहिं नटी सुहाई॥
भई एकध्वनि मिलि ध्वनि भूरी। रही पुरी पुहुमी महँ पूरी॥
शशि सूरज अश्विनीकुमारा। सबै देव बनि विप्र अकारा॥
बैठे हते मंडपहि आई। जान्यो पृथक पृथक रघुराई॥

कियो प्रणाम सबनि मुसक्याई । दीन्हें तिन अशीश शिरनाई ॥
शतानंद मिथिलेश सश्राना । सबके धोय चरण जलजाना ॥
सींचि भवन सब कियो पुनीना । दिये अशीश मुनीश मसीना ॥
दोहा—पुनि मिथिलापति प्रेम भरि धोयो दशरथ पाय ।
गद्गद गर पुलकित तनहि नयनन वारि बहाय ॥

चौपाई ।

आसन बैठे चारिहु भाई । शांति पढ़न लागे मुनिराई ॥
शतानंद आनंद बड़ाई । कह बसिष्ठ कौशिकहि सुनाई ॥
गणपार्चन कराय अब दीजै । वेदी थापित पावक कीजै ॥
मैं अब गवनहुँ जहाँ कुमारी । करिहौं चढ़न चढ़ाव तयारी ॥
अस कहि सीतानिकट सिधारयो । रानि सुनैना वचन उचारयो ॥
चारिहु भगिनि केर सुखदानी । चढ़ै चढ़ाउ आसु महरानी ॥
रानि सुनैना सुनि सुख पाई । भगिनिसहित सीतहि नहवाई ॥
रत्न ग्रथित अंबर पहिराई । चितै चौंध चख गई समाई ॥
पुरट पीठ सीतहि बैठाई । मणिन जड़ित भूषण पहिराई ॥
नख करतनि नखमाहिं छुआई । नाउनि तहँ यावक लै आई ॥
जे पद लाल प्रवालहु तेरे । शिव अज उरपुर करत बसेरे ॥
ते पदमहँ नाउनि बड़भागिनि । यावक लगी देन अनुरागिनि ॥
दोहा—अमर यत्न करि जन्म बहु, लहे न जिन पद रेनु ।
ते पद नाउनि कर लसत, निज जनके सुरधेनु ॥

चौपाई ।

चितवत चारु चरण अरुणाई । नाउनि यावक देन भुलाई ॥
जगा न जोवति यावक योगू । कियो महाउर नख संयोगू ॥
यावक सहित लसत नख कैसे । उदित अमित अंगारक जैसे ॥
इन्द्रनील मणि नूपुर भाये । मनु सरोज बहु षट्पद आये ॥

लघु अँगुरिन मुंदरी सुहाहीं । कंज कोश मनु रवि परछाहीं ॥
तइ पुनि नखन निकट छवि देही । धऱ्यो परिधि मनु शशिनभनेही ॥
सिय अँगुरी लखि कोमलताई । नव रसाल दल रहत लजाई ॥
सियपद सम सरि करन सरोजू । सहि आतप तप ठानत रोजू ॥
जव न भयो सिय चरण समाना । तव झारत केसर दल नाना ॥
चह्यो नखतपति नख समताई । ताते विधि कालिमा लगाई ॥
गुलुफ सुलुफछविकविजन कहहीं । नहिं गुलाव कलिकासम लहहीं ॥
धऱ्यो चरणजल भरि जिहि थारा । भो जोहत यावक अनुहारा ॥
दोहा—जिन पद लेश कृपा परत, पावत देव विभूति ।
ते धोवति अपने करनि, धनि नाउनि करतूति ॥

चौपाई ।

नहछू चार मातु करवाई । भूषण वसन विमल पहिराई ॥
पुरट पीठ पुनि भगिनि समेतू । वैठाई सिय सजनि निकेतू ॥
शतानन्दसों पुनि कह रानी । चुक्यो चार इत को मुनिज्ञानी ॥
कहहु जवै मंडप तर ल्यावैं । तव मुनि कह जव हम वुलवावैं ॥
अस कहि मुनि मंडपतर आयो । दूलह देखि द्विगुण सुख पायो ॥
राम करत गणनायक पूजा । लीन्ह्यो प्रगट मनोरथ पूजा ॥
प्रगट गौरिसो पूजन लेहीं । राम वंधुयुत कर धरि देहीं ॥
गुरु वसिष्ठ तहँ वेद विधाना । अनल थप्यो वेदी मतिमाना ॥
प्रगट्यो परम प्रकाश हुताशा । ज्वाला वढ़ी दाहिनी आशा ॥
जनक सवंधु वसिष्ठ वुलायो । तासु पाणि मधुपर्क दिवायो ।
गणपति पूजन आदिक चारा । करवायो गुरु गाधिकुमारा ॥
शतानन्दसों दोउ मुनि गाये । वनत आसु अवसियहि वुलाये ॥
दोहा—शतानन्द आनंद भरि, कह्यो सुनैनहिं जाय ।
तहँ जानकी जानकी, गई घरी अव आय ॥

चौपाई ।

जनक पट्टमहिषी जगजानी । कही सखिनसों मोदित बानी ॥
मण्डपतर अब चलहि कुमारी । संग सखी सब साजु सवाँरी ॥
सुनत सखी लै सिय तहँ गमनी । मंगल गीत गाय गजगमनी ॥
चलैं चारु चामर चहुँओरा । छजत छत्र छवि छै छिति छोरा ॥
बोलहिं सखी नकीब सुखारी । जय जय जय मिथिलेश कुमारी ॥
पानदान आदिक सब साजू । संयुत सोहत सखी समाजू ॥
सहित भगिनि सखिमण्डलमाहीं । सोहत सियछवि कहिनहिं जाहीं ॥
मनहुँ मशालन मण्डल भासी । दिपहि चारि महताब प्रकासी ॥
देव सकल फूलन झरि ल्याये । जय जय ध्वनि करि बाज बजाये ॥
जबहिं सीय मण्डपतर आई । उठ्यो अनन्दित कौशलराई ॥
उठि सुरमुनि मनमहँ तिहि ठामा । जगदम्बा कहँ कीन्ह प्रणामा ॥
सिययुत बहिनि सुहाई । दिय सन्मुख मुनिवर बैठाई ॥

दोहा—वेद पढ़न लागे सकल, सुर मुनि रूप मुनीश ।
जोरी भली विलोकि तहँ, दीन्हीं विविध अशीश ॥

चौपाई ।

कुवँरिन पीछे बैठ विदेहू । सहित अनुज कुशकेतु सनेहू ॥
रानी तहां सुनैना आई । तिमि कुशध्वज रमनी छवि छाई ॥
निजनिजपति दाहिनि दिशि बैठीं । मानहुँ मोद महोदधि पैठीं ॥
तिहि अवसरकी छबि कवि गाई । सकत न मनहिं रहत पछिताई ॥
तहँ विदेह दोउ बंधु विज्ञानी । सहित सुनैना निज द्योरानी ॥
मुनि मण्डल तहँ विमल विराजा । सिंहासन पर कौशल राजा ॥
दूलह चारि दुलहिना चारी । मण्डपतर सुखमा भइ भारी ॥
विश्वामित्र वसिष्ठ उदारा । चार करावहिं सुखित अपारा ॥
शतानन्द गौतम सुत तैसे । चार करावैं श्रुति कह जैसे ॥

एक ओर भल सखी समाजैं। गावन मंगल गीत विराजैं ॥
जय ध्वनि सकल नगर नभ भूरी। पुष्पावली पुहुमि गै पूरी ॥
तिहि अवसर असको जगमाहीं। राम व्याह जिहि आनँद नाहीं ॥

दोहा—जड़ चेतन सुर नर मुनिहुँ, पशु खग कीट पतंग।
राम जानकी व्याह लखि, मगन मोद रसरंग ॥

चौपाई।

तहँ दशरथ नृप प्रेम स्वरूपा। तिमि अनुराग विदेह निरूपा ॥
निष्ठा शांतिरूप छवि वारी। लसैं सुनैना कुशध्वज नारी ॥
पार्षद रूप और मुनिराई। भक्तिरूप बहु नारि गनाई ॥
कौशिक गुरु वसिष्ठ मतिमाना। लसैं रूप दोउ ज्ञान विज्ञाना ॥
शतानन्द ब्रह्मानँद सोई। मणि मण्डप हरि मन्दिर जोई ॥
रत्न अनेकन चौक पुराई। दिव्य भूमि सम रही सुहाई ॥
वासुदेव सम श्री रघुराई। संकर्षण लषणै दिय गाई ॥
भरत रूप प्रद्युम्न समाना। रिपुहन तहँ अनिरुद्ध बखाना ॥
वैदेही लक्ष्मी मन भाई। संकर्षण तिय सरस्वति गाई ॥
सो उर्मिला रूप मन भायो। रतिको रूप मांडवी गायो ॥
श्रुतिकीरति तहँ कांति स्वरूपा। लसैं शक्ति जनु चारि अनूपा ॥
विष्वक्सेन गरुल अति पावन। मन्त्री युगल सुमन्त्र सुहावन ॥

दोहा—पांचजन्य सम शंख तहँ, सायक सरिस सुनाभ।
सम सारंग शरासनै, कटि असि नंदक आभ ॥
कौमोदकी गदा सरिस, ध्रुवा प्रकाश महान।
राम व्याह मण्डप तहां, भयो विकुण्ठ समान ॥

चौपाई।

को कहि सकै विवाह उछाहा। रह्यो भुवन भरि मोद अथाहा ॥
मंगल गीत महाध्वनि छाई। उमड़ि चल्यो जनु सुख न समाई॥६॥

यामिनि याम जानि जिय जानी । बोल्यो वचन वसिष्ठ विज्ञानी ॥
सुनहु विदेह लग्न अब आई । कन्यादान देहु सुख छाई ॥
हवन सकल हम विधिवत कीन्हा । पावक प्रगट रूप हवि लीन्हा ॥
जनक तनक अब होइ न देरी । पाणिग्रहण यहि लग्न निबेरी ॥
सुनत विदेह नेह भरि भारी । धरी कनकमणि मंडित थारी ॥
तिहि महँ भर्‍यो सुगंधित नीरा । लीन्ह्यो निजकर कुश मतिधीरा ॥
कुंकुम रोरी तंदुल धरिके । लै जानकी अंक मुद भरिके ॥
तापर धरि मणि महा विकाशी । चूड़ामणि जिहि नाम प्रकाशी ॥
रानि सुनैना गांठिहि जोरी । सो ढारति जल प्रीति न थोरी ॥
सिय करकंज कंज कर राखी । रामहि चितै देन अभिलाखी ॥

दोहा—अंबक अंब अनन्द भरि, रोमांचित सब गात ।
प्रेम विवश गद्गद गरो, कही रामसों बात ॥

कवित्त ।

वेदन बखान कीन सृष्टि गर्भाधानकी,
सुशोभा शीतभानकी अनेक उपमानकी ।
इंदिरा समानकी सुगौरी धर्म सानकी,
समान कुलमानकी पतिव्रत प्रमानकी ॥
रघुराज दिनराज वंश दिनराज आज,
लीजै ललनानिकी शिरोमणि जहानकी ।
पालिनी प्रजानकी सुघालिनी अजानकी,
है जानकीसी जानकी कुमारी मेरी जानकी ॥

दोहा—धर्मचरी तुव सहचरी, सदा संचरी संग ।
छायासी माया विगत, दायामय सब अंग ॥
मेरे पंकज पाणिमें, पंकज पाणि लगाय ।
लेहु लाल अवधेशके, लली मोरि चितचाय ॥

पढ्यो मंत्र यह पुनि नृपति, जानि सनातन नीति ।
सो मैं लिखों प्रत्यक्ष इत, रामायणकी रीति ॥

श्लोक ।

इयं सीता मम सुता सहधर्म्मचरी तव ।
प्रतीच्छ चैनाम्भद्रन्ते पाणिं गृह्णीष्व पाणिना ॥
पतिव्रता महाभागा छायेवानुगता सदा ।
इत्युक्त्वा प्राक्षिपद्राजा मंत्रपूतञ्जलन्तदा ॥

दोहा—पढ़ि सुमंत्र यहि भाँतिते, छोड़ि दियो जल धार ।
सुरपुर नरपुर नागपुर, माच्यो जय जयकार ॥
ध्रुवपुरलों अरु भूमि भरि, भूतलमें इक बार ।
बाजन बाजे विविध विधि, भो सुख पारावार ॥
चढ़े विमानन देव सब, वर्षें कुसुम अपार ।
माने रावण भीतिते, आजहि भयो उबार ॥
एक बार बोले सकल, जय जय दशरथ लाल ।
जय जय जनकलली भली, हम सब भये निहाल ॥
बजे नगारे गगनमें, अनक झनक चहुँ ओर ।
अनकि सनकि खलगण गये, तनक रह्यो नहिं जोर ॥

चौपाई ।

लगे बजावन बाज बराती । माय उठीं तिय जुरी जमाती ॥
मंगल मोद भयो मिथिलापुर । सुखसागर उमँग्यो नाहिं किहि उर ॥
सुर मुनि सबै भये बिन भीती । रवि रथ रुक्यो गगनभरि प्रीती ॥
दश दिशि निर्मल बही बयारी । शीतल मंद सुरभि सुखकारी ॥
दिशा प्रसन्न सन्न खल वृन्दा । तारनसहित रुक्यो नभ चन्दा ॥
करहिं वेद ध्वनि मुनिगण नाना । जनक हर्षको करै बखाना ॥
तैसहि अवध अधीश अनंदा । कहैं जुकवि मिति सो मतिमंदा ॥

लहि कुशासन हव्य हुताशा। गुरनी भामि निज भाग विनाशा॥
राम जानकी सोहहिं जोरी। जोरहिं जिय तृण प्रीति न थोरी॥
करहिं निछावरि मणिगण भूरी। परसहिं पाय प्रेम परिपूरी॥
कहहिं परस्पर नारि करोरी। युग युग जियें युगल जग जोरी॥
सुर मुनि पुरुष नारि सब लेखे। अस दुलहिनि दुलह नहिं देखे॥
दोहा—मुनि मंडप पितु मातु सखि, अवलोकत सिय राय।
निरखत हरषत रामछवि, कोटि काम कमनीय॥

चौपाई।

अंगुलीय मणि पिय परछाहीं। कबहुँक कर फेरत परि जाहीं॥
यकटक निरखि रहति वैदेही। नहिं कर टारति नाथ सनेही॥
लाज और अभिलाष समाना। मन मुसक्याहिं जानि भगवाना॥
गुरुजन लाज दरश अभिलाखा। समय विचारि सीय सम राखा॥
साधु साधु भाषहिं सब देवा। नमो नमो कहि ठानत सेवा॥
जय जय ध्वनि पुनिपुनि सुरकरहीं। राम सीय सुखमा दृग भरहीं॥
यहि विधि पाणिग्रहणनिहिकाला। करत भयो सियको रघुलाला॥
राम वाम दिशि सिय बैठाई। सर्वस पायो निमिकुल राई॥
राम निकट सिय सोहति कैसी। कनक लता तमाल ढिग जैसी॥
मनहुँ श्याम घन दामिनि नेरे। मोहि रही हिय हरि सब केरे॥
देखि देखि छवि राम जानकी। जनक भीति भय राम जानकी॥
लोक रीति गुनि धरि उर धीरा। बोल्यो वचन परम गंभीरा॥
दोहा—लषण लाल आपहु इतै, सन्मुख बैठहु आय।
करहु उर्मिला कन्यका, पाणिग्रहण हर्षाय॥

चौपाई।

सुनि विदेहके वचन सुहाये। लषण लाज वश नयन नवाये॥
दीन्ह्यो सैनहिं शासन रामा। बैठ्यो लषण जाय तिहि ठामा॥

तहँ उर्मिला अंक बैठाई। लै कुश अक्षत निमिकुल राई ॥
पढ़िकै मंत्र सुना कर कंजू। धरि लक्ष्मण कर पंकज मंजू ॥
सलिल सुनैना कर ढरवाई। दई लषण उर्मिला सुहाई ॥
तिहि अवसर बाजे पुनि बाजे। सुमनस सुमन वर्षि जय गाजे ॥
साधु साधु ध्वनि चहुँदिशि छाई। जय उर्मिला राम लघु भाई ॥
यहि विधि पाणिग्रहण कराई। बैठ लषण उर्मिला सुहाई ॥
पुनि बोले निमिकुल राकेशा। मनहुँ प्रत्यक्ष धर्म कर वेशा ॥
भरत चंद्र आवहु यहि ठौरा। पूरहु लाल मनोरथ मोरा ॥
अस कहि उठ्यो समेत सुनैना। वंदि वसिष्ठचरण भरि चैना ॥
विश्वामित्र कंज पद वंदे। वंदे औरहु मुनिन अनन्दे ॥

दोहा—बैठायो कुशकेतुको, गाँठि जोरि युत नारि ।
लियो अंकसों मांडवी, तिमि संकल्प उचारि ॥

चौपाई ।

दई भरत मांडवी कुमारी। जनक अनुज कशकेतु सुखारी ॥
पुनि बाजे बाजे नभमाहीं। बरष फूल देव हरषाहीं ॥
साधुन मो जयध्वनि भय भारी। अति प्रमुदित मिथिला नर नारी ॥
पढ़ैं वेद विधि सहित मुनीशा। बार बार तिहि देहिं अशीशा ॥
भरत मांडवीकी भलि जोरी। दिय सवाम काम मद मोरी ॥
पाणिग्रहण करि मांडवि केरो। बैठ्यो भरत सकुचि प्रभु नेरो ॥
बहुरि वचन मिथिलेश उचारा। अब अवसर रिपुदमन तुम्हारा ॥
पाणिग्रहण श्रुतिकीरति केरो। करहु मुहूरत मुनिन निबेरो ॥
सकुचि शत्रुहन प्रभु रुख पाई। बैठ्यो कुशध्वज सन्मुख आई ॥
पढ़ि सुमंत्र संकल्प समेतू। दिय श्रुतिकीरति कहँ कुशकेतू ॥
श्रुतिकीरति रिपुदमन लजाई। बैठे निज आसन महँ जाई ॥
बजे बहुरि बहु भाँति नगारे। मंगल गान अगार अगारे ॥

दोहा–यहि विधि चारिहु बरनको, चारिहु बंधुन सुहाय ।
पाणिग्रहण कराय करि, प्रमुदित निमिकुलराय ॥
बैठ्यो आनँदरस मगन, मोहित रानि लघुभाय ।
मानहुँ पैरन सिंधु महँ, गयो पार सो पाय ॥

कवित्त ।

जैसे दियो गौरीको हिमाचल गिरिराज को,
हरिहि दियो ज्यों सिंधु इंदिरा सुहाई है ।
वासवको दीन्ह्यो शची हरषि पुलोमा जैसे,
च्यवनै सुकन्या शरजाति नृपराई है ॥
दक्ष दुहिता को दान दियो जिमि देवनको,
जिनते सुरासुर की सृष्टि समुदाई है ।
रघुराज ताही विधि नाहिन अधिक दियो,
जानकीको जनक लियो सो रघुराई है ॥

दोहा–दुलहिनि दूलह को तहां, गाँठि जोरि बैठाय ।
युत कुटुंब सानुज जनक, लगे पखारन पाँय ॥

कवित्त ।

पद्मरागजटितसुजातरूपथारधरिसलिलसुगन्धभरिजनक सुनैना है ।
पद अरविंदरघुनंदके अनंदभरे धोवत करत द्वंद्व नीर भरे नैना है ॥
जौनपदजलविधिधारयोहैकमंडलुमेंशंभु जटामंडलअखंडलसचैनाहै ।
स्वर्गमें मंदाकिनीपतालभोगवतीनामरघुराजभागीरथीभूमेंज्ञानऐना है ॥

दोहा–जासु नाम मुख लेतही, पाप पहार परान ।
सो जल सींचत जनक शिर, तिहि सम को जग आन ॥
जे पदरज पावन हितै, तरसत देव अशेश ।
राम जानकी पदकमल, धोवत ते मिथिलेश ॥
जे पदरज परशत तरी, गौतममुनिकी नारि ।
ते पद पोंछत पाणि निज, भाग्य न जाति उचारि ॥

चौपाई

पुनि वर वधू विभूषण नाना । जटित सूर्य्यशशिमणिनप्रधाना ॥
अमित निचोल अमोल ललामा । दियो जनक सुख भरितिहिठामा॥
पारिजात पुहुपनकी माला । पहिराई मिथिला महिपाला ॥
पूजन किय वर वधू समेतू । षोडश विधि नृप निमिकुलकेतू॥
जिहि विधि पूज्यो रामहिं राजा। तिहि विधि तीनिहु बंधु दराजा॥
साधु साधु मुनि देव बखाने । दानिशिरोमणि जनकहि जाने ॥
शतानंद तब वचन उचारा । अब भाँवरी समय सुखसारा ॥
गुरु वसिष्ठ पावक प्रगटायो । कीन्ह्यो हवन महासुख छायो ॥
जनक कह्यो जब मम परिवारा । चरण पखारि लेय सुखसारा ॥
तब भाँवँरी आदि विधि होई । ये दुर्लभ पै है पद कोई ॥
जनक वचन सुनि सब हरषाने । चरण पखारनको उमगाने ॥
धोयो चरण मुदित कुशकेतू । लह्यो मनौं भवसागर सेतू ॥

दोहा—निमिकुलके सब वृद्धजन, आय सहित निज नारि ।
भये परमपद योग्य सब, रघुवर चरण पखारि ॥
जे सुर मुनिको रूप धरि, बैठे रहे समाज ।
चरण पखारे ते सबन, निमिवंशिनके व्याज ॥

छन्द गीतिका ।

निज भाग्य धन्य विचारि सुर मुनि राम पायँ पखारिकै ।
शिर नाय प्रस्तुति करत बहु विधि मधुर वचन उचारिकै॥
भाँवँरि विलोकन हेत सब उमँगे अमित अभिलाषते ।
सीतारमण सीता सहित निरखत पलक परमाषते॥
तब शतानंदहि कह्यो रघुकुल गुरु गिरा सुख छामिनी ।
अब भाँवरी करवाइये पुनि अधिक बीतति यामिनी ॥
सुनिशतानंद सहर्ष करवावन लगे वर भाँवरी ।

ठाढ़े भये रघुवंशमणि निमि जनक भूपति द्वारगे ॥
तहँ विभावसु जनक भूपहि मध्य करि मग गेहँने ।
लागे फिरन फेरा फबिन फटिकें फरश मनमोहने ॥
छावनि छटा क्षिति गौरि सियकी नील्ह फरश सुफावनी ।
रघुनाथ मुख छवि इन्द्रनीलक भूमि बहुरि बनावनी ॥
दर्पनि परन प्रतिबिंब खंभन चमचमात मणीनके ।
मन मोहि निज छवि प्रगट भे बहु वपुष हरि लक्ष्मीनके ॥
गति मंद मंदहि चलत सुंदर हरत हिय नर नारिके ।
घनश्याम दामिनिसे लसत दोउ इष्टदेव पुरारिके ॥
जगमगत दोहुँन ज्योति मनु यक यक जितत सितश्यामहै।
सित श्याम मिलि मिलि होत शोभा हरित अति अभिरामहै ॥
मनु बीजुरीको वसन विरचि दिनेश शशि यक संगही ।
देत सुमेरु प्रदक्षिणा दक्षिणावर्त उमंगही ॥
जुरि युवति गावहिं गीत मंजुल राम सिय छवि छकितेहैं ।
करि मदन रति निवछावर नाक भाँवरि चित चाकितेहैं ॥
युग सखी सिय के संगकी अस कहहिं हँसि हँसिके तहाँ ।
धीरे चलहु कछु लाल है सुकुमारि जनक लली महाँ ॥
सुनि राम नयन नवाय रहत लजाय मृदु मुसक्यायकै ।
अरविंद पूरणचंद पेखत रहत ज्यों सकुचायकै ॥
कोउ वर वधू पर फूल वर्षहिं हेलि हास हुलासमें ।
कोउ ओढि अंचल विधिहि विनवहिं रहहिं दोउ यहिवासमें ॥
जबलों परी त्रयभाँवरी तबलों सिया आगू चली ।
पुनि चारि भाँवरि देत में भे राम आगू छवि भली ॥
जब रही सिय पुरसर चलत तब अस भली सोहत रहीं ।
जनु जात आगे भानके सितभानु पूरणिमा लहीं ॥

जब भये दशरथ कुँवर आगे चलत जनक कुमारिके ।
तब लसत मानहुँ चन्द्रमा पीछे प्रयात तमारिके ॥
क्षितिपर झरत अनगन कनक कन जलज हीरनकी कनी ।
मनु वर वधू गुरु जानि पुहुमी पुहुप पूजहिं रति वनी ॥
बहु रत्न पूरित चारु चौक विराजती वसुधा मनो ।
सजि वसन भूषण देन कन्या दान आई तिहि छनो ॥
यहि भाँति सप्तपदी कराय कुमार गौतमको सुखी ।
वेदी निकट ठाढ़ो करायो राम सीता शशि मुखी ॥
लाजा परोसन लाल लक्ष्मीनिधि करायो करनसों ।
कीन्हें निछावर सकल जन वर वधू रतनाभरनसों ॥
तब कह्यो वचन वसिष्ठ सीता राम एकहि आसनै ।
बैठहिं करावहु चार औरन बरनको अब या छनै ॥
जिहि भाँति रघुपति भाँवरी लाजा परोसनहूं भयो ।
तिहि भाँति तीनहुँ बंधु भाँवरि चार विधिवत ह्वै गयो ॥
तब जाय रघुपति निकट लक्ष्मीनिधि कह्यो मुसक्यायकै ।
दीजै हमारो नेग जो हम कहहिं अब चित चायकै ॥

दोहा–मंद मंद रघुचंद कह, जो माँगहु सानन्द ।
हय गय मणि माणिक वसन, भूषण आयुध वृन्द ॥
सो तुमको सब थोर है, जो कछु मेरे होय ।
प्रीति रीति जस तुम करी, तस न कियो जगकोय ॥
जनक कुँवर बोल्यो हरषि, यही नेग मुहिं देहु ।
पद अरविंद मरंदको, मन मलिंद करि लेहु ॥
एवमस्तु कहि राम तहँ, निज गलकी मणिमाल ।
द्रुत उतारि पहिराय दिय, सालहि कियो निहाल ॥

पद ।

राजत राम विदेहकिशोरी ।

भाँवरि भरत भरत भल भावत जगमगात जग जाहिर जोरी ॥
मंडप मणि मंडित मन भावत मनु तारागण गगन करोरी ।
चहुँकित छाय परत परछाहीं जनु दम्पति प्रगटी चहुँ ओरी ॥
गावहिं मंगल गीत सखी सब मुनिवर वेद पढ़ें मुख बोरी ।
कोशलेश मिथिलेश विराजत मगन मोद मघवा मद मोरी ॥
क्षीरधि सुधा मदन मंथक यदि रुचिर रमा रति कढ़ें बहोरी ।
धरि शृंगार वपु हरिहु बरै जो सम विरचत सकुचति मतिमोरी ॥
कबहुँकश्यामछटाछितिछहरति कबहुँक अधिकगौरद्युतिगोरी ।
सुछवि सितासित गंग यमुन मधि मति मज्जति रघुराजहिलोरी ॥ ३॥

मणिमंडपमें सिय राम लसें मुनि मंडल मंडित मंजुल है ॥
सहरा सुठि सोहि रह्यो शिरपै वनमाल विराजत वंजुल है ॥
सिय लाज भरी पिय छाँह चितै विय आनँद सिंधु भरै हियमें ।
जिय जोहनकी विय बानि गहीविय चापुरेको कियधौं धियमें ॥
मिथिलेश युतै अवधेश लसें निज पूरुव पुण्य प्रभाव लखें ।
शिव शक्र धनेश गणेश दिनेश लहे फल जो नहिं तौन चखें ॥
मिथिलापुर नारि सँवारि शृँगार खड़ी कल मंगल गान करैं ।
मुनि कौशिक और वसिष्ठ शतानँद चार करावत मोद भरैं ॥
तहँ चारिहु राजकुमार कुमारिन संग सुभाँवरि देत सजें ।
मनु मैन सुचारि स्वरूप बनाइ सवाम विराजि रह्यो सधजें ॥
सुर सिद्ध विमान खड़े असमान प्रसूननि वर्षि रहे उमहे ।
निउछावरि भूरि महीश मुनीश विमोहित रूपन प्राण किहे ॥
सुरदार नचैं गति गान रचैं बहु बाजन बाजि रहे कलहै ।
गज बाजिन स्यंदन भीर भरी कढ़ि कौन सकै करिकै बलहै ॥

सिय राम विवाह उछाह बढ़ो बहु अंडकटाह अनंद मढ़ो ।
रघुराज त्रिलोक निरीक्षणमें सबके मुखने जय शोर कढ़ो ॥२॥

दोहा–सँच कह्यो नहँ होत भो, राम जानकी व्याह ।
रह्यो भुवन सुखसिंधु भरि, रान तरंग उमाह ॥
नग लह्यो मिथिलेश सुत, रह्यो मनोरथ जौन ।
रामचरण वंदन कियो, कियो गौन निज भौन ॥

चौपाई ।

अवसर जानि सहित निज भ्राता । उठ्यो विदेह विनोद अघाता ॥
कोशलपतिको पूजन कीन्ह्यो । हय गय वसन विभूषण दीन्ह्यो ॥
स्यंदन शिविका साजि अनेका । भाजन विविध भाँति सविवेका ॥
दै यह अंगन अतर लगायो । मोद मूल तांबूल खवायो ॥
दियो अँगूठी रत्न प्रधाना । बहुरि विनयवश वचन बखाना ॥
राख्यो सुरति जानि निज दासा । मोहिं सकल विधि राउर आसा ॥
मिथिलापुर निमिकुल परिवारा । और जहां लगि अहै हमारा ॥
सो बिन संशय भूप तिहारा । कबहुँ और नहिं किहहु विचारा ॥
अस कहि रह्यो मौन कर जोरी । कह अवधेश गिरा रस बोरी ॥
आप सरिस हौ आप विदेहू । वसुधा विदित प्रताप सनेहू ॥
रघुकुल अवधराज सुत चारी । मोरि विभूति नरेश तुम्हारी ॥
सात द्वीप नव खंड प्रयंता । जहँ लगि शासन मोर दिगंता ॥

दोहा–तहँलगि राउर भूपमणि, सत्य सत्य मम वैन ।
नहिं अन्यथा विचारियो, यह सुख वृथा कहैन ॥

चौपाई ।

बोल्यो पुनि विदेह कर जोरी । परिचारिका दारिका मोरी ॥
भाग्य विवश तुम्हरे घर जाहीं । ताजि खेलन जानैं कछु नाहीं ॥
समय सम्हारब क्षमि अपराधा । अबलौं लही न कौनिहुँ बाधा ॥

इतनन उत सुख विभव महाना । पै शिशु भाव कछू नहिं जाना ॥
[illegible]जरीति सब किहहु सिखाई । करैं न कछु बिन शासन पाई
अबलों कोउ इनहिं आँखि दिखाई । इनहिं कह्यो कछु माग्य जनाई
रहीं कुमारी प्राणपियारी । भईं सकल सुतवधू तिहारी
मोर मान इनकर कुशलाई । बहुत कहौंलगि कहौं बुझाई
प्रेममयी मिथिलाधिप बानी । सुनि बोल्यो दशरथ मनिखानी
पुत्रवधू पुनि आप कुमारी । को इनते अब मोहि पियारी ॥
जिमिमिथिलातिमिअवधअगारा।जानहु सब विधि सुख उपचारा
नयन पूतरी सरिस कुमारी । बसिहैं सदन सदा सुख भारी ॥

दोहा—राजन देहु रजाय अब. जनवासे कहँ जाउँ ॥
निशा अशन कुँवरन सहित. करन हेत ललचाउँ ॥

चौपाई ।

कह्यो विदेह आप प्रभु धारे । बाकी कछु कुहबर कर चारे ॥
चार कराय सुतन पठैहौं । अब नहिं कछू विलंब लगैहौं ॥
बालक नींद विवश अलसाने । किमि करिहौं विलंब जिय जाने॥
सुनि मिथिलेश वचन अवधेशा। उठ्यो प्रमोदित सुमिरि गणेशा ॥
मिलि मिथिलेशहि बारहि बारा। करि प्रणाम मुनि जनन उदारा॥
विश्वामित्र वसिष्ठ समेतू । चल्यो भूप जनवास निकेतू ॥
विविध भाँति पुनि बजे नगारा । दिग स्यंदन स्यंदन असवारा ॥
भयो सुमंतसहित तिहि काला। चली संग चतुरंग विशाला ॥
छरे छबीले राजकुमारे । रहे राम सँग चलन पियारे ॥
तहाँ हजारन विमल मशाला । चलीं प्रकाश करत तिहि काला ॥
इत भूपति जनवासे आयो । शतानंद उत वचन सुनायो ॥
सखी करावहु सब यहि बारा । सेंदुर शीश बहोरन चारा ॥
।—सखी सयानी जाय तब, कह्यो वचन रस पूर ।

करहु लाल निज पाणिसों, सियहि शीश सिंदूर ॥
सेंदुर गहन न सकुच वश, राम मंजु मुसक्याय ।
सखी वदन तकि रहि गये, नीचे नयन नवाय ॥
कर गहि विमला रामको, सेंदुर भाजन दीन ।
लाल शीश सेंदुर भरहु, भगिनिसुगतिकसकीन ॥

सवैया ।

श्रीरघुराज सिया शिरमें भरचो सेंदुर मंदहि मंद लजाई ।
गावन लागीं सखी सिगरी तहँ चारिहु बंधुन गारि सुनाई ॥
दूलहकी छविमें छकिकै तकिकै जकिकै उपमा कहौं भाई ।
सावन साँझकी भानु छटा घनश्यामघटा रही रेख सुहाई॥ १॥
श्यामल पाणि पसारि सिया शिर सेंदुर देन लगे रघुराई ।
ता क्षणकी सुखमा लखिकै सखिसों उपमा सखि एक सुनाई ॥
श्रीरघुराज विलोकु नई मृदु मांगसों देवनदी दुति भाई ।
भारती धार लिहे यमुना मिलि सांची शृंगारी त्रिवेनी बनाई ॥२॥

सोरठा—यहि विधि करि तहँ राम, सिय शिर सेंदुराभरन ।
तिमि त्रयबंधु ललाम, वधुन शीश सेंदूर भरे ॥
सप्तपदी करवाय, शतानंद आनन्द भरि ।
करवायो सब चाय, जौन चार बाकी रह्यो ॥

दोहा—गौतम सुनवर करनसों, देव विसर्जन कर्म ।
करवायो विधिवत सकल, लोक रीति कुलधर्म ॥
वाम भाग पुनि वरनके, सकल वधुन बैठाय ।
मुनिवर कियो विवेक युत, तहँ अभिषेक बनाय ॥
काचित्सरसम्बर सखी, राममवेक्षतदाह ।
रूप मोहिता सुस्मिता, सुवरो वधू सुवाह ॥

पद

सांख्य पद्रय कोशलकान्त सुखद कुमार मानि सुकुमारम् ।
मैथिल निवास विलास विलसित मदनमनापहारकम् ॥
मणि मंडप सीतायुतं सुखमाभरं सीतावरम् ।
सविवाह कर्म्म विधानमानि कुर्व्वाणमद्भुतनाकरम् ॥
मणि मुकुट पीतांबर सुमध्य मुखारविन्द मनिन्दितम् ।
मेदुर सुवन मस्तक दिव्यमणिमिवनाडिकृण वन्दितम् ॥
किञ्चित्कटाक्ष विकाश वीक्षित जानकी सुखमासुखम् ।
गुरु जन निकट लज्जावशङ्कत मधो भावित शशि मुखम् ॥
जनकात्मजार्पितदृष्टि कङ्कण कलित कर धृत चन्दनम् ।
रघुराज सुखित समाज शोभित सानुजं रघुनन्दनम् ॥

दोहा—सांगतार्थ तह करत भे, कुँवर चारि गोलक्ष ।
पतिग्रह फल निरसन हितै, दीन्हे द्विजन प्रतक्ष ॥

चौपाई ।

बोली तहाँ सुनैना रानी । बोलि सखी जन सुखी सयानी ॥
लै दुलहिन दूलह कहँ जावो । हिलि मिलि कुहबरचार करावो ॥
सो सुनि उमँगान्यो अनुरागा । सखिन यूथ जुरिकै बड़भागा ॥
गावहिं गीत मोद रस सानी । दुलहनसों अस गिरा बखानी ॥
चलहु लाल कुहबर सुखदाई । चारिहु बंधु उठे मुसक्याई ॥
आगे आगे चलीं सुवासिनि । अर्घ्य देत हिय माहँ हुलासिनि ॥
तहँ लक्ष्मीनिधिकी वर नारी । सिद्धि नाम तुरतै पगु धारी ॥
राम पाणि गहि चली लिवाई । जोरे गाँठि चारिहू भाई ॥
आगे दूलह दुलहिनि पीछे । उभय ओर सब सखी तिरीछे ॥
जनकनगरकी सखी सयानी । बोलहिं व्यंग्य भरी बहु बानी ॥
चलहु कुँवर कछु धीरे धीरे । सुनियत घरके अहो अमीरे ॥
तुमहिं कौन चंचल गति सिखई । जननी भगिनि किधौं कछु बिपई ॥

दोहा–रघुनंदन बाल विहँसि, जहँ लक्ष्मी कर वास ।
नहँ चंचलता होति हठि, हठि नहँ विषय विलास ॥

चौपाई ।

लक्ष्मीनिधि ठाकुर कहँ पाई । काके भवन विषै अब जाई ॥
जहँ चंचलता तहँ चपलाई । हमतो गेह अचंचलताई ॥
उत्तर सुनत समुझि मुसक्यानी । चारिहुँ कुवँरि कोहबर आनी ॥
कुँवरिसहित वर आसनमाहीं । बैठाई वर दुलहिनकाहीं ॥
लक्ष्मी नारायण कुलदेवा । जनककरहिं दिनप्रति जिन सेवा ॥
सोइ कहबर मंदिर अति सुंदर । बन्यो उतंग कनक जनु मंदर ॥
मोतिन झालरि तन्यो विताना । तहँ विभूति औरही विधाना ।
आगे सिद्धि सखी सब पाछे । सुरतियसम पट भूषण आछे ॥
नारायण पूजन करवाई । विप्र वधुन सब चार कराई ॥
तहां सिद्धि अस गिरा उचारी । नेग देहु हमरो मनहारी ॥
निरुपम वस्तु जो होइ तिहारी । सोइ सवति मम होय सुधारी ॥
तुम संसार सार रघुराई । मुनि उपकार कियो चितलाई ॥

दोहा–सुनि सरहजके युक्ति युत, बैन मंजु मुसक्याय ।
प्रेमसुधा वर्षत श्रवण, कहे वचन रघुराय ॥
जिनके कुलमें कन्यका, बीरज मोल विकाय ।
पुहुमीते प्रगटै सुता, तहँको नेग वृथाय ॥

चौपाई ।

पटुका छोर पकरि सुकुमारी । हँसि बोली लक्ष्मीनिधि प्यारी ॥
लेहु लाह लालन लहकौरै । करहु कुँवर कर कुँवरि सकौरै ॥
मिश्रीयुत दधि देहु खवाई । कुँवरि खवैहै पुनि वरिआई ॥
सुनियत रघुकुलके बलहीना । गुरुते राखत वंश प्रवीना ॥

सुनत राम बोले चित चाय । जूँठ आजन्मा हम नाहिं खाय ॥
सबको हम निज जूँठ खवावैं । योगी बरबश तुम कहँ पावैं ॥
कहा सिद्धि पुनि गहि पट छोरा। मानहु लाल कहा मनि मोरा ॥
बहि बहि बातैं जनि बतराहू। कियो मुनिनसँग भगिनिविवाहू ॥
आय व्याहन जनककुमारी । भरे चरणमहँ तुम बहु नारी ॥
तुम्हरे कुलमहँ सुनियतप्यारे । पुरुषहु उदर गर्भको धारे ॥
तब प्रभु हँसि अस बचन उचारा । नहिं मंथनते वंश हमारा ॥
यदपि योगिजनते तुव नेहू । तदपि बसहु भोगिनके गेहू ॥
दोहा—चलहु अवधपुरको अवशि, लै भगिनी नव आठ ।
निवसि निहंगनके निकट, काहि करहु उकाठ ॥

चौपाई ।

राम वचन सुनि कह सब आली । चतुर जेठ दूलह अति ख्याली ॥
देवनारि धरि सखी स्वरूपा । लषण रामको लखन अनूपा ॥
बैठीं सखिन मिली तिहि ठाईं । करहिं चार नाइनिकी नाईं ॥
तहँ शाचड़ा राम ढिग जाई । रामपाणि गहि कछु मुसक्याई ॥
दधि मिश्री प्रभु कर उठवाई । लगी खवावन सियहि तहांई ॥
प्रभु सकुचे नीचे करि नयना । बोले मंद मंद मृदु नयना ॥
मुखर करहु जग जगकी आली । बैठो रूप गोपि कहँ लाली ॥
गिरा सुनत हरिगिरा सुहाई । बैठी जाय दूरि सकुचाई ॥
सखिस्वरूप गौरी सिय नेरे । बैठी ताहि राम दृग हेरे ॥
करि प्रणाम बोले मुसक्याई । गिरि गिरीशवृष तजि किमि आई ॥
कह्यो शचिहि पुनि प्रभु अस वानी । तुम हौ त्रिभुवनकी महरानी ॥
सहसनैन कर संग विहाई । तजि अमरावति कस तुम आई ॥
दोहा—देवनारि सुनि सुनि वचन, सकुचि सकुचि उठि जाय ।
सखिन ओट लै लै सबै, बैठीं शीश नवाय ॥

चौपाई

तहँ कमला शशिकला विशाखा । बोलीं वचन भरी अभिलाखा ॥
हमरे कुल कर जो कछु चारा । हम करवैहैं सहित विचारा ॥
ये अजान जानहिं कछु नाहीं । कहँते आई यह घरमाहीं ॥
अस कहि राम सिया ढिग जाई । चार करावन लगीं सुहाई ॥
प्रभु कर गहि मिश्री दधिप्यारी । सियमुखपरश कराय सुखारी ॥
पुनि उठाय सिय कर दधि लीन्हें । परश करावन सन्मुख कीन्हें ॥
सियकरयुत सखि कर रघुराई । निज कर करि दिय ऊंच उठाई ॥
परचो सखिन शिरपर दधि पीछे । हँसन लगीं तिय ताकि तिरीछे ॥
मधुरअली तब करि चतुराई । दै धोखो दधि दियो छुआई ॥
कह्यो रामसों पुनि मुसक्याई । चली न इत राउरि चतुराई ॥
जो तुम्हरे कछु मन अभिमानू । हमहीं हैं बड़ चतुर सुजानू ॥
खेलहु लला जुआ यहि ठाऊं । जीते चतुर धरायो नाऊं ॥

दोहा—अस कहि रत्न अनेक धरि, कनक थार भरि नीर ।
लगीं खिलावन द्यूत सखि, सियको अरु रघुवीर ॥

सवैया ।

मुसक्याय सुनैनै नचाय तबै कह सिद्धि हरे हँसिकै बतिया ।
न जुआमें लला लली जीतन पावैं लगाये रहे अपनी घतिया ॥
सिय आजु न लाजको काज कछू छल छाजि छटे रघुराउपिया ।
नतो बात जई मिथिलापुरकी पछितात जई सिगरी रतिया ॥ १ ॥
सजनी कोउ सिद्धिकी बोली तहाँ अब जानिहैं सत्य सखीसिगरी ।
यदि हारिगे लाल ललात इत रघुवंशिन बात सबै बिगरी ॥
सति भे नहिं कौशलनाथ सुतै यह विश्वमें कीरतिहू बगरी ।
रघुराज ये श्यामलगौरनकी नहिं न्यायकी नीतिअबै निगरी ॥ २ ॥
सुनि प्यारीकी प्यारी गिरा हँसिके लषणै दिय ऊतर मोदमये ।

मिथिलापुरकी हौं सुआसिनी तूंपै अनंगमवासिनीचित्तचये ॥
जिनके घर मातु पिता न जनै सुत भूमिको फारि कढ़ै अनये।
रघुराज कुलै सगिनऊ करै हमतो यह देखि अचर्य भये ॥३॥
दूलह त्यों दुलहीको जुआ सखियान लै सिद्धि खिलावन लागी।
लै मुकता मणि माणिक हीरन पाणि उछालन लागीं सुहागी ॥
श्रीरघुराज विदेहलली तहँ दोहुनकी दुगुनी दुति जागी ।
मानो हजारन तारनको रवि चंद्र सुधारन लागे सुरागी ॥४॥
गावतीं गर्व गहे गुणको मृदु गीतन गोरी सुदै बहु गारिन ।
हारे लला अब हारे लला अस भाषतीं देतीं तिया बहु तारिन॥
जीती हमारी लली रघुराज मँगाओ हुतै अनुजा मुनि प्यारिन।
नातौ विचारिकै नातो विदेह बुलाइहैं रावरेकी महतारिन॥५॥
रूप छिपाये रहीं गिरिजा गिरा गोरिन गोहनमें लगीं गावन ।
जो बलतें मधुकैटभ जीत्यो जिते दितिके द्वै कुमार भयावन॥
सो बल आज कहाँ गयो लाल विदेहललीके समीप सुहावन।
आजलों हारे न तू रघुराज सो हारे रहौ सिय पावन पावन॥६॥
आतुरी चातुरी भूलि गई सब मोहनी रूपकि रीति पगानी ।
रावरे को ठगिबो रह्यो आवत बापुरे बावरेको पहिचानी ॥
ज्ञानकी जानी हती न सुजान लगे जुआ खेलन जीतहीं जानी ॥
चंचलता न चली रघुराज करी बलिसों जो छटी छल छानी ॥७॥

दोहा—रघुनंदन बोले विहँसि, होय भवानी जोय ।
तिहि धोखो देनो भलो, आवत वन वपु गोय ॥
हम सूधे क्षत्रिय विमल, नहिं जानैं छलछंद ।
अपनेते बरती वरन, यहि पुर सुता स्वच्छन्द ॥

चौपाई ।

कही नागरी कोउ मिथिलाकी । करहु कला कारिलला चलाकी ॥

बातौ सिखवन को इन चारी । कबहु लाल लागै नहिं बारी ॥
प्रभु मुसक्याने टारन बाती । गारी देतीं नारि सुहाती ॥
बाता सिखवन मिसि तहँ प्यारी । परशहिं प्रभु कर मृदु मनहारी ॥
विविध युक्तिके वचन सुनामैं । उत्तर न देत बंधु लजि रामै ॥
बहुरि कह्यो बंधुन रघुराजू । नाहिं ससुरारि लाज कर काजू ॥
नट नागरी विदेह नगरकी । आसिनि औहं सुआसिनि घरकी ॥
यह सुनि अपर कह्यो मुसक्याई । भानुवंशकी रीति सदाई ॥
तिय तौ तिय पुरुष भे बामा । नारी कवच धरायो नामा ॥
देखहु सखि इन चारिहु भाई । नारिहुते अति कोमलताई ॥
अवध पुरुष असतौ कस नारी । मुनिमानसकी मोहनवारी ॥
विहँसि राम तहँ गिरा उचारी । पूरब कस नहिं लिह्यो विचारी ॥

दोहा—चारिहु बंधुनको हमैं, जानि लई ती नारि ।
चारि कुमारिन व्याह पुनि, कीन्ह्यो काह विचारि । ।

चौपाई ।

अपर कही मिथिलापुरवासिनि । मंद मंद मुसक्याय हुलासिनि ॥
क्षत्रिय भानुवंश कुल ऊँचो । जगमें सुन्यो न नेसुक नीचो ॥
यही विचारि कन्यका व्याहीं । कहिहै कोउ अनुचित यह नाहीं ॥
पै इक्ष्वाकु वंश प्रभुताई । लालन कौन हेत बिसराई ॥
व्याह्यो शृङ्गीऋषि भगिनीको । शांता नाम कहीको नीको ॥
तुमहिं न आज लगत रघुराजू । बाती सिखवन परिहै आजू ॥
जीते काम वाम नहिं जीते । जानकि जानिन जानहुँ जीते ॥
आये रघुवंशिनके देवा । तुमसों लला करावन सेवा ॥
तिनको शिर नावहु सब भाई । इन्हें देवि कौशला पठाई ॥
भरत विहँसि तब वचन बखाने । रंगदेव तजि देव न जाने ॥
घर देवन बहुताई । ज्ञान विराग योग अधिकाई ॥

ने सेवन देवनको जानैं । देवन रानि भवनमहँ आनैं ॥

दोहा—अपर सखी बोली विहँसि, नटनागर नृप लाल ।

अहैं बराये चारिहूँ, नन्दन अवध भुवाल ॥

चौपाई ।

करिकटाक्ष कोउ कह अस बामा । घर बाहेर रंग में रामा ॥
प्रभु कह सत्य कही मनभावनि । निमिकुलकी रीति अनिपावनि ॥
सुत पितु आजहु अरु परपाजा । जनक कहावत लगति न लाजा ॥
सुनि प्रभुवचन सबै मुसक्यानी । सकल कहैं नृप सुत मतिखानी ॥
नट नागर नटखटी अनोखे । चंचल चारु चतुरता चोखे ॥
कहे वचन पैहौ नहिं पारा । सखी करावहु कुहबरचारा ॥
गाय गाय वर मंगल गाना । चार करायो सहित विधाना ॥
वेद रीति कुलरीति निवाही । कहैं न वर जनवासे जाहीं ॥
तहँ रनिवास हास रस माचा । सबही कर अतिशय मन राचा ॥
जानि तहाँ अति काल सुनैना । आय जनक रानी कह बैना ॥
जनवासे अब कुँवर पठैयो । कालिह कलेऊ हेत बुलैयो ॥
सासु वचन सुनि सिद्धि सुखारी । कही गिरा रामहिं मनहारी ॥

दोहा—अब जइये जनवास को, लाल होत अतिकाल ।

कालिह कलेऊके समय, देहौं उतरु रसाल ॥

छन्द कामरूप ।

सुनि सिद्धिके अस वचन सुंदर रचन पाय हुलास ।
चारिहु कुँवर प्रमुदित उठे करि विविध हास विलास ॥
दिय छोरि गाँठी सिद्धि सुंदरि वधुनकी सकुचाय ।
चारिहु कुँवर दोउ सासुको सहुलास शीश नवाय ॥
गवने हरत मन हगन फेरत मनहुँ सखिन हुलास ।
छलि छीनि चारहु छैलतिहि क्षण जात हैं जनवास ॥

मणि पट विभूषण करहिं निउछावरि अलीगण गेरि ।
प्रभु सहित शील सनेह नयनन देत आनँद हेरि ॥
गावहिं सुमंगल गीत भामिनि दमकि दामिनि रूप ।
बाजन बजावहिं विविधविधि तालन तरल अनुरूप ॥
यहि भाँति चारिहु बंधु द्वार आयगे सुख छाय ।
तिहि काल मिथिलापालसंयुत लाल आयो धाय ॥
मिलि राम वारहिंवार भरतहि लपण अरु रिपुशाल ।
कर जोरि सब माँगे विदा शिरनाय दशरथ लाल ॥
दिय कोटि आशिष लाय उर पुनि नयन अंबु बहाय ।
नृप कह्यो का करिये कुँवर सुख जाय नहिं कहि जाय ॥
भेंट्यो बहुरि लक्ष्मीनिधिहु प्रभु मिले सहित सनेह ।
चारिहु कुमार सवार भे उत गये गेह विदेह ॥
आये सखा सब रामके निउछावरैं मणि कीन
बोले विहँसि ससुरारि प्रिय अतिकाल नहिं चित दीन ॥
नहिं दीन उत्तर सकुच वश चढ़िकै तुरंग उतंग ।
गवने कुँवर जनवासको सुंदर सखा सब संग ॥
बाजे नगारे शोर भारे बाँसुरी करनाल ।
बरषे सुमन मुद मगन सुर चढ़ि गगन यान विशाल ॥
बाजी उछालत नयन चालत चले राजकुमार ।
ते सखा राजकुमार गवने संग पंचहजार ॥
फहरात विमल निशान आगे तुंग छ्वै असमान ।
मनु तासु पवनहि पाय तारा वृन्द नभ विलगान ॥
महताब और मशाल भासहि होत दिन इव जात ।
बाजत अनेकन दुंदुभी नहिं शोर भुवन समात ॥
पुर नारि नर मोदित खड़े पथ वृन्द वृन्द बजार ।

रीझत मनहिं खीझत पलक लखि चारु चारिकुमार ॥
यहि भाँति चारिहु कुँवर आवत भये वर जनवास।
देखत नगरी सबै टाढ़े नहिं समात हुलास ॥
तजिकै तुरंग उमंग भरि यक संग चारि कुमार।
पितुकी किये निउछावरैं पदवंदि बारहिं बार ॥
अवधेश बोल्यो वचन जानि विलंब बड़ि तिहि काल।
बैठहु न इत यक क्षणहुँ अब कीजे वियारी लाल ॥
युग याम बीति गई निशा कहियो किमा नहिं नेक।
करिकै कछुक भोजन त्वरित कीजै शयन सविवेक ॥
शिरनाय चले कुमार सब पितुकी रजायसु पाय।
हिलि मिलि किये भोजन रजनि व्यञ्जन विशेष निकाय॥
कीन्हें शयन पर्यंक निज निज अरुण आलस नयन।
सुनिकै कुमारन शयन भूपति कियो चैनहिं शयन ॥
कौशल निवासिन सकल आनँद भयो जो तिहि रैन।
सहसहु वदन नहिं कहि सकत यक वदन वदन बनैन ॥
तहँ सकल कौशल नगर वासिन बढ़ी अतिशय प्रीति।
नहिं राम व्याह किसा बिनी वर्णत निशा गै बीति॥

दोहा—सकल बराती जागतै, लहे प्रमोद प्रभात।
बंदीजन विरुदावली, गाय उठे अवदात ॥

चौपाई।

उठ्यो महीपति सुमिरि गोविंदा। करि सुरभी दर्शन सानंदा ॥
देखि वदन घृतमहँ युत हेमा। सरसब परशि निबाह्यो नेमा ॥
वैष्णव विप्र वेदविद आये। सादर भूप तिन्हैं शिरनाये ॥
क्षोनी क्षितिपति पढ़ि मंत्रा। तज्यो सेज जिहि तेज स्वतंत्रा ॥
प्रातकृत्य नृप सकल निबाहीं। बैठे राजसिंहासन माहीं ॥

नेम उठि उठि चारिहु भाई । करि मज्जन पूजन सुखपाई ॥
पहिरि विभूषण वसन सुहाये । पिता दर्श हित सभा सिधाये ॥
पितुवंदन रघुनन्दन कीन्ह्यों । तैसहि त्रयबंधुन करि लीन्ह्यों ॥
देखि रामयुत तीनिहुँ भाई । उठि भूपति उर लियो लगाई ॥
शीश सूँघि दिय आशिर्वादा । रक्षहु युग युग धर्म मर्यादा ॥
बैठायो वर आसन माहीं । आयो सचिव सुमंत तहाँहीं ॥
भूपति सकल सैन्य सुधि लीनी । सचिव कह्यो सैना सुख भीनी ॥
दोहा—उतै जनक सब साजु भरि, शतानन्दके संग ।
पठवायो जनवास महँ, हित व्यवहार अभंग ॥

चौपाई ।

शतानन्द लखि उठ्यो महीपा । दै आसन बैठाय समीपा ॥
पूछि कुशल बोल्यो कर जोरी । तुव आगमन भाग्य बड़ि मोरी ॥
शतानन्द बोल्यो मुसक्याई । तुम ब्रह्मण्य धन्य नृपराई ॥
यह व्यवहार विदेह पठाये । हम बरात हित इत लै आये ॥
तब सुमन्त सों कह्यो भुवाला । यथायोग्य दीजै यहि काला ॥
देन लग्यो सुमंत तब साजू । गई छूटि मिति मोद दराजू ॥
जाको जितनो जस मन भावा । सो तितनो अधिको बहु पावा ॥
उबरा सो मंगन गण पाये । ते जग जगत जनक यश गाये ॥
नृप भये सब भाँति बराती । जात न जाने दिन अरु राती ॥
उतै सुनैना सखी पठाई । लक्ष्मीनिधि कहँ निकट बुलाई ॥
जनवासे अब लाल सिधारौ । लै आवहु लिवाय वर चारौ ॥
इतहिं कलेऊ करहिं कुमारा । भवन विभूषित होय हमारा ॥
दोहा—सुनि विदेह नंदन चल्यो, राम लिवावन काज ।
चढ़ि तुरंग मढ़ि मोदरस, संग सखानि समाज ॥

चौपाई ।

गयो जहां राजत रघुराजा । सभा सभा युत राज समाजा ॥

लक्ष्मीनिधि आवत लखि राजा । उठ्यो अनन्दित सहित समाजा ॥
लक्ष्मीनिधि तहँ कियो प्रणामा । आशिष दई भूप मतिधामा ॥
शीश सूँघि अंकहि बैठायो । चिबुक परशि बोल्यो कहँ आयो ॥
लक्ष्मीनिधि कह हे महराजा । भेजहु कुँवर कलेऊ काजा ॥
भूप कह्यो लेजाहु कुमारे । का पूछहु मिथिलेश दुलारे ॥
सुनतसुखित लक्ष्मीनिधि भयऊ । राम निकट आसुहि चलि गयऊ ॥
विहँसि कह्यो चलिये रनिवासा । मातु बुलायो दर्शन आसा ॥
करन कलेवा बंधु समेतू । आसु पधारिय रघुकुल केतू ॥
उठि रघुनन्दन चारिहु भाई । पिता चरण पंकज शिरनाई ॥
चढ़े कुँवर सब तरल तुरंगा । चले सखा सब सोहत संगा ॥
डगर डगर तिहि नगर मँझारी । फैली सुधि आवत वर चारी ॥

दोहा—पुर नर नारी लखन हित, बैठ अटा अरु द्वार ॥
कहहिं कलेऊ करन हित, आवहिं राजकुमार ॥

चौपाई ।

इत तुरंग झमकावत भावत । चारिहु कुँवर महाछवि छावत ॥
जगर मगर माचिरह्योवगरमहँ । अगर तगर भर डगर डगरपहँ ॥
झमकतझझाकि वाजिमगडहरैं । छोरन छूटि मुक्त क्षिति छहरैं ॥
तुरँग उड़ावत पेंच पागकी । छूटि जाति सुधि रहतिवागकी ॥
दरशावैं बहु गति तुरंगकी । छवि छावैं क्षिति पट सुरंगकी ॥
सखा चपल कोउ खेलत नेजे । मनहुँ पठाय पवन इन भेजे ॥
आवत जात न ते दिखात हैं । यक यक ते डेवढ़ बढ़ात हैं ॥
छैल छबीले शक्र सानके । राम सखा सम पंच बानके ॥
चलत बरोबर प्रभु समानके । सन्माने करुणानिधानके ॥
जिहि वाजी रघुपति सवारहैं । कहि न सकत छविमुखहजारहैं ॥
शील सुधानिधि वेग वायुको । मनहुँ लह्यो मन अवधि आयुको ॥

झनकत पैंजनि परन पाउके। परन चरण चौगुने चाउके॥

दोहा—सज सजीले बाँकुरे, दशरथ राजकुमार।
हेरनहीं हठि हिय हरत, हलकत हीरन हार॥

चौपाई।

पहुँचे सब जब मधि बजारमें। नारी चढ़ि ऊँचे अगारमें॥
निरखिनिरखिपलकनिनिवारहीं। राई लोनहिं कर उतारहीं॥
ओढ़ि ओढ़ि अञ्चल मनावहीं। मिथिलापुर पुनि कुँवर आवहीं॥
द्वार द्वार बहु हेम खम्भ हैं। पुरट कलश युत यूप रम्भ हैं॥
जनक नगरकी अति विचित्रता। भइ प्रभु आगम पर पवित्रता॥
द्वार द्वार जन जन जुहारहीं। यकटक चारिहु वर निहारहीं॥
कहहिं प्रजा सब मोद झोकमें। अस सुन्दर नहिं कहुँ त्रिलोकमें॥
विप्र वेद पढ़ि पढ़ि अशीशहीं। लहैं अनन्द निहारि ईशहीं॥
नारि उतारहिं मुदित आरती। चिरजीवहु सुख कढ़ति भारती॥
राम जाय मिथिलेश द्वारमें। तजे तुरंगन सुख अपारमें॥
जानि सुनैना राम आमिनी। पठयो कलशन कलितकामिनी॥
मिल्योआयमिथिलाधिराजहै। प्रभु प्रणाम किय सहित लाजहै॥

दोहा—मिलि विदेह आशिष दई, लेगे भवन लिवाय।
यथा योग्य भ्रातन सखन, सहित राम बैठाय॥
करत भये सत्कार बहु, अङ्गन अतर लगाय।
दै बीरी पूछी कुशल, प्रेम अम्बु दृग छाय॥
प्रभु बोले करजोरि कै, आप कृपा कुशलात।
जैसे लक्ष्मीनिधि अहै, तैसे हम सब भ्रात॥
अति अमोल भूषण वसन, तहां विदेह मँगाय।
गज तुरंग रथ पालकी, दीन्हें चारिहु भाय॥
सन्माने सिगरे सखन, पट भूषण बहु दीन।

मनु व्यवहारहि व्याज ते मोद मोल लै लीन ॥

छन्द ।

तहाँ सुनैनाकी यक आई सहचरी ।
कुँवर बुलावन हेत महा मुद उर भरी ॥
लक्ष्मीनिधि तहँ आसुहि कुँवर लिवायकै ।
गये तुरत रनिवास पिता रुख पायकै ॥
सखा सचिव सरदार रहे दरबारमें ।
भयो मोद महँ मगन जनक व्यवहारमें ॥
रामहिं आवत देखि सुनैना धायकै ।
लै बलिहारी चूमि वदन सुख पायकै ॥
मणिमंदिरमहँ आसुहि राम लिवायकै ।
तीनिहुँ अनुज समेत सखी बैठायकै ॥
तोरच्यो तृण पुनि राई लोन उतारिकै ।
कियो आरती मंगल मंत्र उचारिकै ॥
तहँ लक्ष्मीनिधि नारि सिद्धि आवत भई ।
करन कलेऊ हेत विनय गावत भई ॥
उठे राम लै बंधु कलेऊ करनको ।
बैठे आसन माहिं महा मुद भरनको ॥
व्यंजन विविध प्रकार थार भरि ल्यायकै ।
सूपकार सुख पाय परोसे आयकै ॥
मणि माणिक अरु हेम कटोरे सोहहीं ।
व्यंजन भरे अनेक मदन मन मोहहीं ॥
सन्मुख बैठी सिद्धि सहित सखियानके ।
गारी गावन हेत स्वरूप गुमानके ॥
रविकुल कैसे भयो क्षत्रिकुल जगत है ।

कश्यप द्विजको पुत्र भानुयश जगत है ॥
छायाको पुनि भयो सुवन मनुका कही ।
बिना रूपकी भानु संगमहँ क्यों रही ॥
मूल अशुद्ध विचार होत यह वंशको ।
महिमा हेतहि कहत वंश यह हंसको ॥
मूल पुरुष भइ इला नारि पुनि नर भई ।
आवत सोई रीति चली यह नहिं नई ॥
भे युवनाश्व महीप गर्भ उदरहि धर्यो ।
मांधाता तिहि भये भूप नहिं सो मर्यो ॥
मांधाता महराज बड़े दाता भये ।
सौभरि मुनिको बोलि सकल दुहिता दये ॥
जुर्यो न क्षत्रिय जगतमाहँ जिनको कहूं ।
ब्राह्मणको दिय सुता सुकीरतिदिशि चहूं ॥
भे असमक महराज यशै संसार है ॥
गुरु वसिष्टकृत विदित सकल उपकारहै ॥
विप्र नारि दिय शाप सुकल्मषपादको ।
मदयंतीको तज्यो जु पाय विषादको ॥
रानीमें गुरु कियो सुगर्भाधानको ।
अजहुँ करत रघुवंश सुवंश गुमानको ॥
नदी कहावति सुता जासु कुल भूपकी ।
जाको पानी लेत कीर्त्ति अनरूपकी ॥
जो रघुकुलमहँ होइ कछू अनरीति है ।
तौ रघुवंशी गनत हमारी रीति है ॥
बड़े यशी रघु भये कहा कहिये सखी ।
साठि सहस दिय रानि द्विजै है हय मखी ॥

दोहा–पुरुष शक्तिते हीन लखि, द्विज कहँ रघु महराज ।
लै कुँवरैन युगल फल, दियो पुंसना काज ॥

छन्द ।

भयो मातुपितुन न जन्म अजनाहिंते ।
पायो नाम नरेश रहे द्विज चाहिते ॥
करन लग्यो अज व्याह कोउ नृप बोलिके ।
कन्यादानहिं करत समय चित खोलि के ॥
विश्वावसु गंधर्व धारि द्विज रूपको ।
माँगत भयो कुमारि वचन कहि भूपको ॥
संकट धर्महि जानि योग बल अज तहाँ ।
निरम्यो द्वितिय कुमारि सुंदरीसो महाँ ॥
सो दीन्ह्यो तिहि नृपै जाहि आनत भये ।
विश्वावसुको सत्य विप्र मानत भये ॥
भगिनि सहोदर दियो ताहि गुनि धर्मको ।
कीरति प्रगट पुरान कियो जो कर्मको ॥
कोउ बोली तहँ सखी सुनी यह कानमें ।
दशरथ भूप चरित्र लखी सुजहानमें ॥
दशरथ नृपकी रानि लजोरी हैं सबै ।
समर सुरासुर माहिं कंत त्याग्यो कबै ॥
जिन नारिनके लाज न होत शरीरमें ।
तिनको कौन प्रमाण रहसि जन भीरमें ॥
दक्षिण कौशल भूप स्वयंवर करत भे ।
सुता कौशला हेत भूप सब जुरतभे ॥
राक्षस रावण नाम कुमारी हरत भो ।
दशरथनृप तहँ जाय बड़ो बल करत भो ॥

नाकी हरी कुमारि कौशिला लायकै ।
वरमें किय पटरानि बड़ी सुख छायकै ॥
गाय उठी कोउ सखी सुमित्रा यश सुनो ।
कीन्ह्यो सुंदर मीत नाम ताते भनो ॥
भरत मातु कैकयी कहावत सुनु सखी ।
नाम लेत है प्रश्न लाज अतिशय लखी ॥
रघुपति भगिनी नाम जौन शांता कहीं ।
श्यामा सुंदर अंग भुवन जिहिसम नहीं ॥
विषय विलास विलोकि न राख्यो निज वरै ।
अंग भूपके भौन पठै दिय अवसरै ॥
तहँ यक मुनिपै मोहि गई मन भामिनी ।
मुनिको भयो विवाह भई बड़ि कामिनी ॥
भरत राम हैं श्याम लषण रिपुशालहूं ।
गौर वदन नहिं जानि परै कछु हालहूं ॥
जो एकहि पितु होत वर्ण युग किमि भये ।
वर्ष सहस्रहि साठि वीति नृपके गये ॥
तव बोली कोउ सखी न शंका कीजिये ।
दशरथ रानी युवा हेत सुनि लीजिये ॥
कौशल्या कैकयी सुमित्रा साँवरी ।
किय अपनी करतूति नामकी भाँवरी ॥
लाल भगिनि निज देहु व्याहि लक्ष्मीनिधै ।
लेहु जगत यश लूटि कोन चाही विधै ॥
जस सुंदर तुम लाल भगिनि तस होयगी ।
सरहज सिधिकी सवति महामुद मोयगी ॥
रघुवंशिनकी होयँ और जे कन्यका ।

निमिवंशनको व्याह करि तिन धन्यको ॥
दोहा—यहि विधि मिथिलापुर युवति, गारि गावत जाहिं ।
मंद मंद भोजन करत, सकल बंधु मुसक्याहिं ॥
चौपाई ।
मंजु सुरन भरि राग सहाना । लेनीं तरल तान विधि नाना ॥
साच्यो महा मनोहर शोरा । सोहीं सखि लखि राज किशोरा ॥
तहँ सवनके विविध प्रकारा । औरहु अन्न प्रकार अपारा ॥
दधि प्रकार अरु क्षीर प्रकारा । करहिं सराहि कुमार अहारा ॥
मनरंजन विरंज दुखभंजन । अरुचि विभंजन रसना मंजन ॥
कलिया अरु कबाब वर स्वादू । तिमि श्रीखंड करन अहलादू ॥
खरी खुरचनि मिष्ट मलाई । महा मधुर मोहनी मिठाई ॥
तिमि बताशफेनी बासोंधी । विविध वटी वट माडव औंधी ॥
विविध फलनके मंजुल सीरा । ओदन झलक मनहुँ बहु हीरा ॥
तिक्त अम्ल कटु लवण कषाये । मिष्ट मिष्ट बहु स्वाद बनाये ॥
भक्ष्य भोज्य अरुलेह्यचोष्यवर । पान पियूष समान स्वाद कर ॥
सुरपुर नरपुर नाग पियारे । जे दुर्लभ महि अहहिं अहारे ॥
दोहा—ते विदेहके सूदवर, विरचे विविध उछाहि ।
सकल बंधु भोजन करत, स्वाद सराहि सराहि ॥
चौपाई ।
यहि विधि भोजनकरिअभिरामा । किय आचमन बंधु युत रामा ॥
उठि चामीकर चौकिन जाई । बैठि धोय कर पद सब भाई ॥
मुकुटन शिरन सुधारत माहीं । आय सुनैना कह्यो तहाहीं ॥
कोशल मुकुट उतारहु लाला । मिथिला मुकुट देहु यहि काला ॥
अस कहि मणिमंडित धरिथारन । मुकुट चारिवर प्रभा पसारन ॥
पहिरायो चारिहुँ वर माथे । पद्मराग मर्कत मणि गाथे ॥
अति अमोल लालनकी माला । लालन गल पहिराय विशाला ॥

पुनि लिवाय लाई महरानी । बैठायो आसन छविखानी ॥
वदी विदेह वाम वर बानी । नेग कलेवा कर सुखदानी ॥
माँगहु जौन रहे अभिलाषे । तब प्रभु जोरि कञ्ज कर भाषे ॥
यही नेग जननी अब दीजे । लक्ष्मीनिधि समसुहिंकरि लीजै ॥
मैं सुत सेवक तू महतारी । देहु देवि रुचि यही हमारी ॥

दोहा–शील विनय रसके भरे, मधुर रामके बैन ।
सुनत जनकरानी युगल, भरि आये जल नैन ॥

चौपाई ।

पुनि पुनि लेती करन बलैया । भरयो कंठ कहिसकत न मैया ॥
जसतसकै पुनि वचन उचारा । पूरेहु मोर मनोरथ सारा ॥
कर्म विवश पावहुँ कहुँ योनी । विधिगति होइ होनि अनहोनी ॥
लालन नात हमार तुम्हारा । यही रहै सर्वदा विचारा ॥
एवमस्तु बोले रघुनन्दन । सदा प्रणतजनपर अभिनंदन ॥
सर्वस पाय सुनैना रानी । गई अनत सिधि आगम जानी ॥
सखिनसहित तहँ सिद्धि सिधारी । विहँसत मृदु बीरी कर धारी ॥
दीन्ह्यो चारिहु बंधुन बीरा । कही रामसों पुनि निज पीरा ॥
लालन दीजै नेग हमारो । जो सरहजको नात विचारो ॥
प्रभु कह है अदेय कछु नाहीं । तुमसम कौन पात्र जगमाहीं ॥
नर्म गिरा तब सिद्धि उचारी । लाल अनोखी प्रीति पसारी ॥
लली लिवाय अवधपुर जाई । देहौ मोरि सुरति विसराई ॥

दोहा–तुम्हैं कौन विधि देखि हैं, हैहैं बिन जल मीन ।
देहु नेग वर मोहिं यह, जो जिय चहहु प्रवीन ॥

चौपाई ।

ताते ननँदि और ननदोई । इन नयननते विलग न होई ॥
प्रीति प्रतीति पेखि रघुराई । बोले मंद मंद मुसक्याई ॥

सदा भावनामें हम दोऊ । प्रगट होव जानी नहिं कोऊ ॥
सिद्धि सिद्धि होइ अभिलाषा । मृषा वचन में कबहुँ न भाषा ॥
जानी सिद्धि सिद्धि निज करनी । धन्य भाग्य बरनी वर बरनी ॥
पुनि निमिवंशिन सुता सुहाई । दूलह देखन हित जुरि आई ॥
जिन सारि सरहज सम्बन्धू । गारी देन बाँधि परबन्धू ॥
फटिक पूतरी धरि हरि आगे । वचन रचन करि कह अनुरागे ॥
यह कौशलपुर केरि कुमारी । मिथिलामहँ आई सुकुमारी ॥
तुमहिं देखि वश लाज न बोलति । नहिं आशयउरकीकछुखोलति॥
भगिनि मनाय लिवाय जाहु घर । करहु समोष त्रक साँवर वर ॥
विहँसि बैन बोले रघुराजू । हम जानी मिथिला नहिं लाजू ॥

दोहा—रघुकुलमें नहिं रीति यह, वरहि जु वरन कुमारि ।
देवदारके तुल्य तुम, यहि छवि तुव अनुहारि ॥

चौपाई ।

व्यंग्य वचन सुनि सब मनभाई । चितै परस्पर दिय मुसक्याई ॥
तामें चतुर सखी इक भाषी । कहहुँ लाल जो होहु न माषी ॥
होय जो देवनपति जगमाहीं । सो देवन गति चलै सदाहीं ॥
हम मानव मानव गति जानैं । देवी देव देवगति ठानैं ॥
लाल एक अति शोच हमारे । सुधरत राउर कृपा सुधारे ॥
दियो मोद मिथिलापुर आई । जो अलभ्य अजरन श्रुति गाई ॥
रहहु सदा नगरी यहि प्यारे । जीवन रहिहै तुमहिं निहारे ॥
तुम बिछोह रहि हैं किमि प्राना । देहु बताय उपाय सुजाना ॥
सखि उर आल वाल अति भारी । प्रेम बीजको बोय सुखारी ॥
दल अनुराग शाख सुखकेरी । फूल उछाह दरश फल ढेरी ॥
अस तरु मिथिलापुरहि लगाई । उचित न अवध पयान जनाई ॥
नेह पाश मन विहँग फँसाई । दरश अशन बिन दुख न दिखाई ॥

दोहा–सुनत सखिनके वचन प्रभु, कह्यो मंजु मुसक्याय ।
जो जाको जानत यथा, सो तिहि तस दरशाय ॥

चौपाई ।

अवधहुते मिथिलापुर प्यारो । सदा विलास निवास हमारो ॥
जबहिं सुरति करिहौ मनभाई । तबहिं मिलब तुमको हम आई ॥
मिथिला अवध दूर नहिं प्यारी । जो जिहि जियसों निकटविचारी॥
दूर रहे जस बाढ़त प्रीती । तस नहिं निकट रहे अस रीती ॥
यहि विधि करत परस्पर बाता । रामवचन सुनि सुख न समाता ॥
कही सिद्धिसों पुनि प्रभु बानी । होती बड़ि विलंब जिय जानी ॥
साँझ समय पितु दर्शन हेतू । जैहैं मिथिलाधिप मति सेतू ॥
ताते हमको देहु रजाई । पेखहिं पितु जनवासे जाई ॥
सिद्धि कही मुखते निकसै किमि । मीन दीन जलहीन होव तिमि ॥
प्रभु कह हम आउब पुनि काली । ह्वैहैं सकल भाँति खुशिआली ॥
रामहिं जात जानि तिहि जूना । सुन्यो सुनैना भो दुख दूना ॥
जनक पट्टमहिषी तहँ आई । भ्रातनसहित राम शिरनाई ॥

दोहा–जनवासेके जानकी, माँगी विदा विनीत ।
रामवचन सुनि सासु तहँ, भै अनन्दते रीत ॥

चौपाई ।

कहि न सकति कछुवचन विचारी । रहहु लालकी जाहु सिधारी ॥
दुविध जानि जानकि जननीको । प्रभु कह कालिहमिलन अतिनीको
हमरे पितुके देखन काजू । जैहैं साँझ जनक महराजू ॥
ताते मातु विदा अब दीजै । बालक जानि छोह अति कीजै ॥
भरे सुनैना नीर सुनैना । गद्गद कंठ कढ़त नहिं बैना ॥
जस तसकै बोली महरानी । करहु लाल भल जो मनमानी ॥
चारिहु बंधु वन्दि पद ताके । बाहर आये अतिसुख छाके ॥

लक्ष्मीनिधि नहँ साहिन विँदू । राम गवन लखि भये विँदू ॥
रघुनन्दन वन्दन करि भूप । चढ़ि तुरंगमहँ चले अनूप ॥
राम सखा सब आय जुहारे । हास विलासहि करत सिधारे ॥
निज निवास आये रघुराई । आनँदकंद आनँददाई ॥
पितहि प्रणाम कीन शिरनाई । दै आशिष बोल्यो नृपराई ॥

दोहा—सुनहु राम अभिराम अब, करहु जाय आराम ।
साँझ समय मिथिला नृपति, ऐहैं हमरे धाम ॥
सुनि पितु शासन बंधु युत, करि पुनि पितहि प्रणाम ।
गये राम आराम हित, जहँ अभिराम अराम ॥

चौपाई ।

शतानन्द उत जनक समीपा । जाय कह्यो सुनिये कुलदीपा ॥
शिष्टाचार हेत जनवासे । चलहु अवधपति पहँ साजि खासे ॥
भली कही अस कहि मिथिलेशा । बोलि सुदावन दियो निदेशा ॥
मंत्री सुहृद सुभट सरदारा । गज रथ पैदर अनुग सवारा ॥
सपदि सजग साजि आवहिं द्वारा । जनवासे को गवन हमारा ॥
सुनत सचिव शासन सुखपाई । लीन्ह्यो बोलि सैन्य समुदाई ॥
लक्ष्मीनिधि संयुत मिथिलेशा । बंधुवर्ग सब और सुवेशा ॥
विप्र वेदविद मुनि सँग लीन्हे । चले राम दर्शन मन दीन्हे ॥
द्वै धावन तहँ आसुहि धाये । अवधनाथ पहँ खबरि जनाये ॥
दरश हेत मिथिलापति आवत । सुनि दशरथ अतिशयसुखपावत ॥
कियो सकल दरबार तयारी । लियो बंधु सरदार हँकारी ॥
राम बंधु युत लियो बुलाई । नर भूषण आये सुखदाई ॥

दोहा—महाराज नवखण्डपति, बैठ्यो सहित समाज ।
राजमण्डली नखत सम, चन्द्र सरिस रघुराज ॥

छन्द गीतिका ।

उन जनक राज समाज संयुत लसत वीरन मण्डली ।
आयो मिलन अवधेशको नवखण्ड कीर्ति अखंडली ॥
प्रतिहार जय जय करत आगे शोर सरस सुहावनो ।
हल्ला परयो दशरत्थके ज्योंहीं सुवीर हटावनो ॥
मिथिलेश आवन जानि कौशलनाथ चारि कुमार लै ।
कछु लेन आगे चल्यो सकल उदार वर सरदार लै ॥
चलि द्वार देशहि मिल्यो मुदित महीपसों मंडित महाँ ।
मिथिलाधिराज प्रणाम कीन्ह्यो भुजनभरि मोदित तहाँ॥
सुर मुनि समान विलोकि समधी हर्षि फूलन वर्षहीं ।
नभपथ विमानन ठट्ट सोहहिं लखन अति उत्कर्षहीं ॥
तहँ राम चारिहु बंधु कीन प्रणाम जनक महीशको ।
मिलि मुदित मिथिलानाथ हाथ पसारि दीन अशीशको ॥
अवधेशको अभिवन्दि कुशध्वज मिल्यो कुँवरन जायकै।
तिहि राज कुँवर प्रणाम कीन सलाज शीश नवायकै॥
पुनि आय लक्ष्मीनिधि गह्यो पद कौशलेश नरेशको ।
अभिमतहि आशिष पाय मिल्यो दिनेश वंश दिनेशको॥
याहि विधि परस्पर मिलि सकल पुनि पूछि कुशल अनंदसों ।
अवधेश चले लिवाइ जनकहि पकरि कर अरविंदसों ॥
दोउ राज बैठे एक आसन दहिन दिशि मिथिलेश हैं।
बाँये सुकौशलराज राजत और वीर अशेश हैं ॥
आगे विराजत राम चारिहु बंधु लक्ष्मीनिधि युतै ।
दहिने कुशध्वज और निमिकुल वीर इक एकन उतै॥
यहिभाँति युगल समाज सोहति मनहुँ स्वर्ग सुरावली ।
रघुकुल सुनिमिकुल वीर बैठे वदहिं कवि विरुदावली ॥

बहु भाँति शिष्टाचार वचन उचारि अवध भुआरको ।
करजोरि बोल्यो जनक आपु समान यहि संसारको ॥
निमिवंश पावन कियो दीन्ह्यो सुयश मोहिं दराज है ।
किमि करौं प्रति उपकार गुणि उपकार आवति लाज है ॥
अवधेश बोल्यो सुनहु तुम मिथिलेश राजऋषीशहो ।
वर योग ज्ञान विराग भक्ति विवेक धर्म धुरीशहो ॥
तुम्हरे दरश हम भये सकुल पुनीत सकल प्रकारसों ।
महिमा तिहारी भूरि महिमा कौन करै उचारसों ॥
हम दियो तुमको सौंपि चारिहु कुँवर तजि छलछन्दको ।
लालन करन पालन करन तुम पिता देन अनंदको ॥
कौशल नगर मिथिला नगर के आप एक अधीश हौ ।
यामें न दूसरि बात कछु तुम विषय कर्म अनीशहौ ॥
दशरथ वचन सुनि सब सभासद साधु साधु उचारहीं ।
दशरथ सनेह विदेह लखि दृग वारि धारहि ढारहीं ॥
बोल्यो बहुरि निमिवंश भूषण काल्हि महल पधारिये ।
करिकै कृपा निज कुँवर युत मम भवन जूँठन डारिये ॥
कहि एवमस्तु भुआल आसुहि अतर पान मँगायकै ।
निज पाणि पंकज सों मुदित मिथिलेश अंग लगायकै ॥
बीरी दियो निज हाथसों एला लवंग समेतही ।
तैसहि कियो सत्कार अवध भुआर पुनि कुशकेतही ॥
पुनि राम निजकर कियो लक्ष्मीनिधि परम सत्कार है ।
माँगी विदा निज भवन गवन विदेह लहि सुखसार है ॥
पहुँचाय द्वारहि देश लौं अवधेश चलि मिथिलेशको ।
करि सविध वन्दन सहित नन्दन पाय मोद अशेशको ॥

दोहा—सिंहासन बैठ्यो बहुरि, संयुत चारि कुमार ।

वर्णन नेह विदेहको, देह न रह्यो सँभार ॥
उत वर्णन दशरथ सुयश, रामनेह गेह विदेह ।
राम शील शोभा निरखि, भये विदेह विदेह ॥
पुनि रामहि बंधुन सहित, बोल्यो कोशलराय ।
करि ब्यारी कीजै शयन, रैन बहुत नहिं जाय ॥
कोशलपति नन्दन हरषि, अभिवंदन पितु कीन ।
सानंदन उठि अशन करि, नयन नींद रस लीन ॥
सामंतन करिकै विदा, तज्यो राउ दरबार ।
शयन कियो निज अयनमें, आनि अनंद अपार ॥

चौपाई ।

रोज रैन दिन सब जनवासा । माच्यो हास विलास हुलासा ॥
नृत्य गीत वादन सब ठोरा । माचि रह्यो मंडित चहुँओरा ॥
जात राति दिन जानि न परही । महामोद मंगल जन भरहीं ॥
निशासिरानिभयोभिनुसारा । पूरव दिनकर किरणि पसारा ॥
बंदीजन गण द्वारहि आई । गावन लगे विरुद सुरलाई ॥
नौबति झरन लगी सब ठोरा । भये दुंदुभी के कल शोरा ॥
उठ्यो चक्रवर्ती महराजा । सुमिरि गरुड़गामी छवि छाजा ॥
प्रातकृत्य सब भूप निवाही । दीन्ह्यो दान समान उछाही ॥
रघुकुल तिलक उठे युतभाई । पूजन मज्जन करि सुख छाई ॥
सहित बंधु पितुके दरबारा । आये चारिहु राजकुमारा ॥
लक्ष्मीनिधिउतजनक पठाये । देन निमंत्रणके हित आये ॥
दशरथ निज गोदहि बैठाये । कह्यो लाल किहि काज सिधाये ॥

दोहा—जनक कुँवर बोल्यो विहँसि, पितु पठयो मुदमोय ।
भूपति भोजन रावरो, आजु महल महँ होय ॥

चौपाई ।

प्रेम मगन नृप गिरा उचारी । कहियो पितुहि प्रणाम हमारी ॥

पुनि कहियो अस मो सुखदाई । जो मोहिं राउर होय रजाई ॥
लक्ष्मीनिधि तहँ वंदन करिके । गयो महल मंडिन मुद भरिके ॥
कोशलनाथ निदेश सुहावन । दियो सुनाय पिता कहँ पावन ॥
सुधर सूपकारन तिहिं बारा । कीन्ह्यो जनक तुरंत हँकारा ॥
दियो निदेश रचहु ज्यवनारा । त्रिभुवन व्यंजन विविधप्रकारा ॥
सिगरे सूपकार सुनि शासन । लगे रचन ज्यवनार हुलासन ॥
इते करी अवधेश तयारी । महल पधारन हेतु सुखारी ॥
सजे सकल सुंदर रघुवंशी । जे त्रिभुवन महँ विदितप्रशंसी ॥
चारि कुमारन भूप बुलाये । चारि उतंग मतंग चढ़ाये ॥
नाम जासु शत्रुंजय नागा । जिहि विलोकि दिग्गज मद भागा ॥
तापर भयो भुवाल सवारा । जिमि ऐरावत शक्र उदारा ॥

दोहा—राम लषण दक्षिण दिशा, वाम भरत रिपु शाल ।
चारि चारु चामर चलत, सोहत छत्र विशाल ॥

चौपाई ।

सजी सैन्य सब बजे नगारे । फहरन लगे निशान अपारे ॥
प्रतीहार बोलहिं यक ओरा । मंजुल करहिं जाँगरे शोरा ॥
धूरि पूरि नभ भूरि उड़ानी । चली सैन्य नहिं जाय बखानी ॥
पुरवासी देखन सब धाये । देखि देखि धनि धनि मुख गाये ॥
मनहुँ आज आवत सुखचारी । सहित चारि लोकप सुखकारी ॥
देव समाज विनिंदक सैना । जोहत जन जाकि कढ़त न बैना ॥
जहँ तहँ कहहिं जनकपुर वासी । धन्य धन्य नृप अवध सवासी ॥
भई खबर महलन महँ जाई । आवत अवधनाथ नृपराई ॥
राज समाज साजि सब साजा । बैठरह्यो विदेह महराजा ॥
समधी आगम मनहिं विचारी । आगू लेन चल्यो पगु धारी ॥
द्वार देश अवधेश निहारी । कर गहि गज ते लियो उतारी ॥

किय प्रणाम परस्पर दोऊ । वंदे यथायोग्य सब कोऊ ॥

दोहा—दीनबंधु वंदे जनक, सहित बंधु युत बंधु ।
शीलसिंधुको राम सम, नागर नेह प्रबंधु ॥

चौपाई ।

सभा सदन दशरथ पगु धारे । सिंहासन यक अमल निहारे ॥
बैठे तापर भूपति सोई । दहिने दिशि दशरथ मुदमोई ॥
कनकासन विस्तर यक आगे । लघु राजासन ते नग लागे ॥
तापर राम बैठि लै भाई । लक्ष्मीनिधिहि लियो बैठाई ॥
दहिने दिशि रघुवंश विराजा । बाँये दिशिनिमिकुल छविछाजा ॥
लाग्यो होन तहाँ नट सारा । नचन लगीं अप्सरा अपारा ॥
लागे गान करन गंधर्वा । बाजे बजाय प्रमोदित सर्वा ॥
मिथिलापुरके नर्तक नाना । नचैं डगैं नहिं ताल बँधाना ॥
यद्यपि किन्नर अरु गंधर्वा । परम प्रवीण अप्सरा सर्वा ॥
लेहिं तीन ग्रामनकी ताना । नाच गानमहँ परम सुजाना ॥
तदपि विदेह गुणीजन देखी । लेहिं आपने ते वर लेखी ॥
तिनहिं सराहैं बारहिं बारा । अस नाहिं शक्रसदन नटसारा ॥

दोहा—राम दरश हित स्वर्ग तजि, चारण सिध गंधर्व ।
विद्याधर अरु अप्सरा, आये मिथिला सर्व ॥

चौपाई ।

जनक गुणी जन कला निहारी । तजि गुण गर्व रहे हियहारी ॥
अवध नरेशहु करी प्रशंसा । दियो भूरि धन नृप अवतंसा ॥
पै न विदेह गुणीजन लीन्हें । अनुचितजानि विनयबड़िकीन्हें ॥
पुनि मिथिलापति परमसुजाना । आन्यो अतरदान अरु पाना ॥
निज कर कंजन अतर लगायो । पुनि तांबूल सप्रेम खवायो ॥
पुनि उठि राम समीप सिधारी । अतर लगायो वदन निहारी ॥

किया रामकर जस सत्कारा। नैनहि आनन किया उदारा॥
निज कर पंकज पान खवायो। मर्कतमणि माला पहिरायो॥
पद्मराग मणिमाल विशाले दिया जनक नृप कोशलपाले॥
पितु रुख जानि विदेह कुमारा। किय सब रघुवंशिन व्यवहारा॥
अतर पान भूषण पट नाना। यथायोग्य सबही सन्माना॥
दशरथ सरिस बरातिन पूजे। सबके सकल मनोरथ पूजे॥

दोहा—शत शत गज स्यन्दन सहस, दश दश सहस तुरंग।
दियो चारिहूं कुँवरको, तदपि न पूरि उमंग॥
अयुत अश्व यक सहस गज, कनक सँवारे साज।
रत्नजालकी पालकी, दिय दशरथ निमि राज॥

चौपाई।

तिहि अवसर आयो कुशकेतू। उठी सभा युग भूप समेतू॥
करि वंदन भूपति शिरनाजे। कह्यो वचन पुनि भोजन काजे॥
रघुकुल तिलक विनयसुनि लीजे। भोजन हेत गवन अब कीजे।
सुनि कुशकेतु वचन अवधेशा। चल्यो कुँवर युत लै मिथिलेशा॥
चले संग सब रघुकुलवारे। भोजन करन भवन ज्यवनारे॥
भोजनभवन द्वारमहँ जाई। कनक पीठ बैठ्यो नृपराई॥
चारि चारु चामीकर चौकी। बैठे कुँवर सुहात समौकी॥
तहँ सबंधु मिथिलेश सिधारे। निजकर दशरथचरण पखारे॥
सो जल सींचि शीश महराजा। मान्यो अपनेको कृतकाजा॥
प्रभु समीप पुनि गयो विदेहू। सजल नयन रोमांचित देहू॥
भरि जल भाजन सुरभित नीरा। कनक थार आगे धरि धीरा॥
प्रभु पदपंकज भूप पखारत। पुलकि गातलोचन जल ढारत॥

दोहा—जे पदपद्म पखारि विधि, भरयो कमंडलु नीर।
सोइ शंकर निज शिर धरयो, मेट्यो भव भव पीर॥

चौपाई ।

जो जल परश करत यक बारा । तरे सगरसुर साठि हजारा ॥
कलिकल्मष वन विटप दवारी । दुरित दवानल सावन वारी ॥
अधम उधारन कारण सोई । जिहिप्रभावलखिकलिदियरोई ॥
सोपदकञ्ज सलिल मिथिलेशू । धरयोशीशमहँ मिट्योकलेशू ॥
जोरि पाणि बोल्यो मिथिलेशा । भयों धन्य मैं कुल पुर देशा ॥
जनक भाग्य सब देव सराहैं । इन सम आज कौन महि माहैं ॥
जो पदजल शिर धारण हेतू । योगी करत रहत नित नेतू ॥
सो पद सलिल सहजहीं पायो । कौन जनकसम जगमहँ जायो ॥
यहि विधि प्रभुपदकंज पखारी । भरत लषण रिपुहनहुँ हँकारी ॥
धोयो चरण चारु सबहीके । सींच्यो सलिल सदन सब नीके ॥
तहँ लक्ष्मीनिधि अरु कुशकेतू । रघुवंशिन पद धोवन हेतू ॥
लै चामीकर भाजन पानी । राम समान बरातिन जानी ॥

दोहा—धोये रघुवंशिन चरण, प्रेम प्रभाव पसारि ।
पुनि कौशलपति सों कह्यो, चलहुनाथ पगु धारि ॥

चौपाई ।

अवधनाथ कहँ सहित कुमारा । रघुवंशिन तिमि और अपारा ॥
भोजन मंदिर गये लिवाई । यथायोग्य सब कहँ बैठाई ॥
मृदुल पट पन्ननके प्यारे । बैठाये तिन राजकुमारे ॥
जड़ित चंद्रमणि चौकी चारू । बैठायो कौशल भर्तारू ॥
तिहि विधि रत्नासन यक रूरो । बैठ विदेह प्रेम परिपूरो ॥
लक्ष्मीनिधि बैठ्यो ढिग रामा । कुशध्वजबैठजनकके बामा ॥
एक ओर सब बैठ बराती । एक ओर सब लसैं घराती ॥
सूपकार तहँ अगणित आये । पारुस करन लगे सुख छाये ॥
रहे जिते तहँ रघुकुल वारे । दीन्हें भाजन कनक अपारे ॥

थार कटोरे कनक करोले । चिमचा प्याले परम अमोले ॥
विविधरत्न भाजनछविजाले। अंग धरे मुकताशलपाले ॥
निमिमणिभाजनपरमअनूपा । चारिहु वरन दिये अनुरूपा ॥
दोहा—यहिविधि भाजन धरि सकल. मृद महिन अनुराग।
मनरञ्जन व्यंजन विविध. परुसन लगे सुभाग ॥

चौपाई ।

परुस्यो ओदन विविध प्रकारा । मोती भात सुनाम उचारा ॥
केसरि भात नाम शशि भातू । कनकभातपुनिविमलविभातू ॥
रजत भात पुनि ओदन कुंदा । सुघरभातप्रद अमित अनंदा ॥
अरुण पीत अरु हरितहु वरणे । ओदन विविध कौन कवि वरणै ॥
दुदल प्रकार अनेकन आने । वर्ण वर्ण के स्वाद महाने ॥
माष मूँग अरु चना सुगंधू । सोंध सरस अतिशय कृत गंधू ॥
पुनि कृसरान्न प्रकार अपारे । अदरख लवण निंबु रस डारे ॥
अरुचि विभंजन रुचिर विरंजू । बहु कवाव कलिया मनरंजू ॥
पय दधि मधु चिचिनि रस बोरे । वट विधान तहँ धरे रमोरे ॥
बटी प्रकार विविध सुखदाई । विविध मसाले सुरभि सुहाई ॥
बनेविविध विधि शाक विधाना । विविध रंग नहिं जाय बखाना ॥
विविध भाँति की बनी मिठाई । सरस सवाद सुधा समनाई ॥
दोहा—फेनी खाझे घेवरो, पापर विविध प्रकार ।
गोरसकी वरसहकुली, सरस समोसे सार ॥

चौपाई ।

मन मोहन मोहनी मिठाई । वासोंधी खुरचन सुखदाई ॥
पयमोदक दधिमोदक केते । मधुमोदक बहु सिता समेते ॥
कुंडलिनीवर स्वाद सुहाई । लवण सिता करि भेद बनाई ॥
पायस चंद्र किरण सम सोहे । चन्द्राकार विविध वट जोहे ॥

दधि वटिका गोविंद वटिकाहीं । मूँग माष वटिका सरसाहीं ॥
तिमि कुष्मांडवटी सुखदाई । आरनालवट लवण रसाई ॥
मीठी लवण विविध विधि पूरी । तिमि माडव रोटी रस पूरी ॥
करगनिर्मित सहकुली महानी । बलन विरचित स्वादहि मानी ॥
तिमि नवनीत पूरिका लोनी । पूरी रजनवरण अरु सोनी ॥
विविध फलनके विविध अचारे । विविध फलनके रसमहँ डारे ॥
लेह्य पदारथ स्वाद विभेदा । चोष्य पदारथ हारक खेदा ॥
विविध भाँति भवन पकवाना । कौन करै कवि सकल बखाना ॥

दोहा—रुचिर स्वाद बहु रैतुवा, घृतके विविध विधान ।
अगर नगर परिमल कलित, केसरि वर्ण समान ॥

पान विविध विधि सरस सुहाये । द्राक्षारस मृगमदहि मिलाये ॥
तिमि नारंग रसहि अरुणारे । मधुरस मिश्रित मिश्री डारे ॥
श्वेत पीत केतकि जल केते । अरु मल्लिका सुरभि जल तेते ॥
बहु अंगूर पूर रस पूरे । तिमि उशीरके नीरहु रूरे ॥
बहुप्रकार घनसारहु वारी । चंदन वारि महासुखकारी ॥
रस रसालके विविध प्रकारा । जंबु निंबुके अंबु अपारा ॥
पके मिष्ट कदली फल जाती । पिंड खजूरादिक बहु भाँती ॥
पके बड़े बदरी फल खासे । तिमि सरदा फल स्वाद सुधासे ॥
कुमकुम जल कस्तूरी वारी । फल तरबूज दिये तिन डारी ॥
बने अनेक अन्न पकवाना । बरिल इडर हर स्वादु महाना ॥
तिमिरसाज कतरे बड़ कतरे । मूँग मुँगौरे मोटहु पतरे ॥
छत्र पत्र दधिवटी समेतू । साफ बाफ दधि स्वाद निकेतू ॥

दोहा—दधि पय मिश्रित प्योंसरी, सहित रसालन बौर ।
तिमि श्रीखंड अखंड रस, ठंढ स्वाद शिरमौर ॥

चौपाई

विविध पंच पकवान अपारे । दधि ओदन जे देवन प्यारे ॥
मकरपुंगल औ पुलिहोरा । चारि पानि चिचिनि रसबोरा ॥
हरिवल्लभ अरु रमाविलासे । रसकोरा खोरे रस खासे ॥
मधुर तिक्त कटु अम्ल कषाई । लवणमाहिन बहु वस्तु बनाई ॥
जे व्यञ्जन सुरपुरमहँ होवें । नाग नगर जे व्यञ्जन जोवें ॥
व्यञ्जन पाकशास्त्रमहँ जेते । सूपकार ल्याये सब तेते ॥
जगस्वामिनि सिय जिहि घर राजै । बैठे जगपति भोजन काजै ॥
तहँ व्यञ्जनके विविध विधाना । को अस कवि जो करै बखाना ॥
जिहिं विधि परुसे दशरथ काहीं । तिहिते न्यून बखानिन नाहीं ॥
सूपकार मिथिलापति केरे । परुसि पदारथ आसु घनेरे ॥
राम रूप अवलोकन लागे । कोटिन जन्म दुरित तनु भागे ॥
तहँ अवधेश आचमन कीन्हें । पुनि बलि वैश्व मंत्र पढ़ि दीन्हें ॥

दोहा—मनहिं अर्पि लक्ष्मीपतिहि, नारायण सुख भाषि ।
पंच कौल प्रथमहि लिये, मौन मादमति नाषि ॥
जैसी विधि दशरथ करी, तैसी करी विदेह ।
पुनि लागे भोजन करन, दोउ नृप सने सनेह ॥

चौपाई ।

राम बंधुयुत अति अनुरागे । भोजन करन लगे सुखपागे ॥
दधि चिउरा विदेह कर लीन्हें । कौशलपति आगे धरिदीन्हें ॥
कह्यो जोरि कर तिरहुत माहीं । याते और पदारथ नाहीं
और सकल रावरी विभूती । हमरे तौ इतनी करतूती ॥
हम नहिं तुमहिं जिवावन लायक । लेहु कृपा करि रविकुलनायक ॥
कह्यो अवधपति सुनिय विदेहू । जो करि कृपा आज तुम देहू ॥
सो सादर हम शिर धरि लेहीं । अस दाता पैहैं पुनि केहीं ॥

इनै रामसंयुत सब भाई। लक्ष्मीनिधिसों करत हँसाई॥
कहि न सकत गुरुजनके आगे। सैनहि हँसी करत रसपागे॥
लक्ष्मीनिधिसों सैन चलाई। कहहिं देहु मोदक युग ल्याई॥
देत रमानिधि उत्तर हेरे। ये मोदक कौशलपुर केरे॥
यहि विधि रचत अनेकन हासी। भोजन करत कुवर सुखरासी॥

दोहा—तहँ गारी गावन लगीं, मिथिलापुरकी नारि।
बाजन विविध बजायकै, सातहु सुरन सुधारि॥

गारी—हंसीगति छन्द।

सुनिये कौशलपति भूपा। तिहरो यश जगत अनूपा॥
धरणीमहँ रही सुधन्या। अजभूपतिकी यक कन्या॥
तिहि भूप स्वयंवर कीन्हा। यक मुनि कहँसो वरि लीन्हा
मुनिभवन गई चलि प्यारी। जननी पितु लाज विसारी
कोउ कही गाय पुनि गारी। तुव भाम होत तपधारी॥
रघुकुल चलि आई रीती। तिय लेहिं पुरुष कहँ जीती॥
हम सुने कान बहु बारा। तुव महिषिन मीत अपारा॥
निशिचरकी हरी कुमारी। तुम व्याह्यो काह विचारी॥
कैकयी तुम्हारी रानी। तेहि नाम तासु गति जानी॥
तुम बूढ़े अवधभुआला। किमि जनमें चारिहु लाला॥
हम तुव घरकी गति जानी। नहिं कौनहुँ लोक लुकानी॥
तिय खीर खाय सुत जनतीं। अपनो करतब सब मनतीं॥
दुइ लाल श्याम दुइ गोरे। यह होत महा भ्रम मोरे॥
ऐसिहु हम सुनी कहानी। जब पुरुष शक्ति भै हानी॥
तब मुनिते राखत बंसा। यह रघुकुल केरि प्रशंसा॥
अब सुनहु विनय अवधेशा। अति लजत कहत मिथिलेशा॥
जो होइ भगिनि घरमाहीं। ता देहु विदेह विवाहीं॥

हम सुनियत दशरथ राऊ । तुम्हरे कुल परम प्रभाऊ ॥
करि पान यज्ञ को तोरा । सुत जनै पुरुष मतिधीरा ॥
यहि विधि बहु गारी गामें । मिथिलापुर वाम ललामें ॥
तहँ कहैं नारि समुदाई । यह दीजै नेग मँगाई ॥
निमिकुलके कुँवर कुँवारे । सब किये भरोस तिहारे ॥
यक यक कन्या नृप दीजै । यह अनुपम यश जग लीजै ॥
अस सुनत मृदुल नृप गारी । मुसक्यात लहत सुख भारी ॥

दोहा–मंद मंद भोजन करत, सुनि सुनि गारी राय ।
कुँवर उतर कछु देतनाहिं, दोउ नृप निकट लजाय ॥

चौपाई ।

यहि विधि करि भोजन अवधेशा । करि आचमन तज्यो तिहि देशा ॥
उठे सकल निमि रघुकुलवारे । उठि कुमार कर चरण पखारे ॥
अचवन कियो भूप शिरताजा । तहँ आयो मिथिला महराजा ॥
निजकर बीरी नृपहि खवायो । लक्ष्मीनिधिरामहि पुनि ल्यायो ॥
अतर लगाय खवाये बीरा । यथायोग्य पाये सब बीरा ॥
माँगी विदा जान जनवासे । कह्यो वचन तब जनक हुलासे ॥
किहि विधि कहौं जान अवधेशा । जान कहत जिय होत कलेशा ॥
कौशल नायक वंदि विदेहू । रघुमन्यो वर्णत जनक सनेहू ॥
राम प्रणाम कीन मिथिलेशै । आशिष दियो विदेह अशेशै ॥
माँगि विदा गवने जनवासे । चढ़ि रघुनंदन स्यंदन खासे ॥
आजु चतुर्थी कर्म विधाना । ताकर रुब साजहु सामाना ॥
शतानंद कह जनक हुलासे । वर आनन पठयो जनवासे ॥
गौतम सुत चलि अवध भुवालै । कह्यो चतुर्थी कर्महि हालै ॥
राउ कह्यो मम गुरु पहँ जाहू । तिन युत कुँवरन कहँ लैजाहू ॥
गौतमसुत वसिष्ठ पहँ गयऊ । विश्वामित्रहि आनत भयऊ ॥

समाचार सब दियो सुनाई । सम्मत कीन्ह्यो दोउ मुनिराई ॥
दोहा—तहँ वसिष्ठ चारिहु कुँवर, लीन्हें आसु बुलाय ।
रत्न जालकी पालकी, दूलह लियेँ चढ़ाय ॥

चौपाई ।

गाधिसुवन अरु आपहु आसू । चढ़े एक रथ सहित हुलासू ॥
पंच सहस सँग राजकुमारा । छटे छबीले तुरँग सवारा ॥
अगणितपरिकरविविधनकीवा। चले संग बोलत जय जीवा ॥
चारि चारि चामर अति चारू । करें कुँवर शीशन संचारू ॥
राकाचन्द्र छत्र छवि छाजे । मुर्छल विविध विशाल विराजे ॥
यहि विधि चारिहु कुँवर सुहाये। जनक भूप रनिवासहिं आये ॥
दूलह आवनि सुनत सुनैना । कलश साजि कामिनी सुनैना ॥
पठई मंगल हित अगवानी । गावत चलीं सुमंगल बानी ॥
द्वार देशमहँ दूलह लीनी। देखि महाछवि आनँदभीनी ॥
मुकुट जड़ाउ रत्नके खासे । मुकुत झालरैं झलक विलासे ॥
तनु नारंग रंग वर बागे । कटि फेटे अति सुंदर लागे ॥
छहराति सुछवि छोर छ्वै छोनी। मुकुता मणि माणिकअतिलोनी॥
दोहा—परे परतलें कंध में, जगति जवाहिर ज्योति ।
हीरनकी हारावली, हिमकर किरण उदोति ॥

चौपाई ।

लसत कंठ पन्ननके कंठे। मनु बुध बहुत रूप धरि बैठे ॥
युगलयुगलश्रुतिजलजसुहाहीं। मनु उड़ श्वेत श्यामवन माहीं ॥
भुज अंगद कर कड़े विराजैं । मणि मंजीर कमलपद भ्राजैं ॥
चारिहु वर्ण अनूपम शोभा । देखि सकल नारिनमन लोभा ॥
लेहिं सकल दूलह बलिहारी । तिनुका तोरहिं पलक निवारी ॥
तहँ वसिष्ठकौशिक मुनिआये । शतानन्दहूं संग सिधाये ॥

औरहु विप्रवृन्द जुरि आये । पढ़न लगे स्वस्त्ययन सुहाये ॥
उतरि पालकीन वर चारी । अन्तःपुर कहँ चले सिधारी ॥
तिहि अवसर लक्ष्मीनिधि आयो । मिलि कुँवरन निज संग सिधायो ॥
मंगल गानकरतकलकामिनि । अर्घ्य देत गवनी गजगामिनि ॥
कौशिक शतानन्द गुरु ज्ञाने । मंगल पढ़त प्रवेशहिं कीने ॥
मंडप तर दूलह सब आये । मिली सिद्धि सखि मंडल भाये ॥

दोहा—चारि चारु आसन अमल, बैठे दूलह चार ।
शतानन्द कौशिकहु गुरु, लगे करावन चार ॥

चौपाई

गौरि गणप पूजन करवाये । पुनि चारिहु वर वधुन बुलाये ॥
वरन वधुन मज्जन करवाये । पट भूषण नवीन पहिराये ॥
पुनि बैठाये आसनमाहीं । सविधि कराये होम तहाँहीं ॥
सकल चार चौथी कर कीन्हें । अन्तःपुर वासिन सुख दीन्हें ॥
तिहि अवसर आई महरानी । अपर दया वपु मनु निरमानी ॥
कह्यो मुनिनसों वचन त्वराई । भयो अशन अतिकाल महाई ॥
चौथी कृत्य शीघ्र करवाई । भोजन करैं अवशि इन आई ॥
सूखि गये कुँवरन मुख कैसे । शरदातप लहि सरसिज जैसे ॥
मुनि कह कृत्य भई विधि लाई । अशन करावहु कुँवरन जाई ॥
लै रानी सब कुँवरन काहीं । अशन करायो भौनहिं माहीं ॥
करि भोजन रघुकुल कर चंदा । बैठे आय सभा सानंदा ॥
तहां सिद्धि लै सखिन सिधारी । दीन्ह्यो अतर पान सत्कारी ॥

दोहा—जोरि कह्यो कर राम सों, सुनहु प्राणपति लाल ।
हमरे कुलकी रीति यह, चलि आई सब काल ॥

चौपाई ।

चौथी छूटि जाति जिहि बारा । तिहि दिन हरदी होति अपारा ॥
दुलहिनि दूलह सरहज सारी । होरी खेलहिं रंगनडारी ॥

नाते मजहु आप हित होरी । यह सुख देखनकी रुचि मोरी ॥
सिद्धि वचन सुनिकै सुखदाई । बोले मंजु वचन रघुराई ॥
जो जो अंब तुम्हें मन भावै । सो सो करिय न कछु रहि जावै ॥
हमहिं कहौ तो बाहर जाई । होरी वसन पहिरि सब भाई ॥
नर्म सखन लै अपने संगा । आवैं करन फागु रस रंगा ॥
कही सिद्धि यह भली विचारी। सजि आवहु करि फागु तयारी॥
हम देखब बल सकल तिहारे। जैहौ जनवासे हठि हारे ॥
उठे राम सब बंधु समेतू । बाहर आये रघुकुलकेतू ॥
भवन जाय सब सखन बुलाये। होरी होन हाल सब गाये ॥
नर्म सखा सुनि भरे उमंगा । सजे श्वेत अंबर सब अंगा ॥

दोहा–जनक पठाये विविध विधि, भूषण वसन सपेत ।
यथायोग्य बखशत भये, सब कहँ रघुकुलकेत ॥

सवैया ।

मंडित हीरन ते वर क्रीट, झलाझल झालरैं मोतिन केरी ।
त्यौं झलकैं हलकैं हिय हीरन, हार हिमाचलकी छवि फेरी ॥
राजतके जरतारी बने, वर बागे चमाचम चारुता ढेरी ।
श्रीरघुराजकी माधुरी मूरति, काको हियो हरि जात न हेरी ॥१॥
फेटे कसे कटि में चटकीले, मजीले महीप लला हैं अनोखे ॥
चौलड़े त्यौं मुकुताहल माल, सुतारावली छविछीनेअदोखे॥
खेलन फागु सजे रघुराज, सुराज कुमार महा चित चोखे ।
अंगनि अंग उमंग भरे, जिन जोहत होत अनङ्ग के धोखे ॥२॥

दोहा–होरी मंदिर में उतै, सिद्धि सजाई साज ।
लै सीता सँग गवन किय, संयुत सखिनसमाज ॥

सवैया ।

परिचारिनी चारि कही चलिकै सब खेलन होरी तयारी भई ।

पग धारिये फागु निवास लला रघुराइये नो निपुणाई नई ॥
सुनती नट नागरि गर्व की नट नागरी ठाढ़ी उछाह छई ।
रघुराज जू ठाढ़ इतै चकितै विन हारही हार क्यों मानि लई १
सो सहचारिनी की सुनि बानि हियो हरि हरि हरे मुसक्याई ।
कोई सुजान सखा कह्यो नर्म कहूँ रघुवंशिन हारि न पाई ॥
तू कहै कैसे वृथा अरी बैन इतै पिचकारिन की झरि लाई ।
है रघुराज सखा विजयी विजय पायके जैहैं निसान बजाई २॥

दोहा—सो सुनिकै सिय सहचरी, चली चतुर मुसक्याय ।
खबरि जनाई सिद्धिको, आवत राम सभाय ॥

सवैया ।

नर्म सखान समाज समेत चले रघुनन्दन बंधुन लीने ।
फागुको मंदिर चंदिर चारु चितै अति चौड़ासुचौकी प्रवीने ॥
ठाढ़ भये यक ओर सखान लै श्रीरघुराज महा मुद भीने ॥
शारद बारिद मंडलमें मनु द्वै रवि द्वै शशि भासहि कीने १॥
देखी सखी सब राजकिशोरन चित्तके चोरन सों अनुरागी ।
बाज बजावन लागीं अनेकन गावन लागीं धमारि सुरागी॥
आये लला अब आये लला अबजाननपावैं सखान लैभागी ।
श्रीरघुराजको धाय धरैं झुकिझारिकैझोरिनसंगहिलागीं २
तहँ गोरी कही कढ़िकैन रुकोगी जबलगिआपको पाइहौंना
मुहिंआनिकिशोरीकी कै बरजोरी बनाइहौंछोरी बचाइहौंना
तुमचोरी करी चित की रघुराजलला जो कहूं भगि जाइहौना
झिलिझारिकैझोरी जुमोरौं मुखै तौसियासखी फेरि कहाइहौंना
श्रीरघुराज सखानि समाज ते कोई सखा कढ़ि बैन उचारो
देख्यो नहीं रघुवंशिनको अबै होरीके हल्ले न गल्ले पसारो ।
कौशलनाथकी सौंह किये कहौं को अस जो हमसेनहिं हारो।

गाय बजायके आइ बजाय मचायके फागुन पाइहौ पारो ४॥
यतनो सुनिके सिगरी सखियां भरि कंचन की पिचकारिन को।
युगुलालनकी उठी मूठि चहूँकिन गाय धमारिन गारिनको
धन धाइ धरो धग भापन या रघुराज पै दै करतारिन को ।
हरदी की करी जरदीललकारि लख्यो मिथिलापुर नारिनको ५

कवित्त घनाक्षरी ।

आईसजि सीता श्वेत भूषण वसन श्वेत,
संगकी सहेली श्वेत श्वेत सुखमाछई ।
श्वेत पाग श्वेत बागे श्वेत कटि फेटे लागे,
रघुराज प्यारो आयो फागु के उछाहई ॥
होरीहोरी करिललकारि हल्ला कियो हरि,
चली पिचकारी त्यों अबीरकी अँध्यारई ।
लाललाललालीलाल सखालालसखीलाल,
अंग लाल रंग लाल लालमयी ह्वैगई ॥

रूप घनाक्षरी ।

मणि अँगनाई मध्य मंडित मची है फागु,
राजती रँगीली रहीं लीला रस लूटि लूटि ।
कुंकुमानि कुंकुम गुलाल बगसार मेले,
कंचन कलश नहवावैं रंग जूटि जूटि ॥
रघुराज माणिक प्रवाल हीर मोति मंजु,
छहरै क्षमामें छाय छोवनसे छूटि छूटि ।
सुंदरी सुकन्नरी सी उर्वशी परीसी हेम,
वल्लरीसी व्योमते परी हैं मनौ टूटि टूटि ॥

घनाक्षरी ।

मुरजमृदंगढोल बाँसुरीसुरीलीबाजैं गायरहींगानवारी तानकेतरेरीमें ।

ह्वैगईझिलाझिलीमिल्यामिलीमचीसम्बानचमकचहूँघाभईबादलेकीदरमें ।
सहजा सहजसहजोरीकोरघुराज देख्योजोनवनवन वनावनाचितरोमें ॥
धोखधोखधमिधसिधायकैसुगोरीधुरिधरच्योरघुबीरकेअबीरकीअँधेरमें ।
वारिकेअनेकन अनंग छबिरघुराज आनँदउमंगनमोअंगन जमाकिरो ॥
एककरकंजसोंकरविकटिफेंटाचट दूजेकरकंजकरकरिकैं नमाकिरो ।
कौशलेशकुँवरकहूँनजानेंपैहौंभागि भागमानिघालिबोलिदपमोंदुमाकिरो ॥
छायकैछटाकोश्यामघनकीघटामेंमनोचरचिचारिचारुचमक [illegible]

दोहा–सहजा सहजोरी करी, होरीमें ललकारि ।
बरजोरी रोरी मलत, राम छुटे झिझकारि ॥
चलत अनत अस मुख भनति, एहो राज किशोर ।
करसों छूटे का भयो, छुटे न चित चितचोर ॥

कवित्त घनाक्षरी ।

छूटेसहजासेरामदेखिकैसिधारीसिद्धिसियतेसहितलैकेसखिनसमाजहैं ।
इतैधायेचारौबंधुसखनकेवृन्दलीन्हें छायगोगुलालनभमंडलदराजहैं ॥
बादलेकीह्वैगईवसुंधराविराजमान आसमानभरीगानबाजनअवाजहैं ।
सखागहि लैवैंसखीसखीगहिलैवैंसखा भ्रातनसमेनझूलोफिरैरघुराजहैं ३॥
राच्योमहाफागुरँगकेसरिकोकीचमाच्योअगरतगरधूरिपूरीचहुँओरीहैं ।
छहरैंसुक्षोनीसुममल्लिकाधमिल्लनतें चमकैंसुचामीकरवल्लरीसीगोरीहैं ॥
चलैंपिचकारीत्योंसुगन्धभरीवारीवैस सखनसखीनबराबरबरजोरीहैं ।
फटिकफरशखेलैंफागुअनुरागभरे कौशलकिशोरमिथिलेशकीकिशोरीहैं २॥
साहतगुलालरोरीबादलकीमूठमारिलालकेसखनमुखकहूँझिलीआवैहैं ।
काश्मीररंगनचलायपिचकारीचारु राजदुलहेटेकसिफेटेवहटावैहैं ॥
चातुरीचमकिचपलासीकरिचातुरीकोआतुरीसोंपकरिसखानलयजावैहैं ।
नारीकोबनायबेषबेंदीदैकै छोरिकेश रघुराजकौशलेशकुँवरै दिखावैहैं ३॥
अवध किशोरचितचोरचारौओरधायरोरीझोरीझोरमारिसखिनसमाजको ।

घरिघरिगोरिनकोगोरिगोरिकुंडनमें घोरिघोरिरंगनवजायवेशराजको ॥
हँसिहँसिहुल्लसिहुल्लसिहारिहारिकहि हेलिनहरायहारिहरापदराजको ।
ममालिगुलालकरिलालसुखमालछीनिबालनकोछोड़तेदिखायरघुराजको
सियेनसमनसिद्धिहेरिहारिहेलिनकोहारीहारीकहिकियोहल्लाचहुँओरते ।
मारिपिचकारिनउड़ायकगुलाललालबारलेन्ह्याचागलालरालमालजोरन ॥
सिद्धिनृसहर्षकरिवर्षकुसुमावलीकोअतिउतकर्षकह्योकौशलकिशोरते ।
रघुराजआजलालबालकोबनायवेषहाहाकोखवायछोड़िहौंजूयंहिठोरते ॥ ५
सिद्धिपाणिपंकजपकरिकररघुराजललपणललाकोगह्योसियवरजोरी सो ।
मांडवीत्योंउर्मिलागह्योहैशत्रुशालनृकोखड़ीश्रुतिकीरतिविचारिनाहिंजोरीसो ॥
सहजाविशाखाचन्द्रकलाचटकीलीचट भग्नभुजानगहिलीन्ह्योंनहिंचोरीसो ।
चमकिचलीतेचारिकुँवरलिवायगायवनकवनाईहैंविशेषिवरगोरी सो ६
एक एककसखनकोढ़ैसखीगह्योधायलैचलींसुचायकरिगारिसुखगायगाय ।
रामचारेभाइनकोसखनसहाइनकोकरनलुगाइनकोवेषमनमाहँल्याय ॥
चामीकरचौकिनमेंचारोचितचोरनकोसिद्धिबैठायनयनकज्जलदियोलगाय ।
फवितप्रफुल्लितसुशारदसरोजनमें बैठीरघुराजमनौअलिअवलीहैआय ७
रघुलालभालमेंदियोहैटिकुलीविशालमानोकियोअंकमेंमयंकलैअवनिजात ।
घेरदारघाँघरोनवीनजरतारीसारी रचीरुचिकंचुकीदिखायमुखमुसक्यात
दामिनीमीदामिनीसुभामिनीसँवारिशीश कहतीकुँवरहोतकामिनीकेक्योंलजात ।
तबलोंनछूटोगेछबीलेछैलरघुराजजबलोंगहौगेनहींसीयपदजलजात॥८॥

सोरठा—प्रभु बोले मुसकाय, जानि परी यह रीति इत ।
सुता व्याहि सुखछाय, बहुरि पुरुषको तिय रचहु ॥

चौपाई ।

यहि विधि फागुसरससुखभयऊ । हास विलास हुलासहि छयऊ ॥
माँगि विदा प्रभु शिविर सिधाये । सखन बंधुयुत राम नहाये ॥
बदलि वसन पितु सभा सिधारे । सुखी भये नृपकुँवर निहारे ॥

पितुहि बंदि बैठे सब भाई । अस्ताचलहि गये दिनराई ॥
कह्यो भूप तहँ अति सुखछाई । संध्या करहु जाय सब भाई ॥
परयो परिश्रम खेलत हरदी । मुखमें देखि परत है जरदी ॥
करहु अशन करि शयन सकारे । बहुत दिशा बीते नहिंप्यारे ॥
पितु शासन सुनि उठे कुमारे । संध्या कर्म सकल निरधारे ॥
लखन बंधु लै किये बियारी । किये शयन निजअयनसिधारी ॥
जानि समय तजि सभा नरेशा । कियोशयनशुचि सुमिरिरमेशा ॥
किये शयन सब सुखीबराती । बरणिजनक कीरति न सिराती ॥
नहिं बिसंचकर खोजहु खोजे । मत्त महा मोदहि जन मोजे ॥

दोहा–रघुपति व्याह उछाहमें, बीते बहु दिन रैन ।
जानि परे क्षण एक सम, पाय महा चित चैन ॥

चौपाई ।

नितप्रति कुँवर जाहिं रनिवासा । होत महासुख हास बिलासा ॥
नितप्रति मिथिलानगर भुवारा । करहिं नवीन राज सत्कारा ॥
भूल्यो अवध बरातिन काहीं । कहहिं जाब मिथिलाते नाहीं ॥
यहि विधि बीति गयो बहु काला । नितनित नवनवमोद बिशाला ॥
को कहि सकै समग्र उछाहू । इतै जनक उत कोशलनाहू ॥
जहँ त्रिभुवनपति दूलह भयऊ । दुलहिन रमा महासुख चयऊ ॥
शेष शारदा सकैं न बरणी । तहँ मम कौन बुद्धिकी करणी ॥
एक समय वसिष्ठ निज धामा । बैठे रहे सुमिरि हिय रामा ॥
विश्वामित्र तहाँ चलि आये । उठि वसिष्ठ आसन बैठाये ॥
गाधिसुवन कह मंजुल बानी । सुनहु ब्रह्मनन्दन मति खानी ॥
बहुत दिवस मिथिला महँ बीते । उभै राज नहिं सुखसों रीते ॥
अब हम गमनब शैल हिमालै । कारज सकल सिद्धि यहि कालै ॥

दोहा–बीति गयो बहु काल मुनि, मिथिला बसे बरात ।

उचित अवधको गवन अब, सो तुम साधहु तात ॥
उभैमहीपति मोदरस, मगन भये यहि काल ।
जानत नाहिं वासर वितत, नित नव हर्ष विशाल ॥

चौपाई ।

सुनत गाधिसुतकी वर वानी । बोले ब्रह्मतनय विज्ञानी ॥
सत्य कह्यो कौशिक अवदाता । चलब अवध अब उचित बराता ॥
कौशल्यादिक जे महरानी । लिखहिं पत्रिका मुहिं हुलसानी ॥
आसु बरात अवधपुर आवै । दुलहिन दरश चित्त ललचावै ॥
ताते शतानन्द बुलवाई । हम अब जनन करब मुनिराई ॥
अस कहि युगल शिष्य पठवाये । शतानन्द कहँ आसु बुलाये ॥
उठि वसिष्ट कहँ मिलि मुनिराई । कौशिक बार बार शिरनाई ॥
माँगि विदा दशरथ पहँ आयो । भूपति चलि आगे शिरनायो ॥
दै आसन पूछी कुशलाई । गाधिसुवन बोल्यो सुखपाई ॥
बहुत काल बीत्यो महराजा । पाये मोद सिद्धि सब काजा ॥
चलन चहौं अब हिमगिरि काहीं । इहां रहे सुधरत तप नाहीं ॥
जब करिहौ सुमिरन नृप मोरा । तब देखिहौ मोहिं तिहि ठोरा ॥

दोहा—नरपति तुम्हरे नेह वश, बनत न हमसों जात ।
है न सकत कछु भजन तप, रहत बनत नहिं तात ॥

चौपाई ।

सुनि कौशिकके वचन सुहाये । अवध नरेश अतिहि बिलखाये ॥
सजल नयन गद्गद कह वानी । नाथ देतदुख तव बिलगानी ॥
कहि न सकौं कछु जस मन होई । सो करिये मुहिं अनुचर जोई ॥
अस कहि नृप षोडश उपचारा । करि मुनि कर पूजनसत्कारा ॥
रामहि बंधुन सहित बुलाई । दीन्हीं मुनिकी विदा सुनाई ॥
गुरुको गवन सुनत रघुराई । चारिहु बंधु चरण लपटाई ॥

मुनि कहँ करि प्रणाम बहु बारा। जोरि जलजकर बचन उचारा॥
अब न जाहु अवध पगु धारा। पुनि गमनब मन जहाँ तुम्हारा॥
मुनि कह अब कीजे सो काजा। जिहि दिन प्रगट भये रघुराजा॥
जाहु अवध जब मोहिं बुलैहो। तहाँ अवशि मम दरशन पैहो॥
अस कहि बार बार मिलि रामै। आशिष दियो पूरि मनकामै॥
मिल्यो महीपति कहँ मुनिराई। पुनि चारिहु बंधुन हिय लाई॥
दोहा—कौशिक चल्यो हिमाचलय, लोचन वारि बहाय।
फिर्‌यो कुमारन सहित नृप, कछुक दूरि पहुँचाय॥

चौपाई।

गयो विदेह गेह मुनिराई। सुनि मिथिलेश गह्यो पद आई॥
माँगी विदा मुनीश महीपे। जब सुमिरब तब रहब समीपे॥
विमनस जनक कहत नहिं बानी। बुद्धि सनेह विवश बिलखानी॥
गद्गद गर भरि नयननि नीरा। कह्यो करहु जो मन मतिधीरा॥
कौशिक गयो बहुरि रनिवासै। जोहि जानकी पाय हुलासै॥
माँगि विदा मुनि दई अशीशा। पुनि आयो जहँ जनक महीशा॥
लै इकांतमहँ मुनि अस भाख्यो। भूप बरात बहुत दिन राख्यो॥
विदा करहु अब कौशलनाथै। दूलह दुलहिन करि यक साथै॥
जानहुँ सकल भूप विज्ञानी। कहँ लगि तुमसों कहौं बखानी॥
जनक कह्यो जस होति रजाई। सोइ कीन्हें मुनि मोरि भलाई॥
मुनिजबआशिषवचन उचार्‌यो। जनकनयनजल चरण पखार्‌यो॥
चल्यो मुनीश नयन भरि नीरा। गयो महीप महल धरि धीरा॥
दोहा—सुमिरत सीताराम पद, दशरथ जनक सनेह।
वर्णत व्याह उछाह सुख, हिमगिरि वस्यो अछेह॥

इति सिद्धिश्रीसाम्राज्य महाराजाधिराज श्रीमहाराजा बहादुर श्रीकृष्णचन्द्र कृपापात्राऽधिकारि श्रीरघुराजसिंहजू देव जी. सी. एस. आई. कृते रामस्वयंवरे विवाहप्रकरणे विंशति प्रबन्धः॥ २०॥

दोहा—अब वरणों कछु करुणरस, सियको अवध पयान ।
मिले आय भृगुनाथ मग, तासु विवाद बखान ॥
तुलसिदास प्रभु असलिख्यो, धनुष भंगके अन्त ।
परशुराम अरु राम को, भयो विवाद अनंत ॥
श्रीमद्रामायण विमल, आदि सुकविकृत जोय ।
रामस्वयंवर ग्रन्थ में, तासु रीति सब होय ॥
कहुँ कहुँ गोस्वामी रचित, रामायणकी रीति ।
सैली मुख्य विचारिये, वाल्मीकि कृत नीति ॥
ताते मिथिला नगर ते, अवधै चली बरात ।
तब मारगमें मिलत भे, भृगुपति कोप अघात ॥
ताते मैं कहिहौं कछुक, राम राम संवाद ।
रामायणकी रीति सों, दायक अति अहलाद ॥
वर्णत नेकहु करुण रस, मोहिं न होत उछाह ।
पै प्रसंग वश कहत कछु, सीय विदा दुख माह ॥

छन्द चौबोला ।

विश्वामित्र गये जब हिमगिरि माँगि विदा दोउ राजै ।
मुनि वसिष्ठ तब लगे विचारन कौन उचित अब काजै ॥
आयो शतानन्द तिहि अवसर मुनि वसिष्ठ ढिग माहीं ।
अति सत्कार सहितदै आसन कुशल पूंछि तिन काहीं ॥
गौतम सुतसों कह्यो वचन पुनि शतानन्द तुम ज्ञाता ।
बीत्यो बहुत काल मिथिलापुर निवसे विशद बराता ॥
दशरथसने विदेह नेह अति दीन्हें गेह भुलाई ।
जनक विदेह देहकी सुधि नहिं नित आनँद अधिकाई ॥
मिथिलावासी अवध निवासी आनँद मगन अघाता ।
करै विदाको होय विदाको कहै कौन यह बाता ॥

कौशल्या कैकयी सुमित्रा जे दशरथ महरानी।
बार बार लिखतीं पाती मुहिं दुलहिन लखन लुभानी॥
सकल भूमि मंडलको कारज करै कौन यहि काला।
दशरथ बसत नगर मिथिला महँ होत प्रजा बिहाला॥
ताते जाय जनक समुझावहु करै कुमारि बिदाई।
उचित न अब रावव बरात को चलें अवध नृपराई॥
हम समुझैहहिं कोशल भूप तुम विदेह समुझाओ।
अब चारिहु नववधू बिदा कर सुंदर सुदिन बनाओ॥
सुनि वसिष्ठके वचन यथोचित शतानन्द मुनि भाख्यो।
कहत सुनत यह वचन दुसह पै उचित विचारहि राख्यो॥
हम अब जाय बुझाय जनकको करिहैं बिदा नयारी।
तुम समुझावहु अवधनाथ को होहिं न जात कुमारी॥
तब मुनि गौतम सुवन बिदा करि दशरथ निकट सिधार्‌यो।
बैठि इकांत शांतरस संयुत बैन अचैन उचार्‌यो॥
अवध तजे बीते अनेक दिन मिथिला बसत तुम्हारे।
सुवन विवाह भये मंगल युत श्रीपति विघ्न निवारे॥
भूमि खंड नव को अखंड कारज नरेश तुव हाथा।
ताते अब पगु धारि अवध को कीजै प्रजा सनाथा॥
पुत्रवधू अरु पुत्रन को लै चलहु अवध नरनाहू।
सहित पट्टरानी परछन करि लेहु अपूरव लाहू॥
सुनि वसिष्ठ के वचन चक्रवर्ती नरेश मुख गायो।
सकल सत्य जो नाथ कह्यौ तुम हमरहु मन यह आयो॥
पै विदेह के नेह विवश नहिं माँगत बनत बिदाई।
प्रीतिरीति करि जीतलियोमुहिं बिछुरन अतिदुखदाई॥
काह करौं किहि भाँति कहौं मुख बिदाहोन किमि जाऊं।

कैसे मरम सनेह विरस करि अति अनरस उपजाऊं ॥
जो विदेह करिके मन साहस सुता बिदा करि देवैं ।
तो हम कुलवधू पुत्रन लै अवध नगर चलि देवैं ॥
यतना कहत भूप के आँखिन आँसुन वहे पनारे ।
मुनिवर कह्यो विदेह योग यहि तुम जिहि भाँति उचारे ॥
पै न विदेह सनेह रावरो कवहुँ भंग पथ पैहै ।
तुम एहो मिथिला बहुबारहिं सो कोशल पुर जैहै ॥
रीति सनातन व्याह अंत में होती सुता बिदाई ।
मर्यादा ते अधिक रहे इत लहि सत्कार महाई ॥
महरानी कौशल्यादिक तुव लिखती बारहिं बारा ।
दुलहिन दूलह देखब किहि दिन लागी ललक अपारा ॥
ताते चलहु अवधपुर भूपति अब परछन सुख लूटो ।
पुत्रवधू अरु पुत्र राखि घर और काज महँ जूटो ॥

दोहा—सुनि गुरुकी वाणी विमल, कह्यो भूप करजोरि ।
जौन होय रुचिरावरो, सोइ अभिलाषा मोरि ॥

छन्द चौबोला ।

शतानंद उत जाय जनकपहँ लै इकांत मिथिलेशै ।
कह्यो शांत अतिदांत वचनवर सहित ज्ञान उपदेशै ॥
महाराज उतरे प्रणसागर अवधनाथ कहँ आनी ।
चारि कुमारन चारि कुमारी व्याहि दई छविखानी ॥
मंगलमय सब भयो विघ्न विन व्याह उछाह अपारा ।
करत बरातहि विते वहुत दिन नित नित नव सत्कारा ॥
यदपि विदेह सनेह रावरो कौशलपतिसों भारी ।
नित नित देखत नहिं अघात दृग रामरूप मनहारी ॥
अधिक प्रमाणहुँ ते बरात अब राख्यो इत मिथिलेशू ।

चलन चहत अब अवध अवधपति सकुचन कहत कलेशू ॥
तातें सुदिवस पूछि कुँवारिन विदा करो महराजा ।
अब इतनैं अवशिष्ट आपको सकल सजावहु साजा ॥
पुनि दुहितनको आनि लेव इत कुँवर लिवावन ऐहैं ।
पूरण शशि मुख लखि रघुपति को हम सब अनिमुख पैहैं ॥
अब नहिं राखब उचित बहुत दिन मिथिला नगर बराना ।
करहु विदा शुभ पूँछि मुहूरत तुम त्रिकालके ज्ञाना ॥
शतानन्दके वचन सुनत नृप राम वियोग विचारी ।
रह्यो दंड द्वै कछुक कह्यो मुख नयन बहावत वारी ॥
जस तस कै धरि धीरज नृप उर ह्वै आनँद सों छूँछो ।
कह्यो वचन सुनि करहु यथा मन मोहिं काह अब पूँछो ॥
अनुचित कछु न विवाह अन्त में होती सुता विदाई ।
नहिं नववधू वसति नैहरमें रीति सदा चलि आई ॥
राम रूप दर्शन की बिछुरन दुसह दुखद मुहिं होई ।
मैं विदेह दशरथ सनेह महँ कियो देह सुख जोई ॥
किहि विधि सुख कहि जाय महामुनि राम इतै ते जाहीं ।
सुता विदा करि देहु भले तुम रघुपति गवनैं नाहीं ॥
प्रेम विवश मिथिलेश जानि मुनि पुनि पुनि बहु समुझायो ।
देवयानि अरु देवहुती मनु कहि इतिहास सुनायो ॥
कह मिथिलेश करहु जस भावै शतानन्द तुम ज्ञाता ।
सुनि भूपति के वचन उठ्यो मुनि बोल्यो सचिव विख्याता ॥
सचिव सुदावन आदि गये तहँ दिय शासन मुनिराई ।
वधुन विदा की साज सजावहु काल्हि सुदिन सुखदाई ॥
चारि नालकी रत्न जालकी दासी दास अनेका ।
वसन अमोल विविध विधि भूषण आनहु सहित विवेका ॥

सजे गयंद कनक स्यंदन बहु बाजिनवृन्द मँगायो ।
शिविर सुशारद वारिदके सम बाहर खड़े करायो ॥
और सकल बहु मोल वस्तु रचि शकटन सपदि भरायो ।
न्यून कौनहूं वस्तु होय नहिं गणकन बेगि बुलायो ॥
शतानंद को शासन सुनिकै सचिव सकल सुख पाये ।
जिहि विधि दियो निदेश महामुनि तिहि विधि साज सजाये ॥
गौतम सुवन कह्यो गणकन सों शोधिय सुदिन बिदाको ।
रचहु लग्न अनुकूल सकल ग्रह हरें बधूनि व्यथा को ॥
कहे सकल दैवज्ञ शोधि शुभ घरी कालिह सुखदाई ।
युग युग जियें युगल जोरी मुनि ऐसी लग्न बनाई ॥
अन्तःपुरहि जाय गौतम सुत विदा खबरि खुलि गाई ।
हहरि उठ्यो रनिवास सकल सुनि जनु सुख दियो गमाई ॥
रानि सुनैना बिलखि कह्यो तब अब न जाय बराता ।
सुखसमुद्र कुंभज कस होवहु समय सुखद उतपाता ॥
दोहा—फैलत फैलत फैलिगै, खबरि नगर चहुँ ओर ।
करत कालिह भूपति बिदा, चलन चहत चितचोर ॥

छन्द चौबोला ।

पुरजन सकल नारि नर नितप्रति वर जोहत जनवासे ।
जुरिजुरि जात जोहि जगपति छवि नहिं अघात छवि प्यासे ॥
ते सुख खबरि बरातिनके सुनि अवध चलत अवधेशा ।
सूखन चहत प्रमोदपयोनिधि जाने मानि कलेशा ॥
सीय स्वभाव शील गुण सुधि करि बिलखहिं पुर नर नारी ।
राम रूप वर्णत अघात नहिं बहत बिलोचन वारी ॥
नहिं सिय सम धन्या कन्या जग वर नहिं राम समाना ।
पूरब पुण्य लहे लोचन फल सो सुख सकल पराना ॥

हाय बहुरि कब लखब राम छबि कब मिथिलेश कुमारी ।
कब कोशलपति सकल साहिबी जो इन नयन निहारी ॥
बसी बरात यदपि बहु बासर पाये मुद मन माने ।
पै अभिराम राम अवलोकन नयन अंब न अघाने ॥
हे विधि बसे बरात बहुत दिन सीय बिदा नहिं होई ।
भयो सकल स्वप्नो कैसो सुख बमव कौन सुख जोई ॥
रेविधि परमानन्द दिखाय चहत बिलगावन काहे ।
नाहि दाया आवति तेरे उर को पहे जिय दाहे ॥
यहि विधि कहहिं विकलपुरजन सब कोउ तिनमहँ समुझावें ।
आनहिं आशु सीय मिथिलापुर राम लिवावन आवें ॥
युग युग जीवें सुखमासीवें राम जानकी जोरी ।
नहिं हमार अस भाग्य आनकर नित नव प्रीति अथोरी ॥
राम सदा मिथिलापुर ऐहैं जनक अवधपुर जैहैं ।
दिन दिन दून दून सुख देखब सुर समता नहिं पैहें ॥
अस कहि विविध सभ्य समुझावहिं पै न धरहिं कोउ धीरा ।
मिलहिं बरातिनसों चलि पुरजन नयन बहावत नीरा ॥
यथा जनकपुरवासिनको दुख अवध निवासिन तैसो ।
दोउ दिशिके भे विकल नेह वश को समुझावे कैसो ॥
मिलि मिलि कहत अवधपुरके जन तजेहु न सुरति हमारी ।
तैसहि कहत जनकपुरवासी बिछुरन दुसह निहारी ॥
जाहि यथा संपति संपस घर सो पट भूषण नाना ।
सीय देन हित जाय राजगृह देत बनाय विधाना ॥
कोउ अस रह्यो न मिथिलापुरमहँ जो नाहिं दायज दीन्ह्यो ।
कोउ अस रह्यो न जौन बरातिन जाय भेंट नहिं कीन्ह्यो ॥
सिगरे नगर सनंक गई परि सीय बिदा दुख भारी ।

वर्णत सीय स्वभाउ चुकत नहिं जुरि समाज नर नारी ॥
सुता व्याह पुनि बिदा होत हठि जानहिं जगकी रीती ।
तदपि राम सिय लषण लखव कब अस कहि वर्णहिं प्रीती ॥
इन आँखिन दरशाय महासुख हरहु विरंचि बहोरी ।
देखनको तुम चतुर चारि मुख चूक बड़ी यह तोरी ॥
हाट हाट अरु बाट बाट बहु घाट घाट पुरवासी ।
कहत एकसों एक बात यह सीय बिदा दुखरासी ॥
अंचल ओढ़ि विरंचि मनावहिं रंचक दिन नहिं बीतै ।
होय ब्रह्मरजनीसी रजनी पठवैं जनक न सीतै ॥
खान पान सुस्नान भान नहिं ध्यान ठानि अस बैठे ।
जनकपुरी पुरजन जनु बरबश शोकसिंधुमहँ पैठे ॥
और कछुक दिन रहैं अवधपति होय अनन्द बधाऊ ।
अथवा छोड़ि राम कहँ कछु दिन जाहिं अवध कहँ राऊ ॥
तहँ कोउ सज्जन कहहि जनन कहँ राम प्राणते प्यारे ।
अवधप्रजा किमि धरहिं धीर उर बिन रघुराज निहारे ॥

दोहा—जस तुमको लागत इतै, राम अवध नहिं जाहिं ।
तैसहि अवधप्रजा सकल, बिन देखे बिलखाहिं ॥

छन्द चौबोला ।

जबते शतानन्द अंतःपुर सीय बिदा मुख भाषे ।
तबते सब रनिवास हुलास निराश विरंचिहि माषे ॥
दुखसानी बानी रानी कहि करती बिदा तयारी ।
सियहि विलोकि विलोचन ते सब बिलखि बहावहिं बारी ॥
पुनिपुनिमिलहिंललीकहिदृगभरि बिलखि विदेहकुमारी ।
बिलखत सियहि देखि ढाढ़स करि नयन निवारहिं वारी ॥
जाके जौन पियारि वस्तु घर देहि जानकिहि ल्याई ।

सरवसु देन चहैं चित चाहत प्रेमविवश अकुलाई ॥
सीयमातु कुशकेतु कामिनी सिद्धि समेत बुलाई ।
बैठि शिखावहिं जोरि जानकीहि पतिव्रत धर्म बनाई ॥
इष्टदेव गुरुदेव कन्त कहँ मानहु धर्म विचारी ।
दोउ कुलकी मर्याद कन्यका हाथ रमानि कुमारी ॥
रीति सनातन ते चलि आई कन्या पति घर जाहीं ।
गौरि गिरा इंदिरा शची निज निज प्रिय पास सुहाहीं ॥
नहिं बेटी विलखहु चितमें कछु पेठे तिहारो भाई ।
परछनहीके पाछे आछे लैहैं भूप बुलाई ॥
दशरथ सरिस श्वशुर जगमें नहिं जनक जनक समपाई ।
कंत भानुकुलकमल दिवाकर तुहिं सम द्वितिय न जाई ॥
रह्यो सदा पतिको रुख राखत परिहरि सब सुख प्यारी ।
पति शासन अनुसार काज सब कीन्ह्यो धर्म विचारी ॥
वेद कहत अस सुनहु कुमारी नारी धर्म प्रधाना ।
संतनके मुख सुने सकल हम तैसो करहिं बखाना ॥
दासी सरस करै पति सेवा सुखी सखा सम करई ।
पत्नी सरिस पतिव्रत धर्म निबाहै जग यश भरई ॥
सोपत करै भगिनि सम सिगरो वात्सल्य जननीसो ।
सो नारी नरलोक शिखामणि है पतिव्रत करनीसों ॥
सासु श्वशुरको पूजन करियो जनक जननि सममानी ।
नातो जाको जौन होय कुल सो मानहु जिय जानी ॥
चारिहु भगिनि मिली रहियो नित कबहुँ न होय विरोधू ।
सब सासुनको मान राखियो किह्यो न कबहूँ क्रोधू ॥
प्रीति रीति उर राखि देवरन मान्यो बालक भाऊ ।
कुलवंतिनी नारि रघुकुलकी साध्यो शील स्वभाऊ ॥

परदुख दुखी सुखी परसुखमों सबसों हँसि मुख भाख्यो ।
यथायोग्य सत्कार सबनको करि सनेह सुठि राख्यो ॥
गृहकारज औरजके कारज सब दिन रह्यो सम्हारे ।
रघुकुलकी निमिकुलहूंकी अब है कर लाज तु
ह्वै हौ लली सुहागिल पियकी आगिल ते हम कहहीं ।
भाग्यवंतिनी तिय श्रीमन्तिन दोउ कुल दुखी न रहहीं ॥
पुनि उर्मिला मांडवी अरु श्रुतिकीरति लियो बुलाई ।
जननि शिखापन देइ विविध विधि अंबक अंबु बहाई ॥
रहियो सबै सियाके संमत करियो सिय सेवकाई ।
दोउ कुल पतिव्रत धर्म उजागर रहै सुयश जग छाई ॥
गुरुजनकी गुरुता सखिजनको नेह देह भरि चाही ।
सरवसु प्रीतम प्रेम नेम करि क्षेम लहै जग माही ॥
तन धन धाम काम वामनको पिय अराम जिहि होई ।
प्रीति प्रतीति नीति सोई करि गहै रीति हठि सोई ॥
मानवती न गुमानवती नहिं सानवती ह्वै तबहूं ।
पिय परिचर्य्या किह्यो कुमारी कुमन होइ पति तबहूं ॥

दोहा—आँखिनमें अँसुवा भरे, सुनि जननीकी सीख ।
कहति न सिय कछु सकुच वश, लही नीतिकी भीख ॥

चौपाई ।

इतै राउ सुदिवस जिय जानी । बोलि वसिष्ठहि बोले बानी ॥
विदा करावन कुँवर पठाओ । अवध गवन दुन्दुभी बजाओ ॥
तहँवसिष्ठ मुनि अतिसुख पाये । राम सहित सब बंधु बुलाये ॥
कह्यो विदेह निवास पधारौ । वधू विदा करि सुदिन न टारौ ॥
तजत जनकपुर उपजत पीरा । मनहींमन बिलखत रघुबीरा ॥
मानि राम गुरु पिता रजाई । चले विदेह महल सब भाई ॥

पंच सहस्र सखा अनियारे । चले तुरंगन राजकुमारे ॥
उदासीन पुर देखन जाहीं । तिहि अवसर उछाह कहुँ नाहीं ॥
सकल जनकपुर प्रजा दुखारी । सीय बिदा सुनि डारहिं बारी ॥
देखन कुँवर नेह बश धावैं । राम बिलोकत बारि बहावैं ॥
इनके दुर्घट दर्शन होहीं । भयो सदनपर विधि अति कोही ॥
पृथकपृथक प्रभु प्रजा जुहारें । रामचन्द्र मुखचन्द्र निहारें ॥

दोहा—पग पग महँ घेरहिं प्रजा, चारिहु राजकिशोर ।
अनमिख निरखहिं मुखनको, जैसे चन्द्र चकोर ॥

चौपाई ।

कहहिं परस्पर दुख भरि बानी । हाय होति अब दर्शन हानी ॥
कब पुनि दरश लहब इन केरे । अवध जात अब कुँवर सबेरे ॥
बसे नीड छवि नयन पखेरू । अब दुर्लभ अस मिलब बसेरू ॥
जबलगि रहीं जनकपुर सीता । नित नव मंगल मोद पुनीता ॥
यदपि जनक सिय बहुरि बुलैहैं । पुनि पुनि राम लिवावन ऐहैं ॥
पै अस लगत आज मनमाहीं । यासे अधिक हानि कछु नाहीं ॥
दशरथ पाहिं कहो कोउ जाई । यदपि करी मिथिलेश बिदाई ॥
तदपि सकल मिथिलापुरवासी । राखहिं एक दिवस सुख आसी ॥
कोउ कहजाय कहौ मिथिलेसै । आजु सुदिन नहिं गवन भदेसै ॥
कोउ ज्योतिषिन जाय धन देहीं । वर्जहु विप्र बिदा वैदेहीं ॥
देवी देवन बैठि पुजाई । रहैं चारि दिन चारिहु भाई ॥
नारी जुरि जुरि देखि उचारैं । बिदा करावन कुँवर पधारैं ॥

दोहा—बोलि पुत्र पति बंधु कहँ, बहु विधि कहैं बुझाय ।
जाय कहौ मिथिलेश पहँ, बिदा बंद ह्वै जाय ॥

चौपाई ।

पूजि कोउ परजन्य मनावैं । बरसहु आजु राम नहिं जावैं ॥

कहैं नारि कोउ विगत उछाहू । लेहु आजु लगि लोचन लाहू ॥
हेत कृपण नर भूषण प्यारे । जात अवध चित चोरि हमारे ॥
कहौं कुमारनको चलि कोऊ । रहिहैं काल्हि दया वश ओऊ ॥
कोउ सखि प्रेम विवश पुनिभाखै । वरवस पकरि राम कहँ राखै ॥
जाहिं अवधपुर गउ भलाई । रहैं मौन मिथिलापुर साईं ॥
हमहीं राखव दूलह चारी । जब लगि पूजि न आश हमारी ॥
कोउसखिकहहि न करहुसभारा । सुदिवसआज होतभिनुसारा ॥
तब लगि जाय बुझाय सुनैनै । राखव कुँवरन भूपति ऐनै ॥
कोउ कह अस सुख अब कब होई । लखौरामसिय पुनिधनिसोई ॥
लखन पलक जिन कल्प समाना । तिनविछुरे रहिहैंकिमिप्रान ॥
कोउ कह सखि साँवरसलोना । तिहिविनलखेहमहिंकाहोना ॥

दोहा—अलक पाश पसराय मन, लियो विहंग फँसाय ।
हाय दई यह निर्दयी, का करिहै वर जाय ॥

चौपाई ।

यहि विधि सुनत नारि नर वानी । चले जात रघुपति छविखानी ॥
अति विमनस कछु कहत न वानी । प्रीति रीति नहिं जात वखानी ॥
दौरि दूत तिहि अवसर आये । मिथिलापति कहँ खवरिजनाये ॥
आवत राजकुँवर मन भाये । सोहत सखा संग छवि छाये ॥
उठे भूप आये चलि आगे । राम दरश कहँ अति अनुरागे ॥
आवत देखि विदेह कुमारा । उतरि तुरंगन ते यक बारा ॥
किये प्रणाम नाम निज लीन्हें । भूप यथोचित आशिष दीन्हें ॥
सभा भवनमहँ गये लिवाई । सिंहासन आसीन कराई ॥
यथायोग्य सब सखन महीपा । वैठाये रघुनाथ समीपा ॥
तिहिअवसर लक्ष्मीनिधि आये । चारिहु बंधुन कहँ शिरनाये ॥
उठे राम संयुत सब भाई । चलि मिलि निज समीपवैठाई ॥

कुशल प्रश्न पूछ्यो सब भाँती । राम देखि भइ आनँद छाती ॥
दोहा–सुरभि फल तांबूल लै नृप कीन्ह्यो व्यवहार ।
यथा राम तिमि सब सखन मानि कियो सत्कार ॥

छन्द गीतिका ।

तिहिकाल श्रीरघुलाल वचन रसाल कह कर जोरि कै ।
नयननि नवाय मुछाय जल मानहुँ सबन चित चोरि कै ॥
तुम अवधपति सम मम पिता हम अहैं बालक रावरे ।
जो भयो कछु अपराध तौ प्रभु क्षमिय गुनि निज डावरे ॥
प्रभु छोह मोह सदैव रखियो आपने शिशु जानिकै ।
हम अहैं लक्ष्मीनिधि सरिस अस सुरति रखियो मानिकै ॥
अब चलन चाहत अवध को अवधेश संयुत साहनी ॥
मोहिं बिदा माँगन हित पठायो तात है दिलदाहनी ॥
आवन चहत आपहु इतै माँगन विदा अब आपसों ।
हमरो सकल सिधि काज ह्वैहै आप कृपाप्रताप सों ॥
जो नाथ देहु निदेश तौ जननी चरण बंदन करौं ।
अब जाय अंतहपुर सपदि निमिकुलनिरखि आनँदभरौं ॥
सुनि प्राणप्यारे के वचन बिलख्यो विदेह महीपहै ।
गद्गद गरो कछु कहि न आवत वचन परम प्रतीप है ॥
अँशुवानि ढारत जोरि कर बोल्यो वचन मिथिलेशहै ।
तुम जाहु अस किमि कढै मुख दृग ओट होत कलेश है ॥
यद्यपि अवध मिथिला सकल निमिकुल सुरघुकुल रावरो ।
तुम आइहौ मिथिला अवध हम जाब नित निन साँवरो ॥
यद्यपि सकल थल रावरेको रूप मोहिं लखात है ।
तदपि लला तुम जाहु अस नहिं वदन सों कहि जात है ॥
जस होइ राउर मन प्रसन्न निदेश जस अवधेशको ।

सो करहु सुरति न छाँड़ियो निज जानि यह मिथिलेश को ॥
अब आसु चलि रनिवास महँ कीजै नयन शीतल लला ।
तुम अहो सबके प्राणधन जानत न कोउ तिहारी कला ॥
मुनिकै विदेह निदेश सहित सनेह तिन शिरनाइकै ।
संयुत सकल बंधुन चले मिथिलेश कुँवर लिवाइकै ॥
प्रभु जाय अंतहपुर सबंधुन चरण वंदे सासके ।
मिथिलेश महिषी चूमि मुख बैठाय सहित हुलास के ॥
रनिवासमें फैली खबरि आये करावन वर विदा ।
सब नारि धाई दरश हित जिहि देखि मनसिजशरमिदा ॥
कुशकेतुकी महिषी तहां चलि रत्न निउछावरि करी ।
पुनि सिद्धि आई सखिन संयुत रति लजावतिरतिभरी ॥
प्रभु उठि सबंधु प्रणाम कीन्ह्यो दर्भकेतु प्रिया पदै ।
मिथिलेश महिषी निकट बैठायो दियो आनँद ह्दै ॥
बैठाय सन्मुख सिद्धिको औरहु सुनिमिकुल अंगना ।
बोले वचन श्रुति सुधा ढारत होइ रस जिहि भंगना ॥
अब अवध कहँ अवधेश गमनत कह्यो मोहिं बुलाइकै ।
मिथिलेश अरु रनिवास पहँ तुम विदा होवहु जाइकै ॥
ताते विदा अब देहु जननी सहित आशिर्वाद है ।
तुम्हरी कृपा दश दिशहु मंगल हमाहिं अति अहलाद है ॥
जनि सुरति मोरि विसारबी जिय जानि बालक आपने ।
फिरि आइबी हम दरश हित आनन्द अद्भुत थापने ॥
जनि विलग मानसि जननि मन हम सर्वदा तुव निकट हैं ।
जब सुरति करबी आइहैं नाहिं कतहुँ संकट विकट हैं ॥
इत आय सतगुण अवध ते सुख लह्यो तुव सत्कारसों ।
जननी न आवत सुरति जननीकी सनेह अपारसों ॥

है जनक मोहि जनक हमरे जननि मोहि जननि है।
नहिं कबहुं मोर बिछोह ह्वैहै जानु मोची भननि है॥

दोहा—सुनत सुनैना रामके, बचन नयन जल ढारि।
बोली आनँद अयनसों, कोटि मयन छबि वारि॥
अब न जाहु प्यारे कतहुं, इनहीं करहु निवास।
दरश ओटकी चोट लगि, करिहैं प्राण प्रवास॥
दरश देहु नितही हमें, करहु कलऊ आय।
चारिहु बंधु विशेषि के, अंगन खेलहु धाय॥
इत मृगया खेलहु विपिन, राजकुमार बुलाय।
तुम हो जीवन प्राण मम, किमि वियोग सहि जाय॥
धन्य भाग्य मेरी भई, तुम सम पायो पूत।
सकल सुकृत फल दरश तुव, होत अनन्द अकूत॥
बसि विदेहपुर कछुक दिन, कीजे अवध पयान।
अवधनगर मिथिला नगर, लालन तुम्हें समान॥
कौशल्या कैकय सुता, और सुमित्रा मात।
सोपन नाहिं मोसे अधिक, करिहैं साँची बात॥

कवित्त।

जतनसोंराखेधरिरतनअनेकजाति रोजरोजभूषण अदूषण गढ़ैहौं मैं।
कारीगर निपुण बुलाय देश देशनते वसनअनेकरंगअंगपहिरैहौं मैं॥
रघुराज कौनहूंविसंचनहिंहोनपैहै खासेखासेखुशीखेलखूब खिलवैहौं मैं।
केवाजनिकीजेमोरिसवासवभाँतिलीजेमीठमीठमेवालैकलेवाकरवैहौं मैं॥

दोहा—लाल तुम्हैं देखे बिना, किमि रैहैं तनु प्रान।
बार बार विनती करौं, अब जनि करहु पयान॥

चौपाई।

प्रभु जननी सनेह वश जानी। भरि आयो नयननि महँ पानी॥

धरि धीरज पुनि द्वौकर जोरी । कह्यो वचन विनती असि मोरी ॥
मातु रजाय शीशमहँ मोरे । नाहिं बिलंब मुहिं सन्निधि तोरे ॥
तोर सनेह बिलोकि अघाना । नाहिं उतर आवत कछु माना ॥
जो कछु उचित करौ अब सोई । करिहौं मैं जो आयसु होई ॥
कबहुँ न तोहिं वियोग हमारा । तैं जननी हम तोर कुमारा ॥
भोजन देहु भूख अति लागी । अब जनि और कहौ बड़भागी ॥
सुनत लालके वचन सुनैना । उठी आसु उर आनँद ऐना ॥
मन रंजन व्यंजन लै आई । राम सहित बंधुन बैठाई ॥
लगी करावन भोजन हाकी । लै पकवान नाम छवि छाकी ॥
इमि कराय भोजन महतारी । सुरभित जल कर चरण पखारी ॥
बैठायो पुनि आसन माहीं । जुरीं सकल रनिवास तहाँहीं ॥

दोहा—लै अपने कर कमल सों, बीरी विमल बनाय ।
चारौ भाइनको हुलसि, दीन्हीं सिद्धि खवाय ॥

चौपाई ।

उतै अवधपुर करन पयाने । भूप चक्रवर्ती अतुराने ॥
सहित वसिष्ठ सुवृन्द समाजा । गमन्यो बिदा होन हित राजा ॥
अवधनाथकी जानि अवाई । लियो द्वारते निमिकुल राई ॥
ल्याय सभा मंदिर बैठायो । करि सत्कार बहुरि अस गायो ॥
तन धन धाम सकल परिवारा । मोर अवधपति सकल तुम्हारा ॥
जो कछु भयो होइ अपराधा । क्षमहु क्षमा के उदधि अगाधा ॥
जो शासन करु कौशल राऊ । करौं शीश धरि बिन छलछाऊ ॥
तब वसिष्ठ बोले मृदु बानी । सुनहु जनक भूपति विज्ञानी ॥
राउ सकोच सनेह तिहारे । बिदा न माँगि सकत दुख भारे ॥
करन चहत अब अवध पयाना । बिते बहुत दिन जात न जाना ॥
कुँवरि बिदा करि सुदिवस आजू । देहु रजाय सजाय सुसाजू ॥

अस को करी प्रीतिकी रीती । जस तुम नेह निबाही नीती ॥

दोहा—सुनि वसिष्ठ मुनिके वचन, जानि अवधपुर जान ।
नृप विदेहके नेह वश, दुःख नाहिं कछु समान ॥

चौपाई ।

सजल नयन गर गद्गद भयऊ । नृपति हुलास रीति मन गयऊ ॥
वदन वचन कछु बोलि न आयो । मानहुँ सरबस जनक गँवायो ॥
पुनि धरि धीरज भूप बिज्ञानी । बोल्यो वचन जोरियुग पानी ॥
शीलसिंधु प्रभु कौशलराई । किमि तिनकी बिछुरनि सहि जाई ॥
दीन जानि मुहिं दीन बड़ाई । किमि निकसै मुख तासु बिदाई ॥
तुम त्रिकाल ज्ञाता मुनिराई । मोरे शिरपर आप रजाई ॥
बहुरि विदेह सनेह बड़ाई । दशरथसों असि विनय सुनाई ॥
तुम समरथ कौशलपुर राऊ । शीलसिंधु जग प्रगट प्रभाऊ ॥
जानेहु मिथिलापुरी हमारी । मुहिं भल पग पाँवरी निहारी ॥
जासु राम अस पुत्र प्रधाना । सकै कौन करि बिरुद बखाना ॥
अनुग जानि अब कृपा करीजै । करौं सकल शासन जो दीजै ॥
सौंपहुँ नाथ कुमारी चारी । पालब लघु सेवकी बिचारी ॥

दोहा—धोखे अनधोखे कछुक, जौन चूक परिजाय ।
क्षमा करब निज बालगुनि, मोर मान सुधि ल्याय ॥

चौपाई

परिचारिका दारिका चारी । सौंपौं तुमहि अब अति बारी ॥
नहिंजानहिंकछुलोकसुभाऊ । सिखयहु रीति न किहेहु दुराऊ ॥
इनपरकोउकीन्ह्यो नहिंकोपा । रहीं काज तजि खेलन चोपा ॥
कटुक वचन इन परे न काना । सकल कुटुंब परमप्रिय माना ॥
रहीं मातु पितु प्राण पियारी । बंधु कुटुंबन दून दुलारी ॥
करौंविनय तुवपदशिरधरिकै । राखेहु मान मोरि सुधि करिकै ॥

भरी सनेह विदेह सुवानी । मुनि कह रोउ नयन भरि पानी ॥
पुत्रवधू पुनि आप कुमारी । इनसे अधिक न पैर निहारी ॥
कर्य्यविदेहनकछुकरवभारी । जिमिमिथिलातिमिअवधअगारी ॥
सब सोंपति करिहैं सब सासू । हौं पैहों नित निरखि हुलासू ॥
पुत्रवधू सुतनते प्यारी । तापर पुनि मिथिलेश दुलारी ॥
धन्य भाग्य हमरे घर जानी । अधिक न इनते कोउ दरशानी ॥
दोहा—अपनो जानि सनेह करि, राखेहु सुरति हमारि ।
कौन अधम जो रावरो, नेह सुरति विसारि ॥

चौपाई ।

शतानंद तेहि अवसर आये । तिहिं वसिष्ठ कहि वचन बुझाये ॥
आयो विदा मुहूरत अबहीं । परिछन होइ जनावहु सबहीं ॥
वर दुलहिनि पालकी चढ़ाई । द्वारदेशमहँ ठाढ़ कराई ॥
परिछन करैं जनक महरानी । दै दधिबिंदु उतारहिं पानी ॥
वर है विदा बाहिरे आई । करहिं गवन आगे सब भाई ॥
पाछे चलहिं पालकी चारी । अस अनुमति मुनि अहै हमारी ॥
सुनत वसिष्ठ वचन सहुलासू । गौतम सुवन जाय रनिवासू ॥
आलि सुनैनहि दियो बुझाई । रानि चारि पालकी मँगाई ॥
दूलह सपदि चढ़ाई । मंगल गान मनोहर गाई ॥
कनक थार आरती उतारी । पढ़ि शुभ मंत्र उतारयो बारी ॥
कीन्ह्योसब विधि परिछनचारा । लियो बहोरि उतारि कुमारा ॥
कनक पीठमहँ वर बैठाई । विविध वसन भूषण पहिराई ॥
—मणि माणिक मुकता मुकुट, वर हीरनके हार ।
नख शिखके भूषण सकल, दियो अमोल अपार ॥
अतिअनुपमपट विविधविधि, ग्रंथित रत्न अनेक ।
दीन्ह्यो चारिहु कुँवर को, सम गुनि विगत विवेक ॥

चौपाई ।

बाल राम जोरि युग पानी । जननिनि अधिक जनानिमुखदानी ॥
देहु मातु अब मोहिं रजाई । अवध अंब अवलोकहुँ जाई ॥
सोह मोह रघुवर मन भानी । नैं न विसरिहैं मुहिं दिन रानी ॥
कौशल्या कैकयी सुमित्रा । यदपि मातु मम प्रीति पवित्रा ॥
सबतें अधिक मातु तैं मोरे । जस लक्ष्मीनिधि हौं तस तोरे ॥
जबकरिहैं सुमिरणमुहिं माता । तबहिं आइहौं मृषा न बाता ॥
यदपिप्रबोध्योबहु विधि रामा । राम विछोह भई तनु छामा ॥
मुखसोंनहिंकहि आवतिबानी । निकरत नयन निरंतर पानी ॥
कर जोरे काँपत सब गाता । निरखत राम वदन जलजाता ॥
प्रभु जान्योमुहिं करतपयाना । तजिहै अवशि जननि प्रियप्राना ॥
दीन्ह्यो भक्ति ज्ञान अवदाना । पोंछि नयन बोली तब माता ॥
तुम सर्वज्ञसकलगुणआगर । प्रेम नेम जानहुँ नयनागर ॥

दोहा—रहौं न देखनकी दुखी, दर्शन दीजै आय ।
होहु ओट इन नयनके, असकस कै कहिजाय ॥

चौपाई ।

चरण वंदि पुनि चारिहु भाई । सिद्धि समीप गये अतुराई ॥
उठी जनक सुतवधू सयानी । कररगहि कही प्रीति वश बानी ॥
नेह लगाय नरेश किशोरा । अब मति जाहु अवधकी ओरा ॥
दरश बिना किमि रही शरीरा । विछुरत होत दुसह तनु पीरा ॥
लाल प्रीतिकी रीति न जानौ । सहजहि प्रेम पंथ मन मानौ ॥
अब नाहिं करहु लाल निठुराई । जाहु दगा दै प्रीति लगाई ॥
प्रभु मुसक्याय कही मृदुवानी । यदपि न गमनत वनत सयानी ॥
पितु शासन शिरपरसबभाँती । काह करौं अब मति अकुलाती ॥
देहौं दरश बहुरि मैं आई । तुम जनि शोच करहु मनभाई ॥

जन्म जन्म नातो यह होई । तुम सरहज हम हैं ननदोई ॥
तुमहिंकबहुँनहिंबिछुरनिमोरी । एहो अवशि प्रीति लखि तोरी ॥
यह सम्बंध सनातन केरा । तुमहु अवधपुर करहु बसेरा ॥

दोहा—सिद्धि सुनत प्रभुके वचन, पुनि बोली कर जोरि ।
पालब सब अपराध क्षमि, ननदि चारिहू मोरि ॥

चौपाई ।

इन कबहूं अपमान न जाना । लहीं दुलार भवन विधि नाना ॥
कबहुँ न फूल छड़ी कोउ मारी । कटुकगिरा नहिं जननि उचारी ॥
मान सकोच दुलार बड़ाई । लगी राबरे कर रघुराई ॥
पालब सकल अनुचरी जानी । इतना कहत ढरयो दृग पानी ॥
सिद्धि प्रीति नहिं जाय बखानी । बोले राम मनोहर बानी ॥
अवध जनकपुर भेद न काऊ । उभय अमान समान प्रभाऊ ॥
सोपति सुख सकोच सब दूना । सिद्धि कबहुँहैहै नहिं ऊना ॥
लियो बुलाय जबै मन भावै । औब फेरि हम विदा करावै ॥
दरश परश ह्वै हैं यहि व्याजू । ह्वै हैं सिद्धि सिद्धि तव काजू ॥
नाथ बुझावहि बारहिंबारा । रुकति न सिद्धिनयन जल धारा ॥
जस तस कै कछु धीरज दैकै । गवने नाथ बिदा तिहि ह्वै कै ॥
गे कुशकेतु नारि ढिग नाथा । बोले वचन नाय तिहि माथा ॥

दोहा—चारिहु बंधुनकी अहौ, जननी युगल समान ।
कौशल्यादिक मातु महँ, मोहिं न भेद दिखान ॥

चौपाई ।

राखेहु सुरति मातु सब काला । चारिहु बंधु तुम्हारे बाला ॥
सुनि कुशकेतु दार प्रभु बानी । प्रीतिविवशअतिमतिअकुलानी ॥
बोली कंज करन युग जोरी । राखेहु सुरति लाल क्षमिखोरी ॥
यदपि सनातन ते चलिआई । ह्वै विवाह वर वधू बिदाई ॥

तदपि न चुकि कुरन कछु मोरी । मैं नाति सुजग छकुँदारि केरी ॥
प्रीति विवश प्रभु वंदन कीन्हें । बाहर चलन हेतु मन दीन्हें ॥
नारि सकल अन्तहपुर वासी । औरहु मिथिला नगर निवासी ॥
यथायोग्य करि सबको वंदन । लै आशिष सबसों रघुनंदन ॥
दै धीरज पुनि आउब आसू । प्रीति विवश दृग ढारन आँसू ॥
चले बाहिर बंधु समेतू । मनहु चुराय सबन कर चेतू ॥
मणि भूषण सुंदर पट नाना । दियो सिद्धि नहिं चित्त अघाना ॥
सुंदरि मणि मुंदरि इक ल्याई । दियो राम अंगुलि पहिराई ॥
दोहा—सो मुँदरी मणिमें लिखे, अस आखर रस भीन ।
कबहुँ न सिधि सुधि छोड़ियो, लाल प्रवीन प्रवीन ॥

चौपाई ।

पुनि कुशकेतु भूपकी रानी । रत्न विभूषण पट बहु आनी ॥
चारिहु बंधुन दियो समाना । भेद भाव मनमें नहिं जाना ॥
नगर नारि रनिवास निवासिनि । जे आई दर्शनकी आसिनि ॥
जिनके जौन वस्तु वर नीकी । दीन्हीं वरन जानि जिय फीकी ॥
कहहिं नारि सब वचन उचारी । काह देन गति अहै हमारी ॥
राखहु मन हमरो सँग अपने । छोडहु कबहुँ न सुंदर सपने ॥
बार बार मिथिलापुर आई । दीजै दरश चूक बिसराई ॥
तब सबको करिकै सन्माना । जानि सुनैना सिद्धि समाना ॥
बैठे सभा जहां दोउ राजा । भ्रातन सहित गये रघुराजा ॥
राम विरह तिय नयनानि नीरा । बहि बहि भयो उदधि गंभीरा ॥
कहहिं परस्पर नारि दुखारी । सीय विदा ते यह दुख भारी ॥
भयो शोकसागर रनिवासा । लागी बहुरि दरशकी आसा ॥
[दोहा]—आवत लखि रघुराजको, सिगरी उठी समाज ।
श्वशुर पिता पद वंदि प्रभु, बैठे शील दराज ॥

चौपाई।

तहां जनक सब सचिव बुलाये। ल्यावहु दाइज वचन सुनाये॥
सचिव आसु लै आवन लागे। जिन लखि शक्र धनदमद भागे॥
गल हैकल शिर सुबरण शृङ्गा। पीठ पाटवी झूल अभंगा॥
दियो सुरभि शत सहस अनेका। कामधेनु ते लघु नहिं एका॥
बसन अनेकन विमल दुशाले। झूलन झब्बे मुकुत विशाले॥
देश देशके निर्मित पागे। मणि शिर पेच कलंगी लागे॥
ग्रंथित रत्न अनेकन बागे। कटि फेटे मणि ज्योतिनजागे॥
चरण बसन बहु वर्णअमोले। मानहुँ मदन पाणिके तोले॥
कोटि कोटि यकयकवरकाहीं। देत पोशाक न जनक अघाहीं॥
दियो लक्ष दश मत्त मतंगा। कनक साज सज्जित बहुरंगा॥
जिनहिं देखि ऐरावत लाजा। भये गर्वगत दिशि गजराजा॥
कोटि एक पुनि दियो तुरंगा। जिन लखि उच्च श्रवामद भंगा॥

दोहा—कनक साज साजे सकल, मारुत वेग प्रमान।
देश देशके वर्ण बहु, जल थल चलत समान॥

छन्द चौबोला।

तनक बनक नहिं न्यून कनक के स्यंदन झनक अपारे।
वृन्दन वृन्दन युगल बीस वर लक्ष मनोज सँवारे॥
दीन्ह्यो स्यंदन रघुनन्दनको आनन्दन मिथिलेशा।
नहे तुरंग अनंग सभाजित जीते जंग हमेशा॥
राजत जातरूपके भाजन रत्न अनूप जड़े हैं।
निज अनुरूप भूप दीन्ह्यो बहु देखन देव अड़े हैं॥
पन्ना पदिक लाल माणिकके पुष्पराज गोमेदू।
नीलक लसुन प्रवाल पिरोजन भूषण सहित विभेदू॥
इंद्रनील मणि पद्मरागेके मर्कत मणि आभरणा।

नख शिखकेत्रयशत युगत्रिंशत पृथकपृथक जिनवरणा॥
दीन्ह्यों चारि कुमारनको नृप औरहु मणि बहुताई ।
पंच सहस्र महीप कुमारन रघुपति सखन चुलाई ॥
नृप समान दीन्हें पट भूषण हय गय रथन मँगाई ।
पुनि यक यक गजमुक्तन माला पृथकपृथक पहिराई ॥
एक एक चिन्तामणि नामक दीन्ह्यों मणि सुखदाई ।
चिन्तामणि नामक मणिके पुनि यक यक हार मँगाई॥
जनक पाणिपंकज निज चारिहु कुँवरन दिय पहिराई ।
गजमुक्तनको महाहारयक जिहि बिच बिच छविछाई॥
चन्द्रकांति औ सूर्यकांति मणि लगीं तेज समुदाई ।
सोकर हार धारि मिथिलापति दशरथको पहिराई ॥
जोरि पाणि पुनि विनय कियो अस सुनहु भानुकुलभानू ।
हम नहिं दीन तुम्हारे लायक कहँ महि कहँ परिमानू॥
अक्षौहिणी एक मिथिलाकी जानि कुमारिन संगा ।
लाखन अभिलाखन रमनन सँग दासी दास सुभंगा ॥
तिनकर पोषण पालन लालन रावर हाथ महीपा ।
हम सेवक रावरे सदाके आप भानु हम दीपा ॥
फेरि सुदावन सचिव बोलि नृप शासन दियो सुनाई ।
रहै न बाचि बराती कोउ अस विन भूषण पट पाई ॥
सकल सुदावन आदि सचिवतहँ पटभूषण बहु ल्याई ।
जनक चौकमहँ विविध चौतरन दीन्हें शैल बनाई ॥
दिहे बरातिन लघु बड़ मनुजन जाहि जौन जस भायो ।
कोउ नहिं रह्यो तहां अस जन जो पटभूषण नहिं पायो ॥
जनक नगरके सभ्य महाजन धनी धनदकी जोरी ।
पृथकपृथक दाइज ते दीन्हें करि कीरति चहुँ ओरी ॥

इन्द्र वरुण यम धनद आदि सुर देखि विदेह विभूती ।
लज्जित भये वृथा माने मन निज निज कर करतूती ॥
अवधनिवासी सकल सराहत जनक उदार सुभाऊ ।
ज्ञानी कहत अचर्य करो जनि यह सिय कृपा प्रभाऊ ॥
दाइज दियो विदेह जौन सो दशरथ भूप उदारा ।
सो सब भाटन भिक्षुक दीनन दीन्ह्यो विनहि विचारा ॥
अधिक २ सो बढ्यो घट्यो नहिं सियमहिमा अधिकानी ।
जहां प्रत्यक्ष रमा तहँ किहिविधि संपति जाय बखानी ॥
भू नरेन्द्र नागेन्द्र सुरेन्द्रहु दानवेन्द्र जग माहीं ।
जनक विभूति देन दशरथ लखि मनमहँ सकल सिहाहीं ॥
कनक रत्न पट हयगय स्यंदन भाजन वस्तु अनेका ।
दियो विदेह जाहि जस भायो विसरयो बुद्धि विवेका ॥
यहि विधि दै दाइज मिथिलापति कौशलपतिसों भाख्यो ।
हमरे काह देनको प्रभु जो रह्यो सुआगे राख्यो ॥
-तिहि अवसर गौतम सुवन, बोल्यो वचन विचारि ।
गमन मुहूरत आइगो, कन्या चलैं सिधारि ॥
गवन करैं वर चारहूं, यही मुहूरत माहिं ।
पुर बाहर परखहिं पितै, नृप अन्तहपुर जाहिं ॥
करि विधि मंडप मोचनी, समधिनिसों रचि फाग ।
पुत्रवधू लै संगमें, गवन करैं बड़भाग ॥
एवमस्तु दशरथ कह्यो, राम चारिहू भाय ।
चले तुरंगनमें चढ़े, पिता श्वशुर शिरनाय ॥

छन्द चौबोला ।

लक्ष्मीनिधिको पाणि पकरिकै उठे अवधपति आसू ।
विधि मंडप मोचनी करनको चले हर्षि रनिवासू ॥

परिचारिका सुनैनाकी तहँ ड्योढ़ी ते चलि लीन्ह्यो ।
अवध चक्रवर्तीको मंडपके तर आसन दीन्ह्यो ॥
सुरभित तैल अनेक मसाले तांबूलन युत ल्याई ।
वृद्ध वृद्ध कुलनारि पाणि निज दियो लगाय खवाई ॥
फेरि कह्यो कर जोरि भूपसों मंडप बंधन छोरे ।
नेगनमें निज भगिनि देहु नृप जानि उदार सुख मोरे ॥
नृप उठि मंडपको बंधन तहँ निज कर छोरयो एकू ।
कह्यो बहुरि मुसक्याय सुनहु मम वचन विचारि विवेकू ॥
हम लैन कौशलते आये नहिं दीबेके हेतू ।
जो जो देहौ सो लैके हम जैहैं बहुरि निकेतू ॥
दीन्ह्यो पुत्रवधू अति सुन्दरि सो पुत्रनको भागा ।
हम न अवधपुर जात छूछ कर कछु हाथ नहिं लागा ॥
जो मिथिलेश भगिनि होवै कहुँ तौ नेगनतर दीजे ।
ना तो चलै सुनैना रानी यही निबाह करीजे ॥
सुनि कुलवधू वृद्ध नृप वाणी कही सुनैनै जाई ।
अवसर जानि चार करिबे हित सो बाहर कढ़ि आई ॥
कनक थार लै पाणि रंग भरि धरि काजर टिकुलीको ।
करि प्रणाम समधीको सुन्दरि दियो भालमहँ टीको ॥
अंगनि अंग सुरंग रंग लै डारयो सहित उमंगा ।
नयननि में काजर पुनि दीन्ह्यो करि कछु कूट प्रसंगा ॥
उठि कौशलपति तब समधिनिको करि प्रणाम सुख छायो ।
चिंतामणि मणिहार पाणि लै समधिनिको पहिरायो ॥
पद्मराग मणि माल सुनैना समधीके गल दीन्ही ।
जोरि पाणि पंकज भूपतिसों सनै विनय अस कीन्ही ॥
ये चारिहु दारिका हमारी परिचारका तिहारी ।

लालन पालन अब इनको सब कीन्ह्यो बाल विचारी ॥
तुम्हरे कर सौंपहुँ नरनायक ई चारिहू कुमारी ।
ये अज्ञान जानती नहीं कछु पालेहु भूल बिसारी ॥
अपनी अरु सिगरी सासुनकी सेवा सब करवायो ।
कहुँ सों कबहुँ विरोध होइ नहिं निज कुल रीति सिखायो ॥
सुनत सुनैना बैन अवधपति जोरि पाणि कह बानी ।
प्राणहुँ ते प्रिय पुत्रवधू मम स्वप्ने दुख नहिं रानी ॥
जस मिथिलापुर तस कोशलपुर भेद कछू न विचारो ।
को नहिं करत पनोह छोह जग यह संदेह बिसारो ॥
शासन देहु जाहुँ कोशलपुर पुनि ऐहौं बहु बारा ।
मिथिलापतिको अहै अवधपुर मिथिला नगर हमारा ॥
अस कहि करि प्रणाम समधिनिको भूपति बाहर आयो ।
चलन हेत मिथिलापतिसों पुनि जोरि पाणि अस गायो ॥
शासन देहु विलम्ब होति बड़ि तुम अवलम्ब हमारे ।
मोद कदम्ब मिलनि राउरि मुहिं विसरी नाहिं विसारे ॥
कह्यो विदेह सनेह विवश ह्वै पहुँचैहौं कछु दूरी ।
यह कुल रीति नाथ बरजौ जनि तुव बिछुरनि दुखमूरी ॥
नृप प्रणाम करि चल्यो चढ़्यो रथ बाजे विविध नगारे ।
मिथिलापतिसों कह वसिष्ठ सब सुदिवस सुभग विचारे ॥
यही मुहूरत महँ कन्या सब चलैं भवनते राजा ।
द्वितिय मुहूरत नाहिं शुभदायक करहु आशुही काजा ॥

दोहा—सुनि वासिष्ठके वयन वर, कुशध्वज सहित विदेह ।
लक्ष्मीनिधिको संग लै, गे अन्तहपुर गेह ॥

चौपाई ।

बोले वचन बुलाय सुनैना । अब विलम्ब कर कारज हैना ॥

तौलगि विदा सुहृदन अवहीं । उचित सनेह कछु नहिं सवहीं ॥
चढ़ें पालकी सकल कुमारी । साजहु माजीविलम्ब विसारी ॥
इतना सुनत सखी सब धाई । पट भूषण सियको पहिराई ॥
तौनिहु भगिनि सहित सिय ल्याई । वार वार दृग वारि वहाई ॥
सीयपितापद लखिलपटानी । सो दुख अवाकिमि जायवखानी ॥
वार वार पितु मिलति जानकी । गई छूटि मर्याद ज्ञानकी ॥
रहे कहावत परमविज्ञानी । तौन ज्ञान गति सकल भुलानी ॥
वह्यो विलोचन वारि प्रवाहा । लहत न नृप दुखसागर थाहा ॥
कहिनसकत मुखते कछुवानी । तिहि अवसर धीरता परानी ॥
भाषत सीय वहोरि वहोरी । छाँड़हु पिता सुरतिनहिं मोरी ॥
मच्योकुलाहल सवरनिवासू । तिहि क्षणभयो सकल सुखहासू ॥

दोहा—लीन लाय उर जनक सिय, तनक रह्यो न सम्हार ।
डूबी धीर जहाज जनु, प्रेमहि पारावार ॥

चौपाई

जस तसकै धरि धीरज राजा । बोल्यो विलखत मंद अवाजा ॥
निमिकुलकी सिगरी मर्यादा । रक्षण किहहु विहाय विषादा ॥
अमल श्वशुरकुल सुता सिधारी । जस इत तस उत पितु महतारी ॥
कीन्ह्यो सासु श्वशुर सेवकाई । पतिव्रत धर्म कवहुँ नहिं जाई ॥
राख्यो सवसों शील सनेहू । क्रोध लोभ कीन्ह्यो नहिं केहू ॥
ल्याउव हम इत वारहिंवारा । किहहु न नेसुक मनहिं खभारा ॥
करि हैं मोसे अधिक दुलारा । ज्ञानिशिरोमणि श्वशुर तिहारा ॥
पति रुख राखि किह्यो सवकाजा । सदा प्रसन्न रहैं महराजा ॥
इतना कहत गरो भरि आयो । जनक निकरि तव वाहर आयो ॥
मिली सीय कुशकेतुहि जाई । तनु ते धीरज गयो पराई ॥
लीन्ह्यो लाय सीय उरमाहीं । रह्यो धीरता लेशहु नाहीं ॥

हाय सुता मम प्राणपियारी । लखब बहुरि कब मोद निहारी ॥
दोहा—जस तस कै धरि धीर कछु, चल्यो विकल कुशकेत ।
लक्ष्मीनिधिके चरणमहँ, गिरी सीय बिन चैन ॥

चौपाई ।

कहि भैया सिय रोवन लागी । को अस जिहि न धीरता भागी ॥
सखी सीय कहँ लई उठाई । माच्यो रोदन शोर महाई ॥
कढ़ति न मुख लक्ष्मीनिधिबाना । सीय सनेह शिथिल सब गाता ॥
जस तस कै धरि धीर सुनैना । अवसर उचित कहे अस बैना ॥
कन्या कहुँक घर नहिं होई । सुता सनेह करै जनि कोई ॥
सुता होय तो होय न नेहू । नेह होय विधि राखै गेहू ॥
यहि विधि करत अनेक प्रलापा । बाल वृद्ध सुनि करहिं विलापा ॥
नहिं सिय तजति भ्रातके चरणा । सो दुख जाय कौन विधि वरणा ॥
कर गहि कोउ तहँ सखी सयानी । लै गवनी बाहर दुख जानी ॥
मातु अंकमहँ सिय लपटानी । मनहुँ करुणरस सरि उँमगानी ॥
लियो सुनैना गोद उठाई । धरि धीरज बहु बात बुझाई ॥
दोहा—रोवहिं सब नारी विकल, भरी सीय अनुराग ।
मानहुँ सिगरे भवनमें, छायो राग विहाग ॥

चौपाई ।

तहँ कुशकेतु भूपकी रानी । कहत बुझाय परमप्रियबानी ॥
जनि मानहु दुख मनहिं कुमारी । लेहु सनातन रीति विचारी ॥
कन्या अवशि सासुरे जातीं । पुनि माइके अवशि सब आतीं ॥
हिमगिरि मैना गौरि कुमारी । शंभु व्याह कैलास सिधारी ॥
देवहुती मनु भूप दुलारी । कर्दम भवन बसी तपधारी ॥
नृप शर्य्याती सुता सुकन्या । बसी च्यवन मुनि घर भै धन्या ॥
देवयानि पुनि शुक्र कुमारी । भूप ययाति भवन पगु धारी ॥

शांता दशरथ सुता सुहाई । शृंगीऋषि राख्यो घर ल्याई ॥
देव दैत्य सब नर मुनि नाना । दिय सुता करि ब्याह विधाना ॥
जेहिं संग महँ अनवैया । तेहिं आसु आनि नव भैया ॥
यहि विधि कहत प्रबोधहि बानी । बहत जात नयननसों पानी ॥
सीय दुसह दुख देखि बिदाई । भये विकल रविकर दिनराई ॥
दोहा—गृह नारन संयुत रुदयो, महाचक्र शिशुमार ।
देखत विबुध विमान चढ़ि, बहत नयन जलधार ॥

चौपाई ।

होत बिदा सिय धीरज भागा । प्रगट्यो प्रजा परम अनुरागा ॥
पुरवासिनी नारि सब आई । सियहि दिये पट भूषण ल्याई ॥
औरहु निमिकुलकी सब नारी । दीन्हें पट भूषण मनहारी ॥
अस कोउ तहँ नहिं होन विचारी । सियहि देहि घर वस्तु न सारी ॥
आय मिलें सिय कहँ पुरनारी । रोदन करहिं नेह वश भारी ॥
सिय महिमा तिहिक्षण प्रगटाई । मिली सकल पुरनारिन जाई ॥
यह चरित्र जान्यो कोउ नाहीं । जानी सब मिली हम काहीं ॥
चारिहुभगिनिमिलतियहिभाँती । दुखितचढ़ीशिबिकाकहँजाती ॥
नारि वृन्द सब विकल सिधारे । रहैं न कहुके अंग सम्हारे ॥
मिलति परस्पर यहि विधि सीता । द्वार देश लौं गई पुनीता ॥
धरि धीरज तहँ परम सयानी । आई आसु सुनैना रानी ॥
शिबिका आनि रत्नमयचारी । दिय चढ़ाय चारिहू कुमारी ॥
दोहा—दधि टीको दै भालमें, शकुन सकल धरवाय ।
करि परछनकी रीति सब, दिय पालकी चलाय ॥

चौपाई ।

चलत पालकी नगर मँझारी । कीन्हीं प्रजा कुलाहल भारी ॥
पशु विहंग मिथिलापुर केरे । रोदन करत जानकी हेरे ॥

चढ़े विमान देवगुन डारा । सिय विलोकि बह आँसुन धारा ॥
निहि क्षणको अस त्रिभुवन माहीं । भयो जाहि सिय लखि दुखनाहीं ॥
पाले सीय विहंग कुरंगा । रोवत चले पालकी संगा ॥
शतानन्द तहँ आसुहि आये । लाखन स्यंदन शकट मँगाये ॥
भरि भरि शकटन साजु अपारा । दियो चलाय संग यक बारा ॥
अक्षौहिणी साहिनी साजी । चलीं संगमहँ हय गय गाजी ॥
चले संग नाना नर याना । चढ़ीं सखी सजि विविध विधाना ॥
चले सकल पुरजन पहुँचावन । बाल वृद्ध करि मारग धावन ॥
बार बार सब ईश मनावें । जल्द जनक जानकी बुलावें ॥
यहि विधि सियवगनमहँ आई । बजे मुरज दुन्दुभि सहनाई ॥

दोहा—दशरथके तहँ मिलन हित, ससुत सबन्धु विदेह ।
मुनिन सहित आवत भये, भरे अछेह सनेह ॥

चौपाई ।

आवत जानि विदेह महीपा । रुके अवधपति नगर समीपा ॥
तहँविलोकि कौशलपतिकाहीं । वाहन तजे विदेह तहांहीं ॥
अवधनाथ तहँ सहित कुमारा । मिले कछुक चलि प्रेम अपारा ॥
राम सबंधु आय शिरनाये । जनक ललकि उरमाहँ लगाये ॥
कह्यो जनकसों प्रभु करजोरी । राखहु बाल मानि सुधि मोरी ॥
प्रेम विवश नहिं वदत विदेहू । मूर्तिमान जनु राम सनेहू ॥
जस तसकै धरि धीरज राऊ । बोल्यो बैन न प्रेम अघाऊ ॥
यदपि मोहिं तुम दीन बड़ाई । पै मुहिं रुचत चरण सेवकाई ॥
आपन जानि न देव विसारी । करब चूक सब माफ हमारी ॥
प्रभु कह भूप हमार तुम्हारो । होई नहिं वियोग युग चारो ॥
जानहु सकल भाँति मम रीती । काहे करहु वियोग विभीती ॥
जनक कह्यो हम सर्वस पायो । लोक शिरोमणि मोहिं बनायो ॥

दोहा—रघुनन्दन वंदन कियो, जनक लियो उर लाय ।
प्रीति रीति तिहि कालकी, वरणि कौनि विधि जाय ॥

चौपाई ।

पुनि विदेह कोशलपति काहीं । बारहिंबार मिले मुद माहीं ॥
समधी समधी नेह समाने । भरे कंठ नहिं वचन बखाने ॥
जस तस कै विदेह धरि धीरा । बोल्यो प्रेम गिरा गम्भीरा ॥
यह मिथिलापुरकी ठकुराई । आपनि जानब गुनि सेवकाई ॥
नहिं कछु मोर रावरो सिगरो । करब माफ जो हमसे बिगरो ॥
दशरथ कह्यो सनेह तुम्हारो । यह हमरे शिरमहँ बड़भारो ॥
कोशलमिथिला उभयतुम्हारो । सेवक सिगरे मोर कुमारो ॥
तहाँ जनक मिलि बारहिं बारा । चले भवन दृग बह जलधारा ॥
मिथिलापुर पुरजन सुखरासी । मिले सकल कोशलपुर वासी ॥
नहिं बहुरत कोउ भवन बहोरे । सिगरे बँधे प्रेमके डोरे ॥
जस तसकै सब किये पयाना । करत अवधपति कीरति गाना ॥
उत कोशलपुर चली बराना । बजे दुंदुभी शोर अघाना ॥

दोहा—राम बंधु युत अवधपति, सकल बराती लोग ।
जनक सुयश वर्णन चले, ह्वै गो दुसह वियोग ॥

इति सिद्धिश्रीसाम्राज्य महाराजाधिराज श्रीमहाराजा बहादुर श्रीकृष्णचन्द्र कृपापात्राधिकारि श्रीरघुराजसिंह जू देव जी. सी. एस. आई. कृते रामस्वयम्वर ग्रंथे जानकीबिदावर्णनं नाम एकविंशतितमप्रबन्धः ॥ २१ ॥

दोहा—जनक शील सत्कार गुनि, सम्पति सहज सुभाउ ।
वर्णत पुनि पुनि अवधजन, हिय नहिं होत अघाउ ॥

छन्द कामरूप ।

बाजे विविध विधि दुन्दुभी मुरचंग मुरज मृदङ्ग ।
नौबत बजत गजपर बृजत तूरज उपङ्ग अभङ्ग ॥

फहरन पताकै बहु किताके आतपत्र अपार।
घर्घर करत रथ चक्र चहुँकित झाँझकी झनकार॥
आगे अनेकन ऊंट जूट सुजांगरेन अलाप।
पुनि चले सादी अमित लाखन खनत महि परिटाप॥
पैदर अनंतन वृन्द सायुध वसन अंग सुरंग।
पुनि चले परिचर वेत्र झरझर हाथ एकहि संग॥
मणि जड़ित सोंटे विविध वल्लभ मुकुत झालरदार।
औरहु अनेकन खास सेवक हिये हीरन हार॥
तिन मध्यमें सुंदर युगल स्यंदन विराज अनूप।
यकमें चढ़े गुरु ब्रह्मसुत यकमाहँ कोशल भूप॥
नरनाह पाछे वनक आछे सजत गजन सवार।
रघुवीर भरतहु लषण रिपुहन सहित सब सरदार॥
मंडित अतिहि मातंग मंडल चले रघुकुल वीर।
पुनि चलीं चारिहु पालकी मिथिला नगरकी भीर॥
पुनि सभ्य सुहृद महाजनो बहु वणिक वलित वजार।
रथ शकट वँड़वा वैल लादे साजु अमित हजार॥
यहि भाँति मिथिला नगरते कौशल नगरकी ओर।
गवनी वरात वतात सुख मिथिलेश यश चहुँ ओर॥
तहँ धूरि पूरी गगन उड़ि छपि गयो भास्कर भास।
टूटत सुहादनके दचक तरु वृन्द मग अनयास॥
सरि सरन प्रथमहिं जात जेजन लहत जल भरिपूर।
जे मनुज गवनत सैन्य पीछे पावते भरि धूर॥
सुर वृन्द विविध विमान चढ़ि वरसत गगनते फूल।
जय यश करत कोउ आजु नाहिं यह भुवन दशरथ तूल॥
गंधर्व गावत मोद छावत चढ़े विविध विमान।
सुर सुंदरी नाचहिं नवल लै माधुरी मुख तान॥

यहि भाँति दशरथ चक्रवर्ती कियो अवधपयान ।
याचक अयाचक करत थल थल देत बहु विधिदान ॥
करिके पतोहुन ओर क्षण क्षण लेत सुधि क्षितिनाह ।
नहिंतृषितहोहिं न क्षुधितहोहिं न श्रमितकोउमगमाह ॥
मिथिलेशके बहु सचिव तहँ सब सैन्य आगे जात ।
जे वासके थल रचे प्रथमहिं तित बनावत जात ॥
जहँ होय नृपति प्रसन्नता तहँ करै सैन्य निवास ।
भरि पान भोजन वस्तु अगणित देत विविध अवास ॥
यहि भाँति मिथिला नगरते जब चली अवध बरात ।
मंत्री सुमंतहि कह्यो भूपति उर न मोद समात ॥
अब चारि चार तुरंत दीजे अवधपुर पठवाय ।
वर अवधपुरै सब भाँतिन उत देहिं सुभग सजाय ॥
तोरन पताके द्वार द्वारन देहु तुरत बँधाय ।
सब राजमारग गलिन गलिन सुगन्ध सलिल सिंचाय॥
कोशल नगरके प्रजन घर घर देहु खबरि जनाय ।
आवत बरात विदेहपुर ते वर वधून लिवाय ॥
तिहि भाँति पुनि रनिवास महँ जाहिर करावहु आसु ।
परछन तयारी करहिं भारी सहित विविध हुलासु ॥
तुम पूछि लेहु वसिष्ठसे परिछन सुदिन जिहि द्यौस ।
सोइ पत्र माहँ लिखाय भेजौ सहित आनँद हौंस ॥
सुनि स्वामि शासन सचिव कीन्ह्यो सपदि सकल विधान ।
चढ़िकै तुरंग तुरंत धाये चारि चार प्रधान ॥
कौशल नगर घर घर सुचर वर जाय तिमि रनिवास ।
दीन्हें जनाय बरात आवत पंथ चारि निवास ॥

दोहा—यहि विधि मिथिला नगरते, गवनी जबै बरात ।

इक योजनमें भयो तब मारगमें उत्पात ॥

छन्द कामरूप ।

लखि परचो पश्चिम दिशि महा तहँ धूरि धुंधाकार ।
मूँद्यो दिवाकर भास चहुँकित ह्वै गयो अँधियार ॥
लागी चमंकन तड़िन चहुँकित शोर भो अति घोर ।
अतिशय भयानक श्याम घन मंडल उठ्यो चहुँ ओर ॥
अतिशय प्रचंड अखंड तहँ करि शोर झोरि झकोर ।
लाग्यो बहन तहँ पवन झंझा पुहुमि ठौरहि ठौर ॥
सबके गये दृग मूँदि व्याकुल सैन्य भइ तिहि काल ।
यक संग सकल विहंग विस्वर उठे बोलि विहाल ॥
करि सैन्य दक्षिण ओर धावन लगे बहु मृग माल ।
बहु काक गृद्ध उलूक बोलत अशुभ अति तिहि काल ॥
सबके हृदय कंपन लगे पशु बहत दृग जलधार ।
अति भीति भय डोलन लगी तहँ धरणि बारहिंबार ॥
यह देखि अति उत्पात कौशलनाथ भय उर आनि ।
बोल्यो वसिष्ठहि नाय शिर कर जोरि विह्वल बानि ॥
उत्पात अति दरशात नाथ जनात सब कर घात ।
खग व्रात बोलत अशुभ पय मृग वृन्द दक्षिण जात ॥
सन्मुख चितै नहिं जात आगे चरण नाहिं उठात ।
अब काह होत दिखात सकल बनाय बहुरि नशात ॥
मन मोर कम्पत बार बार न बुद्धि पावत पार ।
अस जानि परत मुनीश सब कर होत अब संहार ॥
सुनि अवधपतिके वयन ब्रह्म कुमार कह्यो विचारि ।
खग वृन्द सूचत भीति पै मृग वृन्द देत निवारि ॥
ताते परत अस जानि ह्वैहै भीति मरन समान ।
पाछे अनंद विशेषि ह्वैहै सत्य यह अनुमान ॥

बोलत विहंग भयावने फल तासु सूचन भीति ॥
मृगमाल दक्षिण जात ताते होइ पाछे प्रीति ।
इतना कहत मुनिके तहाँ पुनि बह्यो पवन प्रचंड ॥
टूटन लगे तरु वृन्द चहुँकित भयो शोर अखंड ॥
उड़ि उड़ि परत पाषाण मानहु धरणि उलटी जाति ।
बाढ़े अंधकार अपार भादौं रजनिसी दरशाति ॥
बर्षति भयंकर भस्म पुनि सूझत न दशहु दिशान ।
अतिगाढ़ भो अँधियार खोजहु मिलत नहिं कहुँ भान ॥
मातंग तरल तुरंग स्यंदन भये गति अवरुद्ध ।
नयननि तजत जलधार बारहिंबार ताजि गति शुद्ध ॥
सैनिक सकल ठाढ़े विकल मुख वचन बोलत हाय ।
अब प्रलय जगमहँ होन चाहत बचब नाहिं दिखाय ॥
तहँ मुनि वसिष्ठादिक महर्षि सशंक हर्ष विहाय ।
लागे पढ़न स्वस्त्ययन मंगल चित्तमहँ अकुलाय ॥
अतिभयो भूपति मनहि शंकित कहत का धौं होत ।
विधि बात सकल बनाय कस अब करत शोक उदोत ॥
उत्पात अति अवलोकि रघुकुल कमल चारिहु भाय ।
आये निकट नरनाथके मातंग तुंग चढ़ाय ॥
दलमें मच्यो तब अहुल खहुल न रह्यो काहू चेत ।
नहिं लगत कौनहुँ नेत जानि न परै दुखकर हेत ॥
गर्जत गगन घनघोर जनु चहुँ ओर शोर सुनात ।
गिरती हजारन गाज जनु जन कान फूटे जात ॥
पूँछत परस्पर सकल जन खलभल परयो दल माहिं ।
नहिं लखि परत कोउ शत्रु सन्मुख वीर सब अकुलाहिं ॥

दोहा—तिहिअवसर तहँ भस्मके, अंधकारके बीच ।

देखिपरे भृगुपति विकट सिगरे सैन्य नगीच ॥

छन्द भुजङ्गप्रयात।

जटा जूट जाके लसैं शीशमाहीं। त्रिपुंड्रो सजे भालमें सर्वदाहीं ॥
अनेकानि रुद्राक्षकी लम्बमाला। बँधी त्यों जटाजूटमें ज्योतिजाला॥
लसैं कुंडलो कर्ण रुद्राक्ष केरे। मुखै नामते बाल भय होतहेरे ॥
कराले मुलाले दिपैं नयन दोऊ। सकैं ना चितै विश्वमें वीर कोऊ ॥
चढ़ी बंक भ्रू सर्पिणी सी करालैं। फरक्कैं उभय नासिकारंध्र हालैं ॥
तजै श्वास कोपाधिकै बार बारे। मनो ज्वालके जालते विश्वजारै ॥
चढ़ी सर्व अंगानिमें भस्म भूरी। मनो शृङ्ग कैलासको भास पूरी ॥
लिहे चण्ड कोदंड दोर्दंड भारी। कसे कंधमें तूण द्वै भीतिकारी ॥
बृहद्व्याघ्र चर्माम्बरै पृष्ट माहीं। कसोकालसों खङ्गत्योंलंकपाहीं ॥
महाकोपसों कम्पते ओठ दोऊ। डरैं देवता दैत्य देवेश सोऊ ॥
महाकालसों कंधमें है कुठारा। कियो बार बारै सुक्षत्रिय सँहारा ॥
महातेजसों अंग देखे परै ना। लखे सैन्यके धीर कोऊ धरै ना ॥
कहैं वीर केते किधौं भानु आयो। कोऊ भापते कोपि धौं शम्भुधायो॥
कोऊ वीर बोले अहै धर्मराजै। कोऊ भापते सत्य है दैत्यराजै ॥
तहाँ मार्कंडेय आदी ऋषीशा। कहे रेणुकानंद हैं विप्र ईशा ॥
सुने रामको नाम क्षत्रिय अपारा। चले भाजि धारे महाभीतिभारा ॥
कियो क्षत्रि निर्वंश एकीस बारा। कहो कारणै कौन जो पावँ धारा॥
डरे देवताहू चढ़े जे विमानै। कहा होन चाहै सबै यों बखानै ॥
खड़े सैन्यको रोकिकै राम आगे। भगे क्षुद्र क्षत्रिय महा भीतिपागे ॥
मिट्यो भूरिसों धूरिकोधुंधकारा। भयो भास आशागयोअन्धकारा ॥
परयो पेखि प्रत्यक्ष सो पर्शुरामा। महाकालसों भीति भय तौनजामा ॥
सबै देव आये लखै को तमाशा। चहैं राम कल्याण दूजीनआशा ॥
परी भर्भरी खर्भरी सैन्य माहीं। मची हर्बरी मीचु है शंक नाहीं ॥

महाबीर जे शंक मानैं न नेकौ । महा भीरु ठाढ़े रहे नाहिं एकौ ॥

दोहा—आयो यहि विधि परशुधर, महाभयंकर रूप ।
कालानलसम तेजतनु, लखि भीति अति भूप ॥

कवित्त

दुराधर्ष समर सदर्प उनकर्ष ओज,
अतिहीं अमर्ष भरो कंधमें कुठार है ।
विक्रम विदित ज्यों त्रिविक्रमको अंश विप्र,
क्षत्री कुल छयो क्षिति यकइस बार है ॥
रघुराज राज राज सहित समाज देखे,
शंकर को शिष्य हिमाचलके अकार है ।
कर्त्ता शत्रु भीर भग्न पेखि भाग भीरु नग्न,
अग्निसों उदग्र जमदग्निको कुमार है ॥ १ ॥
हैहैराज बाहुन की समिध सरोप करि,
कीन्ह्यो रण यज्ञ स्रुव विरचि कुठार है ।
जाकी चाप भीति निज रीति छोड़्यो क्षत्रीकुल,
क्षितिमें क्षमाकी छपा भयो भिनुसार है ॥
रघुराज कोशलेश साहनीके आगे खड़ो,
भृगुकुल कमल दिवाकर अकार है ।
कोपित अपार मानौ नयनन सों करै क्षार,
वीर विकरार बोलै बैन बार बार है ॥ २ ॥
हौंतो तप तपत महेन्द्र शैल बैठो हुतो,
आपुई ते कै लियो तैं कोपको सहार है ।
कानमें प्रचंड परी वज्रपातहीसी आय,
गुरुके कोदंड खंडिबेकी झनकार है ॥
चौंकि उठ्यो चारों ओर चितै चालि दीन्ह्यों चट,

उपज्यो नवीन गुरुद्रोही को हमारे है ।
कीन्ह्यो जो अकाज छाँड़ि देइ सो समाज आज,
कौन रघुराज कोशलेश को कुमार है ॥ ३ ॥

दोहा–परशुरामके वचन सुनि, अकुलान्यो अवधेश ।
जान्यो अब सबको भयो, नाश सत्य यहि देश ॥

चौपाई ।

उतरयो रथ ते दशरथ राजा । लियोबुलाय मुनीश समाजा ॥
गुरु वसिष्ठ कश्यप जाबाली । मार्कंडेय सुधर्म सुचाली ॥
वामदेव कात्यायन आदी । और मुनीश धर्म मर्यादी ॥
करि आगे मुनि वृन्द महीपा । भूप गयो भृगुनाथ समीपा ॥
लख्यो परशुधर वदन प्रकासा । मानहुँ श्वेत वर्ण कैलासा ॥
कालानल सम महा भयावन । हेरतहीं हिय भयउपजावन ॥
पसरत ज्वालमाल बहु ओरा । मनु वृपराशि भानु अतिघोरा ॥
चितै सकत साम्हूं नहिं कोई । कहत सबै अब काधौं होई ॥
धरयो कंध महँ तेज अपारा । दमकत दामिनि सरिस कुठारा ॥
महा भयंकर शंकर रूपा । डरयो देखि अति जिय महँभूपा ॥
मुनिजननिरखिपरशुधरकाहीं । आपुसमहँ सिगरे बतराहीं ॥
किधौंपितावध सुधिमनकरिकै । आयो पुनि अमरष उर भरिकै ॥

दोहा–सहसबाहुके पुत्र जब, पिता वैर सुधि कीन ।
लियो काटि जमदग्नि शिर, महा पाप रस भीन ॥

चौपाई ।

यही राम धरि कंध कुठारा । दशो हज़ार एकहीबारा ॥
सहसबाहु सुत कियोविनाशा । पुनि क्षत्रिन पर कोप प्रकाशा ॥
कियनिक्षत्राक्षितियकइसबारा । अब धौं काह करन पगु धारा ॥
अबहुँ निक्षत्रकरन मनचाहत । निरखत मनहुँ सैन्य सब दाहत ॥

चल्यो करै भृगुपतिकी पूजा । वचन उपाय और नहिं दूजा ॥
अस कहि सब मुनि किय प्रणामा । बोले सकल राम हे रामा ॥
कृपा कियो भल दर्शन दीन्हा । हम सब काहि धन्य अति कीन्हा ॥
अस कहि अर्घ्यपाद्य आचमना । दीन्हे मुनिजन अमरष शमना ॥
पुनि पूजन षोड़श उपचारा । रामहिं कियो वसिष्ठ उदारा ॥
दशरथ बहुरि चरण शिरनायो । त्राहि त्राहि अस वचन सुनायो ॥
मुनिजन मधुर वचन मुख भाषे । क्षमा करावन मन अभिलाषे ॥
दशरथ बहु दीनता दिखाई । बार बार चरणन शिरनाई ॥

दोहा—जस जस सरल वचन सुनत, जस जस पूजन होत ।
तस तस भृगुपतिके उरहिं, द्विगुणित कोप उदोत ॥

कवित्त ।

बोल्योघोरघनसोघमंडभरिकैनराम मरानामधारिकैनरामकहवावतो ।
साँचोगुरुद्रोहीमोरकोहौनाहिंजान्योमोहिं तोरिकैपिनाकअबबदनछिपावतो ॥
कहांरघुराजआजराजराजजेठोसुत मोकोआजुअर्जुनसोंपूरगरुभावतो ।
होइभुजदंडबलधारिकैकोदंडशर ताजिकैसमाजअबक्योंनकढिआवतो ॥

दोहा—रेदशरथ मम गुरु धनुष, निज सुत पाणितुराय ।
क्षमा करावत चूक निज, मीठे वचन सुनाय ॥
मैं क्षत्रिय कुल विदित अरि, नाश्यों यकइस बार ।
स्वप्नेहु दया न उर बसी, जरा कोपके भार ॥
रेदशरथ अति रिस लगति, सुनि तेरो सुत काज ।
उलटि देहुँ अबहीं अवनि, जहँ लगि तेरो राज ॥
शम्भु शरासन भंग सुनि, निर्भय साजि बरात ।
व्याहन आयो जनकपुर, जानि सहज यह बात ॥
हौं निक्षत्र कीन्हीं क्षमा, पूरव यकइस बार ।
क्षमा सुरनको दै क्षमा, छाँड़्यो क्रोध अपार ॥

बहुरि दिखायो मोहिं सुधि, तुव सुत तोरि पिनाक ।
शम्भु शपथ करि कहत हौं, बची न भागेहु नाक ॥
भयो अबहुँ नहिं भोथरी, मोर उदंड कुठार ।
उपज्यो अमरष दून अब, करौं सकुल संहार ॥

चौपाई ।

अस सुनि परशुरामकी बानी । जान्यो भूप मीच नजिकानी ॥
सैनिक सकल कहन असलागे । भयो मरन अब बचब न भागे ॥
तहां तुरंत सुमंत कुमारा । जाय रामसों वचन उचारा ॥
कहा करत ठाढ़े सब भाई । आयो एक विप्र अनखाई ॥
धरे कंधमहँ घोर कुठारा । लीन्हें चाप बाण विकरारा ॥
आपन नाम परशुधर भाषै । बार बार भूपति पर माषै ॥
चाहत करन सैन्य संहारा । जानि परत अब नाहिं उबारा ॥
गुरु वसिष्ठ आदिक मुनिराई । बारहिंबार कहैं समुझाई ॥
नाहिं मानत रोके दल ठाढ़ो । जानो परत वीर वर गाढ़ो ॥
सुनत राम नेसुक मुसकाई । उतरे सिंधुर ते अतुराई ॥
लषण भरत रिपुहनहिं हकारी । चले सहज धनु सायक धारी ॥
पूछ्यो लषणजायप्रभु पाहीं । पर्यो काहखल भल दल माहीं ॥

दोहा—सुनत लषणके वचन मृदु, प्रभु बोले मुसकाय ।
जानि परत धनुभंग सुनि, भृगुपति आयो धाय ॥

चौपाई ।

यह सुनि चले चटक सब भाई । आये जहँ भृगुकुल दिनराई ॥
निरखे नरपति निपट विहाला । खड़ो परशुधर रूप कराला ॥
पिता समीप ठाढ़ भे जाई । हर्ष विषाद न कछु उर ल्याई ॥
गुरुवसिष्ठ बोल्यो तब वानी । क्षमिय नाथ यह चूक महानी ॥
तुव प्रसाद रघुकुल कुशलाई । क्षमा करहु गुनि बालकताई ॥
जेठो राजकुँवर यह आयो । भाइन सहित सपदि शिरनायो ॥

तिहि क्षण रघुपति कियो प्रणामा । तथा बंधु लै लै निज नामा ॥
राम रूप छवि राम निहारे । प्रथमहि मोहि अमर्ष बिसारे ॥
पुनि सुधि करि शंकर अपराधा । कियो राम पर कोप अगाधा ॥
युगल विलोचन किहे ललोहैं । रामहिं नेक ननक निरछोहैं ॥
कहत चहै कछु अनरथ बानी । पैमनिरानिछवि निरखिभुलानी ॥
उरत उठति कढ़ति मुख नाहीं । मनहीमन भृगुपति पछिताहीं ॥
दोहा–पुनि सम्हारि भृगुनाथ तहँ, ऐसो कियो विचार ।
कौन पापको फल प्रगट, कियो दया संचार ॥

कवित्त ।

करत विचारबारबारकंध धैकुठार भरोकोपभारजमदग्निकोकुमारहै ।
शत्रुहैहमारयहकीन्ह्योपूरोअपकार विनहि विचारकरौंआसुहीसँहारहै ॥
नैनमेंनिहारतअकारहियोहारतहै रघुराजरूपकोटि मारमदमार है ।
ज्वलतअमर्ष भारपरोजनुवारिधारकैसोसुकुमारकोशलेशको कुमारहै ॥

दोहा–मारन लायक नाहिं सुवन, नरभूषण जग माहिं ।
जो शरणागत होय मम, अभय करों यहि काहि ॥
अस विचार भृगुनाथ करि, लै कुठार धनु हाथ ।
बोल्यो बहुरि वसिष्ठ सों, तनक कँपावत माथ ॥

कवित्त ।

गुरुअपराधसुधिकरतअगाधकोप ब्रह्मसुतकोअगाधिदेतवैनभाख्योहै ।
ब्रह्मऋषिगाधिसुतदोऊरहेआपइतैशम्भुधनुतोरतमकाहेनहिंमाख्योहै ॥
कबतेविचारयोमोहिंक्षमामानक्षोणीमध्यभुजबलछोरमेरेक्षत्रीकोननाख्योहै।
मोरिसुधिकैकैविश्वामित्रतोपरायगयोआपगुरुद्रोहील्यायमेरेआगेराख्योहै

सोरठा–सुनि भृगुपतिके वैन, मनही मन मुसक्यात मुनि ।
अबै ज्ञान यहि हैन, वृथा बकत बरबर वचन ॥
कह्यो वचन मुसक्याइ, भयो यदपि अपराध बड़ ।

क्षमा करहु भृगुराइ, क्षमा विप्रको चाहिय ॥
गुनिहौ जब चित लाइ, बिसरिजाइ अपराध तब ।
अबै कोप रस छाइ, चहहु जान आपन रहौ ॥

कवित्त ।

नीलमणि शृंग सों निहारि रणधीर राम,
कह्यो रघुबीर रघुराज तू कहावै है ।
तेहीं कौशलेशको सुपूत पूत जेठो अहै,
तेहीं जग माहिं मेरे नामको धरावै है ॥
तेहीं तोरयो शंभुधनु साँची कहै सोंह कै कै,
नातो यमलोक को तुरत तेहीं जावै है ।
धारि दे धनुष छली छोडु छोडु क्षत्री धर्म,
तेरे अपराध रघुवंश मिटो जावै है ॥ १ ॥
विक्रम त्रिविक्रमसों सुन्यो नहिं मेरो कान,
कीन्हों मैं निक्षत्रि क्षिति यकईस बार है ।
इक्षुदंडहीसे भुजदंड भूप अर्जुनके,
काटि डारयों हारयों नाहिं समर मँझारहै ॥
रेरे राम रघुराज त्यों सहस्रबाहु के,
कुमार मारयो दशहूं हजार एक बार है ।
गौरि गणनाथ जूको दंत दलि डारयो एक,
घोर बरजोर मोर कठिन कुठार है ॥ २ ॥
गुरु अपराध सुनि करत क्षमा न होति,
तेरो रूप देखि नाहिं मोसों मारि जात है ।
तातै लै शरासन हमारो रघुराज आज,
खैंचि कै चढ़ावै बल होय जो अघात है ॥
धनुष चढ़ायो राम तौ तौ संग्राम लैहौं,

जानकी प्रताप जाहि विश्वमें विख्यात है
सत्य हौं बतात अब काहि को डेरात,
पूछिहौं निज आननसों ख्यातो नाम नात है ॥ ३ ॥

दोहा—मुनि भृगुपतिके बैन अस, दशरथ कँप्यो डेराइ।
जोरि पाणि पीरे बदन, अति दीनता दिखाय ॥
धरि धरणीमें शीश निज, आँखिन आँसु बहाय।
गद्गद गर बोल्यो वचन, सुनहु क्षमा उर लाय ॥

चौपाई।

कीन्ह्यो क्षिति निक्षत्रि बहु बारा। राउर सुयश विदित संसारा ॥
विप्र बंश भूषण भृगु रामा। करी कौन तुमसों संग्रामा ॥
सुन्यो नाथ मैं कथा पुरानी। वृथा तौन मैं सकौं न मानी ॥
करि निक्षत्र क्षिति यकइस बारा। कीन्ह्यो बीर कोप संहारा ॥
करी प्रतिज्ञा बामन पाहीं। अब आयुध धरिहौं कर नाहीं ॥
अस प्रण करि कश्यपहि बुलाई। दै धरणी सिगरी मनलाई ॥
गये महेन्द्र शैल तप हेतू। बसे आजु लगि विरचि निकेतू ॥
मम अभाग्य वश गुनि अपराधा। आये करन मोर कुलबाधा ॥
राम राम रघुकुल कर प्राना। तिहि बिन काकर लगी ठिकाना ॥
भृगुकुल कमल दिवाकर आपू। शरणागतन देहु संतापू ॥
सूध दूध मुख बालक जानी। क्षमहु नाथ सुत खोरि महानी ॥
करन हेतु मम कुल संहारा। आये कंधहि धरे कुठारा ॥

दोहा—जो दासनते होत कहुँ, छोटहुँ बड़ अपराध।
तौ समरथ करते क्षमा, जे प्रभु क्षमा अगाध ॥

चौपाई।

देहु अभय मम पुत्रन काहीं। बनति बात औरी विधि नाहीं ॥
वर्ष प्रभु साठि हजारा। लह्यो कृपा वश चारि कुमारा ॥

दीन जानि अब कृपा करीजे । सेवक सुतन अभय करि दीजे ॥
जस जस दीन वदत अवधेशा । दरशावत निज कठिन कलेशा ॥
तस तस अमरष वढ़त रामके । गुणत अमित अपराध रामके ॥
भूप दीनता भृगुपति क्रोधू । सह्यो न लषण विचारि विरोधू ॥
फरकि उठे भुजदण्ड प्रचंडा । कह्यो भरतसों वचन उदंडा ॥
का कहिये कछु कहो न जाई । राम पितहि कहँ रहे डराई ॥
विप्र वदत बहु बढ़ि बढ़ि बाता । सुनि सुनि उपजत क्रोध अघाता ॥
किहि हित पिता दीन अति होहीं । यह द्विज होई कबहुँ न छोहीं ॥
यह पूरो क्षत्रिय कुल द्रोही । शासन देहु अवशि अब मोही ॥
देहुँ दिखाय बनाय तमाशा । पूरहुँ सकल युद्धकी आशा ॥

दोहा—लषणहि कोपित जानिके, मंद मंद कह राम ।
विप्र वचन सहिवो सदा, यही सयानो काम ॥

कवित्त ।

जेठबंधुभीतिमानिवानिनहिंबोलैकछुकोपानलज्वालनसोंजरतशरीरहै ।
पीसत रदन हद कंपत अधरपुट वारवारपाणिसों सम्हारैधनुतीरहै ॥
रघुराजरामानुजअतिहिअनोखोचोखोरोपोभृगुरामैभईसाहसकीपीरहै ।
ताकत तनक तिरछोहैं कैललौहैंनैन बाँकुरोलषणलालवीररणधीरहै ॥

दोहा—परशुराम तजि राम को, चितै लषणकी ओर ।
बोले बैन सरोष अति, गहे कुठार कठोर ॥

कवित्त ।

देखिये वसिष्टयहराजकोकुमारखोटोमेरेओरदेखतअनैसेनैनकरिकरि ।
कबहूँ सुनी न प्रभुताईमोरिकाननमेंशठलरिकाइवशरासैधनुधरिधरि ॥
मोहिंउपजावैकोपलोपनिजचाहैहोनवेगहीबुझावोरघुराजछोहभरिभरि ।
नातोकहौंआजुमैंसमाजमेंपुकारिमेरेकोपकीकृशानुह्वैहैकीटहीसोंजरिजरि ॥

दोहा—सहि न गयो तब लषण सों, लगे बैन जनु बान ।
कह्यो वचन विहँसत वदन, सहजहि निडर महान ॥

कवित्त

जैसोकोपकीजेतैसोदीपनहिंमेरेज्ञानहानिहोभकोभयोपुरानधनुतोरेते ।
छुवतहीटूट्योनाहिंतोरपरयोगमैंनकुअैबैनानठानकछुतुरिजइतोरेते ॥
कैते तोरि डारे धनुरघुनशिकारनमेंकबहूंनकीनेएमोकोपअरछोरेते ।
रघुराजगजनकीरानिनाहिंजानोविप्रकरेकहुंजायतपजानोकहैंथोरेते ॥

दोहा–भाष्यो भृगुपति रिसि भभरि कै, रे बालक मतिहीन ।
बोलत वचन सम्हारि नहि, नाहिं मीचु बिधि दीन ॥

कवित्त ।

बालक विचारि तेरेवधको बचायेहूँ एमोविप्रहौंनजमजानैनइमोहिरे ।
सुन रघुराज सुत क्षत्रिन निक्षत्र कर परमकठोरमैंपरशुलेजोहिरे ॥
मोच बश करैकाहमातुपितुहुंकोआज जायघमपुरमेंबसेराकरैमोहिरे ।
ना तो कहेदेतहौंकुठारकंठहेत बिना हेतसेतमेतकाहेकालकोरहोहिरे ॥

दोहा–अति गर्वित भृगुपति वचन, सुनत लपण मुसक्याय ।
कहे वचन जनु अनल महँ, घृत आहुति परिजाय ॥

कवित्त ।

जानी हमजानीविप्रतूतोवरिमानीवड़े फरसीउठायकैं दिखावोवारबारहै ।
अबै रघुवंशिनके रणमेंनदेखेमुख फूँकिकै उड़ावत तुचहत पहारहै ॥
मारिमारिछोटेक्षत्रीवाढ्योगर्वगाढ़ोतोहिभयोभरभेटानहिंवीरबलवारहै ।
जादिननिक्षत्रकीन्ह्योरामक्षितिमंडलमें तादिनरह्योनरामचन्द्रअवतारहै

दोहा–जो तू यकइसबार क्षिति, कियो अत्रि बिन विप्र ।
तौ बाइसहूं बार अब, करै न काहे छिप्र ॥

कवित्त ।

जपतपयोग याग यम हूं नियमव्रत ब्रह्मचर्य्यशमदम विप्र धर्म होइरे ।
छोड़िनिजधर्मधर्‌योक्षत्रिनकोधर्मधनुबाणफर्साकोधरिआयोकोपमोइरे ॥
हौंतौरघुराजसुतब्राह्मण विचारिबचो नातौपुनिचीन्हनपरैगोमुखधोइरे ।
विप्रबधअबनालगावैमोहिं बारे मुख डरैरघुवंशी नाहिंकालहूंकोजोइरे

भृगुपतिसों कहनाहिं सुन. अति अनर्थ उर जानि ।
नीति वचन्यो भूपमणि. क्षत्रि धर्म पहिचानि ॥
शत्रुशाल तब लषणसों, कह्यो वचन करजोरि ।
मैं तापों रण विप्रको, यही अरज है मोरि ॥

कवित्त ।

बोल्यो भृगुनाथ कौन तूहै शत्रुशाल अहौं,
काको पुत्र हेरे अवधेश को कुमार हौं ।
तू है राम छोटो बंधु हौं तो रामचन्द्र दास,
काहे तेरे मन में तो युद्धको तयार हौं ॥
काहे काल आयो कहो कालको बुलायो कौन,
मेरे कर काल मैंही काल के अकार हौं ।
भाजै रे समाज छोड़ि कैसे रघुराज भाजै,
डरै नहिं मोहिं कहा जाति को गँवार हौं ॥
सरल वाणि बोले भरत, सुनहु विप्र शिरताज ।
तुम दोऊ मानहु कहो, होइ न कछुक अकाज ॥

कवित्त ।

विप्रनको दान दीबो पदरज लीबो,
शिर क्षत्रिन को धर्म वेद कहै इतनोई है ।
ताते जौनकहौ सेवकाइ करैं रावरेकी,
आपहू क्षमा कै जाहु सुयश बड़ोई है ॥
चलत अधर्म पथ कबहूं न रघुराज,
दोऊ विधि हानिहीं हमारी परै जोई है ।
हारे अपकीरति है मारे हठि पाप लागी,
जाहु राम युद्धको करैया नाहि कोई है ॥१॥
हाथजोरि माथनाइ भाषो भृगुनाथ सुनो,

[illegible]

[illegible] के कुठार [illegible]

[illegible] कह्यो मे, [illegible] है ।

[illegible] नाहिं,

[illegible] पूरी [illegible] है ।

[illegible]

[illegible] माहिं चमको कुठाइ है ॥ ॥

दोहा—नाथ तुम्हारे वचनहीं, हमको बज्र कुठार ।

वृथा बाँधिआये धनुष, सायक खङ्ग कुठार ॥

कवित्त ।

भग्नभर्गकोसुनिभृगुपतिभाष्योअस वरजोवसिष्ठरामपुत्रनकोकाहेना ।
भानुवंशकंककलंकबालकनिशंकवनदानकालअंकफारबाँचिंहजुचाहेना ॥
गुरुनरघुराजकुलनरहासकाचकछू देतावरकाय कछुदयाकरसाहेना ।
यातोकहेंसाँटमैनडाँटदोउबंधुयाकेबोलन कडुकनर्मसिंधुममथाहेना ॥

दोहा—कह वसिष्ठ भृगुनाथ सुनु, कीजे क्षमा अगाधु ।
बाल दोष गुण गहत नहिं, ज्ञानवान जे साधु ॥
कह्यो राम रघुकुल गुरू, कहि प्रताप बल मोर ।
वेगि बुझावहु बालकन, टारहु औरे ठोर ॥
नातो कहत पुकारि मैं, दियो न मेरो दोष ।
चाहत चलन कुठार अब, निकरि जई सब रोष ॥

कवित्त ।

बहुरिलषणबोल्योसुयशतिहारोविप्र तुमसेअधिकनहिंदूसरोकहैया है ।
कहत अघानेजोनहोहुपुनिभाषोखूबरसनातिहारी कहो कौनरोकवैयाहै ॥
भाटहीसों भाषौयशगारीजनिदीजे हमैं नातोनहिंरहैफेरिकरितिगवैयाहै ।
रघुराजआजरघुवंशीकहवायकोऊ तिलभरिभूमितेनभभरिभगैया है ॥

दोहा–यह अनुगत कथनं भयो, निहरोंषाकर काल ।
जहँ चाहौ तहँ भेजि कै, वीरन करौ बिहाल ॥
लषण वचन सुनि परशु धर, धरचो परशु कर घोर ।
कह्यो पुकारि उठाय भुज, दोष नहीं अब मोर ॥
धरन परशुधरके परशु, शत्रुशाल धनु धारि ।
बढ़ि आगे बोल्यो वचन, रिस वश सुरति बिसारि ॥
सोरठा–अब विलम्ब किहि काम, करहु जो करनब होइ कछु ।
परशु उठन यहि ठाम, रहौ न भुज भुज मूल ते ॥

सवैया ।

दीन्ह्यो बचाइ विचारिकै विप्र लिहे कुलहराकर सांस न लेहूं ।
मारिकै शुत्रन क्षत्रिनको अब विप्र भरो तुव दर्प है देहूं ॥
गाढ़ो परयो कबहूं नहिं संगर बाढ़ि अबै द्विजदेव हौं गेहूं ।
आयजुरे रघुराजसों धोखे बचौगे नहीं शिवलोक बसेहूं ॥

दोहा–इत पाछे करि रामको, ठाढ़े तीनहुँ बंधु ।
परशुराम ठाढ़े उतै, धरे परशु निज कंधु ॥
जानि युद्ध जिय होत तहँ, भूपहु ब्रह्मकुमार ।
खड़े भये तब बीच में, कीन्हे वचन उचार ॥
मेरे आगे मोर सुत, हतौ न भृगुकुल भान ।
मोहिं मारि पुनि कीजिये, जो कछु तुव अनुमान ॥

सवैया ।

बोल्यो वसिष्ठ सुनो भृगुनायक आप तो दीह दया उरछाइये ।
जो लरिका लरिकाई करै तो क्षमा करिकै मन ते बिसराइये ॥
श्रीरघुराज खड़े शरणागत आसु अभै करिकै अपनाइये ।
आप क्षमासे क्षमाधरहैं नहिं बालक बातनमें चित ल्याइये ॥
दोहा–सुनि वसिष्ठ मुनिके वचन, तनक जुड़ाने राम ।

सुनि लपणहि विहँसन निरखि, भये कोपके धाम ॥

सवैया ।

राम कह्यो रघुराजहि देखिकै आगे खड़ो गुरुद्रोही हमारो ।
भाइनके बल दर्प भरो यह भीतर बाहरहूं अतिकारो ॥
कै पितुको बछियामम आगे अहै बनमें चह बान हमारो ।
तो लौं नहीं उऋण गुरुको जबलौं नहिं देत हौं कंठ कुठारो ॥१॥
लक्ष्मण बोल्यो ततक्षणहीं पितुको उऋण भये अर्जुन मारो ।
फेरिकै हाथ हमारेई माथे लियो ऋण कासों कहो तो उचारो ॥
लेहु अबै हम खोलि खजान विलंब करो कत जो बलभारो ।
हैं करजीके नहीं गरजी रघुराज यही अरजी है हमारो ॥२॥

दोहा—लपण वचन सुनि कटुक द्विज, कंधहि धर्यो कुठार ।
द्विजगण मुनिगण तहँ सकल, कीन्हें हाहाकार ॥
लपण उतर आहुति सरिस, भृगुपति कोप कृशानु ।
सलिल सरिस बोल्यो वचन, बढ़ि कछु रघुकुल भानु ॥

सवैया

रावरके अपराधी हव नहिं बंधु किया धनुभंग तिहारो ।
दीजे यथोचित दंड उदंडन होत जो ठंड है कोप अपारो ॥
हैं रघुराज न जानत हैं छल और कछू नहिं कीजे विचारो ।
आप तौ पाणि कुठार लिये प्रभु आगेधरो यह शीश हमारो ॥१॥
मैं तुव सेवक हौं मुनिनायक कोपको काम कछू नहिं जाने ।
क्रोध हरै मति क्रोध हरै तप क्रोधहीं पापको मूल बखाने ॥
ये सिगरे शिशु जानैं नहीं कछु रावरी देव बराबरी माने ।
बैठो इतै करसों चहौं मींजन ठाढ़े रहे बहु पाउँ पिराने ॥

दोहा—जो बुलाय कोऊ गुणी, जुरवाऊं धनु आज ।
तौ तो कछु अपराधनहिं, क्षमा करहु भृगुराज ॥

चौपाई ।

[illegible] अनुग्रह राऊ । सवकरव करन सव काऊ ॥
नहिं मम बंधुनका अपराधा । देहु दंड मुहिं जो कछु साधा ।
भरत लपण रिपुहन ये तीना । मोर बंधु अपराध न कीना ॥
करहु बंधवध मोपर स्वामी । मैं तुम्हार सेवक अनुगामी ॥
कहहु करहुँ में जिहि रिस जाई । तुम समरथ सब विधि भृगुराई ॥
सुनत रामके वचन सुहाये । भृगुपति नेसुक मनहि जुड़ाये ॥
साधु साधु द्विज मुनिजन भाषे । उत्तर देत राम जय राषे ॥
पुनिबोले तहँ दशरथ राऊ । राम राम यह सरल स्वभाऊ ॥
दया न आवति सुनि अस वानी । क्षमहु नाथ जो होइ नशानी ॥
रघुकुल कर रघुनाथ अधारा । तुम्हरे कीन्हें होत उवारा ॥
सप्तद्वीप नवखण्ड अखण्डा । साँचेहु शासन मोर प्रचंडा ॥
सो सब द्विज सेवन प्रभुताई । नहिं भुजवल वश हम कहुँ पाई ॥

दोहा—सुनि दशरथके वचन मृदु, दै अनाकनी राम ।
बोले रघुपति सों वचन, सुनहु राम अभिराम ॥

चौपाई ।

विश्वकर्म युग धनुष वनाये । अतिउत्तम देवन दरशाये ॥
पूजित भये भुवन दोउ चापा । अतिदृढ़ रिपु दायकसंतापा ।
सके चढ़ाय चाप नहिं दोऊ । हारे वल कारेकै सब कोऊ ॥
तिहि अवसर त्रिपुरासुर घोरा । भयो दैत्य अतिशय वरजोरा ॥
दीन्ह्यों देवन महाकलेशा । गये देव सव जहाँमहेशा ॥
हर कहँ आरत वचन सुनाये । वचैं तुम्हारे देव वचाये ॥
कह शितिकंठ कोदंड न मोरे । हनौं कौनविधि रिपु वरजोरे ॥
तव वह धनुष देव सव दीन्हें । जौन राम तुम खंडन कीन्हें ॥
दीन्हें द्वितिय विष्णु कर चापा । नाम तासु शारंगहि थापा ॥

दियो सु शिवकहँ नाम पिनाका । उभय समान बिभिन्न न ताका ॥
लै पिनाक हर त्रिपुर सँहारे । हरिहु अनेकन दानव मारे ॥
जिहि बिधि भिन्यो शार्ङ्ग माहीं । सो सुनाइहौं पाछे तोहीं ॥

दोहा—मैं बाँधे सोई धनुष, तासु नाम शार्ङ्ग ।
जिहि बिधि गयो पिनाक हर, सो सुनु कथा प्रसंग ॥

चौपाई ।

हरि हर युगल देव बलवाना । बिक्रम ओज प्रभाव समाना ॥
आपुसमहँ सब सुर बतरहीं । कौन बली दोउ देवन माहीं ॥
कोऊ कहै महेश बड़ाई । कोऊ कहै बिष्णु अधिकाई ॥
लखैं देव निश्चय नहिं होई । गये पितामह पहँ सब कोई ॥
कहे पितामह सों अस बानी । हरि हरमहँ किहि अधिक बखानी ॥
अभिप्राय देवनकी जानी । नहिं निश्चय कछु मन अनुमानी ॥
जाय शंभु सों कह करतारा । दानव त्रिपुर कहो किहि मारा ॥
बिष्णु कहै हम शर ह्वै लागे । मरे नतरहिं खल त्रिपुर अभागे ॥
शंभु कह्यो शरबिना चलाये । काके लग्यो जाय करि घाये ॥
बिधि पुनि बहुरि बिष्णुपहँ आयो । कहै त्रिपुर सों को जय पायो ॥
बिष्णु कह्यो हम त्रिपुर बिदारे । मृषा शंभु निज बिजय उचारे ॥
यहि बिधि बिधि उपजाय बिरोधू । चह्यो लड़ावन कियो न बोधू ॥

दोहा—बिष्णु कहत त्रिपुरासुरहि, हममारे ह्वै बान ।
मर्‍यो त्रिपुर हमरे बलहि, अस भाषत ईशान ॥

चौपाई ।

भयो बिरोध क्रोध वश दोऊ । हरि हर लरैं लखैं सब कोऊ ॥
भर्‍यो बिष्णु शंकर संग्रामा । महाभयंकर दिन वसु यामा ॥
निजनिजबिजयआस दोउ कीन्हें । मानहुँ जगत जारि दोउ दीन्हें ॥
माच्यो त्रिभुवन हाहाकारा । मनु संसार होत संहारा ॥

तबहिं विष्णु कीन्ह्यो हुंकारा । शंभु धनुष जड़ भयो अपारा ॥
भये अचल शंकर रणमाहीं । चलो चलायो चापहु नाहीं ॥
देवन सहित तहाँ करतारा । ढाढ़ भयो दोउ देव मँझारा ॥
विधि सुर संयुत प्रस्तुति कीन्हें । दोउकर कोप शांत करि दीन्हें ॥
हर थंभित भे हरिहुंकारा । भयो शम्भु धनु जड़हु अपारा ॥
तब विधि सुर ऋषि कहेहुलासी । शिव ते वली विकुंठ विलासी ॥
शम्भु विष्णु गे निज २ लोका । भये देव सब परम अशोका ॥
रणमहँ जड़ता तासु निहारी । भे उदास धनुमहँ त्रिपुरारी ॥

दोहा—देवरातः मिथिला नृपति, रह्यो राजऋषि सोइ ।
ताहि बुलाय महेश दिय, महा धनुष जड़ जोइ ॥

चौपाई ।

देवरात सों कह्यो पुरारी । थाती धरहु नरेश हमारी ॥
जब यांचब दीन्ह्यों तुम तबहीं । येकर कारज अहै न अबहीं ॥
विष्णु सुन्यो शिव धनु दै डारा । भृगुकुल कमल ऋचीक हँकारा ॥
सोई धनुष दियो धरि थाती । मुनि ऋचीक को गुणिरिपुघाती ॥
कह्यो जबै माँगैं तब देहू । नहिं करियो कछु मुनि संदेहू ॥
अहै ऋचीक पितामह मोरा । भो जमदग्नि तासु पुनि छोरा ॥
जनक मोर जानहु तिहि रामा । भयो भुवन महँ अति वलधामा ॥
दियो ऋचीक ताहि धनु सोई । त्रिभुवन विजय करन बल जोई ॥
शस्त्र छोड़ि लै पितु संन्यासा । बैठ्यो आश्रम तजि सब आसा ॥
बरबस हरचो सहसभुज गाई । मैंहूं आय खबरि जब पाई ॥
काट्यो अर्जुनके भुज शीशा । तासु सहस दश पुत्र बलीशा ॥
मेरे वैर पिता कहँ मारे । तब हम दशो हजार सँहारे ॥
गयो न सहिपितु वध करकोपा । यकइस बार कियो नृप लोपा ॥

दोहा—मैं कश्यप को बोलि पुनि, कीन्ह्यों यज्ञ महान ।

क्षितिमंडल दीन्ह्यो सकल, कश्यप को करि दान ॥
पुनि महेन्द्र गिरिको गयो, तहँ तप कियो अभंग ।
आयो आशुहि कुपित अब, सुनि पिनाक कर भङ्ग ॥

घनाक्षरी ।

तातेकहौंसत्यराममेरोनहिंदूजोकामपितापितामहते कोदंडयहमेरोहै ।
लीजियेधनुपशरसाजियेचढ़ायगुनहोइजोघमंड भुजदंडबलठेरो है ॥
विक्रमविलोकिरावरेको रघुराजहम शस्त्रलैउछाहसोंविमारिअबसेरोहै ॥
छोड़िछलछंदशुद्धवीरताअनंदपुनिद्वंद्वयुद्धहोइगोहमारोअरु तेरो है ॥

दोहा–प्राण पियारे राम को, परशुरामके संग ।
द्वंद्व युद्ध तहँ होत गुनि, दशरथ भयो विसंग ॥

कवित्त ।

भरत दरतरद कोपत्योंकरतहद बोल्यो भृगुनाथसोंनऐसोहोन पावेगो ।
रामबंधु ठाढ़ेतीन बाँकुरेसमरगाढ़े युद्धकेउछाहबाढ़ेजासोंभलभावैगो
तासोंयुद्धकीजेनिजबल दिखरायदीजेलीजैसीखमानिएकैयुद्धहेतआवैगो
जियतहमारेतीनौभाइनकेरघुराजरामहीकीसौंहकौनरामसौंहजावैगो ॥

दोहा–लषणलालरिपुशाल दोउ, गहि गहि कर कोदंड ।
तमकि तमकि ठाढ़े भये, महावीर बरिबंड ॥

कवित्त ।

जोरिहाथमाथनायलषणउचारयोबैनभलीभृगुनाथकहीसबनिरधारौंगो
मोहिकोरजायदेहुकौतुकविलोकिलेहुकरौनहिंनेहुहौंतोविप्रतेनहारौंगो
जातिरघुवंशीकीकहाइरामदासबंधुरघुराजआजमृषाबाणीनाउचारौंगो
छीनिकैकोदंडतोरिदंडज्योंअरंडहीकोद्वंद्वयुद्धदैकैद्विजदर्पकोउतारौंगो

दोहा–बढ़त लषण कहँ जानि प्रभु, सैननि बंधु निवारि ।
भृगुनायक सों कहत भे, मनहुँ अनलमहँ वारि ॥

सवैया ।

सेवक स्वामि को संगर होत न बालक जानैं कहा चतुराई ।

वीरको वेष बिलोकि कै रावरो बारहिं बार करें अनुराई ।।
जो कछु आसन दीन्ह्यो हमें सो धरयो शिरमें सब कानिबिहाई ।
आपहु कीजै क्षमा क्षमाबुध करै रघुराज सदा सेवकाई ।। १ ।।
बोले प्रकोपित ह्वै भृगुनंदन रे रघुनंदन तैं छलछाई ।
भाइन को बरजै न उतै अरजै इत मोसे करै मुसक्याई ।।
बाम है तेहूं यथा तुव बंधु करै किन आँखिन ओटहि भाई ।
नाहिं तौ देत हौं कंठ कुठार बच्यो अबलौं गुनि बालकताई २ ।।

दोहा–बोले सहजहि लषण तब, नेसुक मुख मुसकाइ ।
मूँदहु आँखी विप्रवर, कतहुँ कोउ नाहिं आइ ।।
तब रघुपति कह लषण को, नेसुक नयन तरेरि ।
ठाढ़ होहु कहुँ अंत चलि, कहहु कटुक हरेवीर ।।
लषण ठाढ़ भे हटि कछुक, खड़े भरत जिहिंठाम ।
राम कह्यो तब राम सों, वचन बाण इव बाम ।।

कवित्त ।

टोरिमेरेगुरुकोकोदंडतूवमंडभरिभाइनभरोसेनहिंभीतिमेरीआनतो
मीठेमीठेबैनबोलिदेतमोहिंधोखोधूत आपनेकोजगतसपूतजनुमानतो ।।
मोरधनुतोरनाचढ़ायोचढ़ैरघुराज काहेकोकरतअसवीरतागुमानतो
तानतोधनुषतौबखानतोजगतमोहिंजानतोसोमानतोनमानतोसोजानतो ।।

दोहा–द्वंद्व युद्ध दे मोहिं अब, करि प्रसन्न रण माहिं ।
जहँ चाहै तहँ जाय पुनि, मोर हेतु कछु नाहिं ।।
नहिं तैं नाहिं तेरो पिता, नाहिं तेरे कोउ बंधु ।
नहिं तेरो गुरु बाचिहै, लखै कुठारहि कंधु ।।

कवित्त ।

लेतगुरुनामरामभौंहभईबामअतिबोल्योबलधामअबकाहियो सँभारिकै
लषण सोंहारोदोषउनकोहमारोगुणौभनैद्विजमानिहमतूँभनैप्रचारिकै ।

टेढ़ो जानि शंका मानि चौथ चन्द्र नाको राहु ग्रसै नहिं धावै पर्व पूरण निहारिकै।
दुखियो हमारो विप्र विक्रम विदित विश्व अबलौं बचायो बृद्ध ब्राह्मण विचारिकै

दोहा—विप्रवंशप्रभुता प्रगट, लोकहु वेदन माहिं।
उभय होत तेई अवशि, जे द्विज देखि डराहिं॥

कवित्त।

विप्र जानि जोपै रावरे की नहिं भीति मानैं,
तौ तो विश्व वीर कौन जाको जोहि डरिहैं।
क्षत्रीकुल जन्म पाय चाप कर ल्याय रघु-
वंशी कहवाय कालहू सों धाय लरिहैं॥
तुमहिं न सूझै कछु रघुराज बूझो हमैं,
समर डरानो ताहि शूर न उचरिहैं।
भूधर टरैंगे ध्रुव धामते टरैंगे धरिणी हूँ,
टरिजाय भले हम नहिं टरिहैं॥ १॥
विप्र मानि अबलों मनायों शिरनायों तोहिं,
क्षमा नहिं कीन्ह्यो जौन भयो अपकारो है।
लषण भरत शत्रुशाल को निवारचो हम,
नातो देखिलेते बलदर्प जो तिहारो है॥
हम रघुराज हैं न देव द्विजराज जानो,
सुनौ जो नहोई सत्य काज सो हमारो है।
राजन समाज गर्व गारि त्रिपुरारि जूको,
चाप तूरि डारो हम चाप तूरि डारो है॥ २॥
करै जौन भावै तोहिं अब न बचाय राखै,
कैले क्षिति क्षत्री हीन धारिकै कुठार है,
दैले पुनि कश्यपको भूमि यज्ञ दक्षिणामें,
पितुको उऋणह्वै ले करिकै विचार है॥

कसक निक्षात्र क्षिति होत जौपै क्षत्री होत,
गाय निज खोरि मेरो कहै अपकार है ।
काटयो जो गणेश दंत ताको सुम जोरि देहु,
टूटो तो पिनाक हम जोरिहैं अबार है ॥ ३ ॥

दोहा—मोहीं गुरु द्रोही कहत, तोहीं कहत न कोय ।
काटि दन्त गुरु सुवनको, यशी जगतमें होय ॥
आये चढ़ि रण करनको, वीर बापुरे मारि ।
परयो न गाढ़ो समर कहुँ, अब तो परी निहारि ॥

कवित्त

ऐसोभाषिमाषिरामरामहाथहीसोंचापसायकछड़ायअतिचटकचढ़ायोहै ।
चंचलासोंचमक्योचहूँघाचौंधभरयोचखभयसबचकितचितैअचर्यआयोहै॥
खैंचतमें ऐंचतमेंचपलचढ़ावतमेंबाणकेलगावत नकाहूको दिखायो है ।
देखिरघुराजकाजभृगुकुलदिनराजठाढ़ोसोथकोसोजकोवदनसुखायोहै १
गहत शारंगहाथतहांभृगुनाथजूकोदेखिपरेरघुनाथरूपमहाकालको ।
कंप भयोहियमेंसशंकिगयोएकबारदियोतजिदर्पदेखिदशरथलालको ॥
तेजहीनश्रीहतअतीवदीनदेखोपरयोछोड़िदियोकरतेकुठारठविकरालको।
उयोहंसवंशहंसदिनहिमकरहीसों हालह्वैगयोहैजमदग्निजूकेबालको॥२॥
ऐंचतधनुषभृगुनाथजूकेहाथहीसों खैंचिकैचढ़ावतमेंसाजतमेंबाणको ।
ठाढ़ेसबैसैन्यवारेकोईनानिहारेवीरधोखोअसह्वैगयोमुनीशकोपमानको॥
दामिनि सी दमकदिगंतनमेंछायगई आयगईहारभृगुकुलके प्रधानको ।
थकोसोजकोसोदबकोसोभयाभृगुनाथदेखिरघुनाथतेजग्रीषमकेभानको ३
साज्योहैशरासनमेंसायकअनलपुंजबोलेरघुनायकप्रकोपिचोपिबानी है।
खड्गलैकुठारलैविचारतोतुम्हारहोयविक्रमदिखाओजैसीमतिहुलसानीहै।
वीरतेविहीनतू वसुंधराविचारयोविप्रक्षिप्रक्षत्रिबलकोविलोकैवीरमानीहै
भनैरघुराजआपविश्वामित्रनातोमानित्यागतोनतीरजोकरैयाप्राणहानीहै

दोहा—हम क्षत्रिय तुम विप्र हो, ताते देत बचाय ।
नातो यहि क्षण यमपुरै, देतो तुरत पठाय ॥

कवित्त ।

देखि राम रूप साजे सायक प्रचंड धनु,
भयो भृगुराम विना विषको भुजंग है ।
ह्वैगो तेजहीन अतिदीन त्यों मलीन मुख,
छीनि ज्यों क्षितीश क्षितिदर्प भयो भङ्ग है ॥
मान्यो अतिशंक दुति वासर मयंक कैसी,
कम्पत शरीर करै कौन अब जंग है ।
देखि दिनराज रघुराज को बढ़त तेज,
दीपसी बुझानी रणरंगकी उमंग है ॥ १ ॥
छूटि परचो करते कठोर सो कुठार तहां,
शीरीभई अनख सुपीरी मुख झायगे ।
मंद मंद हेरै नैन बोलि नहिं आवै बैन,
हिय हहरानो हठि हुब्बहूं हिरायगे ॥
रघुराज समर रघुवीर वल,
भानुके उअत सान सूरसी सुखायगे ।
क्षितिकी निक्षत्रताई कीरति कमाई जौन,
राम वीरताई वारिबुल्ला सी विलाय गे ॥२॥
द्वन्द्व युद्ध जानि देव चढ़िकै विमान दौरि,
आये आसमान करि आगे करतार को ।
मर्कत महीधर सों अचल निहारि खड़े,
साजे धनु तीर वीर कौशल कुमारको ॥
कहा करो चाहै रघुराज रघुराज आज,
जके सब जोहैं कछु आवै ना विचार को ।

सिंहके समीप जैसे सुरभी सकानी त्यों,
विलोकें वीरमानी जमदग्निजूके बारको ॥३॥
दोहा--भयो जगत जड़ इव सकल, नेसुक कोपत राम ।
सर्व यक्ष गन्धर्व सुर, भयभभेरे तिहि याम ॥

चौपाई ।

धनु सायक साजे रघुवीरा । बोल्यो वचन मंजु रणधीरा ॥
विप्र विचारि बचायो तोहीं । देखन दया लागि अति मोहीं ॥
पै यह वैष्णव धनुको सायक । कबहुँ न मोघ होनके लायक ॥
सहसन परपुर जीतनवारो । वृथा न जैहै बाण हमारो ॥
उभय लोक गति तप करिपाई । जौन कहौ सो देहुँ नशाई ॥
इतना कहत वचन तिहिकाला । राम रूप तहँ भयो कराला ॥
परशुराम तहँ रह्यो निहारी । वपुष विराट दिखायो भारी ॥
अगणितविधि हरशक्रधनेशा । अगणित यम बहु रूपजलेशा ॥
रोम रोम प्रति अंड कटाहा । देखि परे रघुपति तनु माहा ॥
अगणित अवनि समुद्र अनेका । द्वीप खंड सब सहित विवेका ॥
लोक लोकपति देव अपारा । देखि परचो बहुविधि संसारा ॥
पशु पक्षी अरु कीट पतंगा । सुर नर मुनि संयुत सब अंगा ॥
दोहा—चौदह भुवन अनेक विधि, देखे राम शरीर ।
एक परशुधर अरु लख्यो, गुरु वसिष्ट मतिधीर ॥

चौपाई ।

तिहि क्षण वैष्णव तेज विशाला । भृगुपति तनु ते कढ्यो उताला ॥
रामरूपमहँ गयो समाई । औरन कहु नहिं परचोलखाई ॥
चारण सिद्ध यक्ष गंधर्वा । देव दैत्य ठाढ़े जे सर्वा ॥
प्रभु कौतुक कछु परचो न जानी । बहु विधि रहे मनहिअनुमानी ॥
परशुराम कहँ उपज्यो ज्ञाना । सत्य सत्य रघुपति भगवाना ॥

मानस भयो महा अवगाधा । प्रभु माया कीन्ही मुनि बाधा ॥
अस बिचारि भयमानि मुनीशा । गिरयो दंडसम करि पद शीशा
पुनि उठि जोरि पाणि भृगुराई । ठाढ़ो कछु न सकै मुख गाई
देखन रघुपतिरूप विराटा । भाँति अनेकन अद्भुत ठाटा ॥
प्रभु विराट वपु किय संहारा । परशुराम तब वचन उचारा ॥
पाहि पाहि त्रिभुवनके स्वामी । मैं द्विज दीन सदा अनुगामी ॥
पौरुष विक्रम तेज हमारा । नाथ सकल सो अहै तुम्हारा ॥

दोहा—क्षमासिंधु अब क्षमहु सब, भयो जु कछु अपराध ।
मैं सेवक हौं रावरो, कियो उपाधि अगाधि ॥
अस कहि प्रेमाकुलित द्विज, बहत नयन जलधार ।
पुलकित तनु गद्गद गरो, करि नहिं सक्यो उचार ॥

चौपाई ।

धन्य भाग्य पुनि आपन मानी । मिले मोहिं प्रभु शारँगपानी ॥
सहज रूप लखि बढ्यो उछाहू । नलिन नयन सुंदर युग बाहू ॥
श्याम शरीर मनोहर अंगा । मर्कत मणि द्युति उठै तरंगा ॥
मंद मंद रघुनन्दन काहीं । करि वंदन मुनि कह्यो तहाँहीं ॥
मैं निक्षत्रजब क्षितिकरिलीन्हीं । बोलि तुरत कश्यप कहँ दीन्हीं ॥
कश्यप कह्यो वचन हम काहीं । बसियो नहिं हमरी महि माहीं ॥
हमहुँ प्रतिज्ञा तहँ अस कीन्ही । नहिं बसिहौं जहँलगि महि दीन्ही ॥
तबमैं गयो महोदधि पाहीं । माँग्यो थल निज निवसन काहीं ॥
बूड़ो रह्यो जहाँलगि वारी । दियो महोदधि शैल उबारी ॥
तब महेन्द्रगिरि कुटी बनाई । कियो वास अबलों रघुराई ॥
ताते करिकै कृपा कृपाला । हनहु स्वर्ग गति मोरि विशाला ॥
तपकरि त्रिभुवनकी गति पाई । सो तिहरे पद देत चढ़ाई ॥

दोहा—बसिहौं जाय महेन्द्रागार, जपिहौं तिहरो नाम ।
सुमिरण करिहौं दिवस निशि, रामरूप अभिराम ॥

चौपाई ।

जय मद मोह नाग पंचानन । जय पदकमल शुद्ध कृतकानन ॥
जयमुनि मानस सरसि मराल । जय जय विश्वविनाशक काल ॥
जय जय सुंदर त्रिभुवन बाल । जय हृदि राजित वर वनमाल ॥
जय विरंचि वैरंचिनि अन्तह । तव पदकमल भजतिहि संतह ॥
कृपया परिपालय रघुनन्दन । दीनानुग्रह सुरकुल चन्दन ॥
जय वेदोद्धर मीनाकार । जय जय कोशलभूपकुमार ॥
जय जय कमठाकार मुरारे । क्षीराम्बुधिमंथक दनुजारे ॥
धरणी धारक कोलाकार । जय जय कनककशिपु संहार ॥
प्रह्लादाभयदायक देव । वटु वामन पावन बलिसेव ॥
मनकरकृत राजन्य विनाश । धर्मधुरंधर परम विकाश ॥
जय जय रघुकुलकमल दिवाकर । जय वसुदेवकुमार दयाकर ॥
जय हलधर हिमकरसंकाश । जय जय बुद्ध सुकरुणावास ॥

—करकराल करवाल धर, म्लेच्छच्छवन मुकुंद ।
पाहि पाहि यामिह हरे, कौशल्योदधि चन्द ॥

चौपाई ।

शरणागत मैं नाथ तिहारो । क्षमा करहु निज कोप निवारो ॥
तुम ब्रह्मण्य देव रघुराया । दियो भुलाय तुम्हारी माया ॥
मैं नहिं कोपसहनके लायक । हरहु स्वर्गगति तजि यह सायक ॥
जाउँ महेन्द्रशैल कहँ आसू । भजौं निरन्तर रमा निवासू ॥
अच्छै मधुसूदन संहारी । करहु देव द्विजकी रखवारी ॥
जान्यों जान्यों अव प्रभुताई । कियो मोहवश मैं शठताई ॥
को शारंग चढ़ावन हारो । को पिनाक कर भञ्जनवारो ॥

हरन हेतु अवनी कर भारा। कोशल नगर लीन अवतारा॥
दीन्ह्यो मोहिं प्राण कर दाना। होइ तुम्हार सदा कल्याना॥
विधि शिव इन्द्र आदि सब देवा। ठाढ़े लखन न जानत भेवा॥
अधिक समान रहित रघुवीरा। व्यापक विश्व महा रणधीरा॥
प्रतिद्वन्द्वी नहिं कोउ रण माहीं। मैं मतिमंद विचारयो नाहीं॥

दोहा—त्रिभुवननायक आपसों, नहिं हारे की लाज।
अति कृपालु समरथ सबल, संत सुहृद रघुराज॥

चौपाई।

अब नहिं करहु विलंब दयाला। तजहु अमोघ बाण विकराला॥
सुमिरत तुव पदकमल तुरन्ता। जाय महेन्द्र गिरीश अनन्ता॥
सुमिरण करिहौं तुमहिं गोसाईं। मोर शरीर रही जबताईं॥
जिहि जिहि योनि कर्मवश जाऊँ। तहँ तहँ अमल कमलपद ध्याऊँ॥
जनि विसारियो त्रिभुवन सांईं। पाल्यो कमठ अंडकी नांईं॥
दीन हीन गुण महामलीना। मुहिं सनाथ रघुनायक कीना॥
अस कहि रह्यो चरण लपटाई। जय कृपालु कोमल रघुराई॥
भृगुपति वचन सुनत रघुनायक। लागी दया तज्यो निज सायक॥
हनी स्वर्ग गति भृगुपति केरी। दीन जानि किय कृपा घनेरी॥
को दयालु रघुपतिसम आना। विप्रहि दियो प्राण कर दाना॥
पुनि प्रभु परशुराम पद परसे। बोले वचन सुधा जनु बरसे॥
मोरे पर करियो द्विज दाया। मेरी कुशल तुम्हारी छाया॥

दोहा—सुनि रघुपतिके वैन अस, भृगुपति नाचन लाग।
गावत मुख माधव सुयश, भरो भूरि अनुराग॥

छन्द दंडक।

सर्वपर सर्वहत सर्वगत सर्वरत सर्वमत पूज्य आनंदकारी॥
अखिलनायकअमलअखिलदायकसुयशअखिलभायकवपुषमोहहारी॥

जयति रघुराज दिनराजकुलकमलरविविप्रकृतकाजधनुबाणधारी ॥
भूपदशरथसुअन सकलभुवनाभरन करनअशरणशरण दुअनदारी ॥
दोहा—अस कहि पदपंकज परशि, परम प्रमोदित राम ।
गयो महेन्द्राचल चटक, सुमिरि राम अभिराम ॥

इति सिद्धि श्रीसाम्राज्य महाराजाधिराज श्रीमहाराजा बहादुर श्रीकृष्णचन्द्र
कृपापात्राधिकारि श्रीरघुराज सिंह जू देव जी. सी. एस. आई विरचिते
रामस्वयंवरग्रंथे परशुरामसंवादे द्वाविंशत्तमः प्रबन्धः ॥ २२ ॥

दोहा—करि प्रणाम श्रीरामको, परशुराम तप काम ।
बस्यो महेन्द्र महीधरै, सुमिरत प्रभु वसु याम ॥
रही रामकी दिव्य गति, हरि लीन्ह्यो तिहि राम ।
महि विचरणकी गति रही, कीन्ह्यो भजन अकाम ॥
परशुराम जो रामसों, कीन्ह्यो वृथा विवाद ।
द्वापरयुगमें तासु फल, लह्यो महा अपवाद ॥
नारि हित कीन्ह्यों समर, भीषमसों हठि जाय ।
भई पराजय कुयश जग, मनमहँ रह्यो लजाय ॥

चौपाई ।

कथाप्रसंग सुनहु अब संता । जौन चरित कीन्ह्यो भगवंता ॥
प्राणदान प्रभुकरसों पाई । जब भृगुपति गमन्यो शिरनाई ॥
अंधकार तब मिट्यो दिशानन । भये प्रसन्न देव मुनि आनन ॥
बरषहिं सुमनस सुमनस सुमनस । जय जय करहिं भरे आनँदरस ॥
जय जय रघुपति दीनदयाला । धर्मधुरंधर वीर विशाला ॥
जय जय भरत लषणरिपुशाला । जय रघुकुल भट मंडित माला ॥
सैनिक सकल कहन अस लागे । रामहि निरखि राम अब भागे ॥
लगे सराहन रघुपति काहीं । राज लाडिलो सम कोउ नाहीं ॥
शत्रुशाल तहँ अति अतुराई । जनकसुता ढिग आशुहि जाई ॥
रही विकल सुनि भृगुपति कोपू । जानत हती होत दल लोपू ॥
शत्रुशाल बोल्यो शिरनाई । अब जनि जननि करहु दुचिताई ॥

कुलकमल पतंग प्रकोपी । आयो समर करन चित चोपी ॥
दोहा—तुव प्रीतमको तेज लहि, निज गति दिव्य गँवाय ।
करन प्रशंसा रामकी, राम गयो शिरनाय ॥

चौपाई ।

सुनि गमने भृगुराम जानकी । मिटि गै शंका सकल जानकी ॥
मिथिलापुरवासी नर नारी । रामगवन सुनि भये सुखारी ॥
बाजन लागे निकर नगारा । जय जय शोर मच्यो यक बारा ॥
वृद्ध वृद्ध रघुकुलके वीरा । आये राम निकट रणधीरा ॥
चूमहिं बदन लेहिं बलिहारी । कहहिं करी सेना रखवारी ॥
मानहु काल पाशते छूटे । द्रव्य लुटाये निर्धन लूटे ॥
रामहाथसों दान करावहिं । रामसुयश यक यक यह गावहिं ॥
विविधभाँतिके बाजन बाजे । हैवर गैयर गण बहु गाजे ॥
तिहि अवसर निज काज विचारी । लियो वरुणको राम हँकारी ॥
दिय जलेश कर प्रभु शारंगा । बोले वचन नाथ सुखसंगा ॥
[illegible] अगस्त्य हाथ तुम जाई । लेहौं मैं दण्डक वन आई ॥
अस कहि कीन्हो वरुण बिदाई । गये वसिष्ठ निकट रघुराई ॥
दोहा—पदपंकज परशे पुलकि, पंकजपाणि सप्रेम ।
कहे वचन तुम्हरी कृपा, लहे विप्रसे क्षेम ॥

चौपाई ।

मार्कण्डेयादिक ऋषिराई । प्रभु परशे पदपंकज जाई ॥
बोले वचन भरे अहलादा । मिटी भीति तुव आशिर्वादा ॥
मुनिजन दीन्हें प्रभुहि अशीशा । पालहु यहि विधि कोटि बरीशा ॥
पुनि अतिविह्वल पितु लखि रामा । आये बंधुसहित तिहि ठामा ॥
परशि पितापद कियो प्रणामा । बोले वचन राम अभिरामा ॥
राउर तेज उदै लखि भाना । दीप सरिस द्विज तेज बुझाना ॥
गयो भागि भार्गवकुलकेतू । उठहु गवन कर बाँधहु नेतू ॥

तुव भुजपालित दल चतुरंगा । चले अवध सुख आनँद रंगा ॥
हम सब कुशल प्रताप तुम्हारे । विकल होहिं अव विकल निहारे ॥
गये राम कुशली सुनि रामै । उठ्यो भूप आशुहि तिहि ठामै ॥
सहित बंधु रघुनाथ निहारी । लियो अंक भरि भुजा पसारी ॥
नहिं समान आनन्द अपारा । नयनन बहति नीरकी धारा ॥
गद्गद गर नहिं कहत कछु, निरखत बारहि बार ।
मानत नृप आजहि भये, मेरे चारि कुमार ॥

चौपाई ।

सूंघ्यो शीश अंक बैठाई । फेर्‌यो पीठ पाणि पसराई ॥
जाय गह्यो गुरुपद पुनि राजा । कह्यो कृपा तुव सिधि सब काजा ॥
मिले चारि बालक पुनि मोहीं । कहौं शपथ करि यश सब तोहीं ॥
मुनि कह धर्मधुरंधर आपू । करत सिद्धि सब काज प्रतापू ॥
कहौ न तिहि अचरज अस कोई । जाके राम सरिस सुत होई ॥
कालहु करी न तापर कोहू । जासु राम सिय पूत पतोहू ॥
गवनहु गेह बजाय निशाना । देखहु परछन हर्ष निधाना ॥
लखै राउ रामहि टक लायो । मनहुँ राहुमुख विधु कढ़ि आयो ॥
तिहि अवसर जे दूत पठाये । ते कौशलपुर ते द्रुत आये ॥
कही भूपसे मंजुलवानी । अवध प्रजा दर्शन अकुलानी ॥
इत विलम्ब नहिं होइ महानी । रोज़हि कढ़ति अवध अगुवानी ॥
दूतवचन सुनि भूप तुरंता । बोल्यो वचन हँकारि सुमंता ॥
दोहा—चलवावहु सेना सकल, आशु अवधकी ओर ।
सुनि सुमंत शासन दियो, भयो दुंदुभी शोर ॥

चौपाई ।

चली सैन्य कछु बरणि न जाई । मनहु उठी पूरब मेघवाई ॥
चढ़ि रघुनन्दन स्यन्दन माहीं । चले सबंधु अवधपुर काहीं ॥
चढ़ि गुरु नृप चढ़ि निज २ याना । किये प्रमोदित अवध पयाना ॥

चली जनकपुरते जिमि सेना । तिहि विधि चली भली भरि चैना ॥
कियो पन्थ दिन चारि बसेरा । लहे जनक सत्कार घनेरा ॥
जनकसचिव कीन्हें सेवकाई । कहु न विदेश निवास जनाई ॥
यहि विधि तहँ बरात हुलसानी । आय अवधपुर कहँ नजिकानी ॥
योजन भरिमहँ परिगो डेरा । जानि काल्हि दिन परछन केरा ॥
जनक सचिव सब जे सँग आये । माँगी बिदा नृपहि शिरनाये ॥
देनलगे नृप संपति नाना । लिये न मनअनुचित अनुमाना ॥
करि नृपकी सिगरी सेवकाई । गये जनकपहँ माँगि बिदाई ॥
कह्यो तुरंत सुमंतहि भूपा । परछन सुदिवस काल्हि अनूपा ॥

दोहा–धेनु धूरि वेला विमल, होई नगर प्रवेश ।
दूत भेज जनवाइयो, सब रनिवास निवेश ॥

चौपाई ।

तुरत सुमंत दूत पठवायो । खबरि नगर रनिवास जनायो ॥
सजत वरातिन सुखित अपारा । निशा सिरानि भयो भिनसारा ॥
प्रातकर्म करि भोजन कीन्हें । अवध प्रवेश करन मन दीन्हें ॥
दुपहर भीतर भई तयारी । त्वरा अवधपुर देखन भारी ॥
होत प्रभात कुमारन काहीं । कह्यो भूप विलमौ अब नाहीं ॥
करि मज्जन भोजन अतिआसू । सजे कुँवर सब सहित हुलासू ॥
सुभग रंग नारंग पुशाका । जिहिलखिसुरनरमुनिमनछाका ॥
लसै मणीन मोर शुभ सीसे । रत्न विभूषण अगणित दीसे ॥
कटि कृपाण धनु कंध सुहाई । युग तूणीर महा छवि छाई ॥
काम विनिन्दक सकल कुमारा । वरणि कौन कवि पावत पारा ॥
तिहि दिन नृपहु पीत पट धारे । गवनहेतु गज भये सँवारे ॥
करि बहु विनय वसिष्ठहु काहीं । भूप चढ़ायो सिंधुर माहीं ॥

–भये अनङ्ग समान सब, कुँवर तुरंग सवार ।
बजे नगारे निकर तहँ, बार बार तिहि बार ॥

चौपाई ।

सजी सैन्य सुंदर चतुरंगा । चले वराती भूपति संगा ॥
आगे सुतर सवार अपारा । सोहि रहे गन्धर्व अकारा ॥
तिनके पाछे पैदर जाती । निज निज यूथ वर्ण वहु भाँती ॥
लसहिं गजनपर विविध पताका । मनु तिनमहँअरुझत रविचाका ॥
वहु नागन पर नौवत बाजै । तिनके गुरु गैयर गण गाजै ॥
तिमि वाजहिं विशाल करनाला । तूरज भेरी शोर रसाला ॥
पीछे चले पैदरन केरे । तिन पीछे असवार निवेरे ॥
चढ़ि तुरंग जागेर अलापैं । मनहुँ सात सुर सुरपुर थापैं ॥
छाय रही ध्वनि बाजन केरी । अंवर अवनि दिशान घनेरी ॥
तहँ परिकर अगणितगति सीछे । चले सवारनके पुनि पीछे ॥
कनक छरी वल्लम वहु सोटे । गवने सुंदर जोटे जोटे ॥
परिचर वृन्दहि मध्य सिधारे । पंचसहस वर राजकुमारे ॥

दोहा—राजकुमारन मध्यमें, सोहत चारि कुमार ।
तिनके पीछे गज चढ़्यो, गवन्यो अवध भुवार ॥

चौपाई ।

तहँ वसिष्ठ आदिक मुनिराई । चढ़े वितुंडन आनँद छाई ॥
रघुवंशी सरदार अपारा । सजे मतंगन भये सवारा ॥
तिनके पीछे चलीं पालकी । चारि वधुनकी रत्न जालकी ॥
चली जनकपुर सैन्य अपारा । दासी दास अनेक उदारा ॥
वहल शकट पालकी महाफा । परे जरीके जिनमहँ साफा ॥
तिनके पीछे चली बजारा । धनिक वणिक बनि बनकअपारा ॥
कहहिं परस्पर सकल बराती । देखौ कौशलपुरी दिखाती ॥
हल्ला पर्‍यो अवधपुर जाई । अब बरात पुर नेरे आई ॥
आतुर सजे अवधपुरवासी । दूलह दुलहिन देखन आसी ॥

चले लेन आशुहि अगुवानी । सकल पुण्य फल आपन जानी ॥
खरभर परचो नगरमहँ भारी । कोउ गवने कोउ करन तयारी ॥
जानि अर्ध योजन रजधानी । नृप सुमंतसों गिरा बखानी ॥
दोहा—चलैं इहां ते अब सचिव, दुलहिन दूलह संग ।
वाजी पीछे पालकी, बजन बाज बहुरंग ॥

चौपाई ।

पृथक पृथक सिगरी महरानी । पठईं कलश चलीं अगवानी ॥
कलश शीश धरि गावत नारी । भूषण वसन सुरंग सँवारी ॥
हरद दूब दधि तंदुल थारा । शिर धरि चलीं चारु शृङ्गारा ॥
करहिं भामिनी मंगल गाना । बाजन बजहिं अनेक विधाना ॥
राजत रजत कनक कलशावलि। तिनमहँ दिपतिदिव्यदीपावलि ॥
प्रमुदित पुरजन वृन्दन वृन्दा । आगू लेन चले सानन्दा ॥
कोउ मतंग कोउ चढ़े तुरंगा । चले धनिक कोउ चढ़े सतंगा ॥
वृहत् वृषभ बहलन महँ नाधे । चढ़ो सुखासन कोउ जन कांधे ॥
कोउ पैदर आये नर नारी । बाल वृद्ध उमहे सुख भारी ॥
अवध प्रजा निरखन अभिलाषन । आये अगवानी कहँ लाखन ॥
इत बरात उत पुरजन रेला । मानहु तजे सिंधु युग वेला ॥
आवत झिले अवधपुरवासी । दूलह दुलहिन देखन आसी ॥
दोहा—यदपि रह्यो मैदान बहु, कसमस परचो अघात ।
चली अवधपुर पंथ तब, मंदहि मंद बरात ॥
मिलहिं बरातिन पौरजन, प्रथमहि यही बताय ।
दुलहिन दूलह दुहुँनको, दीजे द्रुतहि दिखाय ॥

चौपाई ।

कहहिं कहाँ सुंदरि सुकुमारी । मिथिलापुरकी राजकुमारी ॥
कहँ रघुनायक रूप सलोना । कौन समय परछन अब होना ॥

भरत लषण रिपुहन कहँ प्यारे । धौं तुरंग धौं नाग सवारे ॥
कहँ नरेश कौशलाधिराजा । जाहि न तुलत आज सुरराजा ॥
महा डोल दुलहिनके चारी । देहु बताय होहु उपकारी ॥
हर्षि बगारी हाथ उठाई । दुलहिन दूलह देत बताई ॥
पाछे धाइ मिलै जे आई । ते पूछहिं देखे रघुराई ॥
नगर नारि नर नागर नीके । अभिलाषी देखन सिय पीके ॥
झुकहिंझिलहिंझझकहिंझपिझाकहिं।तरल तमक तिरछेतुकिताकहिं॥
लुकहिं लजहिं ललकहिंलरखाहीं । चितवहिं चकित चुभे चुहुँघाहीं ॥
जिनहिं प्राणप्रिय जानकि जानी । पौरदशा किमि जाय बखानी ॥
भयो अवध आनन्द अगारा । कसमस परत करत संचारा ॥

दोहा—नारिवृन्द कलशावली, कौशल्याकी आय ।
खड़ी भई तहँ रामके, आगे अतिहि सुहाय ॥

चौपाई ।

पुनि कैकेयी केरि पठाई । कलशावली सुहावनि आई ॥
भेजी सुभग सुमित्रा केरी । आई कलशावली घनेरी ॥
औरहु रानिन केरि पठाई । कलशावली समीपहि आई ॥
कामिनि कनककुम्भ धरि केती । गावत मंगल गीत सचेती ॥
पुरवासिनी अनेकन आई । संग मंगलामुखी सुहाई ॥
गावहिं व्याह गीत सुरलाई । महा मनोहर ध्वनि रहि छाई ॥
बाजन बजहिं अनेकन भाँती । नाचहिं वारवधू सुखमाती ॥
नचहिं परिचरी पट फहराई । अधिक अधिक आनँद उमगाई ॥
कौशल्यादि तीन महरानी । तिनकी पठई सखी सयानी ॥
सुंदरि दधि अक्षतको टीको । दीन्ह्यो राम भालमहँ नीको ॥
मनु असुरनते आशु रिसाई । बस्यो शुक्र शशिमंडल जाई ॥
लषण भरत रिपुहनके भाला । दधि टीको दीन्हों सब बाला ॥

दोहा–पुनि दुलहिनि पालकि पटन, नेसुक नारि उघारि ।
दधि टिकुली देती भई, मंजुल पाणि पसारि ॥

चौपाई ।

दै टिकुली पावन गजगामिनि । आगे चलीं भरी सुख भामिनि ॥
आई अगणित पुरजन नारी । करहिं निछावरि मणिगण वारी ॥
दुलहिन दूलहको नगिचाई । लेतीं दोउ कर रोग बलाई ॥
प्रविशे पुरजनदलमहँ जाई । रामचरण परशहिं सुख छाई ॥
इतर जाति सब करहिं प्रणामा । आशिष देहिं विप्र तपधामा ॥
तहँ कौतुक कीन्ह्यो भगवंता । मिल्यो प्रजन करि रूप अनंता ॥
जाने सबै मिले हम काहीं । पर्‍यो जनाय भेद कहु नाहीं ॥
मंद मंद तब चली बराता । पुरजन करत परस्पर बाता ॥
हमहिं मिले रघुनन्दन आई । पूछी विविधभाँति कुशलाई ॥
को जग रामसमान सनेही । कहहु प्राणप्रिय आज न केही ॥
पुनि पुरजन नरनाथ जुहारे । कृपादृष्टि नृप सबन निहारे ॥
शील सनेह सबन कहँ तोषे । गमने मंद मंद चित चोषे ॥

दोहा–नगरनिकट यहि भाँति चलि, आई विमल बरात ।
सचिव सुमंत बुलायकै, कही भूप अस बात ॥

चौपाई ।

बृहद्विमान आशु बनवायो । दुलहिन दूलह ताहि चढ़ायो ॥
तहाँ तुरंत सुमंत सिधारा । विमल विमान विशद विस्तारा ॥
वाहक दशशत ताहि उठाये । आशु सुमंत संगमहँ लाये ॥
मंडप कनकजटित रतनाली । बनी चहूँकित हीरन जाली ॥
चातक कीर कपोतहु मोरा । निर्मित रत्न करत कल शोरा ॥
रत्नवृक्ष बहुरंग सुहाये । माणिक फल मुक्ता सुम भाये ॥
मुक्तन झालरि झूलत झापी । रत्नकलश रविसरिस प्रतापी ॥

भिन्न भिन्न सुंदर सुस्थाना । मनहुँ मदन निज कर निर्माना ॥
तहँ सुमंत रामहिं युत भाई । ल्याय विमानहिं दियो चढ़ाई ॥
पुनि चारिहु पालकी बुलाई । दियो विमानहिं निकट धराई ॥
वृद्ध वृद्ध सजनी जुरि आई । पुरुषनको निज हाथ हटाई ॥
पुनि दुलहिन पालकी उतारी । दियो चढ़ाय विमानहिं भारी ॥
सुंदरि दुलहिन दूलह चारी । सखी सुथल निज निज बैठारी ॥

दोहा—रत्नखचित झालर मुकुत, दीन्हीं परदन डारि ।
बोले विविध नकीब तब, को सुख कहै उचारि ॥

चौपाई ।

तिहि विमानके चारिहुँ ओरा । सखिमंडल सोहत नहिं थोरा ॥
नृप शासन लहि उच्यो विमाना । बाजन बजे विविध विधि नाना ॥
चल्यो राजमंदिरकी ओरा । फरक फरक माच्यो मग शोरा ॥
तिहि विमान पाछे छवि छाजा । सिंधुर चढ़ो लसत महराजा ॥
मणिगण चारिहु ओर लुटावत । लोकपालयुत विधिसम भावत ॥
मच्यो कुलाहल नगर मँझारी । देखन झुके झुंड नर नारी ॥
झर झर वेत्रपाणि प्रतिहारा । भर भर रोकत मनुज अपारा ॥
आगे करि सिय राम विमाना । परछन लखनभूप हुलसाना ॥
राम सरिस सुत सीय पतोहू । कहै को दशरथ सुख संदोहू ॥
दशरथ सारिस आज नहिं कोई । वामदेव विधि वासव होई ॥
पुरनारी चढ़ि ऊँच अटारी । वर्षहिं सुम आरती उतारी ॥
गावहिं मंगल मंजुल गीता । राम सीय लै नाम पुनीता ॥

दोहा—आई सुरभीरज समय, कियो वसिष्ठ उचार ।
पहुँच्यो विमल विमान तब, अंतहपुरके द्वार ॥

चौपाई ।

द्वार चौक अंतहपुर केरी । अति विस्तार अनूप निवेरी ॥
दियो चौकते पुरुष हटाई । नारिवृन्द सोहत तहँ आई ॥

मध्य चाकमहँ धरयो विमानू । ज्यों साँझ वेला जनु भानू ॥
छरी वेत्र बल्लभ करधारिनि । कौशल्या शासन दिय कामिनि ॥
फरक करहु सब नारि उताला । आयो अब परछन कर काला ॥
प्रतीहारिनी लगीं हटावन । झुकहिं नारि देखन मनभावन ॥
पुनि कौशल्या सखी सयानी । बोलि कही मंजुल अस बानी ॥
खबरि जनावहु भूपहि जाई । परछन हित आवहिं अतुराई ॥
गई सखी भूपतिमणि पाहीं । जोरि पाणि बोली तिन काहीं ॥
कौशल्या विनती अस कीन्हीं । यह सम्पति अनुपम विधि दीन्हीं ॥
आवहिं सुख लूटहिं तिहि केरो । कृपा नयन नारायण हेरो ॥
सखी वचन सुनि अवध नरेशा । उतरि चल्यो तजि दियो गजेशा ॥

दोहा—महिषीमण्डल महिपमणि, सोहत सुभग निशंक ।
मनु तारा मण्डल विमल, उयो नवीन मयंक ॥

चौपाई

त्रिशत साठि अरु त्रयमहरानी । लाखन सखी सजीं छविखानी ॥
बजैं मनोहर बाज सुहावन । नाचहिं सखी मोद उपजावन ॥
सजी आरती थार हज़ारन । ओली भरी रत्न सखि वारन ॥
सहित पट्टरानिन कुलदीपा । गयो विमान समीप महीपा ॥
पढ़हिं स्वस्त्ययन विप्रन नारी । रानिन विधि दरशावहिं सारी ॥
जाय विमान निकट महराजा । संयुतरानिन रुचिर समाजा ॥
गुरु वसिष्ठ कहँ लियो बुलाई । आगे ठाढ़ कियो शिरनाई ॥
गुरुपत्नी अरुंधती आई । मनहुँ पतिव्रत मूर्त्ति सुहाई ॥
कौशल्या कैकयी उचारी । गुरुपत्नी पट देहु उघारी ॥
तहँ अरुंधती अतिसुख छाई । निज करसों पट दियो उठाई ॥
परे देखि अनुपम छविधामा । दुलहिन दूलह सीता रामा ॥
परयो चौंध सबके चख माहीं । मनु चपला चमकी चहुँघाहीं ॥

दोहा—देखि परे नव राम सिय, सुछवि छटा क्षिति छाय ।
मनहुँ सूर शशि एकसँग, कढ़े जलद बिलगाय ॥

चौपाई ।

गुरुआइनि पद प्रभु शिरनाये । लाजविवश पुनि शीश नवाये ॥
पुनि क्रमसों अरुंधती जाई । तीनहुँके पट दियो उठाई ॥
दूलह दुलहिन देखन हेतू । झुकीं नारि करि बहु विधि नेतू ॥
कौशल्यादि तीनि पटरानी । चढ़ीं विमान लखन हुलसानी ॥
कोशलेश कहँ लियो बुलाई । परछन करहु कही मुसकाई ॥
गुरु आगे करि गये महीपा । ठाढ़ो पूत पतोह समीपा ॥
गुरु पितु मातहि लखि रघुराई । नाय शीश पुनि रहे लजाई ॥
गाँठि जोरि तीनिहु पटरानी । खड़ो भूप गुरु आयसु मानी ॥
मणिनजटित वर कंचन थारी । कौशल्या अपने कर धारी ॥
बार बार आरती उतारति । पूत पतोहू नयन निहारति ॥
खड़ी भूपयुत तहँ कौशल्या । जनु गौतम युत लसति अहल्या ॥
दशरथ कौशल्याकी आजू । वर्णि सकै को भाग दराजू ॥

दोहा—सखी सयानी निकट लखि, राम सीय छवि देखि ।
बोली कौशल्या हुलसि, विभ्रम भयो विशेखि ॥

पद ।

देखो तो सखीरी मेरो बारो मिथिलाते आयो ।
धौं मोहींको होत महाभ्रम धौं सबको अस रूप जनायो ॥
जनककुमारी लागत कारी मोर किशोर गौर छवि छायो ।
मिथिला की नटखटी नागरी जादू पढ़ि टोना डरवायो ॥
हँसि बोली सजनी रानीसों स्वामिनि मोहिं सत्य अस भायो ।
राम सुछवि सिय श्यामा लागत सिय छवि राम गौर दरशायो ॥
करौ भाग्यवंतिन परछन अब अस सुख त्रिभुवन कोउ नहिं पायो ।
दीन सुछवि सब गुण समेटि कै विधि रघुराज कुँवर जनमायो ॥

दोहा—कह्यो वसिष्ठहिं कौशला, लै अरुंधती संग ।
प्रथम करहु परछन तुमहिं, करि विधान श्रुति संग ॥

पद ।

गुरु अभिमत सुनि अति हुलसान्यो ।
लै अरुन्धती गाँठि जोरिकै धनि धनि भाग्य आपनी मान्यो ॥
रत्नखचित लै कनकथार कर दधि अक्षत हरदी द्रुत सान्यो ।
दुलहिन दूलह भाल विशालहि दै टिकुली उर आनँद आन्यो ॥
लगी उतारन आरति दंपति इकटक निरखि जन्मधनि जान्यो ।
श्रीरघुराज काज करि मुनिवर आजु सुकृतफल मन अनुमान्यो ॥

दोहा—कह्यो भूपसों गुरु वचन, गाँठि जोरि अव आय ।
परछन करहु भुवालमणि, वेद विधान वनाय ॥

पद ।

होने लग्यो परछन तिहि काला ।
करि कर थार भुवाल रानियुत लग्यो उतारन आरतिहाला ॥
छवि छकि पूत पतोह वदन लखि बार बार नृप भयो निहाला ।
कौशल्या कैकयी सुमित्रा लै लीन्हीं आरती उताला ॥
लगीं आरती उमँगि उतारन दुलहिन दूलहको दै माला ।
पूत पतोहुनको मुख देखत जननी आनँद लह्यो विशाला ॥
श्रीरघुराजकीलेत बलैयां जन्मजन्मको मिट्यो कशाला ।
लियो छुड़ाय आरती निज कर लग्यो उतारन पुनि महिपाला ॥१॥

पुनि रानी आरती उतारी ।
कौशल्या कैकयी सुमित्रा बार बार छवि छकैं निहारी ॥
बहुरि उतारति मुशल मथानी दीप उतारि फोरि पुनि डारी ।
बार बार पुनि सलिल उतारैं लोक मंत्र बहुभाँति उचारी ॥
देखहिं पूत पतोहुनको मुख क्षण क्षण मणिगण निजकर वारी ।

यहि विधि चारिहु कुँवरनको करि परछन रानी लहि सुखभारी ॥
चारिहु दुलहिनि दूलहको तब लिय विमानते आशु उतारी ।
होन लगी निछावर तिहि क्षण मणिगण पटभूषण जरतारी ॥
राई लोन उतारि सखीजन पढ़ि मंगल मनु पावक डारी ।
गावहिं मंगल शोर मनोहर श्रीरघुराज जाहि बलिहारी ॥२॥

दुलहिन दूलह चलीं लिवाई ।
सकुचत सिय सासुनको निरखति चलति मंद पदपदुम उठाई ॥
पग आगे सखि धरहि ठीकरी सिय पग गहि तिहि देहि छुआई ।
कहहि रामको लाल उठावहु प्रभु जननी लखि रहें लजाई ॥
पुनि प्रभु को करकमल पकरि अलि लेहि ठीकरी हठि उठवाई ।
यहि विधि हास विलास विविध विधि करहिं सखी कौतुक दरशाई॥
गावत बाज बजावत बहु विधि नाचहिं भाव बताय बताई ।
बैठाई रघुराज वधू वर रंगनाथके मंदिर ल्याई ॥ ३ ॥

करवावतीं वर वधुन कर श्रीरंगपूजन विधिसहित ।
सिय रामको सिखवहिं सखी इनकी कृपा मेटति अहित ॥
करि छोह पूत पतोहु को बहु दान करवावहिं सुखित ।
सब रंगनाथ मनावती निज ओड़ि अंचल चित चहित ॥
सिय राम पूत पतोहु मिलहिं अनेक जन्मनि जनै जित ।
युग युग जियें जोरी सुचारिहु लखैं हम यहि भाँति नित ॥
यहि विधि मनावैं पुनि खिलावैं द्यूत दोहुन मोद मित ।
कोउ कहैं मोरि पतोह जीती कोउ कहैं मम लाल जित ॥
रनिवास हास विलास यहि विधि होत सखिगण अति हँसित ।
शिर नीच करि दूलह दुलहिनी बैठि गुरुजनको लजित ॥
यहि भाँति लोकाचार करि सब वर वधुन लै गईं तित ।
जहँ सभा मंदिर बन्यो सुंदर विशद मणिगणते जटित ॥

तहँ मातु कौशल्या सुमित्रा कैकयी कछु ह्वै श्रमित ।
बैठाय पूत पतोह आगे सुछवि लखि सब भईं चकित ॥
कुलनारि सब रघुवंशकी देखहिं दुलहिनी आइ इत ।
रघुराज अंगन में विराजित देव जय जय आलपित॥४॥

सखी लखु सिय बनरी घर आई ।
परछन करि सब सासु उतारी पुनि पुनि लेत बलाई ॥
पावरि डारति मणिगण वारति लै आई अँगनाई ।
घूँघुट खोलति कोटि शशीसम फैली फरश जुन्हाई ॥
चितवहि चकित देखि दुलहिनको आनँद सिंधु अन्हाई ।
हेरि थकी सिय मुख पटतर छवि त्रिभुवनमें नाहिं पाई ॥
कौशलपति शत शक्र साहिबी वारयो सासु लजाई ।
वदन विलोकि नेग देवे को कछु नाहिं जिय ठहराई ॥
सखि मिसि गिरिजा गिरा इन्दिरा देखनहेत सिधाई ।
श्रीरघुराज गुमान रूपको दीन्ही वदन दिखाई ॥५॥

दोहा–सुतवधुन युत पुत्र लै, बैठीं वर दरबार ।
सुर सुंदरी समाज लै, गावहिं नाचि अपार ॥

चौपाई ।

उतै वसिष्ठसहित महराजा । गे बाहर जहँ भूपसमाजा ॥
चढ़ि सिंधुर मंदिर तहँ गवने । हिमगिरिसम उतंग जे भवने ॥
पुनि शोभा निरखहिं महिपाला । नाहिं अमरावति कौनहु काला ॥
लसहिं कनकध्वज तुंग पताके । मनहुँ भवन त्रिभुवन ताराके ॥
कदली क्रमुकखंभ प्रति द्वारा । कनकपत्र फल फूल अपारा ॥
हेमकुंभ दीपावलि सोही । खड़े नारि नर सुखसंदोही ॥
वृन्दन वृन्दन बन्दनवारा । चामीकरके चारु किवाँरा॥
धौल धाम हिमवान समाना । अटा अनेकन छटा अमाना ॥

दीपावलि सिगरे पुर माहीं । खैर भैर थल थल चहुँचाहीं ॥
पुरजन अति आनँद रस साने । वित्त लुटावत नाहिं अघाने ॥
आय आय नरनाथ जुहारें । देहिं नजरि बहु मणिगण वारें ॥
वरणै कौन अवधपुरशोभा । सुर नर मुनिमानस लखि लोभा ॥
दोहा—यहि विधि निरखत नगर छवि, सहित समाज नरेश ।
किया राजमंदिर सुखद, समय विचारि प्रवेश ॥

चौपाई ।

बैठ्यो सभाभवनमहँ जाई । राजसमाजसहित छवि छाई ॥
नेउतहरी भूपति सब आये । यथायोग्य सब कहँ बैठाये ॥
भूपति किया सबन सत्कारा । विनय किये ते ज्ञान अगारा ॥
देन लगे नृप तिनहिं विदाई । रथ तुरंग मातंग मँगाई ॥
रत्न आभरण अम्बर नाना । जो जन जौन लेन ललचाना ॥
सकल कहहिं नृप आजु कुबेरा । देत लगत लघु जाहि सुमेरा ॥
प्रीति रीति वर विनय बड़ाई । को अस जाहि तुष्टि नहिं आई ॥
वर्णत दशरथ सुयश नृपाला । निज निज देशन चले उताला ॥
भूप युधाजित दशरथ स्याला । आयो बिदा होन तिहि काला ॥
करि सत्कार अवधपति बोले । बनत न अबै आपके डोले ॥
बसे युधाजित भवन बहोरी । कह्यो भूपगुरु विनती मोरी ॥
चलहु नाथ मम सँग रनिवासा । देहु दुलहिनिन सुंदर वासा ॥
दोहा—अस कहि भूप वसिष्ठ लै, गयो आशु रनिवास ।
माच्यो जहँ बैकुण्ठसम, सुंदर हास विलास ॥

चौपाई ।

गुरु भूपति लखि उठी समाजा । आनि सिंहासन युगल दराजा ॥
यक महँ गुरु वसिष्ठ बैठायो । महा विशद जो द्वितिय सुहायो ॥
भयो विराजमान अवधेशा । गुरु वसिष्ठ तब दियो निदेशा ॥

रानी राजहु पूत पतोहू । बैठि सिंहासन सुखसंदोहू ॥
मम करते अभिषेक करावैं । मंगलमूल सकल विधि पावैं ॥
नृपति मुदित तीनिउँ पटरानी । बैठायो सिंहासन आनी ॥
चारिउ कुँवर चारि कुँवरानी । बैठायो आसन सुखमानी ॥
चलैं चारु चामर चहुँ ओरा । छजत छत्र मणिखचित करोरा ॥
रत्न दीप फैली उजियारी । नाचि रहीं सन्मुख सुरनारी ॥
तिहि अवसर अवास आनंदा । किहि विधि वरणौं मैं मतिमंदा ॥
गुरु उठि अर्घ्यपात्र कर लीन्हा । वेदमंत्र अभिमंत्रित कीन्हा ॥
किय वर वधू सविध अभिषेका । अधिष्ठान करि यथा विवेका ॥

—वास्तुकर्म करि भवनको, गवन कियो गुरु गेह ।
भूप कहन लागे कथा, यथा विदेह सनेह ॥

चौपाई ।

कोउ नहिं जनकसरिससत्कारी । मैं लीन्हों सब भुवन निहारी ॥
गये बरात मनुज वहु लाषा । को अस जिहि न पूरि अभिलाषा ॥
जनकराज गुण शील बड़ाई । प्रीति रीति संपदा सुहाई ॥
सुनि सुनि अति हरषहिं सब रानी । कौशल्या बोली तव वानी ॥
सुनहु भूप मम मति अकुलानी । जिय संदेह न जाय वखानी ॥
डरत रहे गवनत अँधियारे । कुँवरन कौन विधि निशिचर मारे ॥
थकत उठावत भाजन हाथा । हर धनु किमि तोरयो रघुनाथा ॥
विहँसि भूप बोल्यो तव वानी । औरहु अचरज सुनु महरानी ॥
गौतमको आश्रम रह सूना । कौशिक गे लिवाय दोउ सूना ॥
प्रविशत आश्रम गौतमनारी । नाम अहल्या जासु उचारी ॥
रही शापवश अन्तर्धाना । प्रगट भई पूज्यो विधि नाना ॥
जनकनगरते आवत माहीं । मिलेकोपिभृगुपति मुहिं काहीं ॥

दोहा—धनुषभंग अपराध गुनि, कीन्ह्यो कोप अपार ।
करन चहत संहार जनु, कंधहि धरे कुठार ॥

चौपाई

हम तौ शुनि रघुकुल कर नाशा। भये विकल तजि जीवन आशा॥
तहाँ जाय यह लाल तुम्हारा। कोमल कठिनहुँ वचन उचारा॥
छीनि शरासन भृगुपति केरो। दीन शांत करि कोप घनेरो॥
यह वसिष्ठ कौशिक प्रभुताई। और हेतु नहिं परै जनाई॥
सुनि रानी मन अचरज मानै। राखे कुँवर मोर भगवानै॥
भूपति कह्यो सुनो सब रानी। पुत्रवधू प्राणहुँ प्रिय मानी॥
नयन पलक सम राखेहु नीके। दिन दिन दून उछाह न जीके॥
रंच विसंच होन नहिं पावै। नेक विषम तिनके नहिं आवै॥
जनकराज अरु रानि सुनैना। चलतसमय मोंसे कह वैना॥
सौंपौं तुमहिं कुमारी चारी। तुमहिं मातु पितु परहु निहारी॥
दून होय सुख नैहर केरे। तव मम वचन सत्य जे टेरे॥
कैकयसुता कही कर जोरी। होई यहै गिरा सति मोरी॥

दोहा—पुत्रवधू अरु पुत्र मम, सबते प्राण पियार।
औंघाते सुत नींदवश, चलहु करहु ज्यवनार॥

चौपाई।

अस कहि उठीं सकल तहँ रानी। पट नवीन चेरी बहु आनी॥
आप पहिरि सुत तिय पहिराई। कुँवरन भूपहुपहँ पठवाई॥
भोजन वसन पहिरि महराजा। कुँवर समेत महा छवि छाजा॥
शुद्ध सतोगुण सुन्दररूपा। भोजनभवन गयो पुनि भूपा॥
रानी पुत्रवधुन लै आई। निज निज संग सकल बैठाई॥
भूप संग बैठे सब भाई। होन लगी ज्यवनार सुहाई॥
गावहिं रसिआउर सब नारी। बजै मृदङ्ग बीण मनहारी॥
सियकरसों भूपहि परसावैं। श्वशुर हाथ पुनि नेग दिवावैं॥
सकुचहिं दुलहिन दूलह देखी। भोजन करैं न अशन विशेखी॥

कार आचमन उठि नरनाहू । धोइ चरण कर गुनि सुख लाहू ॥
बैठि पुरट पीठमहँ जाई । तीनिउँ रानिनि लियो बुलाई ॥
कह्यो वदन देखनको चारा । करवाओ लागै नहिं वारा ॥

दोहा—राजकुमारिन चारिहू, रानी आशु लिवाय ।
बैठाई भूपति निकट, कुलतिय वृद्ध बुलाय ॥

कवित्त ।

नृपति निकट सिय सासुकी लिवाई आई,
ता क्षण मृगाक्षिणके हेरे हियो हरिगो ।
रघुराज उलही दुकूलनते अंग ओप,
चंचल चमक चौंध लोचनमें भरिगो ॥
घूंघुट उघारि मुख देखन दशा विसारि,
फैलत प्रकाशपुंज चंद मंद परिगो ।
गिरिजा गिरा गुमान ब्रह्म जाको भूल्यो भान,
कामवाम रूपको बखान कूच करिगो॥ १॥
रति रंभा मेनका तिलोत्तमाहू पूर्वचित्ति,
उर्वशी घृताची आदि अप्सरा अपार हैं ।
रघुराज अवध अधीश जूके अंगनमें,
गावैं नाचि रंगनमें अंग सुकुमार हैं ॥
शक्ररानी ब्रह्मरानी शंभुरानी विधुरानी,
देवरानी जेती आईं अवध अगार हैं ।
मिथिलानरेन्द्रकी कुमारीको वदनचंद्र,
देखि मंद परीं जैसे इन्दु आगे तार हैं ॥२॥
कौशला हुलसि हँसि क्षोह सो पतोह मुख,
घूँघुटको टारयो प्रभा पुंज दिशि छायगो ।
परयो सबहीके चख चौंधासो चहूंघा चितै,

चकित चितौन लागी भानुतो भुलायगो ।
रघुराज पलक निवारिकै निहारि छके,
रति रुचिराई को गुमानहू हिरायगो ।
फैलत प्रकाश को पसारा अभिमान सारा,
तारनसमेत तारापतिको परायगो ॥ ३ ॥

दोहा—कह्यो तुरत कैकयसुता, वदन दिखाई नेग ।
जनकदुलारी को अबहिं, देहु महीपति वेग ॥

कवित्त ।

बोल्यो रघुराज राजराज शिरताज सुनो,
कैसे करौं पूरो काज लाज करि हारौंगो ।
करतो विचार बार बार मैं खभारहीं सों,
होत है लचार जिय कैसे निरधारौंगो ॥
भूषण वसन गेह गाउँकी चलावै कौन,
संपति सकल ढूँढि ढूँढि मुख वारौंगो ।
अवधकी साहिबी अमरपति साहिबीहूं,
तूलिहै न नेक जो अनेक दयडारौंगो ॥ १ ॥
लोकनकी लाज लैकै शीलको बनायसांचो,
चित्रको रचाय चित्रकारकै मदनको ।
शैलजाते शारदाते तैसेही पुलोमजाते,
शोभा लियो छीनि रति मदके कदनको ॥
भाषौं सत्य रघुराज आजु सुनो प्यारी करि,
सुन्न सुंदराईते त्रिलोकके सदनको ।
सुधा लै सुधाकरकी लूटि वसुधाकी दुति,
हदकै बनायो विधि जानकी वदनको ॥ २ ॥

सोरठा—रहिहौं ऋणी सदाहिं, कहा देहुँ कछु जँचत नाहिं ।
दीबेको कछु नाहिं, वदन दिखाई नेगको ॥

चौपाई

अस कहि पाय परम अहलादा। दियो महीपति आशिर्वादा ॥
पूत पतोहू जियें युग चारी। अवध प्रजा नित करहिं सुखारी ॥
पुनि बुलाय तीनिहुँ पटरानी। कह्यो बुझाय महीपति बानी ॥
सोपति किह्यो पतोहुन केरी। रंचक नहि बिसंच जिहि हेरी ॥
ये नववधू विदेह दुलारी। नयन पलक सम करि रखवारी ॥
याम याम महँ सुधि सब लैकै। कीन्ह्यो सोपत सब सुख दैकै ॥
कनक भवन सीता कहँ देहू। मांडविको मणिमंदिर गेहू ॥
उर्मिलाको सुखवासू। श्रुतिकीरति कहँ प्रीति विलासू ॥
पृथक्पृथक् दुलहिन लै जाई। निज निज भवन देहु बैठाई ॥
सुनि भूपतिके वचन विचित्रा। कौशल्या कैकयी सुमित्रा ॥
चारिहु दुलहिनि लियो लिवाई। पृथक्पृथक् दिय भवन बताई ॥
महाविभूति भरी जिन माहीं। स्वप्नेहुँ शक्र लख्यो जो नाहीं ॥

दोहा–सब विभूति वैकुंठकी, अवधमाहिं दरशाति।
अहिपति शंकर शारदा, वर्णत नाहिं सिराति ॥

चौपाई।

ते महलनमहँ राजकुमारी। निवसत भईं लहत सुख भारी ॥
पुनि भूपति कढ़ि बाहर आये। सचिव सुमंत तुरंत बुलाये ॥
कह्यो जु मिथिला ते जन आये। दुहितनके सँग जनक पठाये ॥
सहित सकल सोपत सतकारा। बास करावहु विशद अगारा ॥
जाय सुमंत कियो तिहि भाँती। मिथिलापुरवासिन सोइ राती ॥
वसे सकल सुख सहित अगारा। वर्णत दशरथ कृत व्यवहारा ॥
भूप शयनहित भवन सिधारे। गावत हित गायक पगु धारे ॥
रानी निज निज मंदिर आई। सुत हित गौरि गणेश मनाई ॥
राम सुहृद जेठी कुल नारी। जाय रामसों वचन उचारी ॥

कनक भवन कहँ चलहु पियारे । अर्द्ध निशा पाहरू पुकारे ॥
करकरि करमहँ चली लिवाई । मंद गवन लज्जित रघुराई ॥
पलटी सखी राम पहुँचाई । लै गवनी पुनि तीनिहुँ भाई ॥

दोहा—तिनके तिनके भवनमहँ, बंधुनको बैठाय ।
आप जागरण करन हित, गावन लगीं सुहाय ॥

चौपाई ।

भई महा सुखछावनि रजनी । गाय बजाय बितायो सजनी ॥
वर्णन करब कथा सुख मोई । मम अधिकार अहै यतनोई ॥
रास विलास कथा नहिं जानौं । दासते अधिक और नहिं मानौं ॥
भये अनेकन रसिक शृंगारी । ते रसरास कथा विस्तारी ॥
नहिं शृंगार कथन अधिकारा । ताते कह्यों न राम विहारा ॥
सुखित शयन कीन्हें रघुराई । आगिल कथा सुनहु मनलाई ॥
सो रजनी सब नगर मँझारी । अवधप्रजनको किये सुखारी ॥
घर घर बाजहिं बाजि बधाऊ । राम आगवन भयो उराऊ ॥
अंतहपुरमहँ सब रनिवासा । करहिं अनेकन नाचि तमासा ॥
तिहि रजनी सोयो नहिं कोऊ । रह्यो जु भीतर बाहर सोऊ ॥
चारि दंड निशि रहिगे बाकी । लालशिखा धुनिभयसुखछाकी ॥
पुनि प्रगटी पूरब अरुणाई । कोक थोकको शोक मिटाई ॥

दोहा—चटकाली चहुँकित चटक, बोलि उठी गुनि भोर ।
बोलन लगे विहंगवर, चाय भरे चहुँओर ॥

चौपाई ।

तहँ बंदीजन अवसर जानी । मागध सूत महामुद मानी ॥
पृथकपृथक महलन मुदपागे । द्वार द्वार यश गावन लागे ॥
भूपति विरद विरति सविवेका । करणी जो सुरपतिहु न छेका ॥
लै इक्ष्वाकु वंश ते आजू । गायो यश यश दशरथ राजू ॥

ज्यों भूप सुमिरन भगवाना । रघुपतिदरशनको ललचाना ॥
प्रातकृत्य करि बाहर आई । सविध कियो मज्जन मन लाई ॥
दीन्ह्यो दान वित्त बहु गाई । लहैं राम मंगलयुत भाई ॥
सजि पट भूषण सचिव बुलाई । बैठ सभामहँ दशरथ आई ॥
उतै कुँवर सब उठे प्रभाना । प्रातकृत्य कीन्हें अवदाना ॥
मज्जन करि दीन्हे बहु दाना । साजि भूषण अंबर विधि नाना ॥
तिहि अवसर नृप दूत पठाई । लियो चारिहू कुँवर बुलाई ॥
गये पिता ढिग किये प्रणामा । पितु आशिष दै लहि मुद धामा ॥

दोहा—शीश सूँघि बैठाय ढिग, अनिमिष निरखि स्वरूप ।
लहि नरेंद्र आनंद अति, बोल्यो वचन अनूप ॥
भयो विवाह सयान अब, भये चारिहू बंधु ।
ताको तस तुम मानियो, जाको जस सम्बंधु ॥
धर्मरीति नृपनीति सब, प्रीति प्रजनसों ठानि ।
विलसहु नित कोशलनगर, दयादीठि दृग आनि ॥
सुनि पितुशासन कुँवर सब, लीन्हें शीश चढ़ाय ।
भोजनको गवने भवन, पठई मातु बुलाय ॥
यहि विधि नित निवसत अवध, सेवत पितु दिनराति ।
बीतत काल अनंदसों, कथा न कहे सिराति ॥
अष्ट याम यक दिवसको, वरणो मति अनुसार ।
सुनैं रसिकजन हुलसिअति, सुंदर शतकाशिकार ॥

कवित्त ।

ज्ञान वैराग्य भक्ति योगमें अनन्त सुख,
रसिक अनेकन शृँगार अधिकारी है ॥
केते राम रास गाये केते अष्टयाम गाये,
केतेहूं शिकार गाये कवित उचारी है ॥

मेरो अधिकार नाहि और रस केरो कछु,
हम दशरत्थलाल सेवा सुखधारी हैं ।
ताते रघुराज थोरी वरणे शिकारे गाथा,
रसिक सुजाननको लागै प्राणप्यारी है॥१॥
शांत औ शृँगार दास्य वात्सल्य सख्य रस,
भक्तजन पांचै भावनाको भाव धारे हैं ।
मोहिं गुरु दीन्ह्यो दास्यभाव ताते रघुराज,
सत्य सत्य सत्य ऐसे वचन पुकारे हैं ॥
प्रभुके समान स्वामी सख्यरस वारे पिता,
वातसल्य- वारे पितामहसे उचारे हैं ।
शांत वारे गुरु हैं शृँगार वारे मातासम,
भ्राता बंधु मित्र दास्यवारे ते हमारे हैं ॥२॥
चारि दंड जानिकै त्रियामा मतिधामा यंत्री,
बादन विविध लैकै द्वारदेश आये हैं ।
जानकीरमणके जगावनके हेतु सबै,
भैरों राग भरि अनुराग मुख गाये हैं ॥
रघुराज राजशिरताजके दुलारे वीर,
जागिये जगतपति जग सुख छाये हैं ।
भुवनप्रशंस निज वंश अवतंस जानि,
आवत दिवाकर दरश ललचाये हैं ॥ ३ ॥
हौं तौ मुखसमता न पायों सो लजायो रह्यों,
अब तो प्रकाशहू को चहत गवायो है ।
ऐसो कै विचार लैकै तारन अपार सँग,
अत्रिको कुमार पारावारमें दुरायो है ॥
विलसे कमल जय जानि जानकीके जानि,

शोर खगवृन्द चन्द्रहास सों सुनायो है।
रघुराज रावरे दरश ललचाई अरु-
णाईदिशि प्राचीअनुराग को जनायोहै ॥४॥
मिलन लगेहैं शोकी कोकीकोक ह्वै अशोक,
कोकनद कली अली गली पाइ भागे हैं।
शीतल सुगंध मंद पवन पराग भरो,
प्रसरन लाग्यो लालशिखा रव रागे हैं॥
बिरले गगन तारे हारे दलही से शूर,
परत निहारे झल मल ज्योति जागे हैं।
रघुराज वंश गुरु हंसकी सहाय कीजै,
उदयमान भानुके दनुज सँग लागेहैं ॥५॥
वंदिन उचारे बैन सुनिकै नरेश प्यारे,
नींदको बिसारे द्वारदेश पगुधारे हैं।
नैन अरुणारे मुख बिथुरे सुकेश कारे,
ताजे शिर धारे नाहिं भूषण सँवारे हैं॥
लटपट परत पग मग आलस वारे,
खसत वसन करकमल सुधारे हैं।
सेवनकी आशवारे सेवक अपारे तिमि,
रघुराज रामसखा आइकै जुहारे हैं ॥ ६ ॥
सज्जन अनंद कर मज्जन निकेत जाइ,
पावन जगत दन्त धावन करत भे।
कंचन कुलिश कृत कुंभनि सुगंध नीर,
न्हाइ रघुवीर पट पीत पहिरत भे॥
दीन्ह्यो अर्घ्य अंशुमानै उपस्थानै कियो फेरि,
संध्या सविधानै करि आनँद भरत भे।

रघुराज चंदनकी रेख दै अशेष शोभ,
दाने असथानै फेर आइकै अरत भे ॥ ७ ॥
दीन्ह्यो तिलधेनु दश धेनु हेमधेनु पुनि,
तरह सहस्र धेनु दीन्हे हेम शृङ्गी हैं ।
अवनी अभूपण दै अन्न दीन्हें अंबर दै,
शय्यादान दीन्हें गज बाजि बहु रंगी हैं ॥
अगणित आये द्विजवृन्दन अनन्दनसों,
पूरे मनकाम रघुनन्दन उमंगी हैं ।
रघुराज राम दानधाराके प्रवाहभये,
दरिद्रके दरिद्री विप्र आनँदके दंगी हैं ॥८॥
तर्पन हवन आदि प्रातकर्म कैकै पुनि,
दीन्ह्यो माथे मुकुट अनन्त भानुभासी है ।
जामा जरकसी वारो फेटो मुक्त छोरवारो,
हीरनको हारो धारो अंगद विभासी है ॥
करमें कटक अंगुलीन मुंदरीन रचि,
कटि करवाल पीठि तूण शरराशी है ।
धारे धनु एक हाथ एक हाथ सखा हाथ,
आयो रघुराज सभा अवध विलासी है॥९॥
औसर विचारि पौर प्रकृती अमात्यगण,
सखा सरदारे ते सिधारे दरबार हैं ।
पुरकाज भृत्यकाज गृहकाज राजकाज,
अरज सहित निज गरज उचारे हैं ॥
समुझि निदेश दै दै कीन्हे कृतकाज तिन्हें,
रघुराज धर्मयुत हुकुम निकारे हैं ।
सुखको पसारे दीन दुखन निवारे न्याउ,

नीकेनिरवारप्रजा कीन्हे जयजयकारहै १०॥
वासर विचारि डेढ पहर व्यतीतो राम,
विदा करि मंत्रिनको सखा वयठारे हैं ।
लषण भरत शत्रुसूदन पठाइ दूत,
तुरत बुलायो के शिकारके विचारे हैं ॥
गावे लगे गानवारे नाचे लगे नृत्यवारे,
बाजन बजावें वाद्यवारे सुर धारे हैं ।
राज शिरताज महाराजके दुलारे राम,
जन रघुराज पीछे चारु चौंर ढारे हैं ॥११॥
बाँकी पाग पेचैं बाकी कसी शिर पेचैं बाँकी,
भ्रुकुटीन ऐचैं बाँकी कलँगी सँवारे हैं ।
बाँकी करवाले बाँकी कसी कवि ढालैं बाँकी,
पीठि ढपी ढालें बाँके नयन अरुणारे हैं ॥
रघुराज यौवन ललाई मुख बाँकी फवै,
बाँकी गति बाँके सखा संग अनियारे हैं ।
आये श्रीलषण प्यारे कैकयीकुमारे तिमि,
सभा पगुधारे शत्रुदमन दुलारे हैं ॥१२॥
रामको प्रणाम करि बैठे बंधु आस पास,
हास इतिहासन अनेक परकाशे हैं ।
भुवन विभूषणते भासे भास भासवान,
सज्जन सुशीश शीतभानसे विलासे हैं ॥
रघुराज लोने लोकपाल उपमासे खासे,
बैठे आमखासे काम धामको निरासे हैं ।
राम मुख वचन सुधासे सुनिवेके प्यासे,
हियके हुलासे मृगयाके गौन आसे हैं १३॥

जानि रुख बंधुनकी खेलियो शिकारआजु,
विपिन मझार राम गिरा यों उचारी है ।
भाई सखा बोले एक बार सबै मोद भरे,
आछी कही आप अभिलाषऊ हमारी है ॥
वेगि प्रतीहारको बुलाइकै निदेश दीन्ह्यो,
सैन्यको सजाइये शिकारकी तयारी है ।
दूत दौरि द्रुतही दिवाइ दियो दुंदुभीको,
रघुराज आई सैन्य सुनत शिकारी है॥ १४॥
गहे हाथ बंधुनको गौने रघुनाथ तहाँ,
होत भे मतंगजपै तुरत सवारे हैं ।
भाई सरदार सखा ह्वै सवार सिंधुरपै,
सबै प्रभु संग संग मंद गति धारे हैं ॥
भूप चक्रवर्तीको निदेश वेश लीबे हेत,
चले पितु द्वार देश सुखमा पसारे हैं ।
रघुराज धाम धाम ठाढ़े पुरवासी कोटि,
काम धामवारे राम वदन निहारे हैं ॥१५॥
शत्रुंजय सिंधुरपै सज्जित अमारी भारी,
मोतिन किनारी झपी झूल जरतारी हैं ।
नेजे पाणिधारी राजवंशी बड़वारी भरे,
आगू चली आवैं वीर वाजिन सवारी हैं ॥
लषण भरत शत्रुसूदन विराजैं संग,
शोभित मतंगन शिकारकी तयारी हैं ।
जागरे कलापैं यश विविध अलापैं अस,
आयो रघुराज दशरत्थ घरियारी है ॥१६॥
पृथ्वीपाल मणिपास परुयो प्रतीहार राम,

शासन जो होइ तौ शिकार खेलि आइये ॥
सुनत नरिन्द्र इन्द्र हुलसि हुकुम दीन्ह्यो,
खेलिकै अखेटकको साँझलों सिधाइये ॥
सुनिकै कुमार मानि आनँद अपार चले,
खेलन शिकार कहि वाजिन धवाइये ।
तीरनसे तरणिसे तडितसे तानहींसे,
तड़के तुरन्तहीं तुरंग रंग छाइये ॥ १७ ॥
कढ़ि पुर बाहर निहारचो चारु चमू राम,
बंधुन सखानि त्यों हजूरी चतुरंगको ।
पृथक पृथक आवैं धुधुरि गगन छावैं,
ढंग दिखरावैं त्यों मतंगन तुरंगको ॥
रघुराज निकट प्रतापी सखा ठाढ़ो सुखी,
भाषे रघुराज भरि अतिशै उमंगको ।
भाइनकी भृत्यनकी सखन सुहृदहूकी,
सहज शिकारी सैन्य आवै मम संगको॥ १८॥
सोहैं गोसवारे शीश सँवले सजीले खूब,
नेजे रंग नीले चटकीले त्यों तुरंग हैं ।
ढांपे पीठि ढाल द्युति दीपति त्यों हालैं कसी,
कटि करवालैं उरमालैं त्यों सुरंग हैं ॥
रघुराज राजै राजवंशी शत्रु सैन्य ध्वंसी,
जगतप्रशंसी भरे ज्वानीके उमंग हैं ।
आवत लषण लाल वीरनके मालमध्य,
जापै आजु वारिये अनेकन अनंग हैं ॥ १९॥
मदसे उमंग महीधरसे मतंग राजैं,
मण्डित अखण्ड मंजु मदन सँवारे हैं ।

जटित अमारी भारी माणिक मणीनहूंकी,
मंदगति मानो महा मेघन अतारे हैं ॥
डग मग महिमहँ धरहु धरत पग,
सजित शिकार राजकुँवर सवारे हैं ।
रघुराज भूरि भीर लीन्हें रणधीर वीर,
भरत कुमार आवैं सुखित शिकारे हैं ॥२०॥
माथनपै टोप झूलैं झिलिम सुझप्पेदार,
कलँगी कलित बादलेकी लोनी लाल हैं ॥
चामीकर कवच जटित दसताने पाणि,
कसे ढालैं ढालैं त्यों करालैं करवाल हैं ।
राजत तुरंगन मतंगन सतांगनमें,
सरयू वनांगनमें जागै ज्योतिजाल हैं ॥
रघुराज राजवंशिन समाज मध्य,
आवैं शत्रुशाल साँचो सह शत्रुशाल हैं २१॥
एक ओर गर्वित गयंदन कतारे भारे,
यक ओर हैवर हजारे वेगवारे हैं ।
एक ओर पैदर अपारे सबै शस्त्रधारे,
एक ओर प्रतीहारे सुयश उचारे हैं ॥
दुन्दुभी धुकारे सुनि दिग्गज चिकारे करैं,
छावत दिगन्तनलौं धूरि धुंधुकारे हैं ।
रघुराज आये लक्ष्मीनिधिहुँ शिकारे प्यारे,
सारे हैं हमारे मिथिलेशके दुलारे हैं २२॥
एकै ऐंड़वारे एकै सोहैं शूर सानवारे,
एकै तेजवारे एकै तीछे तेग धारे हैं ।
एकै बाजवारे एकै मनके सुमोजवारे,

खास खास फौजवारे तुरंग सवारे हैं ॥
बाँके वेसवारे रण कबहुँ न हारे मारे,
रिपुन प्रचारे जग यश उजियारे हैं ।
रघुराज प्राणप्यारे अति अनियारे वीर,
आवत शिकारे सखा सकल हमारे हैं॥२३॥
शेरके समान जन लीन्हें सावधान श्वान,
झूलन ढपान जिन वेग वेप्रमान हैं ।
चीते चारु चित्रसे लिखे हैं जे विचित्र वप,
बांसा बाज बहरी गनावें को न मान हैं ॥
सुघर शिकारी जे शिकारकी तयारी किये,
विपिनि खिलारी शोधकारी सहसान हैं ।
रघुराज संगमें हजूरी सैन्य पूरी लैकै,
आवत सुमन्तसूनु सचिव प्रधान हैं॥२४॥
पागे शीश हरित हरित कटि फेटे कसे,
कंचुक हरित रङ्ग रंचुक न ओर हैं ।
हरित तुरङ्गन मतङ्गनकी सजा,
आयुध हरित पट छादत सुछोर हैं ॥
सावन विपिन सुखमासी चहुँ ओर छावै,
उपमा न जासु भट सुखमा करोर हैं ।
रघुराजसहित शिकारिन समाज आज,
आवत निषादराज प्यारे सखा मोर हैं ॥२५॥
चाय भरी चारु चतुरङ्ग चमू बन्धुनकी,
सखनकी सैन्य त्यों सजीली सब आइगै ।
धूरि धुंधकार बेशुमार आसमान छायो,
भासवान भास त्यौं दिगन्तन दुराइगै ॥

रघुराज अवध नरेशके दुलारे जात,
सहज शिकार भूमि भूरि भार खाइगै ।
दिशा गज भागै लगे शेष फन फाटे लगे,
कमठकी पीठि काचे घटसी नवाइगै ॥२६॥
कनक सँवारे बजे विविध नगारे भारे,
आवत अषाढ मनो घन घहरारे हैं ।
जागरे अपारे यश विविध उचारे नव,
नौबत धुकारे करनालै शोर प्यारे हैं ॥
वाजी पै सवारे भये बंधुन हँकारे राम,
नेजा कर धारे सखा सङ्ग पगु धारे हैं ।
सरयूकिनारे महा विपिन मझारे दश-
रत्थके दुलारे खूब खेलत शिकारे हैं॥२७॥
रघुराज आइकै निषादराज विनय कीन्ह्यो,
विपिन मझार एक सिंधुर बलंद है ।
सुनिकै पुरुषसिंह सिंह लै शिकारी संग,
तरल तुरंगको धवायो रघुनंद है ॥
छोड्यो सिंह सिंधुरपै लीनी ललकार दैकै,
केहरी धर्‍यो है करि वेगकै अमंद है ।
इतै मृगराज खायो काय गजराज केरी,
उतै गयो गोपुरको गर्वित गयंद है॥२८॥
आइकै प्रतापी सखा भाष्यो नाहिं मृषा भाषौं,
बाघ एक बैठ्यो देखि आयो यहि याम है।
सुनत हीं चारों बंधु धाइ अति चाय भरे,
दीन्ह्यों घाय नेजाकै करेजा वध काम है॥
ताहिललकारयोसोऊमरयोकरिशोरभारयो,

मानो यों पुकारयो रघुराजै कृतकाम हैं ।
जैसे ललकारि मोहिं मारयो बरछीसों राम,
तैसे ललकारिहौं तो लेतो तुव धाम हैं ॥२९॥
चीते चाय छूटे चारु चपल कुरंगनपै,
तरल तुरंगन सवान हू धवायेहैं ।
धरयोहै धरयोहै अस करत पुकार प्यार,
वाजीको धवाय केते नेजाको चलाये हैं ॥
वाह वाह भापि रघुराजजू उछाह छाये,
देत हैं इनाम सखा सुखी शिरनाये हैं ।
सखनके मारे त्यौं मृगादनके मारे मृग-
नके यमसदनको जनम न पाये हैं ॥ ३० ॥
कोई मृग मारे कोई शेरन सँहारे कोई,
सिंधुर प्रहारे ल्याइ ल्याइ न्यारे न्यारे हैं ।
खेलिकै शिकारे सखा बंधु सरदार सबै,
प्यारे अनियारे सरकारको जुहारे हैं ॥
रघुराज ताही समै बीचसों वराह भाग्यो,
सबै ललकारे धाये वेग बेशुमारे हैं ।
रामके प्रचारे वीर लषण दुलारे कढ़ि,
हन्यो कोल कुंतलसों सरयूकिनारे हैं॥३१॥
ज्वरी बाज बांसे कुही वहरी लगर लोने,
टोने जरकटी त्यों शचान सानवारे हैं ।
लै लै सखा हाथनमें चारों बंधु साथनमें,
छोडयो खग गाथनमें कूक दै पुकारे हैं ।
गगन गगनचर गगनचरण धरे,
धाये वीर वेगते गगनचर हारे हैं ।

रघुराज रामके निहारत अपारे पक्षी,
बसे अभिराम राय धामके अखारे हैं॥२२॥
जानि दुपहर वेला सखा सब हेला करि,
करि सरयूमें रेला वाजि जल प्याये हैं।
पुलिन निकुञ्जनमें भौंर भीर गुञ्जनमें,
ताजिकै तुरंग विशरामहित ठाये हैं॥
जानिकै श्रमित सैन्य चैन भरि चारों बंधु,
ऐन ऐसे कुञ्जनमें बैठ मन भाये हैं।
जुरिगे समाज रघुराज राजवंशिनकी,
हँसत हँसावत शिकार सुख गाये हैं॥२३॥
मातुन के भेजे मेवा करन कलेवा हेतु,
ल्याये सूपकार सेवा आपनी दिखायेहैं।
व्यञ्जन अनेक मनोरञ्जन सुधासे मंजु,
भरि भरि चामीकर थारन धराये हैं॥
चारों बंधु बाँटत सखान सरदारनको,
हीरा हेम भाजनमें भोजन उराये हैं।
रघुराजरामको सलाम करैं राजवंशी,
अति सत्कार सरकारनते पाये हैं॥२४॥
हीरा हेम भाजन में भोजन करन लागे,
चारों बंधु मिलि सुखसिंधुमें नहाये हैं।
निज निज हाथनसों मीठ मीठ कहि कहि,
देतहैं सखान माधुरीको पुनि गाये हैं॥
कोई कहै हँसि हँसि हौं तो नाहिं पायो कछू,
तापै फेंकि पयके कटोरे नहवाये हैं।
रघुराज भोजनको भाजन लै भाजि सोऊ,

सरयूमें हिलि पकवाननको खायेंहैं ॥२८॥
कोई सखा कहै मातु महारानी कौशिलाजू,
राम तुमहूंसों मेरी छोह अति करनी ।
भेजे पकवान स्वाद सुधाके समान जाके,
पायो तुम्हें राम तुम्हें नाहिं अनुसरती ॥
जाइ राजमंदिरमें राम रावरेको काम,
आम करौं अंबासों हमारी नेह भरनी ।
रघुराज देखौंगो तिहारो काज रघुराज,
जननीसमाजको न तेरी मति डरती॥२६॥
लषण दिखावें कौर कर पसरावें जब,
सखा लेन लागें तब निज मुख डारें हैं ।
सिगरी समाज हँसै सोऊ सखा हँसि अति,
कहै रघुवीरै राम बंधु को निवारे हैं ॥
हाँसी करें हठि हमहीसों ये अनोखे लाल,
रघुराज रावरेको मुख ना निहारै हैं ।
चक्रवर्ती जनक महीपके समीप माहँ,
ज्यादे चारि बंधु ते दुलार तौ हमारै हैं २७
रूसत सखानि जानि जाइकै मनावें राम,
खाइ त्यौं खवावें कहि प्यारे तू हमारे हौ ।
लषण भरत शत्रुसूदनको बोलैं बैन,
सखन समान तुम मोहिं नहिं प्यारे हौ ॥
मीत मीत कहि कहि चारौ बँधु हिलि मिलि,
तिनको कहत आजु बहु मृग मारे हौ ।
श्रमको निवारि करि भोजन सुधारि चलो,
फेरि मृगयाको रघुराज अनियारे हौ॥२८॥

यहि विधि हँसत हँसावत सुखछाइ मोद,
सखन खवाइ खाइ व्यञ्जन सुधा समान ।
अँचवन हेतु उठे जाइकै किनारे सबै,
अमीसों करन लागे सरयू सलिल पान ॥
धोइ मुख कर परछालि पग बैठे आइ,
सहित समाज चारों बंधु रघुवंश भान ।
सखन सुहृद मित्र भृत्यनको भाइनको,
उठि २ दीन्ह्यों रघुराज निजपाणि पान ३९
सरयू किनारे कहुँ विपिन मँझारे तहाँ,
निकट उतंग मुनि आश्रम रह्यो प्रधान ।
दुंदुभी धुकारे सुनि जानि पगुधारे राम,
सहज शिकारे मुनि मोदित भयो महान ॥
बोलि युग शिष्यनको पठयो प्रमोद भरि,
ल्यावो तू लिवाइ चारों भानुकुल भासमान ।
चलि मुनि बालक सुविप्र दुखघालक,
नरेशकुलपालकसों वचन कहे प्रमान॥४०॥
नाम है उतंग गुरु जानिये हमारे राम,
आपको हँकारे पगुधारेते बनत हैं ।
गुरु गुरुआनी मति अति हुलसानी तुव,
दरश लुभानी पल कलप गनत हैं ॥
भाइनते संग चतुरंग सैन्य लैकै चलौ,
महिष महान उतै मानव हनत हैं ।
रघुराज रावरेको दरश करत जन,
धन्य धरणीमें होत वेद यों भनत हैं ॥४१॥
सुनि मुनि शासन उछाइ छाये चारों बंधु,

धाये धरणीमें सवै वाहन विसारिकै ।
पाछेते मतंगन तुरंग चतुरंग वली,
पाउ नहिं पावें धावें वेग अति धारिकै ॥
कुँवर अवाई जानि लेन अगवाई मुनि,
आये सुखछाई सब शिप्यन हँकारिकै ।
मुनिको विलोकि राम परे पदपंकजमें,
रामको विलोके मुनि पलक निवारिकै ४२॥
ऋषि उर लाइ चारो बंधुनको मोद छाइ,
आश्रम लिवाइ ल्याये सहित समाज है ॥
चूमि मुख शीश सूंघि कंदमूल दैकै कछु,
आशिष दियो सो बार बार कृतकाज है ॥
सुखमा निहारै वारै कोटिन अनङ्ग शोभ,
लोभि गयो मुनि मन देखि रघुराज है ।
जप तप नेम व्रत याग योग भूल्यो सबै,
चित्रपूतरीसों चकि रह्यो मुनिराज है ॥४३॥
बहुरि मुनीशतिय चारिहू कुमारनको,
सुखमा निहारनको निकट बुलायो है ।
जाइ रघुनन्द मुनि नारि पद वंदि बैठे,
मातुनते अधिक दुलार तहँ पायो है ॥
पोंछि मुख चूमि चूमि पूँछैं भूख लागी प्यारे,
है गई अबेर अति कछू नाहिं खायो है ।
रघुराज ल्याई सो मिठाई मुनि मन भाई,
बिजन डुलाई निजपाणिसों खवायो है॥४४॥
माँगो बिदा बहुरि मुनीशसों कुमार सबै,
हर्षिकै महर्षि उतकर्षि अस गायो है ।

चाहौं कछु करन अतिन्थ गवरेको नाथ,
तुम्हैं पूर्ण काम निगमागम बतायो है ॥
रहौ युग याम इत अति अभिराम राम,
कीजिये अराम या अराम मन भायो है ।
सरयूके विपिन शिकारी मनहारी वीर,
रघुराज देखे तुम्हैं जन्मफल पायो है॥ ४५॥
मानि मुनिशासन त्रिलोक दुखनाशन रमे,
हैं मुनि आसनमें आनँद बढ़ाइकै ।
ऋषि सो उतंग तपोबलसों निशंक ऋद्धि,
सिद्धि सुरलोककी विभूतिको बुलाइकै ॥
सहित समाजै रघुराजै सत्कार काजै,
प्रगटायो दिव्य विभव भूमें भूरि भाइकै ।
लोकनके लोकपाल अवनी अवनिपाल,
देख्यो ना सुन्यो है कहूं नैन श्रुति लाइकै ४६
हेमके हिमाचलसी हीरन जटित मणि,
मंदिरकी राजी मेघमंडललौं छ्वैगई ।
चन्द्रशाला चित्रशाला शयन विहारशाला,
पाकशाला मज्जनकी शाला सब ह्वैगई ॥
भाइनकी भृत्यनकी सखन सुहृदहूंकी,
पृथक पृथक शाला कंचनकी वैगई ।
रघुराज हयशाला गजशाला रथशाला,
लोकशाला शालासम सरयूतट ज्वैगई ॥४७॥
दूधकी दहीकी घीकी मधुकी सिताकी केती,
सरित बहन लागीं पायसके पंककी ।
काल औ अकाल तजि नवल रसाल ताल,

तरुनकी ओली फली महिमा उनंककी ॥
मणिसी उदक भरी सरसी लसी हैं बहु-
हाटकके घाट मंजु कुंज हैं निशंककी ।
रघुराज सज्जित शृंगार देवदारा चारु-
करहिंप्रचारा मुख सुखमा मयंककी॥४८॥
वसन अनेक रंग रंगके पुशाक बने,
पादप झरन लागे जाकी जस भामना ।
रतन अनेकनकी जातिने जटित वर,
भूषण परन लागे जानि जन कामना ॥
भोजन प्रकार पकवान सुधाके समान,
ठाम ठाम राशि लागी धाम धाम छामना ।
सींचि गई गली शुद्ध सलिल सुगन्धहीते,
रघुराज कौन कहै देवराज गामना ॥४९॥
खासे आमखासनमें भासवान वासनमें,
मणिके प्रकाशनमें सकल सुपासे हैं ।
सब दुख नाशनमें रतनके आसनमें,
सरस विलासनमें राजसुत भासे हैं ॥
देवसम दासनमें करैं कुलिशासनते,
बीते घटी हाँसनमें सखा आसपासे हैं ।
रघुराज राजसिंह आसनमें राजैं राम,
करत हुलासनमें विविध तमासे हैं ॥५०॥
अप्सरा अपारा नटसाराको पसारा कियो,
रूपकी अगारा केशभारा लचै लंक है ।
केती देवदारा सजी सकल शृंगारा तान,
लेती मनोहारा मुख पूरण मयंक है ॥

बाजैं डफगारा बीन बाँसुरी सितारा चारि,
नाग त्यों तितारा मुख लावतीं निशंक हैं ।
रघुराज रीझैं सरदार दै इनाम धारा,
अवधकुमारा कहैं महिमा उतंक हैं॥८१॥
जौन मन भावै जाके सोई तहां तौन खावै,
जाकै मन आवै जौन सोई तौन पावै है ।
भूषण वसन भावै तौन तहां परिधावै,
जौन उपजावै चित सोई हठि आवै है ॥
महिमा महर्षिकी प्रहर्ष वरषावै खूब,
रघुराज कोई नहिं चित्तको चलावै है।
भावै नहिं औध अस सैन्य सब गावैराज,
सुतन सुनावै अब ह्यांते नहिं जावै है॥८२॥
आइकै अखर्व सर्व गँधरव गान करैं,
भृत्य भृत्य निकट सुनृत्य होन लागी है ।
लोकपके मौजसे प्रमोदी सब फौजवारे,
भवन विसारे राजवशके समागी है ॥
हल्ला है रह्यो है सो महल्लन महल्ला मंजु,
नहिं तल्ला लेत कोई सो सुभागी है ।
रघुराज पाय खान पान सममान खूब,
भानुवंशके निशान दूनी दुति जागी है ८३
चौरवारे छत्रवारे पंखाके झलनवारे,
पानदानवारे बहु पीकदान वारे हैं ।
आतपत्रवारे मोर मुछैल करनवारे,
अनुपम अतरवारे राजत हजारे हैं ॥
महिमा महर्षिकी निहारे रघुवंशवारे,

न्यारे न्यारे विभव अगारन अगारे हैं।
छरीवारे सोटावारे सेवक अपारे खरे,
रघुराज अवध दुलारे के दुआरे हैं ॥ ५४॥
देवता विमानवारे विभव निहारे नव,
हारे हिय लालसा बढ़ाइके अपारे हैं।
महिमा महर्षिकी उचारें मुख बार बारे,
जैसे सतकारे दशरत्थके दुलारे हैं ॥
रघुराज औधवारे प्यारे सब सैन्यवारे,
वचन पुकारे काज पूजिगे हमारे हैं।
हेला करें खेला करें कुँवर नवेला वीर,
रेला मेला माचिरह्यो सरयूकिनारेहैं ॥५५॥
मुनिकृत पाइकै अपार सतकार तहां,
राम चारों वंधु ऋषि निकट सिधारे हैं।
नाइशीश जोरिपाणि सविनयविनय कीन्ह्यो,
चाहत चलन चित्त सदन हमारे हैं ॥
रघुराज शासन जो पाऊँ तौ अवध जाऊँ,
रावरी कृपाते न अघाऊँ युग चारे हैं।
भाई भृत्य सचिव सुहृद सब सैन्यवारे,
दोऊलोक भूले पाइ आपव्यवहारेहैं ॥५६॥
अति उतकर्षि वारि वर्षि निज नयनानिसों,
हर्षिकै महर्षि चारों वंधु उर लाइकै।
शीश सूँघि चूमि मुख हाथ दै सुमंत्र पढ़ि,
पुलकि शरीर बोले बैन बिलखाइकै ॥
रघुराज जैसी होइ हृदय तुम्हारे अब,
बिनाहिं विचारे करौ तैसी चित चाइकै।

नतु इन रहै मन रैहै रावर के संग,
रसना न राखी रस जाइये सुनाइकै ॥८७॥
मुनि पद वंदन कै विदा रघुनन्दन ह्वै,
होत भे अनन्दन सुस्यन्दन सवारे हैं।
सबै राजनंदन जुहारे कुलचन्दन को,
बाजि उठे एक बार वृन्दन नगारे हैं॥
रघुराज चली चतुरङ्ग मग मंद मंद,
राम मुनि नन्दनको बहुरि हँकारे हैं।
महिप बेलंद कहा करै जन कंदन को,
दीजिये बताइ ताहि दंडन [illegible] हैं॥८८॥
करको उठाइ मुनि बालक बताइ वन,
गये निज सदन सिधाइ अतुराइकै।
रथको विहाइ राम महिपसों युद्ध काम,
शत्रुंजय नाम गज चढ़े आशु आइकै॥
रघुराज भरत लषण शत्रुसूदनहूं,
सिंधुर सवारी किये चापन चढ़ाइकै।
केवल मतङ्ग आवैं और नहिं संग जावैं,
कह्यो सरदारनको शासन सुनाइकै॥८९॥
कुँवर छबीले त्यों रँगीले राजवंशी राजैं,
गजन मदीले चढ़ि चले चटकीले हैं।
हौदन दचीले तरु टूटत डरीले शैल,
होत हैं फटीले शेष फन चलकीले हैं।
रघुराज लीले कारि नाग नीले नीले भ्राजैं,
पूरब पवन पाइ मानो मेघ नीले हैं॥
ढीले नहिं कुँवर शिकारके सजीले सबै,

पीलपाल आगे आगे पेलैं सब पीलैंहैं॥६०॥
गज नगरट्ट गयो जहां वन ठट्ट लाग्यो,
महिष झपट्ट कीन्ह्यो तहां झट्ट पट्ट है।
कोई गज पट्ट परे कोई गज चट्ट भागे,
विगत खटक्क वीर मारे बाण पट्ट है॥
महा उदभट्ट कीन्ह्यो महिष रपट्ट खूब,
धावत लपट्ट सो गयंद नल पट्ट है।
परम विकट्ट नट्ट ट्टहीसों धारे वेग,
रघुराज आयो राम निकट निपट्ट है॥६१॥
कान लगि तानिकै कमान बाण मार्यो वेश,
भानुकुल भान रघुकुलको प्रधान है।
महिष महान भेदि सायक समान भूमि,
मेघके समान तऊ नेकु ना परान है॥
आवै समुहान करिवेग वेप्रमान सहै,
शस्त्रन अमान तव लषण सुजान है।
बारन विहाइ काट्यो शीश दै कृपानसों,
विमानचढ़िकीन्ह्यो वयकुंठकोपयानहै॥६२॥
वाह वाह कीन्हें सबै सुभट उछाह छाये,
लषण ललाकी बाँह पूजत उमाहते।
अनुजको कीन्ह्यो हिय माहँ हंस वंश नाह,
बहुत सराह्यो सुखसिंधु अवगाह ते॥
रघुराज पावै कौन वीरताकी थाह तेरी,
शूरनकी शूरता है तेरिये सनाहते।
भारि उतसाह ह्वै हमेश जयसाह रघु-
कुल तो पनाह पावैं तेरी बाँह छाँहते॥६३॥

चित्र मृग शृमरग वगन विलोकि वन,
ढीले चटकीले ग्राम सिंह चले धाइकै।
पीछे राजकुँवर धवाये हैं तुरङ्गनको,
धाये हैं मतंग पीछे वेगन बढ़ाइकै,
रघुराज सिंहके समान सहसान गहे,
विविध मृगान कोपि कुत्ते अतुराइकै॥
रामजूके श्वान इतै खींच वनजीव उतै,
गोपुरकी ललना लै जातीहैं छुड़ाइकै॥९४॥
काननमें करत कुतूहलको कमनीय,
कुँवर समेत कोशलेशके कुमार हैं।
करत कुरङ्गनसों कुन्तलकी केलि कहूं,
कलाके कलापी काम कांतिके अकार हैं॥
कालसे कराल केहरीपै करि करि कोप,
कायके त्रिकूटै कूटै करिकै चिकार हैं।
करि करि कुधरसे कुंभनमें अंकुशको,
रघुराज करत शिकार सुकुमार हैं॥९५॥
खेलि खेलि खेटकको खूब खूब खुश ह्वैके,
विपिन अखंड खंड करैं खुलि खेले हैं॥
खेचरसे तेज खासे खेचरसे शील करैं,
खेचरके खेचरके गति वाजी रेले हैं॥
रघुराज राजै रघुचन्द्र ढिग खेचरसे,
खूबीके खजाने खोले खेत खग्ग खेले हैं॥
खासे आमखासवारे सखा खास फौजवारे,
खाविंदके प्यारे रघुवंशी अलबेले हैं॥९६॥
चमू चतुरङ्ग रघुचन्दकी चली है चाय,

चतुर शिकारी एक चटक बखानो है ।
चंडमुण्डहूसों चंड चंड अंशहूसों अंशु,
परम प्रचण्ड एक खड्गी दिखानो है ॥
शीशमें सुमेरु कैसो शृंग है उतंग शृंग,
गर्व है गयन्द कैसो बड़ो बलवानो है ॥
रघुराज चटक चलीजै वध कीजै नाहि,
अबलों न ऐसो कहूं जन्तु दरशानो है ॥६७॥
सुनत शिकारी बैन धीर धनुधारी भैन,
चलेकै तयारी चारों बंधु वर वीर हैं ।
पेलत मतगंनको रेलत तुरंगनको,
आये जहां ठाढ़ो गैंडा गाढ़ो बिन पीर है ॥
रघुराज देखत भरतचन्द्र चाप धारयो,
झेलकै गयन्द हन्यो ताको एक तीर है ।
खड्गीन खेत आयो कोपित करिंदै धायो,
भरत बचायो गुहरायो रघुवीर है ॥ ६८॥
दन्तनसों दाबैं दन्ती खड्गी बचावै खूब,
रेला रेली ह्वै रही है गैंडा औ गयंद की ।
चारों ओर घेरि सबै राजन किशोर करि,
शोर दीन्हीं मारवान बर्छिनके वृन्दकी ॥
घायलसो घूमि रह्यो खड्गी घमंड भरो,
नेजा नोक लागी शीश कैकयीके नंदकी ।
निफरि धँसी सो भूमि गैंड़ा गिरचो घूमि घूमि,
खासी रघुराज वाणी कढ़ी रघुचन्दकी ॥६९॥
भरतकी बार बार करत प्रशंसा राम,
सकल कुमार लागे करन बखान हैं ।

बरछी तिहारी लगी तिरछी निकरि गइ,
खड्गी रह्योसो काल मेघके समान हैं ॥
रघुराज भरत निछावर करत वीर,
राम पहिरावें इतै बंधु भूषणान हैं ।
भूषण वसन पहिराइ उतै देवदारा,
गैंड़ा कहँ लैकै कीन्ह्यो गोपुर पयान हैं ॥७०॥
सलिलहुलासी भई प्यासी सब सेना तहां,
अवध निवासी सरयूके तीर आये हैं ।
पान कै पियूष सम नीर रणधीर सबै,
तैसे वाहनान पयपानको कराये हैं ॥
राज शिरताजके कुमारसों निषादराज,
रघुराज आइकै शिकार काज गाये हैं ।
नक्र एक वक्र महा शक्रहीके सिंधुरसों,
सरयू किनारे बंधु मेरे देखि आये हैं ॥७१॥
दुवन प्रतापी सखा बोलिकै प्रतापी तहाँ,
परमप्रतापी राम वचन उचारे हैं ।
पापी ग्राह गेरि चढ़ि गैयरमें मारो जाइ,
थापि तेरी वीरता प्रवीरन अपारे हैं ॥
रघुराज सुनत सखा सोपषा पोंछि पाणि,
त्रिसखा त्रिशूल लिये चषा अरुणारे हैं ।
गैयर सवार गयो ग्राहपै गरूरदार,
पाछे शत्रुशाल लाल सुखत सिधारे हैं।॥७२॥
महा विकरार गज पर्वत अकार क्रोध,
सायो है करारते त्रिशूल ताहि मार्‍यो है ।
मकर महीधवसो माखिकै मतंगजको,

ग्रस्यो गासि गाढ़ो गोड़ गयर चिकारयो है॥
गिरत गयंदको निहारि शत्रुशाल लाल,
मारि चक्रवान नक्र वदन विदारयो है ।
रघुराज ग्राहते छुड़ायो ज्यों गोविंद गज,
पकरि वितुंड शुंड तैसही उबारयो है॥ ७३॥
विक्रम त्रिविक्रम सों देखि शत्रुसूदनको,
वीर वर वदन बखाने बार बार हैं ।
अनुज उछाही आइ राम को सलाम कीन्ह्यों,
लीन्ह्यों अंक अभिराम कौशल्याकुमार हैं ॥
रघुराज पोंछैं मुख फेरैं पाणि फेरि फेरि,
हेरि हेरि हियरे लगावैं दै दुलार हैं ।
खासीकरी खासीकरी खासीकरी बांके वीर,
वीरता विदित महिमंडल मझार हैं॥ ७४ ॥
खेलत शिकार चहुँ ओर वन ठोर ठोर,
जानि दिन थोर वाणी सहित निहोर की ।
भाषी सखा जाइ राम ठोर कर जोरि जोरि,
ऐसी है रजाई पिता भूप शिरमोरकी ॥
रघुराजआइयो अजोरहीमें भौन ओर,
चलो चितचोर कीन्ही क्रीड़ा सुखओरकी ।
सुनिकै प्रतापी बैन चमू चतुरंग फेरयो ,
अवधकी ओर चली अवधकिशोरकी॥ ७५॥
मंद मंद चलत गयंद मग मतवारे,
तरल तुरंग बहु रंगन के झमकै ।
छाइ रह्यो रथन को घर्घर धरा में शोर,
सैन्य भार पाइ कोलकूर्म पीठ धमकै ।

बोलत नकीब सुखसीव रघुराज आगे,
वीरनकी वीरता दिशाननलौं दमकै ॥
साँझ समै चारु चतुरंग रघुनंद जू की,
औध अमराई आइ चंचलासी चमकै॥७६॥
बजत निशानन दिशाननलौं छायो शोर,
फहरैं निशान अंशुमानको छपावते ।
नौमत झरत सुर भरत सुभूमि भूरी,
बोलत नकीबवृन्द परम उरावते ॥
रघुराज रथ घहरानि घनही सों घोर,
वाजिन के वारण के शब्द अति भावते ।
हल्ला परचो अवध महल्लन महल्ला मध्य,
खेलिकै शिकार भूप लल्ला चारि आवते॥७७॥
शरदघटासी ऊँची अमल अटामें चढ़ीं,
विज्जु की छटासी छटा छावैं पुर नारी हैं ।
चितै चतुरंग चमू भरिकै उमंग उर,
साजे आरतीको लीन्हें चामीकर थारी हैं ॥
रुचि रुचि रंग रंग विविध प्रसून लाजा,
हर्ष उतकर्ष कीन्हे वर्षन तयारी हैं ।
रघुराज सहित समाज राजवंशिनते,
आवैं कौशलेशजूके कुँवर शिकारी हैं॥७८॥
दूब दधि रोचन धरे हैं मग चारों ओर,
नगर विराजै रम्भ खम्भ द्वारे द्वारे हैं ।
यूथ यूथ नारी नर ठाढ़े हैं दरश आशी,
ह्वै ह्वै सुखराशी राजकुँवर निहारे हैं ॥
जस जस नगर धसति चतुरंग चारु,

नस नस पुरजन धावत सुखारे हैं ।
देखि रघुलाल को निहाल होत रघुराज,
भाषै भूप लाड़िले हमारे प्राणप्यारे हैं ॥७९॥
अवध बजार बीच आई है सवारी जब,
देखि पुरनारी तन मन धन वारी हैं ।
चामीकर थारन में आरती उतारी आशु,
बरषैं प्रसून लाजा मोद भार भारी हैं ॥
लेतीं बलिहारी मनहारी मंजु मूरतिकी,
राजमाधुरी निहारि पलक निवारी हैं ।
रघुराज कोटिन अनंग छबि वारों छबि,
वारी वैसवारी देखि छैलन शिकारी हैं ॥८०॥
मंद मुसक्याइ लेत जियरो लुभाइ नैन,
पथ ह्वै हिये में आइ फेरि टारे ना टरैं ।
कोटिन अनंगन की सुछबि तरंग अंग,
अंग प्रति होत बदरंग सम क्यों धरैं ॥
डहर डहर परी कहर शहर बीच,
चहर पहर माचि रह्यो तिहि पाहरैं ।
रघुराज कौन कामिनी जो करै कुलकानि,
कौशलेश कुँवर कटाक्षन कटाकरैं॥८१॥
मंद मंद चलति गयंद की सवारी भारी,
प्यारे रघुनंदन की भ्रातन समेत हैं ।
सखा सरदार ऐंडदार सोहैं संग संग,
करैं सतकार पुरजन सुखसेतु हैं ॥
मणिगण बारबार वारत कुमारनपै,
देखि माधुरीको रहे चित्तमें न चेतहैं ।

आनँद अपार देत विविध जुहार लेत,
आये रघुराज राम पितुके निकेत हैं ॥८२॥
द्वारहीते भेज्यो प्रतीहारै दरबारै राम,
जाइ सो जुहारचो चक्रवर्ती नरनाथको ।
भरि अहलाद अहलाद उपजाइ भूपै,
विनै मरयादही सो कीन्ह्यो जोरि हाथको॥
रघुराज रावरेके चारिहू कुमार आये,
खेलि कै शिकार चौहैं नायो तुम्हैं माथको।
शासन करीजै देव दरशन दीजै अब,
भरत लषण शत्रुशाल रघुनाथको॥ ८३ ॥
सुनि नृपराय सुखसिंधुमें नहाय बोले,
ल्याइये कुमारनको आशु मेरे पासमें ।
दूत दौरि आयो सो कुमारन सुनायो बैन,
चलिये जनक आमखास के अवासमें ॥
सुनिकै नरेश सुत उतरि गयंदनते,
मंद मंद चले पितृदरश हुलासमें ।
देख्यो दरबार बैठे भूपति हजारैं मनो,
वासव अगारै को अखारैहैं विलासमें॥८४॥
सकल समृद्धि युत वृद्ध वृद्ध बैठे भूप,
ऋद्धि सिद्धि निद्धि ठाढ़ीं जोरे युग हाथको ।
रघुराज रतन खचित राज आसनपै,
राजैं राज शिरताज तेज देवनाथको ॥
छपापति छत्र छाजै चौर शरदभ्र भ्राजै,
सहित समाजै सो निहारचो रघुनाथको ।
निकट बुलाय लीन्ह्यो उरहि लगाय मानो,

गयो सरवस्व पाइ मूंच्यो सुत माथको॥८५॥
भुवनाभिराम राम करिकै सलाम भूप,
बैठ तिहि ठाम बंधु सहित ललाम हैं।
पूरि मनकाम पितु पूछ्यो कहो राम कहाँ,
कीन्ह्यो है अराम कैसे बीते तीनि याम हैं॥
रघुराज करहु शिकारको बखान आम,
केते मृग मारे कौन कौन तिन नाम हैं।
कौन कीन्ह्योकैसोकामकौनकोदियो इनाम,
वदन मलान लाल लाग्यो अति घाम है॥८६॥
कहन शिकार कथा लागे रघुवंशी लाल।
मारचो विकराल ग्राह एक शत्रुशाल है।
भरत शिरोमणि प्रचारि गाढ़ो गैंड़ा हन्यो,
लषण महिष माथ मारचो करवाल है॥
कोईसखामारचोमृग कोई सखाशेरमारचो,
मैंहूं गजराज मृगराज मारचो हाल है।
रघुराज बहुरि लिवाइगे महर्षि धाम,
कीन्ह्योसतकारजोनपायोकौन्योकाल है॥८७॥
सुतन शिकार सुनि पाइकै अपार सुख,
नृपति उदार बकशीस देन लाग्यो है।
काहू को मतंग दीन्ह्यो काहूको तुरंग दीन्ह्यो,
दीन्ह्यो पुनि जोई जौन जोरि कर माँग्यो है॥
जैसे राम तैसे रामबंधु तैसे राम सखा,
भूपति के भेद नहिं नेकु उर जाग्यो है।
रघुराज सबते विशेषि दै दुलार कीन्ह्यो,
नाखे लक्ष्मीनिधिपै विशेषि अनुराग्योहै॥८८॥

भूपति विलोकि श्रमश्रांमित कुमारनको,
स्वेदबिन्दु मानो अरविंद ओसकन है।
बार बार करिकै दुलार भूमि भरतार,
बैन सुधाधारसे उचारयो ताही छन हैं॥
रघुराज चारों लाल जाहु जननीके भौन,
भोजन करीजे शयन कीजे चयनन है।
नैन अलसाने प्यारे कुँवर भुखाने सखा,
गमनो मकाने अब ऐसो मोर मन है॥८९॥
सुनिकै पिताके बैन उठिकै तुरंत राम,
करिकै सलाम मातु धाम पगु धारे हैं।
सुहृद सचिव अनियारे सरदारे सखा,
द्वार पहुँचाय रघुचंद्रको जुहारे हैं॥
जिन अधिकार रनिवासको प्रचार रह्यो,
राम के दुलारे सखा संगही सिधारे हैं।
रघुराज बंधु चारे पानिप के पारावारे,
कौशिला अगारे गये कौशिलाके बारे हैं॥९०॥
कुँवर अवाई सुनि मोद अधिकाई मातु,
नारिन पठाईतेवे कलश लैधाई हैं।
दधि दूब तंदुल प्रदीप धारि थारन में,
मंगल करत गान द्वार देश आई हैं॥
जल को उतारि त्रिकुटी में दधि टिकुली दै,
लै चलीं लिवाइ लेतीं सकल बलाई हैं।
रघुराज आनन को चूमि भूमि आँगुरीन,
फोरि तृण तोरि माणि विविध लुटाई हैं॥९१॥
कुँवर सिधारे गृह कौशिलाके ऐसी सुनि,

ककयी सुमित्रा आइ गइ आन आशु ह ।
सखिन समेत सीता लागी हैं झरोखनमें,
और रनिवास आयो तौनहीं अवासु हैं ॥
चारों बन्धु प्यारे सखा सहित हुलास भारे,
घरे सब मातुनके चरणके पासु हैं ।
रघुराज महाराज राज दुलहेटन को,
छाइ रह्यो सदनमें वदन विलासु हैं॥९२॥
राई लोन जननी उतारि नील चीलही जारि,
डीढि मूठि टोना झारि वारि त्यों उतारिकै ।
सुखमासदन चूमि वदन नँदन पाणि,
पकरि लिवाइ गईं मणिगणवारिकै ॥
गोद बैठाय माय सुख पाय लाल,
कहाँ लगि जाय आये मृग मारिकै ।
वदन मलीन श्रम भयो है महान प्यारे,
कहौ रघुराज मृगयाकी कथा झारिकै ॥९३॥
कह्यो रघुराज गजराज मृगराज मारे,
खड़गी महिष त्योंही मकर सँहारे हैं ।
तरल तरङ्ग तीखे तुरत तुरङ्गनते,
केतन कुरंगनको दौरि दलि डारे हैं ॥
गये एक आश्रममें सबै श्रम नाशे तहाँ,
योगके प्रभाव ऋषिराज सतकारे हैं ।
जननी कियो सो मुनिघरनी दुलार भारी,
मानि हमें बार बार बारे ये हमारे हैं ॥९४॥
वदन विलोकि निज पाणि मीजैं बाहु मातु,
बोलैं बात लाला तुम्हैं सिंह भीति लागी ना ।

कहाँ पायो जोर ऐसो जोते मारचो मृगराज,
हहरत रहे हेरि हाऊ भय भागी ना ॥
खैंचे हौ कमान तानि कोमलकमल पाणि,
मेरो जिय डरत भुजानि पीर जागी ना ।
रघुराज निडर भये हौ राजराज प्यारे,
बरजत कोइ उतै वृद्ध बड़भागी ना ॥९५॥
क्षुधित कुँवर जानि व्यंजन विविध आनि,
जननी लगी है सुत भोजन करावने ।
कौशिला लषण लालै शत्रुशालै गोद लीन्ह्यो,
लीन्ह्यो रघुलालै अंक कैकयी सुहावने ॥
भरतै सुमित्रा भूरि भोजन करावै लगीं,
कहै यहौ मीठो यहौ मीठो वही खावने ।
रघुराज तेरे काज रचे पकवान केते,
बाँकी अबै मेरे कौर द्वैक मुख लावने॥ ९६॥
यहि विधि व्यारी करवाइ चारों लालन को,
कर पग सलिल धुवाइ दियो पान हैं ।
प्रहर प्रमाण जानि जननी कियो बखान,
कीजै शैन चैन ऐन नैन अलसान हैं ॥
जागियो न रैन अब कारज कछूक है न,
मेरे प्यारे तुमसों न मोहिं प्यारे प्रान हैं ।
रघुराज राज शिरताजके अनोखे ढ़ोटे,
फहरैं तुम्हीं सों रघुकुलके निशान हैं॥९७॥
मातु की रजाइ पाइ चारों भाइ शीशनाइ,
द्वार देश आइ ठाढ़े भये तिहि ठाम हैं ।
भाइन सलाम लैकै सखन प्रणाम लैकै,

आशिप दै विदा कीन्ह्यो निज निज धाम हैं ॥
जानि निज काम तिहि याममें सहेली सबै,
लै चलीं लिवाइ आमखासको ललाम हैं ।
रघुराज कोटि काम होत छबिछाम जापै,
कीन्हें अभिराम राम धाममें अराम हैं ॥९८॥
ह्याँलों मेरी भावना है आगे नहीं जानौं कछु,
ठाढो रहौं छरी लीन्हें रोज राम द्वारे में ।
विविध विलास रास हास रनिवास केरो,
मोहिं ना हुलास इतिहासके उचारे में ॥
रघुराज दास्यभाव मेरे गुरु दीन्हें मोहिं,
तातें कौन काम रासलीलाके निहारेमें ।
स्वामिनी विदेहलली स्वामी कौशलेश लाल,
पाऊँ सरवस्व सुख चारु चौंर ढारेमें ॥९९॥

दोहा—यह शिकारको शतक मैं, रच्यो सुमति अनुसार ।
रामरसिक बाँचैं सुनैं, तिन प्रणाम बहु बार ॥
नहिं जानौं मैं छन्द गति, नहीं भक्ति नहिं भाव ।
जो कछु नीकी होइ सो, सज्जन कृपा प्रभाव ॥
सज्जन दीजै दोष नहिं, बिगरो कछू विचारि ।
रघुपति लीला जानिकै, लीजै सकल सुधारि ॥
संवत्सर चखनिधि शशी, ऊर्ज शुक्ल शनिवार ।
भो संपूरण पूर्णिमा, रघुपति शतक शिकार ॥
आनँद मंगल भाँति यहि, रहत अवध महँ रोज ।
उदित राम अभिराम रवि, विकसित प्रजासरोज ॥

छन्द चौबोला ।

एक समय दशरथ नरनायक बैठ्यो सभा मँझारी ।

भाइन भृत्यन सचिव महीसुर संयुत सकल सुखारी ॥
गुरु वसिष्ठ तिहि अवसर आये उठी समाज निहारी ।
भूपति चलि लीन्ह्यों कीन्ह्यों नति अपनो नाम उचारी ॥
सिंहासनासीन करि गुरुको विनय कियो अवधेशा ।
तुम्हरी कृपा नाथ पायों सुख मिटिगो सकल कलेशा ॥
कह्यो वसिष्ठ भूप तेरे सम रवितें लगि अरु आजू ।
भाग्यवान इक्ष्वाकुवंशमहँ भयो न कोउ महराजू ॥
जासु राम सम सुवन जगतमहँ करै को तासु बड़ाई ।
शेष शारदा शंकर गणपति थके आप यश गाई ॥
तिहि अवसर केकयनरेशको कुँवर युधाजित नामा ।
आयो राजराज दरबारै अहै भरतको मामा ॥
करि प्रणाम दशरथको तैसे पुनि वंद्यो गुरुकाहीं ।
पूँछि कुशल कौशल नरेश तिहि बैठायो ढिग माहीं ॥
कह्यो युधाजित भागनेय मम कहँ चारिहु कुमारा ।
तिनहिं बुलावहु आशु भूपमणि चहौं विशेष निहारा ॥
सुनत स्यालके वचन महीपति पठै सुमंत तुरंता ।
भ्रातन सहित राम बुलवायो आये अति बिलसंता ॥
उठी समाज राम कहँ देखत सबके हिये जुड़ाने ।
गुरुको पितुको करि प्रणाम प्रभु मातुलको सनमाने ॥
बैठायो अपने आगे तिन बंधु कैकयी केरो ।
राम वदन निरखत अनिमिष चख आनँद लह्यो घनेरो ॥
हुलसि कह्यो कौशलपतिसों अस करी विनय मम माता ।
लखन चहौं मैं भरत सुतासुत जाय ल्याइयो ताता ॥
हम आये काश्मीर नगरते अवध नगर यहि हेतू ।
तुम व्याहन सुत गये जनकपुर लखे न इत कुलकेतू ॥

हमहुँ गये पुनि मिथिलापुरको लख्यो विवाह उछाहू ।
आय अवध लखे परछनि सुख मिट्यो सकल दुख दाहू ॥
बहुत दिवस बीते इत निवसत अब अस कृपा करीजै ।
भरतहि पठै आशु हमरे सँग तासु श्वशुर सुख दीजै ॥
सुनत भूपमणि विरहविवश नहँ कढ़ी न मुख कछु बानी ।
भजत बनत न रोकत बनत न भै दुचितई महानी ॥
मुनि वशिष्ठ संदेह नृपतिको बोल्यो वचन उदारा ।
भेजहु भरत होउ शंकित जनि संमत अहै हमारा ॥
केकयकुँवर युधाजितको नृप सविधि करहु सत्कारा ।
सुनि गुरुवचन विहाल काल तिहि वचन भुआल उचारा ॥
गवनहुँ भरत युधाजितके सँग केकयदेश सुहावन ।
अपने मातामहको मेरी कहियो नति अतिपावन ॥
चंचलता तजि रह्यो रीति महँ मातुल कुलमहँ प्यारे ।
बहुत बुझाय कहौं का तुमको सब गुण सुखद तुम्हारे ॥
पितुशासन धरि शीश भरत उठि जनक कमलपद बंदे ॥
कह्यो वचन मातुलके सँगमें जैहौं आशु अनंदे ॥
तिहि औसर उठि शत्रुशाल युग जोरि पाणि अस गाया ।
मोहूंको दीजै निदेश पितु तनु ताजि रहति न छाया ॥
कह्यो भूप गवनहुँ तुमहूं उत करन भरत सेवकाई ।
रहियो सावधान सब कालहि किहेहु न कछु चपलाई ॥
पुनि भुआलमणि वसन विभूषण रथ तुरंग मातंगा ।
दियो सभाजि युधाजितको तहँ वर आयुध बहुरंगा ॥

दोहा—उठि दशरथ निजस्यालको, मिल्यो बारहीं बार ।
कीन्हीं बिदा निवेशको, करि बहु विधि सत्कार ॥
भरत शत्रुहन उठि तुरत, पिताचरण शिरनाय ।

पुनि रघुकुलमणिके चरण, वंद्यो शीश छुआय ॥
जाय भवन निज जननिको, कह्यो प्रसंग वुझाय ।
माँगि विदा पुनि कौशला, भवन आशुही आय ॥
कहि प्रसंग शिरनायकै, लषण मातु कहँ वंदि ।
काश्मीरको चलत भे, सानुज परम अनन्दि ॥
यक अक्षौहिणि सैन्य तव, पठयो भूपति संग ।
करन पंथ रक्षण सुवन, चली चारु चतुरंग ॥
मातामहके भवन महँ, सानुज भरत सिधारि ।
केकय नृपके वंदि पद, पितु नाति कह्यो उचारि ॥
केकै अधिप सुता सुवन, लखि सुख लह्यो अपार ।
प्राण सरिस राख्यो दुहुन, करि नित नव सत्कार ॥

छन्द चौबोला ।

जवते गये भरत मातुल कुल तवते लछिमन रामा ।
करहिं रोज पितुकी सेवकाई पूरहिं जन मनकामा ॥
सोहत अवध तख्तपर दशरथ विभव शक्र संकाशा ।
फेरत शासन नवौ खंडमहँ मित्र हर्ष अरिनाशा ॥
नित नव आनँद होत अवधपुर सुखराशी पुरवासी ।
रघुपति शील सनेह स्वभाव कथत नित दरशन आसी ॥
चढ़ि मतंग कहुँ चढ़ि तुरंग कहुँ चढ़ि सतांग पुरमाहीं ।
विहरत सखनसहित सुखदायक प्रातहु साँझ सदाहीं ॥
प्राणहुते प्रिय राम जाहि नहिं अस कोउ त्रिभुवन नाहीं ।
का कहिये प्रभु अवधप्रजनको बसहिं जु प्रभुभुज छाहीं ॥
एक समय सब सचिव महाजन सुहृदसहित सरदारा ।
बैठ्यो दशरथ भूप सभामहँ गुरुको आशु हँकारा ॥
गये वसिष्ठ राजमंदिरमहँ नृप नति करि बैठायो ।

सुहृद सचिव संमत विचारि मन गुरुको वचन सुनायो ॥
जो आचारज शासन दीजै तौ अस कारज होई ।
करहिं रामसों विनय प्रजा सब निज निज कारज जोई ॥
कह्यो वसिष्ठ राम यहि लायक भूपति भली विचारी ।
पुरजन काज करहिं रघुनायक तुव शासन शिरधारी ॥
सुहृद सचिव सज्जन सराहि सब निज निज संमत कीने ।
हुलसि राजमणि बोलि रामकहँ सौंपि काज सब दीने ॥
पुलकित प्रजा प्रमोदित भे सब कीन्हें जयजयकारा ।
युग युग जियें जानकी रघुपति हमरे प्राणअधारा ॥
प्रभु शासन शिर धारि रघूत्तम करन काज सब लागे ।
प्रतिदिन पितुसों पूँछि पूँछि सब यथायोग्य अनुरागे ॥
धर्म धुरंधर चतुर शिरोमणि बिना हेतुके हेती ।
सबको हित अरु सबको प्रिय जिहि करै विनय सुनि तेती ॥
उठि प्रभात करि प्रातकृत्य सब करहिं सो मातन काजू ।
पुनि गुरु विप्र काज निरधारत गुरुगृह चलि रघुराजू ॥
करहिं काज पुनि पुरवासिन को सिगरे प्रजन बुलाई ।
अरज गरज सुनि चरजि चित्तमहँ हरज नरज बरकाई ॥
शासन उचित देहिं सब कहँ प्रभु मंजुल वचन सुनाई ।
काज अकाज छोड़ि पुरजन सब प्रभु दरशन हित आई ॥
विनय सुनावहिं आनँद पावहिं प्रभु छबि नयन छकाई ।
लषण सहित प्रभु जाय जननि गृह भोजन करहिं सदाई ॥
सकल दिवस भरि काज करहिं जो सो सब पितै सुनाई ।
शासन उचित लेत पितुसों सब अपनो हेतु बुझाई ॥
याम दिवस बाकी रघुनन्दन निकसहिं सहित सवारी ।
अथवा मृगया हेतु जात कहुँ सुंदर रूप शिकारी ॥

साँझ समय पितु निकट आय पुनि अपने महल सिधारैं ।
लषण सखन युत लखत नृत्यनित सुनत गान सुखसारैं ॥
बीतत याम निशा जननी गृह करहिं सबंधु विआरी ।
कराहिं शयन पुनि कनकभवन महँ मोदित अवधविहारी ॥
अति प्रसन्न पितु सुत कारज लखि कराहिं बखान सदाहीं ।
सज्जन साधु विप्र पुरवासिन काहि प्राणप्रिय नाहीं ॥
पुरजन परिजन सभ्य देशजन सज्जन भूसुर साधू ।
राम सनेह शील गुण बाँधे लहे न सपनेहु बाधू ॥
कियो विमल यश धवल दिगंतन विक्रम विश्व बड़ाई ।
रमारमण सम सकल गुणाकर को पावै समताई ॥

दोहा—ऋतुपति ग्रीषम पावसहु, शरद शिशिर हेमंत ।
जनकसुता युत सुख लहत, अवधनगर निवसंत ॥

कवित्त ।

विकसत कुसुम विलास वर वेलिन को,
बगरी सुवास वन विविध विहार है ।
विधुको विकास विश्व विमल भयो है व्योम,
बोलत विहंग वृक्ष बैठे बार बार हैं ॥
वसुधाधिराज को सुबेटा वर रघुराज,
बालित विदेह बेटी विरचि विचार है ।
वदत सुवैन वामलोचनी विलोकै वसु-
धामें वसुधाधर वसंतकी बहार है ॥ १ ॥
विकसे सुवारिज विमल वारिजा करन,
विश्वमें विभाकर विभास विलसंत है ।
वीरुध त्यौं विदल विलोकि विरहीन व्यथा,
विटप विशोक करै नवदलवंत है ॥

रघुराज बदत सुबेन हे विदहवाल,
विपुल विलोकिये बहार बरधंत है ।
बालन में बागन में बासन में बारन में,
वन में वगारनमें बसत वसंत है ॥ २ ॥
गहनमें गावनमें गिरिमें सुगोधन में,
गृहमें गिरामें गोरी ग्रीषम यों छैगयो ।
गानमें सुगायकमें गुणमें गुणीजनमें,
गोपतिके गोगनमें गर्म अति ह्वैगयो ॥
गोमें पुनि गोमें पुनि गोमें पुनि गोमें गुरु,
गुरुजनहूमें त्यों गलानि गुण वैगयो ।
रघुराज गदत गरीबको निवाज गाढ़ो,
ज्ञानिनके ज्ञानमें अज्ञान अस ज्वैगयो ॥३॥
गुलगुले गिलिम गलीचे गादी गेह बिछे,
गोरसके फेन ऐसे गरक गुलाब हैं ।
गोरस गिलासनमें हिमगिरि गोहनके,
गिरत सुगैलनमें गेहनते आव हैं ॥
गौरि गंग सरिस सुगेहिनी सुनैरी गिरा,
रघुराज गदत गुमानके गमाव हैं ।
गिरिते गहनते गवाक्षनते गौन करैं,
ग्रीषम गुराबकी ये गरम गिरावहैं ॥ ४ ॥
पूरब प्रचंड ये पयोधर पसारा कियो,
पारावार पराशिकै पूषा परेशानीते ।
पूरे पय पुहुमि सुपादपनि पुष्ट कीन्हें,
पुरुष पशुन पक्षी प्यासहू परानीते ॥
पृथिवी परत पल प्रभा पसराय प्यारी,

पावन परम पीर प्रोषित जे प्रानीते ।
रघुराज प्रवदत प्राणप्रिया पेखु पूरो,
पावस प्रतापको प्रकाश पौन पानीते ॥८॥
पपीहा पुकार प्यारी परत प्रमोद पोषी,
प्रचरैं परवेरू पति पतनी पियारमें ।
पौढ़िगे परेस त्यों पधारे परदेशी देश,
पूषन छपाने पयोधरके पगारमें ॥
रघुराज देखु प्रिया पंथनमें पादपमें,
पावस प्रचार पूरो पुहुमि पसारमें ।
प्रेममें प्रयोजनमें पानीमें सुप्राणिन में,
पारावार प्रान्तनमें पत्तन पहारमें ॥ ६ ॥
सोह्यो शुद्ध सलिल सुसरिता सरनहूं में,
सूखिगे सुपंथ त्यों सफाई सरहद्की ।
शिखी शिखिनीके सुख सकल सुखाने सुखी,
सिंधुर समाने जल सौखमें समदकी ॥
सुंदर सरोज सरयूमें सरसान लागे,
सरसी सरस शशि सुंदराई सदकी ।
सुंदर सदन बैठी सखिनकी स्वामिनी,
सुदेखु रघुराज सुख सुखमा शरदकी ॥७॥
शूरकी सरोषताई शशि शीतलाई सोखै,
शर्वरी सदाई सबहीकी सुखदाई है ।
स्वाद भे सुभग अन्न सरस सबालि साली,
शोभती सुशीशन शिखंडसी सुहाई है ॥
रघुराज शरद सोहाग सजनीको सज-
नीको सरसीन में सरोज सभगाई है ।

साजि साजि साँझ होत सांकरो सरसि शशि,
सम्हरै न सीते नव मुख समताई है ॥ ८ ॥
हेरिये हवेलिनमें हेलिनके हेला मचे,
हरबर होत हुब्ब होसहू शहरमें ।
हृदमें हुलास हिलि मिलिकै हँसन हेतु,
हंस हौसलाते हीन हंससे डहरमें ।
ह्वै गयो हिमंत हद हायनमें हनि हनि,
हाउको हटाउ नहिं अहनि पहरमें ।
रहै क्योंहूं बास हिय हियके हटाये हठि,
हार हिरवाय देहु हिमिकी हहरमें ॥ ९ ॥
हारिये न हिम्मत हिमंतमें हमेश हेली,
हूलसी हिलातीं हिये हिमकरकिरणें ।
हारन हजारनमें हीरनके हारनसे,
हिमकन होश हरें हिमगिरि वरणें ॥
रघुराज हाजिर हुजूरमें हिमायती हैं,
हेरिये विहार हार हरनी त्यों हिरनें ।
हारि हारि हौंसलाते अति हहराने हव्य,
वाटको न चहत हिराने हिमि डरनें ॥ १० ॥
सरमें सरितमें सरोवरमें सागरमें,
सघन सहटनमें सदन शिविर है ।
शैनमें सुसैननमें सब सजनीनहूंमें,
सज्जनसमाजमें दिशाननके शिर है ॥
सौषमें सरोषहूंमें शीलमें सुभावहूँमें,
साँकरे सहजहूंमें शीतकी सफर है ।
रघुराज सीते सुनै सिखिको सुहाग सांचो,

सरस्यो सरस सनसार में शिशिर है ॥११॥
सौख में सदनमें समीरना सुहात श्यामा,
शैल सरितानकी न सैर सुखदाई है।
सिरिफ सुहात सिखी सलिल सरोज सुम,
सदल उशीरहूं सजाई शत्रुताई है॥
रघुराज शशिकी सहाईते शिशिर सान,
सरसै सरस सूर सोभा सरमाई है।
सुख सरसावनी नशावनीकी सीत सखी,
साँची सजनीनहीकी संगति सुहाई है॥१२॥

दोहा—यहि विधि षटऋतु सुख लहत, सीय सहित सानन्द।
ऋतु ऋतुके सुंदर सदन, बसत सहित सखिवृन्द॥

सवैया।

रामके प्रेमको रूप मनो सिय सीयके प्रेमको रूप सु राम है।
रामहीं हैं सतिके सियके जिय राम को जीव सिया अभिराम है॥
श्रीरघुराज सनेह नहे दोउ बीतत आनँदमें वसु याम है।
द्वैतनुमें मनो एकही आतम दंपति दीसै त्रिलोक ललाम है॥ १॥
राम मनोरथ जानत जानकी सीय मनोरथ जानत रामहीं।
राम वियोग सहै न क्षणो सिय सीय वियोग अराम न रामहीं॥
रामके नैनन सीय बसै सियके दृग राम करें विशरामहीं।
रामकी आनँद मूरति जानकी जानकी आनँद मूरति रामहीं॥ २॥
राम छिपावें न हीकी सियाते सिया न छिपावतिजीकी सुरामसों।
रामकी प्रीति कहूं अधिकात कहूं सिय प्रीति बढ़ै बिन कामसों॥
रामसों श्रीरघुराज न दूसरो दूसरोको सियजू अभिरामसों।
रामसों सीयसों काको कहौं सियसी सिय है अरु राम है रामसों॥३॥
हेमलता जड़ कैसे कहौं सम त्यों क्षण ज्योति रहैं क्षण जोती।

चन्द्र घटै बढ़ै तापै कलंकित जाते नहीं उपमा की उदोती ॥
विश्व विभा जो विरंचि बटोरि रचै निपुणाई लगायकै सोती ।
श्रीरघुराज तऊ जगमें नहिं सुंदरता सियके सम होती ॥ ४ ॥
यद्यपि राम सिया अनुराग समान सबै विधिते परै जानो ॥
रूप उभै जिय एक मनो नहिं भेद विवेक परै पहिचानो ॥
प्रेम कृपा पुनि कोमल भाव कहाँ लगि सीयको जाय बखानो ॥
श्रीरघुराज कहैं हियकी जियमें सियकी सरसै सरसानो ॥ ५ ॥
चारिहू राजकुमारी बसैं नित कोशल पत्तनमें सुखछाई ।
रोजहीं रोज नवीन नवीन विलासन हासनकी अधिकाई ॥
राज समाज सजी नितहीं रहै भूपतिको सुख क्यों कहिजाई ।
श्रीरघुराज सुलक्षण राम करैं पितुकी सुखसों सेवकाई ॥ ६ ॥
सैर शिकार विहार अपार पहार अगार कहे न सिराई ।
चारिहू बंधुसमेत महीप बसैं पुर कौशलमें सुखछाई ॥
साहिबी संपति सैन्य समाज कहे रघुराजको पारहिं पाई ।
वारिये वासवहूकी विभूति विरंचि विभूति लहै लघुताई ॥ ७ ॥
जानकी संयुत जानकी जानि सदा पुर कौशलमाहँ विराजै ।
काकी कहौं उपमा जगमें जबहीं कहों जाकी तबै चित लाजै ॥
जेवै विकुण्ठ बसैं कमला कमलापति दिव्य विभूतिनि साजै ।
ते प्रगटे धरणीतलमें तिनके सम काको कहै रघुराजै ॥ ८ ॥

दोहा–यहि विधि वरण्यों राम सिय, अवध नगर संवास ।
रामस्वयंवर ग्रन्थमें, राज समाज हुलास ॥

चौपाई ।

मातुल सदन सुअवध विहाई । जबते गये भरत दोउ भाई ॥
तबते भरत लषण जननीको । सेवन करहिं राम अति नीको ॥
राम सनेह शील सेवकाई । लखि निज सुत सुधि दई भुलाई ॥

भरतमातु जानत जिय माहीं । मोर पुत्र रामहिं सति आहीं ॥
कौशल्याते दून सनेहू । करत कैकयी बिन संदेहू ॥
सब मातुनको राम पियारे । न्यून अधिक नहिं नयन निहारे ॥
भरत गये केकयपुर माहीं । कियो मुदित मातामहकाहीं ॥
नित नित केकयभूप उदारा । करहिं सुतासुत कर सत्कारा ॥
मातामह करि प्रीति महाई । भरतहि दियो अवध बिसराई ॥
इतहूं अवधनृपति सुधिकरहीं । भरत शत्रुहन गुणन बिसरहीं ॥
यद्यपि चारिहु बंधु समाना । रामहिं दशरथ प्रेम महाना ॥
बीत्यो बहुत काल यहि भाँती । सुखित सिराति जाति दिन राती ॥

दोहा—देवनके शंका भई, कहहिं परस्पर बैन ।
कब प्रभु रावण वध करैं, लहैं अमरपति चैन ॥

चौपाई ।

दशरथ मखमहँ हम सब आई । त्राहि त्राहि करि विनय सुनाई ॥
रावण करत नाथ अति पीरा । अहैं शरण तुव अमर अधीरा ॥
आरत देवन देखि मुरारी । भये नाथ नरलोक बिहारी ॥
सत्य सनातन विष्णु उदारा । कोशलनगर लियो अवतारा ॥
लहि सुत शक्र अदिति जिमि भाई । तिमि कौशिलासहित रघुराई ॥
यहि विधि कहत बैन सुर नाना । रहहिं गगनमहँ चढ़े विमाना ॥
रामचरित नित लखैं सुखारी । करिहैं प्रभु हमरी रखवारी ॥
प्रभु विहरैं कोशलपुरमाहीं । अवध प्रजन सुख भरैं सदाहीं ॥
कोटिमदन मद मारक रूपा । दुराधर्ष विक्रमी अनूपा ॥
करहिं न कहुके गुणमहँ दोषू । अपराधहु महँ होत न रोषू ॥
हत दूषण नरलोक विभूषन । मृदुल सुभाउ तेज जनु पूषन ॥
मिलैं दीनसों करि अति प्यारैं । प्रथमहि कोमल वचन उचारैं ॥

दोहा—परुषवचन कोउ जब कहै, राम देत सुसकाय ।

कबहुँ न उत्तर देत प्रभु, तिहि डारत बिसराय ॥

चौपाई।

यक उपकार कबहुँ कोउ करई। कबहुँ न रामहिं तौन बिसरई ॥
सोइ सुधि करिकरि बुद्धिअगाधा। बिसरावत अनन्त अपराधा ॥
ज्ञानवृद्ध वयवृद्ध सुजाना। शीलवृद्ध जे सज्जन नाना ॥
तिनके आगे रहहिं लजाई। करै न प्रभु आपनी बड़ाई ॥
अस्त्र शस्त्रमहँ पाय प्रशंसा। लज्जित हंसवंश अवतंसा ॥
बुद्धिमान कहतै सब जानै। कठिन प्रयोजन मधुर बखानै ॥
जाकी जौन होय सम्बन्धू। भाषहिं प्रथम दीनके बंधू ॥
राम सरिसको कोमल भाषी। सबको सब दिन सुख अभिलाषी ॥
विक्रम सरिस त्रिविक्रम जाको। कबहुँ न गर्व होत मनसाको ॥
कबहुँ असत्य कढ़ै नहिं बानी। जानत वेद पुराण विज्ञानी ॥
करहिं सदा वृद्धन सत्कारा। सहित नाम मुख नाम उचारा ॥
राखहिं प्रजन पाहिं अनुरागा। प्रजा करहिं नित प्रेम सभागा ॥

दोहा—परदुखमें अतिशय दुखी, परसुखमें सुख भीन ।
साधु विप्र पूजत सदा, दया करत लखि दीन ॥

चौपाई।

परमधर्म जानत रघुराई। इन्द्रियजित आचार सदाई ॥
रघुकुल उचित बुद्धि वर शाली। क्षत्र धर्म प्रिय मणिगण माली ॥
समर मरण प्रभु सदा सराहैं। समरगमनहित वीर उमाहैं ॥
रणहत स्वर्ग वीर हठि पावै। सकल पाप तनुते नशि जावै ॥
सुनि सुनि वीर रामकी बानी। समरमरणहित मतिहुलसानी ॥
अनुचित कर्म निरत नहिं रामा। ग्राम कथा महँ नहिं विश्रामा ॥
वाद विवाद माहिं रघुनन्दन। सुरगुरुसरिस भानुकुल चन्दन ॥
स्वप्नेहु रोग समीप न आवत। तरुण अरुण मखभानु लजावत ॥

अहैं अजानवाहु रघुनाथा । जानत देश काल यकसाथा ॥
परम चतुरपुनिरसिकशिरोमणि । रघुकुल कमलकलापदिवामणि
ग्राही सार वस्तु सब काला । सज्जन प्रिय मुख वचन रसाला॥
संतन प्रिय मूरति मनहारी । रच्यो एकही जन मुख चारी ॥

दोहा—ऐसे सहित अनेक गुण, भे सब गुणी प्रधान ।
राम प्राणप्रिय भे प्रजा, राम प्रजाके प्रान ॥

चौपाई ।

देखि राम गुण कौशलराई । नित नित आनँद लहत महाई॥
सब विद्या विधान रघुभानू । जानत सांग सुवेदविधानू ॥
नहिं धनुधर रघुपतिसम आना । दिव्य अस्त्र जानत सविधाना ॥
कोशलनगर जन्म प्रभु लयऊ । सदा अदीन दीन प्रिय भयऊ ॥
सत्यसंध अति मृदुलसुभाऊ । गुरुजन गण अति देत उराऊ॥
जे जन धर्म अर्थके ज्ञाता । पूछत धर्म हेतु कहि ताता ॥
धर्म काम अरु अर्थ विचारी । करत काज सब सुरति सँभारी ॥
लौकिक परलौकिक सब काजा । करत समै अनगुण रघुराजा॥
समरथ साहब सहज सुभाऊ । स्वप्नेहुँक्षणछलछुआ न काऊ ॥
अभिप्राय अति गूढ़ विनीता । मित्र सहाई परम पुनीता ॥
स्वप्नहुँ जापर क्रोधित होई । तिहि शठ कहँ त्यागत सबकोई ॥
हर्षित जापर होत उताला । करत रंक कहँ राउ कृपाला ॥

दोहा—दान देत इकबार जिहि, सो कुबेरसम होत ।
कर्षत धन वर्षत बहुरि, जिमिरविजलसरसोत ॥

गो द्विज साधु भक्ति दृढ़ राखे । विसरत नहिं स्वप्नेहुँ मुख भाखे ॥
असत वचन मुखकढ़न न कवहूँ । कारज कठिन पड़ै यदि तबहूँ ॥
आलस रहित गर्वगुण हीना । निज परदोष विचार प्रवीना ॥

चिन्तक शास्त्र कृतज्ञ उदारा । जानत हियकी देखि अकारा ॥
उचित अनुग्रह निग्रह करई । वक्रलीक जो मुख कछु कहई ॥
सदा सुसज्जन संग्रहकारी । यथा योग सबसों व्यवहारी ॥
काल काल सब सदन विहारी । करत खर्च आमदै विचारी ॥
ठानत आनँद अमित उपाई । करत खर्च कछु शंक न लाई ॥
काकिनि लेत लगत लघु नाहीं । बखसत कोटिन कोटिन काहीं ॥
लघु बड़ ग्रंथ वस्तु सब जानत । धर्मसमेत अर्थ निज आनत ॥
जानत सब देशन की भाषा । बिन जानी जानन अभिलाषा ॥
अति स्वतंत्र परतंत्र समाना । आलसरहित कर्म सब ठाना ॥

दोहा—तालभेद जानत सकल, साठि कोटि श्रुति साख ।
रागभेद सब जानतो, जे चौरासी लाख ॥

चौपाई ।

सखी सखनसँग रासनमाहीं । गाय बजाय दिखावत जाहीं ॥
लै बिलंब द्रुत मध्यमरीती । अनुदात्तहु उदात्त स्वर नीती ॥
वादी सत स्वरनकी चाली । हीन मुख्य स्वरसम अरु खाली ॥
रागमेल अरु रागविभागा । मृदु मूर्च्छना तानकी जागा ॥
दनुज मनुज सुर पन्नग गाना । जानत राम यथा ईशाना ॥
शिल्प कर्म जानत रघुराई । शिल्पिनि दरशावत निपुणाई ॥
नाग कंध वाजिनकी पीठी । चढ़त बनावत गति अति मीठी ॥
सकल गुणन अद्वैत विराजा । सरल सहज साहब रघुराजा ॥
महारथी अतिरथी प्रधाना । को धनुधर रघुनाथ समाना ॥
सैना व्यूह विशारद नीको । दशरथ सुवन भुवनको टीको ॥
दुराधर्ष रण काल समाना । करत शत्रुहनि भवन पयाना ॥
लहैं सुरासुर नहिं समताई । जिहिं कोपत कंपत सुरराई ॥

दोहा—चुगलीकी चर्चा न कछु, क्रोधहुमें हँसि जोय ॥

घरी घरी मुख माधुरी, झरी झरीसी होय ॥

चौपाई ।

नहिं मत्सरी अवधपति प्यारो । काल अधीन न करत विचारो ॥
कबहुं न काहु करत अपमाना । का को कहौं राम उपमाना ॥
क्षमा क्षमा अरु क्रोध पुरारी । बुधि विलोकि सुरगुरु मे हारी ॥
शक्र लजत विक्रम लखि जाको।कहत रामगुणको नहिं थाको ॥
ऐसे गुणनसहित रघुराई । लसत किरणयुत जनु दिनराई ॥
विदित गुणाकर जग रघुनाथा । वसुधा चहति होइ मम नाथा ॥
निरखि पुत्र सुंदर गुण भाऊ । एक दिवस तहँ रघुकुल राऊ ॥
कियो विचार मनै महराजा । होइँ अवशि रघुपति युवराजा ॥
राजकाज सौंपहुँ सब रामै । मैं अब जाउँ विपिन तप कामै ॥
साठि हजार वर्ष मुहिं बीते । कबहुँ न राजकाजते रीते ॥
लूटि लेहुँ सुख अब जगमाहीं । करि अभिषेक रघूत्तम काहीं ॥
कौन दिवस अस होइ मुरारी । लेब राम अभिषेक निहारी ॥

दोहा—जासु दंड यमदंड सम, विक्रम शक्र समान ।
बुद्धि बृहस्पति तुल्य है, धीर धराधर मान ॥
सप्त द्वीप नव खण्ड महिं, राम भुवन अभिराम ।
धर्मसहित शासन करहिं, तब पूरै मनकाम ॥

चौपाई ।

यहि विधि करि निहचै मनमाहीं । बोलि तुरंत सुमंतहि काहीं ॥
अपनो कह्यो मनोरथ राजा । राम होहिं आशुहि युवराजा ॥
कह्यो सुमंत पुलकि मनमाहीं । आशुहि करहु विलंबहु नाहीं ॥
तब दशरथ सब सचिव बुलाये । प्रथमहि गुरु वसिष्ठ तहँ आये ॥
औरहु सब महर्षि पगुधारे । भूपति करि प्रणाम सत्कारे ॥
प्रकृत महाजन सभ्य सुजाना । देश देशके भूपति नाना ॥

सबै सभासद सभा सिधारे। करि सत्कार भूप बैठारे ॥
कोशलेन्द्र कहँ भूपति वन्दे। यथायोग्य सब बैठि अनन्दे ॥
कनकसिंहासन मध्य विराजा। तापर बैठ अवध महराजा ॥
केकय राज भूप मिथिलेशू। दियो बुलावन नाहिं निदेशू ॥
सुर प्रेरित सरस्वति मति फेरी। होई देवकाज महँ देरी ॥
जान न पैहैं वन रघुवीरा। रावन हनी कौन रणधीरा ॥

दोहा—जनक भरत ऐहैं अवध, नहिं जैहैं वन राम।
को उतारि है भार भुव, करि निशिचर संग्राम ॥
देवन प्रेरित शारदा, दियो भूप मति फेरि।
कह्यो सुमंतहि राजमणि, भरत आनु करि देरि ॥

चौपाई।

जब ह्वै जाहिं राम युवराजू। सुनत भरत मिथिला महराजू ॥
सुनि यह सुख ऐहैं अतुराई। केकै भूपति संग लिवाई ॥
सुनत राम अभिषेक उदारा। ऐहैं जनकराज तिहि वारा ॥
अबै न केकै जनकहि आनौ। मेरी सीख सत्य करि जानौ ॥
नृप शासन सुनि सचिव सुमंता। आन्यो मही महीप तुरंता ॥
भरी सभा दशरथकी भारी। बैठायो भूपति सत्कारी ॥
सोह्यो सभा मध्य महराजा। सुरन सहित मानहु सुरराजा ॥
जन जगतीपति अवसर जानी। भन्यो वारिधर धुनि इव बानी ॥
सुनहु नृपति सब सचिव प्रधाना। होत मोर अब अस अनुमाना ॥
सबको विदित यथा यह राजू। यहि कुल भये बड़े महराजू ॥
पाल्यो पुहुमिप्रथितयशभयऊ। मैंहूँ पूरव पथ गहि लयऊ ॥
सुत सम पाल्यो प्रजन अपारा। भयो आजलगि कछु न विकारा ॥

दोहा—छत्रहि छायामें बसत, हायन साठि हजार।
राज्य करत बीतत भये, रचत प्रजा उपकार ॥

चौपाई ।

लाग्यो आय चौथ पन मोरा । जीवन रह्यो बाचि अब थोरा ॥
ताते अस मन होत हमारा । अब चाहहुँ परलोक सुधारा ॥
करा भजन कहुँ कानन जाई । निशिदिन नारायण पद ध्याई ॥
रामहि सौंपि राज्य कर भारा । भजौं मुकुंद चरण निशि बारा ॥
थके अंग नहिं चलहिं चलाये । बनी न बिन विश्रामहि पाये ॥
मोरे सम अधिकहु पुनि मोते । राम भये कारक सुख सोते ॥
जाकर विक्रम शक्र समाना । सकलगुणाकर बुद्धि निधाना ॥
करहुँ रामको मैं युवराजू । करि अभिषेक होहुँ कृतकाजू ॥
पुहुमी पालन लायक रामा । धर्म धुरंधुर धीरज धामा ॥
मोकहँ बाँकी अब इतनोई । सो जानहु सब विधि सब कोई ॥
कहत होहुँ जो उचित विचारी । लेहु सबै गुण दोष निहारी ॥
जो तुम्हार संमत अब पाऊं । काल्हि राम युवराज बनाऊं ॥

दोहा—भूप पौरजन सचिव गण, सज्जन लेहु विचारि ।
उचित होइ तौ आशुही, सम्मत करहु सँभारि ॥

चौपाई ।

जब दशरथ अस वचन बखाना । भयो सबन सुनि मोद महाना ॥
साधु विप्र गुरु सचिव सुजाना । पौरजान पद लघु बड़ नाना ॥
उठे बोलि सब एकहि बारा । जनु गर्जें घन गगन अपारा ॥
साधु साधु यह भलो विचारा । संमत सब विधि अहै हमारा ॥
भूप करहु युवराज रामको । नहिं विचार अब और कामको ॥
साठि सहस्र वर्ष वय बीती । प्रीति रीति नृप नीतिन रीती ॥
रामहि करि युवराज नरेशा । मेटहु सब जियको अंदेशा ॥
कौन दिवस होई महराजा । चढ़ि गज महाबाहु रघुराजा ॥
चलत चारु चामर रघुराया । छाई वदन छत्रकी छाया ॥

कढ़िहैं राजमार्ग रघुबीरा । हम सब देखि होब हतपीरा ॥
सुनत सबनके वचनविलासा । दशरथ बहुरि वचन परकासा ॥
राम होहिं युवराज प्रवीने । सुनतहि सब संमत करि दीने ॥

—राज काज मेरे करत, देखे कौन अकाज ।
जीते अस चाहहु सबै, राम होहिं युवराज ॥

चौपाई ।

तब वसिष्ठ अरु सचिव सुमंता । सबकी रुख गुणि कह तुरंता ॥
राम मनुष्य न होइँ महीपा । कहु सों कबहुँ न होत प्रतीपा ॥
जे तुव सुत गुण आनँदकारी । सुनहु भूप हम कहहिं उचारी ॥
सकल दिव्य गुण राउर बेटा । हम सबको कलेश कुल मेटा ॥
विष्णु सरिस विक्रम रघुराई । लायक त्रिभुवनकी ठकुराई ॥
भयो न है नहिं होवनहारा । अवधनाथ जस कुँवर तुम्हारा ॥
राम सत्य सत पुरुष शिरोमनि । सत्य वचन पालक धरणी धनि ॥
धीर धुरंधर धर्म अधारा । राकाशशि सम सब कहँ प्यारा ॥
क्षमा सरिस है क्षमा बड़ाई । सुरगुरु सरिस बुद्धि अतुलाई ॥
शील सत्य अरु धर्महुँ कामा । कोउ न जान जस जानत रामा ॥
क्षमा करन हठि परचो सुभाऊ । अति कृतज्ञ सुत राउर राऊ ॥
इन्द्रियजित जन जानत प्रीती । मृदु थिर कठिन निपुणनृपनीती ॥

दोहा—सुनी आज लों कानमें, अनसूयक रघुनाथ ।
सहज सरल वादी मृदुल, समुझावत गहि हाथ ॥

चौपाई ।

वृद्ध बहुत श्रुत विप्र विज्ञानी । तिनकी संगति करत अमानी ॥
भूपति तुव सुत जस यश तेजा । मिलत न कतहुँ महीतसमेजा ॥
सुर नर असुर विश्व महँ जेते । राम सरिस धनुधर नहिं तेते ॥
सब विद्या व्रत योग निधाना । विज्ञ विधाता वेद विधाना ॥

राग नाल सुर जानन जैसो। कोउ नहिं देखि परै जग वैसो ॥
गुन कल्याण भवन अति साधू। मति कुशाग्रवरती निर्बाधू ॥
द्विजगण महँ रघुराज विनीता। अर्थ धर्म महँ निपुण पुनीता ॥
सुनत शत्रु जब कहुँ पुर ग्रामा। जात लषण युत हित संग्रामा ॥
नहिं लौटत बिन बैरिन मारे। शूर शिरोमणि सायक धारे ॥
शत्रुन मारि अवध जब आवैं। लषण सहित सिंधुर महँ भावैं ॥
मंद मंद मग चलत बजारा। पावत पुरजन मोद अपारा ॥
कहुँचढ़िलषणसहितवरस्यन्दन। आवत कौशलपुर रघुनन्दन ॥

दोहा-संग साजि चतुरंगिनी, शूर सखनके वृन्द ।
जन जन प्रति पूँछत पुलकि, राम कुशल आनन्द ॥

चौपाई ।

अग्निहोत्रकी कुशल भलाई। पूछत वैदिक विप्रन पाई ॥
प्रजन पुत्र पत्नी कुशलाई। पूछत परम प्रेम दिखराई ॥
गुरुजन को पूँछत कर जोरी। मानत शासन शिष्य निहोरी ॥
रहत सदा वश शिष्य तिहारे। धर्म कर्म तौ नाहिं बिगारे ॥
शिष्य सेनपति पूछहि रामा। चाकर करत सदा तुव कामा ॥
पिता यथा पुत्रन कहँ मानैं। तथा प्रजन कहँ रघुपति जानैं ॥
प्रजन देखि दुख दुखी विशेखी। सुखी प्रजन सुखलखिनिजलेखी ॥
होत प्रजन घर जबै उछाहू। पिता सरिस उर करत उमाहू ॥
मृषा वचन स्वप्नेहुँ नहिं भाषैं। इन्द्रियजित बिन चूक न माषैं ॥
पुरुष सिंह सबसों मुसक्याई। सबसों पूछहि कुशल भलाई ॥
मानहुँ मूरति धर्महि केरी। नाहिं सुहात अघकथा घनेरी ॥
उत्तर प्रति उत्तर महँ जीतैं। परमारथ सों कबहुँ न रीतैं ॥
भ्रुकुटीबंक नयन अरुणारे। विष्णुसरिस कौशिला दुलारे ॥

दोहा-दशरथ तीनिहुँ धाममहँ, राम एक अभिराम ।

सहन शीलता शूरता, विक्रमता जग आम ॥

चौपाई ।

त्रिभुवन राज्यकरनके लायक। महि मंडल न फवत रघुनायक॥
सौंह भौंह भै जाकी ओरा। होत शक्र सम सो तिहि ठौरा॥
जिहि अनखौह भौंह भै जबहीं। जर ते उखरि गयो शठ तबहीं॥
होत वृथा नहिं क्रोध प्रसादा। राखत सदा धर्म मर्यादा॥
जिहि वध योग न्याय करि जानै। तिहि वधकरत शील नहिंआनै॥
जो वध योग्य न तापर कोपै। ताकर होत कबहुँ नहिं लोपै॥
जिहिरीझतवखसततेहिलाखन। तदपि न होततोष अभिलाखन॥
शांत दांत जन कांत उदारा। सकल गुणाकर तोर कुमारा॥
यथा किरण युत दिपत दिनेशू। तथा गुणन युत कुवँर नरेशू॥
गुणी शिरोमणि कुँवर रावरो। महि चाहति पति होय साँवरो॥
तेरो लाल भाग्य वश भयऊ। जिमिवासव कश्यप के जयऊ॥
बल आयुष अरोगता बाढ़ै। धर्म धुरंधर तुव सुत गाढ़ै॥

दोहा—देव असुर नर उरग वर, विद्याधर गन्धर्व।
आज राम सम कोउ न जग, लोकपालहूं सर्व॥

चौपाई ।

बालहु वृद्ध तरुण नर नारी। साँझ सबेरे पाणि पसारी॥
माँगहि सब देवन पहँ जाई। अब युवराज होहिं रघुराई॥
राजन राउर कृपा सहाई। भई सिद्धि सबकी मन भाई॥
ताते अब नाहिं करहु विलंबा। राउर लाल भुवन अवलंबा॥
इंदीवर सुंदर तनु श्यामा। रिपुकरि सिंह राम अभिरामा॥
यौवराज्य कीजै अभिषेका। होइ विश्व उपकार अनेका॥
नारायणके सरिस रावरो। राज शिरोमणि कुवँर साँवरो॥
जो तुम चहहु जगत उपकारा। करहु राम अभिषेक अबारा॥

शंका समाधान नहिं कीजै । करि अभिषेक जगत यश लीजै ॥
सुर नर कारज सब सिधि होई । यह प्रसंग जानै कोइ कोई ॥
सुनि वसिष्ठके वचन सुहाये । एकहिंवार सभासद गाये ॥
ठाढ़े भये सकल कर जोरी । अवविलंब नहिं होय बहोरी ॥

दोहा–रामहि दै युवराज पद, करहु भूप विश्राम ।
हम सबको अब काल्हिही, होय पूर मनकाम ॥

चौपाई ।

सुनि गुरु वचन भूपमणि हर्षै । बारहिंवार नयन जल वर्षै ॥
गद्गद गर बोले मृदु बानी । परम भाग्य आपन हम जानी ॥
प्रगट्यो पूरव पुण्य प्रभाऊ । जेठ कुवँर पर सबकर भाऊ ॥
गुरु मंत्री पुरजन नृप जेते । किये राम पर संमत तेते ॥
अस कहि नृप उठि परम अनंदी । बोल्यो गुरु पद पंकज वंदी ॥
सहसन भूप मोहिं कर जोरें । राम हेतु बहु भाँति निहोरें ॥
प्रजा प्रकृति परिजन सुखभीजै । कहत रामअभिषेक करीजै ॥
तात करहु न नाथविलंबा । करहु राम अभिषेक अलंबा ॥
साजहु सकल साज मुनिराई । देहु राम युवराज बनाई ॥
चैत मास यह परम सुहावन । काल्हि पुष्य नक्षत्रहु पावन ॥
इतनी सुनत भूपकी बानी । जय ध्वनि भै दरबार महानी ॥
जय रविवंश हंस रघुराजू । जय रघुकुल कैरव द्विजराजू ॥

दोहा–सभा कुलाहल कछुक जब, शांत भयो तिहि काल ।
पुनि वसिष्ठसों कहत भे, जोरि पाणि महिपाल ॥

कश्यप मार्कंडेय विज्ञानी । वामदेव आदिक मुनि आनी ॥
सचिव सुमंतादिकन बुलाई । शासन करहु जु उचित दिखाई ॥
अभिमतगुणिवसिष्ठ सुखपाई । रहे सचिव तहँ सब मुनिराई ॥

दिय वसिष्ठ शासन नृप आगे । रहे जोरि कर सब अनुरागे ॥
तुम सुमंत साजहु सब साजू । सुवरण रत्न औषधी आजू ॥
सकलदेव बलि विविध विधाना । मधु सर्पिषी लाज विधि नाना ॥
विविधभाँतिके वसन नवीने । कनक रजतके सूखत चीन ॥
पीत पाट अम्बर अति चारू । तिमि पोशाक अमित मनहारू ॥
महा मनोहर स्यन्दन भारी । रत्न कनक झाँझन झनकारी ॥
श्वेत तुरंग सजे सब अंगा । फहरत द्वै पताक पचरंगा ॥
धनु शर खड्ग चर्म गद नेजा । कारक शत्रुन कतल करेजा ॥
आनहु सकल सुमंत प्रभाता । चतुरंगिनी सैन्य विख्याता ॥

दोहा—रत्न साज सजवायकै, शत्रुंजय गजराज ।
द्वार देश ठाढो रहै, जिहि लखि मेरुहि लाज ॥

चौपाई ।

युगल विजन चामर युग चारू । श्वेत छत्र निशिपति आकारू ॥
बनै कुंभ शत कंचन केरे । मंद परै पावक जिनहेरे ॥
रत्नखचित रातिहि बनवाई । अग्निहोत्र घर देहु धराई ॥
सनख सदंत व्याघ्रको चर्मा । धरवावहु आसुहि शुभ कर्मा ॥
भूपति अग्निहोत्र गृहमाहीं । सिगरी सामग्री धरि जाहीं ॥
जानहु सब अभिषेक विधाना ।आनहुँ साज सकल विधिनाना ॥
होत प्रभात प्रयोजन होई । लघु बड़ वस्तु कमै नहिं कोई ॥
अन्तहपुर महँ द्वारन द्वारा ।अवधनगरमहँ सकल प्रकारा ॥
कदली कनक खंभ मनहारी । धरवावहु करि दीप उज्यारी ॥
बँधवावहु कुसुमनके माला । छिरकावहु चंदन यहि काला ॥
धूप धूम विरचहु चहुँ ओरा ।सलिल सुगंध सींचि सब ठोरा ॥
मेलि दूध दधि पाक बनाई । विरचहु पायससहित मिठाई ॥

दोहा—लक्ष विप्र भोजन अवशि, होई होत प्रभात ।

देहु निमंत्रन वैदिकण, करि सत्कार अघात ॥
दधि घृत लाजा दूर्वा, कुंकुम अगर हरिद्र ।
अक्षत मृगमद दक्षिणा, कोटि कनककी मुद्र ॥

चौपाई ।

यह पुण्याहवांचनहिं हेतू । होत भोर आनहु करि नेतू ॥
विप्रनिमंत्रित जे इत आवैं । बैठि कनक आसनमहँ खावैं ॥
बँधैं नगर घर घरन पताके । अति उतंग रोकत रवि चाके ॥
गलिन गुलाब सिंचाउ बजारू । बँधैं कनक तोरण विस्तारू ॥
गायक गण गन्धर्व समाना । राग ताल जे जानत नाना ॥
वारवधू करि करि शृंगारा । ठाढ़ी रहैं दूसरे द्वारा ॥
नौबत झरै महल चहुँ ओरा । बाजन बजैं होतही भोरा ॥
करौ नगर उत घोष अनेका । होत भोर रघुपति अभिषेका ॥
ग्राम देव सुर मंदिर जेते । सहित दक्षिणा पूजहु तेते ॥
अन्नपान सब पहँ पठवाई । बिन पूजन कोउ नहिं रहि जाई ॥
चंदन कुसुम निवेदन पाना । पामर प्रेतहु पावहिं नाना ॥
सहित सनाह पुशाक सँवारी । कर करवाल ढाल भट धारी ॥

दोहा—दस्ताने कर धारिकै, पहिरि श्वेत सुम माल ।
राजित रत्नाभरणते, रघुकुल वीर विशाल ॥
महाराजके महलके, अंगन प्रथमहिं द्वार ।
खड़ेरहैं दश लक्ष भट, सायुध शूर तयार ॥

चौपाई ।

लौकिक औरहु बुद्धि विचारी । करहु राम अभिषेक तयारी ॥
अस वसिष्ठमुनि परम प्रवीने । उचित और शासन सब दीने ॥
कह्यो भूपसों पुनि मुनि वानी । शासन दियो सचिव सब आनी ॥
रहहु सुचित नृप होत प्रभाता । होय राम अभिषेक विख्याता ॥

अस कहि गये भवन मुनि दोऊ। भये प्रमोदित जन सब कोऊ ॥
उत मुनि लागे करन विधाना। गणपति पूजनादि विधि नाना ॥
इतै सुमंत महीप बुलाई । बोले वचन मंजु मुसक्याई ॥
सचिव राम कहँ ल्याउ लिवाई। पेखन चहहुँ भुवन सुखदाई ॥
भले सचिव कहि चल्यो तुरंता। रंगमहलमहँ गयो सुमंता ॥
राम भुवन महँ डेउढ़ी साता। रोंकि न गयो सचिव अवदाता ॥
तहँ अशोकवाटिका सुहाई । लषणसहित बैठे रघुराई ॥
सखा सकल तहँ राजकुमारा। बैठे किये सकल शृङ्गारा ॥

दोहा–पिता सचिव आवत निरखि, उठ्यो भानु कुलभान ।
मर्यादा पालक प्रबल, राम सरिस नहिं आन ॥

चौपाई ।

करि प्रणाम मंत्री कर जोरी। कीन्हीं विनय महा सुख बोरी ।
चलहु कुँवर महराज बुलायो । आप लिवावन मैं इत आयो ॥
सुनत पिता रजाय रघुराई। चले लषण कर गहि अतुराई॥
ड्योढ़ी चारि नाँघि जब आये । रथपर भे सवार सुख छाये ॥
लियो लषण कहँ यान चढ़ाई । सूत बाग गहि चल्यो तुराई॥
पुरवासी रघुनाथ जुहारे। दोउ कर शिर धरि प्रभु सत्कारे ॥
राजमहल प्रविशे रघुराई। नाँघि तीनि ड्योढ़ीयुत भाई ॥
स्यन्दन तजि गवने रघुनन्दन । वृन्दन द्वारपाल किय वंदन ॥
तीनि पसर नाके पुनि रामा । द्वापरसों कह वयन ललामा ॥
देहु पिता कहँ खबरि जनाई। दरश हेतु ठाढ़े रघुराई ॥
द्वारप दौरि कह्यो दशरथको । खड़े राम जीते मन्मथको ॥
चहत रावरो दरश हुलासन । आवैं सभा होय जो शासन ॥

दोहा–बोल्यो हुलसि नरेश तब, आनहु आशुहि राम ।
द्वारपाल द्रुत दौरिकै, कह्यो चलहु अभिराम ॥

चौपाई ।

चले लषण कर गहि रघुराई । पीछे चल्यो सचिव सुख पाई ॥
मंदिर मंदर सरिस उतंगा । सुंदर रत्न खचित बहुरंगा ॥
फटिकफरशमणिखचित सुपाना । मंद मंद चढ़ि कियो पयाना ॥
देख्यो पिता सभा रघुराजू । बैठे देश देशके राजू ॥
पश्चिमके अरु पूरब केरे । उत्तरके दक्षिणी घनेरे ॥
औरहु मध्यदेशके भूपा । बैठे सब निज निज अनुरूपा ॥
बादशाह बहु म्लेच्छ अधीशा । गिरि वनवासी विदित बलीशा ॥
पुरवासी बहु देशहु वासी । सभ्य महाजन आनँदरासी ॥
लसैं विप्र मंडल इक ओरा । ठाढ़े बैठे मनुज करोरा ॥
कनकसिंहासन मध्य विराजा । तामें लसत अवध महराजा ॥
दशरथ भ्रुकुटी लखैं नरेशा । किहि क्षण कापर होत निदेशा ॥
जस सुरसेवत शक्र सदाहीं । तिमि महिमहिपति दशरथकाहीं ॥

दोहा—राज राज राजर्षिवर, राजत राज प्रधान ।
मनहुँ मरुतगण मंडले, अतिमंडित मघवान ॥

कवित्त ।

रघुराजआवत निहार प्राणप्यारा पुत्र,
विक्रम अपारा तीनौं लोक उजियारा है ।
साजित शृँगारा लोक सुंदर उदारा मद,
मदन हजारा कोउ तारा बहु बारा है ॥
गुणनि अगारा अनियारा वोजवारा वीर,
धीर सरदारा जस भुवन पसारा है ।
हेरतहीं हारा हिय अति सुकुमारा कल,
कौशिला कुमारा रघुवंशको दुलारा है ॥

दोहा—सुत प्रधान आजानु भुज, गवन मत्त मातंग ।

मदन मीत मद कदन हद, वदन मनोहर अंग ॥
हर्ष वर्ष जाको दरश, तरस परश हित होय ।
सरस सकल गुण सरस चित, नीरस लखै न कोय ॥
ग्रीषम आतपतापित जिमि, प्रजा पाय घनश्याम ।
तिमि पाये आराम सब, देखि राम अभिराम ॥

चौपाई ।

मन्द मन्द आवत रघुराई । नाहिं अघात देखत नृपराई ॥
करहिं सभासद उठि अभिवंदन । पाणि उठाय लेत रघुनंदन ॥
राजमहल कैलास समानू । आये मनहुँ निशाकर भानू ॥
पिता समीप लषण रघुनाथा । परशि भूमि जोरे युग हाथा ॥
आपन आपन नाम सुनाई । किय प्रणाम लषण रघुराई ॥
खड़े पार्श्वमहँ जोरे हाथा । परम विनीत नवाये माथा ॥
उठि नरेश उर लियो लगाई । मानहुँ गयो मनोरथ पाई ॥
मंडित कनक मणिन सिंहासन । दिय शासन कीजे सुत आसन ॥
सकै न बैठि राम भरि लाजा । पाणि पकरि बैठायो राजा ॥
परमासनशोभित प्रभु ठयऊ । उदय उदय गिरि रवि जनु भयऊ ॥
रघुपति प्रभा सभामहँ पूरी । राज समाज शोभ मय भूरी ॥
ग्रहनक्षत्र संयुत निशिराई । शरद निशासम सभा सुहाई ॥

दोहा—मुकुरमाहिं प्रतिबिंब निज, तिमि लखि सजित शृँगार ।
कह्यो रामसों भूप जिमि, कश्यप नयन हजार ॥

चौपाई ।

जेठ पट्टरानी कौशल्या । जिमि गौतमकी नारि अहल्या ॥
तिनके पुत्र भये रघुराजू । मम समान अधिकहु तुम आजू ॥
वयते जेठ जेठ गुणहूं ते । तुमते जेठ श्रेष्ठ उनहूं ते ॥
लाल परमप्रिय पुरजन केरे । तुव गुण कहँ लगि कहौं घनेरे ॥

अपन शील जगत वश कीन्हें। शत्रु मित्र सब सम करि दीन्हे ॥
ताते सुनहु कुँवर बड़भागा। चौथोपन हमार अब लागा ॥
भये केश सित रद बिलगाने। राजकाज महँ अंग थकाने ॥
ताते अस मन होत कुमारा। सौंपहुँ तोहिं राज्य कर भारा ॥
करों भजन भगवतको प्यारे। बनत सकल परलोक सुधारे ॥
घरमें वा वनमें हरि ध्याई। लेहुँ लाभ परलोक बनाई ॥
ताते कालिह पुष्य नक्षत्रा। सुभग योग गुरुवार पवित्रा ॥
गुरुसंयुत संमत सब केरो। तुव अभिषेक करन मन मेरो ॥

दोहा—होय सुखद युवराज पद, को अभिषेक तुम्हार।
सभ्य पौर मंत्री नृपति, गुरुयुत किये विचार ॥

चौपाई

सकल गुणाकर जानि उदारा। सौंपहुँ तुमहिं राज्यकर भारा ॥
बहुत बुझाय तुमहिं का कहहूँ। परम चतुर मैं जानत अहहूँ ॥
तद्यपि उचित सयानन काहीं। देव शिषापन सुतन सदाहीं ॥
नहिं अनरस मानव मनमाहीं। तुम्हारे हितमहँ हित सब काहीं ॥
इन्द्रियजित रहियो सब काला। सबसों राखहु विनय विशाला ॥
तज्यो न कबहूँ शील सुभाऊ। दान देत महँ रहै उराऊ ॥
युवा नारि मद शयन शिकारा। अति अनुरत नहिं रह्यो कुमारा ॥
काम क्रोध मद मत्सर मोहा। लोभहुँसों राख्यो अति द्रोहा ॥
कबहुँ काहु दीन्ह्यो ना गारी। बोल्यो वचन विशेष विचारी ॥
ने न बहुत हास रस प्रीती। जानहु शत्रु मित्रकी रीती ॥
आपन राज्य और पर राजू। लै सुधि सकल किह्यो सब काजू ॥
वृथा खर्च कबहूँ नहिं करियो। सुमति संत संगति अनुसरियो ॥

दोहा—सचिव सभ्य प्रकृती प्रजा, करि रंजन बिन रंज।
पालन कीन्ह्यो प्रीतियुत, जिमि करसों रवि कञ्ज ॥

चौपाई ।

कोषसंचित धन भूरी । आयुध सकल रहैं नहिं दूरी ॥
कोष और आयुध आगारा । जो नृप संचित सविधि अपारा ॥
सैन्य सुहृद अरु सचिव सयाने । इनकीअनुमतिमति मनुमाने ॥
जो पालत मेदिनी महीपा । रहतसुखिततिहिमित्रप्रतीपा ॥
राजनीति राजनको रामा । देवन यथा सुधाप्रदकामा ॥
ताते रघुवर प्राणपियारे । किहेहुकाज सबभाँतिसम्हारे ॥
रघुकुल रीति सदा चलि आई । लहे भूप सब पुण्य बड़ाई ॥
मोहिं शिखवत लागत अतिलाजू । रघुनायक लायक युवराजू ॥
काल्हि सौंपि तुमको सब राजू । म करिहौं परमारथ काजू ॥
सुनि नृपवचन मुनीश सुजाने । मनहींमनकहिमुखमुसक्याने ॥
नारायण कर धरि सब भारा । परमारथ कर करतविचारा ॥
अज शिव वंदित जिहि पद रेनू । अधिकफलतसुरतरुसुरधेनू ॥

दोहा—मानि विष्णु को पुत्र निज, चहत होन विन शोक ।
यह अचर्य कहि जात नहिं, नृप साधत परलोक ॥

चौपाई ।

रघुपति सुनत पिताकी बानी । बोले वचन विनय रस सानी ॥
नाथ सिद्धि कर आप प्रतापा । मैं किहि लायक कुमतिकलापा ॥
राउर शासन शिर पर मोरे । रथ लै बहत बाजि गुण जोरे ॥
दियो तात जिहि भाँति रजाई । करिहौं सकल भाँति मन लाई ॥
लैहै कृपा सुधारि तिहारी । नाह शंका मति करति हमारी ॥
सुनि भूपति प्रसन्न अति भयऊ । जाहु भवन अस शासन दयऊ ॥
पितुपद वंदि चले रघुनाथा । गहे पाणि लक्ष्मणकर हाथा ॥
सुहृद सखा जे संग सिधारे । सुने वचन जे नृपति उचारे ॥
कौशल्याके भवन तुरंता । गवन किये मोदित मतिवंता ॥

सकल यथाक्रम खबरि बखाने । राम होहिं युवराज विहाने ॥
सुत अभिषेक सुनत तहँ माता । आनँदमगन भनी अस बाता ॥
रामहुँते तुम मोहिं पियारे । नीक होय सो पुण्य तिहारे ॥

दोहा—चूमि वदन जननी सदन, आशुहि सखी पठाय ।
रत्न अनेकन आभरण, सुवरनि कोटि मँगाय ॥

चौपाई ।

अपने कर दीन्हीं पहिराई । कह्यो लेहु धन खान मिठाई ॥
दियो पयोदधि सुरभि सुहाई । पृथक्पृथक् सब सखनबुलाई ॥
सखा जननि पद पंकज वंदे । गये राम ढिग आसु अनंदे ॥
गई रंगमंदिर महरानी । लगी मनावन शारँगपानी ॥
उत जब पिता चरण शिरनाई । मंडित महल चले रघुराई ॥
प्रजा प्रकृति नृप सकल जुहारे । कहे नाथ अब होहु हमारे ॥
हमरे भाग्यविवश रघुनाथा । नाथ भये हम भये सनाथा ॥
विनयसहित प्रभु उत्तर दीन्ह्यों । सोइभलजोपितुशासनकीन्ह्यों ॥
अस कहि भवन गये रघुलाला । समय जानि बोल्यो महिपाला ॥
निज निज भवन जाहु सब भाई । अइयो काल्हि प्रभात तुराई ॥
सुनि नृपवचन सचिव पुरवासी । पायो मनहुँ महामुद रासी ॥
सुखी सकल उठि किये प्रणामा । गये भवन पूरे मनकामा ॥

दोहा—लगे मनावन देवतन, देउ भवनमहँ जाय ।
काल्हि राम युवराज पद, होय विघ्न टरि जाय ॥

चौपाई ।

सचिव महाजन नगरनिवासी । गये भवन जब आनँदरासी ॥
सभा भवनते उठ्यो नरेशा । गहि सुमंत कर चल्यो निवेशा ॥
निजमंदिरमहँ बैठि महीपा । कह्यो सुमंतहि बोलि समीपा ॥
पुष्य योग शुभ काल सुजाना । होयअवशिअभिषेक विधाना ॥

हौं राजीव विलोचन काहीं । अभिषेकिहौं शंक कछु नाहीं ॥
जाहु सचिव तुम राम लिवावन। ल्यावहु सीयसहित सुखछावन ॥
सुनत सचिव स्वामीकर शासन।रामभवन गवन्यो दुखनाशन ॥
चढ़्यो चारु रथ सचिव प्रधाना । राममहल कहँ कियो पयाना ॥
राममहल गवनत पुरवासी । लखे सुमंतहि आनँदरासी ॥
दौरि दौरि पूछहिं तिहि काहीं । आजुहि नृप अभिषेक कराहीं ॥
कह्यो सूत नहिं कारण जानौं । भूपति शासन रामहिं आनौं ॥
घर घर मंगल बजत बधाई । पुरवासिन सुख नहिं कहिजाई ॥
दोहा–घर घर बाज बजायकै, प्रजा करहिं सब गान ।
सुखद राम युवराज पद, होई होत विहान ॥

चौपाई ।

रामकथा सब पुरमहँ पूरी । सुनत सचिव नेरहु अरु दूरी ॥
प्रजा सजावहिं निज निज द्वारा । कदली खंभ कुंभ जलभारा ॥
लसैं कनक तोरण सपताका । मानहुँ अंबर उड़त बलाका ॥
सींची गली सुगन्धित नीरा । थल थल भरी मनुजकी भीरा॥
यहि विधि देखत मत बजारा । देख्यो जाय रामगृह द्वारा ॥
अतिविचित्र नाहिं जाय बखानी । मनु कैलास शृंग छबिखानी ॥
देख्यो रामभवन वर मंत्री । गायक खड़े गहे बहु तंत्री ॥
शक्रसदन जिह लखि लहलाजा । द्वारन कनक कपाट विराजा ॥
जटित मणिन मंदिर महरावैं । सुवरन सभा भवन अतिभावैं ॥
शरद अभ्र सम शुभ्र सुहावन । मनहुँ सुमेरु शृङ्ग अतिपावन ॥
बनी देहरीं विद्रुम केरी । मर्कत माणिक जटितघनेरी॥
झूलत कुसुम सुगंधित माला । बिचबिच मणिमाणिकहुप्रवाला॥
दोहा–अगर तगर चंदन विमल, उड़त सुगंधित धूम ।
भरयो भवनमहँ कढ़त नहिं, जिमि धन राखत सूम ॥

चौपाई ।

निकसत पवन पाय बरि आई । यथा कृपण धनराज रजाई ॥
मणिमय सारस शिखी विहंगा । तथा रत्नके विविध कुरंगा ॥
कारीगर करि करि निपुणाई । विश्वकर्मते अधिक दिखाई ॥
देखत मंदिर सुंदरताई । जहँ जात मन तहँ लुभाई ॥
शशी सूर सम भवन विभासी । ब्रह्मसदनसम आनँदरासी ॥
सत्य कुरंग विहंग अपारा । गृहाराम महँ करहिं विहारा ॥
सदन सुमेरु समान उतंगा । प्रविश्यो सचिव विहाय सतंगा ॥
अति उदग्र शरदभ्र समाना । प्रतीहार ठाढ़े तहँ नाना ॥
ठाढ़े पुरवासी कर जोरे । लिहे नजरहित रत्न अथोरे ॥
कुब्जक क्लीव विविध परिचारक । जे रनिवासन खबरि प्रचारक ॥
खड़े तयार मतंग उतंगा । बाजी ताजी तहँ बहुरंगा ॥
खड़े सुभट सायुध अति शूरा । अंगन मंगन गणते पूरा ॥

दोहा—प्रथम पँवर यहि विधि लख्यो, गयो दूसरे द्वार ।
खड़े नजर लै जोरि कर, बहु हजार सरदार ॥

चौपाई ।

शत्रुंजय कुंजर तहँ भावत । जाहि जोहि लाजत ऐरावत ॥
राम सवारीके बहु बाजी । सोहत सजे लगाये राजी ॥
प्रतीहार तहँ देव समाना । कौनभाँति तिन करौं बखाना ॥
लख्यो जाय पुनि तीसर द्वारे । कोटिन भूप खड़े बलि धारे ॥
रजत कनकके वृक्ष सुहावन । चहुँकितफाटिकभवनअतिपावन ॥
पहुँच्यो मंत्री चौथे द्वारा । ठाढ़े रघुकुल राजकुमारा ॥
रघुपति सखा सुहृद सब नाना । बैठे विपुल मनहुँ मघवाना ॥
गयो सचिव पुनि पंचमद्वारा । नर्म सखा तहँ लसैं अपारा ॥
उठे सुमंतहि आवत देखी । बोल्यो सचिव काज निज लेखी ॥

देहु राम कहँ खबरि जनाई। मैं आयों लहि राज रजाई॥
नर्म सखा चलि खबरि जनाई। सचिव आशु लै चले लिवाई॥
पहुँच्यो छठईं डेउढी जाई। शस्त्रधारिणी सखी सुहाई॥
दोहा—नर्म सखन तजि तहँ रह्यो, नहिं कहुँ पुरुष प्रचार।
शस्त्रधारिणी नारि तहँ, सोहहिं अमित हजार॥

चौपाई।

गयो सातयें द्वार सुमंत्रा। बैठ्यो तहँ यक लषण स्वतंत्रा॥
गहे पाणि कार्मुक अरु बाना। सोहत मनहुँ शरद सित भाना॥
नर्म सखा अरु सखी हजारन। आवत जात किये शृंगारन॥
मणिमय भूमि भवन अतिभारी। रंगमहल विकुंठ छवि हारी॥
राम महल वरणौं किहि भाँती। नहिं जनात जाती दिन राती॥
रवि शशि प्रभा लजावन हारो। सुर मुनि मानस चोरनवारो॥
तहँ अशोक वाटिका सुहाई। सोहैं सीय सखिन समुदाई॥
चिंतामणि सिंहासन चारू। कल्पवृक्ष तर विशद विहारू॥
बैठे सीयसहित रघुनन्दन। सोहि रहीं सखि वृन्दन वृन्दन॥
अतिहि अरुण अंगन अँगरागा। निरखत शोभ मदन मद भागा॥
चमर छत्र सजनी कर धारे। रति रंभा मद हरहिं निहारे॥
सीता राम उभय छविखानी। मिलि सितश्याम प्रभा पसरानी॥
दोहा—मनहु भानु मंडल उपर, सोहि रह्यो घनश्याम।
अचल चंचला राजती, वाम भाग अभिराम॥

चौपाई।

मनहुँ मेरु मस्तक शशि भानू। बैठे प्रभा पसारि दिशानू॥
आल बाल बहु मणिगण केरे। कनक लता तमाल इव हेरे॥
मनहुँ रमापति रमा सुहाये। कनक शेष आसन छवि छाये॥
को वरणै छवि सिय रघुपतिकी। नहिंपाहुँचि कैसेहुकविमतिकी॥

निज पग अँगुठा डीठिहि राखी । कह्यो सुमंत वचन मृदु भाषी ॥
करौं प्रणाम राम अभिरामा । आयों आप लिवावन कामा ॥
चलहु कुँवर तुव पिता बुलाये । कारण कछु नहिं मोहिं बताये ॥
गवनै अंतहपुरमहँ सीता । कौशल्याके निकट पुनीता ॥
सचिववचन सुनि रघुकुल भानू । शंकित भये किये अनुमानू ॥
पितुसमीपते अबहीं आये । कौन काज पितु बहुरि बुलाये ॥
पितु शासन शिर धरि रघुराई । चले सुमंत संग अतुराई ॥
जनकसुता कहँ वचन प्रकाशा । शिबिका चढ़ि गवनहु रनिवासा ॥

दोहा—प्रभु शासन सुनि जानकी, सहित सखिनके वृन्द ।
चढ़ि शिबिका गवनत भई, जिमि तारन मधि चन्द ॥

चौपाई ।

सजीं बाहकी सखी सुहाई । लीन्हीं शिबिका कंध उठाई ॥
कौशल्याके सदन सिधारी । सहसन सखी संग सुकुमारी ॥
सासु सदन सिधारि शुचि सीता। करि प्रणाम ढिग बैठि पुनीता ॥
इत रघुनन्दन स्यंदन चढ़िकै । पितु मंदिर गवने मुद मढ़िकै ॥
चलत पन्थ पेखत पुर शोभा । जिहि विलोकि वासव मनलोभा ॥
भूपति सखा पौरि सरदारा । जात जनक गृह राम निहारा ॥
आजुहि जानि राम अभिषेका । पूछहिं जुरि जुरि प्रजा अनेका ॥
देत सुमंत सबन समुझाई । जात राम लहि पिता रजाई ॥
लषणसमेत सखन प्रभु भाषे । ऐहौं द्रुत अस कहि गृह राषे ॥
आप सुमंत गये पितु ऐना । कह्यो द्वारपहि राजिवनैना ॥
शासन होय तो चलैं समीपा । बुलवायो सुनि राम महीपा ॥
प्रविश्यो हिमगिरिसम पितुमंदिर । चोरत चित्त चारु चय चंदिर ॥

दोहा—लख्यो दूरते भूपमणि, जोरि लियो युग हाथ ।
करत प्रणाम चले पुलकि, बार बार रघुनाथ ॥

चौपाई ।

उठि नृपनाथ लियो उर लाई । बार बार दृग वारि बहाई ॥
कनकासनमहँ सुत बैठायो । मंजुल वचन भूप मुख गायो ॥
सुनहु लाल मम प्राणपियारे । भय शिथिल सब अंग हमारे ॥
साठि सहस्र वर्ष वय मोरी । पाल्यों महीसहित बरजोरी ॥
भोग्यों भोग मनो अभिलाषी । सौख करन बाकी नहिं राषी ॥
भूरि दक्षिणा यज्ञ अनेका । अन्नदान दै सहित विवेका ॥
कीन्ह्यों सविधिसहित मुनिराई । भयों सुखी तुमसम सुत पाई ॥
मनभायो दीन्ह्यो सब दाना । पढ्यों वेद सब शास्त्र पुराना ॥
नहिं बाकी अनुभव सुख कोई । देव पितर ऋषि उऋण बनोई ॥
तुम अभिषेक छोड़ि रघुराई । अब बाकी कछु मुहि न दिखाई ॥
ताते कहौं जौन सो कीजै । अब नहिं और कछू मन दीजै ॥
पुरजन गुरुजन सचिव अनेका । चहत काल्हि राउर अभिषेका ॥

दोहा—ताते काल्हि विशेषिकै, करि तुम्हरो अभिषेक ।
सुखी चित्त करिहौं भजन, त्यागि सकल जिय टेक ॥

चौपाई ।

लखेहु स्वप्न रजनी अति घोरा । गिरहिं लूक दिनमहँ करि शोरा ॥
मेरे जन्मनक्षत्रहि काहीं । पीड़ित कुज रवि राहु कराहीं ॥
और अनेक होत उत्पाता । कहत ज्योतिषी सब अस बाता ॥
जहँ अस अशकुन होत अलेषा । मरै भूप लहि विपति विशेषा ॥
ताते जबलगि रहै शरीरा । करहुँ तोर अभिषेक अपीरा ॥
आजु पुनर्वसु चन्द्र सुहावन । होइ काल्हि पुष्य कर पावन ॥
सकल दैव चिंतक गुणि शोधे । सुभग सुदिन अस मोहिं प्रबोधे ॥
ताते अतिहि तुरा जिय लेखी । काल्हि करौं अभिषेक विशेखी ॥
ताते वधूसहित रघुराई । कुश साथरी शयन करु जाई ॥

सुहृद सखा रक्षैं निशि सोवत। शुभकारजहि विघ्न बहु होवत ॥
बसहिं विदेश भरत जबताईं । तबलगि मैं अभिषेक इहाइ ॥
होय सुपद युवराज तुम्हारा । यही काल अस मतो हमारा ॥

दोहा—यदपि भरत सज्जन सुमति, सेवक सदा तुम्हार ।
इन्द्रियजित नित धर्मरत, दयावान सविचार ॥

चौपाई ।

तदपि मनोगति चंचल होई ।क्षण क्षण फिरत न जानत कोई॥
संत धर्मरत जे बड़भागी । कबहुँ कबहुँ तेउ होत सरागी ॥
अस कहि मौन भये महराजा। उत्तर दियो न कछु रघुराजा ॥
होत विलंब जानि अवधेशा । भवनजाहु अस दियो निदेशा ॥
करि प्रणाम गवने रघुराई । आसु आपने आलय आई ॥
कहाँ लषण पूछ्यो परिचारन। ते कह मातुसदन पगुधारन ॥
अतहपुरपथ ह्वै भरिनेहू । रामहुँ गये कौशिलागेहू ॥
रही न जननी महलनमाहीं। गई रंगप्रभु मंदिर काहीं ॥
पहिरि पिताम्बर रघुपतिमाता। बैठी अचल न बोलति बाता॥
तहाँ रहे लक्ष्मण अरु सीता। आय सुमित्रा बैठि पुनीता ॥
मूँदे नयन कौशिलादेवी । रंगनाथ ध्यावत पदसेवी ॥
सीता लषण सुमित्रा रानी । बैठे परममोद मनमानी ॥

दोहा—सुतको सुनि युवराजपद, पुष्ययोग नृप देत।
प्राणायाम लगी करन, लालन मंगलहेत ॥
ध्याय जनार्दन पर पुरुष, रंगनाथ कहँ रानि ।
बारहिं बार मनावती, जोरे पंकजपानि ॥

चौपाई ।

तिहि क्षण आये रघुकुल चंदा। वंदे मातुचरण अरविंदा ॥
जोरि पाणि अस वचन उचारा। सौंपत पिता राज्य कर भारा॥

अंब तोर शासन जो पाऊं। राज भार तो शीश उठाऊं ॥
कालिह होत अभिषेक हमारा। तातें पुनि अस पिता उचारा ॥
वधूसहित व्रत करौं निशामें। उचित होय अब जस कहुतामें ॥
पुत्रवधू अरु पुत्रहु काहीं। करु निदेश मुद मंगलमाहीं ॥
सुनत प्राणप्रिय सुतकी वानी। कौशल्या बोलीं हुलसानी ॥
नयनन आँनद आँसु बहावत। गद्गद कण्ठ न कछु कहि आवत ॥
वत्स राम चिरजीवहु प्यारे। लहैं नाश सब शत्रु तिहारे ॥
सम्बन्धी बांधवसुख लीजै। लषण सुमित्रा अनुमति दीजै ॥
परम सयोग नखतमहँ जाये। मोरि कुक्षि धनि पुत्र बनाये ॥
पितहि प्रसन्न कियो सब भाँती। धन्य लाल तुम रिपुगणघाती ॥

दोहा—श्रीइक्ष्वाकु नरेशते, अबलों यहि कुल केर।
श्री यश रीति बड़ापनो, बरिहैं तुहि नहिं देर ॥

चौपाई।

पालेहु प्रजन पुत्र प्रियप्यारे। ईश्वर होंइ सहाइ तिहारे ॥
करहु सीययुत निशि उपवासू। ध्यावहु दै मन रमानिवासू ॥
करैं विष्णु रक्षण सब काला। परै न कबहूँ कुँवर कसाला ॥
पूरण भयो मनोरथ आजू। निरखौं तोहिं होत युवराजू ॥
अस कहि मौन भई जब माता। तब रघुनन्दन आँनद दाता ॥
गहे सुमित्रापद जलजाता। बोले वचन सनेह अघाता ॥
जननि तोरि दाया फलदाई। मुहिं अवलम्ब अंब सेवकाई ॥
लियो सुमित्रा प्रभु उर लाई। आँखिन आँनद अंबुबहाई ॥
जियहु चारि युग पुत्र पियारे। तुमहींसे सुख सकल हमारे ॥
कही लषणसों रघुपति बानी। प्राणसमान तोहिं जिय जानी ॥
तेरे कर करवैहौं काजू। मोसों कछु न काज तुव राजू ॥
सविधि करहु शासन वसुधाको। तव सहाय मोहिं पान सुधाको ॥

दोहा—वनिचर मेरे प्राण तुम, भोगहु भोग अपार ।
लहु सकल यह राज फल, तुव हित हेत हमार ॥
मम जीवन अरु राज सब, लषण तिहारे अर्थ ।
जो न लगै तुवहेत महँ, सो हम जानहिंव्यर्थ ॥
लषण जोरि कर परशि पद, बोल्यो मंजुल बैन ।
तुवपद सेवन त्यागि कछु, कारज जानौं मैंन ॥
सुनत लषणके वचन प्रभु, उर लगाय गहि हाथ ।
विदा भये दोउ जननिसों, करि प्रणाम रघुनाथ ॥
दियो इशारा लषणसों, चले जानकी भौन ।
विदा माँगि सिय सासुसों, चली महल मुख मौन ॥
कौशल्याके भवनते, लषण जानकी राम ।
कनकभवन गवनत भये, ह्वै मनपूरणकाम ॥

चौपाई।

इतै भूपमणि मनहि विचारे । होय राम अभिषेक सकारे ॥
आज वसिष्ठ जाय रघुराजै । करवावैं विधि जो निशि काजै ॥
अस विचारि नृप गुरुगृह गयऊ । करि प्रणामभल भाषत भयऊ ॥
जाहु राममंदिर मुनिराई । आवहु सकल विधान कराई ॥
करहिं सीययुत व्रत सविधाना । जाते राज लाभ कल्याना ॥
निजअभिमतगुणिगुरुसुखपाई । कह्यो भूपसों अब हम जाई ॥
रघुपतिके अभिषेकहि हेतू । करवाउब व्रत सीयसमेतू ॥
अस कहि चढ्यो ब्रह्मरथमाहीं । श्वेत तुरंग बहे रथ काहीं ॥
चल्यो रामके भवन मुनीसा । अति सुन्दर मन्दिर दृग दीसा ॥
शरद अभ्रसम शुभ्र सुहावन । रंगमहल उतङ्ग अति पावन ॥
गये नाकि जब त्रय दरवाजा । गुरु आवत जान्यो रघुराजा ॥
लषणसहित धायो अतुराई । पाँउ पयादे भवन विहाई ॥

दोहा–गुरु स्यन्दनके निकट चलि, रघुनन्दन द्रुत आय ।
लषणसहित वंदन किये, आनंदन शिरनाय ॥

चौपाई ।

कर गहि रथते लियो उतारी । चल्यो भवन लै वचन उचारी ॥
भाग्यमान मोसम को आजू । आयो जासु भवन मुनिराजू ॥
गुरुको सिंहासन बैठाई । पूजे सविधि सीय रघुराई ॥
जोरि पाणि बोले मृदु बानी । आयसु काह होत गुरु ज्ञानी ॥
बोल्यो मुनि त्रिकालको ज्ञाता । है विमनसमुख मंजुलवाता ॥
रघुपति पिता प्रसन्न तिहारे । बखसत राजभार भिनुसारे ॥
भूप तुम्हैं युवराज बनावैं । राज काजते वृत्ति हटावैं ॥
ताते होहु निशा उपवासी । सहित जानकी आनँदरासी ॥
एवमस्तु कह प्रभु मुसक्याई । मुनि विधि मंत्रहु दियो बताई ॥
राम सिया संयम करवाई । शंकित मन गवने मुनिराई ॥
कढ़े भवनते नगर निहारे । अवध नारि नर परमसुखारे ॥
उतै राम ढिग सुहृद सिधारे । बैठे हिलि मिलि भूपदुलारे ॥

दोहा–हँसत हँसावत राम कहँ, कहि कहि हित इतिहास ।
बोले रघुपति बैन मृदु, जान चहौं मैं वास ॥

चौपाई ।

जानि समय सब सखा जुहारे । राम चले जानकी अगारे ॥
राम भवनते जब मुनिराई । चले राजमंदिर अतुराई ॥
नगर लख्यो नर नारि समूहा । रामभवन जूहनके जूहा ॥
यथा प्रफुल्लित कमल तलाऊ । बसैं विहंग अभंग उराऊ ॥
रामभवनते कढ्यो मुनीशा । कोटिन मनुज वृन्द वरदीशा ॥
कोशलनगर मनुज गण पूरा । हाटन बाटन निकटहु दूरा ॥
परै नजर तहँ मनुजन भीरा । करहिं कुतूहल जन बिन पीरा ॥

उठैं मनुजगण अगणित रंगा । अति संघर्ष हर्ष बहुरंगा ॥
चारिहु ओर मच्यो अति शोरा । मनहुँ महोदधि रव अतिघोरा ॥
रथ तुरंग मातंग सवारा । पैदर पूरित भई बजारा ॥
सींचीं गली सुगंधित नीरा । फूल फवित मंदिर जन भीरा ॥
लखी चहूंकित पुहुप जालिनी । अवधपुरी भइ मनहुँ मालिनी ॥

दोहा—कनक दंड फहरत विमल, घर घर तुंग पताक ।
अवधपुरीकी शोभकी, भय सुरपुर लों धाक ॥

चौपाई ।

बाल वृद्ध युव पुर नर नारी । सुनत राम अभिषेक सुखारी ॥
कहत सबै कब निशा सिराई । आज उवैं अबहीं दिनराई ॥
सजैं सजावैं जन परिवारा । लखन हेत अभिषेक अपारा ॥
होत राम युवराज विहाने । ये सुख मनुजन हिय न समाने ॥
कराहिं विनय विधुसों पुरवासी । होहु मलीन देहु सुख रासी ॥
कब निशि विते उवैं दिननाहा । अवलोकैं अभिषेक उछाहा ॥
रही छाय धुनि यही बजारन । नरन नयन भै नींद निवारन ॥
यहि विधि लखत अनन्दबजारन । कसमसपरत कढ़त प्रतिद्वारन ॥
गुरु वसिष्ठ रथ चढ्यो सुजाना । मंद मंद मग कियो पयाना ॥
दौरि दौरि शिशु चढ़ैं अटारी । पेखहिं पूरव उये तमारी ॥
लखत नगर कौतुक मुनिराई । पहुँच्यो राजभवनमहँ जाई ॥
शरद सलिलधर घटासमाना । अति उतंग प्रासाद महाना ॥

दोहा—गुरु वसिष्ठ रथ तजि तुरत, चढ्यो नरेश निवेश ।
पहुँच्यो दशरथ ढिग यथा, वाचस्पति अमरेश ॥

चौपाई ।

कौशलेश आवत गुरु देखी । उठ्यो नृपासन त्यागि विशेखी ॥
पूछ्यो गुरुकहँ शीश नवाये । नेम कराय राम कहँ आये ॥

कह्यो वसिष्ठ विधान कराई । राम सीय कहँ मंत्र बताई ॥
जाहिर करन आप कहँ आये । जाहुँ भवन नृव शासन पाये ॥
सुनि मुनिवचन सभासद हर्षे । करि प्रणाम नयनन जल वर्षे ॥
कह वसिष्ठ भूपतिसों बानी । करहुगवनअब भवन विज्ञानी ॥
सकल सभासद मुनिहि सराहत । उठिउठिप्रणवतपद सुखगाहत ॥
माँगि बिदा गुरुसों महिपाला । चल्यो कैकयीभवन विशाला ॥
जिमि गिरि गुहा जात मृगनाथा ! तिमि रनिवास गये नृपनाथा ॥
अंतहपुर डेउढ़ी जब आये । सखी सहस्र लियो सुख छाये ॥
चलीं लिवाय कैकयी ऐना । जयजयकहतमधुरसुख बैना ॥
शक्रसदन सम सदन सुहावन । फैल्यौ मणिप्रकाशछविछावन ॥

दोहा—सखि मंडल मंडित महा, मधि सोहत महिपाल ।
तारा मंडल मध्य मनु, राकाचंद्र विशाल ॥

चौपाई ।

उतै राम गुरु शासन मानी । जानीके सदन जानकी जानी ॥
जाय कियो मज्जन सविधाना । सीतासहित सुखी भगवाना ॥
पहिरि पितांबर रघुवर सीता । रचि पायस धरि पात्र पुनीता ॥
सीतासहित राम सुख छाये । नारायण मंदिर महँ आये ॥
वेदी विरचि अनल तिहि थापी । कियो हवन विधिसहित प्रतापी ॥
इष्टदेव नारायण ध्यायो । हवन शेष पायस पुनि पायो ॥
युगल कुशा साथरी बनाई । बैठे सीयसहित रघुराई ॥
भये मौन नारायण ध्यावत । जनु सुरकारज सुरति लगावत ॥
बसे विष्णुमंदिर महँ राती । किये शयन नेसुक अरिघाती ॥
रही जबै यक पहर त्रियामा । उठे जानकी संयुत रामा ॥
सुहृद सखनको तुरत बुलाई । दियो सपदि शासन रघुराई ॥
करहु अलंकृत मंदिर मोरा । सजवावहु मतंग रथ घोरा ॥

दोहा—सुनत सकल शासन सुहृद, सुंदर सदन सजाय ।
रथ तुरंग मातंग बहु, द्वार देश मँगवाय ॥

चौपाई ।

किये निवेदन कारज करिकै । बैठे द्वारदेश मुद भरिकै ॥
तिहि अवसर तहँ परमअनंदी । आये मागध सूतहु बंदी ॥
बाँचन लागे सूत पुराना । मागध वंशावली बखाना ॥
बंदी विरुद बखानन लागे । जाने प्रजा जगतपति जागे ॥
प्रातकृत्य करि नाथ नहाये । पहिरिपीतपटअति छविछाये ॥
करि प्रभात संध्या रघुराई । जपि गायत्री अतिचित लाई ॥
मधुसूदनकी प्रस्तुति कीने । सीतासहित विनयरस भीने ॥
करि प्रणाम अष्टांग उदारा । वैदिक विप्रन वेगि हँकारा ॥
सहसन वैदिक विप्र सिधारे । ते पुण्याहवाचनहिं उचारे ॥
तिन पुण्याहवचन धुनि भारी । छाई अवधनगर मनहारी ॥
सो धुनि सुनि परिजन जे द्वारे । लगे बजावन तूर्य नगारे ॥
नौबत झरत सुद्वारन द्वारा । बाजे बजत अनेक अपारा

दोहा—कृतव्रत रघुपति जानकी, अवध प्रजा सुनि कान ।
भये विगत संदेह सब, माने मोद महान ॥

चौपाई ।

निशा सिरानि भयो भिनुसारा । सजत सजावत पुरी अपारा ॥
श्वेत जलभ्र शृङ्ग सम नाना । सदन सदनप्रति फहरनिशाना ॥
द्वार द्वारमहँ तने विताना । सुर मंदिर पूजन सविधाना ॥
चौहट हाटन घाटन माहीं । ऊंची अटा गलिन लघु पाहीं ॥
तोरण ध्वजा रंभके खंभा । भरे कनक कमनीय सुकुंभा ॥
धनिक धनदसम अवधनिवासी । रचे दुकान मनोहर खासी ॥
आपहु सजें सजाय कुटुम्बा । लखन महोत्सव मोद कदंबा ॥

पुरबाहर जहँलगि अमराई । दिये निशान उतंग बँधाई ॥
जहँलगि ग्रामदेवके नामा । रहे विटप चौरा अरु धामा ॥
पूजे सब तहँलगि पुरवासी । रघुपति सुखी रहनके आसी ॥
नट नर्तक गायक गण आये । रघुपति द्वार समाज लगाये ॥
गावहिं मंगल गीत सुहावन । बाज बजावहिं विविध उरावन ॥
दोहा–कोशलपुर चहुँ ओरमें, छाये मंगल शोर ।
नटी नचहिं करिकरि कला, द्वार द्वार सब ठोर ॥

चौपाई ।

औरहु वारवधुनके वृन्दा । मंगल गावहिं पाय अनन्दा ॥
जुरिजुरि थलथलमहँ पुरवासी । रामकथा सब कहहिं हुलासी ॥
चलहु चलहु अब भूपतिद्वारे । लखहु रामअभिषेक सुखारे ॥
रघुपति कर अभिषेक उदारा । बालक खेलहिं खेल बजारा ॥
कहहिं राम अभिषेक कहानी । पुरी राममय महा सुहानी ॥
भवन भवन भो सुरभित धूपा । पुहुपजाल बँधि गये अनूपा ॥
अवधसमान शोभ नहिं कतहूं । अलकावतिहूं अमरावतिहूं ॥
गलिन गलिन सिगरे पुरमाहीं । झलकत पन्ना झाड़ सुहाहीं ॥
रह्यो पूरि पुर परम प्रकाशा । दिवस समान भयो तमनाशा ॥
जात न जाने निशि पुरवासी । पूरब प्रगट भये तमनासी ॥
सकलप्रजा आपुसमहँ जुरिजुरि । कहहिंवचनमानहुतुमफुरिफुरि ॥
युग युग जीवै दशरथराऊ । हमहिं दियो यहि भाँति उराऊ ॥
दोहा–जानि जरठपन बयस निज, चतुरशिरोमणि भूप ।
रामहिं दिय युवराज पद, करि अभिषेक अनूप ॥

चौपाई ।

कियो अनुग्रह हम पर पूरी । पालक राम भयो दुख दूरी ॥
करहिं जगतपति कृपा अपारा । पालहिं प्रजा राम युग चारा ॥

पूर्वापर जानत रघुराई । रहत सहज नृप गर्व विहाई ॥
धर्मात्मा पंडित पंचानन । बंधुप्रजा कुलप्रिय असआनन ॥
भरतलषण रिपुहन जसजानत । तस हमहूं सबकहँ प्रभु मानत ॥
चिरंजीवि दशरथ नृप होहू । रामहिं कियो नाथ करि छोहू ॥
अभिषेकित देखब रघुराजू । भाग्यवानको हम सम आजू ॥
यही शोर सब पुरमहँ छायो । देश मनुजगण देखन धायो ॥
आजुहिं होत राम युवराजू । भयो दिशानन शोर दराजू ॥
सुर नर मुनि जे जे सुनिपाये । प्रभु अभिषेक विलोकन धाये ॥
रह्यो भुवनभरि मंगल शोरा । यथा पर्व लहि सागर रोरा ॥
रह्यो जाहि जेतो अवकासा । चल्यो देन लै मणि धन वासा ॥

'—होत राम युवराज पद, भरिगो भुवन उछाह ।
और सबै मोदित भये, दुखी भयो सुरनाह ॥
जिमि जलचरगणते उदधि, शब्दित पर्वहि पाय ।
शब्दवती कौशलपुरी, भय जिमि मोद निकाय ॥
भये देव संदेहयुत, राज काज रत राम ।
किहि विधि रावण मारिहैं, ठानि घोर संग्राम ॥
कैकयीकी दासिका, रही मंथरा नाम ।
धूम धाम सुनि नगरमहँ, चली विलोकन काम ॥

छन्द चौबोला ।

चढ़ी उतंग चन्द्रशाला महँ लखी अयोध्या नगरी ।
पूरित फूलन गली बजारहु सींची सौरभ सिगरी ॥
भवन अलंकृत ध्वजा पताके फहरि रहे चहुँ ओरा ।
खैर भैर मचिरह्यो नगरमहँ सुरपूजन सब ठोरा ॥
रघुपतिके धात्रीसे पूंछो कहा होत पुरमाहीं ।
रामजननि रानी कौशल्या देति वित्त सब काहीं ॥

कह्यो राम धात्री न सुने तें होत राम युवराजू ।
करत काल्हि अभिषेक भूपमणि सौंपन सिगरो राजू ॥
सुनि पापिनि मंथरा दुखित ह्वै गई कैकयी नेरे ।
तिहि जगाय अस कह्यो बैठि कस परे न लखि दृगहेरे ॥
देश पठै भरतहि नृप करहिं राम युवराजू ।
सकल सुहाग भंग तुव भइ चेरी सम आजू ॥
सुनत कैकयी कह व्याकुल ह्वै दे अनुमति कछु मोहीं ।
कह मंथरा भूप दीन्ह्यों दुइ वर पूरव जो तोहीं ॥
क्रोधभवन चलि माँगु ठानि हठि देहैं नृप सतिवादी ।
चौदह वर्ष बसैं वन रघुपति लैहैं भरत नृपगादी ॥
सुनि कैकयी क्रोधगृह गवनी आये जब महिपाला ।
मरण ठानि माँग्यो मुख द्वै वर भूपति भये विहाला ॥
बोलि राम कहँ कह्यो जान वन रघुपति अति सुखमाने ।
सीता लषण समेत चले वन हर्ष विषाद न आने ॥
शृङ्गवेरपुर बसे जाय प्रभु मिलिकै सखा निषादै ।
उतरि गंग पहुँचे प्रयागमहँ दियो मुनिन अहलादै ॥
भरद्वाजको मिलि पुनि रघुवर यमुना उतरि अनंदे ।
वाल्मीकिके आश्रम आये विनयसहित पद वंदे ॥
बसे विचित्र चित्रकूटहि पुनि पर्णकुटी रचि नीकी ।
लह्यो महासुख सहित लषण सिय अवधपुरी भै फीकी ॥
रामविरह विलपत आधीनिशि भूपति तज्यो शरीरा ।
केकयपुरते भरत बुलायो गुरु वसिष्ठ मतिधीरा ॥
समुझायो बहु राज करनको भरत कियो नहिं राजू ।
चल्यो चित्रकूटहि मातन लै बसत जहाँ रघुराजू ॥
शृङ्गवेरपुर मिलि निषादसों पहुँचे भरत प्रयागा ।

पावँ पयादे चलत पंथमहँ भरे राम अनुरागा ॥
शृङ्गशालयुत तीर्थराजमहँ भरद्वाज कहँ देखे ।
तिन अनुमति चलि चित्रकूटमहँ देखि राम मुद लेखे ॥
बहु विधि कियो विनय लौटन हित जनकभूप तहँ आये ।
तेऊ बहुत भाँति समुझायो राम न कछु चित लाये ॥
पितुप्रण पालनहेत कृपानिधि देवन काज विचारे ।
दे पादुका बिदा करि भरतहि आय विपिन पगु धारे ॥
सानुज भरत नंदिग्रामहि चलि बसे वेष मुनिधारी ।
राम अत्रि अनसूइया आश्रम गये प्रमोद पसारी ॥
अनसूइया दिय सियहि शिषापन पट भूषण पहिराई ।
मुनिसों बिदा माँगि रघुनायक चढ़े शैल सुख पाई ॥
मिल्यो भयंकर तब मारगमहँ दानव आय विराधा ।
ताहि मारि महि गाड़िदीन गति मेटी सुरमुनिबाधा ॥
मुनिके अस्थिशैल दिखरायो मुनिजन विनती कीन्हें ।
करिहौं अवशि हीनानिशिचरमहि अस पण प्रभु करि दीन्हें ॥
गे शरभंग आश्रमहि रघुवर मुनि करि प्रभुहि प्रणामा ।
राम लखत तनु दाहि दहनमहँ गयो ब्रह्मके धामा ॥

दोहा—गये सुतीक्षण आश्रमहि, राम लषण सिय संग ।
मुनि नाचन लाग्यो पुलकि, पग्यो प्रेमके रंग ॥

छन्द चौबोला ।

चले सुतीक्षण आश्रम ते प्रभु धनु सायक करधारी ।
क्षात्रधर्मरत निरखि राम कहँ कह्यो विदेहकुमारी ॥
अवधराज तजि विपिन बसहु पिय वन वासिनकी रीती ।
काहेको शर धनु वर धारहु देखि लहत सब भीती ।
पूरण करि वनवास यथा प्रण कोशलनगर सिधारी ।

राजतिलक करवाय धारि धनु होयहु बहुरि शिकारी ॥
सुनत जानकी वचन विहँसि प्रभु बोले मंजुल वाणी ।
कारण सुनहु विदेहनन्दिनी धरहुँ चाप शर पाणी ॥
क्षत्रिय धारत आयुध यहि हित आरत स्वर नहिं होई ।
धनु कहुँ धरे सुनै आरत स्वर ताते अधम न कोई ॥
वसत विचारे विपिन दीन द्विज मुनिजन राक्षस खाये ।
मोहिं देखि रक्षक अपनो गुनि मुनि शरणागत आये ॥
दया लागि मुहिं कियो प्रतिज्ञा हरिलेहौं खल भीती ।
ताके हित मैं धरौं धनुष शर यह रघुकुलकी रीती ॥
तजहुँ प्राण वरु तजहुँ लषण वरु तजहुँ तोहिं वरु सीते ।
तजौं न प्रण पुनि विप्रन सों करि यही जानु सति जीते ॥
सुनत वचन पियके वैदेही कही जोरि युग पाणी ।
धर्म धुरंधर रघुकुल नायक कहहु न कस अस वाणी ॥
यहिविधिवचनविलासकरतबहु विचरतविपिनमँझारी ।
विते वर्ष दश राम लषण कहँ सहित विदेहकुमारी ॥
कहुँ दशमास कहूं त्रयमासहु सात आठ कहुँ मासा ।
चित्रकूटते मुनि आश्रम लगि कीन्हें राम निवासा ॥
एक समय पुनि बहुरि सुतीक्षण आश्रममें प्रभु आये ।
बिदा माँगि मुनिते अगस्त्यके आश्रम गे सुख छाये ॥
मारगमहँ अगस्त्य भ्राता सो कीर तिहि नाथ सुखारी ।
कुंभज कुटी जाय रघुनन्दन प्रणवे पाणिपसारी ॥
कुंभजोनि शारंग दियो धनु तथा अखण्ड निखंगा ।
पंचवटी महँ वसन हेत मुनि दियो निदेश अभंगा ॥
लषण जानकी युत रघुनन्दन पंचवटी पगु धारे ।
मिल्यो गीधपति मारगमहँ जिहि नाम जटायु उचारे ॥

सो पूरब की कथा कही सब दशरथ सखा हमारे ।
पितु सम पूजि ताहि रघुनन्दन पुनि आगे पगु धारे ॥
लषण जानकी सहित जगतपति गोदावरी निहारे ।
परमरम्य कानन अस आनन खग मृग सुखित अपारे ॥
पंचवटीमहँ पर्णकुटी रचि बसि सिय युत दोउ भाई ।
ललित विनोद विहार करत बहु दिय द्वै वर्ष बिताई ॥
रावणकी भगिनी शूर्पणखा एक समय तहँ आई ।
कोटि मदन मद मारक मूरति लखि सो रही लुभाई ॥
जाय समीप करन रस वश महँ कही मनोहर बानी ।
दियो लषण कहँ नाथ इशारा सीता भीता जानी ॥
नाक कान बिन कियो लषणतिहि काढि कराल कृपानी।
बूची नकटी पंचवटी ते भगी महा भय मानी ॥
ताके बंधु बली खर दूषण त्रिशिरा लखि भगिनीको ।
चौदह सहस निशाचर लै सँग आये पंचवटीको ॥
राखि गुहामहँ लषण सहित सिय समर हेतु सजि रामा ।
करि कोदंड घोर टंकोरहि कियो सजुग संग्रामा ॥
चौदह सहस निशाचर मारे खर मंत्री संहारे ।
रघुकुल भूषण दूषण को हति त्रिशिर बेशिर करि डारे॥

दोहा—कीन समर अति प्रखर खर, अग्निबाण तजि राम ।
खड़कि खाख खर को कियो, पूरे सुर मुनि काम ॥
जनक लली पुनि चलि मिली, कीन्ह्यो लषण प्रणाम ।
सुमन सुमन वर्षे विपुल, राम धाम अभिराम ॥
वर्णत ऋतु हेमंत प्रभु, पंचवटी निवसंत ।
लहि अनन्द रघुनंद सिय, लषण सहित विलसंत ॥

कवित्त।

छटी छल छद्मकी हटी ना सुकृत दान,
घटी घटी पावनकी लगी चटपटी है।
नटीसी नटति राम भक्ति लटपटी प्रेम,
तटिनी गोदावरीकी तेजवंत तटी है॥
भनै रघुराज अटी कीरति न जाकी विश्व,
प्रगटी न कालि नटखटी अटपटी है।
शूर्पणखा नाक कटी रामपद चिह्न पटी,
सोहै वैकुंठकी बटीसी पंचवटी है॥

दोहा—खरदूषण अरु त्रिशिरको, जरत धूम दृग जोय।
रावण आगे लंकमहँ, परी सुपनखा रोय॥

छन्द चौबोला।

सुनत लंकपति भयो कुपित अति गयो मरीच नगीचा।
ताहि शासन करु मेरो तैं मम अन्नहि सीचा॥
माया कुरंग संगहि चलु जनस्थानमहँ आजू।
राजकुँवर दशरथके आये कीन्ह्यों मोर अकाजू॥
अस कहि लै मारीच संग रावण दंडकवन आयो।
इत एकांत जानकीको लै राम वचन मुख गायो॥
याही हित हमहूं अरु तुमहू लियो मनुज अवतारा।
अब तुम वसहु अग्निमहँ जबलगि हरों भूमिकरभारा॥
छाया रूप जाय लंकामहँ वसो वर्ष पर्यंता।
मिलहु मोहिं पावक ते पुनि तुम भये निशाचर अंता॥
प्रभु निदेश सुनि पावक प्रविशी प्रमुदित जनककुमारी।
छायारूप कुटीमहँ राख्यो देवनहेत विचारी॥
बनि माया कुरंग मारीचहुँ छायासियहि लुभायो।

धरि रघुवर धनुधर धनु शर कर हरवर मृगपर धायो
यती वेष रावण इत आयो छायारूप सियाको ।
लै हरि चल्यो लंक धरि स्यंदन गीधराज लखि ताको ॥
ठाढ़ो रहु ठाढ़ो रहु अस कहि मारि खरन रथ टोरयो ।
लिय छड़ाय छायावपुसियको दशकंधर मुख मोरयो ॥
चल्यो गगनपथ छायावपु लै राख्यो लंकहि जाई ।
इतै कपटमृग मारि लषणयुत लौटे द्रुत रघुराई ॥
कुटी सून लखि हेरत वन वन गवने दक्षिण नाथा ।
मनहुँ विकल अतिविलपत पद पद चले लषणप्रभुसाथा॥
कछुक दूर आगे चलि रघुपति विकल विहंग निहारयो ।
कृपानिधान जटायु अंगरज निजजटानिसों झारयो ॥
प्रभुपद परशि गीध तनुत्याग्यो निजहाथनकरि करणी॥
गीधराज कहँ दई राम गति वेद पुराणन वरणी ॥
चले कछुक लखि अजामुखी राक्षसी भयानकरूपा ।
कान नाक कुचकाटि लषणतिहि कीन्ह्योंविकलविरूपा॥
पुनि कबंध योजनभुज पासहि परे लषण रघुराई ।
कियो बाहुयुग खंड खड्गसों दीन्ह्यों शाप मिटाई ॥
सो शबरी सुग्रीव सीयकी दीन्ह्यों सुरति बताई ॥
आये प्रभु पंपासर सानुज शबरी देखन धाई ॥
ऐहैं प्रभु यहिहित शबरी फलचीखि चीखि धरि राख्यो।
शबरीकुटी जाय रघुनन्दन प्रेमाविवश फल चाख्यो ॥
दै शबरीको गति कोशलपति चलि पंपासर आगे ।
विप्ररूप मारुतसुत मिलिकै कपिपतिसों अनुरागे ॥
करि अविचल सुग्रीव मित्रता मीत दुखी जिय जानी ।
एकहि बाण वालिवध कीन्ह्यों सप्तताल करि हानी ॥

राजा तहँ सुग्रीव बनायो करि अंगद युवराज् ।
वर्षा बसे प्रवर्षण हर्षण वर्षवितावन काज् ॥
पावसकी पूरण शोभा लखि जबै शरदऋतु आई ।
सुरति दिवावनको सुग्रीवहि दीन्ह्यों लपण पठाई ॥
गवन्यो सखा समीप सुकंठहु कपि वाहनी बुलाई ।
चारि दिशन छाया सिय हेरन पठयो कपि समुदाई ॥
जाम्बवान अंगद हनुमानहु दक्षिणदिशि कहँ धाये ।
प्यासे प्रविशे स्वयंप्रभाविल तिहि प्रभुपास पठाये ॥
तासु प्रभाव गये सागरतट शंकित भे सब भाँती ।
तहँ तिनको सब खबरि बतायो आय गीध संपाती ॥

दोहा—को शतयोजन सिंधु नकि, जाय लंक निःशंक ।
लाग्यो होन विचार यह, मर्कट भये सशंक ॥
जाम्बवान तब ऋक्षपति, कीन्ह्यों मनहिं विचार ।
हनूमान कहँ मुद्रिका, दीन्ह्यों राजकुमार ॥
पवनपूत पूरण प्रबल, करिहैं अवशि पयान ।
अस विचारि बोल्यो बिलखि, कस बैठे हनुमान ॥
लिये निशानी देनको, सुचित बैठ किहि हेत ।
कसन कूदि सागर सपदि, सिय सुधि ल्याय न देत ॥

कवित्त ।

वचन निबेरे ऋक्षपतिके घनेरे सुनि,
बाढ़े वीर रंगके उमंग अंग तेरे हैं ।
नयननिको फेरे औ तरेरे दिशि दक्षिणपै,
भुजन को हेरे त्योंही पूछि को मुरेरे हैं ॥
मानि लंक नेरे है निशंक महावीर टेरे,
मारि करौं ढेरे भट लंकापति केरे हैं ।

राम केरे शारँगते चलैं प्रेरे सायक ज्यों,
जैहौं लंक सुनैागे सबेरे गुण मेरे हैं ॥ १ ॥
भयो विकराल मुख कालहू को काल मानौ,
लोचन विशाल लाल वीररस गाढ़ भो ।
फरके प्रचंड दोर्दंड जे अखंड बल,
मानो अंड खंड कीबे को शरीर बाढ़ भो ॥
रघुराज दायक अनंद अंजनीकोनन्द,
कीश कुल शालिवृन्द पालै को अषाढ़भो ।
जानुते मसकि महि पूछ को पटकि कसि,
कमर हुलसि कूदिबे को कपि ठाढ़ भो २ ॥
भुजनि बढ़ाइ लामी लूमको उठाइ करि,
कानन चपाइ ग्रीवा नेसुक नवाइकै ।
पाँयनको रोपि महि कोपि त्योंही रावणपै,
कूदिबेको वारिनिधि चोपि चित्त चाइकै ॥
कटिको सकेलि ख मेलि मुद्रिकाको कीश,
झेलि उर आगू कहिरामै चित्त लाइकै ॥
कीन्ह्यो अट्टहास रघुराजै मोद राशि दीन्ह्यो,
शैलै लीन्ह्यों ढाँपि बजरंग रंग छाइकै ॥ ३ ॥

दोहा—वपु बढ़ाय एड़ाय कपि, भयो प्रलयरविरूप ।
कीन्ह्यो शोर कठोर अति, प्रलय जलद अनुरूप ॥

कवित्त ।

कैधौं कोटि कुलिशको भयो पुहुमीमें पात,
कैधौं प्रलयकालके पयोदकी अवाज है ।
कैधौं कोल डाढनते छूटी धरा धारचो फारि,
धराधर गिरे सोई रव या दराज है ॥

कैधौं उनचासौ पौन कैकै एकबारै गौन,
कढ़े फोरि मंदिरको सोई खगराज है।
कैधौं केशौ पाय दंड लागे फाट्यो अंड कटा,
कैधौं आज केसरीकिशोरकी गराज है॥१॥
चल्यो लंकनगरको मारुत डगर ह्वै कै,
मारुतको नंद मारुतैकी गति धारिकै।
दूजो मार्तंडसों अकाशमें प्रकाशमान,
मार्तंड डरि भाग्यो ग्रसिबो विचारिकै॥
फूलन झरत फूले फूले तरु संग उड़े,
चले पहुँचावें मनोबंधु शोक टारिकै।
रघुराज मोद छाये दुन्दुभी बजाये देव,
जै जै कहि गाये रामदूतको निहारिकै॥२॥
बलकी अथाहैं वीर माहिमें मजा हैं करैं,
हठि युद्ध चाहैं रणसिंधु अवगाहैं हैं।
कपिन पनाहैं सर्वदा हैं राम जीतकी,
ध्वजा हैं करि राहैं बहु लंक गढ़ ढाहैं हैं॥
दासन गुनाहैं नहिं गुनत क्षमाहै छई,
वीरता नसाहैं फोरैं अंडहू कटाहैं हैं।
रघुराज छाहैं करैं शत्रुनको दाहैं उत,
साहन उमाहैं भरी हनुमंत बाहैं हैं॥ ३॥
अहिराज आज राजत अकाशहीमें,
यमराज कालपाश पसराई है।
कैधौं दशकंधरकी मीचु मड़राती व्योम,
कैधौं महाकाल कोपि रसना लमाई है॥
कैधौं या त्रिनेत्रकी त्रिनेत्रवह्नि शिखा फैली,

कैधौं हरि शारँगकी दुति दरशाइ है ।
कैधौं रघुराज मोददाई छवि छाई मन,
भाई वायुलाल जू लँगूर लहराई है ॥४॥
कैधौं प्रलय करिबेको आजु उदयाचलमें,
उयो दूजो मार्तंड परम प्रकाश है ।
असुर कतारन हजारनको मारि मारि,
रम्यो धौं हजार आरताको या विकासहै ॥
कैधौं आसमान अंबुनिधिमें अरुण अंबु,
जातफूल फूल्यो सुठि शोभाको अवास है ।
कैधौं रघुराज मोद देनवारो छविवारो,
केसरीकिशोरजूको वदन विलास है ॥ ५ ॥
देवन कतारे औ कतारे त्योंहीं तारनके,
होत भे किनारे मगवारे आसमानके ।
मेघ बहु रंग केरे चले उड़ि संग घेरे,
करन सहाय मनो प्रेरे मघवानके ॥
तिनमें छिपात प्रगटात पुनि बार बार,
मोद सरसात राजो रूप अंशुवानके ।
रघुराज करत बखान हरियान आज,
वेगवान है नहीं समान हनूमानके ॥ ६ ॥
कपिकुल मोद देनवारो यशवारो अति,
कारज करनवारो सबै जगदीशको ।
दनुजदलनवारो देव मुद देनवारो,
युद्धै संतोष करनवारो अहै ईशको ॥
उदधि नकनवारो सीयशोक हरनवारो,
प्रबल प्रतापवारो मंत्री है कपीशको ।

बड़ो उत्साहवारो बड़ो बाहुबलवारो,
बड़ो अनियारो प्यारो जनकललीसको ॥७॥

दोहा—पवनपूत विश्रामहित, लहि सागर उपदेश ।
मारगमें मैनाक गिरि, प्रगट भयो तिहि देश ॥

कवित्त ।

करते परशि शृंग हर्षि हिये बजरंग,
वीररसके उमंग भरो गुणग्राम है ।
वचन विहँसि बोल्यो निजउर आशै खोल्यो,
भयो तू आमोल्यो सबै भाँति सुखधाम है ॥
आजते तू उभय अहै देववृन्द यश कहै,
नहिं ब्रजी ब्रज जहै रहै यहि ठामहै ।
विन अभिराम राम काम कीन्हें आठो याम,
मोहिं ना अराम नहिं करों विशराम है ॥

दोहा—पुनि सुरसा रोक्यो जलधि, पंथ लंकगढ़ जात ।
मेरे मुख ह्वै जाहु कपि, कही परीक्षन बात ॥

कवित्त

देखि भयवारी बड़ी देहधारी नारी पथ,
हिये या विचारी या विचारीको न मारिहौं ।
जगमें अवध्य नारी कहैं दिविचारी मुनि,
ह्वै है पाप भारी ताते युक्तिकै सिधारिहौं ॥
होई जो पै हानिकारी रामकाजमें गँवारी,
तौ तो जै है मारी नहिं नेकऊ विचारिहौं ।
रघुराज मोदकारी बात यों उचारी प्रभु,
काज निरधारी तेरो कह्यौ मैं सवाँरिहौं॥९॥
ताको माथनाय वेगि पितापथ जाय चल्यो,

लंक मोद छाय कपिराइ मजबूत है ।
चढ़े देव याननमें वरषैं सुमनवृन्द,
मंदरपै मानो जल वरषैं जीमूत है ॥
देखती जो काम यह बड़ो कठिनाई धाम,
विबुध बखानैं सबै विक्रम अकूत है ।
आज रघुराजको अशोकको करनहारो,
प्यारो रामदूत पौन पूत ईशपूत है ॥ २ ॥
छाया परी सागरमें मानि भारी जन्तु भक्ष,
गहि ताको सिंहिकासों रोंकी कपि गति है ।
मारुति विचार कियो पारावार मध्य कहा,
देखि राक्षसीको मारिबेकी कीन्हीं मति है ॥
वेगसों सँभारि कोप धारि ताके मुख कूदि,
उदरको फारि कढ़ि चले ताहि हति है ।
मेटि महा विपति विचारे व्योमचारिनकी,
दीन्ह्यो रघुराजै महावीर मोद अति है ॥३॥

दोहा–नाँघि सिंधु शत योजनै, पार जाय कपिराय ।
चल्यो सीय खोजन द्रुतै, अति लघुरूप बनाय ॥

कवित्त ।

होतही प्रदोषकाल उयो चन्द्र है विशाल,
मनो रघुलाल दूत करत सहाई है ।
क्षोणी छाय छटा चहुँओरहीं छिटिकि रही,
छोटिहू न वस्तु जामें छिपति छिपाई है ॥
श्रमको हरनवारो सुखको करनवारो,
बड़ो परकाशवारो देखि हरषाई है ।
रघुराज मोददाई मनमें न शंक ल्याई,

सीय खोजिबेको कपिराई चल्यो धाई है॥ ३॥
कंचनके आत हर बने,
खावाँ जलपूरे रक्षें शूरे शस्त्र धारे हैं ।
गुरजै बनीहैं तोपैं तिनपै घनी हैं वीर,
रंगमें सनी जे फौजें खड़ी चहुँ द्वारे हैं ॥
गति ना सुरेश औ दिनेश औ धनेशहूंकी,
जामें सब देशके महेश रखवारे हैं ।
तामें नहिं शंक धारे अति उत्साहवारे,
कीन्हें हैं प्रवेश वेश केसरीदुलारे हैं ॥ २ ॥
करत प्रवेश देख्यो लंकपुरी नारी वेश,
द्वारेमें हमेश रहै रक्षणके हेत है ।
बोली कहाँ जैहै कीश कौन अहै तेरो ईश,
कौन तोहिं भेज्यो दशशीशके निकेत है ॥
गुण्यो सुनि ताके बैन ह्यांके प्रगटे बनैन,
हनी बलऐन मूठी गिरी सो अचेत है ।
उठी कर जोरि कही कपिसों निहोरि जान्यो,
ऐहै लंकईश खेत बंधुनसमेत है ॥ ३ ॥
गयो मकराक्ष भौन त्योंहीं देवअंतकके,
प्रबल नरांतक औ अतिकाय आलै है ।
वज्रदंत धूम्रअक्ष महोदर महापार्श्व,
त्रिशिरा अकंप इन्द्रजीतोके उतालै है ॥
युद्ध उन्मत्त मत्त कुंभ औ निकुंभऊके,
कुंभकर्णहूके गयो ऐनहि रसालै है ।
खोजि सब ठौर गयो रावणके मंदिरमें,
केसरीकिशोर वीर विक्रम विशालै है ॥४॥

सोहै खासा आमखास फाल रह्यो हैं प्रकाश,
दीपन मणिन दशवदन विलासको ।
फैली है सुवास आस पास त्यों अकाशहू लौं,
देवकै हुलास देखिबेको राखैं आसको ॥
ऋद्धिसिद्धिवास कीन्हें मानिकै सुपास अति,
कालपाशहूकी त्रास पावति विनाशको ।
भासमान वासव निवासहूको हास करै,
देख्यो रामदास ऐसे रावण अवासको ॥५॥
सीको त्यों अशोकवाटिकामें जाइ देख्योकपि,
मेघनके मध्य शशी रेखासी सुहाई है ।
मैलते सहित मानो कंचनकी लता लोनी,
पंक लपटानी ज्यों मृणाली दरशाई है ॥
हंसहि विहाय वायसीन मध्य मानो हंसी,
सिंहके वियोग सिंहनीसी बिलखाई है ।
देखि कपिराई हिय मानि सुचिताई मेटी,
उबै दुचिताई चढ़ि बैठ्यो तरु जाई है ॥६॥
वरण्यो कपीश रघुनाथजूके अंग सबै,
कह्यो तेरे हेत अति दुखित रहत हैं ।
वसनको लीबो सब रसन चसन कीबो,
ननमें नींद लीबो नेकु ना चहत है ॥
कहूं तेरो ध्यान ठानि बोलहिं न बानि कछू,
कहूं तेरो नाम आठौं यामाह कहत हैं ।
तेरे मिलिबेको योग करैं नित भोर उठि,
तेरेई वियोग राम मोद ना लहत हैं॥ ७ ॥
दियो ना रजाय राम राय ल्यायबेकी माय,

नातो कंधमें चढ़ाय प्रभुहि मिलावतो ।
परम कठोर घोर कैकै सोर चारों ओर,
जोरकै उखारि लंक वारिधै बहावतो ॥
रणमें प्रचारि दैत्य दलन सँहारि दश,
शीशै बेरि डारि नाथ पाँयन गिरावतो ।
यश जग छावतो बढ़ावतो अनंद वृन्द,
कोशलेशजूको कोशलाको पहुँचावतो ॥८॥
जानकी उतारि दीन्हीं चूड़ामणि हनुमानै,
कैकैसो प्रणामै फल खानै मन आन्यो है ।
कह्यो जो निदेश पाऊँ क्षुधाको मिटाऊँ खल,
गण बिलखाऊँ मातु ऐसो ठीक ठान्यो है ॥
सुनिकै दियो अशीश भावै सोइ करौ कीश,
बीस बिसे तोसे नहिं उऋण मैं मान्यो है ।
सीयपदवंदनकै वाटिका निकंदनको,
चल्यो वायुनंदन अनंद अति सान्यो है ॥९॥
लतन ततानके वितान तानि तानि तोरि,
फोरि फोरि फसैं रोरि रोरि करि डारचोहै ।
सरसीन दौरि दौरि धूरि भूरि घोरि घोरि,
तरुणको टोरि टोरि ठोर ठोर पारचोहै ॥
कोरि कोरि महल कँगूरनको मोरि मोरि,
खंभन उखारि खोरि खोरिमें पवारचो है ।
बाहैं रज खौरि खौरि औधनाहै सौरि सौरि,
केसरीकिशोर शोर कैकै जोर धारचोहै ॥१०॥
नैनन निहारे सबै वाटिका उजारे हनु,
मंतको हँकारे बलवारे रखवारे हैं ।

आयुधनि धारे निज नाथके प्रचारे तवै,
शस्त्र अनियारे एकै वारहीं पवारे हैं ॥
तिनहिं विसारे गृह खंभ खचि भारे भारे,
महावीर रोषधारे मारि तिन्हैं डारे हैं ।
रघुराज मोद देनवारे राम जै उचारे,
कूदिकै सिधारे द्वार केसरीदुलारे हैं ॥११॥
मारे ते बच्यो जो कोई रणते सिधारयो वेगि,
भीति भरो रावणके द्वारेसों पुकारयो है ।
कौनको प्रचारयो कौन लोकते पधारयो येक,
कीश ना विचारयो कछु वाटिका उजारयोहै॥
रक्षकनि मारयो फारि डारयो है अगारनको,
कोप धारयो जै जै रामवचन उचारयोहै।
सीता शोक टारयो नहिं जुरे जंग हारयो नेकु,
स्वयश पसारयो तुव मान मोरि डारयो है॥१२॥

दोहा–सुनि दशशिर दंतनि दरत, किंकर असी हजार ।
पठयो निजसम बल प्रबल, जहँ रह पवनकुमार ॥
खंड खंड किय दंडमहँ, मारुति प्रवल प्रचंड ।
पुनि प्रहस्तसुत मंत्रिसुत, कियो समर वरिबंड ॥

कवित्त ।

मंत्रि पुत्र ओजमान कोपकरिकै महान,
काढ़ि काढ़िकै कृपान कीशै घेरे आसमान ।
कोई वीरता बखान करि धरिकै कमान,
बर वर्षे हैं बान वे प्रमान भासमान ॥
तिन्हैं जंघमें सुजान कपि मीज्यो दै भुजान,
केते किये बिन जान जानमारि राक्षसान ।

देखि नायकान भग लंक यातुधान,
जयवान बलवान हरपान हनुमान ॥
दोहा—अग्रगण्य पुनि सैन्यके, पंच महा बलवान ।
अमरषि पठयो लंकपति, धाये मग असमान ॥

कवित्त किरवान ।

जहाँ धाये यातुधान अस्त्र छोड़ें जे महान,
मच्यो घोर घमसान देव देखें आसमान ।
जहाँ तट गज जान मीन बान औ कृपान,
देखि शोणि सरितान होत भीति कादरान ॥
जहाँ करैं भूप गान करि शोणितको पान,
गृद्धगन त्यों अघान मोद भयो जंबुकान ।
तहाँ रणमें सुजान तेजवान बलवान,
कोपि वीर हनुमान झुकि झारी किरवान ॥
—पंच अग्रगंता सयन, मारयो पवनकुमार ।
पठयो दशकंधर तुरत, मानी अक्षकुमार ॥

कवित्त ।

सुनिकै प्रतच्छ बीस अच्छवध रच्छ सानि,
बैठो जो समच्छ अच्छअच्छनिसों लक्ष्योहै।
उठ्यो सो ततच्छन है समर बिलच्छन है,
सँग वीर लच्छन जो देव दल भक्ष्यो है ॥
अच्छे स्वच्छ अच्छ रथै चढ़िकै सुलच्छनहै,
बड़ो रण दच्छ तच्छकै सो कोपि गक्ष्योहै,
पच्छवान शैल सों विपच्छ पर पच्छिनपै,
कीशको निरिच्छौक्षमाछोहरी जोरक्ष्योहै १
गयो उड़ि आसमान हनूमान देखि सोऊ,

किये है पयान चढ्यो यान यातुधान है ॥
बलको सम्हारि कियो तलको प्रहार कपि,
घोड़े मारि गिरे चारि टूट्यो आसु यान है॥
दपटि सो तेग धारि झपटि कीशौ प्रचारि,
पटकि दियो है भूमि गयो ताको प्राण है ।
निपट निशंक बंक लंकमें अतंक छाइ,
आइ बैठ्यो तोरन तुरंत तेजवान है ॥ २ ॥

दोहा—सुनि कपीशकी जीति रण, इन्द्रजीत कहँ बोलि ।
जग रावण रावण तुरत, पठयो आशै खोलि ॥

कवित्त ।

अरि बरजोर देखि घोर शोर कीश कै कै,
छाय चारों ओर दोरदंड ठोकि धायो है ।
त्यौंहीं ह्वै अभीत इन्द्रजीतहू सरोष अति,
चोपि चोपि चोख चोख बाणन चलायो है॥
शरनि बचाय कर भूधर उठाइ हरि,
उड़ि आसमानै जाइ विक्रम दिखायो है ।
परिघ परश नेजे मेघनादके जे भेजे,
तिन्हैं कैकै रेजे रेजे महावीर भायो है ॥

दोहा—अस्त्र शस्त्र निज मोघ लखि, इन्द्रजीत अति कोपि ।
तज्यो अमोघहि ब्रह्मशर, कपि बाँधन चित चोपि ॥
मानि ब्रह्मशर कपि प्रबल, दिनहूं देखन लंक ।
अपनेहींसों बँधि गयो, कियो न मन कछु शंक ॥
बाँधि पवनसुत लै चल्यो, पितानिकट घननाद ।
सुनि रावण आन्यो तुरत, सभा पाइ अह्लाद ॥

कवित्त ।

लंकनाथको निशंक कपि बोल्यो बैन,
छोडि धर्म कीन्ह्यों है अधर्म कर्म भारी तू ।
जनस्थान जाइकै लुकाइकै चुराई शठ,
लाजहिं विहाइ हरि ल्याये परनारी तू ॥
भयो जो सो भयो अब जनकसुताको लये,
प्रभु पाँय आसु परै दंत तृणधारी तू ।
सकै नहिं राखि विधि हरि हर राम द्रोही,
मारिजैहै हठि सीख मानिले हमारी तू ॥ १ ॥
सुनत सकोप दशकण्ठ कह्यो वीरनसों,
सुनत कहा हौ वेगि कीश वधि डारोरे ।
उठ तै भटन बैन बोलत विभीषण भे,
दूत है अवध्य बैठौ सकल गवाँरोरे ॥
नीति निरधारौ नहिं मारौ नाथ दूतै कोपि,
इनसों उचारौ अंगभंग करि डारौरे ॥
मानि लंकराय अतुराय या रजाय दीन्ह्यों,
पावक लगाय याकी पूँछि प्रिय जारौरे ॥ २ ॥
पाइ अनुशासन दशाननको छपा चर,
चीरनको ल्याये जेहैं जीरन बनाइकै ॥
लूममें लपेटि ताहि दीन्ह्यो है बढ़ाइ कपि,
वसन न बाचे कहूं तब ते रिसाइकै ॥
तेलहिं सिचाइ पुनि पावक लगाइ दीन्हें,
नगर फिराये सबै बाजन बजाइकै ।
आगि अवलोकि लागि कोपरस पागि वीर,
परिघ उठाइ लीन्हों बंधनछुड़ाइकै ॥ ३ ॥

फोरि फोरि खलनके मुंडनको फोरि फोरि,
दौरि दौरि खोरि खोरि खलल मचायो है ।
करि करि कोप कूदि कूदि केसरीकिशोर,
कञ्चन कँगूरनमें कालहींसो भायो है ॥
घरन घरन घुसि घुसि घूमि घूमि घोर,
शोर करि चहूँ ओर पावक लगायो है ।
कोई नहिं थल बच्यो लंक हलकम्प मच्यो,
कहा या विरंचि रच्यो यही रव छायोहै४ ॥
पूतके पराक्रमको पेखि पूरो करिवेको,
पौन उनचासौ किये गौन तहाँ सरसात ।
भभकि भभकि भारीभारी भीम ज्वाला जगैं,
देखि देखि क्षपाचर भागि भागि विलखात॥
हाटनमें बाटनमें घाटनमें हव्य बाढ़,
फैलि फैलि आटनमें ठाटनेंम अधिकात ॥
व्यौमहूलों बाढ़ि बाढ़ि वारिधिते एकवार,
मानो लंक बार बार बाड़ौनल दरशात५॥
करिनके यूह करि कूह भगे जात कहूं,
हैवर समूह हिंहिनाइकै पराने जात ।
केशनको छोरे अधजरे कहूं दौरे जात,
राकस अथोरे बरजोरे बहु विलखात ॥
कहूं रोइ रोइ राक्षसी पुकारे हाइ पुत्र,
पुत्रहू पुकार करैं हाय तात हाय मात ।
गारी दै दै रावणको कहैं कलंक नारी सबै,
आजु अस्त्रधारी रक्षकारी कोई ना दिखात६
टघरि टघरि चामीकरके कँगूरे

फटिक फरश फूटि फूटि फांके फहराहिं ।
चटक चटक चटकीले चट काहि नग,
टूटि टूटि जरि जरि मुक्तागण छहराहिं ॥
ताने जे विताने शोभा साने झरसाने सबै,
विपुल किताके त्यों पताके व्योम लहराहिं ।
लपटि लपटि लावैं लपटैं सुगेहनको,
लपकि लपकि लूकैं लखन पै झहराहिं ७
अनल उदंडको प्रकाश नवौ खण्ड छायो,
ज्वाल चण्ड मानो ब्रह्मअण्ड फोरै जाइ जाइ ।
पुरी ना लखाति ज्वाल मालै दरशात एक,
लोहित पयोधि भयो छाया घनी छाइ छाइ॥
देवता मुनीश सिद्ध चारण गंधर्व जेते,
मानि महा प्रलै वेगि व्योम आइ धाइ धाइ ।
देखि राम राइ हेत दीन्हीं लंक लाय सबै,
चाइ भरे चले कपिराइ यश गाइ गाइ ॥८॥
कोई कहैं नंदीकी शराप साँच करिबे को,
कैधौं कपि रूप धरि आये कालिकाके नाथ।
कोई कहैं कैधौं देखि मुनिनके दुःख दीबो,
दुसह न सहि कोपि आये सरस्वती नाथ॥
कोई कहै कैधौं देवराजकी पुकार सुनि,
भेज्यो है प्रचण्ड चक्र रोषित ह्वै रमानाथ।
कोई कहैं कैधौं सीय हेत रावणै निकेत,
कपि कुलकेतु काल कीश भेज्यो रघुनाथ ॥ ९॥
बार बार केसी लंकै खूब जाार जाार,
चाय सों प्रचारिकै कै महाघोर किलकारि।

दीरघ दिवालन विदारि खंभऊ उखारि,
दोऊ कर धारि धारि अरिनको मारि मारि ॥
यश विस्तारिकै खरारिको हिये सम्हारि,
पूछको बुझायो वारिनिधि वारि झारि झारि ।
वाटिकै सिधारि शिरनाइ सीय शोक टारि,
केसरी कुमार पार चल्यो राम जै उचारि १०
चढिकै गिरंदै पाँव मसकि कपिंद कूद्यो,
शैल गो पताल वायुलाल आयो पार है ।
नादको सुनाइ अंगदादिनको मोद छाइ,
बैठो आइ शीशनाइ कीशन मँझार है ॥
जानकीनिहारिआयोकह्योलंकजारि आयो,
मारि आयो रावनके वीर बे शुमार है ।
सुनि हरषाइ सबै जीवन सों पाइ तहाँ,
उठि उठि धाइ धाइ भेंटे बार बार हैं ११
आगे करि हनूमान चले बलवान सबै,
आइ मधु काननमें कीन्हें मधुपान हैं ।
दधिमुख कीशको कहा न माने मोद साने,
अतिहि अघाने पुनि कीन्हें ते पयान हैं ।
आये कीशनाथ पास परम हुलास छाये,
पौन पूत कियो काज कीन्हें या बखान हैं ।
मिलिकै सुकंठ तिन्ह अति उतकंठित ह्वै,
गौने तहाँ जहाँ बैठे भानुकुल भान हैं १२॥
देखतही केसरीकिशोर करजोरि दौरि,
परि प्रभु पाँयनमें बोल्यो योहीं बैन है ।
जनकसुताको देखि आयों वाटिकामें बैठी,

रावरे प्रतापहीते देख्यो खलऐन है ॥
चूड़ामणि दैकै कह्यो फटिकशिलाकी बात,
आपहीको नाम जपि काटै दिन रैन है ।
बाणनसों मारिये दशाननको चलि नाथ,
सीता दुख एक मुख कहत बनै न है॥१३॥
चूड़ामणि पाये रघुराजजू लगाये हिये,
भरि आये पदुम पलास युग नैन हैं ।
क्षण एक रही नहिं अंगनकी सुधि नेक,
थकित ह्वै रहे नाहिं बोलि आये बैन हैं ॥
सुख दुख रोष उर भये हैं समान तीनौं,
सुरति सम्हारि मिले कीशै मुदऐन हैं ।
मानो रूपवान वातसल्य दास्य रस दोऊ,
मिलैं बार बार भूरि भरे चित चैनहैं॥१४॥
बोले हरषाय रघुनाथ बैन बार बार,
देइबेको आज तीनौं लोक तोहिं थोरा है ।
तातें कै विचार मनमाहँ ठीक योहीं दियो,
उऋण न तोसों सदा एही मन मोरा है ॥
प्रभुके वचन सुनि कीश कर जोरि कहै,
काज तू प्रतापै कियो मोहिंना निहोरा है ।
कीश सेवकाई तैसे प्रभु प्रभुताई लखि,
झूलै रघुराज मन हरष हिंडोरा है ॥१५॥

दोहा—पवनसुवनके वचन सुनि, रघुपति कियो विचार ।
विजय मुहूरत आजही, चलौ लगै नहिं बार ॥

छन्द चाबोला ।

अस विचारि पुनि उठि रघुनायक मिले पवनसुत काहीं ।

बोले वचन नयन जल ढारत तुहिं सम कोउ जग नाहीं ॥
तोसे कबहुँ उऋण होवेको मोर न होत विचारा ।
ह्वै नहिं सकै जन्म भरि मोसों तेरो प्रतिउपकारा ॥
अस कहि बोलि कह्यो कपिराजहि अब बाहनी चलावो ।
सिंधुतीर फल फूल बलित वन डेरा सैन्य डरावो ॥
सुनि प्रभु शासन परम हुलासन शासन सुगल सुनायो ।
जयति राम कहि दिशि दक्षिणको कपिवाहिनी चलायो ॥
हनुमत कंध चढ़े रघुनायक अंगद कंध अनंता ।
राजत मध्य सैन्य युग खगपति जनु युग वपु भगवंता ॥
चली कीशवाहिनी विराजति मनो महोदधि फूटो ।
भये पंथ पाषाण रेणु सम वन वन तरुगण टूटो ॥
वसत पंथ प्रभु चारि दिवसमहँ गये तोयनिधि तीरा ।
डेरा करवायो दै शासन कपिदलको रघुबीरा ॥
उतै गयउ जबते मारुतसुत जारि निशाचर नगरी ।
तबते कहैं नारि सिगरी तहँ बनी बात अब बिगरी ॥
रावण मंत्रिन सकल बुलायो करन मंत्र तहँ लाग्यो ।
इन्द्रजीत आदिक तहँ बैठे कुंभकर्णहूं जाग्यो ॥
देन लगे मंत्री अनुमति अस कपिन भीति नहिं भीजें ।
मर्कट मनुज अहार हमारे लखत विचारे छीजैं ॥
बोल्यो तहाँ विभीषण वाणी सुनहु निशाचर राजा ।
काल विवश भाषत सिगरे शठ होई अवशि अकाजा ॥
मोरि सलाह निशाचरनाह विचारि करहु यहि काला ।
आगे करि जानकी जाहु द्रुत जहँ कोशलपुरपाला ॥
दाबि दंत तृण परि प्रभु पायँन ह्वै शरणागत भाई ।
निशिचर कुल अरु राज्य लंककी लीजै वेगि बचाई ॥

भू को भार उतारन के हित लियो मनुज अवतारा ।
विश्व विदित यह बात विचारहु है संगर संहारा ॥
सुनत दशानन शोणित आनन छाय दिशानन शोरा ।
बोल्यो वचन अरे कादर तू भयो बंधु कस मोरा ॥
मर्कट मनुज भक्ष रक्षसके तिनहिं डरात अपारा ।
आँखिन ओट होत तै कस नहिं तोहिं धूर्त धिक्कारा ॥
परुष वचन सुनि दशकंधरके उठ्यो विभीषण कोपी ।
चारि सचिव लै संग गगन ते कह्यो वचन चित चोपी ॥
मैं अब जाहुँ शरण रघुपतिके लीन्ह्यों लंक बचाई ।
निशिचर कुल अरु जीव आपनो जतन किह्यो भलभाई ॥
मैं अब जाहुँ जहाँ रघुकुलमणि दूसर नाहिं दिखाई ।
अस कहि चल्यो विभीषण नभपथ सिंधु पार द्रुत आई ॥
कह्यो गगन ते त्राहि त्राहि प्रभु मैं रिपुबंधु विख्याता ।
हो हुँ शरण रावरे कृपानिधि तुम मेरे अब त्राता ॥
सुनत राम सब सचिव बुलाये कहहु मंत्र का होई ।
निज निज मत तहँ कह्यो विभीषण आवत मैं सबकोई ॥
बोले प्रभु सब सुनहु मोर मत यामें नहिं संदेहू ॥
एक बार जो कहत तोर मैं ताहि अभय करि देहूं ।
अस कहि पठै लषण करुणाकर लियो विभीषण आनी ।
लंकराजको राजतिलक करि दियो बंधु सम मानी ॥
सिंधु तीर रघुबीर गये पुनि कियो धरन उतरन को ।
तीनि दिवस बीते अमरष भरि छोड़यो आग्नि शरन को ॥
दोहा—अति व्याकुल ह्वै सिंधु तहँ, भरि भरि मणिगणथार ।
भयो राम शरणागतै, कहि तुमहीं रखवार ॥

छन्द चौबोला ।

उत लंकापति दूत पठायो दल देखनको आयो ।

देखि गगन सम महा रामदल जाय खबरि अस गायो॥
सुनहु लंकपति साजि कीश दल रघुकुल मणिचढ़ि आये।
करबे होय सु करहु आसुही पुनि नहिं बनी बनाये ॥
सुनि सारन के वचन लंकपति शुक राक्षसहि बुलाई ।
कहन सँदेशो कछु सुकंठ सों दीन्ह्यों ताहि पठाई ॥
शुक शुक रूप धारि नभ पथ ह्वै आयो सागर पारा ।
गगनहि ते कपिनायक सों अस रावण वचन उचारा ॥
का हमरो अपराध समुझि तुम राजसुतन सँग तेखे ।
लंक दुरासद सुरासुरनको नर वानर किहि लेखे ॥
सुनि शुक वचन दौरि वानर बहु पंख उखारयो पकरी।
तिहि सुग्रीव समीपहि ल्याये जबर जजीरन जकरी ॥
आरत वचन सुनत शुकके प्रभु आसुहि दियो छुड़ाई ।
कह सुग्रीव सँदेश हमारो कहौ रावणहिं जाई ॥
शिव अज शरण गये बचिहौ नाहिं सावधान अब रहियो ।
राम द्रोह करि दुष्ट दशानन जीवन आशा जहियो ॥
सुनि सुकंठके वचन चल्यो शुक कह्यो रावणहिं जाई।
तहँ सागर आयो प्रभुके ढिग अति दीनता दिखाई ॥
शासन देहु नील नलको प्रभु रचैं सेतु मुहिं माहीं ।
अभयदान मोको अब दीजै क्षमि अपराधन काहीं ॥
अस कहि दै बहु रत्न नजरि तहँ अभय पाय सरितेशा ।
गयो आपने भवन इतै नल नीलहि कह अवधेशा ॥
रचहु सेतु सागर महँ लै कपि अति आसुहि दोउ वीरा ।
सुनि शासन रघुनायक को तहँ अङ्गदादि रणधीरा ॥
चले नील नल संग कपिन लै राम चरण शिरनाई ।
कोटिन के कोटिन कपीश गण दौरे अति अतुराई ॥

तरुन गिरिनगन महा शिलागन ल्याये आशु उखारी।
पांच दिवसमहँ शतयोजनलों रचे सेतु अति भारी॥
दशयोजन विस्तार भयो तिहि शतयोजनको लंबा।
रच्यो सिंधुमहँ महासेतु द्रुत मिलिमिलि कपिनकदंबा॥
मारुतसुतके चढ़े कंध तहँ दीनबंधु रघुराई।
लषण लाल चढ़ि अंगद कंधहि चले लंक हरषाई॥
चली सैन्य कछु वरणि जाति नहिं नभ सागर उपमाई।
वानरेश लंकेश उभयदिशि और वीर समुदाई॥
सिंधु पार वानरीवाहिनी पहुँची शैल सुवेला।
डेरा परे लंक परिखा छ्वै अरु छ्वै सागरवेला॥
शुक सारन द्वै सचिव दशानन पठयो देखन सैना।
ते दोउ धरि कपिरूप प्रविशि दल देखे सकल सचैना॥
रावण मंत्री जानि विभीषण लियो दुहुन पकराई।
कोशलेश शासन लहि कपिपति दियो सैन्य दिखराई॥
देखि सैन्य गवने शुक सारन वरणे जाय हिवाला।
ते दोउ मंत्रिन लै शशिशाला चढ़ि देख्यो दशभाला॥
मानहुँ भई वानरी वसुधा परै देखि नहिं पारा।
बोरन चहत मनहुँ लंका को फूल्यो पारावारा॥
कह्यो लंकपति दे बताय सब कौन कौन कहँ वीरा।
शुकसारन तहँ तुरत बतायो अंगदादि रणधीरा॥
अंगद हनुमत जांबवान नल नील विभीषण भ्राता।
तिमि सुग्रीव कीशनायक जहँ ठाढ़ो बली अघाता॥

दोहा—जहाँ महा यूथप सकल, खड़े बलीमुख वीर।
अचल श्याममणि शैल सम, तहँ देखहु रघुवीर॥

कवित्तघनाक्षरी।

जाको तनु देखि घनश्याम द्युति छाम होति,

नैनन निहारि अरविंद हिय हारो है ।
शूरमें शिरोमणि त्यों दानिमें शिरोमणिहैं,
रघुकुल महारथी जग उजियारो है ॥
रघुराज राजराज राजनको शिरताज,
धरमधुरंधर धरामें धीर धारो है ।
विक्रम त्रिविक्रमसों अस्त्रमें अनोखो वीर,
देखु रघुवीर दशरत्थको दुलारो है ॥ १ ॥
दुराधर्ष साँचो सुरासुरके समरहूंमें,
धुरा धरे धीरजको पूरा धनुधर है ।
चाहै वसुधाको वीर बाणन विदारिडारै,
शरनि अकाश भरि निराकाश कर है ॥
क्रोधके नगीच जाके बसति हमेश मीच,
विक्रम विलोकि शक्र होत दरबर है ।
निशिचर वर सुरवरके न धोखे रहौ,
लागी करवर चढ़ि आयो रघुवर है ॥ २ ॥

सवैया ।

देखु दशानन दाहिने ओर दिपै भुज दाहिनो सों ढिग जाके ।
शुद्ध सुवर्णसों वर्ण विराजत लाल विशाल विलोचन ताके ॥
श्रीरघुराजको है लघु बंधु रहै निजबंधु हमेशही ताके ।
घूघुरवारी हलैं अलकैं अहैं लक्षन लाल ध्वजा वसुधाके ॥ १ ॥
पीन उरै सब अस्त्रको ज्ञाता अमर्षी महा प्रभुको प्रिय भ्राता ।
दुर्जय विश्वमें जंगमें जेता महाबली वीरन वीर विख्याता ॥
श्रीरघुराजके सेवनको गुणि जीवन आपनो जीवन दाता ।
तच्छन तक्षकसों अरि भक्षक लक्षहु लक्षन लक्ष निपाता ॥ २ ॥
सोरठा—संख्या कही न जाय, वरणि वानरी वाहिनी ।

गगन समान दिखाय, भयो भुवन मर्कटनमय ॥

छन्द चौबोला ।

सुनि शुकवचन कोपि अति रावण कह्यो परुष तिहिबैना।
तैं शठ भीरु मोहिं डरपावत मोहीं भीति लगैना ॥
पूरव जो उपकार किये कछु होते नाहिं शुक सारन ।
तौ दोहुँनको शीश काटि करतो,पुनि कपिन विदारन ॥
सुनि दशकंधरवचन उचारन शुक सारन भय भारे ।
करि प्रणाम भागे निज भवनन अंतकविवश विचारे ॥
कह्यो बुलाय महोदरको पुनि पठवहु दूसर चारा ।
बोल्यो द्रुतहि महोदर दूतन दशमुख वचन उचारा ॥
जाहु राम लक्ष्मण कहँ देखहु कपिवाहिनी निहारौ ।
नहिं जानै जामें कोउ मर्कट आय हिवाल उचारौ ॥
चले दूत वानरको वपु धारि प्रविशे सैन्य मँझारी ।
तिनकी माया जानि विभीषण लीन्ह्यो पकरि निहारी ॥
मारनलगे कीश तिनको तब दीन्ह्यों राम छुडाई ।
भभारि लंक चलि लंकनाथके परे चरण शिरनाई ॥
रावण कह्यो कहहु व्याकुल कस दूत कहे कर जोरी ।
खबरि लेन लायक नहिं कपिदल जानिलेत सब चोरी ॥
का पूछहु देखहु बैठे इत देखि परत दल भारी ।
बाँधि सेतु सागर लै कपिदल आयो उतरि खरारी ॥
गरुड़ाकार बनाय व्यूह दल परे लंक कहँ घेरी ।
युद्ध करहु दशमुख सन्मुख की देहु जानकी फेरी ॥
शार्दूल दूतनको पति जो तिहि दशकंधर माषी ।
कौन वीर किहि देव अंश है देहु सकल मुख भाषी ॥
शार्दूल तब लग्यो बतावन ऋक्षराजसुत राजा ।

सूरज अंश जानि सुग्रीवहि वालि अंश सुरराजा ॥
गद्गदको सुत जाम्बवान है जायो विधि जमुहातें ।
धर्मपुत्र जानहु सुषेणको दधिमुख शशि सुत ख्यातें ॥
दुर्मुख सुमुख वेग दरशीये तीनों कपि पंचानन ।
मृत्युरूप विरच्यो इनको जग पूर्वकाल चतुरानन ॥
नील अग्निसुत पवनतनय पुनि जग जानै हनुमानैं ।
वासवको नाती अंगद है तिहि युवराज बखानै ॥
मैंद द्विविद अश्विनिकुमारके हैं कुमार लंकेशा ।
जाये यमके अंश पंच कपि वर्णहु नाथ विशेशा ॥
गज गवाक्ष अरु गवै शरभ तिमि गंधमादनहुँ जानो ।
महाबली दशकोटि वलीमुख इनके सँगमहँ मानो ॥
और कहाँलगि मैं वर्णहुँ सब वानर ऋक्ष अपारा ॥
लह्यो रामकर राजतिलकसो भ्राता छोट तुम्हारा ॥
श्वेत ज्योति मुख सूर्य्य अंश द्वै जानहु कीश प्रवीरा ।
हेमकूट त्यों वरुण अंश विशुकरमा सुत नल धीरा ॥
जग जाहिर बड़ वेगवान वसुसुत कपि दुर्धर नामा ।
ऋक्ष और गोपुच्छ अनेकन जाति महा बलधामा ॥
वरण्यों मुख्य मुख्य थोरे कपि और न जानौं स्वामी ।
दशरथ नन्दन रघुकुलचन्दन देख्यौं अंतर्यामी ॥
रघुकुल सिंह मदन मद मंदक सुंदर श्याम शरीरा ।
युवा वैस आजानुबाहु युग महावीर रघुवीरा ॥
चौदह सहस निशाचर मार्चो खरदूषणहि समेतू ।
हन्यो विराध कबंध निमिषमहँ अनुपम रघुकुलकेतू ।
बली वालिको वेधि बाणसों सुग्रीवहि दिय राजू ।
आज न कोऊ महि मंडलमहँ जस धनुधर रघुराजू ॥

दोहा—लषण वीर ताको अनुज, मनहुँ मत्त मातंग ।
धर्मनिरत जिहि बाणपथ, जितै न वासव जंग॥

छन्द चौबोला ।

सुनि शार्दूलवचन दशकन्धर सचिवन आशु बुलायो ।
करिकै मंत्र काल अनुसारहि सचिवन भवन पठायो ॥
गवन्यो आप राजमंदिरमहँ राक्षस दामिनि जीहा ।
ताको बोलि कह्यो माया करु तैं मायावी दीहा ॥
सो कीन्ह्यो मन मोहनि माया सीता लखि दुख पायो ।
सरमा रही विभीषण नारी आय वचन असगायो ॥
यह माया राक्षसी जानु सिय अससमरथ कोउ नाहीं ।
देव दैत्य राक्षस रघुवर कहँ जो जीतै रणमाहीं ॥
मैं अब जाति देखि आवति हौं अंतर्हित दोउ भाई ।
अस कहि गई गगन मारग ह्वै लख्यो लषण रघुराई ॥
परम अपार निहारि कीश दल आशु लौटि सो आई ।
कह्यो जानकी सुनै वचन सति कुशल अहैं दोउ भाई ॥
बाँधि सेतु प्रभु उतरि वारिनिधि कपिदल संग महाना ।
घेरयो लंकहि बजति दुंदुभी सुनति शोर नहिं काना ॥
सुनि सरमाके वचन जानकी दीन्ह्यों शोक विहाई ।
पुनि सरमा बोली अस वाणी औरहु देत सुनाई ॥
यहि अवसर रावण दरबारै मैं गवनी सुधि लेनै ।
तहँ आई रावणकी जननी लगी शिषापन देनै ॥
जानकी रामचन्द्रको लेहु कुटुंब बचाई ।
वृद्ध कहैं बहुतक तिहि मान्यो नहिं चित लाई ॥
लहत कालहि दशकंठ तासुफल राम सकुल यहि मारी ।
अनुजसहित विजयी तुहिं लै प्रभु जैहैं अवध पधारी ॥

अस कहि गई भवन कहँ सरमा सीता अतिसुख पायो ।
उत रावण आवन प्रभुको लखि सचिवन वेगि बुलायो ॥
कह्यो काह देखत यहि अवसर दशरथ सुत चढ़ि आयो ।
उचित होइ अब जौन कहहु सब दूतहुहाल सुनायो ॥
कह्यो वचन तब माल्यवान तहँ जो रावणको नाना ।
दै सीताको सब विधि कीजै निशिचर कुल कल्याना ॥
यदपि भीति नहीं सुरासुरनते विधि दीन्ह्यों वरदाना ।
अभय न माँग्यो नरवानरते यह संदेह महाना ॥
आय गयो सोई अब अवसर होत अमित उत्पाता ।
वर्षत रुधिर मेघगर्जत खर जानि परत कुलघाता ॥
व्याल शृगाल गृद्ध पुर प्रविशत बलिभक्षत घुसि श्वाना ।
श्वेतदंत दरशाय नचैं हँसि काली तिय विधि नाना ॥
चीची कूची पढ़त शारिका नभ कबंध दरशाहीं ।
ताते निशिचर कुलविनाश अब जानिपरत मनमाहीं ॥
माल्यवानके वचन सुनत अस रावण अमरष छायो ।
बोल्योवचन अरुण करि लोचन तैं कस यहि कुल जायो ॥
मिले बलीमुख बहुत रामको भरि तरुगण पाषाना ।
रच्यो सेतुका हानि हमारी कौनहेत भय माना ॥
तैं कादर निशिचर कुल दूषक कीजत मनुज बड़ाई ।
पठये देत निशाचर अबहीं लैहैं कपिदल खाई ॥
रोषितजानि रावणहिं भय भरि माल्यवान गृह गयऊ
द्वार द्वार लंका रक्षणको रावण शासन दयऊ ॥
महापार्श्व अरु वीर महोदर ताकैं दक्षिण द्वारा ।
सेनापति प्रहस्त पूरब दिशि रहै महा बलवारा ॥
मेघनाद पश्चिम द्वारे महँ रहै साहिनी लीन्हें ।

शुकसारन उत्तर द्वारे महँ रहैं चित्त दृढ़ कीन्हें ॥
दोहा–विरूपाक्ष मधि नगरमहँ, रहैं सुरति सब लेन ।
उत्तरदिशि हमहूं रहब, निज वीरन सुख देन ॥

छन्द चौबोला ।

इतै राम अरु लषण बैठि सब मंत्रिन तुरत बुलायो ।
पवनसुवन अरु ऋक्षराज दशकंठ अनुजहू आयो ॥
कपि कुलराज वालिनन्दन नल नीलादिक उत्साही ।
सबसों कह्यो राम भाषहु अब समय उचित का चाही ॥
भन्यो विभीषण आजु सचिव मम आय लंकते भाष्यो ।
रावणहूँ चारिहु द्वारन रक्षनाहित रक्षस राष्यो ॥
सुनत विभीषणवचन अवधपति कियो सैन्य चौ भागा ।
कह्यो नील सेनापतिको तुम जाहु पूर्व बड़भागा ॥
दक्षिण दिशिमहँ सावधान अति गवनै वालिकुमारा ।
तैसहि कपिन सैन्ययुत पश्चिम गवनैं पवनकुमारा ।
हम लछिमन लंकापति कपिपति रहिहैं उत्तरद्वारा ।
अस कहि चले सैन्य लै रघुपति चढ़े सुवेल पहारा ॥
गये त्रिकूटाचलहि शृङ्गपर लंका नगर निहारा ।
विंशति योजन लंबवान पुर दश योजन विस्तारा ॥
अलकापुरी तथा अमरावति अस शोभा नहिं होई ।
देव दैत्य दानव समरथ नहिं जो प्रविशै पुर कोई ॥
डेरा कियो वाहिनी सिगरी गर्जहिं तर्जहिं कीशा ।
लंका सन्मुख शिखर चलावहिं कहि जै जै जगदीशा ॥
सुनि हल्ला वानरी सैन्यको चढ़ि रावण प्रासादा ।
देख्यो धवलीकृत धरणीको तदपि न लह्यो विषादा ॥
सहस खंभ चामीकर मंदिर तहँ बैठ्यो दशभाला ।

नाचन गावन लगीं अप्सरा लस्यो प्रकाश विशाला ।
देख्यो दशकन्धर को कपिपति वासवसरिस विराजा ।
तासु गर्व सहिगयो न मनमहँ लखि सन्मुख रघुराजा ॥
सकल यूथपनके देखतहीं देखत राम लषणके ।
अति निर्भय कूदेउ कपिनायकसातिगुण करनसखनके ॥
दशकन्धरके आमखास महँ पऱ्यो दिनेशकुमारा ।
महा मनोहर होतरह्यो जहँ अति सुंदर नटसारा ॥
लख्यो कीश दशवदनसदनमहँ मानहु जलधरराशी ।
उरमहँ ऐरावत दंतन छत लंकानगरमवासी ॥
शोभित अरुण वसन तनु सुंदर श्यामवर्ण दशशीशा ।
मनहुँ साँझ सावन रविआतप परे मेघ इव दीशा ॥
राकाशशिसम छजत छत्रवर चलत सुचामर चारू ।
विमल रक्तचंदन अनुलेपित मंडित माणिक हारू ॥
वासवसरिस विराजत दशमुख त्रिभुवन जीतनवारो ।
मनहुँ गगनते गिऱ्योहेमगिरितिमिकपिपातिहिनिहारो ॥
चौंकिउठ्योदशमुखचितयोचाकिहहलिमहलसबडोले ।
ठाढ़े ह्वै सन्मुख दशमुखके अभय कीशपति बोले ॥
राक्षसेन्द्र मैं वानरेन्द्र हौं रामसखा अरु दासा ।
मेरे प्रभु सन्मुख शठ बैठि विलोकन लगो तमासा ॥
नहिं जीवत तुहिं तजौं लंकपति राम प्रताप प्रचंडा ।
अस कहि कूदिपऱ्योदशमुखउरमुकुटउतारित्रिखडा ॥
दियो पटकि पुहुमीपर कपिपति छिटके नग जनुतारा ।
उठ्यो कोपि लंकापति बोल्यो अब नहिं तोर उबारा ॥
ऋक्षराजसुत ह्वै कपिनायक मनुज चाकरी कीन्हीं ।
नीच तोहिं लागति न लाज कछु फेरि बुद्धि विधि दीन्हीं ॥

अस कहि गहि सुग्रीव चरण दोउ पटक्यो महि लंकेशा ।
कंदुक सरिस उछ्यो कपिनायक पहुँचि आसु तेहि देशा ॥

दोहा—पकरि दशानन हाथ कपि, दीन्ह्यो भूमि गिराय ।
मल्लयुद्ध लागे करन, वानर राक्षसराय ॥

छन्द हरिगीतिका ।

श्रमस्वेद गातन वदत बातन रुधिरमय सब देह ।
करि करि अनेकन पेच ठमकत लरत बिन संदेह ॥
दोउ लसत किंशुक शाल्मली फूले सुतरुन समान ।
कहुँ करत मुष्टिप्रहार तलहुप्रहार करत महान ॥
कहुँ करत चरणन घात कहुँ बचि जात देखत घात ।
कहुँ कूदिजात अकाश कहुँ महि परत जनु पविपात ॥
कहुँ देह दोउ नवाय पद अरुझाय शीश भिड़ाय ।
दोउ करि परस्पर जोर रेलत एक एक हटाय ॥
अति फबी फटिकन फरश परफर कियोफोरिपषान ।
उड़िजात कतहुँ अटानमें कहुँ लड़त उड़ि असमान ॥
दशकण्ठ और सुकण्ठ दोऊ लरत लरत तुरंत ।
दोउ दुर्ग परिषा में गिरे लागे लरनबलवंत ॥
द्वै दण्ड भरि श्रम भरि खड़े पुनि कोपि लपटे धाय ।
दोउ दुहुन देहँन अतिहि पीड़त दोर्दण्ड दबाय ॥
पुनि परे उड़ि फड़ पर तुरत लागे लरन करि कोप ।
दोउ करत अंगनको आलिंगन दरत रद जय चोप ॥
दोउ परम शिच्छित वक्र विच्छित विजय इच्छित वीर ।
शार्दूल सिंह समान सोहत विदित जग रण धीर ॥
मानहुँ युगल सिंधुर सुवन मदमत्त करतनि युद्ध ।
गजशुण्डसम भुजदण्ड गहि दोउ करत दुहुँ अवरुद्ध ॥

इक एक पुहुमि पछारि देत उछारि पुनि उठि धाय ।
रह सावधान बखान करि पुनि गँसत पेंच लगाय ॥
कहुँ चलत वक्र समान शक्र नवाय वक्र त्वराय ।
रेलत फिरत फिर चक्र समगति नक्रकी दरशाय ॥
कहुँ रहत मूठि उठाय घात लगाय अंग बचाय ।
पुनि जुरत जंग उमंग भरि रणरंग अंगन छाय ॥
दोउ श्रमत नहिं पद झमत नहिं उर कमत कोप न थोर ।
बहुविधि अखण्डल करत मण्डलतनु बराबर जोर ॥
कहुँ मंद मंदहि चलत गौं युत तड़ाकि मारत लात ।
सो जानि छल प्रथमहि हनत तल लात घात बचात ॥
दशकण्ठ जानत हनहुँ अब मैं बचत नाहिं सुकण्ठ ।
जानत सुकण्ठहु हनहुँ मैं दशकण्ठ कृपा विकुण्ठ ॥
दोउ लरत भट ललकारि हिय नहिं हारि ओज अपार ।
जिमि पदचरन नख चोथि अभिरत मांस हित मंजार ॥
जे मल्लयुद्धहि पेचबात्तिस गतहु प्रत्यगतादि ।
ते करत लंकानाथ वानरनाथ ह्वै न प्रमादि ॥
कहुँ लपट पुनि छूटत छटाकि कहुँ झटाकि पीठहि जात ।
कहुँ चटाकि पुनि अति रपटि दपटि सुछपटि पुनि छटकात
कहुँ देत झपकी झपकि झपकहु देत खाली दाउँ ।
कढ़िजात कहुँ द्रुत बगल ह्वै बलगात दक्षिण बाउँ ॥
बहु कियो कर छल बल दशानन चह्यो जीतन युद्ध ।
सुग्रीवसो पायो न घत बिल रह्यो ताको उद्ध ॥
दशमुख चह्यो तब करन माया जानि लिय कपिराय ।
उड़िगयो आसुहि गगन महँ नहिं परचो निकट लखाय ॥
यहि भाँति करि कपि मल्लयुद्ध विशुद्ध बल दरशाय ।

प्रगटाय राम प्रताप रावण अंग समर थकाय ॥
कीरति दशौ दिशि छाय रिपुसों जीति पाय उराय ।
सुग्रीव आयो जहँ खड़े लछिमनसहित रघुराय ॥

दोहा—अतिहि लजाय डराय उर, प्रभुपद शीश नवाय ।
कह्यो क्षमहु करुणायतन, खोरि मोरि रघुराय ॥
मिले सखाको ललकि प्रभु, कहे वचन गहि हाथ ।
अरिसमीप पूछे विना, कस गवने कपिनाथ ॥
गये अकेले शत्रुघर, जो कछु होतो तोहिं ।
तौ सियते अरु अवधते, रहत हेतु नहिं मोहिं ॥
कह कपि सन्मुख दर्प कर, दशमुख शत्रु हमार ।
यह मोंसे सहिजाय किमि, ह्वै कै सखा तुम्हार ॥

छन्द चौबोला ।

कह्यो लषणसों पुनि रघुनायक होत अमित उत्पाता ।
जानि परत राक्षस वानरको ह्वैहै समर निपाता ॥
बहत परुष मारुत कंपति महि निकसत नाद पहारन ।
जलधर करि कराल वपु वर्षत शोणित मांस अपारन ॥
अनल पुंज रवि मण्डलते बहु झरत होति दिगदाहा ।
शशिमण्डलमहँ मण्डल अरुण परत भयकर निशि माहा ॥
रविमण्डलमहँ श्याम छिद्र लखि परत प्रलय जनु होई ।
काकसेन अरु गीध गिरत अध सिवा करहिं भय रोई ॥
रुधिरामिषको करदम ह्वैहै कपि राक्षस संग्रामा ।
चलहु लंक कहँ व्यूह बाँधिकै अब विलंब किहि कामा ॥
अस कहि उतरे शैल सुवेलहि सैन्यसहित रघुराई ।
हनुमत अंगदादि वानर सब गये लंक नियराई ॥
जिनको जिनको चारिहु द्वारन प्रथम लगायो रामा ।

ते ते कपिवर तौन वाहिनी ले गवने तिन ठामा ॥
घेरि गई लंका चारिहु दिशि पवन कढ़न गति नाहीं ।
कोटिन कोटि ऋक्ष अरु वानर बढ़त क्रमहिंक्रम जाहीं ॥
यहि विधि लंकाके मुर्चा करि मंत्रिन राम बुलाई ।
कियो मन्त्र अंगद पठवनको साम करन रघुराई ॥
वालिकुमारहि बोलि कह्यो प्रभु लंक जाहु रणधीरा ।
कहँलगि कहौं बुझाय चतुर तुम जानत निज पर पीरा ॥
सब विधि कह्यो बुझाय दशानन उचित जौन तुहिं दीसै ।
अंगद चल्यो निशंक लंक कहँ नाय रामपद शीसै ॥
कूदि गयो कपि एक फलंका लंकाको दरवाजा ।
लखी निशाचर सभा प्रभाभर राजत रावण राजा ॥
बैठ्यो तमकि मध्य कपि कुंजर मार्तंड इव भासा ।
कह दशशीश कौनतें बंदर आयो किमि मम पासा ॥
अंगद कह्यो चह्यों तेरो हित मैं आयों इत धाई ।
नायक अखिल ब्रह्म अंडनके परब्रह्म रघुराई ॥
तिनको करि अपराध महा शठ हठवश चह कुशलाई ।
तेई प्रभु तारनको तेरे चढ़ि आये रघुराई ॥
जो नहिं शरण होत तैं दशमुख तौ जानहि यहिकाला ।
निशिचर हीन होति वसुधा हठि कोउ नहिं रक्षनवाला ॥
लंकराज दीन्ह्यों रघुनायक बोलि विभीषण काहीं ।
रामशरण विन तोहिं दशानन कतहुँ ठिकाना नाहीं ॥
मेरे पितुकी रही मिताई तोसे श्रवण सुनी मैं ।
आयो तोको वेगि बचावन तुव हित हेत गुनी मैं ॥
चतुरानन पंचानन अब जो चहैं दशानन राषी ।
तौ अति कठिन बचनयहि अवसर खड़े रामरण माषी ॥

रावण राम कोप पावकमहँ होमहु वृथा शरीरा।
वासवसरिसविभूतिनशातिलखि मोहिं उपजत अतिपीरा॥
मुनि पुलस्त्यके नाती पुनि विश्रवापुत्र विख्याता।
करब अधर्म न उचित रह्यो तुहिं धर्म होत निज त्राता॥
ठकुर स्वहासित वदत सचिव तुव भये मीच वश सिगरे।
पाछे कोउ न बनाय सकत शठ निज ठाकुरके विगरे॥
विधि वरदान विवश दर्पित ह्वै किय सुर मुनि अपकारा।
लहन चहत फल तासु आशुहीं करिले मनहिंविचारा॥
रामप्रताप दाप तोरे पर विप्र शाप भय घोरा।
मंगल ह्वै है रामशरणमें यह मत मानहु मोरा॥

दोहा—वालिसुवनके वचन सुनि, कह दशवदन रिसाय।
को तैं को तेरो पिता, राम लषण को आय॥

कानन सुन्यों यक कीश। रह वालि वानर ईश॥
जो वालिसुत तैं होइ। तौ दई कुलकी खोइ॥
कहु कहु कुशल कहँवालि। सो रह्यो अति बलशालि॥
तब कह्यो वालिकुमार। जिन करहु मनहिं खभार॥
दिन दशक बीते जाय। पूँछेहु सकल कुशलाय॥
जस कुशल राम विरोध। सोइ करी सकल प्रबोध॥
मुहिं कहत तैं कुलबोर। तैं भुवन जाहिर चोर॥
सुनि वालिसुतके बैन। खल भन्यो शोणित नैन॥
गुणि दूत देत बचाय। नहिं बसत यमपुर जाय॥
कह वालिसुत तव बैन। तैं सत्य धर्महि ऐन॥
परनारि चोरी कीन। सुर मुनिन अति सुख दीन॥
तापर न जानहु राम। यह और अद्भुत काम॥

लीजै भगिनिसों पूँछि । जो कान नासा छूँछि ॥
सो कही जो रघुनाथ । गुणि लिहे तब दशमाथ ॥
तब कह्यो विंशतिबाहु । मुहिं जानु निशिचर नाहु ॥
इन भुजनपर कैलास । बहु दिवस कीन्हें बास ॥
अस सुन्यो कानन कीश । मुहिं कह्यो खबरि न बीश ॥
नृपसुवन तापस आय । वानर अनेक बुलाय ॥
रण करन चाहत मंद । करिकै अमित छलछंद ॥
आवति हँसी सुनि कान । अब काल आय निरान ॥
कहु कौन है रणधीर । जो लरी मोसन वीर ॥
नर कीश राक्षस भक्ष । यह जगत है परतक्ष ॥
दोउ बापुरो नृपनंद । बलहीन विगत अनंद ॥
दोउ मनुज शत्रु तुम्हार । किय तुव पितहि संहार ॥

दोहा—तापस जिहि कपिपति कियो, सो वानर भय भीर ।
मेरो अनुज समान तिहि, और कौन रणधीर ॥

छन्द तोटक

यक वानर है कछु वीर बड़ो । पुर जारि अराम उजारि अड़ो ॥
सुनि वालिकुमार कह्यो हँसिकै । कहु काह कियो पुरमें धासिकै ॥
सिय खोजनहेत इहाँ पठयो । पुर जारि उजारि अराम गयो ॥
अब जानेहुँ ताकर कर्म सबै । यहिते न गयो प्रभुपास अबै ॥
भल खोजेहु ताहि मिल्यो न कहीं । नहिं रावण धावन वीर सहीं ॥
अब तोहिं बुझाय कह्यो सतिकै । शठता तजि दे मनते अतिकै ॥
कुलनाश तुम्हार इतै जस है । तस तोहिं वधे न उन्हें जस है ॥
मृगनाथहि मेढुक हारतमें । श्रमका अस कर्म प्रचारत में ॥
दशकंठ ठठाय हँसो । यह वानरमें गुण खूब लसो ॥
तनुपालत जो वरणै तिहि को । मुख भाषत है सिखयो वहिको ॥

निज ठाकुरको उपकार करै। नचिकै नकलै करि चित्त भरै।
तुहिं जानि छली कटु बैन सहे। नहिं मारनको तुहिंको उमहे॥
समरत्थ क्षमा कर होत सबै। दिय दूत विचारि बचाय अबै।
हँसि अंगद बैन कह्यो तबहीं। तुम सत्य क्षमाकर जाहिरही॥
भगिनी अपराध समोखि लियो। खरदूषण घात बिसारि दियो।
पुर जारि उजारि गयो कपिहूं। दशकंधर माफ कियो तबहूं॥
करि सागर सेतु तरे हमहूं। लिय लंकहि घेरि लखौ तुमहूं।
अब लेत घड़ाय पुरी सिगरी। क्षमिहौ तबहूं जु कछू बिगरी॥
दशभाल भन्यो तिहि काल सुनो। जग जाहिर विक्रम मोर गुनो।
जग रावण हैं दश बीस नहीं। भुजको बल जानत देव सहीं॥
तब अंगदहूं हँसि वाणि कह्यो। कहु लंकहि रावण कौन रह्यो।
हिरण्याक्षहि कुंडल एक लयो। बलि जीतन सोय पताल गयो॥
यक हैहयराजहि जीति लियो। हमरे पितुपै यक रोष कियो।
यक श्वेतहि द्वीप गयो चढ़िकै। सत्कार कियो रमणी बढ़िकै॥

दोहा—बोल्यो दशकंधर तमकि, सो रावण तैं जान।
विरचि कुसुम निज शीशके, पूज्यो देव इशान॥

छन्द हरिगीतिका।

उर कठिन जस दिग्गज गुणत बल बाहुको सुर सर्व।
करि तप लह्यो सबसों अभय गावत गुणनि गंधर्व॥
मुख कहत लगति न लाज लघु नर सुयश करसि बखान।
तब कह्यो अंगद मंदमति अबलों न जान अजान॥
कीन्ह्यो अमानुष कर्म सागर सेतु रचि भगवान।
भुवभार हारनहेत लै अवतार कीन पयान॥
जो कियो क्षत्र निक्षत्र यकइस बार भृगुकुल भानु।
रघुकुल कमल बल विपुल देखत गयो गोइ गुमानु॥

बूझेहु न बूझत तै अबूझ न सूझ निज कल्यान।
मारीच खरदूषण त्रिशिर तरु ताल सिंधु महान॥
वासवकुमार विराध वाली त्यौं कबंध अमान।
जानत सकल ये रामबाणप्रभावतें नहिं जान॥
सो जानि लैहै लंकपति हठि होत कालिह विहान।
तुहिं कहे अब फल कौन सूखे काठ कस रस पान॥
तब कह्यो दशकंधर विहँसि भल कही महिमा राम।
जलमाहँ भरि पाषाण तरु उतरे कियो का काम॥
दीन्ह्यो विरंचि विचारि वर नर वानरै बिसराय।
भोजन हमारे जानि जिय कछु जठर पन दरशाय॥
लै कपिनदल रचि सेतु सागर करनहित संग्राम।
आये इतै अब कौन पंचाइत करनको काम॥
उठि जाय वालिकुमार कहिदे होतही भिनुसार।
देखहुँ सपूती तापसनकी कौन कस बलवार॥
तब उठ्यो अंगद तमकि बोल्यो बैन परम कराल।
रावण बचावन तोहिं पठयो मोहिं दीनदयाल॥
उपकारमहँ अपकार मानत बीस लोचन अंधु।
रिस लगति अस मुख टोरि गवनहुँ जहाँ करुणासिंधु॥
पै तोहिं मारे है न यशवश काल बात बतात।
मम नाथ द्रोही महा कोही गनत नहिं निज घात॥
तब कोपि दशकंधर कह्यो अब सुनत हौ भट काह।
पटकौ पुहुमि मर्कट चटक अब होति अति उरदाह॥
शासन सुनत दशवदनको धाये निशाचर वीर।
गहि लियो अंगदको कुपित डोल्यो न कपि रणधीर॥
जब गसि गये कसि भुजनमहँ तब तुरत तमकि तरक्कि।

अंगद गयो मंदिर उपर भट गिरे सकल खरकि ॥
टूटे भुजा फूटे वदन मरिगे निशाचर चारि ।
अंगद उड्यो तहँते कहत जय लषण राम खरारि ॥
आयो अकाश अकाश वानर वली वालिकुमार ।
प्रभुचरण परशि प्रणाम करि अस कियो वचन उचार ॥
दशशीश है प्रभु कालवश मान्यो न मेरे वैन ॥
समुझाय भाँति अनेक भाष्यो तजत हठ शठ हैन ॥
अब उचित कोशलनाथ अस दीजै तुरंत रजाय ।
लंका महल्लामें हुलसि हल्ला करैं कपिधाय ॥
सुनि प्रभु हरषि निवसे निशा तिहि सावधान सचैन ।
चारिहु दुवारन प्रथम भाषित पठै वानरसैन ॥
हल्ला परयो कपि सैनमहँ तहँ होतही भिनुसार ।
धाये अनेकन कोटि मर्कट विकट चारिहु द्वार ॥
तरुपर परत जिमि शलभ वृन्दन वृन्द पत्रन छाय ॥
पूरित भई तिमि वानरन लंकापुरी न लखाय ॥
दोहा—यूथप यूथप सकल कपि, धाये करि किलकारि ।
मानहु एकहि क्षणहिं महँ, लंका लेत उखारि ॥

छन्द ।

धाये सुमर्कट वीर । चहुँ ओरते रणधीर ॥
मुख सकल करत पुकार । जय राम लषण उदार ॥
जय कीशपति सुग्रीम । अस कहत धाय न धीम ॥
परिषा विपाटन लाग । भरि तरु पषाण अदाग ॥
चढ़ि गये कोट कँगूर । लपटे दिवालन पूर ॥
वहु घुसे नगर मझार । तहँ परयो हाहाकार ॥
सुनिदशवदन अतिकोपि । गृह चढ़यो चितवन चोपि ॥

चितया चक्यो चहुँओर । बाकी न कौनौ ठौर ॥
वसुधा भई कपि रूप । शंकित निशाचर भूप ॥
श्रवणन सुनत यह शोर । जय राम राजकिशोर ॥
जय लषण अतिबलसींव । जय कीशपति सुग्रीव ॥
अस कहत गर्जत कीश । यह सुनि कुपित दशशीश ॥
आशुहि सभामहँ आय । दिय भटन हुकुम सुनाय ॥
धावहु धरहु सब जाय । लीजो कपिन कहँ खाय ॥
रावण वचन सुनि कान । बाजे अनेक निसान ॥
चढ़िकै तुरंग मतंग । कोउ चढ़े विशद सतंग ॥
राक्षस हजारन लाख । कपि जितनकी अभिलाख ॥
निकसे सु चारिहु द्वार । गहि अस्त्र शस्त्र अपार ॥
कपि रजनिचरन महान । माच्यो तहाँ घमसान ॥
जय जयति लंकानाथ । राक्षस कहहिं यकसाथ ॥
इत जयति रघुकुल चंद । बहु वदत वानर वृन्द ॥
निशिचरहु मर्कट कोटि । गे लपटि बाहुनि जोटि ॥
बरछी कटार कृपाण । कुंतल चले न प्रमाण ॥
इत कीश तरु पाषाण । हनि करहिं रिपु बिन प्राण ॥

दोहा—धूरि भूरि नभ पूरिलिय, भे अलोप दिनराय ।
मारु मारु धरु धरु गिरा, रही महीमहँ छाय ॥

छन्द ।

शोणित नदीन प्रवाह । थल थल अपार अथाह ॥
पुनि मांस कर्दम भूरि । तिहि महँ पटानी धूरि ॥
तिहि समय निशिचर वीर । धाये महा रणधीर ॥
कपि कदन कीन्हें आय । इतते बली कपि धाय ॥
दीन्हें खलन कहँ रोंकि । भुजदंड चंडन ठोंकि ॥

घननाद अंगद वीर । भिरिगे समर अति धीर ॥
संपाति और प्रजंघ । भिरिगे उभय जनु सिंघ ॥
पुनि जंबुमालि प्रवीन । हनुमानसों रण कीन ॥
शत्रुघ्न निशिचर आय । लीन्ह्यों विभीषण धाय ॥
गज कीश तपनहिं लीन । नीलहि निकुंभ वलीन ॥
पुनि प्रघस्त निशिचर काहिं । सुग्रीव लिय रण माहिं ॥
विरूपाक्ष लछिमन वीर । दोउ समर किय रणधीर ॥
दुर्धर्ष रशमीकेतु । मित्रघ्न पावक केतु ॥
अरु यज्ञ कोपहु पाँच । रघुवीरसों रण राँच ॥
तिमि वज्रमुष्टि उदार । लिय मयंद समर मँझार ॥
निशिचर असनि प्रभु आय । रोक्यो दुविद कहँ धाय ॥
प्रतपन महाभट घोर । नलसों लर्‌यो वरजोर ॥
तहँ वीर विद्युतमालि । आभिर्‌यो सुषेण उतालि ॥
यहि भाँति तजि छलछन्द । युध होन लाग्यो द्वंद ॥
मार्‌यो गदा घननाद । अंगदहि करत प्रवाद ॥
सोइ गदा रोंकि तुरंत । हनि वालिसुत वलवंत ॥
रथ सारथी अरु बाजि । करि नाश दियो पराजि ॥
शर त्रय प्रजंघ पँवारि । संपाति लीन हँकारि ॥
संपाति वृक्ष चलाय । बिन प्राण कीन बजाय ॥

–तहाँ जंबुमाली सुभट, हन्यो हृदयमहँ शूल ।
दौरि पवनसुत तल हन्यो, गिर्‌यो भूमि तरु तूल ॥
प्रतपन राक्षसको तराकि, नल मार्‌यो शिर मूठि ।
निकसि परे दोऊ नयन, भई वीरता झूठि ॥
भट प्रचंड शर दलित हिय, कीशनाथ तरु मारि ।
सरथ प्रजंघहिको दियो, मारि महीमहँ डारि ॥

विरूपाक्षको तहँ लषण, एकहि वाण चलाय ॥
शीश काटि लीन्ह्यो तुरत, सारथि चल्यो पराय ।
चारि वाणते राम तहँ, मार्‍यो निशिचर चारि ।
भाजि गयो तहँ पाँचयों, धनुष भूमिमहँ डारि ॥
वज्रमुष्टिको मयँद कपि, मार्‍यो मूठी दौरि ।
तोर्‍यो रथ वाजी हन्यो, वाहनमें रज खौरि ॥
हन्यो निकुम्भ अनेक शर, नील सैनपति काहि ।
नील दौरि रथचक्रको, लियो उखारि तहाँहि ॥
सोइ चक्रते सारथी, शीश काटि मधि जंग ।
गर्ज्यो कपि तव भगतमें, लिहे निकुम्भ तुरंग ॥
द्विविद अशनिप्रभुको हन्यो, अशनि सरिस तरुसाल ।
सरथ सवाजी सारथी, भयो विवशसों काल ॥
विद्युतमाली रजनिचर, हन्यो सुषेणहिं बान ।
मारि सुषेणहुँ शृङ्ग इक, तोर्‍यो ताकर यान ॥
दौरि सुषेणहिं शीशपर, हन्यो गदा बलवान ।
तिहि सुषेण मारी शिला, भो निशिचर विनप्रान ॥
भयो युद्ध यहि भाँति तहँ, राक्षस वानरकेर ।
बहुरि बहुरि पुनि लरत भे, करि करि कोप घनेर ॥

छन्द भुजंगप्रयात ।

चढ़े राक्षसामत्त मातंग केते । चढ़े हैं तुरंगानि केते सचेते ॥
किते स्यन्दनैमें सवारे चलेहैं । महायुद्धके वे उछाही भले हैं ॥
इतै कीश धाये किये घोर शोरा । शिलावृक्षसों मारिकै शीशफोरा ॥
उभय सैन्यको सो भयो युद्ध भारी । न कीशौ टरैं ना टरैं रात्रिचारी ॥
उड़ी धूरि गै पूरि त्यों आसमानै । न देखो परै नयन आगे महानै ॥
तहाँ राम सौमित्र कोपेअपारा । तजे चापते दापकै बाण धारा ॥

बाण मानो महा वज्रपाता। तुरंगौ मतंगौ शतांगौ निपाता॥
रहे वाजि बाजे अनेकै जुझाऊ। प्रवीरानिके युद्ध वाढ़्यो उराऊ॥
नदी रक्तधारानिकी वाढ़ि धाई। मिली सिंधुको लाल रंगै बनाई॥
नचैं योगिनी की जमातैं अनन्ता। उठै हैं कबंधौ महा वोजवन्ता॥
हनौरे हनौरे कहाँ जात भागे। मरच्चोरे मरच्चोरे अवै शस्त्र लागे॥
कहाँ जात आवै रहै सावधानै। गिरच्चों मैं हन्यों ना हनोजातप्रानै॥
यही शोर छायो सबै ठौर माहीं। महा कीश रोषे मुरैं नेकु नाहीं॥
भये अस्त ताही समयमें तमारी। लरैं लागि लंकानिवासी सुखारी॥
लसैं शर्वरी वीरकी प्राणहारी। झिलेकीश देदे उभयहाथतारी॥
महायुद्धमें भो महा अंधकारा। न सूझै कछू हाथहूके पसारा॥
लरैं वानरै वानरै युद्ध आसी। लरैं राक्षसौ राक्षसौ ना निरासी॥
महा संकुलै संगरै रैन ठायो। लखैं आपनो ना लखैं नापरायो॥
महा योगिनी प्रेतनी बोलि वानी। किये रक्तपानै अतीवै अघानी॥
भयो भूमि रक्तामिषै पंक भारी। परे घायलै घूमि केते सुरारी॥
गये लागि लोथीन केते पहारा। तरैं भीरु नाहीं नदी रक्त धारा॥
तहाँ रात्रिचारी चले यूथ बाँधे। कहाँ राम ठाढ़े कहैं चाप काँधे॥
लखे राम आई चमू शत्रु आगे। सुआसी विषै से तजै बाण लागे॥
परैं भर भरैं बाणके वृन्द जाई। मघा मेघ मानो झरीसी लगाई॥

दोहा—यज्ञशत्रु दुर्धर्ष अरु, महापार्श्व रणधीर।
मिल्यो महोदर आय तिमि, वज्रदंत बल वीर॥

चौपाई।

ते दोऊ राक्षस शुकसारन। लगे रामपर बाणन झारन॥
निमिषमाहँ तिनकोरघुनन्दन। कियेव्यथित हनि बाणनवृन्दन॥
आये राक्षस और अनेकन। जिमि पतंग पावक कहँ पेखन॥
कनकबाण तजि तजि रघुनायक। कीन्हें सबन स्वर्गके लायक॥

हनुमत अंगद हने निशाचर। आयो मेघनाद योधावर ॥
बालिसुवन तिहि दौरि शैल हनि। कियो विरथ निजनामवदनभनि॥
राम लषण अंगदहि सराहत। भुज पूजत मर्कट अतिचाहत ॥
लियो जीति अंगद सुत रावन। भयो निशाचर सैन्य परावन ॥
कोपि इन्द्रजित गयो गगनमहँ। अंतर्धान कियो निजतनु कहँ॥
हनै लाग शठ बाण हजारन। भये सर्प करि चले फुकारन ॥
लपटे राम लषणके गातन। नागपाश प्रभु बँधे सकल तन ॥
यहलीला दासनसुखनाशनि। भई कीश मति युद्ध निराशनि ॥

दोहा—हनुमत अंगद आदि भट, प्रभु कहँ लीन्हें घेरि ।
आयो तहाँ विभीषणहुँ, विकल भयो प्रभु हेरि ॥

छन्द ।

लंकेश सुरति सँभारिकै। बोल्यो सुवैन विचारिकै ॥
यह काल है न विषाद को। पैहौ अवशि अहलादको ॥
घननाद उत घर जायकै। बोल्यो वचन जय पायकै ॥
हम युगल बंधुन मारिकै। आये समर महि डारिकै ॥
दशकंठ सुनि सुत बैनको। पायो अमित उर चैनको ॥
डौंडी पिटायो लंकमें। सुत हन्यो रिपु निश्शंकमें॥
गमन्यो रही जहँ जानकी। बोल्यो गिरा अभिमानकी ॥
घननाद करि संग्रामको। मार्‌यो लषण अरु रामको ॥
पुष्पक विमान चढ़ायकै। ल्यावहु सियहि दरशायकै ॥
अस कहि गयो रावण घरै। सिय विकल भै दुख निरभरै ॥
त्रिजटा विभीषण कन्यका। सिय दासिका जग धन्यका ॥
पुष्पकविमान मँगायकै। लै चली सियहि चढ़ायकै ॥
सियलख्यो लछिमन रामको। पायो महा दुख धामको ॥
त्रिजटा लगी समुझावने। लीला कियो जग पावने ॥

तैं शोच मति करु जानकी। इनकी न हुनि विन प्रानकी ॥
तुहि शपथ मेरे प्रानकी। लीला गुणं भगवानकी ॥
अस कहि बुझायो सीयको। राखो यतन करि जीयको ॥
पुष्पकविमानहि फेरिकै। सिय लै चली दल हेरिकै ॥
राख्यो सियहि मनमंदिरे। कहि जियन है पति सुंदरे ॥
इत समर लीला देखिकै। देवर्षि कारज लेखिकै ॥
गरुड़हि पठायो आशुही। अहिकी छुड़ावन पाशुही ॥
खगराज पंख पसारिकै। आयो अतुरता धारिकै ॥
देखत गरुड अहि भगत भे। दोउ जगतपति द्रुत जगत भे ॥
कपि कियो जय जयकारको। लखि निरुज राजकुमारको ॥

सोरठा—कीन्ह्यो गरुड प्रणाम, दै परदक्षिण परशि पद।
गये आपने धाम, कपिदल जय जयकार भो ॥

छन्द।

राक्षसहु जाय रावणहि द्वार। बहु बार बार कीन्हें पुकार ॥
आयो उदंड कोउ इक विहंग। जिहि निरखि भभरि भागे भुजंग ॥
दोउ निरुज प्रबल दशरथ कुमार। ठाढ़े प्रवीर युधको तयार ॥
अब होन चहत हल्ला तुरंत। भेजहु प्रवीर बलवंत कंत ॥
तब कह्यो कोपि दशवदन वाणि। धूम्राक्ष वीर ले धनुष पाणि ॥
करु कीश सैन्यको अंत आसु। धूम्राक्ष सुनत पायो हुलासु ॥
दल लियो दीह दौरयो तुरंत। मर्कटन मारि बाणन अनंत ॥
दीन्ह्यों पछेलि करि सिंहनाद। भट देनलगे तिहि विजय वाद ॥
दल विकल देखि मारुतकुमार। धायो प्रचंड कर लै पहार ॥
धूम्राक्ष हन्यो तिहि गदा धाय। सो लगी शीश जनु फूल आय ॥
धूम्राक्ष हन्यो गिरि हनूमान। सो गिरयो भूमि ह्वै विगत प्रान ॥
राक्षस पराय पुनि लंक जाय। धूम्राक्ष मरयो दीन्ह्यो सुनाय ॥

दशकंठ कोपि तब हुकुम दीन । हे वज्रदंत तुम भट प्रवीन ॥
द्रुत हनौ जाय कपि सैन्य सर्व । लै वीर संगमहँ अर्व खर्व ॥
सुनि वज्रदंत रावण निदेश । आयो तुरंत जहँ समर देश ॥
मारयो कपीन सायक अथोर । दोउ दलन भयो घमसान घोर ॥
कपि सैन्य डगत अंगद प्रवीर । अति वेग चल्यो जनु राम तीर ॥
लखि वज्रदंत वालीकुमार । मारयो रिसाय सायक हजार ॥
लै पाणि महा पर्वत प्रचंड । तहँ वालिसुवन विक्रम उदंड ॥
मारयो पहार रथ भंजि तासु । बोल्यो सुबैन अब करहु नासु ॥
करवाल ढाल लै वज्रदंत । अंगदहि उपर आयो तुरंत ॥
अंगदहु लीन कहुकी कृपान । दोउ करत पैतरे लरि सुजान ॥
दोउ रुधिर अंग करते प्रयास । जनुलसतफुलेशाल्मलिपलास ॥
दोउ हने बरोबर दुहुन घाउ । दोउ गिरे बरोबर खाय ताउ ॥

दोहा—वज्रदंतके उठत में, अंगद उठि अतुराय ।
तासु आशु शिर काटिकै, बोल्यो जय रघुराय ॥

छन्द नाराच ।

निहारि वज्रदंत अंत यातुधान भागिकै ।
कियो पुकार रावणै दुवारदेश लागि कै ॥
दियो निपात वज्रदंत वालिको कुमार है ।
चढ़ै चहैं कपीश आशु लंककी प्रकार है ॥
दशाननौ प्रकोपिकै अकंपनै बुलायकै ।
कह्यो करौ निपात कीश शुद्ध युद्ध ठायकै ॥
दशाननै निदेशको सुने अकंपनौ बली ।
चल्यो प्रकोपि युद्धको लिये सुसैन्यहू भली ॥
इतै बली कपीश देखि आवतै अकंपनै ।
चले उछाह युद्धके न देह नेकु कंपनै ॥

लग्यो सुहोन उद्ध युद्ध कीश राक्षसानको ।
हनै पषाण कीश यातुधान त्यों कृपानको ॥
अभय अकंपनो तहाँ धस्यो सुकीश सैन्यमें ।
अनेक बाण मारिकै दियो चमू अचैनमें ॥
चली पराय वाहिनी बली बली मुखानकी ।
परी हरीन कान हाँक पवनपूत सानकी ॥
सुकेसरी कुमार धाय आयगो तुरंतही ।
अकंपनै निहारि क्रोधवंत भो अनंतही ॥
हनै अनेक पाद पान काटतो अकंपनै ।
विरुद्ध क्रुध युद्धमें सुमारुती छनैछनै ॥
उखारि एक वृक्ष दौरि केसरी किशोरहै ।
दियो अकंपनै शिरै चल्यो न तासु जोरहै ॥
गिर्‍यो मही मर्‍यो शरीर चूर चूर ह्वै गयो ।
अनेक यातुधान रावणै पुकारको दयो ॥
निशाचरे सुयुद्धमें अकंपनो हतो गयो ।
करौ विचार औरहू महा उपद्रवै ठयो ॥
सुने निशाचरान बैन लंकनाथ शंककै ।
कह्यो प्रहस्त बोलिकै करो सुरक्ष लंककै ॥
तुम्हैं विना दिखात ना करै कपीश नाश जो ।
चमूपते विचारु मोहिं देइ को हुलास जो ॥
कह्यो प्रहस्त हस्त जोरि हौं प्रशस्त भाषहूं ।
न युद्धके उमंगहीन कातरी न राखहूं ॥
अबै नशान नेकु ना निशाचरेश बूझिये ।
बहोरि देहु जानकी न रामसों अरूझिये ॥
न जंगमें जुरे जनाति जीति यातुधानकी ।

चहौ जो लंक राज्य लंकराज देहु जानकी ॥
प्रहस्त बैन कानमें परे सुतप्त तेलसे।
कह्यो अमर्षि बीश अक्ष कागदो गदेलसे ॥
अनेक भाँति भोग भोगि खाय खूब मोरई।
प्रहस्त कामके दिना डिराय जीव चोरई ॥
त्रिशुद्ध होहु युद्धको विरुद्ध बात ना कहौ।
न बाचिहौ परै घुसे लिड़ार होन ना चहौ ॥
प्रहस्त शीशनाइकै चल्यो तमंकि युद्धको।
चली प्रचंड वाहिनी कपीनके निरुद्धको ॥
चले षटै अमात्य तासु वाहिनी बनावते।
कढ़े जु लंकद्वारते लखे हरीन धावते ॥
भिरे प्रचंड यातुधान सिंहनादकै तहाँ।
उछाहसों अनेक कीश कंदनै कियो महाँ ॥

दोहा—तहँ प्रहस्त मंत्री सबै, झिले समर शर झारि।
हन्यो नरांतक को दुविद, शैल शृङ्ग यक मारि ॥

छन्द चौबोला।

हन्योदुविद कहँ पुनि दुर्मुखभट अतिकराल इकशूला।
दुविद हन्यो ताके शिर तरुवर गिरचो तूलके तूला ॥
जांबवान पुनि हनि पषाण इक महानाद कहँ मारचो।
हन्यो कुंभहनुको अंगद तहँ वृक्ष शीशपर झारचो ॥
लखि मंत्रिन विनाश सैनापति धस्यो कीश दल माहीं।
डारचो मर्दि मर्कटन कोटिन जिमि मृगपति मृग काहीं॥
देखि कदन बंदरन विलोचन नील सैनपति धायो।
महा एक वटवृक्ष उखारि प्रहस्तहि ताकि चलायो ॥
सो तरु तिल तिल करि प्रहस्तभट नीलहि बाणनछायो।

तब मर्कट दल नायक कोपित शिला धारि कर धायो ॥
मारयो शिला प्रहस्त शीशमें मरो तुरन्त प्रर्वाग ।
हत दलनायक निशिचर भागे लहि कीशनते पागा ॥
जाय पुकारे रावण द्वारे सैनानायक जूझा ।
दिन दिन विजय लहत वानर रण अबहुँ न बूझ अबूझा ॥
दशकंधर सुनि दशन अधर रद बोल्यो बैन रिसाई ।
रोकहु वीर द्वार लंकाके सकैं न वानर आई ॥
हमहिं जाब सजि समर हेत अब देखब कपि मनुसाई ।
कहँ सुग्रीव कहाँ भ्राता मम कहाँ लषण रघुराई ॥
डंका दियो दिवाय दशानन लंकामहँ चहुँ ओरा ।
निशिचरराज आज रण गवनत सजे वीर सुनि शोरा ॥
राक्षसनाह सनाह पहिरि तनु चल्यो बजाय नगारा ।
महावीर सब चले संगमहँ निकस्यो उत्तर द्वारा ॥
महा सैन्य आवत लखि रघुपति कह्यो विभीषण पाहीं ।
सखा कौन आवत निशिचर वर जानि परत कछु नाहीं ॥
कह्यो विभीषण सुनहु नाथ यह आवत रावण राजा ।
यह महेन्द्र बल दर्प विदारक जाहि डरत यमराजा ॥
इन्द्रजीत त्रिशिरा देवांतक नारांतक भट भारी ।
और महोदर महापार्श्व भट तिमि अतिकाय सुरारी ॥
कुंभ निकुंभ अकंपन दूजो सकल निशाचर वीरा ।
आवत सकल एक नहिं आवत कुंभकर्ण रणधीरा ॥
कह्यो राम तब बहुत दिवसमें यह खल दृगपथ आयो ।
यहि सम जग नहिं वीर महाबल रूप भानु सम भायो ॥
उत रावण बोल्यो वीरनसों ताकहु लंका जाई ।
मैं अकेल लरिहौं कपिदल सों मानहु मोरि दुहाई ॥

अस कहि सन्मुरकाय भटनको धँस्यो कीश दल एका ।
मारत बाण दशानन कोपित किय बिन प्राण अनेका ॥
विकल देखि दल कपिपति धायो हन्यो भूमिधर भारी ।
सो गिरि रावण रजसम कीन्ह्यों मार्‍यो बाण प्रचारी ॥
लगत बाण सुग्रीव गिर्‍यो महि माच्यो हाहाकारा ।
गय गवाक्ष नल ऋषभ जोतिमुख तिमि सुषेण बलवारा ॥
रावण पै डारे धरणीधर सो बचाय शर मारी ।
षट वीरन करि दीन्ह्यो मूर्च्छित बार बार ललकारी ॥
भगे कीश सब चले पुकारत रक्षहु रघुकुलनाथा ।
महाबली दल वलीमुखनको नाश करत दशमाथा ॥
आरत वचन सुनत करुणाकर मृगपति गति रघुराऊ ।
चले निशंक लंकपति सन्मुख लषण कह्यो भरि चाऊ ॥
मैं प्रभु चहौं लरन रावण सों जो निदेश अब पाऊ ।
कह्यो राम लरियो बचाय तनु छली निशाचरराऊ ॥

दोहा–तिहि अवसर दशमुख शरनि, जाल फारि हनुमान ।
भुज उठाय गहि रथ धुरा, कीन्ह्यो वचन बखान ॥
सुरासुरनते अभय कर, पायो विधि वरदान ।
नर वानरते रावरी, मीच नगीच निदान ॥

छंद चामर ।

निहारु मोर हस्त सर्प तोर दर्प दारनै ।
करै प्रवीरता प्रवीर नेकु ना बिसारनै ॥
सुन्यौ सुबैन अंजनीकुमार ओजवानके ।
निशाचरेश हूं भन्यो तुरन्त बैन मानके ॥
अरे विमूढ़ कीशतैं निशंकही चलायले ।
हमू हन्यों निशाचरेन्द्र नाम यों बजायले ॥

खिलाय तोहिं मारिहौं न बाचिहै परायकै ।
कह्यो कपीश मैं वही दही पुरी बजायकै ॥
अक्षयकुमारको हन्यो सुवाटिका उजारिकै ।
प्रकोपि लंकनाथ घात पुत्रको विचारिकै ॥
कियो तलै प्रहार कीश तू मरयो उचारिकै ।
लगे सुरारिको प्रहार बुद्धिको बिसारिकै ॥
गिरयो कपीश भूमिमें उठ्यो सुधीर धारिकै।
कियो तलै प्रहार देवशत्रुको प्रचारिकै ॥
गिरयो सुरेश शत्रु भूमि खायकै पछारको ।
उठ्यो सराहि बार बार केसरीकुमारको ॥
करैलगे प्रशंस देव केसरीकिशोरकी ।
कह्यो कपीश भै वृथा सुरीति मोर जोरकी ॥
उठो सजीव दुष्ट तैं वहोरि मोहिं मारिले ।
पठायहौं यमालये विशेषि तू विचारिले ॥
प्रकोपि लंकनाथहू हन्यो सुरामदासको ।
गिरयो बिसंग भूमिमेंतज्यो नहीं हवासको ॥
बिसंग केसरीकुमार देखि रावणो तदा ।
चल्यो प्रकोपि नील पै हन्यो पतत्रि त्यों गदा॥
अखंडबाण धार नील लंकनाथकी हनी ।
सहंत सन्मुखै चल्यो विहाय बानरी अनी॥
हन्यो निशाचरेशको पहार एक जायकै ।
कियो सुशैल सात टूक बाणको चलायकै ॥
उठ्यो इतै सुअञ्जनी किशोर देखि रावनै ।
निमग्न नील युद्धमें गुण्यो न योग धावनै ॥
प्रकोपि नील वृक्ष वृन्द मारि राक्षसाधिपै ।

अदृश्य कैदियो प्रकोपसों दशाननो तबै ॥
पवारि बाणजाल वृक्ष छिन्न भिन्न कैदियो ।
अखंड बाणधार झारि मूँदि नीलको लियो॥
कियो स्वरूप छोट नील हूं चढ्यो ध्वजाग्रमें ।
कहूं दिखात कीट पै कहूं शरासनाग्रमें ॥
निहारि नील लाघवी प्रसन्न रामचन्द्र भे ।
सुकंठ लक्ष्मणादि वीर पावते अनंदभे ॥
निशाचरेश पावकास्त्र चापमें सँधानकै ।
कह्यो बचाउ कीश तोहिं देत मैं अप्रानकै ॥
चलाय नीलको वसुंधरा गिराय देत भो ।
दह्यो न आनि ताहिजाहि पुत्र राखि लेतभो॥
निहारि नीलको बिसंग लंकराज त्यागिकै ।
हनैलग्यो अनेक बानरान कोप पागिकै ॥
चली पराय बानरानि बाहिनी दिशाननैं ।
निहारि कालसों कराल धावतो दशाननैं ॥
समर्थ कौन जाय जो निशाचरेश सन्मुखै ।
विचारि यों चल्यो निशंक लक्षणै भरो सुखै॥

दोहा—रामानुज कोदंड लै, बली बाँकुरो वीर ।
ललकारयो दशकंठको, गिरा मेघ गंभीर ॥

चौपाई ।

रेरावण कपि क्षुद्रन काहीं । मारे तुहिं जगमें यश नाहीं ॥
चलो आउ अब सन्मुख मेरे । दरशावे बल जो कछु तेरे ॥
अस कहि कियो धनुष टंकोरा । भरो भयंकर भू महँ शोरा ॥
सुनि टंकोर शोर अति घोरा । तिरछे चितै लषणकी ओरा ॥
सिंहनाद करि रावण धायो । निकट आय असवचन सुनायो॥

अरे बाल धरि दे धनु बाणा । भागु भागु रक्षै निज प्राणा ॥
नातो ह्वै है काल कलेवा । सकै न राखि असुर मुनि देवा ॥
रामानुज बोल्यो मुसक्याई । वदसि वचन बिनवलहिदिखाई ॥
खड़ो धनुष शर लै तुव आगे । कस न दिखावसि ओज अभागे ॥
यतनी सुनत लषणकी बातैं । हन्यो लंकपति सायक सातैं ॥
रज सम करि रावण के बाना । रामानुज नेसुक मुसक्याना ॥
कुपित दशानन बहु शर मारा । रामानुज छोड़ी शरधारा ॥

दोहा—विफल निरखि निज विशिख लै, सायक यक ह्वविवाट ।
तज्यो घोर शर जोर करि, लाग्यो लषण ललाट ॥

चौपाई ।

लग्यो विभाव सुसायक भाला । भयो समर कछु लषणविहाला ॥
उठ्यो सँभारि तुरंत अनंता । काट्यो धनुष लषण बलवंता ॥
रावण धनुष काटि रण धीरा । हन्यो ललाट माहँ त्रय तीरा ॥
तहँ दशभाल भाल लगि बाना । गिरयो विसंग तज्योतनु भाना ॥
चले भाल ते रुधिर पनारे । उठ्यो बहुरि सारथी हँकारे ॥
जीतत नहिं लछिमन ते देखी । ब्रह्मदंड ल शक्ति विशेखी ॥
उठतधूम निकसतमुख ज्वाला । तज्यो लषण पै शक्ति विशाला ॥
हने हजारन लछिमन बाना । रुकी न शक्ति प्रचंड प्रधाना ॥
लागी लछिमन के उर आई । मूर्च्छित भयो भरत लघु भाई ॥
मूर्च्छित देखि लषण तहँ रावन । दौरि बीसभुज लग्यो उठावन ॥
शैल हिमाचल मंदर मेरू । धरणी सातहु सागर फेरू ॥
सकै उठाय भुजन दशशीशा । तिलभरितज्यो न भूमिफणीशा ॥

दोहा—लषण विकल लखि समर महँ, धायो पवनकुमार ।
हन्यो जोर भरि मूठि तिहि, गिरिगो खाय पछार ॥

चौपाई ।

दृग श्रवणन ते शोणित धारा । निकसी रावण के बहु बारा ॥
झूमत झुकतभवँतपुनि भागत । विकलगिरचोरथपरनाहिंजागत॥
मुर्छित देखि दशानन यानै । लगे सराहन सुर हनुमानै ॥
लियो उठाय लषण हनुमाना । फूलहु ते लघु लग्यो महाना ॥
यह जानहु सब भक्ति प्रभाऊ।रिपु गिरिगुरुनिजजनहरुआऊ॥
पवनसुवन लै लछिमन काहीं। आयो रघुकुल भानु जहाँहीं ॥
प्रभुहि विलोकत शक्ति परानी। गई दशानन निकट महानी ॥
विकल देखि रघुपति लघु भाई । उर लगाय लिय आसु उठाई ॥
भयो विशल्य गई सब पीरा । उठ्यो कहत कहँदशमुख वीरा॥
निरुज निहारिलषण कहँ कीशा। बोले सब जय जयति अहीशा॥
देखि कुशल लछिमनको रामा । आपुहि करन चले संग्रामा ॥
गहि कोदंड प्रचंड अखंडा । दशरथ सुवन वीर बरिबंडा ॥

दोहा—दशमुख समर पयान लखि, बोल्यो पवनकुमार ।
नाथ हमारे कंध चढ़ि, जीतहु रिपु यहि बार ॥
पवनसुवनके वचन सुनि, प्रभु नेसुक मुसक्यान ।
चढ़े कपीशहि कंधपर, यथा गरुड भगवान ॥
सोह्यो हनुमत कंधपर, भानु वंश को भानु ।
मनहुँ कनकगिरि मिलि उये, भानु कृशानु समानु ॥

लै चल्यो मारुतनन्द श्रीरघुनन्द वेग अमंद ।
रघुवंश पंचानन दशानन देखि भे सानंद ॥
प्रभु किये परम कठोर तहँ शारंग को टंकोर ।
केते निशाचर कान फूटे भजि चले चहुँ ओर ॥
बोल्यो दशानन सों गिरा गंभीर श्रीरघुवीर ।

ठाढ़ो रहै ठाढ़ो रहै कहँ जानदै अब पीर ॥
दिनराज त्यों यमराज त्यों सुरराज अग्नि उदंड ।
तुहि राखि सकत न आजु शंभु स्वयंभु ओज अखंड ॥
दिशाननमें दशानन गोपि आनन भागि ।
न कौनौ भाँति खल मम शर शरीरहि लागि ॥
मम बंधु को तैं हने शक्ति विशेषि लेहौं वैर ।
तव पुत्र पौत्र सँहारि मैं दिखरायहौं रण सैर ॥
चौदह सहस निशिचर प्रखर खर त्रिशिर दूषण संग
माऱ्यो निमिषमहँ भगिनि सो पूछ्यो कि नहिं सो जंग ॥
प्रभु के वचन सुनि लजत कोपत लंकपति बहु तीर ।
माऱ्यो अनिलसुत को सुरति करि वैर पूरब वीर ॥
तिल तिल विधे तनु बाण पै हनुमान तेज प्रभाउ ।
क्षण क्षण बढ़त द्विगुणित समर लखि कुपित भे रघुराउ ॥
रघुवंश मणि मंडलाकारहि करि कोदंड प्रचंड ।
शर धार समर मँझार छोड्यो बार बार अखंड ॥
छाये विदिशि दिशि राम सायक गगन महिं चहुँ ओर ।
दशकंठ भान भुलान सरथ छपान बाणन झोर ॥
प्रभु प्रथम रथ काट्यो सचक्र तुरंग डारे मारि ।
काट्यो ध्वजा सारथि हन्यो तब उठ्यो कोपि सुरारि ॥
लीन्ह्यो अशनि सम शूल सोउ कर में भई बहु खंड ।
पुनि कियो कर करवाल सोउ दुइ टूट भयो उदंड ॥
रघुवीर लै यक तीर रावणके हन्यो उर माहिं ।
गिरिगो धनुष धरणी व्यथित तनु रही सुधि कछु नाहिं ॥
जो लोक रावण वीर रावण लागि वज्र कराल ।
कंप्यो न कछु सो राम शर लगि भयो भूरि विहाल ॥

पुनि विहँसि प्रभु यक अर्धचन्द्र चलाय सायक घोर ।
काट्यो सुक्रीट सुपंच खंडहु झरे करत अजोर ॥
अति दीन आयुध हीन तहँ दशशीश शीश उघारि ।
ठाढ़ो समर जनु विन प्रकाश प्रयात अस्त तमारि ॥
विषहीन आसी विष यथा जिमि अग्नि ज्वाल विहीन ।
मुसक्याय कोशलनाथ मारयो वचन बाण प्रवीन ॥
मारे अनेकन कीश कीन्ह्यो युद्ध परमकठोर ।
अब भये तैं रावण दया वन रह्यो नहिं भुज जोर ॥
अब जाहि लंका रहित शंका थाक नेकुनिवारि ।
चढ़ि रथ शरासन लै बहुरि अइयो समर पगु धारि ॥
तव लख्यो विक्रम तुम हमारो हनौं जो अब तोहिं ।
तौ थको रावण हन्यो रघुपति अस कही जग मोहिं ॥
सुनि राम बैन अचैन रावण भग्यो छूटे केश ।
अवधेश सायक भीति भरि लंका घुस्यो लंकेश ॥
जयकार कीन्ह्यो देव सब प्रभु आय अपने सैन ।
कीन्ह्यो विशल्य कपीन लछिमन सहित फेरत नैन ॥
सुग्रीव अंगद आदि कपि सब करहिं राम प्रणाम ।
प्रभु बाहु पूजहिं जयति कहि कहि भये पूरण काम ॥

दोहा—उत लंकामहँ लंकपति, सुमिरत रघुपति बान ।
भय भरि बोल्यो निशिचरन, अबदिखात नहिं त्रान ॥

छंद चौबोला ।

नल कूबरकी वेदवतीकी रंभाकी नंदीकी ।
तथा शाप अनरण्य भूपकी सत्य होति क्षति जीकी ॥
जाहु जगावहु कुंभकर्णको सो विशेषि जय पाई ।
निशिचर कुलकी वचन हेतु नहिं दीसत और उपाई ॥

कहुँ षट कहुँ सत कहुँ आठहुँ कहुँ नव कहुँ दश मासा ।
सोवत कुंभकर्ण भ्राता मम अब तिहि वल्लनय आसा ॥
करि सलाह सोयो नव दिन गत ताहि जगावहु जाई ।
चले जगावन कुंभकर्णको निशिचर अतिभय पाई ॥
लगे बजावन बाज अनेकन गये भवनके द्वार ।
कुँभकर्ण नासिका श्वास लगि उड़ि बाहिर सिधारे ॥
इक योजनको शयनअयनसो कुंभकर्ण जहँ सोवै ।
यक यक कर गहि जस तसके घुसि कहे सकल का होवै ॥
चंदन प्रथम लगाये तनुमें सींचे सुरभित नीरा ।
वीणा वेणु मृदंग शंखध्वनि कियो निशाचर भीरा ॥
दश हजार निशिचर योधावर लगे जगावन ताको ।
एक सहस दुंदुभी बजाये करि नादित लंकाको ॥
खैचहिं कर गहि चरण दबावैं झिझकारहिं सब अंगा ।
नहिं जागत उपाय कछु लागत कुंभकर्ण अड़वंगा ॥
मूशल मुद्गर परिघ गदा लै जोर जोर भरि मारैं ।
तऊ न जागत नींदविवश खल गिरि तरु तनुपर डारैं ॥
खर तुरंग मातंग ऊँटगण तिहि तनुपर दौरावैं ।
करहिं शोर करि जोर घोर अति उड़त विहँग गिरिजावैं ।
नहिं जाग्यो तब सहस मत्त गज तिहि तनुपर दौराये ।
तब जान्यो कोउ करत परश तनु तज्यो नींद सुख छाये ॥
कुंभकर्ण उठि बैठ सेजपर मुख बगारि जमुहाना ।
महिष वराह मेष अज सहसन भक्षण कीन्ह्यो नाना ॥
रुधिरकुंभ अरु सुराकुंभ बहु मेदकुंभ करि पाना ।
पूछ्यो रजनीचरन हेतु किहि कीन्हें जगन विधाना ॥
किहि कारण भूपति जगवायो है सब विधि कल्याना ।

तब यूपाक्ष जोरि कर बोल्यो कुम्भकर्ण नहिं जाना ॥
लै वानरी सैन्य चढ़ि आयो कौशलदेश भुवाला ।
भट प्रहस्त आदिक रण जूझे घेरे लंक विशाला ॥
सुनिकै हँस्यो ठठाय गुण्यो अस लियो विष्णु अवतारा।
भयो विनाश निशाचरकुलको कृत रावण अपकारा ॥
पुनि प्रभु कर निज वध विचारि मन कुंभकर्ण बलवाना।
करि मज्जन भूषण पट पहिरचो प्रभुपद दरश लुभाना ॥
द्वै हजार घट सुरापान करि भ्राता भवन सिधारा ।
बाहरते लखि क्षुद्र कीश बहु भागे सागर पारा ॥
पूछ्यो राम विभीषणको तब यातुधान यह को है ।
कह्यो विभीषण कुंभकर्ण यह मारग जात चलो है ॥
दंशकदर्प सुरासुर केरो कबहुँ न लह्यो पराजै ।
मानि रावरी भीति लंकपति जगवायो यहि आजै ॥
भक्षण करत देखि लोकनको हन्यो कुलिश सुरराई।
गड्यो न तनुमें उदकि गयो मुरि शक्र भग्यो भय पाई ॥
सावधान ह्वै समर किह्यो प्रभु कुंभकर्णसों आजू ।
प्रेमविवश मुहिं लगत भीति अति तुम समरथ रघुराजू।
देखतही वानर सब भागत जुरी कौन बलधामा ।
कह्यो राम जनि सखा भीति करु देख्यो मम संग्रामा॥

दोहा–कुंभकर्ण उत जायकै, रावणके दरबार ।
अग्रजको वंदन कियो, पूँछि कुशल व्यवहार ॥

छन्द चौबोला ।

तासों खबरि कही सब रावण कुंभकर्ण तब बोला ।
निशिचर कुल क्षय कियो दशानन भयो दर्पवश भोला ॥
यहिविधि बातैं कह्यो उचित बहु राजनीति अनुसारा।

कह्यो बहुरि अब जाहुँ समरको वंदन लेउ हमारा ॥
अस कहि कुंभकर्ण संगरको चल्यो युद्धमानि क्रुद्धा ।
एक फलंक लंक दरवाजा आयो नाँघि विरुद्धा ॥
मर्कटकटक देखि चटपट शठ अटपट मनहिं विचारी ।
झटपट लटपट करन कीशदल उद्भट चल्यो सुरारी ॥
भगे बलीमुख महाबली लखि फिरैं न फर पर फेरे ।
अंगद अरु हनुमन्त धाय द्रुत बार बार अस टेरे ॥
कुलकी प्रभुकी और धर्मकी सुरति छोड़ि कस भागे ।
उभय लोक अबहीं बनिजैहैं रामकाजमहँ लागे ॥
अंगदवचन सुनत मर्कटभट जीवनआश विहाई ।
धाये कोटि कोटि चहुँ दिशिते लै तरु गिरि समुदाई ॥
कुंभकर्ण तनु चढ़े चटक सब हनि हनि वृक्ष पहारा ।
कपिन वृंद धरि धरि निज मूठिन लाग्यो करन अहारा ॥
कुंभकर्ण रण दुराधर्ष भट शत शत कपि मुखमेलै ।
कान नाक ह्वै कढ़हिं कीश बहु भयो वानरन खेलै ॥
शाखामृगन महिमहँ पटकत मींजै चरण चलाई ।
मरद्यो हरिन हजारन हँसि हँसि धावत भूमि कँपाई ॥
धायो द्विविद महीधर लैकर कुंभकर्ण कहँ मारयो ।
नहिंपहुँच्यो ताकेशिरपर गिरिगिरि महिसैन सँहारयो ॥
तब सहसान पषाणन मारयो ता कहँ पवनकुमारा ।
महाशूलसों छेदि छेदि सब शैल व्यर्थ करि डारा ॥
कुंभकर्ण रणदुर्मद धायो लीन्हें शूल कराला ।
महा शैल इत लियो पवनसुत हन्यो दौरि विकराला ॥
मारुति मारयो महा महीधर लग्यो माथमहँ जाई ।
कुंभकर्ण कछु भयो व्यथिततहँ सँभारि कोप अतिछाई ॥

हन्यो त्रिशूल हनूमतके उर निकरि गई तनु फोरी ।
शोणित वमत भयो कपि विह्वल भई मूर्च्छा थोरी ॥
कुंभकर्णको काल विचारत भागे कीश अपारा ।
करत किलकिला शोर चहूँकित माच्यो हाहाकारा ॥
नील सैन्यपति कुंभकर्णको मारयो दौरि पहारा ।
वामपाणि मूठीसों गिरिवर रजसम सो करिडारा ॥
ऋषभ शरभ अरु नील गवाक्षहु गंधमादनहु पाँचौ ।
हन्यो कुंभकर्णै गिरि तरु तल जानि दुरासद साँचौ ॥
भये पुहुपसम ते प्रहार तनु कँप्यो न नेकु सुरारी ।
कोहु कहँ पदते कोहु कहँ तलते मारि भूमिमहँ डारी ।
भागत वानर भक्षत रणमहँ मूर्त्तिमान जनु काला ।
को समरथ सन्मुख गवनै तिहि मर्कट भये विहाला ॥
दाहत यथा विपिन दावानल कुंभकर्ण तिहि भाती ।
धावत धरणि कँपावत नावत मुखमहँ कपिन जमाती ॥
वालिकुमार पहार पाणि लै मारयो रावणभ्राते ।
अंग लागि फूट्यो पहारसो हँस्यो ठठाय अघाते ॥
हन्यो मुष्टि यक वामपाणिकी गिरयो मूर्छि युवराजू ।
कुंभकर्ण धायो त्रिशूल लै कहत कहाँ कपिराजू ॥
आवत कुंभकर्णको लखि तहँ रह्यो कीशपति ठाढ़ो ।
कह्यो वचन सुग्रीव भीमबल रण उमङ्ग भरि गाढ़ो ॥

दोहा–कुंभकर्ण लघु वानरन, मारे तुहिं यश नाहिं ।
मेरे सन्मुख आयकै, दरशावै बल काहिं ॥
कीशराजको जानिकै, कुंभकर्ण बलवान ।
लै त्रिशूल सन्मुख भयो, कीन्ह्यो वचन बखान॥
हौ नाती करतारके, ऋक्षरजाके नंद ॥

राम बाहुबल पायकै, गर्जहु गर्व बलंद ॥

छंद पद्धरी।

सुग्रीव रहौ अब सावधान। हौं कुंभकर्ण नहिं वीर आन ॥
अस सुनत कीशपति लै पहार। दशकंठ अनुजपै किय प्रहार ॥
गिरि कुँभकर्ण तनु लगि तुरंत। छहराय पर्‌यो ट्रूकै अनंत ॥
तब कुंभकर्ण महि रोंकि पाँउ। चाल्यो सुकंठपै शूल घाउ ॥
सो रह्यो शूल गुरु सहस भार। निर्माण भयो जनु कुलिशसार ॥
दमक्यो दिगंत दामिनि समान। घहरान घंट वानर परान ॥
लखि शूल गुन्यो मन हनूमान। राजा विशेषि बिन भयो प्रान ॥
धायो अमंद अंजनीनंद। अति करी लाघवी कपि सुछंद ॥
पायो न जान सुग्रीव पाहिं गहि लियो शूल बीचही माहिं ॥
दै जानु शूल टोर्‌यो प्रवीर। लखि लगी प्रशंसन देवभीर ॥
हनुमानसरिस नहिं कोउ दिखाय। कपिराज प्राण लीन्ह्यों बचाय ॥
कपि लगे पुजन हनुमंत बाहु। भो यातुधान दल दीह दाहु ॥
लखि कुंभकर्ण निज शूल भंग। लीन्ह्यों उखारि गिरि महा शृङ्ग ॥
धायो सुकंठके ओर घोर। मार्‌यो पहार करि बाहु जोर ॥
गिरि लगत गिर्‌यो सुग्रीव भूमि। भे शिथिल अंग नहिंउठ्योझूमि ॥
तहँ कुंभकर्ण धायो प्रचारि। लीन्ह्यों उठाय कपिपति सुरारि ॥
तिहि काँख दाबि लै चल्यो लंक। दशकंठ अनुज दुर्मदनिशंक ॥
अस कुंभकर्ण कीन्ह्यों विचार। दशकंठ जेठ भ्राता हमार ॥
तिहि गह्यो सुगल अग्रज बलीन। सोइ लेहुँ वर करि कपिन दीन ॥
कपिराज हते दल गयो मारि। लै चल्यो कपीशहि अस विचारि ॥
लै जात निरखि कपिराज काहिं। हनुमान गुण्यो अस चित्तमाहिं ॥
धरि प्रभुप्रताप शिरद्रुतहि धाय। लैहौं कपीशको मैं छड़ाय ॥

सुग्रीव हीन बल कहा लोक । यश हानि होइगी यही शोक ॥
सुग्रीव शीश रघुपति प्रताप । कबहूँ न पाइहै शत्रुताप ॥
दोहा—अस विचारि हनुमान तहँ, लग्यो समेटन सैन ।
कुंभकर्ण सुग्रीव लै, गयो लंक भरि चैन ॥

छन्द चौबोला ।

माच्यो हल्ला लंक महल्ला कुंभकर्ण बलवान ।
काँख दाबि लायो कपिराजहि यातुधान हरषान ॥
कुंभकर्ण पहुँच्यो बजारमहँ कपिपति गहे प्रवीर ।
चढ़ी अटारी निशिचर नारी वर्षहिं चंदन नीर ॥
वर्षहिं पुहुप लाज जय गावहिं पहिरावहिं जयमाल ।
शीतल मंद समीर चलावैं लै लै व्यजन विशाल ॥
सो शीतलता पाय कीशपति मुरछा तज्यो प्रवीर ।
दबे कांखमहँ का करिये अब अस विचारि रणधीर ॥
कढ्यो कुक्षते गयो कन्धपर दंतन काट्यो नाक ।
काटि कर्ण दोउ करन करजते फैलायो जस नाक ॥
पदनखते दोउ पार्श्व विदारयो पुनि उडि चल्यो अकाश ।
कुंभकर्ण पद पकरि पछारयो मान्यो प्राण विनाश ॥
कंदुक इव उडिगयो गगन पुनि सुमिरत रामप्रताप ।
रामसमीप आय वानरपति गह्यो चरण बिन ताप ॥
नासा कर्ण विहीन महाभट बहत रुधिरकी धार ।
करि गलानि मन कुंभकर्ण तहँ कीन्ह्यों मरण विचार ॥
लौटि चल्यो पुनि समरहेत शठ लैकर मुद्गर घोर ।
प्रविश्यो पुनि वानरी वाहिनी लग्यो खान चहुँ ओर ॥
महामत्त रण कुंभकर्ण भट गयो भूलि तिहिं भान ।
लाग्यो खान निशाचर वानर कियो घोर घमसान ॥
भगे कीश हाहा पुकारि करि अब नहिं कोउ समुहात ।

डरत लोक के प्रजा यथा सब महाकाल मुख जात ॥
तहँ रामानुज महा धनुर्धर दुराधर्ष रणधीर ।
गवन्यो कुंभकर्णके सन्मुख लै आयसु रघुवीर ॥
हन्यो सात शर तासु शरीरहि निकरि गये तनु फोरि ।
मारयो बहुरि हजारन बाणन काट्यो कवच बहोरि ॥
वेध्यो सकल शरीर शरनसों कुंभकर्णको फेरि ।
रण बाँकुरा वीर रामानुज कह्यो वचन तिहि टेरि ॥
सत्य कालको जीतनवारो लख्यो पराक्रम तोर ।
अब देखन तुव सकल पराक्रम उत्साहित मन मोर ॥
चढ़ि सुरेश ऐरावतपर यदि लोकपाल लै संग ।
भिराहिं देवदल लैकरि कर पवि तऊँ न जीतहिं जंग ॥
सुनत सुमित्रासुवन वचन तहँ कुंभकर्ण रणधीर ।
बोल्यो वचन विहँसि संगरमहँ लषण लाल तुम वीर ॥
राजकिशोर सकल विधि समरथ मेरो करन विनाश ।
पै तुम्हरे जेठे भ्राताकी लगी लखनकी आश ॥
देहु बताय कहाँ रघुनन्दन मुहिं अब कछु न दिखात ।
सत्य भाउ ताको विचारि तहँ कही लषण अस बात ॥
नीलशैलसम खड़ो अचल यह रघुकुलपंकज भान ।
जाहु वीर अभिलाषा पूरहु निशिचरवंश प्रधान ॥
इतना सुनत बली रजनीचर पायो परम अनन्द ।
धायो रघुनन्दनके सन्मुख गर्जत जिमि घन वृन्द ॥
सज्यो समर कहँ शूर शिरोमणि लै धनु दशरथलाल ।
रौद्र अस्त्र कहँ करि प्रयोग प्रभु छोड़े विशिख विशाल ॥
जिन बाणनमें एकबाणसों बालि विनाश्यो राम ।
खर दूषण त्रिशिरा कहँ वेध्यो सप्तताल अभिराम ॥

ते शर कुंभकर्णके तनुमहँ व्यथा करत कछु नाहिं ।
तजत बाणधारा रघुनायक खैंचि खैंचि धनु काहिं ॥
—कुंभकर्ण शर शैल भो, गई गदा कर छूटि ।
करपदसों मर्दन लग्यो, जूट जूट कपि कूटि ॥
वानर ऋक्षन राक्षसन, लक्षन भक्षत जात ।
समर विलक्षन रक्षपति, नहिं अक्षन दरशात ॥
प्रभुके सन्मुख आय शठ, मारयो महा पहार ।
सातबाणसों राम तिहिं, काट्यो लगी न बार ॥
सतखंड गिरि गिरि गयो, द्वै शत कीश चपाय ।
कह्यो सुमित्रासुवन तब, नेकु वचन मुसक्याय ॥

छन्द चौबोला ।

नहिं जानत अपनो पराय शठ महामत्त रण रंग ।
देहिं गिराय भूमिमहँ याको चढ़ि चढ़ि वानर अंग ॥
दियो रामशासन कपि वृन्दन चढि तनु देहु गिराय ।
धाय बलीमुख चढ़े तासु तनु रह्यो सोउ ठहराय ॥
जब जान्यो चढ़ि आये मर्कट दीन्ह्यों देह कँपाय ।
कोटि द्वैक झरिपरे भूमि कपि लियो सबन कहँ खाय ॥
यह अनरथ निहारि रघुनायक धनु सायक कर धारि ।
धाये कुम्भकर्णपर कोपित बार बार ललकारि ॥
कीन्ह्यो धनु टंकोर घोर प्रभु भरयो भयावन शोर ।
सुनि धनुकी ध्वनि कुंभकर्ण तहँ धायो रामहिं ओर ॥
कुंभकर्णसों कहे नाथ तब वचन मंजु मुसक्याय ।
चलो आउ मेरे सन्मुख शठ और ठौर नहिं जाय ॥
सुनि वाणी कोमल रघुपति की जानि राम यहि ठौर ।
कुंभकर्ण पुनि कह्यो बैन अस सुनिये राजकिशोर ॥

नहिं विराध नहिं मैं कबंध खर नहिं मारीचहु वालि ।
महावली जानहु दशरथसुत कुंभकर्ण बलशालि ॥
देखहु मुद्गर मोर भयावन कपिदल नाशनहार ।
रघुनायक विक्रम दरशावहु जो कछु होय तुम्हार ॥
अस कहि धायो राम ओर खल प्रभु पवनास्त्र चलाय ।
मुद्गर सहित काटि डारयो भुज गिरो कपीन चपाय ॥
तब रावणको अनुज कोप करि धायो ताल उखारि ।
ताल सहित काट्यो भुज सोऊ इन्द्र अस्त्र प्रभु मारि ॥
चपे निशाचर वानरहूं बहु दबे मतंग तुरंग ।
पुनि दिव्यास्त्र मारि रघुकुलमणि कियो जंग युग भंग ॥
भयो विगत पद भुज रण दुर्मद कीन्ह्यों घोर चिकार ।
दशौदिशानन शैल सिंधुमहँ भरिगो शोर अपार ॥
उड्यो गगन महँ राहु सरिस शठ प्रभुशरमुख भरि दीन ।
इन्द्र अस्त्र पुनि योजि राम धनु कियो प्रहार प्रवीन ॥
कुंभकर्णको गयो शीश कटि गिरो लंक महँ जाय ।
गृह गोपुर प्राकार फोरिकै गिरि सों परयो दिखाय ॥
गिरयो रुंड सागर महँ बूड़यो जलचर करत विनास ।
प्रविशि गयो पाताल प्रयंतहि दियो भुजंगन त्रास ॥
हर्षे सुर वर्षे बहु फूलन कीन्हें जयजयकार ।
नचन लगे मर्कट कहि प्रभु किय कुंभकर्ण संहार ॥
डोली धरणि धराधर संयुत सुर नभ चढ़े विमान ।
कहहिं सकल जयजय रघुकुलमणिजयजय कृपानिधान॥
मुख्य मुख्य शाखामृग पूजहिं रघुनन्दनकी बाहँ ।
निर्मल रवि प्रकाश कीन्हों जग पवन बह्यो सुख माहँ ॥
काय चपाने मर्कट युगल करोर ।

कपिपति अंगद नील ऋक्षपति तिमि केसरी किशोर ॥
राम सुयश गावत शिर नावत पूरे विजय उछाहु ।
राजतरघुकुलमणिजिमि निकस्योनिशिकरतजिमुखराहु॥
भागे यातुधान मारे कपि गवने रावण द्वार ।
भरे भीति लखि कपिन जीति रण कीन्हें विकल पुकार॥
महाराज तुव बंधु विक्रमी करि कोटिन कपि नाश ।
राम बाण लगि गयो ब्रह्मपुर करि जग सुयश प्रकाश ॥
रघुपति भुजबल महा महोदधि संध्या कालहि पाय ।
निशिचर दिनकर अस्त भयो तहँ बल प्रकाश दिखराय॥
दोहा–कुंभकर्णको निधन सुनि, लहि दशमुख दुख भूरि ।
कीन्ह्यों विविध विलाप तहँ, विजय आश भइ दूरि ॥

छन्द चाबोला ।

तहाँ महोदर महापार्श्व भट त्रिशिरा अरु अतिकाय ।
नारांतक देवांतक बोले युद्ध करन ललचाय ॥
कस शोचहु निशिचर कुलभूषण हमरे जीवित आज ।
कुंभकर्ण मरि रह्यो वीर नहिं कारक शत्रु पराज ॥
हम षट वीर जात संगरको जीति लेब कपिसैन ।
अस कहि उठे तमकि षटनिशिचर चले चटक चितचैन ॥
लखे वानरी सैन्य सिंधु सम उठे वृक्ष पाषान ।
घुसी निशाचर सैन्य कीशदल मच्यो घोर घमसान ॥
निशिचर वानर रुधिर मांसको माच्यो फर पर कीच ।
रावणनन्दन तहाँ नरांतक घुस्यो वानरनबीच ॥
चढ़ि वाजी ताजी कपिराजी कात्यो प्रास चलाय ।
भगे कीश सुग्रीव शरणगे कपिपति कह्यो रिसाय ॥
रे अंगद ठाढ़ो का देखत यह खल अश्व सवार ।

नाशत सकल वानरी सैना धाय करहु संहार ॥
धायो अंगद कहत वचन अस रे नारांतक वीर ।
का मारत बापुरे बानरन मुहिं मारि रणधीर ॥
अंगदवचन सुनत नारांतक तरल तुरंग धवाय ।
मारयो खड्ग वालिसुतके उर परयो टूटि महि जाय ॥
अंगद हन्यो तुरंगहि थापर फाट्यो तासु कपार ।
नारांतक तजि वाजि दारि द्रुत हन्यो मूठि बलवार ॥
लगत मूठि शिरगिरयो भूमि कपि उठ्योझूमि ललकारि ।
हन्यो नरांतकके उर मूठी मरिगो आँखि निकारि ॥
निहत नरांतक लखि देवांतक त्रिशिरा राजकुमार ।
बली महोदर रावणभ्राता भयो मतंगसवार ।
देवांतक त्रिशिरा रथ चढ़िकै चले आशु भट तीन ।
तीन ओरते वालिसुवनको मारन लगे प्रवीन ॥
जो जो तरु पषाण कर धारत अंगद मारन हेत ।
तीनिहु भट करहीमें काटत करन प्रहार न देत ॥
मारि मारि बाणन अंगदको दीन्ह्यों भूमि गिराय ।
उठत वीर पुनि गिरत भूमि भ्रमि परयो विकल दरशाय ॥
तब हनुमान नील सैनापति कीन्हें धाय सहाय ।
देवांतकको दौरि पवनसुत हन्यो मूठि नजिकाय ॥
गयो विशाल कपाल फूटि तिहि मरिगो जीभ निकारि ।
तब चढ़ि महामतंग महोदर त्यों त्रिशिरा शर झारि ॥
मारि नीलको भूमि गिराये उठि दलपति गहि शैल ।
सहित मतंग महोदरको तब दरशाई यम गैल ॥
मरो महोदर कका हमारो त्रिशिरा मनहिं विचारि ।
पवनसुवनको मारि शरनते लीन्ह्यों मूँदि प्रचारि ॥

बाणजालको फारि कढ्यो कपि हन्यो महा पाषाण ।
भयो भग्न त्रिशिराको स्यंदन हन्यो सो कूदि कृपाण ॥
पवनसुवन करि परम लाघवी लियो कृपाण छड़ाय ।
तिहि कृपाणसों तासु तीन शिर काट्यो भूमि गिराय॥
देवांतक नारांतक त्रिशिरा बली महोदर वीर ।
देखि निहत चारिउ वीरनको महापार्श्व रणधीर ॥
धायो हनत कपीन अनेकन पारत हाहाकार ।
ऋषभ वीर वानर तब दौरयो सहत बाणकी धार ॥
मारयो शैल टूटिगो स्यंदन लै कर गदा प्रचंड ।
धायो ऋषभवीर पर कोपित हन्यो गदा बरिबंड ॥

दोहा—ऋषभ गिरयो मूर्छित मही, उठ्यो सचेत त्वराय ।
कर मुररि ताको लपटि, लीन्हीं गदा छड़ाय ॥
महापार्श्वके शीशमें, हनी गदा कपि सोय ।
फट्यो शीश मरिकै गिरयो, भगे निशाचर रोय ॥
त्रिशिरा और नरांतकहु, देवांतक बलवान ।
अरु अतिकाय महाबली, रावणपुत्र प्रधान ॥
वीर महोदर अरु यही, महापार्श्व विख्यात ।
दोऊ भुजसम जानिये, दोऊ रावण भ्रात ॥
मरे पांच संग्राममहँ, रह्यो खड़ो अतिकाय ।
महाबली धनुधर प्रबल, शुद्ध युद्ध मन लाय ॥

छन्द चौबोला ।

तिहि नहे स्यंदन सहस घोड़े सहस सूर्यप्रकास ।
हैं चार सारथि सकल सायुध छत्र निशिकर भास ॥
रणभूमि आयो अति डरायो समरहित अतिकाय ।
निजबंधु निधन पितृव्य निधन निहारि रोष बढ़ाय ॥

नहि हन्यो कीशनको शरन नहिं वध्यो गर्वितवानि ।
सूधो चलो आयो समर मन द्वन्द्वयुद्धहि आनि ॥
तहँ मध्य वानरसैन्यमें ह्वै खड़ो भट अतिकाय ।
विन भीत सुरगण जीति दीन्ह्यो वचन कपिन सुनाय ॥
जनि भगहु वानर वाण मेरे कपिन हनत लजात ।
जिहि होय रणकी सान अव सो आय कस नहिं जात ॥
अतिकायकी अतिकाय लखि भागे कपीश विचारि ।
पुनिकै जियो रण कुंभकर्ण कपीन खैहै झारि ॥
गे राम लछिमन शरण कपि अतिकायके डर भागि ।
पूछ्यो विभीषणको विहँसि तव राम कोपहि पागि ॥
भाषहु सखा यह कौन राक्षस कुंभकर्णसमान ।
आवत अभय रथमें चढ़ो वल बुद्धि तेज निधान ॥
बोल्यो विभीषण नाथ यह अतिकाय राजकुमार ।
रथ चक्र घहरत ध्वजा फहरत लंकको रखवार ॥
है महाधनुधर इन्द्रजितसम करत रण विनमाय ।
जीत्यो सुरन वलवान याको नाम है अतिकाय ॥
यह धान्य मालिनिको कुँवर तप कियो विपिन अपार ।
है सुरासुरते अवध अस वर दीन यहि करतार ॥
नय साम दामहु दंड भेदहु मंत्र कहत निशंक ।
जाके भुजनवल वसत निर्भय लंकपति अरु लंक ॥
यह समर अगणितवार जीत्यो सुरासुरन अपार ।
शरधारसों रोंक्यो कुलिश शक्रहु भग्यो गुणि हार ॥
रोंक्यो वरुणकी पाश वाणन मारि समर मझार ।
याकेसरिस योधा न कोउ विक्रमी लंक कुमार ॥
कीजै यतन प्रभु जितनको नाहिं कीशसैन्य अपार ।

करिहै सकोपित शरनसों इक याममहँ संहार ॥
रणभूमिमें उत आयकरि अतिकाय धनु टंकोर ।
अपनो सुनायो नाम वानर भगे चारिहुँ ओर ॥
तहँ कुमुद द्विविद मयंद नीलहु शरभ पांचहु वीर ।
गिरिशृङ्ग वृक्षन धाय मारे तिहि महा रणधीर ॥
अतिकाय सहजहि काटि थंभित कियो पांचहु कीश ।
नहिं लरचो जो नहिं लरचो तासों चल्यो मानहुँ ईश॥
पुनि कह्यो समर पुकारि अस कोउ वीर नहिं यहि सैन।
जो करै सन्मुख समर मोसे करि कछू जिय भैन ॥
अतिकायकै सुनि वचन तमक्यो लषण लाल सपूत ।
हँसि सरुष सन्मुख धनुष लै धायो रुचिर रजपूत ॥
कीन्ह्यों धनुष टंकोर घोर दिगंत छायो शोर ।
लखि लषणको अतिकाय बोल्यो अरे भूपकिशोर ॥
तुहिं देखि मुहिं लागत दया भजि जाय औरै ठौर ।
सुनिकै सुमित्रासुवन कह बहु अर्थ आखर थोर ॥
नहिं होहु वीरप्रधान भाषे विन दिखाये जोर ।
सुनि लषण वानी अर्थ सानी चितै ताकी ओर ॥
अतिकाय मारचो एक शर कहि गयो अब जिय तोर ।
काट्यो लषण तजि अर्धचंद्रहि बाणसों शर घोर ॥

दोहा—तब अतिकाय प्रकोपि अति, छाँड़चो पाँच नराच ।
लछिमन काट्यो बीचहीं, जिमि झूठे को साँच ॥

छन्द चौबोला ।

तिहि रह्यो कवच अभेद ताते लषण ताकि ललाट ।
मारचो पतत्रि प्रचंड फैल्यो तेज जनु हवि बाट ॥
अतिकाय भालहि लग्यो सायक विकल गिरि तिहि ठौर ॥

पुनि उठि सराहन लग्यो लषणहिं वीरवर रिपु मार ॥
पुनि तज्यो बाणनधार रजनीचर प्रधानकुमार ।
छायो गगन दशहूँ दिशन ह्वै गयो अति अँधियार ॥
करि लाघवी लषणहुँ तहाँ शर काटि किय उजियार ।
दोऊ बरोबर तजत शरवर दोउ उछाह अपार ॥
शर गहत संधानत तजत खैंचत शरन पुनि लेत ।
नहिं वीर दोऊ परत देखि सचेत करत अचेत ॥
इक बाण लै अतिकाय वेध्यो लषणके उरमाहिं ।
निज कर उखारयो बाण रामानुज सराह्यो ताहि ॥
पुनि तज्यो पावकअस्त्र लछिमन चली ज्वाल निकाय ।
परजन्यअस्त्र चलाय तिहि अतिकाय दीन बुझाय ॥
लछिमन हन्यो पवनास्त्र तहँ बाढ्यो सुझंझा पौन ।
अतिकाय पर्वत अस्त्र तजि रोक्यो अनिल को गौन ॥
रुद्रास्त्र छोड़त भो निशाचर जनु प्रलय करि दीन ।
रुद्रास्त्रहू मारयो लषण दोउ शर भये जरि छीन ॥
ऐषीकअस्त्र चलाय तहँ अतिकाय जय गुणि लीन ।
इन्द्रास्त्र लषण चलाय आशुहि शांत तिहि करिदीन ॥
अतिकाय छोडयो पुनि यमास्त्र दिखान काल समान।
सौमित्र मारयो पाशुपत यमअस्त्रतेज बुझान ॥
पुनि तज्यो लछिमन बाणधारा शैल जिमि जलधार ।
अतिकाय कवचहि लागि शर टूटे भये नाहिं पार ॥
भरभर हनत निर्भर शरन निर्भय सुमित्रानंद ।
नाहिं विधत कवच अभेद महँ गिरि परत महि मुखमंद॥
तब कह्यो लछिमनसों पवन ब्रह्मास्त्र येकर मीच ।
नाहिं मरी और उपाय विधिवरदानते तनु सीच ॥

सुनि लषण लीन्ह्यों ब्रह्मशिर शर मनहु यमकर दूत ।
दिशि विदिश सूरज चन्द्र तारा उठी ज्वाल अकूत ॥
डोली धरणि जब तज्यो सायक कालसरिस कराल ।
अतिकाय लाखन बाण मार्‍यो जरे शरकी ज्वाल ॥
जब गयो सायक निकट तब अतिकाय लाघव कीन ।
असि गदा शक्ति कुठार शूल चलाय आयुध दीन ॥
नहिं रुक्यो शर तिहि लग्यो कंठहि कट्यो ताकर शीश ।
सुर मुनि गगनते वर्षि फूलन कहे जयति फणीश ॥
वानर सराहन लगे लषणहि धन्य रघुपतिभ्रात ।
सौमित्र वंद्यौ रामपद स्वेदित श्रमित सब गात ॥
उत भगे रजनीचर किये लंकेशद्वार पुकार ।
अतिकायको लक्ष्मण हन्यो अब करहु जौन विचार ॥
सुनि भयो राक्षसराज नेसुक विकल बहुरि सम्हारि ।
बोल्यो वचन मेरे निशाचर गये कपिकर मारि ॥
यह लगत मोहिं अचर्य्य अब विपरीत ह्वैगो काल ।
अब करिय कौन उपाय निशिचर वंश होत विहाल ॥
अतिदुखित लखि पितुको कह्यो घननाद वचन उदंड ।
मेरे जियत नहिं सोच कीजे निरखि मम भुजदंड ॥
बोल्यो दशानन व्यथित आनन है भरोसो तोर ।
जिहि भाँति जीतो कपिनको सो करौ विक्रम घोर ॥

दोहा—मेघनाद अस कहि चल्यो, शठ निकुंभिलाजाय ।
पावकहोम खल, श्याम छाग कटवाय ॥
तंत्र विधानते, महाघोर अभिचार ।
ब्रह्मअस्त्र अनुभव कियो, करण कीशसंहार ॥
दिव्य धनुष अरु दिव्य रथ, प्रगट्यो अग्नि कराल ।

स्वै स्यन्दन में चढ़ि चल्यो, धारे धनुष विशाल ॥
बोल्यो रजनीचरनसों, करहु घोर घमसान।
आपु सरथ सह सारथी, ह्वै गो अन्तर्धान ॥

छन्द तोटक।

ब्रह्मास्त्र कीन प्रयोग। शर तज्यो जनु अहि भोग ॥
वर्षन लग्यो बहु बान। ह्वै गगन अंतर्धान ॥
माया कियो अतिघोर। अँधियार भो चहुँ ओर ॥
नव सप्त पंच कपीन। इक इक शरन वध कीन ॥
लै वीर भूधर वृक्ष। धावहिं चहूंकित ऋक्ष ॥
देखहिं न मारत जोय। तब फिरहिं अतिभय मोय ॥
व्याकुल भये कपिवृंद। गे शरण रघुकुलचन्द ॥
लै धनुष लछिमन राम। दोउ तजे शर बलधाम ॥
नहिं लखिपरत घननाद। सुनि परत केहरि नाद ॥
जिहि पंथ आवत बान। तिहि पंथ करि अनुमान ॥
शर त्यागि दूनौं भाय। घननाद तनु किय घाय ॥
तब इन्द्रजित बरजोर। ब्रह्मास्त्र छोंड्यो घोर ॥
चहुँ ओरते तिहि काल। आवन लगे शरजाल ॥
शर झरत सहसन लाख। जिमि भानुकर वैशाख ॥
नहिं और कछू दिखाय। सायक रहे रण छाय ॥
लागे कटन कपियूथ। गिरिगे वरूथ वरूथ ॥
जे तकहिं आँखि उठाय। शर लगत नयनन आय ॥
अति गाढ़ शर अँधियार। नहिं सूझ हाथ पसार ॥
बोले लषणसों राम। घननाद यह बलधाम ॥
ब्रह्मास्त्र कीन प्रयोग। तिहि मानिबो अब योग ॥
जबलगि रहब हम ठाढ़। तबलगि अमर्षहि बाढ़ ॥

छोड़ी विशिखकी धार । सब दल करी संहार ॥
ताते गिरहु महिमाहिं । अब जतन दूजो नाहिं ॥
अस कहि शिथिलइव राम। लछिमनसहित बलधाम ॥
-किये शयन अस भूमि महँ, सहत ब्रह्मशर घोर ।
राम लषणको शिथिल लखि,कियो इंद्रजित शोर ॥

छन्द तोटक ।

सुग्रीव अंगद नील । नल द्विविद भारी डील ॥
गय जाम्बवंत सुखेन । गिरिगये समर अचैन ॥
औरहु बलीसुख वीर । गिरिगे समर शर पीर ॥
भे छिन्न भिन्न शरीर । कहुको रह्यो नहिं धीर ॥
कोउ रह्यो रण नहिं ठाढ़ । घननाद शर लगि गाढ़ ॥
करि विकल वानर सैन । लहि इंद्रजित अतिचैन ॥
घननाद किय घननाद । पायो परम अहलाद ॥
लंका गयो जय पाय । दिय पितुहि सकल सुनाय ॥
दिनमणि भये तहँ अस्त। कपिसैन्य विकल समस्त ॥
लंकेशअनुज स्वतंत्र । ब्रह्मास्त्रवारण मंत्र ॥
जानत रह्यो यक सोय । ताते गयो नहिं सोय ॥
आशुहि विभीषणवीर । बोल्यो कपिन धरि धीर ॥
कोउ जियत है दलमाहिं । उत्तर दियो कोउ नाहिं ॥
उठि तुरत पवनकुमार । अस कीन वचन उचार ॥
ब्रह्मास्त्रशर लहि घात । हैं विकल कपि सब तात ॥
जो होय प्राणसमेत । तिहि खोजिये करि नेत ॥
दोउ लियो ठीक विचारि । यक लूक लीन्ह्यो बारि ॥
खोजनलगे रणभूमि । हनुमत विभीषण घूमि ।
लगि गई लोथिनरासि । कपि मरे जीभ निकासि ॥

भे अंग भंग कपीस । नहिं पर जीवत दीस ॥
हनुमत विभीषण वीर । दोउ राजसुत रणधीर ॥
ये अंग साबित चारि । नहिं और परयो निहारि ॥
सरसठि करोरि कपीन । घननाद बिन जिय कीन ॥
षट दंडमहँ शर झारि । डारयो कपीशन मारि ॥

दोहा—पवनसुवन लंकेशहू, खोजत खोजत जाय ।
जाम्बवंतको लखत भे, शर जर्जरित बनाय ॥
कह्यो विभीषण ऋक्षपति, जीवत हौकी नाहिं ।
जस तसकै बोल्यो वचन, जाम्बवान तिहि काहिं ॥
अहौं बूढ़ शरविधित तनु, नयनन नहिं दरशात ।
स्वरहीते जान्यो परत, अहौ लंकपतिभ्रात ॥
कहहु तात हनुमान कहुँ, जीवत है की नाहिं ।
कह्यो विभीषण वचन तब, करि अचरज मनमाहिं ॥
राम लषणको छोड़िकै, अंगद सुगलसमेत ।
पूछहु पवनकुमारको, ऋक्षराज किहि हेत ॥
जाम्बवान बोल्यो वचन, सुनहु विभीषण भ्रात ।
जिहि कारण हनुमानको, मैं पूछहुँ यह बात ॥
जीवत हठि हनुमानके, मरेहु जियतसम कीस ।
नहिं जीवत हनुमानके, जियत मरेसम दीस ॥
ऋक्षराजके वचन सुनि, गह्यो चरण हनुमान ।
कह्यो वचन मैं जियत हौं, देहु सीख मतिमान ॥
जाम्बवान हनुमानको, बोल्यो कंठ लगाय ।
प्राणदान दलको करहु, औषधपर्वत लाय ॥
गगनपंथ सागर उपर, गमनहुँ उत्तर ओर ।
तहाँ हिमाचल शैल लखि, नकि केसरी किशोर ॥

ऋषभ नाम गिरि कनकको, अरु कैलासहि बीच ।
औषधपर्वत जानियो, तुरतहि जाय नगीच ॥
मृतसंजीवनि औषधी, अरु करनी संधान ।
अरु विशल्यकरनी सुखद, ल्यावहु द्रुत हनुमान ॥

कवित्त ।

जाम्बवानको बखान सुनि हनुमान वीर,
भयो बलवान मेरु मंदर समान है ।
आसमानपंथ ह्वै पयान अनुमान करि,
उठि ऍंडाय उड़्यो मानौ हरियान है ॥
कीन्ह्यो शोर वे प्रमाण दीन्ह्यो भीति यातुधान,
लीन्ह्यो वीर वेगवान वेग वे प्रमाण है ।
रघुराज सुमिरि कृपानिधान भगवान,
अति अतुरान देनहेत प्राणदान है ॥ १ ॥
पहुँच्यो कपीश गिरि औषधसमीप जाय,
हेरै कौन औषध यों मनमें विचारिकै ।
केसरीकिशोर बारबंड भुजदंड
चल्यो आशु औषधीको पर्वत उखारिकै ॥
मार्तंडमारगमें मार्तंडही सो लस्यो,
मार्तंडवंश मार्तंड उर धारिकै ।
दंड द्वैकमाहँ नाकि वेगसों भरतखंड,
आयो लंकखंडमें कपीश किलकारिकै ॥ २ ॥

सोरठा—गई न आधीरात, आय गयो कपिसैन्यमें ।
लग्यो औषधीवात, वानर उठे अभंग सब ॥
उठे लषण अरु राम, मिले परस्पर हर्षि अति ।
कपि पूर्‌यो मनकाम, कहहिं कौन हनुमान सम ॥

कीन्हें केहरि नाद, विरुज विशल्य कपीश मन।
लहे परम अहलाद, राम लपण कपिराजहू॥

दोहा—मारि गयो जब इन्द्रजित, ब्रह्मास्त्रहि कपिसैन।
जाम्बवंत पठयो जबै, पवनसुवन गिरि लैन॥
तब रावण भेज्यो भटन, सपदि समरते आइ।
मृतक निशाचर सिंधुमें, दीन्हें राति डुबाइ॥
जब लै आयो शैलको, हनूमान दल माहिं।
जिये बलीमुख गंध लहि, जिये निशाचर नाहिं॥
यहि विधि सैन्य जियाइकै, सो गिरि को हनुमंत।
पहुँचायो जहँको तहाँ, आयो बहुरि तुरंत॥

छन्द तोटक।

गत राति आधी जानि। कह राम कपिपति आनि॥
यह दुष्ट माया कीन। कपिसैन्यको दुख दीन॥
ताते सुमर्कट जाय। पुर देहिं आगि लगाय॥
सुनि प्रभुनिदेश कपीश। शाखामृगा अति रीश॥
लै लूक निज निज हस्त। धाये तुरंत समस्त॥
लंका चढे चहुँ ओर। करि शोर वानर घोर॥
घुसि घरन घरनहिं घूमि। ऊँची अटारिन झूमि॥
दिय अग्नि आशु लगाय। ज्वाला उठी नभ धाय॥
लागे जरन खल कोटि। मग रहे निशिचर लोटि॥
पुर मच्यो हाहाकार। नहिं देखिपरत उबार॥
भजि चले छूटि तुरंग। भागे जरत मातंग॥
तहँ बह्यो अनिल प्रचंड। उठि ज्वाल माल अखंड॥
धावति बजार बजार। भे रजनिचर जरि छार॥
घर रजत कनक अनंत। महि टिघरि टिघरि चुअंत॥

निशिचरी भागी जाहिं। अधजरी केश लखाहिं ॥
पितु मातु बालक छोड़ि। शिर ओद अंबर ओड़ि ॥
सब करत हाहाकार। नहिं लखिपरत रखवार ॥
जे निकसि बाहर जाहिं। बानर हनत तिन काहिं ॥
पुर पर्‌यो कसमस भूरि। भे कूप सरसी झूरि ॥
आभरण वसन अनंत। जरिगये शोभावंत ॥
जे कोट बाहर जात। तिन करत प्रभु शर घात ॥
कोउ परे कूदि समुद्र। बूड़े अनेकन क्षुद्र ॥
जरि गई सिगरी लंक। लाये कपिन निश्शंक ॥
जाग्यो दशानन वीर। लखि नगरजरत अधीर ॥

दोहा–गुहरायो को द्वारमें, ठाढ़ो वीर विचित्र।
बोले कुंभ निकुंभ दोउ, कुंभकर्ण के पुत्र ॥
कहा होत शासन हमें, करिहैं बिनाहि विचार।
कह रावण जारत नगर, बानर करहु सँहार ॥
धाये कुंभ निकुंभ दोउ, मारे कपिन प्रचारि।
लाय लंक निश्शंक कपि, आये जहाँ खरारि ॥

उठै निकुंभ कुंभ द्वै निशुंभ शुंभसे चले।
सुकुंभकर्णपुत्र कुंभकर्णसे लसैं भले ॥
युपाक्षसों निताक्ष त्यों प्रजंघ औ अकंपनै।
अमात्य चारि कुंभके प्रयात भे रणांगनै ॥
चली सुयातुधानकी प्रवेगसों अनीकिनी।
बजे अनेक दुन्दुभी रथानकी सुकिंकिनी ॥
बिहान होत वानरान यातुधान युद्ध भो।
निकुंभ चाप तानि मारि मारि बाण क्रुद्ध भो ॥

इतै वली वलीमुखान सैन्य वीर धाइकै।
हनै निशाचरानको सुनामको सुनाइकै॥
कियो महा भयंकरै निशाचरै सुसंगरै।
अनेक यातुधान को विनाश कीन वानरै॥
निहारि यातुधानको दलै परात जंगमें।
अकंपन हन्यो वलीमुखानको उमंगमें।
इतै प्रकोपि वालि वाल पाणिमें पहार लै।
हन्यो अकंपनै मर्‍यो गिर्‍यो धरा अधार लै॥
प्रचंड शोणिताक्ष आइ अंगदै प्रचारिकै।
हन्यो अनेक बाण तू बचै न यों उचारिकै॥
तुरंत दौरि अंगदौ छड़ायलीन चापको।
निकारि खङ्ग शोणिताक्ष देत कीशतापको॥
हनै चह्यो सुअंगदै प्रवीर वालि को वली।
मुरारि पाणिको छड़ाय लीन तेग ना चली॥
दियो कृपाण कंधमें द्विधा शरीर ह्वैगयो।
प्रजंघ औ युपाक्ष देखि लोहिताक्ष छै भयो॥
चले उभय प्रकोपि वीर वालिपुत्र पै तहाँ।
लर्‍यो दुहूंनसों विचित्र अंगदौ सुखी महाँ॥
निहारि यातुधान द्वै अकेल वालि वाल है।
चल्यो मयंद बंधु लै उखारि वृक्ष शाल है॥
हन्यो प्रजंघ वालिपुत्र के ललाट मूठि है।
गिर्‍यो विसंज्ञ ह्वै उठ्यो तुरंग कीश रूठि है॥
प्रचारि दौरि कै हन्यो ललाट मूठि जोरसों।
कपाल तासु फूट ज्यों घटै पषाण कोरसों॥
कका विनाश देखिकै युपाक्ष दौरि दूरसों।

चलाय वाण अंगदै शरीर कीन पूर सो ॥
तहां मयंद भ्रात यूप अक्ष ओर धायकै ।
पँवारि शैल शृंग कीन भंज जान आयकै ॥
हन्यो गदा तरक्कि कै युपाक्ष मैंद भ्रातको ।
छड़ाय कीश सो गदा कियो बहोरि घातको ॥
मर्‌यो युपाक्ष भूमि में गिर्‌यो निकारि नैनको ।
भगे अनेक यातुधान भीति मानि ऐनको ॥
प्रचंड कुंभकर्ण पुत्र कुंभ आसु धायकै ।
प्रवीर वालिपुत्रको लियो पतत्रि छायकै ॥
गिराय दीन बाण मारि सानुजै मयंदको ।
चल्यो प्रकोपि वालिपुत्र गौन ज्यों गयंदको ।
हजार बाण मारि कुंभ अंगदै निवारतो ।
रुक्यो न वालिपुत्र ताहि ताकि कै प्रचारतो ॥
नराच पांच भौंह बीच मारि कुंभ देत भो ।
सुपाणि नयन ढाँपि कै चल्यो नहीं अचेत भो ॥

दोहा—कुम्भ करोरिनि बाण हनि, दिय अंगदहि गिराय ।
भागे वानर भीति भरि, कहे सुकंठहि जाय ॥
महाराज युवराजको, कियो कुम्भ विनप्रान ।
आप चलहु कै भेजिये, हनन हेत हनुमान ॥

छन्द चौबोला ।

आरत वचन सुनि कीशपति लै संग पवनकिशोर ।
धायो निकुंभहि ओर छावत दशहु दिशिमहँ शोर ॥
आवत सुकंठहि देखि कुंभ हन्यो हजारन बान ।
नाहिं रुक्यो झिलि ताके निकट टोर्‌यो छड़ाय कमान ॥
सुग्रीव बोल्यो वरि वाणी कंभकर्ण किशोर ।

तें कुम्भकर्णसमान अब दिखराउ आपन जोर ॥
सुनि कुपित कूद्यो कुम्भ रथतें गह्यो कपिपति काहि ।
दोउकरन लागे मल्लयुद्ध विरुद्ध शुद्ध नहाँहि ॥
सुग्रीव गहिकै कुम्भ कहँ फेंक्यो तुरंत उठाय ।
सो पर्‍यो क्षुद्र समुद्र महँ सागर तलै लगिजाय ॥
काढ़ि कुम्भ सागरतें सपदि इक मूठि मार्‍यो आय ।
कछु विकल ह्वै कपिराज पुनि मारी समूठी धाय ॥
कपिनाथकी लगि मुष्टि कुम्भ गिर्‍यो मही बिनप्रान ।
लागे सराहन कीशराजहि भगे खल भय मान ॥
तहँ परिघ परम प्रचंड लै धायो निकुंभ प्रवीर ।
परिघै भवाँवत भ्रमत नभ भे देव मुनि भय भीर ॥
आयो प्रभंजननंदके सन्मुख निकुम्भहु धाय ।
विधिदत्त परम प्रचंड परिघ झरै अँगार निकाय ॥
बोल्यो प्रभंजननंद मंद चलाउ परिघ प्रचंड ।
मार्‍यो परिघ हनुमानके सो टूटि भो शत खंड ॥
तिल भरि न डोल्यो अनिलसुत मार्‍यो सुमूठी धाय ।
सोऊ न कंप्यो वीर तिलभरि पवनसुत ढिग जाय ॥
लीन्ह्यों पकरि हनुमानको निज अंक बाहु बढाय ।
लै चल्यो अति निश्शंक लंकहि सिंहनाद सुनाय ॥
हनुमान कूद्यो धरणिमहँ कर मध्य मूठी मारि ।
पुनि लपटि कंठ नवायलीन निकुम्भ शीश उखारि ॥
भय भरे भागे यातुधान निहारि बल हनुमान ।
प्रभुके चरण बंद्यो पवनसुत विजयमान महान ॥
उत जाय खल दशकंठद्वारे कह्यो समरहिवील ।
शोचनलग्यो रावण दुखित आयो निशाचर काल ॥

खरको तनय मकराक्ष बोल्यो नाथ शोचहु नाहिं ।
हम जात संगर मारिहैं हठि राम लषणहिं काहिं ॥
अस कहि चल्यो रथपै सवार अपार लै सँग सैन ।
कीन्ह्यो पसर कपिसैन्यपर मनमें कियो कछु भै न ॥
मारैं निशाचर बानरनको चले कीश पराय ।
मकराक्ष रथहि धवाय बोल्यो रामको नजिकाय ॥
रे राम ठाढ़ो रहु समर नहिं जाय अनत पराय ।
हमारो द्वंद्वयुद्ध दिखाउ बल नरराय ॥
तब कियो धनु टंकोर भूपकिशोर मृदु मुसक्याय ।
दिशि विदिश नभ मकराक्षरथ दीन्ह्यों शरनसों छाय ॥
मारयो तुरंगन सारथी रथ कवच धनु दिय काटि ।
मकराक्ष कर लै शूल धायो रामको हग डांटि ॥
सो शूल शंकर शूलसम शंकरप्रदत्त प्रचंड ।
मारयो प्रचारि खरारि किय तिहि बाण हनि त्रय खंड ॥
तब बाँधि मूठी कहत धायो ठाढ़ रहु रघुवीर ।
प्रभु बिहँसि ताको शीश काट्यो मारि पावक तीर ॥
करत हाहाकार भागे यातुधान अपार ।
मर्कट मरदि तिनको फिरे पहुंचाय लंकाद्वार ॥

दोहा–सुनि रावण मकराक्ष वध, लाग्यो करन विचार ।
पठयो तब घननादको, कहि सुत तुही अधार ॥
चल्यो तुरत घननाद तहँ, करिकै पावक होम ।
करिहौं महि बिन बानरी, बाढ़ी यह मन जोम ॥
सरथ सवाजि ससूत शठ, ह्वैगो अंतर्धान ।
मारन लाग्यो कुपित बहु, राम लषणको बान ॥

छन्द ।

कार दियो शठ अँधियार । माया करी बलवार ॥
नभते शरनकी धार । धावनि धरहि बहुबार ॥
भे विकल कीशसमूह । लागे करन अति कूह ॥
कोपे लषण अरु राम । छोड़े शरन बलधाम ॥
नहिं लखिपरत घननाद । यह भयो परम विषाद ॥
तब लषण बोल्यो कोपि । सब राक्षसन वध चोपि ॥
ब्रह्मास्त्र छोड़हु तात । अब और नाहिं दिखात ॥
निशाचर [illegible] । ते जराहिं तहँ घूमि ॥
प्रभु कह्यो करुण अगाध । इकहेत सब कर बाध ॥
नहिं करब तुमको योग । हँसि है सकल जग लोग ॥
भागै लरै नहिं जोइ । लुकि रहे रूपहि गोइ ॥
कर जोरि शरणहि होय । तिन हनत नहिं बुध कोय ॥
लंकेश प्रबलकुमार । नहिं बची युद्ध मँझार ॥
पाताल स्वर्गहुँ जाय । मरिहै अवशि दुख पाय ॥
अस कहि कुपित रघुवीर । लीन्ह्यो अवारन तीर ॥
घननाद निजवध जानि । लंका गयो भय मानि ॥
माया करी अनखाय । सियरूप लीन बनाय ॥
हनुमानसन्मुख जाय । तिहि हन्यो ताहि दिखाय ॥
भे शिथिल हनुमतअंग । घटिगई युद्ध उमंग ॥
चलिदियो पवनकुमार । दृग तजत आँसुनधार ॥
प्रभुसों निवेदन कीन । भो रामवदन मलीन ॥
गिरिगे मुरछि महिमाहिं । कपि देखि सब विलखाहिं ॥
बोल्यो लषण अनखाय । नहिं होत धर्म सहाय ॥
जो धर्म धरणि उदोत । तौ तुमहिं नहिं दुख होत ॥

—धर्म सत्य होतो जगत, रावण नरकहि जात ।
धर्मधुरंधर आपको, अस दुख होत न तात ॥
राजत्याग वनवास पुनि, नारिहरन संताप ।
तुमहिं योग नहिं लखि परत, धरा धर्मधर थाप ॥
ताते जाके अर्थ है, सोई जन मतिमान ।
सोई यशी बली विपुल, सोई पुरुष प्रधान ॥
यहिविधि भाषत बहु वचन, लछिमनके तिहि काल।
आयगगो लंकेश तहँ, प्रभु लखि भयो विहाल ॥
पूछ्यो का यह होत अब, कह्यो लषण बिलखात ।
अनरथ कीन्ह्यों इन्द्रजित, कही पवनसुत बात ॥
कह्यो विभीषण यह मृषा, भाष्यो पवनकमार ।
अस दशमुख करिहै नहीं, जानौ भेद हमार ॥
पै अवध्य अब होत हठि, महाबली घननाद ।
करतो यज्ञ निकुंभिला, माने हारि विषाद ॥
यज्ञसमापतिके भये, अजर अमर ह्वै वीर ।
करी कपिनसंहार सब, सुनहु लषण रघुवीर ॥
पठवहु लछिमन आशुहीं, अंगद हनुमतसंग ।
मैं सब भेद बताइहौं, जिमि होई मखभंग ॥
सुनत विभीषणके वचन, उठे राम अतुराय ।
बोले लछिमनसों हरषि, सब दुख गयो पराय ॥
जाहु सखा लै लषण को, मर्कट कटक लिवाय ।
हनुमत अंगद ऋक्षपति, वीरन वेगि बुलाय ॥

कवित्त ।

राम को निदेश सुनि इन्द्रजीत युद्धहेत,
नैनअरविंद नेकु ह्वै गे अरुणारे हैं ।

फरके प्रचंड दोर्दंड जे अखंड ओज,
सायकको दंडको घमंडसों निहारे हैं ॥
उमँग्यो अनंत उत्साह उर आहवको,
लौट वन आज विन इन्द्रजित मारे हैं।
रघुराज आज चढ्यो चौगुनो चलत चाउ,
रामानुज अंग मनो बखतर फारे हैं॥ १ ॥
मुख मुसक्याय गुन धनुष चढ़ाय कसि,
कंधमें निषंग करवाल कटि धारे हैं।
वामपाणिमें कमान दाहिनेमें लीन्हें बान,
पहिरि सनाह माथ मुकुट सुधारे हैं॥
उदैमान पूरण सुशारद शशी सों मुख,
मंडल अखंडल प्रकाश को पसारे हैं।
रघुराज उठिकै उदग्रपद अग्रजके,
वंदिके लषण अस वचन उचारे हैं ॥ २ ॥
जोहिहै जगत मेघनादको हमारो युद्ध,
एकही रहैगो पाय विश्वमें बड़ाई है ।
रघुराज रावरो प्रताप रखवारो मोर,
ताते कहौं आज मैं समाजमें सुनाई है ॥
इन्द्र यम वरुण कुबेर करतारहूं जो,
करैं घननादकी सहाइ सैन्य ल्याई है।
त्र्यंबक त्रिशूल धारे त्राणकाज आवैं आजु,
बाचिहै न वैरी राम रावरी दुहाई है ॥६॥

दोहा—मेघनाद मारे बिना, जो इत आऊं आज।
तौ पुनि नहिं कर धनु धरौं, करौं शपथ रघुराज ॥

छन्द चौबोला ।

असकहि लषण प्रभुचरण वंद्यो चल्यो तमकि तुरंत ।
हनुमत विभीषण अंगदादिक चले कपि बलवंत ॥
तहँ लख्यो लषण निकुंभिला ठाढ़ी निशाचर सैन ।
मनु श्याम मेघ घटा घनी मनु मीचकी है ऐन ॥
तब कह्यो लछिमनसों विभीषण हनुमदादिक वीर ।
मर्कटकटक लै विकट कपि धावैं चटक रणधीर ॥
ते जाइ सन्मुख सैन्यपर जहँ खड़ो निशिचर यूह ।
यह यूथ फोरहिं प्रविशि दल करिकै भयानक कूह ॥
वानर विलोकत त्यागि मख ऐहै निकसि घननाद ।
तब तुमहिं हम लै चलहिंगे सहजै सहित अहलाद ॥
तब दियो शासन लषण पवनकुमारको अतुराय ।
कीजै न शरसन्मुख समर लै कपिनकी समुदाय ॥
धायो प्रभंजनपूत अंगदसहित खलदल ओर ।
मारयो निशाचरवृन्द फोरयो गोल कपि वरजोर ॥
घुसि गये वानर यज्ञशाला किये मखविध्वंस ।
नहिं सहि गयो अपचार धायो हंस राक्षसवंस ॥
भागे बलीमुख देखि वासवजीत आवत क्रुद्ध ।
धायो प्रभंजननंद तासों करन युद्ध विशुद्ध ॥
तब रावणी निजसारथीसों कह्यो वचन त्वराय ।
यह वीर वानर ओर अब लै चलहु रथहिं धवाय ॥
अस कहत सारथिसों हनत शर गयो जहँ हनुमान ।
इत लषण लै धाये विभीषण लेन ताको थान ॥
वटवृक्षअंत निकुंभिला देवी भयंकररूप ।
लषणहि दिखायो तहँ विभीषण तासु यज्ञहि जूप ॥

बोल्यो लषण सों लंकपति मम बंधु पुत्र प्रधान।
यहि थानते युत यानते खल होत अंतर्धान॥
अब लेन पावै थान नहिं अस करहु राजकुमार।
जो थान पाई बहुरि शठ रण करी कपिसंहार॥
हँसि कह्यो रामानुज बहुरि शठ सकत इन नहिं आय।
ठाढ़े हमीं वटपीठ दै नहिं टरब धू टारि जाय॥
उत मारि बाणन पवनसुतको इन्द्रजित लिय छाय।
अगणित नुकीले शरन ते कपि भयो बेधित काय॥
बोल्यो विभीषण विलखि तब का लखहु राजकुमार।
घननाद चाहत करन अब हनुमानको संहार॥
तब लषण धनु टंकोर करि मारे अनंतन बान।
लंकेशसुत पाछे चितै लखि लषणवीरप्रधान॥
वटवृक्षके तल जानि लषणहि तासु मुख कुम्हिलान।
जहँ ते रह्यो शठ होत मारन कपिन अंतर्धान॥
सो लियो रामानुज बली थल जीति सकत न आय।
लखिकै विभीषणको तहाँ कह इन्द्रजित बिलखाय॥
रे कुलकलंकी निर्दयी नहिं लगत तोकहँ लाज।
ल्याये लिवाय बताय भेदहि कियो अनुचित काज॥
बोल्यो विभीषण रामविमुखी सुखी को जग होय।
तुव पिताके अपराधते अब रही कुल नहिं कोय॥
मैं ताकि लीन्ह्यों रामशरन विचारि पापी भ्रात।
जो राम जन सो मोर भ्रातहु तात मातहु नात॥
यतना कहत लंकेशके तहँ धाय पवनकिशोर।
मारयो महा गिरि ताहि भाषत काल आयो तोर॥
दोहा–दल्यो शरनसों तौन गिरि, सहजहि रावणनन्द।

लियो छाड़ हनुमानको, मारि मारि शरवृन्द ॥
बाणजालको फारिकै, काढ़ि केसरीकिशोर ।
कह्यो वचन अति कोपि रे, मंदोदरीकिशोर ॥
बल को होय घमंड तुहिं, बाहुयुद्ध करु आय ।
देख हमारो बाहु बल, यमपुर देत पठाय ॥
इन्द्रजीत बोल्यो हरषि, रे कपि बोलु सँभारि ।
बाहुयुद्ध नहिं करत कहुँ, राजकुमार प्रचारि ॥
हम न मल्ल नहिं मल्लयुध, सीखे बालहि काल ।
विश्वविदित धनुधर अहौं, सकल कपिनको काल॥
तबहिं लषण हनुमानको, लीन्ह्यों निकट बुलाय ।
रामानुजको पवनसुत, लीन्ह्यों कंध चढ़ाय ॥

छन्द हरिगीतिका ।

धायो प्रभंजननंद लीन्हें कंध लक्षनलाल ।
उत ते सरुष दशमुख सुवन आयो महा विकराल ॥
तब इन्द्रजित बोल्यो वचन रहु सावधान प्रवीर ।
बोल्यो लषण बिन बल दिखाये तोर बातैं जीर ॥
अस कहि हन्यो सौमित्र पंच नराच ताहि कराल ।
ते बाण तनु घननाद के ह्वै गये आसु दुशाल ॥
घननाद लै पुनि तीन शर मारचो लषण तनु माहिं ।
ते बेधि बख्तर विधे तनुपै पीर कीन्हें नाहिं ॥
दोउ विश्व विदित प्रवीर चोखे दोउ महा रणधीर ।
दोउ परम दुर्जय दुराधर्ष सहर्ष वर्षत तीर ॥
दोउ तेज तुल्य घमंड तुल्य उदंड तुल्य अशोक ।
दोउ लरत वासववृत्रसम जनु करत लोक अलोक ॥
दोउ भरे समर उमंग दोऊ चहत जीतन जंग ।

दोउ तजत भरभर शरनिकर नहिशिथिल दोउ करअंग॥
तहँ लषण कीन्हीं लाघवी कछु तजी सायकधार ।
करि घोर धनु टंकोर दश दिशि भरयो शोर अपार॥
कछु भयो विवरणवदन दशमुखसुवनको तिहि काल ।
बोल्यो विभीषण लषण याको आयगो अब काल ॥
अगणितशरन मारयो लषण भो इन्द्रजीत विहाल ।
उठिकै मुहूरत एकमहँ बोल्यो वचन ततकाल ॥
रे राजसुत तुहि सुरति विसरी नागपाशहि केरि ।
जो लख्यो मम बल प्रथम रण सो लखहु आजहु फेरि ॥
अस कहि हन्यो शर सप्त त्यों हनुमानको दश बान ।
अपने ककाको हन्यो शत शर द्विगुण क्रोध अमान ॥
बोल्यो लषण सायक तिहारे करत नेकु न पीर ।
करि जोर मारहु इन्द्रजित नहिं होहु समर अधीर ॥
तब हन्यो लछिमनको सहस शर इन्द्रजीत प्रचारि ।
कटि परयो बखतर लषणको माची समर झनकारि ॥
तब हन्यो बाण हजार रामानुजहु वीर विशाल ।
कटिपरयो बखतर इन्द्रजितको मनहुँ तारण जाल ॥
दोउ हनहिं दोहुँनको परस्पर रुधिर बूड़े अंग ।
निर्धूम पावकसरिस सोहत बढ़े युद्ध उमंग ॥
दोउ विधे सायक सकल तनु नहिं रह्यो तिल भरि ठोर ।
दोउ बाण छाये गगनमहँ अँधियार भो चहुँ ओर ॥
दोउ छिपत प्रगटत बाण धारन श्रम शरीर न होत ।
जहँ जात वासवजित चढ़यो रथ तजत विशिख अकोत॥
लै जात लछिमन पवनसुत तहँ बाणवृन्द बचाय ।
दोउ तजत बहु दिव्यास्त्र रणमहँ निपुणता दरशाय ॥

देखत विमानन चढ़े सुरवर द्वंद्वयुद्ध कराल ।
उत राक्षसेंद्रकुमार इत सौमित्रवीर विशाल ॥
सागर पहारन दिशि विदिशि आकाश छाये बान ।
उत खड़े राक्षस अचलइव इत खड़े कीशसमान ॥
दोउ सैन्य देखत समर कौतुक लिखित चित्र अकार ।
नहिं देखिपरत प्रवीर दोउ करि समर शर अँधियार ॥
रावणअनुज तहँ लग्यो मारन राक्षसान अपार ।
शाखामृगन बोल्यो वचन निशिचर करहु संहार ॥
गे मारि रण भट कुंभकर्णादिक अनेकन वीर ।
अब रह्यो एकहि बाचि यह मारहु सबै कपिधीर ॥

दोहा—सुनत विभीषणके वचन, धाये वानर ऋक्ष ।
मारनलगे निशाचरन, मेघनादपरतक्ष ॥
जाम्बवान लै विटप कर, हन्यो निशाचरवृन्द ।
गिरे परे डगरे भिरे, लरे करे बहु फन्द ।

छन्द चौबोला ।

तहँ ऋक्षराज उखारि वृक्षन लक्ष ऋक्षन संग ।
मारयो अनेकन राक्षसान कियो ततक्षन जंग ॥
नहिं भागि बाचत निरखि राक्षस लौटिलपटे आय ।
तिहि देखि पवनकुमार लषणहिं भूमिमहँ बैठाय ॥
धायो महीधर लै प्रचारत ऋक्षपति ढिग जाय ।
करिकै कदन निशिचरणको दीन्ह्यो सुराशि लगाय ॥
उत देखि लछिमन भूमिठाढ़े तजि विभीषण काहिं ।
अतिकोपि धायो इन्द्रजित अस कहत बचतो नाहिं ॥
दोउ करन लागे युद्ध उद्धत हनि परस्परबान ।
शरजाल दोऊ दुरत दीसत यथा पावस भान ॥

खैंचत गहत संधत धनुपकर्षत तजत तुकि तीर ।
मण्डल करत कोदण्ड दोऊ लखिपरत नहिं वीर ॥
दोउ निरखिपरत अलातचक्रसमान ज्वलित कृशान ।
जनु चारि ओरहु अनलकन झरझर झरस झहरान ॥
अवनी अकाशहु दिशन विदिशन रहे सायक छाय ।
दोउ लरत कहुँ जुरि जात कहुँ बिलगात रोप बढ़ाय ॥
दोउ दुहुँनको नहिं देखिपरत सु होत विभ्रम भूरि ।
झारत शरन अति वेगसों कहुँ निकट ह्वै कहुँ दूरि ॥
भरिगे निरंतर शर भयो अवकाशरहित अकाश ।
सागर भयो शरसंकुलित मुद्रित भई दश आश ॥
मनु गये अस्ताचल दिवसपति भई भादोंराति ।
निशिचर कपिन शोणित सरित वहती अमित घहराति॥
किलकत भयंकर भूत चहुँकित करत शोणित पान ।
नहिं वात बहत न ज्वलत पावक देवऋषि अकुलान ॥
मुनि लोक स्वस्ति सशोक भाषत प्रलय मानो होति ।
नभते गिरत गिरवान अगन विमान छावत ज्योति ॥
तिहि काल ताजि शर चारि वेध्यो लषण तासु तुरंग ।
ताजि भल्ल एक प्रवल्ल काट्यो सूतशिर साधि जंग ॥
घननाद अति अविषाद पगसों गह्यो वाजिन वाग ।
चालत तुरंगन शरन घालत कपिन अचरज लाग ॥
तव लषण मारि पतत्रि अगणित लियो रिपु कहँ छाय।
तहँ लषणको लागे प्रशंसन कीश आनँद पाय ॥
तह गंधमादन शरभ रभस प्रमाथि चारिहु रीसि ।
कूदे तुरंगनउपर डारे अंग अंगनि पीसि ॥
हत वाजि सारथि निहत लखि घननाद कूदि तुरंत ।

धायो लषण पर बाण वर्षत वेगसों बलवंत ॥
तहँ भो बरोबर युद्ध दोऊ क्रुद्ध वीरन केर ।
नहिं तजत निज निजनाथको कपि रजनिचर करि घेर॥
तब कह्यो रावणपूत सिगरे यातुधान बुलाय ।
मैं करहुँ अब अँधियार सायक गगनमहिमहँ छाय ॥
जबलों गगनते गिरहि शर जबलों न होइ प्रकाश ।
तबलों न भाग्यो वीर कोउ नहिं तज्यो समर हुलास॥
अस कहि सुराधिपजित धुन्यो शर कियो तम चहुँओर।
अतिलाघवी करि गयो लंक निशंक तजि रणठोर ॥
चढ़ि चारु रथ लै सुमति सारथि सैन्य संग लिवाय ।
हय नाधि वर आयो समर कहुको परचो न जनाय ॥
शर झरे भास भये लखे सब ताहि यान सवार ।
लछिमन विभीषण पवनसुत संसन लगे बहु वार ॥

—मेघनाद कोदण्ड तहँ, भयो मण्डलाकार ।
महा लाघवी करि प्रबल, कियो कपिन संहार ॥
ताहूते करि लाघवी, रामानुज रणधीर ।
तासु चाप काट्यो चटक, दियो बंद करि तीर ॥
धनुष दूसरो कर करत, सोउ काट्यो करमाहिं ।
लषण पाँच सायक हन्यो, ताकि तासु उर काहिं॥
कवच फोरि तनु फोरिकै, धसे भूमिमहँ बान ।
विकल भयो शोणित वमत, इंद्रजीत बलवान ॥
सम्हरि साजि धनु शीघ्र अति,लाखन बाण चलाय ।
लियो लषण कहँ तोपि तहँ, मघाझरीसी लाय ॥
लषण काटि सिगरे शरन, तोपि ताहि शरवृन्द ।
त्रय त्रय शर रजनीचरन, मारचो दशरथनंद ॥

मेघनाद रामानुजहि, बारहिबार बखान ।
मारयो भर भर शर निकर, प्रखर शरासन तान ॥

छन्द भुजंगप्रयात ।

असंभ्रांत रामानुजो छोड़ि बाणा । कियो सारथी को तुरंतैअप्राणा ॥
विना सारथीके भये ते तुरंगा । करैं मंडलै पंथ ले विद्ध अंगा ॥
हनै लक्षनै ताकि तीखे तुरंगै । चलै एक संगै रुकै नाहि जंगै ॥
समै पाय कै सो सुमित्रा कुमारा । अभेदै सनाहै तनैं माहिं धारा ॥
गड़े नाहिं लागे शरै ते सनाहै । तहाँ रावणी बाण तीनै प्रवाहै ॥
लगे लक्षनै के पतत्री ललाटे । लसे शृङ्ग ज्योतीन शैलैसबाटे ॥
तहाँ वीर रामानुजौ वेग भारी । दियो पाँच बाणै मुखैतासुमारी ॥
दुराधर्ष हर्षी दोऊ युद्ध ठाने । लखै राक्षसौ वानरौ ते चकाने ॥
कढ़े देह दोहूनके रक्त बुल्ले । मनौ शाल्मली किंशुकै वृक्षफुल्ले ॥
इतै राम भ्राता उतै इन्द्रजीतै । चहै वीर दोहूँन को दोउ जीतै ॥
कियो लाघवी रावणै को कुमारा । यकै एक बाणै सबै शीशमारा ॥
तहाँ यातुधानेशके भ्रात काहीं । हन्या तीन बाणै मुखै शंकनाहीं ॥
तबै लंक राजानुजौ कोपिधायो । गदा मारि वाजीन भूमैगिरायो ॥
द्रुतै इन्द्रजीतौ हत्यो शूल ताहीं । कियो खंड द्वै लक्षणैं लागिनाहीं ॥
तज्यौ पंच नाराच लंकेश भ्राता । कियोरावणी अंगमेंपंचघाता ॥
ककापै महाकोपि सो इन्द्रजीता । दियो अंतकै जो शरैशत्रुजीता ॥
कह्यो तू मरयोरे तज्यो बाणसोई । सखा नाश त्योंलक्षणोलीनजोई ॥
दियो स्वप्न में बाण जो वित्तनाथा । लियो राम भ्रातासुईबाणहाथा ॥
दुराधर्ष दुजै तज्यो तानि काना । लरे बाण दोऊ गये आसमाना ॥
गिरे खाक है भूमिमें बाण आई । रहे वीर दोऊ समानै लजाई ॥
तहाँ वारुणास्त्रै तज्यो रामभ्राता । चल्योकालसोंतीनलोकैविख्याता ॥
तज्यो रौद्र अस्त्रै महेन्द्र प्रमाथी । दल्यो वारुणास्त्रै यथा सिंहहाथी ॥

महापावकास्त्र तज्यो मेघनादा । बढ़ीज्वालमालाकियोसोविषादा ॥
इतै भास्करास्त्रै तज्यो रामभ्राता । भयो भासभारीदिशानै अघाता ॥

दोहा–उभय शस्त्र लरि गगनमें, करि प्रकाश चहुँ ओर ।
गिरे दग्ध ह्वै धरणिमहँ, रहे बरोबर जोर ॥
इन्द्रजीत असुरास्त्र तब, तज्यो लषणकी ओर ।
कढ़े ज्वलत मुद्गर खड़्ग, तोमर पाशहु घोर ॥
शूल भुशुंडी असि गदा, कुंतल मुशल कुठार ।
परे वानरी सैन्यमें, लगे करन संहार ॥
लछिमन पाशुपतास्त्र तब, तजो भयंकर रूप ।
भयो नाश असुरास्त्रको, कियो प्रकाश अनूप ॥
जरन लगे सुरगण सकल, कीन्हें हाहाकार ।
जानि व्यथा बड़ि विश्वकी, लषण कीन संहार ॥
पितरदेव गंधर्व मुनि, करि आगे सुरनाथ ।
लषण निकट ठाढ़ भये, सकल कपिनके साथ ॥

कवित्त

प्रवल प्रचंड पुनि लीन्ह्यों बाण रामानुज,
दुराधर्ष दुसह दुरासद है ईशको ।
कै दियो प्रयोग त्यों महेन्द्र अस्त्र मंत्र पढ़ि,
बोल्यो बैन कै भरोस राम जगदीशको ॥
सत्यसंध धरम धुरंधर जो रघुराज,
विक्रम अखंड होय जो पै जानकीशको ।
बाण तौ हमारो यहि बारको पवारो काटि,
डारै बिन बारै अब मेघनाद शीशको ॥

दोहा–अस कहि छोड्यो लषण शर, लग्यो कंठ महँ जाय ।
इन्द्रजीतके शीश को, दीन्ह्यो काटि गिराय ॥

चौपाई

लषण रहे छोड़त बहु बाना । रँगे वीर रँग मरब न जाना ॥
कुंडल क्रीट सहित शिर ताको । कियोप्रकाशितअतिवसुधाको ॥
चढ़े विमानन देव अपारा । एकहि बार किये जयकारा ॥
मर्कटहू रिपुनिधन विलोकी । जय जय लषणकहेविन शोकी ॥
जान्यो लषण मरयो रिपु मोरा । कीन्ह्यो विजय धनुष टंकोरा ॥
भगे निशाचर चारिहु कोरा । डारि डारि आयुध तिहिओरा ॥
घुसे जाय कोउ भय भरि लंका । कोऊ बूड़े उदधि सशंका ॥
लुके निशाचर शैलन माहीं । परे देखि फर पर पुनि नाहीं ॥
भये अस्त जिमि जग दिनराजू । रहतिकिरणिनाहिं कतहुँदराजू ॥
तिमि विलोकिघननाद विनाशा । तजे तमीचर जीवन आशा ॥
सुनासीर नभ दियो नगारा । लषण आजु सुर कंटक टारा ॥
बह्यो सुगंधित सीर समीरा । मिटी लोकपति लोकन पीरा ॥

दोहा—विमल भानुसित भानु भे, भई भूमि विन भार ।
गो ब्राह्मण कंटक टरयो, माच्यो जय जयकार ॥

चौपाई ।

सुख राँचे कपि नाचन लागे । पूंछ उठाय लषणके आगे ॥
शर जर्जरित शिथिलसव अंगा । रामानुज जय रंग अभंगा ॥
विजयी लषण महासुख पाई । चले जहाँ कपिपति रघुराई ॥
हनुमत और विभीषण काहीं । गहे कंध गमनत मग माहीं ॥
मंद मंद चलि सैन्य समेतू । आये जहाँ भानुकुल केतू ॥
गह्यो लषण प्रभुपद अरविंदा । लियलगाय उर रघुकुल चंदा ॥
मिलतप्रभुहि मिटिगेशरघाता । भयोदुगुनबलविमलाविख्याता ॥
कियो प्रदक्षिण लषण रामको । बोल्यो वचन सुनाय नामको ॥
मैं लछिमन लघु दास तुम्हारा । तुव प्रताप सब काज सुधारा ॥

समर हाल लंकेश उचारा । जिहि विधिलषण इन्द्रजित मारा ॥
रघुपति लषण अंक बैठाई । बोले वचन नयन जल छाई ॥
रह्यो बंधु जो तोहिं समाना । सहजै सकल कलेश सिराना ॥

दोहा—तेरे भुजबल लषण म, निर्भय त्रिभुवन माहिं ।
तरयों सिंधु गोपद सरिस, मुहिं शंका कछु नाहिं ॥
अस कहि सूँघ्यो शीश पुनि, आशिष दियोअनन्त ।
जियहु अनन्त अनन्त युग, तुम सम नाहिं अनन्त ॥
तीनि दिवस अरु तीनि निशि, कियो युद्ध घननाद ।
मारि ताहि आये सुखी, मोहिं यही अहलाद ॥
राम सुषेण बुलाय कै, कह्यो वचन सतकारि ।
हनुमत अंगद आदिकन, करहु विशल्य जितारि ॥
लषणहुँ कहँ बिन व्रण करहु, औषध दै सुखदानि ।
तुम धन्वंतरके सरिस, दिव्य औषधी ज्ञानि ॥
सुनि सुषेण रघुपति वचन, औषधि आसुहि ल्याय ।
सो विशल्य करनी सुखद, औषधि दियो सुँघाय ॥
शस्त्रघात मिटिगे तुरत, जस की तस भै देह ।
दुगुन पराक्रम दुगुन बल, भयो दुगुन तनु तेह ॥
हनुमत अंगद नील नल, और विभीषण काँहि ।
आघ्रान करवाय कै, कीन्ह्यों निरुज तहाँहि ॥
जब औषधि गिरि पवनसुत, ल्यावत भो अधराति ।
तब सुषेण सब औषधी, धरि राखी बहु भांति ॥

छन्द चौबोला ।

भये विशल्य विरुज वानर सब ओज तेज बलभारी ।
बारहिंबार सराहत लषणहिं अजय शत्रु संहारी ॥
कोउ मंत्री सुनि इन्द्रजीत वध रावण सभा सिधारी ।

दियो सुनाय निशाचर राजहि गयो आप सुतमारी ॥
सुनि रावण ह्वै गयो विमूर्च्छित तनुकी सुरति विसारी ।
पुनि उठि आँसुन धार वहत दृग बोल्यो गिरा पुकारी ॥
मारुत वहहु आजु अपने मन सूरज तपहु सुखारे ।
इन्द्र वरुण कुवेर यम सुरगण सोवहु पाउँ पसारे ॥
अब का जिये जगतमहँ सुत विन लगति देह ममभारा ।
हमहीं चलव समर सन्मुख अव देहु दिवाय नगारा ॥
अस कहि अतिहि कोपि सीता पर मारन कारन धायो ।
माल्यवान सोइ जरठ निशाचर तिहि वुझाय मुरकायो ॥
एकादशि द्वादशी त्रयोदशि कियो इन्द्रजित युद्धा ।
आज चतुर्दशि चैत कृष्ण की होहु शत्रु पर क्रुद्धा ॥
जौन काप सीतापर कीजै तौन कोप करि रामै ।
पठै मूल बल सैन्य हजूरी करहु विजय संग्रामै ॥
माल्यवान को नाम सुपारसु रह्यो अविंध्य कहावत ।
तासु वचन सुनि कुपित दशानन भन्यो मूँछ फरकावत ॥
ल्याउ मूल बल बोलि हमारो सोई सैन्य हजूरी ।
परचर दौरि वोलि ल्याये द्रुत सैन्य भयंकर भूरी ॥
दीन्ह्यों तव निदेश दशकंधर जाहु सबै इक साथै ।
नहिं मारयो कपीन बिचारे गहि ल्यावहु रघुनाथै ॥
सुनत मूल बल चल्यो महादल भट रथ तुरँग मतंगा ।
महावली धाये रजनीचर चारु चमू चतुरंगा ॥
उड़ी धूर पथ पूरि रही नभ भयो भयावन शोरा ।
कपि धुजिनीमहँ धँसे धाय खल खल भल भयो न थोरा ॥
क्रुद्ध कीश भे शुद्ध युद्ध कहँ किये रुद्ध भट उद्धै ।
अति विरुद्ध करते निरुद्ध कपि रण त्रिशुद्ध लघु बुद्धै ॥

बलीमुखन कहँ बली निशाचर दीन्हें मारि हटाई ।
राम शरनको ताकि वचन हित मर्कट चले पराई ॥
खिचलत लखि वानरी वाहिनी वीर शिरोमणि रामा ।
कह्यो लषण कपिपति हनुमतसों लखहु सबै संग्रामा ॥
हौं अकेल दल यातुधानके धसत धनुष कर धारी ।
मति कोई आवहु सँग मेरे रुचि ऐसही हमारी ॥
अस कहि कौशलपाल कराल कोदंड चंड टंकोरा ।
धँस्यो निशाचर सैन्य अकेले दशरथभूप किशोरा ॥
करि लाघव राघव झारयो शर चाप मंडलाकारा ।
मनु घन मंडल महँ रवि मंडल झारत झुंड अगारा ॥
झरत बाण दीसत चहुँकित ते लखि न परत रघुवीरा ।
गिरत परत उठि भ्रमत भजत भट लटपट भटकत वीरा॥
हटकत लटकत चटकत मटकत नटखट करहिं अनेका ।
झटपट गिरहिं उठहिं भट चटपट अटपट भयो विवेका ॥
चट चट टूटत पट्ट पाश बहु फट फट फूटत मुण्डा ।
घट घट महँ सटपटी अँटी तहँ कटि कटि धावहिं रुंडा ॥
शोणित तटिनी तट घट घट महँ योगिनि नटिनी नाँचैं ।
घटघट करहिं पान शोणित को हटि हटि रटि रटि राँचैं ॥
विकट भूत भट निकट चटक चलि कटकट तन्त बजावैं ।
मर्घट इव खटकत सबके घट लखि मर्कट सुख पावैं ॥
दोहा—पुनि छोंड्यो प्रभु समर महँ, मोहनास्त्र शर घोर ।
सकल यामिनीचरन को, भयो भामिनी भोर ॥

छंद चौबोला ।

यक एकन को पकरत तिय गुणि यक एकन पर कोपै ।
यक एकन पर लोथिन तोपत शिर काटै हनि धोपै ॥

यक एकन कहँ जानत रामै हनैं तेग लऊकारी।
कोटिन राम रूपको देखहिं भ्रम वश निशि संचारी॥
यह आयो यह आयो मारो मारो धरो धरोरे।
करो करो वल लरो लरो भल हरौ प्राण न टरोरे॥
दिशिमहँ रामविदिशमहँ रामहिं भू अकाशमहँरामा।
जहँ देखैं तहँ राम रूप शठ करैं कौन संग्रामा॥
रामचक्र लखि परयो जगत सब झरैं बाण चहुँओरा।
आपुस महँ लरिलरि सब मारिगे रजनीचर वरजोरा॥
लखे हजारन रूप रामके कालचक्र सम धावत।
कार्मुककनकमंडलाकारहिचारि ओर चमकावत॥
महिते नभते सकल दिशिनते भरभर शर निकराहीं।
पैनिशिचरतहँसकलपरस्परकटिकटिगिरिगिरिजाहीं॥
यहिविधि मारि मूल वल रघुवर ठाढ़ो समर अकेला।
मनहुँ मत्त मातंग वृन्द दलि राजत सिंहनवेला॥
महारथी दश सहस निशाचर मारुत जव रथ रोहा।
अष्टादश हजार गजवाहन सपन्यो जिनहिं न छोहा॥
चौदह सहस तुरंग सँवारे महावली अनियारे।
पैदर वीर वली द्वै लाखहि निशिचर नाथ प्रचारे॥
आये काम राम संग्रामहि धूम धाम अति कीन्हें।
चारि दंडमहँ रघुकुलनायक सव कर वधकरि दीन्हें॥
रथ तुरंग मातंग संग ते परे रहे रणभूमी।
देखनवारे खबरि कहे भजि चरन करन मुख चूमी॥
देव प्रमोदित चढ़े विमानन फूलनकी झरिलाये।
जय रघुनन्दन वीर शिरोमणि गावहिं वाज वजाये॥
जहाँ लषण सुग्रीव विभीषण अंगद अरु हनुमाना।

प्रभुविजयी सहजहिं पगु धारे भयो न नेकु गुमाना॥
वंदि वंदि पद रघुनन्दनके कपिगण करहिं प्रशंसा।
जय जय अप्रमेय प्रभु भुज बल हंस वंश अवतंसा॥
ऋक्षराज कपिराजहि अंगद लंकशहि प्रभु भाखे।
मोहनास्त्र यह की शंकर कर की हमहीं कर राखे॥
कहे जोरि कर सकल वीरवर तुम सर्वज्ञ सुजाना।
तुमहि न वहुत निशाचर गंजनकोकरि सकै बखाना॥
हल्ला पर्‍यो सुलंक महल्ला रोवहिं निशिचर नारी।
हा पितु हा सुत हाय बंधु कहि देहिं रावणहिं गारी॥
दै नारी रावणको गारी बोलहिं वचन पुकारी।
निशिचरकुलक्षयकारणजानहुशूर्पणखाव्यभिचारी॥
यहि विधिकरहिंविलाप अनेकनजुरिजुरिरावण द्वारे।
सुनि दशकंधर क्रोध शोक वश ऐसे वचन उचारे॥
समर हेत हमहीं जैहैं अब देहु बजाय नगारे।
जेकछु बचे होइँ रजनीचर ते सँग चल हमारे॥
आजु वेधि बाणन बंदरदल उऋण होहुँ सब काहीं।
जे हतिगे कपि कर तिनकी जग वीर बड़ाई नाहीं॥
दशमुखशासनसुनत निशाचर सजे समरहित शूरा।
बीस लक्ष रथ तीस लक्ष गज पैदर पुहुमी पूरा॥
साठि करोर तुरंग सँवारे सैनापति भट चारी।
चली निशाचरकी अनीकिनी परी दिशन अँधियारी॥

दोहा—बजे जुझाऊ बाजने, रही धूरि नभ पूरि।
चलत कटत कंपति धरणि, भे पषाण रज चूरि॥

छंद चौबोला।

दशमुख लख्यो बानरी सैना पारावार समाना।

धस्यो धुनत शर पैन अपारन अति उत्पात दिखाना ॥
भये मंद तहँ भान विदिश दिशि अंधकार अति छायो ।
बोले सकल विहंग दीन सुर भूमि कंप दरशायो ॥
वर्षन लागे रुधिर बलाहक बैठ्यो गीध ध्वजामें ।
गिरहिं तुरंग संग सब सम थल शब्द भयो वसुधामें ॥
उलका गिरी तासु स्यंदन पर फिकरन लगे सियारा ।
अशकुन गन्यो न कछु मनमें शठ सन्मुख समर सिधारा॥
मारन लाग्यो महा करालन बाणन सों दशभाला ।
दशमुख सन्मुख समर प्रखर शर सहै को वीर विशाला ॥
विन शिर विनभुज विन पद मर्कट होन लगे तिहिकाला।
चली बलीमुख सैन्य विचलि जिमि निरखिसिंह गजमाला॥
आयो रावण प्रभुके सन्मुख तहँ तुरंत कपिराजा ।
धायो महा शालको तरु लै संयुत कपिन समाजा ॥
मार्‍यो अमित राक्षसन रोषित विरूपाक्ष तहँ धायो ।
अरु दुर्धर्ष चढ्यो इक सिंधुर कपिपतिके ढिग आयो ॥
विरूपाक्ष दुर्धर्ष वीर दोउ एकहि नाग सवारा ।
मारि शरन छाये कपिराजहि जिमि घनगिरि जलधारा ॥
हन्यो दौरि सुग्रीव महातरु गिर्‍यो भूमि गजराजा ।
लै करवाल ढाल कूदे तहँ निशिचर वीर दराजा ॥
विरूपाक्ष मार्‍यो सुग्रीवहि खड्ग शीश महँ धाई ।
ह्वै विसंग कपि गिर्‍यो भूमि महँ नेसुक मुर्च्छा आई ॥
पुनि उठि दौरि हन्यो मूठी उर विरूपाक्ष तहँ डाटी ।
मारि कृपाण कंध कपिपतिके कनक कवच दिय काटी ॥
तल प्रहार कीन्ह्यो कपिनायक गयो सो वीर बचाई ।
कपिराजहु करि बहुरि लाघवी निशिचर निकट सिधाई ॥

मारयो थापर तासु ललाटै फाट्यो तासु कपाला ।
विरूपाक्ष मरि गिरयो भूमिमहँ निकसे नयन विशाला ॥
विरूपाक्षके गिरत समर महँ उभय सैन्य इक संगा ।
हर्षित शोकित चली चहूंकित जिमि वराधित जल गंगा ॥
विरूपाक्षको मृतक विलोकत रह्यो महोदर दूजो ।
बोल्यो ताहि दशानन धावहु यही समय हित पूजो ॥
धायो बली महोदर सन्मुख कियो कपिन दल भंगा ।
तहँ कोपित कपिनायक आयो भरो वीररस रंगा ॥
हनी शिला यक ताहि महोदर काट्यो बाण चलाई ।
मारयो वृक्ष ताहि पुनि काट्यो लियो परिघ कपिराई ॥
मारि परिघ तोरयो स्यंदन तिहि कीन्ह्यो तुरँग निपाता ।
सा ल गदा हन्यो कपिपतिको राक्षस वीर विख्याता ॥
परिघ गदा टूटे दोहुँनके लपटि गये दोउ वीरा ।
मल्ल युद्ध तहँ करन लगे दोउ कपि राक्षस रणधीरा ॥
झपटि महोदर लियो खड्ग यक हन्यो कीशपति काहीं ।
लियो छड़ाय कृपाण कीशपति मारयो हुमकि तहाँहीं ॥
कट्यो तासु शिर गिरयो महोदर भगी निशाचर सैना ।
दूजो महापार्श्व तहँ धायो लगी ताहि कछु भैना ॥
अंगद चमू व्यथित करि दीन्ह्यो मारि हजारन बाना ।
अंगद धाय उठाय परिघ यक हन्यो शीश बलवाना ॥
रथ ते गिरयो भूमि मूर्च्छित ह्वै ऋक्षराज तब धाई ।
मारि वृक्षताको दल नाश्यो निशिचर चले पराई ॥

दोहा—महापार्श्व उठि तुरत तहँ, लै कर कठिन कुठार ।
मारयो कुपित प्रचारिकै, बचै न वालिकुमार ॥
वालिसुवन करि लाघवी, तासु कुठार बचाय ।

हृदय हनी यक मूठि तिहि, मरो भुजा पसराय ॥
भागी फौज निशाचरी, ओज मोज कपिसैन ।
निरखत दशकंधर कुपित, कह्यो सूतसों बैन ।
रे सारथि लै चलु रथहि, जहाँ लषण रघुवीर ।
विक्रम देखहुँ दुहुँनको, हने बहुत मम वीर ॥

चौपाई ।

रावणवचन सुनत सो सूता । लै धायो रथ अति मजबूता ॥
रावण तामसास्त्र शर घोरा । तजो चटक मर्कटगण ओरा ॥
हाहाकार रह्यो दल छाई । चली वलीमुख सैन्य पराई ॥
सहि न सकै रावणशरधारा । भयो समर गगन अँधियारा ॥
भागत सैन्य निरखि रघुराऊ । चले मंदगति युद्ध उराऊ ॥
निरख्यो जाय राम कहँ रावन । मनहुँ नीलमणिशैल सुहावन ॥
वाम लषण दहिने कपिराजू । खड़ो विभीषण वीर दराजू ॥
हनुमत अंगद अरु नल नीला । द्विविद मयंद महाबल शीला ॥
लषणनिरखि रणरावणआवत । बढ्यो युद्धहित बाण चलावत ॥
तजी लषण सायकवरधारा । मूँद्यो रिपुरथ लगी न बारा ॥
लषण बाण वारणकरि रावन । आयो जहाँ जगतपति पावन ॥
रामहिं देखि तजी शरधारा । इक दश शत सहस्र विन वारा ॥

दोहा–तिल तिल करि रावण शरन, रघुनंदन रणधीर ।
मारि तीर अति पीर किय, रह्यो न धीर शरीर ॥

चौपाई ।

करन लगे दोउ युद्ध भयावन । जग अभिराम राम अरु रावन ॥
छूटी दुहुँ दिशिते शरधारा । ह्वैगो समरभूमि अँधियारा ॥
राम रावणहिं रावण रामहिं । छावत समर मत्त संग्रामहिं ॥
मंडल करहिं अनेक विचित्रा । यक अमित्र जग यक जग मित्रा ॥

चढ़े विमान देवसमुदाई । देखहिं रावण राम लराई ॥
रावण राम समर जब भयऊ । भूरि भुवनमहँ भय भरिगयऊ ॥
महा भयंकर धनुधर दोऊ । रह्यो न है होनो अस कोऊ ॥
भरिगे गगन बाणवरवृन्दा । परी मंदगति सूरज चन्दा ॥
जिमिदमकहिं दामिनिघनमाहीं । बाणवृन्द तिमि गगन सुहाहीं ॥
जहँ कहँ छिद्र होत शरजाला । सो गवाक्षसम लसत विशाला ॥
ह्वै गो समर शरन अँधियारा । जिमि भादौं निशि मेघ अपारा ॥
रहे अचल दोऊ दल ठाढ़े । रावण राम समर सुख बाढ़े ॥

—भयो वृत्त वासव समर, जैसे सतयुगमाहिं ।
तिहिविधि ताते अधिक कछु, रावण राम लखाहिं ॥

चौपाई।

उभय विशारद अस्त्र अनंता । उभय वीर संगर बलवंता ॥
उभय करत मंडल बहु भाँती । उभय तजतशर अगणित जाती ॥
उभय वीर जहँ २ रण जाँहीं । तहँ तहँ शर तरंग लहराहीं ॥
करि लाघवी तहाँ दशभाला । राम ललाट रच्यो शरमाला ॥
कमलमाल इव शोभित भयऊ । नहिं कछुव्यथा नाथ कहँ दयऊ ॥
प्रभु रुद्रास्त्र तज्यो अतिघोरा । रावण छप्यो सरथ तिहि ठोरा ॥
कवच अभेद दशानन पहिरे । गये बाण ताते नहिं गहिरे ॥
रघुनायक सायक पुनि पांचा । मारयो रावण भाल नराचा ॥
भाल फोरि प्रविशे शर धरनी । देव सराहत प्रभुकी करनी ॥
तनक विकल ह्वै उठ्यो दशानन । छोड्यो असुर अस्त्र पंचानन ॥
सिंह व्याघ्र वृक कढ़े हजारन । काक कंक अरु गीध अपारन ॥
रासभ कुक्कुट श्वान वराहा । सफरी सर्प मकर भय बाहा ॥
किये भीति कपि दलमहँ आई । लिये एक एकन कहँ खाई ॥

दोहा—तजो राम सूर्य्यास्त्र कहँ, चंद्र सूर्य्यमुख बान ।

उल्का ग्रह नक्षत्र मुख, तिमि दामिनी समान ॥

चौपाई ।

जरे दशानन सायक घोरा । निशिचर जरनलगे चहुँ ओरा ॥
मयकृतअस्त्र तजो दशभाला । निकसे शूल गदा करवाला ॥
मूशल मुद्गर कार्मुक पाशा । कियो गाजसम शोर प्रकाशा ॥
तब गंधर्वअस्त्र प्रभु त्यागा । मयकृतअस्त्र खोजनहिं लागा ॥
सौरअस्त्र छोडयो तब रावन । कढ़े चक्र बहु चमकि भयावन ॥
चमकत चक्र गगनमहँ छाये । गिरि कपिदलअतिभीति बढ़ाये ॥
चन्द्रअस्त्र छोड़्यो रघुराई । गिरे लूक लाखन तहँ जाई ॥
पुनि शर भर भर कोशलराऊ । ताजि वेधे तनु बच्यो न काऊ ॥
तब त्यागे दशमुख दश बाना । वेध्यो सकल अंग भगवाना ॥
प्रभु उखारि बाणन महि डारे । कहे वचन शर निबल तिहारे ॥
तिहि अवसर रामानुज कोपी । मार्‍यो सात बाण चितचोपी ॥
इक शर काट्यो ध्वजा पताका । पुनि काट्यो सारथिशिर ताका ॥

दोहा—कियो खण्ड कोदण्ड द्वै, मारि पञ्च शर घोर ।
तहाँ विभीषण लै गदा, मार्‍यो चारिहु घोर ॥

चौपाई ।

देखि विभीषण रावण कोपा । चाह्यो करन बंधु कर लोपा ॥
वज्रसरिस इक शक्ति कराला । हन्यो विभीषणको दशभाला ॥
बीचहिं लषण कीन त्रय खंडा । हँसन लगे वानर बरिवण्डा ॥
तबहिं दशानन अतिहि रिसाई । ब्रह्मदत्त लिय शक्ति महाई ॥
तजत वदनसो पावक ज्वाला । मानहुँ कालरूप विकराला ॥
जान्यो लषण विभीषण नाशा । आगू भयो बचावन आशा ॥
हने शक्ति कहँ सायक लाखा । दियो नाशि दशमुख अभिलाषा ॥
तब लंकेश कोपि कह बाता । लियो बचाय मोर शठ भ्राता ॥

ताते सावधान रहु वीरा । भस्म करी यह शक्ति शरीरा ॥
अस कहि लषण ताकि रणधीरा । तजी शक्ति पुरदायक पीरा ॥
घण्टा अष्ट बद्ध विकराला । मय निर्मित धाई जनु काला ॥
आवत शक्ति देखि रघुराई । कह्यो स्वस्ति जीवै मम भाई ॥
दोहा–लगी लषण उर माँझसो, कियो धरणि लगि फोर ।
शिथिल अंग विन संज्ञ ह्वै, गिरिगो राजकिशोर ॥

चौपाई ।

रघुपति विकल देखि लघु भ्राता । ह्वै गे सजल नयन जलजाता ॥
कियो विचार मनाहिं रघुवीरा । यहि क्षण उचित न होव अधीरा ॥
नहिं विषाद कर अवसर आजू । पाय समर कहाय रघुराजू ॥
बढ़ि आगे रघुकुल मणि वीरा । हन्यो कठिन कोटिन तहँ तीरा ॥
लषण विकल लखि अतिदुख पाये । हनुमत अंगद आदिक धाये ॥
लगे उखारन शक्ति कराली । कढ़ै न कठिन लषण उरशाली ॥
राम बहुरिसो शक्ति उखारी । दै भुज बीच तोरि तिहि डारी ॥
शक्ति उखारत महँ लंकेशा । दियो छाय हनि बाण अशेशा ॥
प्रभु विसराय विपुल शरघाता । लियो अंकमहँ निज लघु भ्राता ॥
कपिपति मारुति काहँ बुलाई । बोल्यो सरुष वचन रघुराई ॥
रहहु लषण कहँ घेरि कपीशा । विक्रम काल मोहिं यह दीशा ॥
मिल्यो बहुत दिनमहँ यह काला । नयनन देखिपरयो दशभाला ॥
दोहा–जिमि चातक चितवत रहत, स्वाती वारिद बुंद ।
तिमि चाहत हमहूं रहे, रावण समर अनंद ॥

चौपाई ।

राज त्याग दंडकवनधावन । सीताहरण शोक उपजावन ॥
सहे नरक सम अमित कलेशा । आजु रही नहिं ताकर लेशा ॥
सुनहु सबै चित दै कपि ज्ञानी । भुज उठाय भाषौं मैं वानी ॥

की रहिहै रावण जग आजू । की रहिहैं जगमें रघुराजू ॥
होई अब नहिं दूसर बाता । जानहु सत्य वीर विख्याता ॥
यहि हित मर्कटकटक बुलायो । बालि मारि नृप सुगल बनायो॥
सागर सेतु रच्यो यहि हेतू । समय सु लह्यो बहुतकरि नेतू॥
गरुड दीठ किमि बचै भुजंगा । दशमुख किमि जैहै करि जंगा ॥
चढ़ि गिरि शीश कपीश निशंका । लखहु मार रावण रण बंका॥
आजु राम रामता निहारौं । नेकु शंक मनमहँ नहिं धारौं ॥
करिहौं कर्म आजु मैं सोई । चारिहु युग गैहैं कवि जोई ॥
तीनिहुँ लोक सिद्धि गंधर्वा । चारण विद्याधर सुर सर्वा ॥
दोहा—जबलगि जगती जग रही, तबलगि सहित समाज ।
करहिं गान गिरवान सब, करौं कर्म जो आज ॥

चौपाई ।

अस कहि र उदंडा । कियो धनुष टंकोर अखंडा ॥
हन्यो हजारन सायक घोरा । शर अँधियार भयो चहुँ ओरा ॥
रावण राम बाण नभ छाये । लै विमान सुर विकल पराये॥
गिरहिं गगनते कटि कटि बाना । महा भयंकर लूकसमाना ॥
मच्यो बरोबर ज्या तल शोरा । कियो जगतमहँ सब कहँ भोरा॥
प्रभु लाघवी वरणि नहिं जाई । मानहुँ मघा मेघ झरिलाई ॥
मनहुँ कढ़त सब अंगन बाना । गगन महीन दिखात दिशाना॥
कसमस परचो लंकपति काहीं । धनुष धरत नहिं बनत तहाँहीं ॥
तिल तिल भयो तासु कटियाना । अंग भंग भे तुरँग महाना ॥
छिन्न भिन्न भे सारथि अंगा । भये खंड बहु तासु निखंगा ॥
मुकुट कट्यो करि चटक चमंका । कट्यो धनुष दामिनी दमंका ॥
कसमसान दशमुख मनमाहीं । देख्यो प्राण बचत अब नाहीं ॥
दोहा—रामबाणके वेगसों, यातुधान रणधीर ।

लंकद्वारलों उड़ि परयो, घुस्यो भवन भय भीर ॥

चौपाई ।

रावण जीति राम रणधीरा । आयो लखन लषण रघुवीरा ॥
विकलअनुजलखिविकलखरारी।बोलि सुषेणहिं गिरा उचारी ॥
रावण शक्तिनिहत मम भाई। तलफत अहिसमान दुखदाई ॥
शोणितगात निहारु सुखेना । लगत फीक लछिमन विन सेना ॥
रण बाँकुरो लषण लघु भाई । तिहि विन जिये न मोरि भलाई॥
हाय लषण विन जीवहुँ आजू। धिकममधनुषसकलधिककाजू ।
नहिं दिखात कछु आँखिनमाहीं । भरे नयन जल पसरत नाहीं ॥
लखौं स्वप्न धौं फुरि यह होई । आजु पीठ पाछे नहिं कोई ॥
करिहै सिगरो जगत हँसाई । आये निज लघु बंधु गँवाई ॥
लषण विना नहिं जीवन योगू । त्रिभुवन भोग नरक कर भोगू ॥
विजय पाय नहिं कीरति मोरी । देहौं लंकहि सीतहि छोरी ॥
विना लषण जीवन तनुभारू । शशिसुख अंधहि कौन विचारू ।

दोहा—जयते सियते समरते, अब न प्रयोजन मोर ।
कौन लाय मुँह अवधको, जैहौं तजि यहि ठोर ॥

चौपाई ।

भवन छोड़ि मम संग सिधारा । लषण भ्रात प्राणहुँते प्यारा ॥
जस आयो मम सँग लघु भाई । हौं जैहौं तिहि सँग जहँ जाई ॥
अब नहिं मिली लषण अस भ्राता। चौदह वर्ष विपिनमहँ त्राता ॥
देशन देश मिलैं वरनारी । देशन देश कुटुंबहु भारी ॥
सो न देश मुहिं नयन दिखाता । मिलतो जहाँ सहोदर भ्राता ॥
कौशलराज लषण विन सूनी । मेरी भइ अपकीरति दूनी ॥
कहिहौं काह सुमित्रै जाई । जब पूछिहैं कहाँ तुव भाई ॥
उत्तर का कौशल्यहि देहौं । कौन भाँति भरतहि समुझैहौं ॥

रिपुहनसों किहि भाँति बतैहौं । अबतो अवधनगर नहिं जैहौं ॥
इहैं मरण अब नीक दिखाई । पायों पूर्वपापफल भाई ॥
हाय लषण मम प्राण पियारे । शूर शिरोमणि जग उजियारे ॥
मोहिं अकेले छोड़ि तुराई । देखहुँ स्वर्ग जात लघु भाई ॥

दोहा—तब तब समझायो हमैं, जब जब कीन विलाप ।
कस अब नहिं उठि लषण तुम, हरहु मोर संताप ॥

चौपाई ।

यहि विधि रघुपति करत विलापा । पावत लषण लखत संतापा ॥
कह्यो सुषेण सुनहु रघुवीरा । धर्मधुरंधर तजहु न धीरा ॥
विना प्राण नहिं लषण शरीरा । यह विचारि कछु धारहु धीरा ॥
लषण वदन नहिं भयो मलाना । शरदजलदसम तेज महाना ॥
पंकजपाणि चरण अरुणारे । अतिकोमल प्रिय लगत निहारे ॥
करहु न रघुपति नेकु विषादा । देत आशु उठि अति अहलादा ॥
यहिविधि प्रभुहि सुषेण बुझाई । पवनसुवन कहँ कह्यो बुलाई ॥
जाहु आशु उत्तरदिशि प्यारे । ऋक्षराज जिहि पंथ उचारे ॥
दक्षिण शिखर द्रोणगिरिमाहीं । औषधि चारिहु अहैं तहाँहीं ॥
यक विशल्यकरनी सुखदाई । यक सुवर्णकरनी मन भाई ॥
यक संजीवनकरनी जोई । यक संधानकरन मुद मोई ॥
ल्यावहु औषध लछिमनहेतू । अहै न रघुपतिके चित चेतू ॥

दोहा—सुनि सुषेणके वचन तहँ, चल्यो तुरत हनुमान ।
पहुँच्यो ओषधिशैल ढिग, लग्यो करन अनुमान ॥

चौपाई ।

जो ओषधि उखारि लै जैहौं । कौन कौनको ताहि चिन्हैहौं ॥
जो ह्वै गयो मोहिं भ्रम भारी । तौ आवनि भइ वृथा हमारी ॥
ताते ओषधिशैल उखारी । जाउँ आशु जहँ लषण खरारी ॥

चीन्हत महँ विलंब अति ह्वै है । प्रभुके मन नहिं शोक समैहै ॥
अस विचारि तहँ पवनकुमारा । तुरत ओषधीशैल उखारा ॥
लै धायो दक्षिणदिशि वीरा । सुमिरत मन निशंक रघुवीरा ॥
आयो उभयदंडमहँ तहँवाँ । राम लषण कपिनायक जहँवाँ ॥
कह्यो सुषेणहिं पवनकुमारा । लेहु ओषधी जौन विचारा ॥
लै ओषधी सुषेण तुरंता । दीन्ह्यों लषण काहिं मतिवंता ॥
सूँघत ओषधि लषण प्रवीरा । उठ्यो विशल्य मिटी सब पीरा ॥
बोल्यो वचन लषण धनुधारी । कहँ रावण रण हतौं प्रचारी ॥
रघुनन्दन उठि वचन उचारे । आवहु लछिमन प्राणपियारे ॥

दोहा–अस कहि लषणहि लपटिगे, रघुनन्दन सानन्द ।
भरत मिल्यो मानहुँ सुधा, छूटि गयो दुखद्वन्द ॥

मिल्यो बहुरि हनुमानहिं रामा । प्राणदान दीन्ह्यों यहि ठामा ॥
किये कीश सब जय जय कारा । वर्षैं सुमनससुमन अपारा ॥
कह्यो लषणसों पुनि रघुराई । रह्यो न तुहिं विन जीवन भाई ॥
तुहिं विन कौन सीय कर काजू । तुहिं विन विजय न कोशलराजू ॥
बोल्यो वचन प्रभुहि कर जोरी । मानहु नाथ विनय अब मोरी ॥
पूरव प्रण करि वृथा न कीजै । पालिय वचन सत्य मन दीजै ॥
मैं न रहौं कि रहौं जगमाहीं । मृषा प्रतिज्ञा करियो नाहीं ॥
धर्मधुरंधर रघुकुलराऊ । मृषा वचन मुख कढ़ै न काऊ ॥
प्रभु दशकंठ सकुल संहारहु । तिलक विभीषणको पुनि सारहु ॥
तुव प्रताप राखहुँ उर आशा । करौं सकुल दशकंठ विनाशा ॥
पाय बाणपथ राउर स्वामी । दशमुख ह्वैहै यमपुर गामी ॥
विजय सहित जो सीतहि चाहौ । मेरी विनय नाथ निरवाहौ ॥

दोहा–सुनत लषणके वचन प्रभु, लीन्ह्यों हृदय लगाय ।

वीर वली मुख वीचमें, राजत रघुकुल राय ॥

चौपाई ।

तहँ नवीन रथ चढ़ि लंकेशा । आयो कुपित समरके देशा ॥
जिमि रवि पर धावत स्वर भानू । तिमिदशमुखकरिकोपकृशानू ॥
मार्‌यो प्रभुहि अनंनन वाना । रामहुँ तज्यो वाण सहसाना ॥
भयो वरोवर दोहुँन युद्धा । इत रघुपति उत रावण क्रुद्धा ॥
रावण रथी राम पद्चारी । सुरपति लखि मातली हँकारी ॥
वोल्यो वचन उचित नहिं होई । एक रथी यक पद्चर जोई ॥
सायुध स्यंदन मम लै जाहू । तिहि पर चढ़ैं भानुकुलनाहू ॥
कराहिं विनाश निशाचर केरो । याके वध हित कति अवसेरो ॥
सुरपति शासन सुनि सुखपायो । मातलि रथ अवनी लै आयो ॥
करि प्रणाम वोल्यो करजोरी । सुरपति विनय कियो प्रभुथोरी ॥
रघुनंदन चढ़ि स्यन्दन माहीं । हनैं वाण वृन्दन रिपु काहीं ॥
मातलि विनय सुनत रघुराई । दै परदक्षिण चढ़े तुराई ॥

दोहा—रघुनंदन स्यन्दन चढ़े, सोहे मधि संग्राम ।
मानहुँ भानु सुमेरु पर, उदित भयो अभिराम ॥

चौपाई ।

होन लग्यो तव द्वै रथ युद्धा । रावण राम भये अति क्रुद्धा ॥
तज्यो अस्त्र गंधर्व दशानन । पूरित भयो प्रकाश दिशानन ॥
तजि गंधर्व अस्त्र रघुराई । दियो शत्रु कर अस्त्र मिटाई ॥
पुनि देवास्त्र तज्यो दशशीशा । प्रगटे देव अदेव खवीसा ॥
देव अस्त्र रघुनाथ चलाई । देव अस्त्र कहँ दियो मिटाई ॥
राक्षसास्त्र छोड्यो दशकंधर । प्रगटे राक्षस मनहुँ विषंधर ॥
धाये फणी फणा बहु काढ़े । करत फुकार महारिसि वाढ़े ॥
लियेभूमि नभ कपिदलछाई । भगे वलीमुख अहिन डराई ॥
तज्यो राम गरुडास्त्र महाना । भक्षण कियो भुजंगन नाना ॥

तब रावण रण कोपित भयऊ । सहस बाण प्रभुपर तजि दयऊ ॥
पुनि मातलिकोबहुशरमारयो। वासवध्वजा काटिरथ डारयो ॥
कियो व्यथित वासवके वाजिन । प्रभुकहँ मूँद्यो हनि शरराजिन॥

दोहा–मानहुँ राकाशशि ग्रस्यो, राहु पर्व कहँ पाय ।
उठ्यो सिंधुमहँ धूम अति, भाकर भास छिपाय ॥

चौपाई ।

रवि मंडल महँ परयो कबंधू । उदय केतु उत्पात प्रबंधू ॥
कियो रोहिणी बुध आक्रमनू । किय कुजकोशलनखतहिदमनू ॥
भुजावीस दशशीश भयावन । देखि परयो रण रोषित रावन ॥
शिथिलभयेमनुप्रभुशुभशीला । देखि विकल भे सुर रण लीला ॥
देवन कपिन विकल लखि रामा । नेसुकभ्रुकुटि कियो तहँ वामा॥
नेसुक भये नयन अरुणारे । छोड़े सातौ सिंधु करारे ॥
प्रलय पयोधर गर्जन लागे । भये सुरासुर सब भय पागे ॥
ऋषि गंधर्व सर्व सभयानन । गगन छोडि लै भगेविमानन ॥
रावणहू जान्यो निज काला । हटयो कछुक लै यान विशाला॥
पुनिथिरचितकरिकै दशशीशा। आयो सन्मुख जहँ जगदीशा ॥
जय रावणकी निशिचर भाषैं । रघुपतिकी जय सुर अभिलाषैं ॥
तहँसकोपनिशिचरगणनाथा । लीन्ह्यो महाशूल यक हाथा ॥

दोहा–बोल्यो वचन पुकारि कै, खड़ो रहै रघुनाथ ।
अब न बचैगो शूल ते, लगी बीचही माथ ॥

चौपाई ।

अस कहि तजो शूल बरजोरा । तड़ित प्रकाश भयो चहुँ ओरा ॥
हने राम सायक बहु लाखा । भस्म भये लगि शूलहि पाखा ॥
लियो महेन्द्र शूल रघुराई । शत्रु शूल पर दियो चलाई ॥
भयो खंड द्वै रावण शूला । मिटी देव मुनि कपि हिय शूला ॥

पुनि प्रभु हन्यो लंकपति वाजी। मारयो निहि उर वाणनगाजी ॥
शर जर्जरित भये सब अंगा। हन्यो तीन शर भाल अभंगा ॥
भयो फुल्ल बंधूकसमाना। विकल भयो कछु रह्यो न भाना॥
सम्हरि बहुरि कोप्यो लंकेशा। मानहुँ भयो काल कर वेशा ॥
मारि शरन मूँद्यो प्रभु काहीं। जिमिगिरि अम्बर विहँगनरुमाहीं ॥
रावण घन शरवर्षहिं पाईं। कँप्यो न अचल शैल रघुराई ॥
दशमुख शर वारत निजवाणन। विचरतरण रघुकुल पंचानन ॥
तब दशमुख शर हन्यो हजारा। प्रभु तनु बही रुधिरकी धारा॥
रघुनायक छवि समर प्रकाशा। उव्यो फूलि मनु विपिनपलाशा॥

दोहा—कियो मंडलाकार धनु, दशरथ राजकुमार।
रावणतनु जर्जरित किय, हनि शर दशौ हजार॥

चौपाई।

तहाँ समर कोपे दोउ वीरा। किये शरन अँधियार गँभीरा ॥
रावणसों रघुपति मुसक्याई। वेधे वचन वाण वरिआई ॥
जनस्थानतें जाय अभागी। चोरी करत लाज नहिं लागी ॥
अपनेको मानत अतिशूरा। हमहूँ लषण रहे अति दूरा ॥
जो हमरे देखत लंकेशा। चोरी करन जात तिहि देशा ॥
तौ पुनि लंक बहुरि नहिं आवत। अपने कर्महिं कर फल पावत ॥
पै निजकुल अब सब हतवाई। कह्यो लंकते निशिचरराई ॥
बहुरि लंक जइबो कठिनाई। दे दिखाय अपनी मनुसाई ॥
अस कहि तजी राम शरधारा। गयो मूँदि निशिचर भरतारा ॥
दिव्य अस्त्र सब रघुकुलनाथै। दोउ दिशि खड़े जोरि युग हाथै॥
बाणवृन्द पुनि पुनि रघुनाथा। हनत कहत रहु थिरदशमाथा॥
रोम रोम वेध्यो तनु बाणन। भयो शल्यकी सरिसदशानन ॥

दोहा—ह्वै विसंग रथपर गिरयो, साराथि मृतक विचारि।

लै भाग्यो रणते तुरत, आरतवचन पुकारि ॥

चौपाई ।

लंकद्वार लगि जब रथ गयऊ । सावधान दशकंधर भयऊ ॥
उठ्यो देखि भागत निज याना । बोल्यो वचन निकारि कृपाना ॥
रे शठ सारथि कहँ लै जाता । रावणसरिस न वीर पराता ॥
मोरि वीरता धूर मिलायो । लरत शत्रुसों समर छुड़ायो ॥
लै चलु लै चलु अब रथ मोरा । खड़ो जहाँ अवधेश किशोरा ॥
तब सारथि बोल्यो कर जोरी । नाथ न देहु मोरि कछु खोरी ॥
मैं सारथि कर धर्म निबाहा । मूर्च्छित देखि निशाचर नाहा ॥
अब करि कछुक नाथ विश्रामा । कीजै विजय राम संग्रामा ॥
सारथिवचन सुनत लंकेशा । दीन्ह्यों कंकन जड़ित सुबेशा ॥
ह्वै प्रसन्न सारथिपर रावण । बोल्यो वचन भीति उपजावन ॥
कीन्ह्यों क्षमा तोर अपराधा । सूत धर्म गुणि करी न बाधा ॥
अब जो समर छुड़ैहै मोहीं । तौ नहिं जियत त्यागिहौं तोहीं ॥

दोहा—अस कहि कछु विश्राम करि, वदन सलिलसों धोय ।
पहिरि कवच नव धनुष धरि, धायो संग न कोय ॥

सोरठा—दशरथराजकुमार, मारहु ते सुकुमार अति ।
करत युद्ध निशि बार, भयो श्रमित स्वेदित वपुष ॥

कवित्त ।

धावत निहारि लखि रावणको आवतहीं,
भक्तजन चिन्तामणि चिन्ता उपजी मनै ।
विक्रम विलोकि मेरो व्यथित पराय गयो,
आवत बहोरि होन शरणागत या छनै ॥
और नहिं शोच कछु रावण शरण होत,
इक शोच करत उदोत जो अबारनै ।

हौं तो रघुराज लंकराजै लंकराज दै कै,
भेजि हौं बुझाय कौने भवन विभीषनै ॥
सोरठा—प्रभु दुचिताई जानि, रहे गगन देखत समर ।
मुनि अगस्त्य मतिखानि, आय कहे प्रभुसे वचन ॥
दोहा—यह आदित्य हृदय सुखद, दिनकर स्तवराज ।
पढ़हु करहु धारण चितै, करी सिद्धि सब काज ॥
मैं भाषा कीन्ह्यों नहीं, यह स्तोत्र महान ।
समर विजय कर शंक हर, सुखकर वेद समान ॥

अथादित्यहृदयम् ।

ततोयुद्धपरिश्रान्तं समरेचिन्तयास्थितम् ।
रावणंचाग्रतोदृष्ट्वा युद्धायसमुपस्थितम् ॥
दैवतैश्चसमागम्य द्रष्टुमभ्यागतोरणम् ।
उपगम्याब्रवीद्राममगस्त्योभगवाँस्तदा ॥
रामरामहाबाहो शृणुगुह्यंसनातनम् ।
येनसर्वानरीन्वत्स समरेविजयिष्यसे ॥
आदित्यहृदयंपुण्यं सर्वशत्रुविनाशनम् ।
जयावहंजपन्नित्यमक्षयंपरमंशिवम् ॥
सर्वमङ्गलमांगल्यं सर्वपापप्रणाशनम् ।
चिन्ताशोकप्रशमनमायुर्वर्धनमुत्तमम् ॥
रश्मिमंतंसमुद्यंतं देवासुरनमस्कृतम् ।
पूजयस्वविवस्वंतं भास्करंभुवनेश्वरम् ॥
सर्वदेवात्मकोह्येष तेजस्वीरश्मिभावनः ।
एषदेवासुरगणाँल्लोकान्पातिगभस्तिभिः ॥
एषब्रह्माचविष्णुश्च शिवस्कंदःप्रजापतिः ।
महेन्द्रोधनदःकालो यमःसोमोह्यपांपतिः ॥

पितरोवसवःसाध्या अश्विनौमरुतोमनुः ।
वायुर्वह्निः प्रजाः प्राणःक्रतुःकर्ताप्रभाकरः ॥
आदित्यःसवितासूर्यःखगःपूषागभस्तिमान् ।
सुवर्णसदृशोभानुर्हिरण्यरेतादिवाकरः ॥
हरिदश्वःसहस्रार्चिः सप्तसप्तिर्मरीचिमान् ।
तिमिरोन्मथनःशंभुस्त्वष्टामार्तंडकोंशुमान् ॥
हिरण्यगर्भः शिशिरस्तपनोऽहस्करोरविः ।
अग्निगर्भोदितेः पुत्रः शंखः शिशिरनाशनः ॥
व्योमनाथस्तमोभेदी ऋग्यजुःसामपारगः ।
घनवृष्टिरपांमित्रो विन्ध्यवीथीप्लवंगमः ॥
आतपीमंडलीमृत्युःपिङ्गलः सर्वतापनः ।
कविर्विश्वोमहातेजा रक्तःसर्वभवोद्भवः ॥
नक्षत्रग्रहताराणामधिपोविश्वभावनः ।
तेजसामपितेजस्वीद्वादशात्मन्नमोस्तुते ॥
नमः पूर्वायगिरये पश्चिमायाद्रयेनमः ।
ज्योतिर्गणानांपतयेदिनाधिपतयेनमः ॥
जयायजयभद्राय हर्यश्वायनमोनमः ।
नमोनमःसहस्रांशो आदित्याय नमोनमः ॥
नमउग्रायवीराय सारंगाय नमोनमः ।
नमःपद्मप्रबोधाय प्रचंडायनमोस्तुते ॥
ब्रह्मेशानाच्युतेशायसूरायादित्यवर्चसे ।
भास्वतेसर्वभक्षाय रौद्रायवपुषेनमः ॥
तमोघ्नायहिमघ्नायशत्रुघ्नायामितात्मने ।
कृतघ्नघ्नायदेवाय ज्योतिषांपतयेनमः ॥
तप्तचामीकराभाय हरयेविश्वकर्मणे ।

नमस्तमोभिनिघ्नाय रुचये लोकसाक्षिणे ॥
नाशयत्येष वै भूतं तमेव सृजति प्रभुः ।
पायत्येष तपत्येष वर्षत्येष गभस्तिभिः ॥
एष सुप्तेषु जागर्ति भूतेषु परिनिष्ठितः ।
एष चैवाग्निहोत्रं च फलं चैवाग्निहोत्रिणाम् ॥
देवाश्च क्रतवश्चैव क्रतूनां फलमेव च ।
यानि कृत्यानि लोकेषु सर्वेषु परमः प्रभुः ॥
एनमापत्सु कृच्छ्रेषु कांतारेषु भयेषु च ।
कीर्तयन्पुरुषः कश्चिन्नावसीदति राघव ॥
पूजयस्वैनमेकाग्रो देवदेवं जगत्पतिम् ।
एतत्त्रिगुणितं जप्त्वा युद्धेषु विजयिष्यसि ॥
अस्मिन्क्षणे महाबाहो रावणं त्वं हनिष्यसि ।
एवमुक्त्वा ततोगस्त्यो जगाम स यथागतम् ॥
एतच्छ्रुत्वा महातेजा नष्टशोकोऽभवत्तदा ।
धारयामास सुप्रीतो राघवः प्रयतात्मवान् ॥
आदित्यं प्रेक्ष्य तेजस्वी परं हर्षमवाप्तवान् ।
त्रिराचम्य शुचिर्भूत्वा धनुरादाय वीर्यवान् ॥
रावणं प्रेक्ष्य हृष्टात्मा जयार्थं समुपागमत् ।
सर्वयत्नेन महता धृतस्तस्य वधेऽभवत् ॥
अथ रविरवदन्निरीक्ष्य रामं मुदितमनाः परमं प्रहृष्यमाणः ।
निशिचरपतिसंक्षयं विदित्वा सुरगणमध्यगतो वचस्त्वरेति ॥

दोहा—पढ़ि आदित्यहृदय हरषि, दिनकरको शिरनाय ।
समर सजे रघुवंशमणि, हर्ष न हिये समाय ॥

चौपाई ।

चढ्यो महारथ रावण राजा । धावत आवत संगर काजा ॥

श्याम तुरंग उतंग पताका । घर घर करत शोर रथ चाका ॥
महाभयंकर श्यामशरीरा । लखि रावण प्रमुदित रघुबीरा ॥
मातलिसों अस कह्यो बुझाई । तुम सुजान सारथि सुरराई ॥
लै चलु रथहि सवेग धवाई । परै वामदिशि निशिचरराई ॥
तहँ मातलि प्रभुपद शिरनाई । रघुनंदन स्यंदनहि धवाई ॥
वामओर लंकापति डारी । धुरत धूर लै गयो निकारी ॥
जिमि रजकन तिमि रघुपतिवाना । मूँद्यो रथ युत रावण याना ॥
कोप्यो यातुधान परधाना । करन लग्यो मंडलविधि नाना ॥
रावण राम समर अति गाढ़ा । देखत कौतुक दोउ दल ठाढ़ा ॥
लखैं देव नभ चढ़े विमाना । लरहिं वीर दोउ सिंहसमाना ॥
होन लगे तहँ अति उत्पाता । वर्षहिं रुधिर जलद नभव्राता ॥

दोहा—रावण मुख लागत भयो, सन्मुख पवन झकोर ।
जहँ जहँ गवनत लंकपति, तहँ तहँ गीध करोर ॥

चौपाई ।

भई विदिश दिशि शोणितरंगा । उल्का गिरहिं अमित यकसंगा ॥
लग्यो दिवाकरग्रहण अकाला । नदहिं चहूंकित घोर शृगाला ॥
रावणरथ गालरि रव करहीं । वाजिन आँखिन आँसुन झरहीं ॥
देखि अशुभ रघुकुलमणि हर्षै । रावण गन्यो न इन उतकर्षै ॥
निशिचरदल कपिदल दोउओरा । लिखे चित्रसम तजहिं न ठोरा ॥
रावण राम लरैं रणमाहीं । लखहिं देवचित चकित तहाँहीं ॥
तव दशकंठ तज्यो इक वाना । कट्यो इन्द्ररथ तुंग निशाना ॥
प्रभु इक बाण तुरंत चलायो । रावण रथ ध्वज काटि गिरायो ॥
राम तुरंगन रावण मारच्यो । पै रथ नेकहु टरच्यो न टारच्यो ॥
तब कीन्हीं रण रावण माया । अन्धकार दशहूं दिशि छाया ॥
गदा परिघ असि चक्र अनंता । कपिदल वर्ष्यों खल बलवंता ॥

प्रभु हँसि भास्कर अस्त्र चलायो। क्षण महँ माया सकल उड़ायो ॥

दोहा—महा धनुर्धर वरि दोउ, रचे गगन शरजाल ।
तिल भर अंतर नहिं रह्यो, सुर मुनि भये विहाल ॥

चौपाई ।

शरपंजर अंवर ह्वै गयऊ । एकहु बाण विफल नहिं भयऊ ॥
लरि लरि बाण गिरे महिमाहीं । देखि परे दोउ वीर तहाँहीं ॥
महाधनुर्धर दोउ रणधीरा । पुनि हनिहनि नभ भरिदियतीरा ॥
रथ मंडल करि दक्षिण वामा । लरहिं समरमहँ रावण रामा ॥
उभय वीर रण कोपित गाढ़े । उभय वीर रण आनँद बाढ़े ॥
उभय वीर त्यागहिं शर धारे । उभय वीर रण टरहिं न टारे ॥
उभय वीर विक्रमी अनूपा । निशिचरभूप भानुकुल भूपा ॥
उभय परस्पर जय चित चाहे । छिन्न भिन्न भे उभय सनाहे ॥
राम रावणहिं रावण रामहिं । हनि शर करहिं घोर संग्रामहिं ॥
मंडल करत समर इक काला । भिरिगे स्यंदन उभय विशाला ॥
भिरिगे बाजिनके मुख मुखसों । धुरा धुरा जुरिगे यक रुख सों ॥
हन्यो दशानन बल करि बाना । वेधि गये सब तनु भगवाना ॥

दोहा—पुनि मातलि को लंकपति, हन्यो अनेकन बान ।
किये नेकहूँ नहिं व्यथा, भे शर फूल समान ॥

चौपाई ।

तस तनु प्रभु शर किये न पीरा । यथा मातली विधे शरीरा ॥
शर वैतास्तिक भर भर मारी । कियोविमुख रिपु राम प्रचारी ॥
बीस तीस शत साठिहु सायक । सहस लाख छोड़त रघुनायक ॥
तिहि विधि रावणहू शर झारत । बार बार बाणन बढ़िबारत ॥
कहूँ गदा कहुँ मूशल बरषैं । कहूँ बाण हनि हनि हिय हरषैं ॥
रावण राम बाणके बाता । क्षोभित भये समुद्रहु साता ॥

सात लोक भूतल तल वासी । भे व्याकुल तजि जीवन आसी ॥
सात लोक ऊरधके जेते । बाणवेग व्याकुल भे तेते ॥
तहँ देवर्षि महर्षि अपारा । अतिआरत अस करहिंपुकारा ॥
स्वस्ति होयगो ब्राह्मण केरी ।प्रलय होति अब लगति न देरी ॥
सुन्यो न दीख युद्ध अस कबहूँ । लख्यो सुरासर संगर तबहूँ ॥
यथा गगनके गगन समाना । सागर सम सागर जग जाना ॥

दोहा—तथा राम रावण समर, रावण राम समान ।
शेष शारदा शंभु विधि, लखे सुने नाहिं कान ॥
तहँ राघव लाघव कियो, तजि शर तेज निकेत ।
रावण शिर काट्यो तुरत, कुंडल मुकुट समेत ॥

चौपाई ।

दूसर शीश भयो दशशीशा ।लखि आश्चर्य गुन्यो जगदीशा ॥
सोउ रावणशिर काटि गिरायो । तीसर शीश तुरत ह्वैआयो ॥
यहिविधि शत शिर काट्योरामा । भे नव नव शिर तिहिं संग्रामा ॥
कौशल्यानंदन रणधीरा । निरखि दशाननको बिन पीरा ॥
मनमहँ लाग्यो करन विचारा । दशकंधर कस मरत न मारा ॥
जिन शर हत्यों मरीच सुबाहू । किय त्रिशिरा खरदूषण दाहू ॥
जिन शर वध्यो विराध कबंधा । वेध्यो ताल सहित असकंधा ॥
जिहिशरसिंधुउठीशिखिज्वाला । जिहिशरवध्योवालिविकराला ॥
ते शरलगि दशकंठ शरीरा । समर करत नेकहु नहिं पीरा ॥
पुनि धरि धीरज रघुकुलवीरा । त्यागन लाग्यो तुकितुकितीरा ॥
कहुँ दोउ लरहिंअकाशहि जाईं । कहूँ शैल शिर करहिं लराईं ॥
कहुँ धरणी कहुँ लरहिं दिशानन । रावण अरु रघुकुल पंचानन ॥

दोहा—तहाँराम रावण भयो, सिगरो जगत दिखान ।
कपि निशिचर मुनि सुर असुर, तनु महँ तनक न भान ॥

दिवस निशा क्षण पल लवहु, घटी मुहूरन याम ।
समर राम रावण कियो, लह्यो न कछु विश्राम ॥

चौपाई ।

तब मातलि बोल्यो कर जोरी । सुनहु नाथ विनती इक मोरी ॥
कस भूले अपनी सुधि सारी । आपहि मधुकैटभ संहारी ॥
हिरण्यकशिपु कनकाक्ष सँहारे । अमितवार भुवि भार उतारे ॥
यह रावण है केतिक बाता । हनहु ब्रह्मशर करै निपाता ॥
मातलि कहे सुरति प्रभु कीन्हा । घोर ब्रह्मशर अस्त्रहि लीन्हा ॥
बसै पवन जाके दोउ पक्षा । मुखमहँ दिनकर पावक स्वक्षा ॥
गुरुता मंदर मेरुसमाना । जासु शरीर अकाशप्रमाना ॥
उठत धूम निकसत मुख ज्वाला । भेदक चौदह भुवन कराला ॥
सो शर संधान्यो रघुराई । वेद मंत्र पढ़ि आनँद छाई ॥
साजत शर काँपे त्रय लोका । उपज्यो रावणके उर शोका ॥
रावण हृदय ताकि रघुनायक । तज्यो अमोघ ब्रह्मशर सायक ॥
रावण हृदय लग्यो शर घोरा । पत्र सरिस ताको उर फोरा ॥

दोहा—रावण प्राणसमेत शर, फोरि सात पाताल ।
रुधिरमयो रघुनाथ जर, प्रविश्यो तूण विशाल ॥
गिरयो भूमिमें धनुष तिहि, मृतक भयो दशभाल ।
स्यंदनते धरणी गिरयो, कँपी धरणि तिहि काल ॥

सोरठा—रावण मृतक निहारि, देव दिये नभ दुंदुभी ।
इक एकनहि पुकारि, सुर मुनि जयजयकार किय ॥
वर्षैं कुसुम अपार, कहि जय जय रघुवंशमणि ।
उतरयो भूकर भार, देव विप्र कण्टक टरयो ॥

छन्द चौबोला ।

भागे निशाचर करत आरत शोर लंका ओरको ।

रगदे बलीमुख ऋक्ष वृक्षन हनत करि करि जोरको ॥
बरजे कपिन रघुवंशमणि अब यातुधान बचाइयो ।
इन कर कछुक अपराध नहिं अब कोप मन नहिं लाइयो॥
वर्षंत सुमन सुमनस कहत जय कौशलेशकुमारकी ।
नद्दत नगारे नाकवारे मिटी भय संसारकी ॥
पूषन प्रकाशित कियो पुहुमी विमल चन्द्रसतार भे ।
शीतल सुमंद सुगंध मारुत वहत मुनि सुखभार भे ॥
ब्रह्मर्षि हर्षि महर्षि जगमहँ याग करत अरंभ भे ।
द्विज पाठ पूजन करनलागे विगत भीति अदंभ भे ॥
प्रस्तुति करत रघुवंशमणिकी देव मुनि पद गायकै ।
नाचहिं विमानन अप्सरा बहु मधुर बाज बजायकै ॥
गंधर्व चारण सिद्ध विद्याधर सुकिन्नर गायकै ।
अस्तुति करैं प्रभुकी मुदित बहु गद्य पद्य बनायकै ॥
निर्मल गगन भुवि भय अभारा अति प्रसन्न दिशा भई ।
दिनमणि चले प्रभु सुयश गावत देवदारा सुख छई ॥
वैकुण्ठपति दशकण्ठ हनि द्रुत बोलि अति उत्कंठसों ।
लंकेश और सुकण्ठको कीन्ह्योंसु कंठहि कंठसों ॥
प्रभु मिले पुनि हनुमानसों अंगद लियो उर लाइकै ।
पुनि मिले लषणहिंसों ललकि दृग वारि बिंदु बहाइकै ॥
तहँ पृथक पृथक कपीनको लघु बड़ जहाँ जेते रहे ।
सबको मिले रविवंश रवि मुहिं कहँ मिले अस सब कहे॥
लंकेश और सुकण्ठके प्रभु कहे वचन बुलाय कै ।
विजयी कियो तुम मोहिं दोउ यश दियो सखा सहायकै॥
तहँ लषण सुगल विभीषणादिक परे रघुपतिचरणमें ।
प्रभु दोर्दंड अखण्ड बल पूजत महामुद भरनमें ॥

मर्कट नचत रणभूमिमहँ लंगूर तुंग उठायकै ।
गावत अवधपतिविमलयश कर्ताकलानदिखायकै ॥
राजत सुरघुकुल कुमुद चन्द्र महेन्द्र रथहिं सवार हैं।
चहुँ ओर प्रबल कपीश ठाढ़े लखत बारहिं बार हैं ।
श्रमबिंदु शोणितबिंदु श्यामशरीर शोभित ह्वै रहे ॥
जनुरायमुनिखगगणतमालहिंलसहिंथिरमोदितमहे ॥
रघुवंशनायक पाणि सायक सहज शोभित फरहीं ।
जनु निजसुयश थल भुवनचारिहुओरनयननेहरहीं ॥
शिरजटा मुकुट बिराजमान निषङ्ग कंधन सोहहीं ।
दोर्दंड ओज अखंड धृत कोदंड सुर मुनि जोहहीं ॥
जयश्रीबिराजत प्रभुवदन अरबिंदनयन विशाल हैं ।
तिहि काल दीनदयालुकपिननिहारिकरतानिहाल हैं ॥
सुरव्रात वर्णत जात यश फहरात विजय निशान हैं ।
अतिमंदशीतल वात वहत बिलातश्रमबलवान हैं ॥
पुनि उतारि रथते मातली मिलि कहे रघुपतिबैनको।
कीन्ह्यो परम उपकार रथ लै जाउ सुरपति ऐनको ॥
कल्पांतकारि सुखभोग सुरपुर आइहौ मम धामको।
सुरनाथको उपकार यह नाहिं कबौं भूली रामको ॥
रघुनन्दके पद बंदि मातलि पाय परम अनंदको ।
लै इन्द्र स्यंदन गगनपंथ पयान कीन अमंदको ॥
प्रभु बैठि रुचिर रसाल छाया सुखित कपिनसमाजमें।
तिहि समय सुखवर्णन करन कहु कौनमति रघुराजमें ॥

दोहा—ज्येष्ठ बंधुको निधन लखि, तहँ बिभीषण जाइ ।
लाग्यो करन विलाप अति, उर अनुताप बढ़ाय ॥

सोरठा—बहुत बुझायों तोहिं, कालविवश मान्यो नहीं ।

वहुरि कह्यो धिक मोहिं, लह्यो तासु फल भ्राततैं ॥

दोहा–घृति प्रवालसुम तेज तनु, सरस शूरतामूल ।
रावणतरु राघवपवन, दिय गिराय समतूल ॥
यश कीरति युगदन्त तन, जग प्रशंस मुनिवंश ।
शुंड कोप लंकेश गज, रामसिंह किय ध्वंश ॥
विक्रम ज्वाला तेज झर, श्वास धूमको धाम ।
रावण अग्नि बुझाय दिय, समर राम घनश्याम ॥
विक्रम दर्प विषान युग, डील धीर अघ नैन ।
रावण वृषभ विनाश किय, राम बाघ वल ऐन ॥
विकल सखा लखि अवधपति, वोले वचन बुझाय ।
प्रेतकर्म दशकंठको, करहु विभीषण जाय ॥
कह्यो विभीषण जोरि कर, तव द्रोहीको नाथ ।
प्रेतकर्म करिहौं नहीं, दियों छोंड़ि मैं साथ ॥
कह कृपालु जीवतहि लगि, रह्यो वैर मम घोर ।
सखा तिहारे नात अब, यथा तोर तस मोर ॥
प्रेतकर्म दशकंठको, करहु लंकपति जाय ।
ह्वै है अवशि पुनीत तुव, हाथ तिलांजलि पाय ॥
प्रभु शासन धरि शीशमें, करन बंधु मृतकाज ।
चल्यो विभीषण विलखि उर, सुमिरत श्रीरघुराज ॥

छन्द चौबोला ।

तिहि समय रावण नारि निकसीं करत अतिहि विलाप ।
रणभूमिमहँ सव जाय लखि पति मृतक लहि संताप ॥
गहि चरण कर शिर लगीं रोवन करत आरत शोर ।
जगदंबिका हरि कंत कीन्ह्यों नाश कुल बरजोर ॥
मान्यो विभीषणको कह्यो नहिं दियो ताहि निकारि ।

नहिं कुंभकर्ण कह्यो गुण्यो हठ तजी नहिं विचारि ॥
नहिं माल्यवान कह्यो धरयो चित कंत ह्वै वश काल ।
हमसे सहित लंका करी विधवा निशाचर पाल ॥
मंदोदरी तहँ आय रोवनलगी करत प्रलाप ।
जिहि देव सन्मुख रुकत नहिं तिहि मनुजते भय ताप
ताते न मानुष राम हैं वैकुंठपति घनश्याम ।
श्रीवत्स वक्ष विराजमान अनन्त सैन्य अकाम ॥
धरि विष्णु मानुषरूप ह्वै दशरत्थराजकुमार ।
भूभारहारन हेतु कीन्ह्यों कंत तोर सँहार ॥
नहिं आदि मध्य अनादि धाता ईश्वरहुको ईश ।
वर शङ्ख चक्र गदा विराजत चारि भुज जगदीश ॥
पिय तोहिं वरज्यों प्रथम मैं मान्यो न मेरे बैन ।
जगदंबिका घर लाय मंगल चह्यो भै कछु भैन ॥
वरज्यो विभीषण कुंभकर्णहु माल्यवान प्रहस्त ।
मान्यो न ताकर लह्यो फल तुम भये कुलयुत अस्त ॥
जब समर खर दूषण हते माया मरीच दराज ।
मारयो कबंधहि वालि मारि सुकंठ दीन्ह्यों राज ॥
करि सेतु सागर कटक मर्कटसहित उतरे पार ।
तब मोर जियडरप्योअतिहिं पियकियोकछु न विचार
परब्रह्म योगी ज्ञानगम्य प्रणम्य त्रिभुवन ईश ।
को कहत मानुष राम वंदत जाहि सुर विधि ईश ॥
पिय मोह वश मोन नहीं करि जगत्पतिसों द्रोह ।
तुम कंतसहित कुटुंब नाश्यो तज्यो तनु करि कोह ॥
हनुमान आयो लंक लायो भयो तबहुँ न ज्ञान ।
यह विष्णुको अवतार राम महान अज भगवान ॥

सीता जगज्जननी रमा तिहि हरि चह्यो कल्यान ।
निजकर्मफल पायो सकल रिपु गुण्यो निज भगवान
यह लंक राज लह्यो विभीषण राम भक्त प्रभाव ।
हम भई सकल अनाथ सुरपति लह्यो परम उराव॥
पिय तोर समर निहारि मरन विचार कीन्हे आज ।
मुहिंएक फल दीस्यो विमलसो कहतनहिंकछुलाज॥
तेरे जियत पिय तोर पुर नहिं लख्यो लषण खरारि।
उनके लखत उनको सदन पिय लियो समर प्रचारि।
प्रिय विष्णु कर तीरथसमरकुल सहिततुमतनु त्यागि
अपवर्ग लीन्ह्यों वर्गयुत इतनी भली मुहिं लागि ॥
मंदोदरी यहि भांति करति विलाप रावण रानि ।
कहि वचन परम कृपालु बोध्यो जाइ जानकिजानि
तहँ रामशासन मानि रावणअनुज जाय निकेत ।
रचि कनक विमल विमान ल्यायो मालयवान समेत॥
रावण शरीर उठाय तिहि धरि जाय मर्घटभूमि ।
दीन्ह्योमुखानल विधिसहितचहुँओरातिहिक्षणघूमि॥
करि अग्निहोत्र विधान दाह्यो दियतिलांजलिन्हाय।
आयो विभीषण राम जहँ तियवृन्द नगर पठाय ॥

दोहा—दशरथ लाल रसाल तर, लषण सुकंठसमेत ।
बैठे कवच उतारि जिमि, शांत धूमको केत ॥

छन्द हरिगीतिका ।

तहँ सकल देव निहारि समर सुरारि रावण नाश ।
वर्णत रघूत्तम सुयश निज निज किये गवन अवास॥
वर्णत त्रिविक्रमसरिस विक्रम रामको तिहि काल ।
अघटित पराक्रम कीन मर्कट विकट वीर विशाल॥

तिमि लषण को हनुमान को पौरुष परम अनुराग।
सुग्रीव और विभीषणहु जो मंत्र दिय बड़भाग ॥
करनी सकल वानरनकी सीता पतिव्रतधर्म ।
वर्णत चले मुनि सिद्ध चारण देव ह्वै कृतकर्म ॥
पुनिपुनि मिलत सुग्रीव पुनि २ परत लषणहुँ पाय।
पुनि २ चटक मर्कटकटक मटकत नटत सुखपाय॥
रघुवंशमणि तहँ जानि अवसर कह्यो लषण बुलाय।
कीजै विभीषण राजतिलक सुलंकनगर सिधाय॥
याते अधिक नहिंकाज कछु मन रह्यो शोच महान ।
सो करहु पूरण आज लछिमन जाय सहित विधान॥
सुनि नाथशासन लषण गवने लै विभीषण संग ।
शाखामृगन दीन्ह्यों निदेश विचारि तिलक प्रसंग ॥
चारिहु दिशनते सिंधुजल ल्यावहु तुरंत कपीश।
रघुराज करत विभीषणै अव आजु लंकअधीश॥
वानर तुरन्तहि जाय ल्याये सिंधुजलघट चारि ।
सौमित्र सिंहासन विभीषण दियो तहँ वैठारि ॥
पढ़ि वेदमंत्र स्वतन्त्र लछिमनकियो तिहि अभिषेक।
कीन्ह्यों तिलक पुनि राजको भेटी जु टेकी टेक ॥
पुनिसकलवानरत्यों निशाचर कियोतिहि अभिषेक।
पुनि ब्रह्मराक्षस ताहि सींच्यो यथा शास्त्र विवेक ॥
तहँ माल्यवानादिक निशाचर वृद्ध वृद्ध सिधारि ।
कीन्ह्यों विभीषण नजारि मणिगण लंकनाथ उचारि॥
जे संग गवने चारि मंत्री तिन विभीषण बोलि ।
कीन्ह्यों अमात्यप्रधान मंत्री धर्मशासन खोलि ॥
उपहारको लै सकल धन सौमित्र संग सिधारि ।

आयो विभीषण आशु प्रमुदित जहँ सुकंठ खरारि॥
प्रभुके परचो अरविन्दपद परदक्षिणा दै चारि ।
उठि नाथ लीन लगाय उर अहि भोग भुजनि पसारि॥
उपहार दीन्ह्यों जो विभीषण लियो रघुकुलराज ।
कृतकाज मान्यो आपनेको आज सहित समाज ॥
तहँ भालु गो लाँगूर मर्कट श्यामतेज शरीर ।
तिहिं वार वारहिं बारकिय जयकार लखि रघुवीर ॥
तहँ खड़ो सन्मुख पवनसुत गिरि सरिस परम विनीत ।
परशंसि तिहि रघुवंशमणि कह वचन परमपुनीत ॥
जो होय कपि अब उचित तौ लै लङ्कनाथ निदेश ।
तुम जाहु लङ्कहि आशु वैदेही बसति जिहि देश ॥
मेरी लषणकी सुगलकी कहियो कुशल भरिपूरि ।
आवहु कुशल लै तासु इत नहिं विलम कीजो भूरि ॥
रावणनिधन संग्राम गाथा विजय मोरि सुनाय ।
लै जानकी संदेश आय सुनाय देहु त्वराय ॥
सुनि पवनसुवन प्रमोद भरि प्रभु जलजपद शिरनाय।
लै लंकनाथ निदेश आशुहि चल्यो चौगुन चाय ॥
निशिचर बतावत पंथ आगे चलत कपिहि डरात ।
प्रविशत नगर निशिचर निहारत शीश नावत जात ॥

दोहा—कुशल प्रश्न पूँछत सकल, लखि हनुमत मुसक्यात ।
भाषत सकल निशाचरन, सुखी हमारे भ्रात ॥

चौपाई ।

गयो अशोकवाटिका जबहीं । जनकसुता कहँ देख्यो तबहीं ॥
अतिमलनि तनुधृत शिर बेनी । जिमि शशि रेख सघन घन श्रेनी ॥
वृक्ष शिंशुपाके तर माहीं । बैठी चित ध्यावति प्रभु काहीं ॥

रोहिणी लही ग्रह पीरा। धारे एक मलिन तनु चीरा॥
वृक्षमूलमहँ विगत अनन्दा। चहुँकित बैठि राक्षसीवृन्दा॥
देखि राक्षसीं पवनकुमारा। बोलीं वचन भरीं भय भारा॥
आवा कपि लंका जिहि जारा। यही प्रथम वाटिका उजारा॥
जोहि जानकीको हनुमाना। ह्वै विनीत कर जोरि सुजाना॥
दूरिहिंते कपि कियो प्रणामा। कहि जय जय जगदंब ललामा॥
लख्यो जानकी जब हनुमानै। महामोद मन किय अनुमानै॥
प्रीतम विजय समरमहँ पाये। मोहिं बुलावन कीश पठाये॥
यतना मन उपजत सियकाहीं। रही हर्षवश तनु सुधि नाहीं॥

दोहा–सियसमीप हनुमंत चलि, बार बार शिरनाय।
अमियधार जिमि मृतकमुख, दीन्ह्यों वचन सुनाय॥

चौपाई।

देवि कुशल कोशलपुरराजा। कुशल कीशपतिसहित समाजा॥
कुशल लषण देवर तुव माता। लह्यो विजय करि शत्रु निपाता॥
रावण कुंभकर्ण घननादा। मरे समरमहँ पाय विषादा॥
रावण कुंभकर्ण प्रभु मारयो। लषण इन्द्रजित समर सँहारयो॥
हने बलीमुख बली सुरारी। कपिपति अंगदादि बल भारी॥
यदपि विभीषण कियो सहाई। यदपि लषण कीन्हें सेवकाई॥
हम सब लरे यदपि करि जोरा। यदपि कियो प्रभु विक्रम घोरा॥
तदपि विजय कर सत्य विचारा। कारण पतिव्रतधर्म तुम्हारा॥
मैं जो कह्यों मृषा तुम मानी। सोइ बात अब सत्य दिखानी॥
कह्यो कृपालु मातु संदेशा। सुनिये सुखित त्यागि अन्देशा॥
तुव हित नयन नींद नहिं लीन्ह्यो। महासेतु सागरमहँ कीन्ह्यो॥
कियो दशानन हनि प्रण पूरा। तुव दरशन विन तनुसुखझूरा॥

दोहा–लषण कीशपति अंगदहु, भाष्यो तोहिं प्रणाम।

मातु मृपा नहिं मानियो, भयो पूर मनकाम ॥

चौपाई ।

और एक सुख देत सुनायो । लंकाराज्य विभीषण पायो ॥
सुनि कपिवचन विदेहकुमारी । आनँदमगन न गिरा उचारी ॥
गद्गद कंठ नयन बह नीरा । शोचति अब लखिहौं रघुवीरा ॥
कह्यो पवनसुत वचन बहोरी । उतर न देहु विनय सुनि मोरी ॥
जस तसकै पुनि सुरति सम्हारी । बोली वाणि विदेहकुमारी ॥
रामविजय सुनु पवनकुमारा । भयो मोर जीवन रखवारा ॥
को कृपालु रघुनाथसमाना । सहि कलेश राख्यो मम प्राना ॥
कंतविजय सुनि सुधि सब विसरी । क्षणभरि वदन बात नहिं निसरी ॥
लगी विचारन मैं मनमाहीं । देहुँ काह मारुतसुत काहीं ॥
नाथविजय भाष्यो मुहिं आई । तिहि बदलो नहिं परै दिखाई ॥
आजु देहुँ जो तीनिहुँ लोका । तऊ लगत लघु उपजत शोका ॥
रतनकनक महि केतिक बाता । ऋणी रहब यह भलो दिखाता ॥

दोहा—सुनि वैदेहीके वचन, बोल्यो पवनकुमार ।
जोरि पाणि सन्मुख खड़ो, बहत नयन जलधार ॥

चौपाई ।

कह्यो मातु जस मों कहँ वानी । तुहि विन को अस और बखानी ॥
कहहु मातु मैं काह न पायों । आजु धरणिमहँ धन्य बनायों ॥
मैं कपिजाति न कौनहु लायक । दीन जानि जन किय रघुनायक ॥
तापर ऋणी कहसि तैं माता । लाभ कौन अब अधिक दिखाता ॥
पायों आज त्रिलोकि विभूती । सकै कौन कपि करि करतूती ॥
विधि वासवते बड़ सुख पायो । रामविजय चालि तोहिं सुनायो ॥
सिय सुनि पवनसुवनकी वानी । बोली गिरा कृपारससानी ॥
सब लक्षणलक्षित हनुमाना । शांति अष्टांगसाहित मतिमाना ॥

जगत प्रशंसन लायक कीसा । धर्मधुरंधर धरणी ईसा ॥
बल सौरज निगमागम ज्ञाना । विक्रम बुद्धि प्रकाश महाना ॥
तेज क्षमा धृति विनय बड़ाई । दिन दिन दून दून अधिकाई ॥
जीवहु चिर अनंद सन्दोहू । करहिं सदा रघुनायक छोहू ॥
दोहा—होय जौन तेरे मनै, सो माँगै कपि आज ।
तोहिं देत लघु लगत सब, तीन लोककी राज ॥

चौपाई ।

सुनत वचन कह पवनकुमारा । अब एक अभिलाप हमारा ॥
प्रथमहिं खबरि लेन जब आयों । इन राक्षसिनि देखि दुख पायों ॥
कहे वचन इन तोहिं कठोरा । तर्जन भर्सन कियो न थोरा ॥
कहे अनेकन अनुचित बाता । सो सुधि करि अब नहिं सहि जाता ॥
ये पापिनी अभागिनि पूरी । धर्म बसत इनसे बहु दूरी ॥
देवि देहु मोहि यह वरदाना । मारौं इनहिं यथा मनमाना ॥
मूठी चरण करन करि घाता । करौं घसीटि घसीटि निपाता ॥
अस रिसि लागत दाँतन काटौं । पेट फारि केशन उतपाटौं ।
मम सन्मुख इन तुहिं दुख दीना । सहि न जात अपराध जु कीना ॥
सुनि कपिवचन विदेहकुमारी । बोली वचन दया करि भारी ॥
सुनु कपि इन कर नहिं अपराधा । परवश दियो मोहिं अतिबाधा ॥
जस जस रावण शासन दीन्हा । तस तस तिहि डारि इन सब कीन्हा ॥
दोहा—परवशमहँ अपराध नाहिं, वसीं हमारे पास ।
शरणागत मानौ इन्हैं, दीबो उचित न त्रास ॥

चौपाई ।

दीन हीन गुणि रावणदासी । कौन खोरि इन कर बलरासी ॥
निज अभाग्य कर मैं फल पायों । प्रभुपद छोड़ि शत्रुगृह आयों ॥
अब दशकंठ नाश सुनि काना । हमसों चहहिं आपनो त्राना ॥

किहि विधि कहौं पुत्र तुम मारहु। अब इनको अपराध बिसारहु ॥
सुनहु पवनसुत कथा पुरानी। वेद पुराण प्रथित जग जानी ॥
मधुफल खानहेतु यक भालू। रह्यो विपिन विचरत यक कालू ॥
बाघ विलोकि ऋक्ष भय पाई। चढ्यो एक ऊँचे तरु जाई ॥
तहँ मधुफल बीनन हित कोई। आयो मनुज क्षुधावश सोई ॥
देखि बाघ भय टहि तिहि कालू। सोई तरु चढ्यो जहाँ रह भालू॥
कह्यो बाघ तब ऋक्षहि काहीं। हम तुम बसहिं एक वनमाहीं ॥
यह हमरो तिहरो अरि पूरा। देहु गिराय जाहु तुम दूरा ॥
ऋक्ष कह्यो तब धर्म विचारी। यह शरणागति लई हमारी ॥

दोहा–अस अधर्म नहिं और जग, जस शरणागत त्याग ।
भक्षण खोजहु और थल, यह मम पाछे लाग ॥

चौपाई ।

अस कहि रह्यो ऋक्ष तहँ सोई। कह्यो मनुजसों मृगपति सोई ॥
जब हम जाव और थलमाहीं। भक्षण करी भालु तुहिं काहीं ॥
ताते तुम गिराय यहि देहू। दै भक्षण मुहिं गमनहु गेहू ॥
ना तो दुहुँन खाय हम लैहैं। ऋक्षसंग नहिं तोहिं बचैहैं ॥
व्याध बाघ भय मानि तुरंता। दियो गिराय ऋक्ष बलवंता ॥
गिरयो न भालु भूमिमहँ आई। शाखा पकरि चढ्यो तरु जाई ॥
कह्यो भालुसों बाघ बहोरी। अबहूँ नहिं समुझति मति तोरी ॥
दे गिराय लखु मानुष खोरी। कह्यो भालु विनती सुनु मोरी ॥
यह शरणागत भयो हमारे। हम याके अपराध बिसारे ॥
अति अधर्म शरणागत त्यागा। यहि गिराय किमि होहुँ अभागा ॥
कैसहु नहिं तजिहौं मैं येही। चल्यो बाघ भोजन संदेही ॥
ऋक्ष मनुज कहँ घर पहुँचाई। लग्यो विपिन विचरण सुख पाई ॥

दोहा–ताते पवनकुमार तुम, गुणि शरणागत धर्म ।

दीन जानि कीजै दया, करहु न अनुचित कर्म ॥

चौपाई ।

नहिं परपाप पेखि उपकारी । करहिं अधर्म धर्म धुरधारी ॥
साँकर समय परे मतिमाना । रक्षहिं धर्म यत्न करि नाना ॥
ते जग भूषण संत सुजाना । शरणागत हित त्यागत प्राना ॥
पापी अथवा पुण्यवान कोउ । यद्यपि वधके योग होय सोउ ॥
सज्जन करत न कहु परबाधा । को अस जो न करै अपराधा ॥
क्रूर पापरत बहु संसारा । हिंसा करिकै करहिं अहारा ॥
तिन कर रीति संतजन देखी । करहिं आप नहिं पाप विशेखी ॥
मोर सकोच मानि हनुमाना । अभयदान दै राखहु प्राना ॥
जनकसुताके वचन सुहाये । सुनि हनुमन्त बहुरि शिरनाये ॥
कह्यो वचन धनि धनि जगदंबा । तैं शरणागत धर्म अलंबा ॥
रामप्रिया मिथिलेशकुमारी । अपने योगहि गिरा उचारी ॥
देहु रजाय मातु अब जाहूँ । जहाँ लषण अरु कोशलनाहूँ ॥

दोहा—पवनसुवनको गमन गुणि, कह्यो विदेहकुमारि ।
कौन घरी प्यासे नयन, ह्वै हैं सफल निहारि ॥
पवनसुवन बोल्यो वचन, नहिं विलंब जगदंब ।
पियपूरणशशिवदन लखि, पैहौ मोद कदंब ॥
अस कहि सीताचरण युग, वंदि सुखद हनुमंत ।
चल्यो तुरन्त अनन्त सुख, आयो जहँ भगवंत ॥

चौपाई ।

प्रभुपद प्रमुदित कियो प्रणामा । सीय खबरि पूँछी तहँ रामा ॥
कह्यो पवनसुत जोरे हाथा । सिय दरशन चाहति रघुनाथा ॥
जिहिहित सागर सेतु बँधायो । जिहिहित रावण सकुल नशायो ॥
सो सियको प्रभु दरशन देहू । मेटहु विरहजनित संदेहू ॥

महादुखित मिथिलेशकुमारी। बहत विलोचन वारिजवारी ॥
जबलों प्रभुपद दरशन पावति। यक क्षण युगसम सीय बितावति॥
देखि तासु दरशनकी आसा। मैं बोध्यौं तिहि दै विश्वासा ॥
सुनि हनुमन्त वचन रघुराई। लागे ध्यानकरन दुख छाई ॥
नीरजनयन नीर भरि आये। शोकित श्वासहि लेत अघाये॥
दीठ नीचकरि देखत धरनी। मानहुँ करत वृथा निज करनी॥
दंड द्वैक लगि राम विचारी। कह्यो विभीषण काहिं हँकारी॥
जाहु सखा अति आशुहि लंका। नहवावहु सीतहि बिन शंका॥
दोहा–अति उत्तम भूषण वसन, सकल भाँति पहिराइ।
ल्यावहु मेरे निकट सिय, अब विलंब बिसराइ॥

चौपाई।

सुनि प्रभुशासन निशिचरराजा। चल्यो लंक भरि मोद दराजा ॥
अंतहपुरहि प्रविशि लंकेशा। सरमै त्रिजटै दियो निदेशा॥
सकल राक्षसिन लेहु बुलाई। द्रुत अशोकवनिकामहँ जाई॥
सीतहि करवावहु स्नाना। पहिरावहु भूषण पट नाना॥
अस कहि निशाचरिन मतिवाना। किय अशोकवाटिका पयाना॥
देखि जानकीको मतिधामा। कियो विभीषण दंड प्रणामा॥
कर अंजलि करि धरि शिरमाहीं। बोल्यो वचन विनीत तहाँहीं॥
जननि करहु मज्जन यहि काला। पहिरहु भूषण वसन रसाला॥
करि उत्तम अंगन अँगरागा। शिविका चढ़ि गमनहु बड़भागा॥
पुरुषसिंह विजयी पति काहीं। लखहु बीच वानरदलमाहीं॥
यहि विधि शासन दिय रघुनायक। प्रभु रजाय करिबो तुहि लायक॥
सीता सुन्यो विभीषणवानी। बोली बचन कछुक अकुलानी॥
दोहा–बिन मज्जित तनु प्रभुवदन, लखन चहौं लंकेस।
न मज्जन नाथ किय, मोको परत अंदेस॥

चौपाई ।

कह्यो विभीषण सुनु जगदम्बा । तोरे एक राम अवलम्बा ॥
कही जौन प्रभु सो अब कीजै । राम रजाय शीश धरि लीजै ॥
एवमस्तु तहँ कहि वैदेही । उठी करन मज्जन पिय नेही ॥
तहाँ दैत्य दानवकी कन्या । सिय मज्जन करवाई धन्या ॥
लेप्यो उत्तम अँग अँगरागा । पहिराई पट भरि अनुरागा ॥
दिव्यविभूषण पुनि पहिराई । षोडश विधि शृङ्गार बनाई ॥
मणिनजालकी रुचिर पालकी । चढ़ी सुता मिथिलाभुवालकी ॥
उभय ओर करि बंद उहारा । लई उठाइ निशाचरदारा ॥
सहसन निशिचर संग सिधारे । कनक छड़ी झरझर कर धारे ॥
यहि विधि लै सीतैं लंकेशा । गयो जहाँ रविवंशदिनेशा ॥
ध्यानावस्थित लखि रघुराई । कह्यो विभीषण सीता आई ॥
विमनस कही राम अस बानी । ल्यावहु सिय मेरे ढिग आनी ॥

दोहा—सुनि प्रभुशासन लंकपति, कह्यो बैन गुहराय ।
ल्यावहु आशुहि पालकी, वानरभीर हटाय ॥

चौपाई ।

प्रतीहार निश्चर बलधामा । पहिरे पाग फेट अरु जामा ॥
कनकछड़ी झरझर धरि पानी । फरक फरक बोले अस बानी ॥
तहँ सीताके दरशन काजा । झुकी बलीमुखवीर समाजा ॥
निशिचर कपिन हटावतजाहीं । घुसहिं कीश दरशन ललचाहीं ॥
भयो शोर संघर्ष महाना । जिमि लहि पवन सिंधु लहराना ॥
कसमस पर्‌यो कपिनको भारी । सहि न गयो प्रभु कह्यो पुकारी ॥
ये वानर मुहिं प्राणपियारे । जिन सहाइ दशकंधर मारे ॥
जे कोउ वानरवीर हटाई । सो मोरे कर दण्डहि पाई ॥
सुनहु विभीषण सखा हमारे । बरजहु निज राक्षसन अपारे ॥

करैं शांत यह शोर महाना। बोले बहुरि सरुष भगवाना॥
भये लाल रघुलाल नयन दोउ। चितै न सकत रामसन्मुखकोउ॥
भन्यो राम दाहत दृग ऐसे। बाज झपट खगकुल चुप जैसे॥

दोहा—नहिं घर नहिं पट कोट नहिं, नहिं भूपति सत्कार।
नारिनको आवरण यक, होत धर्म संचार॥

चौपाई।

विपति परे अरु रोगहु माहीं। होय स्वयंवर युद्ध जहाँहीं॥
यज्ञ होत अरु होत विवाहू। परदा करै न तिय नरनाहू॥
करै न खटं थल तिय आवरना। देखे तियहि दोष नहिं बरना॥
मोपर परी विपत्ति महानी। लाज काज भल परै न जानी॥
सीता पगसों इत चलि आवै। लंका बहुरि पालकी जावै॥
सुनत रामके वचन कठोरा। भये विषादित कपि चहुँ ओरा॥
कहहिं लषण कपिपति हनुमाना। कौन चरित्र करहिं भगवाना॥
प्रभुशासन सुनि जनककुमारी। तजि शिविका पैदर पगु धारी॥
चली विभीषणसंग सुहाई। लाजनसों निज अंग छिपाई॥
लखि लखि वानर करहिं प्रणामा। यहि हित भयो कहहिं संग्रामा॥
लाजन मनहुँ गड़ी महि जाती। मंद मंद पियके ढिग आती॥
चलत विभीषणके सिय पीछे। ताकति पतिमुख नयन तिरीछे॥

दोहा—बोले राम पुकारिकै, लखहु सीय कपिवृन्द।
जाके हित निज जीवकी, तजे छोह छल छन्द॥

चौपाई।

लषण सुकण्ठ और हनुमाना। अंगद आदि बलीमुख नाना॥
किये जानकीचरण प्रणामा। प्रभु भय वश ठाढ़े थिर ठामा॥
परिगो सिगरी सैन्य सनंका। काह करत प्रभु कहहिं सशंका॥
मन्द मन्द चलि जनककुमारी। कीन्ह्यों प्रभुहि प्रणाम निहारी॥

पियमुख लगी लखन सुकुमारी। जैसे चंद्र चकोर सुखारी॥
सो सुख सियको किमि कहिजाई। विस्मय हर्ष सनेह बड़ाई॥
प्रभु चितयो नहिं सियकी ओरा। कह्यो न आउ बैठु यहि ठोरा॥
भय संदेह सहित वैदेही। देखत रघुपति वदन अनेही॥
करि साहस बैठी ढिग जाई। घन समीप जनु तडित सुहाई॥
निकट निहारि राम वैदेही। बोले जो सुनि दुख नहिं केही॥
जीत्यों मैं रिपु समर प्रचारी। जो कछु करन हतो निरधारी॥
भयो कोप अब शान्त हमारा। ताते सुनु सिय मोर विचारा॥

दोहा-सफल भयो मम श्रम सकल, विक्रम दियो दिखाय।
मोर अनादर मोर रिपु, परत न जगत लखाय॥

चौपाई।

प्रण पूरण कीन्ह्यो रिपु मारी। जो तुहिं हरचो लोकदुखकारी॥
भयो अभाग्य जनित जो दोषू। दिह्यों मिटाय सकल करिरोषू॥
नहिं क्षत्रिय जो निज अपमाना। नाशै करि विक्रम विधि नाना॥
कुरी करी करनी हनुमाना। कूद्यो शतयोजन बलवाना॥
जारचो लंक निशाचर मारचो। सुग्रीवहु सनेह निरधारचो॥
कियो विभीषण पूर सहाई। बंधु त्यागि मम शरण सिधाई॥
बांदर प्राण दिये हित मोरे। यह सब भयो न सियहित तोरे॥
मैं जीत्यों रिपु निज बलहीते। जिमिअगस्त्य दक्षिण दिशि जीते॥
कीन्ह्यों सकल हेतु मैं अपने। निज हित जानु सीय नहिं सपने॥
तुहिं रिपु भवन वसत सुख रीते। जनकसुता दशमास व्यतीते॥
करौं कौन विधि ग्रहण तुम्हारा। परघर वसत गहत को दारा॥
जिमि रोगी दृग लागत दीपा। तिमि सीता मुहिं लगति प्रतीपा॥

दोहा-ताते गवनै जानकी, जहँ होय मन तोर।
रह्यो विजय लगि हेतु मम, अब नहिं कारज मोर॥

चौपाई ।

पीतम वचन सुनत सुकुमारी । मृगी सरिस ढारति दृग वारी ॥
करति विचार मनहिं मन सीता । किहि अपराध भइउँ अपुनीता ॥
उत्तर देन चहति वैदेही । कहि न सकति कछु कंत सनेही ॥
जस तसकै धीरज धरि सीता । बोली वचन होत मन भीता ॥
कहहु नाथ जस तस मैं नाहीं । तुव प्रताप रक्षिता सदाहीं ॥
नाथ चरण तजि कहँ अब जैहौं। तुम्हरे देखत देह दहैहौं ॥
पाणिग्रहण अवसर पितु हमहीं । बोल्यो वचन सुनावत तुमहीं ॥
बिनु पतिजियब उचित नहिंतोहीं। सीते दुर्यश दिहे न मोहीं ॥
ताते जियब उचित नाहिं मोरा । तुमहिं त्यागि जैहौं किहि ठोरा॥
लषण रहे दृग ढारत वारी । तासों कह्यो विदेह कुमारी ॥
देहु लषण अब चिता बनाई । यह कुरोग कर यहै उपाई ॥
लषण लख्यो रघुपतिकी ओरा। कहिनसकत प्रभु भयभरिभोरा ॥

दोहा—प्रभु अभिमत निज जानि तहँ, सैनन दीन रजाय ।
अनुशासन गुणि लषण तहँ, दीन्ह्यो चिता बनाय ॥

चौपाई ।

बैठ अधोमुख प्रभु तिहि ठामा । मानहुँ कालरूप भय धामा ॥
कियो प्रदक्षिण पिय वैदेही । गई चिता ढिग राम सनेही ॥
दियो लगाय अग्नि तहँ बाला ।उठी विशाल ज्वाल विकराला ॥
बोली वचन विदेह कुमारी । सुनहु सबै साखी असुरारी ॥
तन मन वचन राम यदि मोरे । लख्यों न और नयनहूं कोरे ॥
तौ पावक रक्षै यहि काला । साखी सकल देव मुनि माला ॥
अस कहि प्रविशी अग्नि मँझारी ।लिखो अग्नि जिमि पिताकुमारी॥
प्रगट्यो पावक रूप पुनीता । बैठायो निज अंकहि सीता ॥
हाहाकार मच्यो चहुँओरा । कियो राक्षसी आरत शोरा ॥

रोवन लागे लषण पुकारी । वानरसैन्य व्यथा भइ भारी ॥
मारुतसुत कपिपति लंकेशा । मूर्छित गिरे भूमि तिहि देशा ॥
सीता पतिव्रतधर्म प्रकाशा । पाय द्विगुण किय ज्वाल हुताशा॥

दोहा—चढ़े विमानन देव सब, कीन्हें हाहाकार ।
प्रविशत पावकमें सियहि, भयो दुखित संसार॥

चौपाई ।

तहँ महेश वासव करतारा । आये जहँ रघुवंशकुमारा ॥
धनद वरुण यम लोकनपाला । आये सहित सकल सुरमाला॥
प्रभुपदपंकज शीश नवाये । अतिआतुर अस वैन सुनाये॥
यह चरित्र का कियो अनूपा । भूलि गयो धौं अपनो रूपा ॥
तुम नारायण लक्ष्मी सीता । जगज्जननि यह परमपुनीता ॥
नित्य अहै संबंध तुम्हारा । दशमुख तकत होत जरिछारा॥
ज्वालमाल मधि राजकुमारी । दया न उपजति नयन निहारी ॥
कीन्ह्यो अति अनर्थ यहिकाला। देखि चरित यह भुवनविहाला ॥
को जानै गति नाथ तिहारी । जग सिरजक पालक संहारी ॥
तब बोले प्रभु मृदु मुसक्याई । हमको तौ अस परै जनाई ॥
हम दशरथमहिपालकुमारा । जो हम होहिं सु करहु उचारा ॥
बोल्यो वचन तहाँ मुखचारी । तुम नारायण हौ भुजचारी ॥

दोहा—अस कहि कीन्ह्यो नाथ की, स्तुति विमल बनाय ।
सो नाहिं भाषा मैं कियो, पढतहि पाप पराय ॥

विधिस्तुति ।

ततो हि दुर्मना रामः श्रुत्वैवं वदतां गिरः ।
दध्यौ मुहूर्त्तं धर्मात्मावाष्प व्याकुललोचनः॥
ततो वैश्रवणो राजा यमश्चामित्रकर्शनः ।
सहस्राक्षो महेन्द्रश्च बरुणश्च परंतपः ॥

षडर्द्धनयनः श्रीमान्महादेवो वृषध्वजः ।
कर्ता सर्वस्य लोकस्य ब्रह्मा ब्रह्मविदां वरः ॥
एते सर्वे समागम्य विमानैः सूर्यसन्निभैः ।
आगम्य नगरीं लंकामभिजग्मुश्च राघवम् ॥
ततः सहस्ताभरणान्प्रगृह्य विपुलान्भुजान् ।
अब्रुवंस्त्रिदशश्रेष्ठा राघवं प्राञ्जलिस्थितम् ॥
कर्त्तासर्वस्य लोकस्य श्रेष्ठो ज्ञानवतां विभुः ।
उपेक्षसे कथं सीतां पतंतीं हव्यवाहने ॥
कथं देवगणश्रेष्ठमात्मानं नावबुध्यसे ।
ऋतधामावसुः पूर्वं वसूनां त्वं प्रजापतिः ॥
त्रयाणामपि लोकानामादिकर्तास्वयंप्रभुः ।
रुद्राणामष्टमो रुद्रः साध्यानामपि पंचमः ॥
अश्विनौ चापि ते कर्णौ चन्द्रसूर्यौच चक्षुषी ।
अन्ते चादौ च मध्ये च दृश्यसे त्वं परंतप ॥
उपेक्षसे च वैदेहीं मानुषः प्राकृतो यथा ।
इत्युक्तोलोकपालैस्तैःस्वामीलोकस्यराघवः॥
अब्रवीत्रिदशश्रेष्ठान्रामो धर्मभृतां वरः ।
योहं यस्य यतश्चाहं भगवांस्तद्ब्रवीतु मे ॥
इति ब्रुवाणं काकुत्स्थं ब्रह्मा ब्रह्मविदां वरः ।
अब्रवीच्छृणु मे राम सत्यं सत्यपराक्रम ॥
भवान्नारायणो देवः श्रीमांश्चक्रायुधोविभुः ।
एकशृङ्गी वराहश्च भूतभव्यसपत्नजित् ॥
अक्षरं ब्रह्म सत्यं च मध्ये सत्ये च राघव ।
लोकानां त्वं परोधर्मो विष्वक्सेनश्चतुर्भुजः ॥
शार्ङ्गधन्वा हृषीकेशः पुरुषः पुरुषोत्तमः ।

अजितःखङ्गधृग्विष्णुः कृष्णश्चैववृहद्वलः ॥
सेनानीर्ग्रामणीःसर्वं त्वंबुद्धिस्त्वंक्षमोदमः ।
प्रभवश्चाप्यजश्च त्वमुपेन्द्रो मधुसूदनः ॥
इन्द्रकर्मा महेन्द्रस्त्वं पद्मनाभो रणांतकृत ।
शरण्यं शरणं तं त्वामाहुर्दिव्या महर्षयः ॥
सहस्रशृङ्गो वेदात्मा शतशीर्षो महर्षभः ।
त्वंत्रयाणांहिलोकानामादिकर्तास्वयंप्रभुः ॥
सिद्धानामपिसाध्यानामाश्रयश्चासिपूर्वजः ।
त्वंयज्ञस्त्वंवषट्कारस्त्वमोंकारःपरात्परः ॥
प्रभवंनिधनं वा ते न विदुः को भवानिति ।
दृश्यसे सर्वभूतेषु ब्राह्मणेषु च गोषु च ॥
दिक्षु सर्वासु गगने पर्वतेषु वनेषु च ।
सहस्रचरणः श्रीमाञ्छतशीर्षस्सहस्रदृक् ॥
त्वं धारयसि भूतानि पृथिवीं सर्वपर्वतान् ।
अंते पृथिव्याः सलिले दृश्यसे त्वं महोरगः॥
त्रींल्लोकान्धारयन्राम देवगन्धर्वदानवान् ।
अहं ते हृदयं राम जिह्वा देवी सरस्वती ॥
देवा रोमाणि गात्रेषु ब्रह्मणा निर्मिताः प्रभो ।
निमेषस्ते स्मृतारात्रिरुन्मेषो दिवसस्तथा ॥
संस्कारास्तेऽभवन्वेदानैतदस्ति त्वया विना॥
जगत्सर्वं शरीरं ते स्थैर्यं ते वसुधातलम् ॥
अग्निःकोपःप्रसादस्ते सोमःश्रीवत्सलक्षणः ।
त्वयालोकास्त्रयःक्रांताःपुरास्वैर्विक्रमैस्त्रिभिः
महेन्द्रश्च कृतोराजा बलिं बद्ध्वा महासुरम् ।
सीतालक्ष्मीर्भवान्विष्णुर्देवःकृष्णःप्रजापतिः

वधार्थं रावणस्येह प्रविष्टौ मानुषीं तनुम् ।
तदिदं नः कृतं कार्यं त्वया धर्मभृतां वर ॥
निहतो रावणो राम प्रहृष्टो दिवमाक्रम ।
अमोघं देववीर्यं ते न ते मोघाः पराक्रमाः ॥
अमोघं दर्शनं राम न च मोघस्तव स्तवः ।
अमोघास्ते भविष्यंति भक्तिमंतस्तुयेनराः ॥
ये त्वां देव ध्रुवंभक्ताः पुराणं पुरुषोत्तमम् ।
प्राप्नुवंति सदा कामानिह लोके परत्र च ॥
इममार्षं स्तवं दिव्यमितिहासं पुरातनम् ।
ये नराःकीर्तयिष्यंति नास्तितेषांपराभवः ॥

दोहा—पंचवटीमहँ जानकी, राम रजायसु पाय ।
पावकमाहँ प्रवेश किय, छायारूप टिकाय ॥
सो छाया वपु सिय मिल्यो, प्रगट्यो रूप प्रधान ।
सो पावक धरि अंकमहँ,निकस्यो अति हरषान॥

चौपाई ।

कह्यो रामसों करत प्रणामा । लेहु शुद्ध प्रभु आपनि वामा॥
जगज्जननि यह विगत विकारा । धर्मरूप कीरति आकारा ॥
कृपाहेतु रावण वर जाई । दियो परमपद सकुल पठाई ॥
कीरति करुणा भक्ति तुम्हारी । जानि जानकी लेहु खरारी ॥
तिहि अवसर प्रमुदित रघुराई। सीतै लिये निकट बैठाई ॥
सुर मुनि कपि कीन्हें जयकारा । वर्षैं कुसुम देव बहु वारा ॥
विधि महेश पावक कहँ रामा। बोले वचन महामतिधामा ॥
जानत रह्यों यदपि सब भाँती । सियहि न दूषणताति नजिकाती ॥
जगअपवाद भीति उर लाई । पावक दियो प्रवेश कराई ॥
कछु कारण औरहु त्रिपुरारी । जानहु आपसहित सुखचारी ॥

तव वाल महेश करतारा । जानै को प्रभु चरित तुम्हारा ॥
आज पूजिगै आश हमारी । तुम ढिग लखी विदेहकुमारी ॥

दोहा–राजहु राजसमाज नित, सहित सीय रघुराज ।
छायो सुयश दराज जग, भये देवकृत काज ॥

चौपाई ।

अस कहि भये मौन करतारा । तब बोले पुनि शंभु उदारा ॥
उर विशाल कौसक भरतारा । भुज प्रलंब गज कर मद हारा ॥
सकल देव कारज निरधारा । धर्म धुरंधर धरणि विहारा ॥
मेट्यो तीन लोक अँधियारा । निज यश कियो भुवन उजियारा ॥
समर दुरासद रावण मारा । करि प्रण तिलक विभीषणसारा ॥
देवकाज सब नाथ सम्हारा । दुखित भरत अवअनुजतुम्हारा ॥
अवधि टरे जो अवध सिधारा । को पुनि भरत प्राण रखवारा ॥
कौशल्याके प्राण अधारा । कैकेयीके शोक अपारा ॥
दुखित सुमित्रा अति यहि वारा । देहु मातु सुख राजकुमारा ॥
करु सनाथ रघुकुल परिवारा । लीजै शीश राज कर भारा ॥
करि वसुधामहँ धर्मप्रचारा । थापन करि रघुकुल संसारा ॥
अश्वमेध करिकै बहु वारा । दै महि देवन धन पट हारा ॥
विहरि यकादश वर्ष हजारा । गवनहु नाथ विकुंठ अगारा ॥

–जब जैहौ प्रभु अवधको, होई तिलक तुम्हार ।
तब मैं दरशन करनहित, ऐहौं लै निज दार ॥

चौपाई ।

ई अवसर दशरथमहाराजा । आयो चढ़ो विमान दराजा ॥
कोटिन सूरजसरिस प्रकासा । तब बोल्यो प्रभुसों कृतिवासा ॥
आवत दशरथ पिता तिहारे । तुव तारित सुरलोक सिधारे ॥
रघुपति लीला लखन तिहारी । भये महेन्द्रहि महल विहारी ॥

लषण सीययुत करहु प्रणामा । अब पूरयो दशरथमनकामा ॥
पितै निहारि लषण रघुराई । लषण सीययुत आगे आई ॥
कहि निजनाम राम अभिरामा । अनुज सीययुत कियो प्रणामा ॥
देखि राम नृप त्यागि विमाना । दौरयो तनक रह्यो नहिं भाना ॥
लियो लाल कहि अंक उठाई । बार बार दृग वारि बहाई ॥
सीता लषण राम कहँ राजा । बैठायो लहि मोद दराजा ॥
पुनि पुनि मिलन सुबाहु पसारी । चूमि वदन शिर सूंघि सुखारी ॥
गद्गद कंठ बहत दृग वारी । कह्यो अवधपति गिरा उचारी ॥
दोहा—यदपि विभव वासवसरिस, लह्यो स्वर्गमें आय ।
तदपि न लागत नीक कछु, तुम विन तोरि दुहाय ॥

चौपाई ।

जौन कैकयी वचन उचारा । सो नहिं बिसरत मोहिं बिसारा ॥
तापसवेष विभूति निरासी । चौदह वर्ष राम वनवासी ॥
केकयीवचन बाणकी गाँसी । हियते निकसत नाहिं निकासी ॥
आयो इन्द्रलोकते धाई । सुनिकै रावण राम लराई ॥
कुशल जानकीलषणसमेतू । तुमहिं लख्यों पायों सुखसेतू ॥
कह्यो शक्र मुहिं सकल बुझाई । परब्रह्म जानहु रघुराई ॥
हरनहेतु अवनी कर भारा । तुव घर लियो विष्णु अवतारा ॥
करनहेतु रावण संहारा । भूप विष्णु तव भयो कुमारा ॥
पै मुहिं लागहु वैसहि रामा । पेषत प्रीति पूर प्रति यामा ॥
लगहु छोहरासम रघुनायक । यदपि भुवनपालक गतिदायक ॥
पूरण भयो मनोरथ आजू । तुमहिं कुशल देख्यों रघुराजू ॥
तुव तारित मैं स्वर्गहु माहीं । लह्यो इन्द्र अर्धासन काहीं ॥
दोहा—अष्टावक्र मुनीश जिमि, पिता कहो लो नाम ।
तारयों जिमि तारयो हमहिं, तुमहुँ राम अभिराम ॥

चौपाई।

आज कौशिला मोदित होई। तुमहिं अवध अभिषेकित जोई॥
करि वनवास शत्रुसंहारी। जैहौ कोशलनगर सुखारी॥
जे देखिहैं तुमहिं नर नारी। तेई भाग्यवंत जगभारी॥
सुनहु राम त्रिभुवन भरतारा। होई जब अभिषेक तुम्हारा॥
धर्मधुरंधर धीरज सिंधू। करुणाकर दीननके बंधू॥
तुमहिं देखिहौं भरतसमेतू। तब जैहौं पुनि आप निकेतू॥
चौदह वर्ष भये वनवासी। मोरि प्रतिज्ञा पालेहु खासी॥
सीतालषणसहित रघुराई। मम हित सह्यो कलेश महाई॥
भयो राम पूरण वनवासा। रावण हनि यश कियो प्रकासा॥
कियो देवकारज सब भाँती। गावत कीरति देव जमाती॥
अवधि माहिं अब अवधसिधारहु। अपनोराजतिलकसुतसारहु॥
करहु बंधुयुत कोशलराजू। राजहु कोटि बरिस रघुराजू॥

दोहा–पिता वचन सुनि मोद भरि, कह्यो जोरि कर राम।
देहु मोहिं वरदान यक, वन्यो होय जो काम॥

चौपाई।

मम वनवास गवनके काला। कह्यो केकयीको महिपाला॥
करहुँ तोर सुत संयुत त्यागा। रघुकुल विपिन दवारि अभागा
यह तुव शाप केकयी काहीं। भरतसहित लागै अब नाहीं॥
भरतै जननि सहित महराजा। करहु अनुग्रह देव दराजा॥
सुनि सुतवचन भूप मुसक्याई। लीन्ह्यो रामहि हिये लगाई॥
कह्यो वचन अब तुम बिन आना। करै कौन अस वचन बखाना॥
तजो केकयी करमैं द्रोहा। तुमहिं देखि लहि मुद संदोहा॥
बहुरि लषणको मिलि अवधेशा। चूमि वदन दीन्ह्यो उपदेशा॥
कीन्हीं सकल राम सेवकाई। लहहु धर्मफल सुयश बड़ाई॥

सुनहु सुमित्रानंदन प्यारे । सेवक धर्म सकल निरधारे ॥
किय प्रसन्न रामहिं सब भाँती । तुहि विलोकि भइ शीतलछाती॥
रामकृपा सुधरहिं दोउ लोका । तोहिं कौन अब जगमहँ शोका ॥

दोहा—सकल लोकहितमें निरत, राम विष्णु अवतार ।
तीनि लोक वासवसहित, भजत राम प्रतिवार ॥

चौपाई ।

सिद्ध सुरर्षि महर्षि अनंता । पूजहिं राम जानि भगवंता ॥
परब्रह्म अक्षर अविनासी । माया जानु रामकी दासी ॥
देवन हृदय निरंतरवासी । सकल प्रकाशन केर प्रकासी॥
राम परन्तप परम प्रभाऊ । अज अनादि अति सरल सुभाऊ ॥
तासु चरण सेवन तुम कीन्हा । सहजहिसकल सुकृतफल लीन्हा॥
सावधान ह्वै सेवन कीजै । सदा रामशासन शिर लीजै ॥
राम सीय पितु मातु तिहारे । मान्हु सब दिन सरिस हमारे ॥
नृप लखि कर जोरे वैदेही । कहे वचन सुतवधू सनेही ॥
सुनहु पुत्रिका जनककुमारी । किहेहु रामसेवन सुखकारी ॥
कह्यो कटुक कछु जो रघुराई । दिह्यो ताहि स्वप्नेहुँ बिसराई ॥
तुव कीरतिहित अग्निप्रवेशा । फरमायो रघुवंश दिनेशा ॥
किहेहु अबहुँ पतिसों नहिं माना। स्वप्नेहुँ कोप न होय महाना ॥

दोहा—यथा पतिव्रतधर्मतें, सीता दियो निबाहि ।
तथा जगतमें दूसरी, नारि निबाही नाहि ॥

चौपाई ।

कस न होय मिथिलापतिबेटी । देवी सकल तोर हैं चेटी ॥
किह्यो अकाम राम सेवकाई । राम मातु पितु गुरु सुत भाई ॥
सुयश सनेह प्रभाव बड़ाई । जैहौ अनपाई तुम पाई ॥
तेरो यश जग सेतु बँधायो । मैथिलकुलमहिमा अति पायो ॥

अस कहि दशरथभूप सुजाना। जनकसुता शिर करि अघ्राना॥
लषण राम मिलि बारहिं बारा। ढारत दृग आनँद जलधारा॥
दिव्यविमानहि भयो सवारा। कियो प्रणाम राम बहु वारा॥
कीन्ह्यो प्रणति लषण शिरनाई। कहे जोरि कर तहँ दोउ भाई॥
त्यागेहु नाहिं सुधि पिता हमारी। तुव प्रताप पायों बड़वारी॥
कियो प्रणाम श्वशुर कहँ सीता। आशिष दीन्ह्यों भूप पुनीता॥
चढ़ि विमान दशरथ महराजा। गवन्यो शक्रसदन कृतकाजा॥
गावत चले सकल गंधर्वा। नाचत चलीं अप्सरा सर्वा॥

दोहा—कपिपति अंगद मरुतसुत, जाम्बवान लंकेश।
करि दशरथ दरशन तहाँ, भये सुखी तिहि देश॥

चौपाई।

शक्रलोक जब गे अवधेशा। कह्यो रामसों तब अमरेशा॥
लोकपाल हम रचे तुम्हारे। दरशन होत अमोघ हमारे॥
करों कौन तुम्हरी सेवकाई। पूरणब्रह्म आप रघुराई॥
कह्यो शक्रसों प्रभु मुसक्याई। यह वरदान देहु सुरराई॥
जे वानर मम हित तनु त्यागे। मारि शत्रु मरिगे नहिं भागे॥
छोड़ि कलत्र पुत्र घर आये। सकल काज मम हित विसराये॥
जियें सकलबल ओजनिधाना। रह्यो जासु यश प्रथम प्रमाना॥
कह्यो देवपति सुन रघुराया। अतिदुर्लभ जीवन मृत काया॥
तुम समरथ जग अंतर्यामी। चहहु सुकरहु ईश अज स्वामी॥
कीश भालु जागिहैं अपारा। सोवत मनहुँ भये भिनसारा॥
जसके तस ह्वै हैं कपि भालू। नीरुज निर्व्रण कृपा कृपालू॥
जहँ रैहैं कपि भालु तुम्हारे। होहिं सरितसर सजल अपारे॥

दोहा—जिहिं वन वानर भालु तुव, करिहैं वास कृपाल।
तहँ फुलिहैं फलिहैं विटप, पाय अकाल सुकाल॥

चौपाई ।

असकहिसुरपति अतिहिय हर्षे । कपिदल उपर सुधाजल वर्षे ॥
उठे भालु कपि जसके तैसे । नीरुज निर्व्रण सोवत ऐसे ॥
एकहि वार किये जयकारा । मनहुँ महोदधि तज्यो करारा ॥
मिलहिं परस्पर वानर भालू । कहहिं कौन प्रभुसरिस दयालू ॥
तहाँ समिटि सब सुर यकबारा। करिप्रणाम अस वचनउचारा ॥
गवनहु नाथ अवधपुर काहीं । विदा देहु वानर घर जाहीं ॥
जनकसुतै आश्वासन कीजै । विरहजनितदुख शमन करीजै ॥
धृतव्रत आरत भरत निहारहु । जाय अवध मातन दुख दारहु॥
दुखित शत्रुहन शोक नशावहु। राजतिलक आपन करवावहु॥
अस कहि सुरकरिप्रभुहिप्रणामा। चढ़ि विमान गवने निजधामा॥
प्रभु कीन्ह्यो सुरपतिहि प्रणामा । गयो इन्द्रपुर पूरणकामा ॥
भये अस्त दिनकर तिहिकाला। आई निशा उदित उडुमाला ॥

दोहा—राम लषण कपि सैन्ययुत, कीन्ह्यो सुखित निवास ।
जोरि पाणि बोल्यो वचन, आय विभीषण पात ॥

चौपाई ।

मज्जन करहु भ्रातयुत रामा । पहिरहु भूषण वसन ललामा ॥
लेपन करहु अंग अँगरागा । तैसे वैदेही बड़भागा ॥
सुर गंधर्व असुरकी कन्या । मज्जन करवावहिं जग धन्या ॥
यह विभूति रघुनाथ तिहारी । होय कृतारथ है न हमारी ॥
सुनत विभीषणवचन रसाला। हियहर्षित हँसि कह्यो कृपाला ॥
मोपर नेह अछेह तुम्हारा । करहु जु शासन होय हमारा ॥
कपिपति अंगद अरु हनुमाना। जाम्बवान आदिक बलवाना ॥
वानरवीरनको नहवावहु । विविध वसन भूषण पहिरावहु ॥
सखा करहु सब कर सत्कारा। यह सब पूजन जानु हमारा ॥

सदा सुखोचित कपिकुलराजा। सह्यो दुसह दुख मेरे काजा ॥
मैं नाहिं मज्जहुँ सो सुनु कारण। कीन्हें भरत मोर व्रत धारण ॥
राजकुमार बड़ो सुकुमारा। सखा भरत मुहिं प्राणपियारा ॥
दोहा–तिहि बिन मज्जन किमि करहुँ, धरहुँ वसन निज अंग।
किमि भूषण पहिरौं सखा, तजि न सकौं तिहि संग ॥

चौपाई।

जैहों अवध जु अवधि विताई। मिली न जियत प्राणप्रिय भाई ॥
सीता लषण सकल परिवारा। मोहिं भरतसम नाहिं पियारा ॥
जो मम करन चहहु व्यवहारा। तौ पहुँचावहु अवध अगारा ॥
विषम पंथ दूरी अति देशा। बीतत अवधि होत अंदेशा ॥
कह्यो विभीषण तब कर जोरी। सुनहु नाथ विनती यह मोरी ॥
अवध एक दिनमहँ पहुँचैहों। नाथ सकल संदेह मिटैहों ॥
है यक पुष्पक नाम विमाना। भानुसमान प्रकाश महाना ॥
जीति कुबेर दशानन ल्यायो। मन अनुसारहि चलन त्वरायो ॥
सो विमान हाजिर तुव हेतू। मोरि विनय सुनु कृपानिकेतू ॥
जो मोपर करियत अति छोहू। जो राखहु सौहृद संदोहू ॥
तौ सिय लषणसहित रघुराई। बसौ दिवस द्वैयुत कपिराई ॥
जो कछु पूजन करहुँ तुम्हारा। सैन्यसहित अवधेशकुमारा ॥
दोहा–करि कृपालु मोपर कृपा, सबै ग्रहण करि लेहु।
दीन जानि मुहिं मान दै, कीजै सफल सनेहु ॥

चौपाई।

चरण शीश धरि नाथ मनाऊँ। कौन योग्यता तुम्हैं दिखाऊँ ॥
यह संपति काके हित लागी। जो जोरचो दशकण्ठ अभागी ॥
सखाविनय सुनि दीनदयाला। बोले जल भरि नयन विशाला ॥
कीन्ह्यो सखा सकल सत्कारा। तुम्हैं उऋण मैं युग न हजारा ॥

दै सलाह पुनि कियो सहाई । आपन तन धन प्राण लगाई ॥
को अस करी मित्र उपकारा । यथा विभीषण सखा हमारा ॥
कहँलगि कहौं न कहे सिराई । भरत विभीषण नेह बढ़ाई ॥
भरत प्राण अब हाथ तिहारे । करहु उचित जो मनहिं विचारे॥
भरतसमीप वसत मन मोरा । तुमसों चलत सखा नहिं जोरा ॥
चित्रकूटमहँ जब हम आये । घरते भरत मनावन धाये ॥
कौशल्या कैकयी सुमित्रा । आईं सब मम मातु पवित्रा ॥
सखा निषादराज मम प्यारा । भरत शत्रुहन संग सिधारा ॥

दोहा—अवधनगरवासी सकल, चित्रकूटमहँ आय ।
मुहिं मुरकावनहेतु तहँ, कीन्ह्यो कोटि उपाय ॥

चौपाई ।

मुहिं ले चलन भरत अभिलाषी । मैं निज पिता प्रतिज्ञा राषी ॥
भरत कह्यो कछु देहु अधारा । मैं पादुका दियों तिहिं बारा ॥
भरत दियो पुनि वचन सुनाई । ऐहौ जो प्रभु अवधि बिताई ॥
तो मुहिं नाथ जियत नहिं पैहौ । यह कलंक किहि भाँति मिटैहौ॥
भरतसनेह सकोच तुम्हारा । मम मन भ्रमत न पावत पारा ॥
भरत मरत मरिहैं सब माता । होई रघुकुल केर निपाता ॥
कहि नहिं सकत सकोच तिहारे । बनत मोर अब अवध सिधारे ॥
सखा क्षमहु यह चूक हमारी । किह्यो न कोप सनेह विचारी॥
विनती करहुँ सखा कर जोरी । लाउ विमान जानि रुचि मोरी॥
भयो सिद्ध सिगरो मम काजा । कीन्ह्यो तोहिं लंक महराजा ॥
अब भरतहु कर राखहु प्राणा । तोर निहोर मोर कल्याणा ॥
यहिविधि राम विभीषण बाता । करत परस्पर भयो प्रभाता ॥

दोहा—राम वचन कल्याण गुणि, लंकराज मतिमान ।
जाय लंक ल्यायो तुरत, कामग पुष्प विमान॥

सवैया ।

कंचनके मणिमंडित भौन बनी फटिकैं फरसैं मनहारी ।
सर्व अराम के धाम अनेक लसैं वर राजत गोपुर भारी ॥
श्वेत पताके भले फहरैं जिनमें अरुझात प्रयात तमारी ।
श्रीरघुराज भये अति राजी सियायुत पुष्पविमान निहारी ॥१॥
किंकिणि जाल बँधे चहुँओर भई धनि घंटनकी घहनारी ।
त्योंहीं अनेकन भाँति मणीनकी छाय रही तिहि देश उज्यारी ॥
जोरि उभय कर जाय विभीषण राम सों कीन्ह्यों विनय सुखकारी।
कोशलराज सुनो रघुराज विमान तयार करीजै सवारी ॥२॥

दोहा—काह उचित अब नाथ मुहिं, दीजै उचित निदेश ।
जामें परैं न मोहिं कछु, दोऊ लोक भदेश ॥

चौपाई ।

सुनत सखा के वचन कृपाला । मिले दौरि युग भुजन विशाला ॥
कही विभीषणसों मृदु वानी । सखा अहौ तुम बड़े विज्ञानी ॥
हमहूँ कहहिं उचित अस आजू । पूजहु सैन्यसहित कपिराजू ॥
हमरे तुम्हरे हित कपि नाना । त्यागे समर परम प्रिय प्राना ॥
वसन विभूषण धन बहु जाती । पूजहु सिगरी कपिन जमाती ॥
सखा शक्ति अनुसार तुरंता । पूजहु सब वानर बलवंता ॥
तुमहिं कृतघ्न दोष नहिं लागी। अवनी अनुपम कीरति जागी ॥
रत्न कनकसंपति विधि नाना । जोरै सकल काल मतिमाना ॥
दान काल भूपति जो पावै । देत वित्त नहिं बार लगावै ॥
सबसों करै प्रीति परतीती । जो जस होय यही नृप रीती ॥
हीन दीनमति चित्त मलीना । क्षमत चूक नहिं गुणगणछीना ॥
प्रीति प्रतीति न कहुपर राखै । देत दंड सबपर नित माखै ॥

दोहा—ऐसे ठाकुर को तजत, काल पाय सामंत ।

सैन्य करत विश्वास नहिं, होत पराजय अंत ॥

चौपाई ।

सुनत विभीषण रघुपति वैना । नाय माथ नाथहि मुद ऐना ॥
गयो लंकमहँ खोलि भँडारा । पट भूषण ऐंचाय अपारा ॥
अर्व खर्व चामीकर मुद्रा । जो संचित किय दशमुख क्षुद्रा ॥
वसन विभूषण सकल भराई । आयो जहाँ कीश समुदाई ॥
कपिपति अंगद अरु हनुमाना । नील सकल कपिसैन्यप्रधाना ॥
वली वलीमुख और प्रधाना । यथा योग्य सब कहँ सन्माना ॥
जोरि पाणि करि विनय बड़ाई । लंकराज दीनता दिखाई ॥
पट भूषण सब कहँ पहिराये । वानरवली देवसम भाये ॥
पट भूषण कपि ऋक्षहु पहिरे । नचैं नगरमहँ भीतर बहिरे ॥
हेमहार अंबर जरतारी । दियो विभीषण कपिन पुकारी ॥
जो जस रह्यो ताहि तस दीन्हा । निशिचरनाथ योग्यता चीन्हा ॥
मर्कटकटक न कोउ अस बाकी । लेत लेत नहिं मति जिहि थाकी ॥

दोहा–निशिचरनाथ उदारता, देखि कपिन व्यवहार ।
लज्यो वित्तपति चित्तमहँ, कहि धनि अनुज हमार ॥

चौपाई ।

पूजित सैन्य सकल लखि रामा । भये प्रमोदित पूरणकामा ॥
सखा सराहन लगे कृपाला । तुम सम को उदार यहि काला ॥
वर्षें देव गगनते फूला । कहि जयजय रघुपति सुखमूला ॥
अवसर जानि भरत सुधि कैकै । वैदेही लछिमन सँग लैकै ॥
पुहुपविमान चढ़े रघुराई । राजासन बैठे छबिछाई ॥
खड़े चहूँकित कीश अपारा । कपिपति अंगद पवनकुमारा ॥
ऋक्षराज अरु राक्षसराजा । नील सैन्यपति सहित समाजा ॥
वली वलीमुख मुख्य निहारी । बोले मंजुलवचन खरारी ॥

कीन्ह्यो मोर मित्रकर काजा। करि विक्रम हनि शत्रुसमाजा ॥
तुमसे उऋण कबहुँ हम नाहीं। जाहु सबै निज निज घरकाहीं ॥
कपिपति निशिचरपति चित चाहे। हित कारज मित्रता निबाहे ॥
किष्किंधै कपिनायक जाहू। बसौ लंकमहँ निशिचर नाहू ॥

दोहा–भालु कीश निज निज भवन, मोदित करहिं पयान ।
संग हमारे अवधपुर, चलहिं एक हनुमान ॥

चौपाई ।

मोर प्रताप प्रभावहि पाई। सकैं न धर्षन करि सुरराई ॥
शंभु स्वयंभु मानिहैं भीती। लोकपाल कोउ सकै न जीती ॥
माँगि बिदा हमहूं सब पाहीं। करहिं पयान अवधपुरकाहीं ॥
अजर अमर रहियो सुख वोरे। प्राणहुँते प्रिय हो सब मोरे ॥
सुनत सुखद रघुनायक वानी। दुखी सुखी भे कपिबलखानी ॥
कहि न सकत तहँ प्रभुहि डराई। देखन चहत अवध सँग जाई ॥
तहँ निशिचर वानरकुलभूपा। कहे वचन कर जोरि अनूपा ॥
सकल वीर चाहत अस स्वामी। तुम सबके हो अंतर्यामी ॥
लखैं अवधपुर संग सिधाई। राजतिलक देखैं सुख छाई ॥
लौटि आशु निज निज घर ऐहैं। जीवत भरि रघुबरयश गैहैं ॥
निरखि राजधानी मनहारी। होब सकल सब भाँति सुखारी ॥
कौशल्यापद वंदन कैकै। ऐहैं भवन कृतारथ ह्वैकै ॥

दोहा–शाखामृग अस कहत सब, हमरहु अस अभिलाष ।
उचित होइ सो करहु प्रभु, क्षमहु चूक तजि माष ॥

चौपाई ।

संग चलब अभिलाष विचारी। कह्यो कृपानिधि वचन पुकारी ॥
गवनहु संग सुकंठ हमारे। सहित वीर वानर बलवारे ॥
चलहु विभीषण संग त्वराई। लखहु राजधानी मनभाई ॥

यह अभिलाष तु रह्यो हमारा । लाजविवश नहिं वचन उचारा
सुनि प्रभुवचन कीश सुख पाये । मानहु मरत अमिय मुख नाये
चढ़े सकल कपि पुहुपविमाना । निशाचरेन्द्र कपीन्द्र महाना
कपि अनंत कोटिन तहँ बैठे । मानहु मोद महोदधि पैठे
कोउ कपि लह्यो न कछु संकेता । पुहुपविमान प्रभाव निकेता
राजत राजसिंहासन रामा । वामभाग जानकी ललामा
दहिने लसत लषण रणधीरा । कपिपति अंगदादि कपिवीरा
वामभाग निशिचरकुलभूषण । सन्मुख हनुमत बैठ अदूषण
कपिसमाज राजत रघुराजा । मनहु देवमंडल सुरराजा

दोहा—जानि समय शुभ राम तहँ, शासन दियो सुजान ।
अवधओर उत्तरदिशा, गवनै पुहुपविमान ॥

चौपाई ।

राम रजाय पाय हरषाना । गगनपंथ ह्वै चल्यो विमाना ॥
मची तहाँ किंकिणि झनकारी । घंटानाद भयो अति भारी ॥
सुरकुसुमावलि झरी लगाये । जय रघुवंश वीर मुख गाये ॥
गयो गगन जब ऊंच विमाना । देख्यो समरभूमि भगवाना ॥
कह्यो जानकीसों मुसक्याई । समरभूमि देखौ मन भाई ॥
वानर राक्षस समर महाना । यहि थल भयो घोर घमसाना ॥
यहि थल मैं रावणको मार्यो । यहि थल कुंभकर्ण संहार्यो ॥
यहि थल नीलहु हत्यो प्रहस्तै । धूमअक्षवध हनुमत हस्तै ॥
हन्यो सुषेणहु विद्युन्माली । अंगद भयो विकट संघाली ॥
यहि थल देवर लषण तुम्हारा । शक्रजीत कहँ समर सँहारा ॥
यहि थल मारि गयो अतिकाया । लषण ब्रह्मशर बाण चलाया ॥
विरूपाक्ष अरु महापार्श्व भट । हने अकंपन कपिवर चटपट ॥

दोहा—देवांतकहु नरांतकहु, अरु त्रिशिरा बलवंत ।

रण उन्मत्त विमत्त भट, कुंभ निकुंभ दुरंत ॥
वज्रदंत मकराक्ष भट, अरु दुर्धर्ष अकंप ।
शोणिताक्ष यूपाक्ष दोउ, अरु रसना जिहि संप॥
ब्रह्मशत्रु आदिक सबै, जे निशिचर बलवान ।
मारे सकल कपीश भट, तोरे हेतु निदान ॥

चौपाई ।

यहि थल मंदोदरी विलापा । कीन्ह्यो निहतकंत लहि तापा॥
मैथिलि लखहु महोदधि घोरा । उठैं तरंग तुंग करि शोरा ॥
यह देखहु मयनाक महीधर । जो विश्राम भयो हनुमत कर॥
यह उत्तर तट सागर हेरो । कियो प्रथम वानरदल डेरो ॥
इतहीं मिल्यो विभीषण आई । किह्यो लंकपति मानि मिताई॥
सेतुबंध प्रद पुण्य ललामा । थाप्यों महादेव यहि ठामा ॥
तीरथ महापाप कर हारी । सेतुबंध यह नाम उचारी ॥
इन शिवकर रामेश्वर नामा । पूरण करत मनुजमनकामा ॥
महापवित्र पुण्यथल प्यारी । करहु प्रणाम महेश निहारी ॥
सीता किय प्रणाम कर जोरी । चल्यो विमान सवेग बहोरी ॥
किष्किंधाके उपर विमाना । गयो गगनमहँ वेग महाना ॥
तब सिय कह्यो सुनहु रघुराई । तारादिक तिय लेहु बुलाई ॥

दोहा—और बली वानरनकी, लीजे नारि बुलाय ।
चहौं राजधानी लखन, वानरीन लै जाय ॥

चौपाई ।

प्रभु कह उचित कही तैं सीता । तारादिक तिय चलैं पुनीता ॥
अस कहि राम विमान उतारयो । सुग्रीवहि अस वचन उचारयो ॥
तारा रुमा आदि तिय जेती । चलैं राजधानी मम तेती ॥
सुखी सुनत सुग्रीव तुरंता । गयो भवन वानर बलवंता ॥

बोल्यो वचन सुनहु प्रिय तारे । गवनहुँ अवध विमान सवारे ॥
जनकलली वानरी बुलाई । ह्वैहौ शुचि सियदरशन पाई ॥
अवध जाय देखब अभिषेका । कौशल्यादिक रानि अनेका ॥
सुनि तारा लहि मोद अपारा । बोलि बानरिनि करि शृंगारा ॥
परी जाय सियचरणनमाहीं । भई विशोक देखि प्रभु काहीं ॥
उड्यो विमान गगनमहँ धायो । तब सीता कहँ राम बतायो ॥
यहि थल मैं मार्‌यों सिय वाली । बस्यों प्रवर्षन पादप माली ॥
ऋष्यमूक गिरि लखै जानकी । जिहि छवि घनदामिनिसमानकी ॥

दोहा—इहाँ मिल्यो सुग्रीवको, भयो सखा कपि मोर ।
कीन्ह्यो प्रण वालीवधन, लखे विभूषण तोर ॥

चौपाई ।

यह पंपासर विपिन सुहावन । शबरीको आश्रम अति पावन ॥
इत कवंध जिहि योजन बाहू । काटि भुजा मारे हम ताहू ॥
रावणसों इत लर्‌यो जटाई । तुवहित तनु परिहरि गहि पाई ॥
पंचवटी लखु जनककुमारी । गोदावरी सरित सुखकारी ॥
लखै पर्णशाला नृपबाला । आयो इतै हरन दशभाला ॥
यह अगस्त्यआश्रम सिय देखै । इतै सुतीक्षण कुटी परेखै ॥
चल्यो सवेगहि व्योमविमाना । तब शरभंगाश्रम दरशाना ॥
कह्यो राम इत वासव आयो । मुनि तनु तजि परधाम सिधायो ॥
लखै जनकदुहिता पुहकरनी । मारि विराध गाड़िदिय धरनी ॥
निवसाहिं इतै अत्रि अनुसुइया । कियो न कहुपर कबहुँ असुइया ॥
चित्रकूट लखु प्राणपियारी । जिहि दरशत अघ रहत न भारी ॥
लखै विमल मंदाकिनि सरिता । दरशत अघहरि आनँदभरिता ॥

दोहा—मुहिं मुरकावन भरत इत, आयो मातुसमेत ।
चित्रकूट चितवत चतुरि, चित्त चैन अति देत ॥

चौपाई।

चित्रकूट नाके रघुवीरा। लख्यो यमुन मर्कतमय नीरा॥
अति उतंग नभ कियो विमाना। परच्यो देखि तीरथ परधाना॥
गंग यमुन संगम सित श्यामा। तीरथराज सकल सुखधामा॥
कह्यो राम सिय लखै प्रयागा। करु प्रणाम संयुत अनुरागा॥
पुनि उत्तर लखि गिरा उचारी। शृंगवेरपुर दीसत प्यारी॥
सखा निषादराज प्रिय मोरा। ह्वैहै बसत विरह दुख घोरा॥
पुनि उत्तर लखि पाणि पसारी। बोले राम त्वरा करि भारी॥
लखु लखु लखु मिथिलेशकुमारी। राजधानि मम परै निहारी॥
देखु अवधपुर महल उतंगा। देखि परति सरयू सित रंगा॥
करु अवधहिं प्रणाम वैदेही। पुरी पियारि लगति नहिं केही॥
लषण जानकी संयुत रामा। करत भये सानंद प्रणामा॥
निशिचर वानर भे सब ठाढ़े। अवध लखन उर आनँद बाढ़े॥

दोहा—चामीकर मंदिर विमल, चमकि रहे चहुँ ओर।
मनु कनकाचल शृङ्ग बहु, तुंग उठे रविओर॥

चौपाई।

किये कीश निशिचरौ प्रणामा। राम राजधानी छविधामा॥
कोशलपुरी प्रशंसन लागे। मर्कटनिशिचर अति अनुरागे॥
पेखि प्रयाग विमान उतारे। प्रभु वेणी मज्जन पगु धारे॥
सीय लषण युत मज्जन कीन्हें। विप्रन दान अनेकन दीन्हें॥
भरद्वाज आश्रम प्रभु आये। मुनिहिंविलोकि चरण शिरनाये॥
पूंछि कुशल मुनिकहमुनिकाहीं। है सुभिक्ष कोशलपुर माहीं॥
हैं अरोग कोशलपुर वासी। औरहु कहौ कछुक तपरासी॥
जीवत भरत अहैं की नाहीं। जननीजियति बसति पुर माहीं॥
राम वैन सुनि मुनि मुसक्याई। बोले वचन मोद उरछाई॥

शिर शासन धरि भरत तुम्हारा । नंदिग्राममहँ वसत उदारा ॥
जटाजूट शिर मलिन शरीरा । विरह कृशित धारे यक चीरा ॥
तुव पादुका पूजि दिन राती । भरत करत कछु शीतल छाती ॥

दोहा–सकल कुशल तौ महल में, आप विरह दुखघोर ।
पुरवासी अरु मातु सब, विकल फिरैं चहुँ ओर ॥
लषण जानकी सहित तुम, दंडक प्रविशे राम ।
निज पगसों परशत पुहुमि, पितु प्रण पूरण काम ॥
रह्यो एक दिन सो दुखद, दुवनहुँ देखत शोक ।
भयो एक दिन आज अब, आनँद भरयो त्रिलोक ॥

चौपाई ।

लषण सीय युत कुशल निहारी । भई पूरि अभिलाष हमारी ॥
जौन भयो दुख सुख वनमाहीं । तपबलसों मैं लख्यो इहाहीं ॥
सीताहरन मरीच विनाशा । काट्यो जो कवंध भुज पाशा ॥
शवरी दरश कपीश मिलापा । पंपासर जस कियो विलापा ॥
वाली निधन प्रवर्षन वासा । सिय खोजन कपिगे दशआसा ॥
कूदि सिंधु जिमि पवनकुमारा । हनि राक्षस लंका जिमिजारा ॥
जिमि कीन्ह्यो नल सागर सेतू । अंगद गवन सुरारि निकेतू ॥
भयो समर कपि राक्षस केरा । यथा आप लंका गढ़ घेरा ॥
कुंभकर्ण रावण घननादा । जिहि विधि मारि लह्यो जयवादा ॥
जिहि विधि देव सबै तहँ आये। सीतै अग्नि प्रवेश कराये ॥
भयो विदित सब मुहिं रघुराई। तुव प्रताप मैं तपबल पाई ॥
अस कहि भरद्वाज मुनिराई । पूज्यो प्रभुहिं सविधि मन लाई ॥

दोहा–कह्यो जोरि कर मुनि बहुरि, करौ आज विश्राम ।
काल्हि करहु कोशल नगर, गवन लषण सिय राम ॥

चौपाई ।

एवमस्तु कहि तहँ रघुराई । बसे प्रयाग महा सुख पाई ॥

भरद्वाज मुनि महा प्रभाऊ । कियो निमन्त्रण सहित उराऊ ॥
फूली फरी तरुनसमुदाई । सकल विपिन ऋतु अनऋतु पाई ॥
भये कल्पतरु सकल समाना । हरित विपिन वर भूरुह नाना ॥
वानरवर जस मनमहँ भावैं । मनवांछित तुरंत सो पावैं ॥
धरणी योजन तीनि प्रयंता । फरे अमियफल विटप अनंता ॥
नदी बहन लागीं पयधारा । दधि मधु घृत रस सिता अपारा ॥
भे सुन्दर मंदिर निर्माना । आवन लगीं अप्सरा नाना ॥
कह्यो राम मुनिसों कर जोरी । तुम दूसर विधि अस मति मोरी ॥
मम विनय सुनहु मुनिराई । जो मैं चहौं जाउँ सो पाई ॥
तुम आतिथ्यकर्मके व्याजू । प्रगटहु वासव भोग दराजू ॥
सो बिन भरत फीक सब लागै । अब तिहि देखनको जिय माँगै ॥

—ताते और न करहु कछु, देहु यही वरदान ।
इतते अरु मुनि अवध लगि, लखौं विपिन हरियान ॥
फूलैं फलैं अनेक द्रुम, किसलय होइ अनंत ।
नदी सजल निर्मल विपुल, सरसी सर जलवंत ॥

चौपाई ।

यही देहु मुनिवर वरदाना । करहुँ अवधपुर काल्हि पयाना ॥
एवमस्तु तहँ मुनिवर भाष्यो । प्रभुकी सकलभाँति रुखराष्यो ॥
लै प्रयाग ते अवध प्रयंता । पादप भये फूल फलवंता ॥
बोल्यो मुनि सुनिये रघुराई । जहँ रहिहैं वानरसमुदाई ॥
फूलैं फलैं भूमिरुह नाना । देहुँ आजते यह वरदाना ॥
चैत्र शुक्क पंचमि है आजू । आये रघुपति तीरथराजू ॥
चौदह वर्ष अवधि गै पूजी । अवध जाहु अब बात न दूजी ॥
आजहि भरतहि खबरि जनावहु । कोशलनगर महामुद छावहु ॥
प्रभु कह उचित कह्यो मुनि ज्ञाता । अबहीं अवध जात कोउ ताता ॥

अस कहि सकल कपीश निहारा। तेज बुद्धि बल ओज विचारा ॥
सब विधि योग जानि हनुमाना । कहे वचन मंजुल भगवाना ॥
जाहु अवध केसरीकिशोरा । जहाँ बैठ भ्राता लघु मोरा ॥

दोहा–सुन्यो वचन तुम भरतके, देख्यो सब व्यवहार ।
ताकी मन अभिलाष गुणि, पेख्यो सकल अकार ॥

चौपाई ।

पूँछि सकल वृत्तांतहि जानी । ताकी रुख लीन्ह्यों पहिचानी ॥
होय राज्यलोभी यदि भ्राता । तौ न कह्यो मम आवनि बाता ॥
आशुहि आय खबरि मुहिं देहू । मैं नहिं तजिहौं भरत सनेहू ॥
करिहौं और ठौरकी राजू । होय भरत कोशल महराजू ॥
यदपि भरत मम अगम सनेहू । कंकर ईंचे गिरत न गेहू ॥
तदपि पितामह पितुकी राजू । पाय काहि नहिं गर्व दराजू ॥
भरत खबरि लै कहौ सुजाना । जबलगि करौं न दूरि पयाना ॥
शृंगवेरपुर प्रथमहि जाहू । सखा निषादराज मम वाहू ॥
भरतहुते अति मोहिं पियारा । मेरे विरह सहत दुख भारा ॥
मम आवनिकी खबरि कहीजै । तासों पूछि अवधपथ लीजै ॥
पूछेहु भरतहु कर व्यवहारा । जाहु आशु अब पवनकुमारा ॥
सुनि प्रभु बैन अंजनीनंदन । चल्यो अवध कहँ करि पदवंदन ॥

दोहा–भरद्वाजके आश्रमै, बसे निशा सो राम ।
चैत शुक्क तिथि पंचमी, भो प्रयाग विश्राम ॥

चौपाई ।

प्रभुशासन शिर धरि हनुमाना । कियो पितापथ तुरत पयाना ॥
संगम यमुना गंगा केरो । नक्यो पवनसुत वेग घनेरो ॥
शृंगवेरपुर पहुँच्यो आई । लख्यो निषादराज तहँ जाई ॥
रामविरह अति कृशित शरीरा। जपत राम राघव रघुवीरा ॥

पर्णकुटी रचि सुरसरि तीरा । बैठ्यो मलिन अंग यक चीरा ॥
बीतत आवनि अवधि विचारे । बाँधत मनहुँ तजन तनु तारे ॥
रामसखा लखि मारुतनंदन । धरि द्विजरूप कियो अभिवंदन ॥
कह्यो वचन सुनु राजनिषादा । तजहु दुखद अब विषम विषादा ॥
अवधधनी प्रिय सखा तुम्हारे । सीता लषण सहित पगु धारे ॥
लंकनाथ कपिनाथ समेतू । हैं प्रयाग भरद्वाज निकेतू ॥
समर दुरासद दशमुख मारे । त्रिभुवन महँ कीरति विस्तारे ॥
अब नहिं होहु निषाद विहाला । काल्हि देखिहौ कौशलपाला ॥

दोहा—चैत शुक्ल तिथि पंचमी, रामसखा है आज ।
अवधि चतुर्दश वर्ष की, गुनि आये रघुराज ॥

चौपाई ।

आजु प्रयाग परयो दल डेरा । रामहिं लखिहौ होत सवेरा ॥
सरिस सुनि वचन निषादा । कढ्यो कुटीते त्यागि विषादा ॥
पुलकित तनु आनंद अपारा । दोउ दृग बहति वारिकी धारा ॥
गद्गद गर अस भन्यो निषादा । को हौ तात दियो अहलादा ॥
कहाँ राम कहँ लषण जानकी । करी तात मम रक्ष प्रान की ॥
इन लोचन अरविंद विलोचन । लखिहौं कबै कहौ दुखमोचन ॥
कह्यो पवनसुत सुनहु निषादा । ह्वै हौ भोरहि विगत विषादा ॥
अवधपंथ मोहिं देहु बताई । जाहुँ भरत पहँ आतुर धाई ॥
बीते अवधि अनर्थ महाना । भरत त्यागिहै तुरतहि प्राना ॥
अवधपंथ तब कह्यो निषादा । जाहु करहु भरतहि अविषादा ॥
चल्यो पवनसुत शीश नवाई । ध्यावत भरत चरण मन लाई ॥
लख्यो रामतीरथ चलि दूरी । निरख्यो सई सरित सुखपूरी ॥

दोहा—बहुरि बरूथी सरित लखि, उतरि गोमती आसु ।
निरख्यो साल विशाल वन, विविधविहंग विलासु ॥

चौपाई ।

प्रजा सुकोशल देश निवासी । राम विरह अतिशय दुखरासी ॥
अतिसमृद्ध नर नारि हजारन । रामविरहअतिमलिन अकारन ॥
गगन पंथ कपि कुंजर धायो । नन्दिग्राम आरामहि आयो ॥
लखी प्रफुल्लित फलित द्रुमाली । वहु रसाल अवली रस साली ॥
फूले फले भरत परभाऊ । त्यागे काल अकाल सुभाऊ ॥
अवध नगरते इत यक कोसा । नंदिग्राम लखि भयो भरोसा ॥
नंदनवन सम विपिन सुहावन । चारु चैत्ररथ प्रभा लजावन ॥
विहरि रहे कानन नर नारी । पुत्र पौत्र युत भूषण धारी ॥
धरयो पवनसुत विप्रस्वरूपा । भरत कुटीकहँ चल्यो अनूपा ॥
लख्यो दूरते रघुपति भ्राता । राम प्रेम मूरति अवदाता ॥
राम विरह जनु पारावारा । लहन चहत थाकि पैरत पारा ॥
कृश शरीर सुंदर अति दीना । जटा जूट शिर वदन मलीना ॥

दोहा—जवते गवने राम वन, तवते कुटी वनाय ।
वस्यो भरत अति नेमते, मनहुँ धर्म वपुआय ॥

चौपाई ।

राम राम मुख कढ़त निरंतर । विकल होत कवहूं परि अंतर ॥
रहत सदा फल मूल अहारी । तापस वेष धर्मपथचारी ॥
ओढ़े वदन श्याम मृगछाला । पहिरे वल्कल वसन विशाला ॥
विशद ब्रह्मऋषिसरिस प्रकाशा । लगी राम आवनकी आशा ॥
प्रभु पादुका पूजि कुलदीपा । शासत धरणि सातहू द्वीपा ॥
प्रेम नेम कीन्हें मन माहीं । टरे अवधि रहिहै तनु नाहीं ॥
स्वाति बुंद जिमि चहत पपीहा । ऐहैं नाथ लगी रट जीहा ॥
चारिहु वर्ण भूमितल त्राता । लख्यो पवनसुत रघुपति भ्राता ॥
रघुपति सेवन धर्म स्वरूपा । मानहुँ धरणि धीर कर जूपा ॥

बैठे सचिव पुरोहित ज्ञानी। धरे कषायवसन मतिखानी॥
यथा भरत तस प्रजा दुखारी। राम विरह कृश तनु नर नारी॥
निरखि भरतकहँ पवनकुमारा। गद्गद् गर नहिं वचन उचारा॥

दोहा—जस तसकै धरि धीर कपि, पाय परम अहलाद।
रामबंधु जीवहु सदा, दीन्ह्यो आशिर्वाद॥

चौपाई।

भरत प्रणाम कियो द्विजजानी। आकस्मात बह्यो दृग पानी॥
उमग्यो आकस्मात अनंदा। मनहुँ आगये रघुकुलचंदा॥
आवहु विप्र भरत अस भाषा। कहहुसकलआपनिअभिलाषा॥
जाय पवनसुत बैठ्यो नेरे। सुखी भये भरतहु तिहि हेरे॥
पूज्यो भरत विप्र जिय जानी। पूछ्यो कहँसे आयो ज्ञानी॥
तहाँ पवनसुत वचन सुनाये। अतिप्रिय खबर कहन इत आये॥
जिहिवियोगवशकृशितशरीरा। ध्यावहु जाहि नयन भरि नीरा॥
जासु विरह यह दशा तिहारी। चौदह वर्ष जासु व्रत धारी॥
पूजहु जासु पादुका प्यारे। जिहि वियोग दृग बहत पनारे॥
सो कोशलपुरपाल कृपाला। आय प्रयाग बसो यहि काला॥
कुशल जानकी लषणसमेतू। पूछ्यो कुशल भानुकुल केतू॥
मर्कटकटकसहित कपिराजू। ल्याये संग अवध रघुराजू॥

दोहा—ऋक्षराज बहु ऋक्ष युत, युत निशिचर लंकेश।
ल्याये अपने संगमहँ, अवध उदधि राकेश॥

चौपाई।

सहित वानरीसैन्य समाजू। आवत लषण सीय रघुराजू॥
तजहु शोक दारुण प्रभु भ्राता। लखिहौकाल्हिभानुकुलत्राता॥
रावण कुंभकर्ण रण मारी। सहित जानकी सुयश पसारी॥
शची सहित जिमिसुखीसुरेशा। आवत रघुकुलकमल दिनेशा॥

इतना सुनत भरत तिहिकाला। भयो महामुदमगन विहाला ॥
गिरयो भूमि सुखदंग विसंगा। दंड द्वैक भूली सुधि अंगा ॥
सँभरि नयन ढारत जलधारा। रोमांचित तनु राजकुमारा ॥
गद्गद कंठ बोलि नहिं आवत। हनुमतवदनलखतटकलावत ॥
जस तसकै अस वचन सुनाये। को हौ तात कहाँते आये ॥
असकहिपुनिउठिभरतसुजाना। लियो लगाय हिये हनुमाना ॥
सींच्यो नयनन नीर शरीरा। बोल्यो भरत वहुरि धरि धीरा ॥
देव अहौ की मनुज गोसाईं। मेट्यो मीच शंभुकी नाईं ॥
दोहा—कह्यो वचन मुहिं परमप्रिय, राख्यो जात शरीर।
देहु धेनु यक लक्ष तुहिं, तदपि होत नहिं धीर ॥

चौपाई।

देहुँ तोहिं शत नगर सुहावन। षोडश कन्या वपु अति पावन ॥
चन्द्रमुखी साभरणशरीरा। चितवत चैन चारु चय चीरा ॥
तदपि लगाति लघु का अब देहूँ। मैं नाहिं उऋण तोहिं विधि केहूँ ॥
बोल्यो हुलसि प्रभंजन नंदन। पुलकित भरतचरण करि वंदन ॥
मैं कपिहौं केसरीकिशोरा। रघुपतिकिंकर तैसहु तोरा ॥
नाम मोर जानहु हनुमाना। पठयो तुवहित कृपानिधाना ॥
धरयों विप्र वपु परिचय हेतू। दिय निदेश अस रघुकुलकेतू ॥
सुनि रामानुज रामागमनू। मंगलमूल अमंगलदमनू ॥
पुनि पुनि मिलि असवचनउचारा। विधि आखरको मेटनहारा ॥
यह उपख्यान भनहिं मुनिज्ञानी। जियें वर्ष शत जो जग प्रानी ॥
होयकवहुँतिहिंअवशिअनंदा। मिटै सकल दुख दारुण द्वंदा ॥
भई कहाँ कपि राम मिताई। किहि अवसर किहि कारण पाई ॥
दोहा—भरतवचन सुनि पवनसुत, कथा कहन सब लाग।
सचिवसहित केकयसुवन, सुनत सहित अनुराग ॥

चौपाई ।

भयो राम कर जिमि वनवासा। प्रेमविवश जिमि नृपतनु नाशा ॥
सहित जानकी लषण सुहाये। जिमि प्रभु चित्रकूट महँ आये ॥
राजत्याग पुनि आप पधारे । विनय वचन बहु भाँति उचारे ॥
पितु प्रण राखन हित रघुराई। गये न अवध नगर चित चाई ॥
लै पादुका आप पगु धारे । सो सब विदित तुमहिं प्रभु प्यारे ॥
अब आगे कर सुनहु चरित्रा। कियो जु कोशलनाथ विचित्रा ॥
दंडकवन प्रविशे रघुराई । सहित जानकी लछिमन भाई ॥
गये अत्रि अनसुइया आश्रम। मुनि सत्कारकियो भरिसंभ्रम ॥
पुनि निशिचर यक हन्यो विराधा। देत रह्यो वनवासिन बाधा ॥
पुनि प्रभु लषण जानकी संगा। आये जहँ मुनीश शरभंगा ॥
प्रभुहि पूजि मुनि तज्यो शरीरा । सुनासीर देख्यो रघुवीरा ॥
गये सुतीक्षण आश्रम रामा । पुनि अगस्त्य के भवन ललामा ॥

दोहा—लहि अगस्त्य उपदेश प्रभु, पंचवटी महँ जाय ।
वसे जानकी लषण युत, अतिशय आनँद पाय ॥

चौपाई ।

तहँ रावण भगिनी चलि आई। जनकनन्दनी को डरवाई ॥
काट्यो लषण नाक अरु काना। भगी विलाप करत्र विधि नाना॥
खर दूषण त्रिशिरा बलवंता। आये अमरषवंत तुरंता ॥
चौदह सहस्र निशाचर भारी । हत्यो राम द्वै दंड मँझारी ॥
कानन तहाँ दशानन आयो । हरि सीता कहँ लंक सिधायो॥
लख्यो गीधपति मारग माहीं। कीन्ह्यो पक्ष विगत खग काहीं॥
लै सिय जाय लंक महँ राख्यो। इत प्रभु दशकंधर पर माख्यो॥
दै गति गीधराज कहँ रामा । हन्यो कबंध महा बलधामा ॥
पंपा चलि शवरी गति दीन्ह्यो। कपिपतिसों सनेह पुनिकीन्ह्यो॥

मार्‍यो वालिहि एकहि बाणा । कपि सुग्रीव भूप निरमाणा ॥
वसे प्रवर्षण पावस काला । पठये कपि दश दिशा विशाला ॥
मोहिं मुद्रिका दिय निज हाथा । पठयो दक्षिण अंगद साथा ॥

दोहा–स्वयंप्रभा बिल में गये, तृषावंत सब कीश ।
सो पहुँचायो सिंधुतट, गवनी जहँ जगदीश ॥

चौपाई ।

तहँ संपाति गीध यक आयो । लंक माहिं जानकी बतायो ॥
मैं कूद्यौं शतयोजन सागर । राम कृपा यश भयो उजागर ॥
सिय सुधि लै वाटिका उजारी । अक्षकुमार आदिकन मारी ॥
जार्‍यौं लंकपुरी तिहि यामा । आयों कूदि पार तिहि ठामा ॥
कियों निवेदन प्रभुहि हवाला । कियो राम सुनि कोप कराला ॥
बांध्यो कपिन सिंधुमहँ सेतू । तरे लषण युत कृपानिकेतू ॥
तहँ वानर राक्षस संग्रामा । भयो पंचदश दिन वसुयामा ॥
रह्यो सैनपति नाम प्रहस्ता । नील सैन्यपति कीन्ह्यो अस्ता ॥
बली इन्द्रजित अरु अतिकाया । कियो लषण विनाशि रातिनकाया ॥
कुंभकर्ण अरु रावण राजा । मार्‍यो समर मध्य रघुराजा ॥
आय देव सब सुस्तुति कीन्हें । दशरथ भूप दरश पुनि दीन्हें ॥
जगत प्रतीति हेतु सिय काहीं । प्रविशायो प्रभ पावक माहीं ॥

दोहा–ब्रह्मरुद्र शक्रादि सुर, सीय प्रशंसन कीन ।
पावक लै निज अंकमहँ, आय राम कहँ दीन ॥

चौपाई ।

लंका राज्य विभीषण पायो । आशुहि पुष्पविमान मँगायो ॥
लषण जानकी संयुत रामा । चढ़िगे पुष्पविमान ललामा ॥
मर्कट कटकहु लियो चढ़ाई । सखा कपीश निशाचर राई ॥
किष्किन्धा विराम युग यामा । बसत प्रयाग राम अभिरामा ॥

खबर देन हित मोहिं पठायो। काल्हि अवध चाहत प्रभु आयो॥
भरत सुनी सब कथा सुहाई। पुलकित तनु दृग आँसु बहाई॥
चौदह वर्ष बिते कपिराई। आज नाथ सिगरी सुधि पाई॥
परचो नाथ कर कीर्त्तन काना। आजु कौन जग मोहिं समाना॥
भयो मनोरथ पूरण आजू। लखिहौं कृपासिंधु कृतकाजू॥
कह्यो पवनसुत भरत सुजाना। पुष्य योग है काल्हि महाना॥
ऐहैं अवशि काल्हि रघुराजू। करहु अलंकृत नगर दराजू॥
कह्यो भरत सुनु पवनकुमारा। लै चलु मुहिं जहँनाथ हमारा॥

दोहा—कह्यो वचन हनुमान तब, धरहु धीर मतिधीर।
सहित वानरी भीरते, काल्हि लखहु रघुवीर॥

छन्द हरिगीतिका।

हरषत भरत तहँ बोलि रिपुहन कह्यो वचन उदार।
तुम जाहु आशुहि अवधपुर जहँ जननि दुखित अपार॥
दीजै खबरि रघुवंशमणि जानकी लषण समेत।
अब काल्हि आवब अवधपुर कपिसैन्य युत सुखसेत॥
जे देव मंदिर होहिं पुरमहँ ग्रामदेव समेत।
बाजन बजाय चढ़ाय चन्दन पूजिये प्रभु हेत॥
बंदी विबुध मागध सुमति वैदिक महीसुर सर्व।
जे वंश वर्णन करत वैतालिक सरिस गंधर्व॥
मंगलमुखी गावत सुमंगल विविध बाजबजाय।
अगुवान लेन सिधारहीं शृंगार सकल बनाय॥
सब मातु गवनहिं पालकी चढ़ि सहित सुभटवरूथ।
पुर नारि निकसहिं कनक घट शिर धारि यूथन यूथ॥
ब्राह्मण सुक्षत्रिय वैश्य शूद्रहु प्रजा अवध अपार।
देखन चलहिं रघुनाथ मुख राकाशशी मदहार॥

सुनि भरत शासन शत्रुहन लखन सुदूत बुलाय ।
दीन्ह्यो निदेश अनंद भरि रघुनन्द दरश लुभाय ॥
अब अवधपुरते नन्दिग्राम प्रयन्त धरणि समान ।
कीजे समुन्नत नीच थल सम होय शोभामान ॥
सींच्यो सुगंधित नीर मारग लाज कुसुम बिछाय ।
अति तुंग विविध पताक बांधहु धाम धाम बनाय ॥
अति स्वच्छ करहु बजार रंभाखंभ देहु गड़ाय ।
चटपट पुरट घट धरहु द्वारन आम पल्लव लाय ॥
घर घर रचहु कुसुमावली माला विपुल लटकाय ।
सब सदन करहु विचित्र चतुर चितेर चटक बुलाय॥
जबलौं उवैं नहिं भानु तबलौं सकल साजहु साज ।
रणजीति चौदह वर्षमहँ आवत अवध रघुराज ॥
सुनि शत्रुहन कर सुभग शासन सकल सचिव प्रधान।
सिगरे सजावन लगे पुर आनन्द उर न समान ॥
सिद्धार्थ साधक अर्थ विजय जयन्त धृष्टि अशोक ।
तिमि जन्त्रपाल सुमन्त्र संयुत भये सचिव अशोक॥
हल्ला परयो सब अवधपुर आवत सुरघुकुल केत ।
निज नाथ दरशन हेतु पुरजन करन लागे नेत ॥
आनन्द अवध समात नहिं सब कहैं पुरजन बात ।
किहि भाँति आशु सिराय रजनी होय विमलप्रभात॥
को सकै वरणि प्रमोद कौशल्यै भयो जो आज ।
जिमि मरत मुखपरिगो सुधा जल परयो सूखत नाज॥
खरभर मच्यो सिगरे शहर दृग तजत सब जलधार ।
जनु नहिं समान करार बिच बहि चल्यो पारावार॥
साजहिं सकल कलशावली कलधरहिं द्वारे दीप ।

पुर करहिं मंगलगान नारी देवि देव समीप ॥
यहि भाँति सजत सजावतै निशि रही बाकी याम।
निकसेसकलपुरजनसुखित अभिलषित देखन राम॥
लखन मतंग उतंग तनु जे शैल शृङ्ग समान।
राजत कनक हौदा बँधे अंबारि मानहुँ भान॥
बहु झूल पंखे सिरी सजि घंटा सघन वहनात।
असमान लगि फहरैंनिशानविमान जिन रुकिजात॥
केते मतंगन दुन्दुभी धरि चले गजनगरट्ट।
तहँ अवध नंदिकग्राम लगि लगि गयो सिंधुर ठट्ट॥
सोरठा—चले तुरंग अपार, कोटि कोटिकी कोट करि।
सोहत सकल सवार, रामागमन अनंद भरि॥

छन्द हरिगीतिका।

बहु कनक भूषण रत्न भूषण चमर सहित सड़ाक।
अटपट चलत चटपट चमकि दामिनि दमंक उड़ाक॥
सोहत सवार शृँगार करि बहु हंस वंश कुमार।
हलकत अलक छलकत ललक उर लषण राम उदार॥
करिनीन कुंभनि कनक कुंभ विराजमान अनंत
गणिका चलीं गावत मनावत राम हित भगवंत॥
शृंगार करि पुरनारि प्रमुदित चलीं चारु सिधारि।
हम होब धन्य निहारि प्रभु यक एक हेलि हँकारि॥
रनिवासते मणिजालकी बहु पालकी पथ आय।
करि लियो आगू कौशलाको हौसिला न समाय॥
परिचरी वृन्दन वृन्द डगरीं पालकिनको घेरि।
गावत सुमंगल गीत सहित शृँगार यक यक टेरि॥
कलशावली तिय शीश लसि दीपावली तिन माहिं।

चमकति चटक हारावली तारावली सम नाहिं ॥
यक ओर पुरवासी लसत यक ओर सैन्य अपार ।
यक ओर लसत करोर बहु रघुवंश वीर कुमार ॥
नद्दत समद्द दुरद्द हद्द गिरीन्द्र कद्द चलंत ।
हिहिनात हय बहरात रथ दिशि विदिशि शब्द भरंत ॥
सब कहहिं किहि क्षण लखब रघुकुलचंद्र सीय समेतु ।
कपि कटक पुष्पविमानकर फहरात नभ कहँ केतु ॥
बाजत अनेक निशान राजत आसमान निशान ।
खरभर पर्यो सिगरे शहर तजि गहर करत पयान ॥
सब डगर डगरन नगर बिच युव बाल वृद्ध अपार ।
भाषत परस्पर चलहु चलहु न आज सुखकर पार ॥
कहुँ कोउ प्रजा करि अति त्वरा कटि फेंट कीन्हें पाग ।
पद पट पहिरि करमें चले उर जाग अति अनुराग ॥
कोउ पहिरि कंठाभरण चरणन बाँधि नूपुर शीश ।
रघुपति दरश हित चले दौरत सुमिरि निज निज ईश॥
जिमि उदित राकाचंद्र लखि उमगत उदधि बहु भंग ।
तिमि राम दरशन लालसा बाढ्यो पयोधि अभंग ॥
यक एक आगे होत पहिले लखब हमहीं राम ।
पाछे रहत ते कहत तुम करि लेहु कछु विश्राम ॥
बाढ्यो उछाह अथाह पुरजन धरत नाहिं कछु धीर ।
नर नारि कहत पुकारि कहाँ विमान जिहि रघुबीर ॥
भरि गयो नंदीग्राम जनगण तिहि निशा अवशेश ।
तब कहहिं सब अब राम कहँ अब राम कहँ अवधेश ॥
कीन्ह्यो भरत मज्जन सहित सज्जन सरित सानंद ।
करि पादुकापूजन विमल द्रुत बोलि मारुतनंद ॥

बोले वचन तनु पुलकिहे प्रिय प्राण पवनकुमार ।
अब चलहु देहु दिखाय कहँ प्रभु इष्टदेव हमार ॥
चौदह बरष अँगुरी गिनत गे दिवस कल्प समान ।
करुणानिधान सुजान रघुपति राखि लीन्ह्यो प्रान ॥
तब कह्यो पवन सपूत पूत दुतीय तुम सम कौन ।
प्रभु प्रेम नेम निबाहिहैं तप तपत भीतर भौन ॥
अबलों सुन्यो श्रुति राम प्रेम न लखी मूरति तास ।
तुव रूप लखि प्रभु प्रेमरूप भयो विशेषि विश्वास ॥
इत ते उअत रवि चलहु देखन नाथपदअरविंद ।
रघुनाथ देखि सनाथ ह्वैहैं अवधपुरजनवृन्द ॥

दोहा—पुरवासी भाषत सकल, चलहु भरत अतुराय ।
बिन देखे रघुपति चरण, यक क्षण युग सम जाय ॥

चौपाई ।

कौशल्यादि मातु सब आईं । रिपुहन सहित मोद रस छाईं ॥
कौशल्या तहँ भरत बुलाई । कह्यो लालको खबीर जनाई ॥
कहाँ राम लछिमन मम बारे । किहि पठयो हित खबरि तिहारे ॥
तहाँ भरत अति पुलकित गाता । बोल्यो शीशनाय अस बाता ॥
मातु पवनसुत नाथ पठाये । भोर आगमन खबरि सुनाये ॥
मैं नहिं वदन दिखावन लायक। नेह निबाहि दीन रघुनायक ॥
तिहि अवसर आयो हनुमाना । गह्यो मातु पद नाम बखाना ॥
जानि राम जन अति हरषाई । कौशल्या उर लियो लगाई ॥
पवन पूत पूतहु ते प्यारो । लियो राखि तैं प्राण हमारो ॥
कहु कपि कहँ मम पूत पतोहू । कब लखिहौं आनंद सँदोहू ॥
कह्यो पवनसुत जननि सिधारहु । रामचन्द्र मुखचन्द्र निहारहु ॥
राम मातु तब भरत बुलाई । कह्यो पुत्र अब चलहु त्वराई ॥

दोहा—नाथ पादुका माथ महँ, लियो भरत तब धारि ।
चमर चलावत शत्रुहन, साथहि चल्यो सिधारि ॥

चौपाई ।

वाल विजन वर छत्र सुहावन । लियो सुमंत महा छवि छावन॥
भरत धारि शिर राम खराऊँ । चले शत्रुहन सहित अगाऊँ ॥
पकरे पवनसुवन कर हाथा । पूँछत कहँ मिलिहैं रघुनाथा॥
चलीं भरत पाछे सब माता । चली सैन्य कछु वरणि न जाता ॥
खुरन खनत मेदिनी तुरंगा । हुलसित हिहिनाते बहुरंगा ॥
नद्दत मत्त मतंग हजारन । चले मनहुँ दिग्गज मद हारन॥
घहरत स्यंदन चक्र अपारा । मानहुँ तज्यो पयोधि करारा ॥
गवने कोटिन नगर निवासी । रामचंद्र मुख दरशन आसी॥
भये पषाण रेणु पथ माहीं । हौदन दचक टूटि तरु जाहीं ॥
सिगरे अवध नगर पुरवासी । कहैं राम कहँ दरशन आसी ॥
धरे पुरट घट शीशनमाहीं । चलीं मंगलामुखी तहाहीं ॥
गावत मंगल गीत अपारा । नगर नारि कीन्हें शृंगारा ॥

दोहा—उठत उमाहन पंथ पग, बढ़ी त्वरा अभिलाष ।
जाय जाय हनुमान सों, पूँछहिं जन बहुलाष॥

छन्द अरिल्ल ।

बाजिरहे करनाळ वेणु डफ दुंदुभी ।
वीण उपंग मृदंग नारि गावैं कभी ॥
राम दरश लालसा भरे पुरजन सबैं ।
मंगल मंजुल गीत गाय पुर तिय फबैं ॥
आवत रघुपति आजु अवध आनँद मच्यो ॥
अवध निवासिन जन्म बहुरि विधि नव रच्यो॥
किहि क्षण रामसरोजवदन अलि दृग बसैं ॥

कारि शोभा मकरंदपान देवन हसैं ॥
राम सरिस को धर्मपाल दूसर दुनी ।
अस करुणामय वानि न देखी नहिं सुनी ॥
बाँधि पयोनिधि सेतु लंकराजहि हने ।
सुगल विभीषण प्रभुप्रताप भूपति बने ॥
धन्य भरत रघुनाथ प्रेमको रूप हैं ।
रामविरह तनु क्षीण धर्मको जूप हैं ॥
भ्रात लेन अगुवान जात तनु सुधि नहीं ।
राम भरतको मिलन होत सुखसरि वहीं ॥
यहि विधि कहत अनेक वचन पुरजन चले ।
सुख कर शकुन अनेक पंथ सबकहँ मिले ॥
लखि जन दक्षिण ओर भरतसों भाषहीं ।
लखिनहिं परत विमान दरश अभिलाषहीं ॥
कियो भरत हँसि हँसी हेरि हनुमान को ।
करहु तु नहिं चपलई कीश तजि ज्ञानको ॥
नहिं दरशात विमान प्राण अकुलात हैं ।
नहिं दिखात कपिवृन्द कहाँ दोउ भ्रात हैं ॥
कह्यो पवनसुत जोरि पाणि प्रभु देखिये ।
फूलि उठे तरु फले विश्वास परेखिये ॥
भरद्वाज अरु इन्द्र दियो वरदान है ।
तीरथपतिते अवधप्रयंत प्रमाण है ॥
फलिहैं फुलिहैं विटप राम आगवनमें ।
जहँ रहिहैं कपि तहाँ यही गति भुवनमें ॥
कहत भरतसों पवनसुवनके अस किशा ।
तिहि अवसर सुनिपरयो शोर दक्षिण दिशा॥

दोहा—जबते राम प्रयागते, भये सवार विमान ।
तबते कपि तिहि यानते, चले उड़त असमान ॥
अवध लखन हित अति त्वरा, मर्कट पुलकित गात ।
पुहुपविमानहिं संगमें, गवने गगन उड़ात ॥
कोटिन मर्कट यानकी, छाया जहँ तहँ जाति ।
तहँ तहँ धावति भूमिमें, किलकिलाति कपि पाँति ॥
सोइ शोर सुनि पवनसुत, कह्यो भरतसों बैन ।
कपिदल शोर सुनात इत, मृषा बैन मम है न ॥

चौपाई ।

फूले फलित अमित तरुवृन्दा । सुरभित स्रवत मधुर मकरन्दा ॥
भरद्वाज वरदान प्रभाऊ । विपिन सोहावन बिनहिं उपाऊ ॥
सुनहु शोर प्रभु दक्षिणआशा । किलकत कपि तुव दरशनआशा ॥
मोरे मन अस होत विचारा । तरत गोमती सैन्य अपारा ॥
देखहु दक्षिण नयन उठाई । धूरि पूरि नभ उड़ी महाई ॥
आवत अतिहि सवेग विमाना । धुंधुकार छावतो दिशाना ॥
जानिपरत मुहिं राजकुमारा । करत सालवन कपि संचारा ॥
लखहु भरत अब दक्षिण आशा । पूरण शशिसम भयो प्रकाशा ॥
यह विमान पुहुपक जिहि नामा । सीय सहित लछिमन अरु रामा ॥
मर्कटकटक सहित सुग्रीवा । लंकनाथ सोहत बलसींवा ॥
तरुणतरणिसम तेज पसारत । देखि परत अब नयन निहारत ॥
यतनी सुनत पवनसुत वानी । अवधप्रजा अतिशय हरषानी ॥

दोहा—निरखन लागे निमिष तजि, भयो कुलाहल भूरि ।
निरखौ निरखौ लखिपरत, वह विमान बड़ि दूरि ॥

चौपाई ।

बाल वृद्ध वनिता पुरवासी । सकल अवधपति दरश हुलासी ॥
एक बार बोले अस बानी । आवत आजु राम रजधानी ॥

महा शोर तिहि अवसर भयऊ। दिशि अरुविदिशिछायनभगयऊ॥
हय गय रथ निज निज तजियाना। भये भूमिमहँ खड़े सुजाना॥
राम लषण संयुत वैदेही। आवत कोशल प्रजा सनेही॥
सखा सुकंठ विभीषणसंगा। मर्कटकटक विकट बहु रंगा॥
यही शोर छायो चहुँ ओरा। लखहिं विमानहि प्रजा करोरा॥
लंक जीति आवत रघुनंदा। लखहिं गगन जिमि पूरणचंदा॥
भयो राम लखि भरत सुखारी। पुलकित तनु ढारत दृग वारी॥
प्रेममगन भूल्यो तनु भाना। सावधान ह्वै पुनि मतिमाना॥
गिरचो दंडसम भूतलमाहीं। सो सुख कहत बनत मुख नाहीं॥
कह्यो पवनसुत लखहु विमाना। तुम सम कोउ नहिं प्रेमप्रधाना॥

दोहा—अर्घ्य पाद्य अरु आचमन, दियो भरत प्रभु काहिं।
लग्यो उतारन आरती, प्रेम विवश सुधि नाहिं॥

चौपाई।

अवध प्रजा अंबुधि उमगाना। निरखि राम राकाशितभाना॥
जिमिकपिकटकविमानअपारा। तिमि कहि प्रजा लहै को पारा॥
सेन निरखि मर्कट मुद बाढ़े। लागे लखन ललकि ह्वै ठाढ़े॥
मनुज यूह धरनी परिपूरी। रथ तुरंग मातंगहु भूरी॥
तब प्रभुनिकट वालिसुत जाई। कीन्ह्यो विनय सुनहु रघुराई॥
भरत लेन आये अगुवानी। आईं मातु परत अस जानी॥
भरत आगवन सुनि सुख छाई। गये विमान द्वार रघुराई॥
निरखि भूमि भरतहि भगवाना। सजल विलोचन कृपानिधाना॥
खड़े विमान द्वार रघुराई। उदय मेरु मनु दिनकर राई॥
अवधप्रजा निरखैं प्रभु काहीं। गिरैं दंडसम भूतल माहीं॥
यक एकन अंगुली उठाई। अवध प्रजा भाषहिं गुहराई॥
वह विमानपर देखहु भाई। ठाढ़े अवध उदधि निशिराई॥

दोहा—कोलाहल माच्यो तहाँ, लोग लखन ललचान ।
अवध अलंब बिलंब बिन, उतरे भूमि बिमान ॥

चौपाई ।

देखि विमान द्वार निज नाथै । प्रणवैं भरत भूमि धरि माथै ॥
विह्वल भयो न उठैं उठाये । प्रेम दशा सिराय किमि गाये ॥
कियो शत्रुहन दंड प्रणामा । को अस जो न नम्यो तिहि ठामा ॥
तिहि क्षण अवधप्रजा चहुँओरा । भये राम मुखचंद्र चकोरा ॥
दुसह विरहवश कृशितशरीरा । बहत निरंतर नयनन नीरा ॥
आनँद मगन कढ़त नहिं वानी । प्रजन दशा किमि जाय बखानी ॥
कहहिं परस्पर दरश उमाहे । महि आवत विमान नहिं काहे ॥
बाल वृद्ध युत अवध निवासी । यकटक लखहिं विमानप्रकासी ॥
विधि मानस विमान निरमानू । उदय गगन मनु कोटिन भानू ॥
निरखि अवधपुरप्रजा तयारी । मर्कट कटक करत किलकारी ॥
कपिपति निशिचरपति अरु नीला । द्विविद मयंद महाबलशीला ॥
संयुत लषण विमानहि द्वारे । ठाढ़े अनिमिष भरत निहारे ॥
—लषण कह्यो कर जोरि तब, दीजै नाथ निदेश ।
उतरै भूमि विमान अब, मेटो भरत कलेश ॥

चौपाई ।

लखे दूरते भरतहि रामा । प्रेम विवश विह्वल तिहि ठामा ॥
गद्गद गर मुख कढ़ै न वानी । धरि धीरज कछु जानकि जानी ॥
लगे विमान माहिं जे हंसा । बोल्यो तिनसों रघुकुलहंसा ॥
अब उतरै विमान महिमाहीं । सानुज ठाढ़े भरत जहाँहीं ॥
राम रजाय पाय वर याना । उतरि चल्यो महि ओर तुराना ॥
राम भरत कर होत मिलापा । जानि प्रमोदित देव कलापा ॥
चढ़े विमानन नभमहँ आये । भरत भाउ लखि आँसु बहाये ॥

प्रजन कुलाहल भयो अपारा । मनहुँ सिंधु सब तजे करारा ॥
आवत राम विमान महीमें । भयो हमारे अब जिय जीमें ॥
गयो बैठि जब भूमि विमाना । कूदे तब तुरंत भगवाना ॥
कूदत प्रभुकहँ भरत निहारी । गिरयो दंडसम भूमि मँझारी ॥
भूल्यो भरत भान सब अंगा । को वरणै कवि प्रेम प्रसंगा ॥

दोहा—रही सुरति नाहिं रामतनु, धायो कोशलनाथ ।
कहुँ निषंग कहुँ धनु गिरयो, लियो न कछु कहँ साथ ॥

चौपाई ।

भरतहिं लिय उठाइ रघुराई । गये लपटि विह्वल दोउ भाई ॥
को विलगावै को समुझावै । को कवि प्रेमदशा सो गावै ॥
राम भरत कर प्रेम निहारी । चले अवधपुरके नर नारी ॥
युगल बंधु दृग आँसुन धारा । कंपत तनु नहिं तनक सँभारा ॥
बित्यो मुहूरत छुटे न दोऊ । प्रेमविवश ठाढ़े सब कोऊ ॥
गुरु वसिष्ठ तिहि अवसर आये । जस तस कै दोहुँन बिलगाये ॥
गुरुपद परे पुलकि भगवाना । लियो अंक गुरु रह्यो न भाना ॥
मुनि पूँछी रामहिं कुशलाई । गुरुपद परशि कह्यो रघुराई ॥
कृपा रावरी कुशल हमारी । बीते मुदित वर्ष दश चारी ॥
तुम्हरी कृपा देवरिपु मारे । सुखी अवधपुर बहुरि सिधारे ॥
यतना कहत वदनसों बाता । गहे भरत पुनि पद जलजाता ॥
पुनि पुनि मिलत राम लघुभाई । सकै कौन उपमा कवि गाई ॥

दोहा—मनहुँ प्रयोजन पाय कछु, तापसरूप बनाय ।
वात्सल्य रस दास्य दोउ, मिलैं भुजानि बढ़ाय ॥

चौपाई ।

प्रेमपवनप्रेरित छविधामा । मानहुँ मिलत युगल घनश्यामा ॥
पूरित दृग जल दोउ उत्साहे । प्रेम नेम करि नेह निबाहे ॥

भरतहि प्रभु अंकहि बैठावत । सूंघत शीश बोलि नहिं आवत ॥
भरत न छोड़त पद अरविन्दा । धरि धीरज कह रघुकुलचन्दा ॥
सावधान ह्वै कुशल बखानहु । अब मम बिछुरनकी भय भानहु ॥
मिली न मोहिं तोहिं सम भाई । कहौं शपथ करि भुजाउठाई ॥
भन्योभरत तब कछुधारिधीरा । तुम सम को दयालु रघुवीरा ॥
मो सम अघी लियो अपनाई । सब प्रकार अवगुण बिसराई ॥
राम भरतकी मिलनि निहारी । सुगल विभीषण भये दुखारी ॥
तिहिअवसरलछिमनअरु सीता । त्यागे तुरत विमान पुनीता ॥
आवत निरखि भरत वैदेही । गह्यो दौरि पद परम सनेही ॥
जनकसुता दिय आशिर्वादा । जियहुलालगिमहिमर्यादा ॥
दोहा--गह्यो लषण तब भरत पद, भरत लियो उर लाय ।
कह्यो भरत धनि धनि लषण, कियभलप्रभुसेवकाय ॥

चौपाई ।

शत्रुशाल गिरि प्रभुपद माहीं । लीन्ह्यो नाम बहत दृग जाहीं ॥
रिपुहन कहँ प्रभु हिये लगाई । सूँघ्यो शीश गोद बैठाई ॥
बार बार पूँछहिं कुशलाई । चूमत मुख दृग वारि बहाई ॥
तिहि क्षणभरतलषणअरुसीता । आये जहँ प्रभु परम पुनीता ॥
गह्यो जानकी पद रिपुशाला । प्रेम मगन तनु भयो विहाला ॥
सिय उठाय अंकहि बैठायो । सूँघि शीश दृग वारि बहायो ॥
रिपुहन गह्यो लषणके चरणा । सो सुख कियोजायकिमिवरणा ॥
चारिहु बंधु और वैदेही । लखहिं परस्पर वदन सनेही ॥
कह्यो भरतसों तब रघुवीरा । आयो संग महा कपिवीरा ।
निशिचरपतिअरुकपिपतिकाहीं । मो सम जानहु अंतर नाहीं ॥
इनहीं केवल रावण मारे । इनसमनहिंको उमोहिंपियारे ॥
करहु सकल कीशन सत्कारा । भाव राखि सबमाहिं हमारा ॥

दोहा–कहहु जननि किहिं देशमहँ, दरशनकी रुचि होति ।
अवध प्रजा मुहिं प्राण सम, देखन प्रीति उदोति ॥

चौपाई ।

तिहि अवसर कपिनायक आयो । निशिचर नायक सहितसुहायो ॥
अंगद द्विविद मयंदहु नीला । ऋषभ सुषेण महाबलशीला ॥
नलहु गंधमादन संपाती । गय गवाक्ष ऋच्छप अरिघाती ॥
सरभ पनस आदिक कपि वीरा । धरे मिलन हित मनुज शरीरा ॥
आवत कपिन देखि रघुराई । चले भरत कहँ संग लिवाई ॥
कपिपति निशिचरपतिहि चिन्हाई । मिलहु भरत भाषेहु रघुराई ॥
मिले भरत सुग्रीवहि धाई । वंदन कियो बहुरि शिरनाई ॥
कुशल पूँछि कह करत विलापू । चारि बंधु हम पंचम आपू ॥
सत्य मित्रता आप निबाहीं । चारिहु बंधु उऋण हम नाहीं ॥
मित्र सोइ जो कृत उपकारा । शत्रु सोइ जो कृत अपकारा ॥
कह सुकंठ दृग वारि बहावत । रामकृपा यशको नहिं पावत ॥
मिले भरत लंकापति काहीं । करि वंदन अस कह्यो तहाँहीं ॥

दोहा–राम सहाय करी भली, दै दै सुखद सलाह ।
ज्येष्ठ बंधु हमरो समर, जीत्यो निशिचर नाह ॥
कीन्ह्यो दुष्कर कर्म दोउ, कपिपति निशिचर नाथ ।
तुम्हरी पुण्य प्रभावते, मिले मोहिं मम नाथ ॥
उर लगाय पुनि अंगदै, भन्यो भरत अस बैन ।
अहौ हमारे पुत्र सम, तुम सम जग को है न ॥
ऋक्षराजको प्रणति करि, भरत मिल्यो बहु बार ।
पिता सरिस मम वृद्ध वर, कियो महा उपकार ॥

चौपाई ।

ंद मयंद नील नल वीरा । गय गवाक्ष आदिक रणधीरा ॥

मुख्य मुख्य कपि जे सब आये । मिले सबनसों भरत त्वराये ॥
रामहि सरिस सबन कहँ माने । कहि मृदु वचन कपिनसन्माने ॥
पूँछि कुशल सबसों कर जोरी । आशा पूरि भई अब मोरी ॥
देखि राम सम भरत सुभाऊ । कपि माने मन महा उराऊ ॥
कहनलगे सब आपुसमाहीं । भ्राता भूमि भरत सम नाहीं ॥
पुनि कपीश निशिचरपतिकाहीं । राम चले कर गहि मुदमाहीं ॥
गुरु वसिष्ठ कहँ दियो बताई । रविकुलगुरुविधिसुत मुनिराई ॥
सुगल विभीषण औरहु कीशा । धरे वसिष्ठ चरणमहँ शीशा ॥
आशिर्वाद दियो मुनिराई । चिरजीवहु संयुत रघुराई ॥
तिहि औसर सुमंत तहँ आयो । देखत राम लषण शिरनायो ॥
सुधि करि रघुपति भे वनवासी । ढारत अंबक अंबु हुलासी ॥

दोहा—राम लषण कहँ लपटिगो, त्यागे सुरति शरीर ।
बहुत दिनन महँ मुहिं मिले, सीय लषण रघुवीर ॥

चौपाई ।

पुनि सुधि करिकियसचिवप्रणामा । पूँछी कुशल बहुत विधि रामा ॥
अहो पिता सम सचिव हमारे । आये कुशल सुपुण्य तिहारे ॥
तिहि औसर कपिकटक अपारा । तजि विमान उतरयो इकबारा ॥
इत कपिदल उत अवध निवासी । मिले सिंधु युग जनु सुखरासी ॥
तब सुमन्त बोल्यो कर जोरी । सुनहु लाल विनती यह मोरी ॥
मातु सकल तुव दर्शन हेतू । आईं इतै मानि सुख सेतू ॥
आशुहि चलहु मिलहु रघुराई । दुसह विरह दुख देहु मिटाई ॥
राम भरत लछिमन रिपुशाला । लै जानकी संग तिहि काला ॥
निशिचरपति कपिपति करि आगे । मातु मिलन गवने अनुरागे ॥
आय गये जननी जिहि ठामा । किया प्रथम कैकयी प्रणामा ॥
पुलकिततनु माता । उर लगाय लिय सुख न समाता ॥

नयनानि बहति नीरकी धारा। गद्गद गर नहिं वचन उचारा॥

दोहा—सूँघि शीश चूम्यो वदन, मणिगण अमित उतारि।
भरत मातु बोली वचन, कछुक लाज उर धारि॥
कामुँह लाय दिखाय मुख, कहौं लाल कछु बात।
धर्मपाल युग युग जियो, तुम अस तुमहीं तात॥

चौपाई।

प्रभु कर जोरि कही अस वानी। सुनहु मातु हिय तजहु गलानी॥
मातु कृपावश जब रणमाहीं। मारे सकल निशाचर काहीं॥
तब करि कृपा पिता तहँ आये। मोपर दीह दया दरशाये॥
तुव अरु भरतहेतु तिहि काला। मैं मांग्यों वर जानि कृपाला॥
दियो जु भरत मातु कहँ शापा। सो न करै दोहुँन संतापा॥
ताते दैवविवश जो भयऊ। सो परिताप सकल अब गयऊ॥
रहै प्रसन्न मातु सब काला। शोचविवश नहिं होय विहाला॥
दुख सुख होत भाग्यवश दोऊ। तासु प्रयोजक होइ न कोऊ॥
मैं सुत तैं जननी सब भाँती। मुहिं निहारि करु शीतल छाती॥
असकहिरघुकुलकुमुदनिशाकर। गहे चरण लछिमन जननी कर॥
तहाँ सुमित्रा अति अतुराई। लियो लाल कहि गोद उठाई॥
आँखिन बहति अंबुकी धारा। रह्यो न तनुमहँ तनक सम्हारा॥

दोहा—शीश सूँघि जननी पुलकि, लीन्ह्यो हिये लगाय।
विरहजन्य दुखसिंधु जनु, भई पार हरषाय॥

चौपाई।

अलक सँभारति चूमति आनन। अति सकुचत रघुकुल पंचानन॥
त्रिशत साठि जे दशरथरानी। आईं सकल बहत दृग पानी॥
पृथक पृथक प्रभु वंदन कीन्ह्यो। पृथक पृथक अंकहि सबलीन्ह्यो॥
जानिपर्यो विभेद कछु नाहीं। न्यून अधिक मानत किहि काहीं॥

पुनि प्रभु कौशल्या ढिग जाई । परे चरण निज नाम सुनाई ॥
जननी लियो अंक बैठाई । वत्स हिरान लह्यो जनु गाई ॥
फेरति पाणि पीठि महतारी । अलक सँभारति वदन निहारी ॥
जस कौशल्यहि भयो अनंदा। वरणिसकौं किमि मैं मतिमंदा॥
शंभु स्वयंभु शारदा शेशू । वरणि सकैं न विशेष अशेशू ॥
बोली वचन जननि मुद मोई । कहँ सुग्रीव विभीषण दोई ॥
उभय सखन कहँ राम बताये । दोऊ दौरि चरण शिरनाये ॥
प्रेमविवश रघुपति महतारी । हिय लगाय लिय दुहुन सुखारी॥
दोहा–कह्यो वचन हे पुत्र दोउ, तुम रामहुँते प्यार ।
समरसिंधु तुव बल तरनि, चढ़ि भो पार कुमार ॥

चौपाई ।

तुव बल पुण्यप्रभाव दराजू । देख्यो यह बालक कहँ आजू ॥
कौनहुँ जन्म उऋण हम नाहीं। तुम समान को प्रिय जगमाहीं॥
तुम दोउ धर्मकुमार हमारे । जिन सहाय पुनि राम निहारे ॥
जननीवचन सुनत दोउ वीरा । बहत निरंतर नयनन नीरा ॥
बोले वचन धीर उर धारी । कस न कहै रघुपति महतारी ॥
उतरे तुव प्रताप रणसिंधू । सहजहि हन्यो शत्रु दशकंधू ॥
तुव समान तुव सुत रघुनायक । ह्वैबो राम मातु तुहि लायक ॥
तिहि अवसर लछिमन अतुराई। गिरयो कौशल्यापदमहँ आई ॥
लियो उठाय अंकमहँ माता । चूमति पुनि पुनि मुखजलजाता ॥
लषण परे पुनि केकयचरणा । भरत मातुसुख जाय न वरणा ॥
लषण बहुरि सब मातन वंदे । काटे मनहुँ विरहदुखफंदे ॥
सबके पाछे लषण ललामा । कियो जननिपदकंज प्रणामा ॥
दोहा–दे आशिष उर लाय पुनि, कह्यो सुमित्रा वैन ।
निरखे पूत सपूत नहिं, लखी पतोहू नैन ॥

चौपाई।

लषण कहाँ मिथिलेशकुमारी। देहु बताय विलम्ब विसारी॥
तिहि अवसर सीता तहँ आई। लषण मातुपद गह्यो त्वराई॥
लीन सुमित्रा अंक उठाई। चूमति वदन महा सुख पाई॥
शीश सूँघि पुनि लेति बलाई। केकयसुता तुरत उठि धाई॥
सिय हिय लाय अंक बैठाई। आँखिन आँसुन ओघ बहाई॥
हर्ष सकुचवश कढ़ति न बाता। निरखति वदनशशी अवदाता॥
पुनि सिगरी दशरथकी रानी। आई सीतादरश लुभानी॥
पृथक पृथक सिय मिलि सबकाहीं। कियो प्रणाम परशि पदमाहीं॥
तिहि अवसर कौशल्या आई। गिरी जानकी चरणन जाई॥
राममातु उर लियो लगाई। सो सुख कैसे वरणि वढ़ाई॥
सासु पतोह महासुख सानी। प्रेमाविवश मुख कढ़ति न बानी॥
पुनि पुनि सीय चरण लपटानी। सासु दशा किमि जाय बखानी॥

दोहा—तहाँ सुमित्रा आयकै, सीतहि लियो उठाय।
धरि धीरज बोली वचन, तुहि सम तुहीं दिखाय॥

चौपाई।

धन्य धन्य मिथिलेशकुमारी। दोउ कुल कहँ कीन्हीं उजियारी॥
भयो कृतारथ जन्म तुम्हारा। किय पुनीत रघुवंश हमारा॥
बोली कौशल्या महरानी। आजु सुखी भे रघुकुल प्रानी॥
जिहि हित लागि रहे तनु प्राना। समय दिखायो सो भगवाना॥
सियहि देखि मुहिं भा संदेहू। बहुत बुझायों मिटत न केहू॥
कमलकोषते कोमल चरना। सियकीन्ह्योकिमिविपिनविचरना।
अस कहि मीजति सियपदकंजू। विरह जनितदुख करि सब भंजू॥
बार बार फेरति शिर पानी। राई लोन उतारति रानी॥
मंगलवचन पढ़ति अस गाई। जन्म नवीन सीय हम पाई॥

वृहद्वियोग सिधु दुखदाई । पैरत थकी थाह जनु पाई ॥
पुनि पुनि मुख चूमति सब सासू। कहहिं कृशिततनु लहिवनवासू ।
भाग्य उदय अब भई हमारी । निरखि आजु विदेहकुमारी ॥

दोहा–राममातु बोली वचन, लषणजननि समुझाय ।
नंदिग्रामको लै चलहु, सियहि विमान चढ़ाय ॥

चौपाई ।

तिहि अवसर प्रभुदरशन आसी । वृन्द वृन्द सिगरे पुरवासी ॥
आगे हमहिं लखब रघुराई । झुके कहत अस आश बढ़ाई ॥
जोरे सकल कमल कर नागर । देखि राम जग होब उजागर ॥
कियो विचार राम मनमाहीं । मिलौं एक बारहि सब काहीं ॥
अस कहि कियो अनन्तन रूपा । मिल्यो प्रजन कहँ कोशलभूपा ॥
सब पुरजन ऐसहि मन माने । हमहिं मिले प्रभु अतिप्रियजाने ॥
जान्यो प्रभु चरित्र नहिं कोऊ । निकट रह्यो अरु दूरहु सोऊ ॥
जय जयकार मच्यो यकबारा । जय रघुवंश भूमि भरतारा ॥
तब उठि भरत सपुलकितगाता । बोल्यो मंजु वचन अवदाता ॥
पहिरहु पभु पादुका सुहाई । जो लीन्ह्यो मम प्राण बचाई ॥
अस कहि प्रभुपदपंकजमाहीं । पहिरायो पादुका तहाँहीं ॥
तहँ देव फूलन झरिलाये । बार बार दुंदुभी बजाये ॥

दोहा–जय कोशलपति प्रीतिरत, भरत सरिस कोउ नाहि ।
राम प्रेम को नियम करि, दीन्ह्यों नेह निबाहि ॥

चौपाई ।

पुनि करजोरि चरण शिरनाई । बोल्यो वचन प्रीतिरस छाई ॥
चित्रकूटमह मोहिं बुझाई । कह्यो नाथ करि कृपा महाई ॥
पितु प्रण पूरण करि जब ऐहौं। थाती राज्य आपनी ॥
तबलगि शासहु तुम प्रिय भाई । देश कोश कछु बिगरि न जाई ॥

सो तुव शासन शिर धरि नाथा । लीन्ह्यों राज्यभार निज माथा ॥
नाथ अवध मोरे हित आये । मोहिं धन्य जग माहिं बनाये ॥
पालेहुँ प्रजा शीश धरि शासन । प्रभु रजाय सुनि सहित हुलासन ॥
देश कोष बल प्रजा सुखारी । कीन्ह्यों दशगुण अधिक खरारी ॥
सो सब नाथ प्रताप प्रभाऊ । नहिं मम शक्ति न करहुँ दुराऊ ॥
सो प्रभु लेहु राज्य कर भारा । एक मनोरथ अहै हमारा ॥
होय नाथ राउर अभिषेका । पालहु प्रजा सदा सविवेका ॥
मैं अब करहुँ चरण सेवकाई । जामें सब विधि मोरि भलाई ॥

दोहा–शील सनेह सुभाउ बुधि, धर्म धीर सन्मान ।
निरखि भरतको कीशपति, लंकहुपति हरषान ॥

चौपाई ।

रुदन करनलागे सब कीशा । भरत योग भ्राता जगदीशा ॥
भरतवचन सुनिकै रघुराई । प्रेममगन दृग वारि बहाई ॥
चूमत वदन अंक बैठाई । कह्यो वचन सब काहँ सुनाई ॥
जापर ईश प्रसन्न सदाई । तिहि जग मिलै भरतसम भाई ॥
राम भरत कर देखि सनेहू । भये सकलकपि पुलकित देहू ॥
भरत पाणि गहि रघुकुल राऊ । कह्यो वचन पुनि सरल सुभाऊ ॥
ऋक्ष कीश औरहु पुरवासी । आये जे मम दरशन आसी ॥
सिययुत मातु बंधु हम चारी । भरत लषण रिपुहनकी नारी ॥
चढ़ैं सकल मिलि पुहुपविमाना । नंदिग्राम कहँ करहिं पयाना ॥
नंदिग्राम इक योजन होई । पुहुपप्रभाव लखैं सब कोई ॥
रामवचन सुनि अवधनिवासी । वानर भालु भये सुखरासी ॥
कारि कोलाहल चढ़े विमाना । मिले परस्पर सुख न समाना ॥

दोहा–अंतःपुर अतिशय विमल, निर्मित रह्यो विमान ।
सीय सहित सब मातु तहँ, कीन्हीं मुदित पयान ॥

चौपाई ।

राजासनपर राम विराजे । सकलबंधु निज निज थल छाजे ॥
निशिचरपतिकपिपति हनुमाना। अंगदादि वानर बलवाना ॥
सचिव सुमंतादिक प्रभु केरे । बैठे सब निज नाथहि घेरे ॥
वानर भालु और पुरवासी । मिलहिं परस्पर आनँदरासी ॥
दियो विमानहि राम रजाई । नंदिग्राम देवहु पहुँचाई ॥
प्रभु रजाय सो पाय विमाना । उड़्यो गगन करि शोर महाना ॥
नन्दिग्राम क्षणहींमहँ आयो । सबके उर अचर्ज अति छायो ॥
भरत कुटी जहँ रही सुहाई । रम्यो विमान भूमिमहँ आई ॥
रामसहित उतरे सब लोगू । दियो विमानहि नाथ नियोगू ॥
जाहु कुबेरसमीप विमाना । हम प्रसन्न तोपर विधि नाना ॥
जब स्मरण करौं तुहिं काहीं । आयो तुम मैं रहहुँ जहाहीं ॥
प्रभुवंदन करि तुरत विमाना । गयो धनद ढिग अतिहरषाना ॥

दोहा—तहँ वसिष्ठको पुत्र जो, नाम सुयज्ञ उदार ।
मिल्यो आय प्रभुको हरषि, बहति नयन जलधार॥

चौपाई ।

पकरि चरण प्रभु कियो प्रणामा । बारबार मिलि लहि सुखधामा॥
कनकासनमहँ तिहि बैठायो । आपहु सिंहासनमहँ भायो ॥
नाम सुयज्ञ वसिष्ठकुमारा । राम सखा वर बुद्धि उदारा ॥
पाणि पकरि पूँछी कुशलाई । बड़ो काम कीन्ह्यों रघुराई ॥
प्रभु कह सखा कृपावश तेरे । मैं मारे रिपु प्रबल घनेरे ॥
तहाँ भरत लक्ष्मण रिपुशाला । आये जिहि थल बैठ कृपाला ॥
लंकनाथ सुग्रीवहु दोऊ । आये हनुमदादि सब कोऊ ॥
प्रभुहि घेरि बैठे तिहि ठामा । तहँ कैकयीतनय मतिधामा ॥
जोरि अंजली धरि निज शीशा । बोल्यो वचन सुनहु जगदीशा ॥
मम माता पितुसों हित मोरे । माँग्यो द्वै वर द्रोह न तोरे ॥
भरतराज रामहिं वनवासू । सुनि पितु भे हत जीवन आसू ॥

पर्यो धर्म संकट पितु काहीं। तजि तनु राख्यो धर्महि काहीं ॥

दोहा–चित्रकूटमहँ मोहिं प्रभु दियो राज्य कर भार।
पितु प्रण पाल्यो नाथ तुम, तज्यो न मोर दुलार ॥

चौपाई।

भयो जन्म धनि अस प्रभु पाई। बिसराया ऐसिहु जड़ताई ॥
को जग मुहिं सम अधमस्वभाऊ। जिहि हित बसे विपिन रघुराऊ ॥
मैं निलज्ज पुनि सन्मुख आयो। नाथ दौरि मुहिं हिये लगायो ॥
तुम सम को दयालु रघुराई। मों सम कुटिल जन्यो नहिं भाई ॥
मैं जान्यो प्रभु मुहिं अपनायो। मम अपराध सकल बिसरायो ॥
ताते कछु माँगहुँ रघुराई। दिहे नाथ सब विधि बनिजाई ॥
दीन्ह्यो मोहिं अवधको राजू। सो अब लेहु करहु कृतकाजू ॥
वृषभ भार बालक नहिं लेई। यद्यपि होय सुमति जन सेई ॥
बिन पषाण मृत्तिका अथोरे। फूट बंध तृण जुरै न जोरे ॥
बहे न खर वाजी कर भागा। चलै हंस गति कबहुँ न कागा ॥
तिमि तुम सम कैसे हम ह्वैहैं। तुव प्रभुता किहि विधि हम पैहैं ॥

दोहा–कहौं दूसरो हेतु प्रभु, हम सब प्रजा तुम्हार।
सात द्वीप नव खंड लगि, होहु भूमि भरतार ॥

चौपाई।

बोय कामतरु जो निज गेहू। भयो बढ़े तरु फल संदेहू ॥
सेय सींचि फल फूलन पायो। भयो वृथा श्रम जौन लगायो ॥
होति सोइ क्षति मातुन काहीं। राम प्रजा पाल्यो जो नाहीं ॥
ताते हम सब कोशलवासी। केवल यही लखनके आसी ॥
प्रगटि भानुसम भुवन प्रतापा। हरहु सकल दासन संतापा ॥
होय राम राउर अभिषेका। पालहु प्रजन सुधर्म विवेका ॥
तुव अभिषेक निरखि रघुनाथा। होब सकल हम प्रजा सनाथा ॥

सुर तरंग सारंग मृदंगा । बजत रहैं वसु याम अभंगा ॥
कांची नूपुर धुनि सुनि काना । जगहु नाथ नित होत विहाना ॥
तुव यश करत पुनीत दिशाना । करहिं मधुर गायकगण गाना ॥
सुनत सुयश सो बहु रघुराई । हम सब करहिं चरण सेवकाई ॥
जहँ लगि उदय अस्त रवि होई । जहँ लगि मानस भूधर जोई ॥

दोहा—तहँ लगि राम वसुंधरा, नायक होहु नरेश ।
करहु मनोरथ पूर अब, चलै निदेश हमेश ॥

चौपाई ।

अस कहि भरत रहे कर जोरी । राखहु लाज नाथ अब मोरी ॥
भरत वचन सुनि दीनदयाला । प्रेम मग्न ह्वैगे तिहि काला ॥
गद्गद गर बोले रघुराई । अहै न भूमि भरत सम भाई ॥
भरत हेतु लागहिं जो प्राना । तौ हम आपन अति हितमाना ॥
यथा भरत रुचि तैसहि करिहौं । नासा श्वास प्रयंत न टरिहौं ॥
वानर प्रजा सुनत प्रभु वैना । जय जय कार कियो भरि चैना ॥
तिहि अवसर कौशल्या आई । लषण मातु कैकयी लिवाई ॥
उठ कुमार जननि कहँ देखी । किये प्रणति मुद मानि विशेखी ॥
कह्यो सुमंतहि रानि बुलाई । चारिहु सुअन देहु नहवाई ॥
भूषण वसन सकल पहिरावहु । अंगराग मृदु अंग लगावहु ॥
इनके विना नहाये सीता । नहिं नहाति निज धर्म पुनीता ॥
मातु निदेश सुमंत तुराई । कह्यो शत्रुशालहि समुझाई ॥

दोहा—शत्रुशाल सुनि सो सपदि, नापित परम सुजान ।
बोल्यो विगत विलंब बिन, क्षउर कर्म अभिधान ॥

चौपाई ।

शीघ्रहस्त सुखहस्त सुखारी । केश विवर्धक भूषणधारी ॥
नापित निरखि राम अस गाये । नहिं नहाब बिन भरत नहाये ॥

भरत हि अंक लियो अनुरागे । राम जटा निरवारण लागे ॥
भरत जटा निरवारि कृपाला । ऐंछि पोंछि मृदुअलक विशाला ॥
राम भरत निज कर नहवाये । भूषण वसन विविध पहिराये ॥
पुनि लक्ष्मणहि अंकमहँ लीन्हे । जटा विशोधन निजकर कीन्हे ॥
तैसहि लषणहुँ कहँ नहवाये । दिव्य वसन भूषण पहिराये ॥
शत्रुशाल कहँ तिमि रघुराई । सादर लियो अंक बैठाई ॥
जटा शोध मज्जन करवाई । सुंदर पट भूषण पहिराई ॥
अंगराग अंगनि लगवाई । बैठायो समीप सुख पाई ॥
मज्जित भरत कौशला देखी । सियसमीप गवनी सुख लेखी ॥
लषण जननि कयकेयी काहीं । कह्यो वचनअतिहुलसि तहाँहीं ॥

दोहा—मज्जन करवावहु सियहि, कबरी सुभग बनाय ।
मैं सुग्रीव विभीषणहि, नहवाऊँ अब जाय ॥

चौपाई ।

अस कहि गई जहाँ रह सीता । लषणमातु कैकयी पुनीता ॥
कह्यो दुहुँन कौशिला सुवानी । लियो बुलाय सकल नृप रानी ॥
मज्जन करवावहु सिय केरो । तनु मलीन लहि विपिन बसेरो ॥
घनमंडल राकाशशि जैसे । सीय वदन सोहत अब तैसे ॥
लषणमातु परिचरी बुलाई । सिय मज्जनहित कह्यो बुझाई ॥
लगीं सखी मज्जन करवावन । भरि घट पुरट सुरभिजलपावन ॥
धोयो सलिल छोरि शिर वेनी । मनहुँ लसै अहिशावक श्रेनी ॥
धोय पोंछि वेणी रचि नीकी । जिहिलखिलगतिअवलिअलिफीकी ॥
सुरभित सलिल सखी नहवाई । अतिसुंदर सारी पहिराई ॥
अंगन अंगराग कर लेपा । भूषण पहिरायो संक्षेपा ॥
तहँ सिगरी दशरथकी रानी । रच्यो विविध भोजन हुलसानी ॥
इतै चतुर नापित सुख भीने । रघुपति जटा विशोधन कीने ॥

दोहा- जब मज्जन करि चुकत भे, रघुपति बंधुसमेत ।
गुरु वसिष्ठ आवत भये, गवन करावन हेत ॥

चौपाई ।

कह्यो वचन गुरु सुनहु नरेशा ।आजुसुभगदिनचलहुनिवेशा ॥
प्रभु तथास्तु कहि कियो प्रणामा । लै गुरु गये भरतके धामा ॥
सुगुरु सबंधु समंत्रिन बैठे । मानहु मोद महोदधि पैठे ॥
उत कौशल्या अति अतुराई । गइ जहँ लंकापति कपिराई ॥
हनुमत अंगदादिकन आनी । तारा रुमा आदि कपिरानी ॥
सबहिं सविधि मज्जन करवाई । भूषण वसन सबन पहिराई ॥
जिमि सियपै किय प्रेमपसारा । मान्यो तथा रुमा अरु तारा ॥
राख्यो यथा राम वर प्रेमा । तैसे कपिन प्रेम कर नेमा ॥
तैसे पुनि लंकापति केरो । निजसुत तिनको किय न निवेरो॥
कपिन सकल मज्जन करवाई । पट भूषण विचित्र पहिराई ॥
तहँ तारा अरु रुमा सयानी । करि प्रणाम बोलीं अस वानी ॥
भये पूत तनु दरश तिहारे । सियदरशनकी आश हमारे ॥

दोहा-रामजननि निज संगमें, तारा रुमा लिवाय ।
आई जनकसुता निकट, महामोद उर छाय ॥

एक संग भोजन करवाई । एक संग सुख सेज सुवाई ॥
लागे सकल सराहन वीरा । धन्य धन्य जननी रघुवीरा ॥
पुनि गुरुशासन लै रघुराई । भोजन करन गये लै भाई ॥
करि भोजन कीन्ह्यो विश्रामा। इतनेमें बीते युग यामा ॥
गुरुवसिष्ठ रिपुशाल बुलाई । बोले वचन मंजु मुसक्याई ॥
रघुनंदन स्यंदन अब आनहु । अवधनगर कर गवनहिं ठानहु॥
कह्यो शत्रुहन साचिव बुलाई । ल्यावहु रथ सुंदर सजवाई ॥

शासन दियो सुमंत तुरंता। सजी सैन्य गज वाजि अनंता॥
हल्ला परचो नगरमहँ जाई। आवत अवध आज रघुराई॥
पुरजन सजे सकल सब भाँती। भई नारि नर शीतल छाती॥
इतै राम रिपुशाल बुलाई। दीन्ह्यो हर्ष निदेश सुनाई॥
आनहु सजे नाग नव लाखा। चढ़ैं कीश सब अस अभिलाखा॥

दोहा—शत्रुशाल कर जोरि कह, सजे खड़े सब द्वार।
चलहु नाथ महलन मुदित, करि सनाथ परिवार॥
उठे राम गहि भरत कर, परचो निशानन घाउ।
नौमत लागीं झरन बहु, भोन उराउ अघाउ॥

चौपाई

भे सवार स्यन्दन रघुनन्दन। फहरि रहे पताक बहुवृन्दन॥
वाजिन वाग भरत कर लीनो। रिपुहन छत्र लियो मुद भीनो॥
लषण चमर चालत सुखछाई। द्वितियचमर लिय निशिचरराई॥
रथध्वज लिये खड़ो हनुमाना। कियो राम इमि अवध पयाना॥
तहँ महर्षि देवर्षि अपारे। देव मरुतगण गगन सिधारे॥
प्रस्तुति करहिं वर्षि बहु फूला। बाज बजावहिं मधुर अतूला॥
महा माधुरी ध्वनि दिशि छाई। पुरजन खड़े लेन अगुवाई॥
शत्रुंजय गज राम मँगाये। जिहि लखि मंदिर मेरु लजाये॥
करन हेतु सुग्रीव सवारी। पठयो रघुकुलकमल तमारी॥
तापर भो सुग्रीव सवारा। महा मनोहर मनुज अकारा॥
जे नवलाख मतंगज आये। कनक साज सब भाँति सजाये॥
चढ़े भालु कपि मनुज स्वरूपा। पहिरि विभूषण वसन अनूपा॥

दोहा—बजे शंख डफ दुंदुभी, जय जय परी पुकार।
चहुँकित भरभर नरनिकर, हरबर किय संचार॥

चौपाई ।

दिशि पंथ प्रजा कर यूहा । नारि बाल युव वृद्ध समूहा ॥
खड़े राम दरशनके आशी । तिहि दिन भयो भुवन सुखराशी॥
चल्यो कटक अति चटकअपारा । मनहुँ सिंधु तजि दियो करारा॥
सैन्य अग्र भे सुतर सवारा । पुनि वाजी असवार अपारा ॥
तिनके पाछे पैदर वृंदा । धरे शस्त्र कर भरेअनंदा ॥
पुनि परिकर चामीकर चारू । धरे दण्ड पहिरे उर हारू ॥
छरी वेत्र झरझर कर धारे । फरक फरक मुख कहत सिधारे॥
चामीकर स्यंदन छवि छाजा । तापर अति राजत रघुराजा ॥
मनहुँ उदयगिरि उदय तमारी । प्रजाजलज लखि भये सुखारी॥
तिहि अवसर बोले प्रभु वानी । मारग चलहु मंद गति ठानी ॥
चली मंदगति सैन्य अपारा । लखहिं मनुज अवधेश कुमारा ॥

दोहा—कोउ प्रणाम पुरजन करैं, कोउ पुनि करहिं जुहार ।
करहिं पुलकि कोउ दण्डवत, कोउ पुनि करहिं दुलार ॥

चौपाई ।

कृपादृष्टि चितवहिं रघुराई । देहिं मोदरस सबकहँ छाई ॥
प्रभु पाछे नवलाख मतंगा । वानर भालु चढ़े यक संगा ॥
राज राजसुत सचिव अनेकू । चले पंथ जिन यथा विवेकू ॥
चढ़ि सतांग मातंग तुरंगा । चले वीर सब भरे उमंगा ॥
तिनके पीछे अति सुखसानी । लै सीता गवनीं सब रानी ॥
रत्न जाल की नवल नालकी । चढ़ीं रानि सब अवध पालकी॥
कौसिल्है सीतै करि आगे । चलीं अवध मंदिर अनुरागे ॥
सहसन संग सहचरी भावैं । महा मनोहर सोहर गावैं ॥
विप्र वेदध्वनि मंगल करहीं । लिहे शकुन कर आनँद भरहीं॥
दैविक भौतिक शकुन सुहाये । कहत मनहुँ रघुपति घर आये॥

प्रकृति विप्र मंत्री पुरवासी । चले चहूँकित आनँदरासी ॥
चितवहिं प्रभु मुख ठोरहिं ठोरा । यथा चंद्रमहि चितव चकोरा ॥

दोहा—आगे बजत अनंत तहँ, तुरही अरु करनाल ।
डिगत न तालविधानमें, गावत मधुर विशाल ॥

चौपाई ।

पढ़त स्वस्ति द्विज मंगल हेतू । मंगल द्रव्य लिये कर सेतू ॥
अक्षत सुवरण कन्या गाई । मोदक लिहे पाणि सुखदाई ॥
विप्र अनेकन रघुपति आगे । चलेजात अतिशय अनुरागे ॥
करत जात प्रभु यही बखाना । सखा न जग सुग्रीव समाना ॥
कहौं सत्य नाहिं करौं दुराऊ । लख्यों न हनुमत सरिस प्रभाऊ ॥
जिंहि विधि कियो कर्म रण कीशा । सो अबलों नाहिं सुन्यो न दीसा ॥
सुनि सुनि सचिव और पुरवासी । गुणि अचरजअति होत हुलासी ॥
समर कीश निशिचर कर जैसो । भयो कहत प्रभु विधियुत तैसो ॥
निज दल कीशन की अधिकाई । जिमि निशिचर दलकी बहुताई ॥
वर्णि कहत जब निज रणक्रीड़ा । तब उपजाति प्रभु के उर व्रीड़ा ॥
लषण समरबल प्रभु जब कहहीं । सुनि सौमित्र अधोमुख रहहीं ॥
यहि विधि वर्णत कथा सुखारी । मंद मंद गवनत धनुधारी ॥

दोहा—सुनत भरत हर्षाय अति, पुनि पछिताय लजाय ।
शीशनाय प्रभु पाँय परि, चितवत आँसु बहाय ॥

कवित्त ।

मंद मंद चलत गयंदनके वृन्द वृन्द,
तरल तुरंग रंग रंग के सुहाये हैं ।
घर्घरत चक्र रथ भर्भरत पौरजन,
खर्खरत शस्त्रगण शत्रु भीति भाये हैं ॥
देवता विमानन में दशहूँ दिशानन में,

रामचन्द्र आननचकोर टक लाये हैं ।
राजनसमाज सँग राजराज रघुराज,
अवध दराज दरवाजेलों सिधाये हैं ॥

छन्द गीतिका ।

गति भी बजावत दुंदुभी सुर सुमनवृन्दन वर्षहीं ।
नाचहिं सुनाकनटी नवल यश विमल गावत हर्षहीं ॥
चहुँओर ठौरहि ठौर माच्यो जयति शोर अथोर हैं ।
चितचोर नृप शिरमौर निज यश भुवन कीन अजोर हैं॥
अस कहहिं सुर पुर जन अगन सज्जन उरन सुख भूरि भो।
रघुवंश हंस प्रशंस करि दिल ते दुसह दुख दूरि भो ॥
निरखत नगर शोभाअमित लोभा सुचित लखि सुरनको।
माच्यो अखंडल मोद मंगल नगर मंडल नरनको ॥
जिहि भाँति बाजत व्योम बाजन नचीं जिमि सुरसुंदरी।
तिमि नगर तिय गावहिं सुनाचहिं करत कंकन मुंदरी॥
ऊँची अटा घन घटासी छन छटासी तिय सोहहीं ।
कर लाज लीन्हें कुसुमवृन्दन राममुखशशि जोहहीं ॥
प्रति द्वार द्वारन रंभ खंभ सुहेम कुंभ विराजहीं ।
तोरण विचित्र सुछाजहीं सिय राम मंगल काजहीं ॥
फहरत पताके परम भाके भानु चाके पर्सहीं ।
बहु विधि किताके नाक नाके तुंग ताके दर्सहीं ॥
धृत धनुष कंध सुदीनबंधु सबंधु आवत देखिकै ।
वर्षहिं कुसुम तिय लाज संयुत महा मंगल लेखिकै ॥
केतीं झरोखन झाँकि झाँकि झुकहि झूमि झड़ाकदै ।
केती कुलीन मकामिनी खोलहिं कपाट कड़ाकदै ॥
तिहि समयको सुख अवधको को कहि सकत निरअवधको ।

दशचारि वर्ष बिताय रघुपति दरश भो मुद उदधिको ।
दृग बहति आँसुन धार प्रजन अपार वारहिं बारहीं ॥
पुलकित शरीर निहारि श्रीरघुवीर निमिष निवारहीं ।
दधि दूब तंदुल थार भरि भरि द्वार द्वार प्रजा खड़े ।
रघुवंशमणि कहँ वार वार उतारि मणिगण मुद मढ़े ॥
बहु आरतीन उतारतीं तरुणी सु तन मन वारतीं ।
जय वचन वदन उचारि ब्रह्मानंद तुच्छ विचारतीं ॥
यहि भाँति प्रभु सुख देत बंधु समेत जनकनिकेतमें ।
आये अनंदित देव वंदित अस्त गिरि रवि लेतमें ॥
पितु महल द्वारे रोंकि रथ प्रभु कह्यो भरत बुझायकै ।
लै जाहु तीनहुँ मातु अंतहपुरहि विनय सुनायकै ॥
सिय जाय अपने महल मातुन संग सुदिन विचारिकै ।
कपिराजको तुम कर पकरि लैजाहु प्रेम पसारिकै ॥
मंडित महा मणि मोर मंदिर मुक्ति झालर झूलहीं ।
वर सैन्य आसन मणिन दीप प्रकाश कराहिं अतूलहीं ॥
वैदूर्य्यमाणिमय भूमि जहँ कोमल कपाट प्रबालके ।
जहँ बने युत विस्तार वर प्राकार रत्नन जालके ॥
जिहिं बीच बनी अशोक नामा वाटिका सुविहारकी ।
मंदार द्रुम अरु पारिजातहुँ ऋतुन षट संचारकी ॥
तिहि महल माहिं निवास देहु कपीश को यहि कालमें ।
सब भाँति संचै करहु संच बिसंच वारि उतालमें ॥
सुनि राम शासन भरत आशु हुलास भरि कपिराजको ।
करपकरि लायो कनकभवन निवास दिय सुख शाहको ॥
सरयू विपिनमहँ और वानर वसत भे सुख पायकै ।
अनुराग नेह दिखाय बोले भरत सुगल बुलायकै ॥

रामाभिषेक प्रभात ह्वैहै चारि सिंधुन नीरको ।
दीजे मँगाय पठाय कपि है अति अवशि रघुवीरको ॥
अस कहि पुरट घट जटितरत्ननचारु चटक मँगायकै ॥
दीन्ह्यों कपिन कर भरत जिहिं जस अनुहरत अतुरायकै ॥

दोहा–दिय सुकण्ठ शासन तुरत, हरबर होत प्रभात ।
आनहु चारि समुद्रजल, वीर वेग विख्यात ॥

छन्द गीतिका ।

यक कुम्भ लीन्ह्यों ऋक्षराज सुवर्णको सुवरन बनो ।
दूसर लियो घट पुरटको कपि वेगदरशी बल घनो ॥
तीसर लियो कपि ऋषभ कनक सुकलश रत्न प्रभा भरो।
चौथो विमल घट हाटकी मारुतसुवन निज कर करो ।
तब कह्यो केकयसुवन सुनहु सुकण्ठ प्यारे मम सखा ॥
शत पंच सरिता सलिल देहु मँगाय नहिं भाषहुँ मृषा ।
सुनि भरत वैन सचैन कपिपति पंच शत कपि भटनको ।
दीन्ह्यो तुरत शासन हरषि लै चले पुरटन घटनको ॥
तहँ गवे और सुषेण आदिक वीर अति अतुरातहीं ।
शत पंच सरिता सलिल ल्याये नेक नभ अरुणातहीं ॥
हनुमान आदिक चार वीर सुनीर चारि समुद्रको ।
ल्याये निशा बीतत हरषि करि हरष सुर अज रुद्रको ॥
प्रभु सकल बंधुन सहित दशरथ महल कीन निवास है ।
तहँ गुरु वसिष्ठहुँ आय बोल्यो वचन बलित हुलास है ॥
सिय सहित कीजे नेम यहि निशि कालिह तुव अभिषेक है ।
विधि सकल जानी रावरे की यथा जौन विवेक है ॥
प्रभु नाय गुरुपद शीश पंकजपाणि जोरे हँसि कह्यो ।
अवलम्ब आप प्रतापको कछु और मेरे नहिं रह्यो ॥

गवने निवेसहि दै निदेशहि गुरु जबै हिय हरषिकै।
सब सहित सिय रघुनाथ निवसे नेम युत मुद बरषिकै॥
तिहि रैन माच्यो चैन पुरजन शैन ऐन किये नहीं।
बोलत परस्पर बैन निरख बनै न प्रभु अभिषेकहीं॥
जिमिहन्यो रावण कुम्भकर्णहि जिमिहत्यो रिपु दुंदुभी।
थल थल प्रजा यह सुयश गावत कर बजावत दुंदुभी॥
विधिसों मनावत आजु आवत अबहिं रवि प्राची दिसा।
तौ जन्म भरि हम पूजते मुख गावते तेरी किसा॥
नर नारि देव मनावहीं रघुनाथ तिलकहिं होतमें।
कीजै विघनको निधन सब मिलि हिये हर्ष उदोत में॥
जननी करहिं रनिवासमहँ सुविलास हास हुलासको।
वर बास बास सुवास वासित रचहिं भूषण बासको॥
विज्ञाति करहिं सवर्ग भर्गहि अग्र दिशि संसर्गको।
निशिके विसर्गहि गर्ग भार्गव किय तिलक उत्सर्गको॥
असको भुवन जिहि रामतिलकहिलखनकी अभिलाष ना॥
प्रभु दास होन उपासनाकी कौन जाके आश ना॥
खरभर मच्यो कोशलनगर सब डगर डगरहुँ बगरमें।
मणि जगर मगर प्रकाश सुरभित अगर मधि अरु कगरमें॥
पुरजन सकल प्रभु नजरहित भूषण वसन साजन लगे।
बाँकी निशा पूछहिं पहरुवन क्षणहिं क्षण प्रेमहि पगे॥
रिपुहन भरत सुग्रीव निशिचर नाथ एकहिं साथमें।
प्रभुनिकट बैठे कहत गाथहिं प्रेम पगि रघुनाथमें॥
जब रही बाकी याम निशि तब सचिव सब यक संगहीं।
रिपुशालसों कीन्हें विनय रघुराज तिलक उमंगहीं॥
मज्जन करावहु नाथको सज्जन सकल बुलवायकै।

गुरुको बुलावहु आशु इत उत जाय पद शिर नायकै ॥
रिपुशाल सुनि मंत्रिन वचन चलि कह्यो जाय वसिष्ठको।
पग धारि तहँ सब साज साजहु करहु कारज इष्टको ॥
गुरु सुनत अति अतुराय मज्जन कीन सरयू जायकै ।
आयो द्रुतहि पुनि राजमंदिर सकल सचिव लिवायकै ॥

सोरठा–मंदर मेरु समान, लजत हिमाचल जाहि लखि ।
सोई भवन प्रधान, रामराज अभिषेकहित ॥
कोटिन भानुप्रकाश, सिंहासन बहु मणिमयो ।
गुरु मँगाय सहुलास, धरवायो उत्तर मुखै ॥

कवित्त ।

पूरी चौक मोतिनसों मंडित मणीन मंजु,
रचि रचि वरण विचित्र रतनावली ।
विविध किताके फहरात हैं पताके मनौ,
शरद घटाके मध्य राजतीं बकावली ॥
तोरन तड़पदार झालरैं झुकीं अपार,
राजैं बार बार मानौ थिर तड़ितावली ।
राम रघुराज अभिषेककी सजी है साज,
गाय उठे वंदीजन वेद विरुदावली १
चारि दंड बाँकी निशि जानिकै भरत भूरि,
भद्र भोर होत जेठ भ्राता भौन आयो है ।
कोमल कमल कर कमल चरण चापि,
उमँगि अनंद मंद मंदहीं जगायो है ॥
भाष्यो रघुराज रघुकुल शिरताज सुनौ,
आजु अभिषेक साज सकल सजायो है ।
मज्जन करीजै दान दीजै सब सज्जनको,

छज्जनमें थोर थोर भानु भास छायो है ॥ २ ॥
जानिकै प्रभात प्रभु मीजि जलजात नैन,
उठे अँगिरात अलकावली सँभारयो है ।
भरत लषण रिपुसूदन अनिलसुत,
सुगल विभीषण प्रणामको उचारयो है ॥
रघुराज आशिष दै कीन्हें प्रातकर्म सब,
मज्जनकै नाथ रंगमंदिर पधारयो है ।
बंदि कुलदेव करि सेव बोलि भूमिदेव,
देन लागे दान मेवमनते बिसारयो है ॥ ३ ॥
गजनगरट्ट दैकै वाजिनके ठट्ट दैकै,
ग्राम धाम दैकै विप्र वृन्द सतकारे हैं ।
अन्नके अचल दैकै अविचल वृत्ति कैकै,
दिये हमाचलते हिमाचलते भारे हैं ॥
देखि रामदान मूँद्यो गिरिको गिरीश माया,
मूँद्यो मघवाहू मेरु मेवन कतारे हैं ।
कोशलेश कीरति प्रकाशके करत रज,
ताचल सुमेरु द्युति दुगुनी पसारे हैं ॥ ४ ॥

दोहा—को वरणै रघुवंशमणि, दीन्ह्यो जेतो दान ।
भूमंडलके द्विजनको, दारिद देखि डरान ॥

सोरठा—उदयमान जब भानु, भे प्रसन्न प्राची दिशा ।
बाजे अमित निशान, मच्यो नगर खरभर महा ॥

चौपाई ।

रामराज अभिषेक अनन्दा । सुनि सुनि आये नागरवृन्दा ॥
नचहिं अंगना अंगन केती । प्रमुदित रामराज हित हेती ॥
गायक गावहिं गुणगणगीता । होय सुयश सुनि भुवन पुनीता ॥

नचहिं अप्सरा अनुपमरूपा । खड़े देन बाले अगणित भूपा ॥
खैर भैर मचिरह्यो अवधपुर । मंगल पढ़त अनेकन भूसुर ॥
गुरु वसिष्ठ तिहि अवसर आये । मुनिन वृन्द सानंद सुहाये ॥
बोलि लषण बोले अस वानी । आनहु जनकसुता छबिखानी ॥
सीतहि ल्याये तुरत लिवाई । रही तहाँ चहुँकित छबिछाई ॥
सीता रामहिं संग लिवाई । चले मुनीश स्वस्त्ययन गाई ॥
तीनिहुँ बंधु संग अति सोहैं । होत लोकपति लखत लजोहैं ॥
कपिपति निशिचरपति दोउ राजैं । अंगद हनुमत सहित समाजैं ॥
देश देशके भूपति भारी । किये सफल दृग राम निहारी ॥
करहिं दरश कहि जय रघुराजा । पावहिं प्रजा प्रमोद दराजा ॥

दोहा—राजतिलक रघुराज कर, होत आज छवि छाज ।
राज काज करि करहिंगे, प्रमुदित प्रजासमाज ॥

चौपाई ।

बजत मनोहर नोहर बाजे । जिन सुनि गगन सघन घन लाजे ॥
कलशावली मातु पठवाईं । सुंदर सखी साजि सब आईं ॥
भरि सब शकुन सुकंचनथारा । गावत मंगल बारहिं बारा ॥
आगे चलीं शृंगार सँवारे । प्रतीहार तिहि समय पुकारे ॥
निज निजथल बैठहिं सब भूपा । लै बलि निज कर निजअनुरूपा ॥
होत तिलक रघुकुलमणि केरो । बिरह निशा गइ भयो सबेरो ॥
निज निज थल बैठे सब राजा । खड़ी अवधपुर प्रजासमाजा ॥
तिहि अवसर रघुनन्दन आये । तिलकभवन अंगन छबिछाये ॥
जननी अटन झरोखन बैठीं । पेखि प्रमोद पयोनिधि पैठीं ॥
रघुपति राजतिलक अनुरागीं । अगणित मणिन लुटावन लागीं ॥
बंदी बिरुदावली उचारैं । नभते कुसुम देवगण झारैं ॥
भूमि गगन माच्यो जयकारा । रह्यो न तनुकर तनक सम्हारा ॥

सोरठा--मुनि वासिष्ठ तेहि काल, कह्यो वचन हँसि रामसों।
सिंहासन छविजाल, बैठहु सीतासहित अब॥

कवित्त।

पद्मराग मर्कत मणीन्द्र नीलमणि केरी,
विविध किताकी लता लसैं चहुँ ओर हैं।
सूर्य्यमणि चन्द्रमणि चिंतामणि चारु
औरहू अमोल लागे रतन करोर हैं॥
कोटि भानु भास भायो रतन सिंहासनको,
सुर नर मुनिनके मानस भे भोर हैं।
गुरु अनुशासनतें बैठिगे सिंहासनमें,
जानकीसमेत रघुवंश शिरमौर हैं॥ १॥
राम वामभाग महाभाग मिथिलेशजूकी,
राजति कुमारी जापै रति बलिहारी है।
अभिनव विमल तमालके समीप मानो,
सोनजुही वल्लरी प्रफुल्लित निहारी है।
श्यामघननिकट विराजै मनो राकाचंद्र,
नीलमणि वाम हेम लीकसी निकारी है।
सहित शृँगार ढिग वपुष शृँगार मानौ,
राजे रघुराज रतिरूपको समारी है॥ २॥
ठाढ़ो दिशि दाहिने लषण लीन्हे चारु चौंर,
दूजो चौंर चालै वाम ठाढ़ो शत्रुशाल है।
छत्र छपानाथसों विराजित भरत कर,
आतपत्र लीन्हें खड़ो कीश कुलपाल है॥
सिंहध्वज हेमदंड फहरैं पताक तुंग,
ठाढ़ो लै निशाचरेश विक्रम विशाल है।

रघुराज राजराजवदन विलोकें खड़ा,
लीन्हें छरी जोरे कर आगे वायुलाल है ॥३॥
पानदान लैके ठाढ़ो ऋक्षराज ओजवान,
पीकदान लीन्हें त्यों निषादराज भायो है ।
नील नल द्विविद मयंद आदि कीश केते,
सोंटे कर धारे महामोदरस छायो है ॥
अंगद मुकुर लीन्हें थार लै सुमंत ठाढ़ो,
तैसहीं नरेन्द्रनको वृन्द छवि छायो है ।
एक ओर ठाढ़ो पुरवासिनको मंडल,
अखंड उदंड रघुराजयश गायो है ॥ ४ ॥

दोहा—आयो समय सुहावनो, देव दुंदुभी दीन ।
गुरु वसिष्ठ सब मुनिनको, बोले परम प्रवीन ॥

चौपाई ।

सुनहु विनय कश्यप जाबाली । कात्यायन गौतम तपशाली ॥
वामदेव आदिक ऋषिराई । राजतिलक वेला अब आई ॥
करहु रामअभिषेक सुहावन । लेहु बनाय जन्म निज पावन ॥
अस कहि लियो कमंडलु हाथा । लाग्यो पढ़न वेद मुद गाथा ।
लग्यो करन रघुपति अभिषेका । वेदमंत्र पढ़ि सहित विवेका ॥
वामदेव आदिक ऋषिराई । करनलगे अभिषेक तहाँई ॥
रही वेदध्वनि चहुँकित छाई । जय जय प्रजा करहिं सुखपाई ॥
किय अभिषेक प्रथम गुरु ज्ञानी। पुनि सबमुनिविधिवतमतिखानी॥
जिमि वसु किय वासव अभिषेका। तिमि सबमुनिरघुपतिसविवेका॥
पुनि ऋत्विज अभिषेकहि कीन्हें। पुनि अभिषेक विप्र करि दीन्हें॥
आईं पुनि द्विजसुता कुमारी । किय अभिषेक सुगंधित वारी ॥
मंत्री वर्ग सकल पुनि आये । करि अभिषेक महा सुख पाये॥

दोहा-सकल सुभट सामंत पुनि, कियो राम अभिषेक।
वेदप्रमाणविधानते, भयो न कछु व्यतिरेक॥

चौपाई।

तिहि अवसर आये सुर नाना। लगे गगनमहँ ठट्ट विमाना॥
लोकपालयुत सब मुखचारी। लीन्ह्यों देवसमाज हँकारी॥
आयो सभामध्य करतारा। सहित युगल अश्विनीकुमारा॥
लीन्हे कनकथार करमाहीं। दिव्य किरीट धरचो तिहि पाहीं।
कोटिभानु सम भास प्रकाशी। जटितदिव्यमणिगण छबिराशी॥
मनुअभिषेक भयो जिहि काला।रच्यो विरंचि किरीट विशाला॥
सो किरीट प्रभु कहँ पहिरायो। बार बार चरणन शिरनायो॥
लग्यो करन प्रस्तुति मुखचारी। बार बार दृग ढारत वारी॥
जय करुणाकर जय रघुनन्दन। सुरकुलसुखदायक मुनिचन्दन॥
जय कमलामुख पंकज षट्पद। त्वद्दते दीनोद्धर इति कोविद॥
जय जय निशिचरवंशविनाशिन। परब्रह्म परविभव विकाशिन॥
जय करुणा वरुणालयरूपा। जय जय केशव कौशल भूपा॥

दोहा-तव पदपंकजमिष्टदं, ये ध्यायंति परेश।
तेषामिह भवसागरे, न भयं भवति रमेश॥
तिहि अवसर कैलासपति, आये सभा मँझार।
प्रभु प्रणामकरिपुलकिततनु,कीन्हें वचन उचार॥

रूपघनाक्षरी।

जय जय जय राम रमाप्रेष्ठ विश्वाधार,
सर्वगत सर्वपर सर्वनुत सुरपते।
प्रथितप्रताप पूर्णरूप निगमागमज्ञ,
धरणिभारहारक महोत्तम महामते॥
रघुराज राजराज भूपतिसमाजबंध,

मुनिजन मोद करापहृत स्वजनक्षते।
पाहि रघुवंशकुलकमलदिनेश देव,
देव शोकदावानलमेघ महतां गते॥

दोहा—लोकपाल चारिउ तहाँ, जोरे देवसमाज।
जोरि पाणि प्रस्तुति करत, कहि जय जय रघुराज॥

छन्द गीतिका।

जय राम राघव रामचन्द्र रमेश रघुवर वर हरे।
रघुवंशभूषण रहितदूषण निहतदूषण नरहरे॥
जय जय मुरारे रावणारे राघवेन्द्र दयानिधे।
माधव मुकुंद महेशवंदित मधुविनाशन भानिधे॥
संसारपारवारतारक विश्वधारक भूपते।
आत्मप्रकाश निरस्तमायाभास सपदि सतांगते॥
कलिकालविलुलितधर्मकर्मकुशीलकल्मषकारिणाम्।
उद्धारकारणमिह जगति चरणांबुजं संसारिणाम्॥
दशकंठकृतभयभारहारक सदुपकारक धर्मिणाम्।
सौजन्यमार्दवगुणवलित साहाय्यकर दिवि चारिणाम्॥
जगदंबिकाश्रितवामभाग जनाघदाहविभावसो।
रघुराज तव पदपंकजं वंदामहेऽखिलजगत सो॥

दोहा—यहिविधि करि प्रस्तुति अमर, सहित सबै करतार।
प्रभुपद वंदन करि सुखी, निज निज गये अगार॥
तब देवर्षि महर्षिगण, प्रस्तुति किये बखानि।
जय जगजीघ जगतको, जान जानकी जानि॥

छन्द नराच।

नमोच्युताय राघवाय रावणान्तकारिणे।
विदेहकन्यकाप्रियाय राजधर्मधारिणे॥

ऽस्समुद्धराय मीनरूपिणेऽब्धिचारिणे ।
पयोधिमन्थनाय कूर्म्मरूपभृद्विहारिणे ॥
नृसिंहरूपिणे प्रधानदैत्यवर्य्यदारिणे ।
धरोद्धरादिसूकराय हेमदृक्प्रहारिणे ॥
बलिच्छलाय वामनाय दैत्यराज्यहारिणे ।
निकृन्तदुष्टराजवंशसन्महोपकारिणे ॥
रघूद्वहप्रभो विकुण्ठतोऽवतीर्य्य भूतले ।
निहत्य देवतारिपून्विराजतोऽद्य कोशले ॥
ऋते भवन्तमद्य कोऽवितासुरार्तिहारकः ।
दिगन्तकीर्तिकारको दशास्यदर्प्पदारकः ॥
नमामि कोशलाधिराज जानकीवरप्रभो ।
प्रसीद लक्ष्मणाग्रज प्रपन्नवृन्दको विभो ॥
अजश्शिवस्सुराधिपस्सुराश्च ते पदानुगाः ।
कृपाकटाक्षपालिताभवाविताद्विजांश्चगाः ॥

दोहा—यहि विधि करि प्रस्तुति जबै,सुर मुनि गे निज धाम ।
वासव प्रेरित वायु तब, आयो जहँ श्रीराम ॥

छन्द रोला ।

बेन कनकके कमल प्रकाशित महा मनोहर माला ।
चन्द्रसूर्यमणि जटित रत्नबहु लख्यो न कोउ किहुँ काला ॥
सो पहिरायो रघुनंदनको चरणकमल शिर नायो ।
सानंदन करि बिनय प्रभंजन प्रस्तुति अमल सुनायो ॥
चिंतामणिको हार दियो पुनि जनकललीपद वंदी ।
करि प्रणाम अभिराम रामपद गवन्यो अनिल अनंदी ॥
तिहि दिनको सुख कहौं कौन विधि सकैं न शेष बखानी।
ताहूपै पुनि अवधनिवासिन जिन प्रभु मानत प्रानी ॥

बैठे अगणित भूप सभामहँ पृथक पृथकते आई ।
हय गय भूषण वसन रत्न गण दिये नजरि शिर नाई ॥
यथायोग्य सबको कीन्हें प्रभु सकल भाँति सत्कारा ।
पुनि पुरजन मंत्रीजन सिगरे दीन्हें नजरि अपारा ॥
नचहिं अप्सरा भाव बतावहिं चमकि चमकि चपलासी ।
करहिं गान गंधर्व सर्व तहँ क्षण क्षण दरशन आसी ॥
रामराज अभिषेक होत महँ अति प्रसन्न है धरनी ।
उपजायो सब अन्न अधिक अति भूरि भद्र भल भरनी ॥
फूले फरे वृक्ष गृह कानन काल अकाल विसारी ।
रहीं छाय सुरभी चहुँओरन ठोरन ठोरन भारी ॥
दिशा प्रसन्न सन्न जग कंटक बहति सुमंद बयारी ।
भयो विमलजल सीरत सरन सब खगमृग भये सुखारी ॥
रहित उपाधि रोग अरु दोषहुँ भूमि भई रमणीया ।
काम क्रोध मद लोभ मोहवश कोउ न क्रियाकरनीया ॥
रह्यो दंड इक जतिन हाथमें रागतालमहँ भेदू ।
कुटिलाई केशनमहँ देखी श्रम शास्त्रन अरु वेदू ॥
रोष दोष परलोभ धर्म पर काम नारि निजमाहीं ।
वैर पाप ताजि और ठौर कहुँ रामराजमहँ नाहीं ॥
आश एक प्रभुपद सेवनमहँ रह्यो पशुनमहँ मोहू ।
मत्सर रोग विभवमहँ रहिगो कुत्सित वस्तु न कोहू ॥
रह्यो द्विरदगणमहँ मदमंडित हारिलमें हठताई ।
आतुरता तुरंगवृन्दनमहँ गगन शून्यता छाई ॥
जड़ताइ रत्नमह देखी गर्व गुणनको बाढ़ो ।
बहत एक सरिताजल निर्मल क्षोच समर को गाढ़ो ॥
जबते राजतिलक रघुपतिको अवधनगरमहँ भयऊ ।

पितु आगे नहिं मर्‌यो कतहुँ सुत कहुँकर धर्म न गयऊ॥
रामराज मंगलमय वसुधा याग योग जग जागा।
बड़भागा जनकृत अनुरागा वर्णहिं माहँ विभागा॥
तिहि अवसर कर जोरि सुमंत महामतिवंत बखान्यो।
दान द्रव्य हाजिर हुजूरमहँ देहु नाथ मन मान्यो॥
तब प्रसन्न ह्वै अतिहिं सचिवपर दान देन प्रभु लागे।
जनित अभाग भिक्षुकनके भवदारिद दूरहि भागे॥
रत्नसाज साजित तुरंग नव लाखन दियो तुरंता।
दियो अनेकन अर्बुद सुरभी सविधि सवत्स अनंता॥
दियो अनंतन वृषभ कनक मढ़ि विप्रन पात्र विचारी।
तीस अर्ब सुवरणकी मुद्रा पाये भूमि भिखारी॥
रत्न अदूषण भूषण अगणित पूषणसरिस प्रकाशी।
दियो द्विजन कहँ रघुकुलभूषण रण खरदूषणनाशी॥
मत्त मतंग उतंग डीलके सुवरण साज समारे।
महा मौल्य अंबर दिगंबरन दै दै बहु सतकारे॥

दोहा–रघुकुलकमलदिनेशकी, बही दानकी धार।
दारिद्रिनके दारिदन, कियो सिंधुके पार॥

सवैया।

शशि सूर मणीनकी माल मनोहर सूरज ज्योतिसी भास करै।
तिहुँ लोकमें मोल है तासु नहीं सुरवृन्द विलोकत शंक भरै॥
पहिराय दियो कपिरायको सो रघुराज सहर्ष उठाय करै।
मणिमालसों मंडित कीश भयो कनकाचलमें चपला ज्यों थिरै॥

दोहा–पुनि अमोल अंगद युगल, अंगदको प्रभु दीन।
लगीं अनेकन चन्द्रमणि, होत न कबहुँ मलीन॥
उभय भुजन अंगद पहिरि, राज्यो वालिकुमार।
मेरु उभय दिशि रवि शशी, यथा पर्व भिनुसार॥

चौपाई ।

पुनि जो प्रभुहिं पवन दिय हारा । लगीं महामणि सुछवि अपारा ॥
तेज तरंग उठै चहुँ ओरा । लै कर हार भूप शिर मोरा ॥
जनकसुतै दीन्ह्यो पहिराई । शशिकरसरिस रही छविछाई ॥
सिय इक सखी तुरंत बुलाई । अति उत्तम पट युगल मँगाई ॥
पवनकुमारहिं निकट बुलाई । अपने कर दीन्ह्यों पहिराई ॥
पुनि भूषण बहु विधि पहिरायो । हनूमान चरणन शिरनायो ॥
दियो जौन प्रभु उत्तम हारा । सिय उतारि गलते बिन बारा ॥
लै कर हार विलोकन लागी । देहुँ काहिको पिय अनुरागी ॥
जानि जानकी रुख रघुराई । बोले वचन मन्द मुसक्याई ॥
जापर होहु प्रसन्न पियारी । दीजै हार विलम्ब बिसारी ॥
तेज बुद्धि यश धीर बड़ाई । समरथता नय चातुरताई ॥
विनय बड़ाई विक्रम वारो । सो तुव कर पावै यह हारो ॥

दोहा–सिय पिय वाणी सुनतहीं, सब गुण सहित विचारि ।
हनूमानके कंठमें, दियो हार सो डारि ॥
पहिरि हार सोह्यो सभा, पवनकुमार अपार ।
चन्द्रकिरणि सितघनसहित, जैसो पुरट पहार ॥
दन्त दाबि यक हारमणि, फोरयो पवनकुमार ॥
तब विस्मित ह्वै लंकपति, कीन्ह्यों वचन उचार ।
यदपि पवनसुत बुद्धिवर, विक्रम तेज अपार ॥
कपि नहिं जानत रत्नगति, फोरत कौन विचार ।
हनूमान बोल्यो वचन, मैं फोरचों यहि हेत ॥
रामनामअंकित मणिन, देखन हित कुलकेत ॥
साभिमान कह लंकपति, मणि अन्तर नहिं नाम ।
तनु अन्तर कहँ नाम है, अस जानहु बलधाम ॥

कवित्त ।

सुनत विभीषणके वैन वायुसूनु बोल्यो,
रामनाम अंकित न राखे तनु कौन काम ।
भाषि साभिमान निज वज्र नख नोकनसों,
चीरयोचित्त चायकैचटकतनुहींकोचाम ॥
रघुराज जानकी लषण बहु वारयो ताहि,
हाय हाय ह्वै रह्यो सभामें अरु धाम धाम ।
चीरतहीं चाम चाम अन्तर चितै परे,
चितेरके लिखेसे वर्ण सीताराम सीताराम ॥

दोहा—लीन्ह्यो हिये लगाय उठि, आसनते रघुवीर ।
सुत समीरको पीर बिन, सुन्दर भयो शरीर ॥

छन्द चौबोला ।

यहि विधि राजतिलक रघुवरको भयो अवधपुरमाहीं ॥
तिहि दिनते सतयुग अस लाग्यो प्राणी सुखित सदाहीं ॥
नित नित मंगल मोद महोत्सव देश देशमहँ भयऊ ।
तीनिहुँ ताप विगत पुरजन सब स्वप्नेहुँ शोक न छयऊ ॥
पृथक पृथक वानरन सयूथन प्रभु कीन्ह्यों सत्कारा ।
नित नित नव नव भोजन पान सुभूषण वसन अपारा ॥
द्विविद मयंद नील नल आदिक कपियूथपन अनेका ।
भूषण वसन दिये प्रभु सादर जिहिं जस रह्यो विवेका ॥
कछुक कालमहंप्रभुकपिनायकनिशिचरनायकआन्यो ।
शील सकोच सनेह मित्रता संयुत वचन बखान्यो ॥
अस अभिलाष होति मोरे मन कछु दिन कहँ दोउ मीतू ।
किष्किन्धा लंका कहँ गवनौ संयुत सैन्य अभीतू ॥
पालि प्रजा सुहृदनको सुख दै फेरि अवध कहँ आवहु ।

सदा वसहु मोरे समीपमहँ नित नित सुख उपजावहु ॥
कपिपति लंकापति तब बोले प्रभुशासन शिरमाहीं ।
सहि न जात तुव विरह क्षणहुँ भर कछु अपनो वश नाहीं॥
तब प्रभु ह्वै प्रसन्न बोले पुनि शपथ मोरि सब काहीं ।
निज निज नगर जाहु कछु दिनको पुनि आइयो इहाँहीं ॥
कबहुँ हमार तुम्हार विछोह न जानहु सत्य सदाहीं ।
अस कहि बहु समुझाय दुहुँनको बोल्यो भरत तहाँहीं ॥
लक्ष लक्ष गज दश दश लक्षहु वाजी कनकसँवारे ।
अयुत अयुत रथ अभरण अंबर आनहु आशुहिं प्यारे ॥
भरत कह्यो हाजिर हुजूरमहँ जो मन भावै देहू ।
हम नहिं उऋण जन्मभरि इनसों दोउ निबाह्यो नेहू ॥
अस कहि सकल साज मँगवायो प्रभु दोहुँन कहँ दीन्ह्यो ।
चले नाथ पहुँचावन दोहुँन भ्रातन संगहि लीन्ह्यो ॥
दुर्गद्वारलों जाय भुवनपति मिले दुहुँन बहु बारा ।
शिथिल अंग भे प्रेमविवश प्रभु ढारत आँसुन धारा ॥
तहँ सुग्रीव विभीषण प्रभुके गये चरण लपटाई ।
पुनि उठि जोरि पाणि बोले दोउ आँखिन अंबु बहाई ॥
तजहु नाथ जनि सुरति हमारी जानि दुहुँन लघु दासा ।
बहुरि आय पद लखब आशुहीं तुव पदनिकट सुपासा ॥
पृथक पृथक प्रभु मिले कपिन सब लघुबड़भेद न मान्यो।
भूषण वसन कनक भाजन दै सब समान सन्मान्यो ॥
भरत लषण रिपुसूदनसों पुनि मिले सकल बहु बारे ।
राम कमलपद रेणु धारि शिर निज निज भवन सिधारे ॥
पवनसुवन कहँ कह्यो राम तब निवसहु निकट हमारे ।
तिहि अवसर लंकापति प्रभुसों ऐसे वचन उचारे ॥

देहु नाथ कछु चिह्न आपनो जाते मोर उधारा ।
प्रभु कह जो चाहौ सो लीजै हमरे जौन तुम्हारा ॥
कह्यो विभीषण रंगनाथको दीजै दीनदयाला ।
मैं पूजन करिहौं निशि वासर तिहरो रूप विशाला ॥
प्रभु कह यदपि हमारे कुलधन रंगनाथ भगवाना ।
तदपि सखा कछु नहिं अदेय तुहिं लै गमनहु मतिवाना ॥
रघुकुलको धन पाय विभीषण प्रभुपदपंकज वंदी ।
चल्यो लंककहँ धन्य जन्म गुणि बारहिं बार अनंदी ॥
द्राविड देश विभीषण पहुँच्यो कावेरीके तीरा ।
गरुआने तब रंगनाथ प्रभु सके न लै चलि वीरा ॥

-कियो विभीषण प्रार्थना, कह्यो रंग भगवान ।
यहि थल हम रहिहैं अवशि, लंक न करब पयान ॥
तुम आवहु इत रोजहीं, पूजन करहु हमार ।
भुक्ति मुक्ति फल पाइहौ, छूटी तव संसार ॥
एवमस्तु कहि लंकपति, कीन्ह्यों लंक पयान ।
अबलों आवत रंगपुर, पूजन अंतर्धान ॥
गह्यो चरण अंगद बहुरि, मोहिं न तजहु कृपाल ।
गयो वालि मुहिं घालि प्रभु, तुम्हरे गोदहिं हाल ॥
लीन्ह्यों अंक उठाय प्रभु, अंगदको तिहि काल ।
अभय हस्त मस्तक धरयो, बोले वचन रसाल ॥
मोहिं प्राणप्रिय तुम सदा, जाहु भवन यहि काल ।
आशुहि आवहु अवध कहँ, वीर वालिके लाल ॥
करि प्रणाम अंगद चल्यो, मिल्यो पवनसुत आय ।
बार बार दोऊ मिले, कह अंगद बिलखाय ॥
विनय करहुँ कर जोरिकै, बारहिं बार निहोर ।

कबहुँ कबहुँ रघुनाथ कहँ, सुरति करायो मोर ॥
यहि विधि करि सब कपिनकी, बिदा भानुकुलभान ।
आय सभा बैठत भये, रघुपति कृपानिधान ॥

छन्द रोला ।

नित नवमंगल वसुंधरामें प्रजा सरस सरसावें ।
सात द्वीप नव खंड धरामें शासन राम चलावें ॥
रोजहि प्रजा दरश कहँ आवें नित नव आनँद पावें ।
प्रभु कहँ अति भावें प्रति जावें संपूरण धन धावें ॥
पूरण मनकामें ह्वै पुनि जावें प्रभु छबि चित्त छकावें ।
पुनि २ शिर नावें जन बलि जावें धनि निज भाग्यगनावें॥
तिहुँ पुर अभिरामै जन श्रीरामै लखत जन्मफल पावें ॥
विरचित अर्थ धर्म अरु कामै मनहि दुचित नहिं ल्यावें ।
एक समय प्रभु गये अरामें जहँ षट ऋतु नित भामें ॥
लषण भरत रिपुहन तिहि ठामें आय कियो परनामें ॥
लषण अंक बैठाय ललामें बोले नाथ सभामें ।
लषण लाल युवराज कहावें यह हमरे मनशामें ॥
मम शासन सब भरत सुनावें रिपुहन चमू चलामें ।
मैं बसिहौं अन्तहपुर धामें वर अशोकवनिकामें ॥
लषण जोरि कर बोल्यो रामै प्रभु यह देहु न कामें ।
पद सेवन करिहौं वसुयामें अति अभिरुचि मम यामें ॥
तब लागे भरतहि दुलरावे अपनी शपथ धरावें ।
युवराज करहु यह कामें किहि तुमसम हम पावें ॥
पालहु प्रजा करहु जस आवें तुम लायक वसुधामें ।
भरत मानि शासन श्रीरामै कीन्ह्यो चरण प्रणामें ॥
लषणहिं सैन्य मुदामें रिपुहनको धन धामें ।

आप गये अशोकवनिकामें सीयसहित अभिरामें ॥
कोटिन सखी कला दिखरावें राग अनेकन गावें ।
नाचहिं अरु बहु भाव बतावें बाजन मधुर बजावें ॥
भरत लषण रिपुसूदन धावें कारज सकल चलावें ।
धनहुँ धरा अरु धर्म बढ़ावें प्रजा शोक नहिं पावें ॥
पितु देखत सुत मृत्यु न पावे विधवा होइ न बामें ।
कौनहुँ वस्तु न चोर चुरावै बली न निबल सतामें ॥
कोउ नहिं पावक भवन लगावै पवन जोर नहिं आवें ।
माँगे घन बरसैं वसुधामें नाहिं अकाल कर नामें ॥
अगणित आमय देह न आवें जन आयुष बल पावें ।
वेद शास्त्र सब पढें पढ़ावें धर्म अनेक सिखावें ॥
क्षुधाविवश नहिं कोउ दुख पावें याग करन मन लावें ।
वर्णाश्रमको धर्म चलावें द्रोह कोह बिसरावें ॥
भजहिं रामपदकमल अकामें प्रभु त्रयताप नशावें ।
अवधप्रजाके धामन धामें कबहुँ न दुख समुहावें ॥
अश्वमेध कहुँ यज्ञ ललामै पुंडरीक कहुँ भावें ।
राजसूय कहुँ यज्ञ सुहावें सकल महर्षि करावें ॥
करहिं और प्रभु यज्ञ अकामै प्रजन सुधर्म सिखावें ।
दीननके दारिद टरि जामें विप्र दक्षिणा पावें ॥
प्रभु आजानुबाहु अभिरामै मंद करें दुति कामें ।
नयननसों सरसिज लजि जामै वचन सुधा बरसावें ॥
अवधपुरी अस कोउ न दिखावै जिहिं न प्राणप्रिय रामें ।
रामहेतु बहु देव मनावें आशु तासु फल पामें ॥
साँझ समै प्रभु नित कढ़ि आवें प्रजन सुछबि दरशावें ।
हास विलास अनेक मचावें भाइन सखन बुलावें ॥

प्रभु मातनको सुख उपजावैं बालकला दिखरामैं ।
श्रीरघुराज हर्ष अति पावैं आवैं देवसभामैं ॥

दोहा–राजराज रघुवंशमणि, राजत सहित समाज ।
पालक त्रिभुवन भवन बसि, छावत सुयश दराज॥

चौपाई ।

एक समय रघुवंशसमाजा । सहित सभा रघुराज विराजा ॥
तहँ अगस्त्य आदिक मुनिआये। प्रभु उठि भाइन युत शिरनाये ॥
धरेउ शीश जल चरण पखारी। सादर पूँछ्यो कुशल खरारी ॥
मुनि पुलकिततनुवदत न वाणी । ढारत नयन प्रमोदित पानी ॥
धरि धीरज प्रस्तुतितबकीन्हें। आशिर्वाद विविध विधि कीन्हें ॥
तहँ कुंभजमुनि करि विस्तारा। रावण पूरुब चरित उचारा ॥
सुनि सुनि रघुवंशी सब हर्षें । करि प्रणाम दृग सुखजल वर्षें॥
लहि प्रभुसों सत्कार अपारा । मुनि गवने यश करत उचारा ॥
महि विधि रोज रोज रघुराजा । करत प्रमोदित प्रजासमाजा ॥
बसत अवधपुर बंधु समेतू । पालल त्रिभुवन कृपानिकेतू ॥
नित सुर नर मुनि दरशनकरहीं । नित नित नवआनँद उरभरहीं॥
वाजिमेध कीन्हे बहु रामा । थाप्यो धरणि धर्म बलधामा ॥

दोहा–राज्य करत रघुराजको, बिते हजारन वर्ष ।
सतयुग सम त्रेता भयो, रह्यो पूरि जग हर्ष ॥

चौपाई ।

रामायण षट कांड बखाना । उत्तर सप्तम काव्य प्रमाना ॥
यह षट कांड कथा मैं बरनी । रामकथा रसिकन रस भरनी॥
याको रामस्वयंवर नामा । कहत सुनत पूरत मनकामा ॥
क्षमौ रसिकजन मोरि ढिठाई । करौं प्रणाम चरण शिरनाई ॥
वाल्मीकि तुलसीकी गाई । रच्यो रीति सोइ करत ढिठाई॥

रामकथा मंजुल मनहारी । यदपि कियो संकोचहु भारी॥
कहतहिं कहत भयो विस्तारा। सुकवि सुधारहु बुद्धि उदारा।
राम स्वयंवर ग्रन्थ सुहावन । केवल राम सुयश जग पावन॥
जौन हेतु ग्रन्थहि निर्माना। तौन हेतु अब सुनहु सुजाना॥
गवने एक समय हम काशी। विश्वेश्वरके दरशन आशी॥
करि शिव दरशन गंग नहायों। परमानंद बास करि पायों॥
तहँको भूपति परम सुजाना। गौतम वंश सुविप्र प्रधाना॥

दोहा-धर्मधुरंधर धरणिमहँ, शुद्ध बुद्धि धृत धीर।
शील सकोच सनेह शुचि, सहज सुभाव गँभीर॥

चौपाई।

वेद शास्त्र ज्ञाता धनदाता। राम भक्ति वर बुद्धि विधाता॥
रामनगर गंगातट माहीं। निवसत गौतम भूप तहाँहीं॥
काशिराज महराज कहावैं। पुनि द्विजराज प्रतिष्ठा पावैं॥
जासु नाम ईश्वरीप्रसादा। अंतमाहिं नारायण वादा॥
तिनके कुल की रीति सुहाई। कराहिं रामलीला सुखदाई॥
कतहुँ न भरतखंडमहँ ऐसी। कराहिं रामलीला नृप जैसी॥
सब साहबी समाज समेतू। रचहिं रामलीला सुखसेतू॥
सुमति रसिक सज्जन सब आवैं। यथा योग्य सत्कारहिं पावैं॥
आश्विनमास प्रयंत अपारा। बहै रामरसकी तहँ धारा॥
मगन रामलीला रसमाहीं। काशिराज नृप रहैं सदाहीं॥
तुलसीकृत रामायण केरो। कियो तिलक करि सकलनिबेरो॥
कहँलगि कहौं तासु प्रभुताई। सबसों कराहिं अछेह मिताई॥

दोहा-मिल्यों जाय तिनसों हुलसि, मुहिं लिय अंक लगाय।
निज बालक इव जानिकै, दीन्हीं प्रीति बढ़ाय॥

चौपाई ।

तहँ रामलीला को दरशन । लाग्यो करन रामरस सरसन ॥
काशिराज तब मोहिं बुलाई । भाष्यो सकल हेतु समुझाई ॥
तुलसीकृतमहँ अति संक्षेपा । कहँलगि करी अधिक परिलेपा ॥
ताते रचहु ग्रंथ यक ऐसो । तुलसीकृत रामायण जैसो ॥
उक्ति युक्ति गोस्वामी केरी । वाल्मीकि की रीति निवेरी ॥
मैं तब कह्यो परम सुख मानी । ग्रंथ रची तव कृपा महानी ॥
ज्ञान वृद्धि वय वृद्धि आप हौ । राम नाम मुख करत जाप हौ ॥
यथाशक्ति करिहौं विस्तारा । रामकृपा करिहै सब पारा ॥
सुनि मम वचन मुदित काशीशा । फेरत पाणि घ्राण करि शीशा ॥
कीन्ह्यों मैं प्रणाम बहु बारा । आशिष दीन्ह्यों भूप उदारा ॥
बांधव देश अगार हमारा । आयो तहँते लगी न बारा ॥
सुमिरि मुकुन्द चरण शिरनाई । सज्जन सुकवि सहाय बुलाई ॥

दोहा—नौमि भारतीपदकमल, कीन्ह्यों ग्रंथ अरंभ ।
रामस्वयंवर नाम जिहि, रुचिर रसिक रसखंभ ॥

चौपाई ।

वर्ष दुइक कीन्ह्यों निर्माना । पूरण कियो कृपा भगवाना ॥
संवत उनइससै चौतीशा । भूपराशि राजित दिन ईशा ॥
माधव मास महा सुखराशी । दिवस असुरगुरु पूरणमाशी ॥
पूरण भयो ग्रन्थ सुख आगर । रामस्वयंवर नाम उजागर ॥
विद्यागुरु रामानुजदासा । जासु अवधपुर सदा निवासा ॥
रामभक्त निगमागम ज्ञाता । दीनन ज्ञानभक्तिरस दाता ॥
श्रीभागवत और रामायण । वेद वेदांत प्रांत पारायण ॥
बाल कालते मोहिं पढ़ायो । तिन सम द्वितिय न दृग तर आयो ॥
तिनकी कृपा पूर भो ग्रन्था । मैं मतिमन्द चल्यो सतपन्था ॥
कान्यकुब्ज गोकुलपरसादा । अति उदंड व्याकरण विवादा ॥

तिमि साहित्यशास्त्र कर ज्ञाता। मेरो सखा बुद्धि अवदाता ॥
शास्त्री सुमति सुदर्शनदासा । उत्तम न्याय वेदांत विलासा ॥
दोहा–काशीवासी विप्रवर, विश्वनाथ जिहि नाम ।
काव्य व्याकरण न्यायमहँ, लोक वेद मतिधाम॥

चौपाई ।

रामचन्द्र शास्त्री मतिमाना । सब नैयायिक माहँ प्रधाना ॥
साधु माध्व मत सदाऽवलंबी । विष्णुभक्त सत गुणन कदंबी ॥
ये पंडितवर चारु सुचारी । कीन्हीं सकल सहाय हमारी ॥
भाषा सुकवि सहायक मेरे । कहौं नाम मैं अब तिन केरे ॥
रसिकनरायन रसिक अखंडा । जगमहँ रघुपति भक्त उदंडा ॥
भाषा संस्कृतहुँ निर्मानत । रामतत्त्व तजि और न जानत॥
रसिकबिहारी राम पुजारी । राम सुखत्व धर्मधुर धारी ॥
द्विजवर श्रीगोविंद जिहि नामै । वात्सल्य रस राखत रामै ॥
महापात्र कवि सुमति किशोरा । बालगोविंद विप्र कवि मोरा ॥
लिख्यो ग्रन्थ संयुत मर्यादा । मम प्रधान हनुमानप्रसादा ॥
सब जुरि मिलि यह ग्रन्थ बनायो । रामकृपा मम नाम लिखायो॥
मैं मतिमन्द विदित अघखानी । ग्रन्थ रचनकी रीति न जानी॥
दोहा–भरो राजमद गर्व अति, चंचल बुद्धि कुसंग ।
जो कछु होय भलो कबहुँ, सो प्रभाव सतसंग ॥

चौपाई ।

मुहिं अस जानिपरत जगमाहीं । राम सरिस कृपालु कोउ नाहीं ॥
मुहिं सम अघी अपावन मुखते । रामस्वयंवर विरच्यो सुखते ॥
सज्जन सुमति सुशील सुजाना । क्षमहु मोर अपराध महाना ॥
कहौं सत्य करि राम दुहाई । रच्यो ग्रन्थ केवल रघुराई ॥
आनँदअंबुधि ग्रन्थ सुहावन । मो मुख रच्यो पतितके पावन ॥

रसिकावली सुभक्तिविलासा । औरहु ग्रन्थ सुधर्म विलासा ॥
शंभुशतक जगदीशशतक वर । सुभगशतक रघुपतिमृगय कर ॥
सुंदरशतक शतक पुनि गंगा । नीलाचलपति शतक प्रसंगा ॥
चित्रकूटमहिमा अति भारी । त्यों रुक्मिणिपरिणय मनहारी ॥
पदावली रघुराजविलासा । विनयपत्रिका विनय प्रकासा ॥
रुचिर राजरञ्जन सुरवानी । लघु बड़ अष्टक जौन बखानी ॥
जानहु नहिं मम रचित सुजाना । निर्मण्यौ यदुवंशप्रधाना ॥

दोहा–पतित दीन मुहिं जानि अति, पावनपतित दयाल ।
मो रसनाते नाथही, निरमे ग्रन्थ रसाल ॥

सोरठा–जय जय जय यदुनाथ, साँचे नाथ अनाथके ।
मुहिं करिदियो सनाथ, राखि माथमहँ हाथ निज ॥

दोहा–रामस्वयंवर ग्रन्थको, जो बाँचै मतिधाम ।
परशि चरण तिनको करत, जन रघुराज प्रणाम ॥ १ ॥

इति सिद्धिश्रीसाम्राज्य महाराजाधिराज श्रीमहाराजा बहादुर श्रीकृष्णचन्द्रकृपापात्राऽधिकारि श्रीरघुराजसिंहजू देव जी. सी. एस. आई. विरचितेर रामस्वयंवर ग्रन्थे राजतिलक प्रसंग वर्णन नाम त्रयो विंशः प्रबन्धः ॥ २३ ॥

समाप्तोऽयं ग्रन्थः ।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना–
खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेस, खेतवाडी—बंबई.